हिन्दी

भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास

सरस्वती पाण्डेय
गोविन्द पाण्डेय

दो शब्द

साहित्य एवं भाषा का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। शब्द एवं अर्थ के सहभाव को साहित्य कहते हैं। साहित्य सृजनशील एवं रचनात्मक प्रक्रिया है जबकि भाषा सृजनशील एवं रचनात्मक प्रक्रिया की अभिव्यक्ति का साधन है। आचार्य भर्तहरि का कथन है कि भाषा ज्ञान को प्रकाशित करती है—

"वाग्रूपता चेन्निष्क्रामेद्‌वबोधस्य शाश्वती।
न प्रकाश: प्रकाशेत साहि प्रत्यवमर्शिनी।।"

साहित्य ज्ञान का संचित कोश होता है और भाषा ज्ञान संचयन का माध्यम। साहित्य एवं भाषा के हजार वर्षों के इतिहास के तथ्यात्मक अध्ययन की यात्रा काफी दिलचस्प है।

इतिहास लेखन कठिन एवं श्रमसाध्य प्रक्रिया है। वस्तुनिष्ठता एवं प्रामाणिकता इसकी अनिवार्य शर्त है। इतिहास में बिना तथ्यों को निर्गत किये विचारों एवं सिद्धान्तों की लकीर खींचना सर्वथा कठिन है। वस्तुत: साहित्य एवं भाषा का इतिहास भी इन्हीं कठिनाइयों से विकसित हुआ है। हिन्दी साहित्य के इतिहास सम्बन्धी तथ्यों की प्रामाणिकता के सन्दर्भ में हमने अपनी प्रथम पुस्तक 'हिन्दी साहित्य : एक वस्तुनिष्ठ इतिहास' की भूमिका में संक्षेप में चर्चा की है। जिसका उल्लेख करना यहाँ समीचीन प्रतीत हो रहा है—

(1) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'प्लेग की चुड़ैल' (1902 ई०) कहानी को मास्टर भगवानदास का लिखा बताया है जबकि डॉ० नगेन्द्र द्वारा सम्पादित इतिहास में इसका लेखक लाला भगवानदीन को माना गया है। शुक्लजी ने 'नई धारा : प्रथम उत्थान' में खड़ी बोली की कविता 'दशरथ-विलाप' को अम्बिकादत्त व्यास का लिखा बताया है परन्तु डॉ० नगेन्द्र इसे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का मानते हैं। इसी क्रम में शिवमंगल सिंह 'सुमन' कृत 'मिट्टी की बारात' को डॉ० नगेन्द्र ने त्रिलोचन की रचना होने की बात लिखी है। तथ्यगत विसंगतियों के साथ-साथ रचना के प्रकाशन वर्ष, लेखकों की जन्म-मृत्यु सम्बन्धी तिथियों में भी अनियमितता है।

(2) हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' और 'हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास' पुस्तक में अलग-अलग ढंग से तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं। जैसे, रामानन्द के बारहों शिष्यों के नाम में अन्तर, नामदेव की जन्मतिथि में अन्तर, नूर मुहम्मद की रचना तिथि क्रम में अन्तर इत्यादि।

(3) डॉ० बच्चन सिंह के 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' में कई तथ्यों को दूसरे ढंग से ही प्रस्तुत किया गया है। जैसे इन्होंने अपनी पुस्तक में एक दोहा उद्धृत किया है, जो निम्न है—

"सजन सकारे जाएँगे, नैन मरेंगे रोय।
बिधना ऐसो रैन कर, भोर कभी ना होय।।"

इस दोहे को बच्चन सिंह ने अमीर खुसरो का बताया है। देश की मानक परीक्षा यू०जी०सी० दिसम्बर, 2012 के तृतीय प्रश्न-पत्र के 7वें प्रश्न में उक्त दोहे के रचनाकार का नाम पूछा था। यू०जी०सी० द्वारा जारी किये गये उत्तर कुंजिका (आंसर की) के अनुसार भी इसका लेखक अमीर खुसरो ही सिद्ध होता। किन्तु यह तथ्य पूर्णत: संदिग्ध है।

विषय-सूची

		पृष्ठ सं०
(1) भाषा	...	**1-60**
परिभाषा एवं उत्पत्ति सिद्धान्त	...	1
भारतीय विद्वान	...	1
पाश्चात्य विद्वान	...	2
विश्व की भाषाएँ एवं वर्गीकरण	...	3
भारोपीय परिवार	...	6
भारतीय आर्य भाषाएँ	...	7
प्राचीन भारतीय आर्य भाषा	...	7
मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा	...	10
आधुनिक भारतीय आर्य भाषा	...	18
हिन्दी : व्युत्पत्ति और अर्थ	...	21
भाषा के अर्थ में हिन्दी शब्द का प्रयोग व विकास	...	22
हिन्दी की बोलियाँ	...	24
लिपि	...	27
देवनागरी लिपी	...	29
देवनागरी लिपी का वैशिष्ट्य	...	30
राजभाषा	...	31
संविधान में हिन्दी भाषा सम्बन्धी उपबन्ध	...	32
हिन्दी व्याकरण का इतिहास : एक परिचय	...	35
मानक वस्तुनिष्ठ हिन्दी व्याकरण	...	37
हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण	...	37
शब्द-भेद	...	39
संज्ञा	...	40

Scanned by CamScanner

		पृष्ठ सं०
सर्वनाम	...	41
विशेषण	...	42
क्रिया	...	43
क्रिया विशेषण	...	45
सम्बन्ध वाचक	...	45
समुच्चय बोधक	...	45
निपात	...	45
समास	...	46
शब्द-भण्डार	...	50
(2) भाषा-विज्ञान	...	61-66
ध्वनि विज्ञान	...	61
पद या रूप विज्ञान	...	62
वाक्य विज्ञान	...	63
अर्थ विज्ञान	...	64
(3) पद्य	...	67-230
हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा	...	67
हिन्दी साहित्य : काल-विभाजन और नामकरण	...	72
आदिकाल	...	74
पूर्वपीठका	...	74
अपभ्रंश साहित्य	...	77
सिद्ध साहित्य	...	81
जैन साहित्य	...	83
फागु काव्य	...	85
नाथ साहित्य	...	86
रासो साहित्य	...	87
विद्यापति	...	89
अमीर खुसरो	...	91
लौकिक साहित्य	...	93

		पृष्ठ सं०
विविध	...	93
भक्तिकाल (पूर्व मध्य काल)	...	94
पूर्वपीठिका	...	94
निर्गुणधारा (ज्ञानाश्रयी शाखा)	...	95
निर्गुणधारा (प्रेममार्गी (सूफी) शाखा)	...	105
विविध	...	112
सगुण भक्ति : उद्भव एवं विकास	...	112
सगुण धारा (रामभक्ति शाखा)	...	114
सगुध धारा (कृष्णभक्ति शाखा)	...	127
सम्प्रदाय निरपेक्ष कृष्ण भक्त कवि	...	136
भक्तिकाल की अन्य काव्य प्रवृत्तियाँ एवं कवि	...	140
रीतिकाल (उत्तर मध्य काल)	...	144
पूर्वपीठिका	...	144
रीतिबद्ध कवि	...	147
रीतिसिद्ध कवि	...	156
रीतिमुक्त कवि	...	159
रीतिकाल की अन्य काव्य प्रवृत्तियाँ एवं कवि	...	168
आधुनिक काल	...	172
भारतेन्दु युग (पुनर्जागरण काल : 1857-1900 ई०)	...	172
द्विवेदी युग (जागरण सुधार काल : 1900-1918 ई०)	...	180
छायावाद (1918-1936 ई०)	...	190
छायावादोत्तर काल	...	204
प्रगतिवाद (1936-1942 ई०)	...	204
प्रयोगवाद और नयी कविता (1943 से अब तक)	...	209
प्रपद्यवाद (1956 ई०)	...	211
नयी कविता (1954 ई०)	...	211
साठोत्तरी कविता आन्दोलन	...	216
नवगीत	...	226
हिन्दी ग़ज़ल	...	228
दलित कविता का विकास	...	229

		पृष्ठ सं०
(4) गद्य	...	231-392
हिन्दी गद्य का विकास	...	231
हिन्दी नाटक का विकास	...	239
भारतेन्दु युग (प्रथम उत्थान)	...	239
द्विवेदी युग (द्वितीय उत्थान)	...	245
प्रसाद युग (तृतीय उत्थान)	...	246
प्रसादोत्तर नाटक (चतुर्थ उत्थान)	...	251
समकालीन नाटक (पंचम उत्थान)	...	252
एकांकी	...	264
हिन्दी उपन्यास का विकास	...	265
प्रेमचन्द पूर्व (प्रथम उत्थान)	...	266
प्रेमचन्द युग (द्वितीय उत्थान)	...	268
प्रेमचन्दोत्तर युग (तृतीय उत्थान)	...	272
आधुनिकता बोध के उपन्यास (चतुर्थ उत्थान)	...	292
महिला उपन्यासकार	...	305
हिन्दी दलित उपन्यास का विकास	...	307
विविध	...	308
हिन्दी कहानी का विकास	...	310
प्रारम्भिक कहानी	...	310
प्रेमचन्द युग	...	311
प्रेमचन्दोत्तर युग	...	315
समकालीन कहानी (नई कहानी से अब तक)	...	316
महिला कहानीकार	...	323
प्रमुख लेखकों की चर्चित कहानियाँ	...	326
दलित कहानी का विकास	...	327
हिन्दी निबन्ध का विकास	...	330
भारतेन्दु युग	...	330
द्विवेदी युग	...	331
शुक्ल युग	...	332
छायावादोत्तर युग (शुक्लोतर युग)	...	335

		पृठ सं०
(1) ललित निबन्ध	...	336
(2) ग्रामीण चेतना के निबन्ध	...	338
(3) विचार या चिन्तन प्रधान निबन्ध	...	339
(4) व्यंग्यात्मक निबन्ध	...	341
हिन्दी आलोचना का विकास	...	343
भारतेन्दु युग	...	343
द्विवेदी युग	...	343
शुक्ल युग : विशुद्ध आलोचना	...	345
शुक्लोत्तर युग	...	347
मार्क्सवादी या प्रगतिवादी आलोचना	...	350
नई समीक्षा	...	352
स्त्री विमर्श (आलोचना)	...	356
दलित विमर्श (आलोचना)	...	357
विविध	...	358
कथेतर गद्य	...	359
आत्मकथा	...	359
दलित आत्मकथा का विकास	...	362
जीवनी	...	363
यात्रा-साहित्य	...	365
रेखाचित्र	...	367
संस्मरण	...	368
गद्य काव्य	...	371
रिपोर्ताज	...	373
पत्र-साहित्य	...	374
इण्टरव्यू (साक्षात्कार)	...	375
डायरी	...	377
हिन्दी पत्रकारिता	...	378
सन् 1826-1900 ई० तक	...	378
सन् 1901-1938 ई० तक	...	380
सन् 1939-2000 ई० तक	...	382

पृष्ठ सं०
समकालीन पत्रकारिता ... 383
हिन्दी की प्रमुख दलित पत्रिकाएँ ... 384
पुरस्कार एवं सम्मान ... 384
विश्व हिन्दी सम्मेलन ... 388
प्रमुख रचनाकार : उपनाम और उपाधियाँ ... 388
महत्वपूर्ण सभा एवं संस्थाएँ व उनके संस्थापक ... 391

(5) काव्यशास्त्र ... 393-445
संस्कृत आलोचना के प्रमुख आचार्य ... 393
काव्य-लक्षण ... 399
काव्य-हेतु ... 402
काव्य-प्रयोजपन ... 404
रस सम्प्रदाय ... 405
अलंकार परिचय ... 410
छन्द ... 418
पाश्चात्य काव्य शास्त्र : एक परिचय ... 422
प्लेटो ... 422
अरस्तू ... 424
लोंजाइनस ... 427
जॉन ड्राइडेन ... 429
वर्ड्स वर्थ ... 429
कालरिज ... 430
क्रोचे ... 432
इलियट ... 433
रिचर्ड्स ... 436
नयी आलोचना ... 437
विविध वाद ... 438

वस्तुनिष्ठ प्रश्न ... 446-457
स्रोत ग्रन्थ ... 458-460

समर्पण

पिता—स्व० श्री बच्चीराम पाण्डेय
एवं
माता—श्रीमती सुशीला पाण्डेय

पिता—श्री श्याम नारायण पाण्डेय
एवं
माता—श्रीमती गायत्री देवी
जिनसे हमने भाषा सीखी उन्हीं माता-पिता को सादर सभक्ति समर्पित

—सरस्वती पाण्डेय 'नीलू'
—गोविन्द पाण्डेय

भाषा

❑ 'भाषा' शब्द संस्कृत 'भाष्' धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है 'भाष् व्यक्तायां वाचि' अर्थात् व्यक्त वाणी। 'भाष्यते व्यक्तवाग् रूपेण अभिव्यज्यते इति भाषा' अर्थात् भाषा उसे कहते हैं जो व्यक्त वाणी के रूप में अभिव्यक्ति की जाती है।

❑ भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने भाषा की परिभाषा निम्न ढंग से प्रस्तुत की है—

भारतीय विद्वान–

(1) "व्यक्ता वाचि वर्णा येषा त इमे व्यक्तवाचः" अर्थात् जो वाणी वर्णों में व्यक्त हो उसे भाषा कहते हैं।—**पतंजलि**

(2) "भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकते हैं।"—**कामता प्रसाद 'गुरु'**

(3) "मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं।"—**डॉ० श्याम सुन्दरदास**

(4) "भाषा मनुष्यों की उस चेष्टा या व्यापार को कहते है, जिससे मनुष्य अपने उच्चारणोपयोगी शरीरावयवों से उच्चारण किये गये वर्णात्मक या व्यक्त शब्दों द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते हैं।"—**डॉ० मंगलदेव शास्त्री**

(5) "जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उनको समष्टि रूप से भाषा कहते हैं।"—**बाबू राम सक्सेना**

(6) "अर्थवान, कण्ठोद्‌गीर्ण ध्वनि-समष्टि ही भाषा है।"—**सुकुमार सेन**

(7) "भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्थक ध्वनि समष्टि है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन हो सके।"—**डॉ० भोलानाथ तिवारी**

(8) "भाषा यादृच्छिक, रूढ़ उच्चारित संकेत की वह प्रणाली है जिसके माध्यम से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय सहयोग अथवा भावाभिव्यक्ति करते हैं।"—**आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा**

(9) "ध्वन्यात्मक-शब्दों द्वारा हृद्‌गत भावों तथा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।"—**डॉ० पाण्डुरंग दामोदर गुणे**

Scanned by CamScanner

पाश्चात्य विद्वान

(1) "भाषा और कुछ नहीं है, केवल मानव की चतुर बुद्धि द्वारा आविष्कृत एक ऐसा उपाय है जिसकी मदद से हम अपने विचार सरलता और तत्परता से दूसरों पर प्रकट कर सकते हैं और जो चाहते हैं कि इसकी व्याख्या प्रकृति की उपज के रूप में नहीं, बल्कि मनुष्य कृत पदार्थ के रूप में करना उचित है।—**मैक्समूलर**

(2) "ध्वन्यात्मक-शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।—**हेनरी स्वीट**

(3) "भाषा उस स्पष्ट, सीमित तथा सुसंगठित ध्वनि को कहते हैं जो अभिव्यंजना के लिए नियुक्त की जाती है।"—**क्रोचे**

(4) "भाषा एक प्रकार का चिह्न है, चिह्न से तात्पर्य उन प्रतीकों से है, जिनके द्वारा मनुष्य अपना विचार दूसरों पर प्रकट करता है। ये प्रतीक भी कई प्रकार के होते हैं। जैसे नेत्रग्राह्य, श्रोतग्राह्य एवं स्पर्शग्राह्य। वस्तुत: भाषा की दृष्टि से श्रोतग्राह्य प्रतीक ही सर्वश्रेष्ठ हैं।"—**वांद्रेये**

(5) "मनुष्य ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा अपना विचार प्रकट करता है। मानव मस्तिष्क वस्तुत: विचार प्रकट करने के लिए ऐसे शब्दों का निरन्तर उपयोग करता है। इस प्रकार के कार्य-कलाप को ही भाषा की संज्ञा दी जाती है।"—**ओत्तो येस्पर्सन**

(6) "विचारों की अभिव्यक्ति के लिए जिन व्यक्त एवं स्पष्ट ध्वनि संकेतों का व्यवहार किया जाता है, उन्हें भाषा कहते हैं"—**गार्डिनर**

(7) "भाषा यादृच्छिक ध्वनि-संकेतों की वह प्रणाली है जिसके माध्यम से मानव परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करता है।"—**ब्लॉख तथा ट्रेगर**

(8) "भाषा यादृच्छिक ध्वनि-संकेतों की वह पद्धति है जिसके द्वारा मानव समुदाय परस्पर सहयोग एवं विचार-विनिमय करते हैं।"—**स्त्रुतेवाँ**

❑ भाषा की उत्पत्ति के प्रमुख सिद्धान्त तथा उसके प्रवर्तक निम्नलिखित है—

सिद्धान्त	प्रवर्तक
(1) दिव्योत्पत्ति (Divine Theory)	प्राचीन धर्म ग्रन्थ
(2) संकेत (Agreement Throry)	रूसो
(3) रणन (Ding-Dong Theory)	प्लेटो, हेस एवं मैक्समूलर
(4) इंगित (Gesture Theory)	डॉ० राये
(5) धातु (Root Theory)	हेज और मैक्समूलर
(6) श्रम ध्वनि (Yo-He-Ho Theory)	न्वारे (Noire)
(7) सम्पर्क (Contect Theory)	जी० रेवेज
(8) समन्वय	हेनरी स्वीट

❑ सन् 1866 ई० में पेरिस में भाषा-विज्ञान की एक समिति 'ला सिसिएते द लेंगिस्तीक' (La Societe de linguistique) ने अपने अधिनियम में निर्देश दिया कि '**भाषा की उत्पत्ति और विश्वभाषा-निर्माण**' इन दो विषयों पर विचार नहीं किया जाएगा।

❑ भाषा की विशेषताएँ एवं प्रवृत्तियाँ निम्नांकित हैं—

(1) भाषा सामाजिक सम्पत्ति है।
(2) भाषा सतत प्रवहमान, सहज और नैसर्गिक होता है।
(3) भाषा अर्जित सम्पत्ति है।
(4) भाषा परिवर्तनशील है।
(5) भाषा भाव-सम्प्रेषण का माध्यम है।
(6) भाषा अर्जित सम्पत्ति है।
(7) भाषा अनुकरण से सीखी जाती है।
(8) भाषा जटिलता से सरलता तथा संयोगात्मकता से वियोगात्मकता की ओर उन्मुख होती है।
(9) भाषा परम्परागत वस्तु है।
(10) प्रत्येक भाषा की संरचना पृथक होती है।

❑ भाषा विकास के प्रमुख चरण क्रमश: निम्न है—

(1) आंगिक (2) वाचिक (3) लिखित (4) यान्त्रिक

❑ भाषा के विविध रूप होते हैं जो निम्न है—

(1) मानक या परिनिष्ठित भाषा (STANDARD LANGUAGE),
(2) विभाषा, उपभाषा, प्रान्तीय भाषा या बोली (DIALECT)
(3) अपभाषा, अपभ्रष्ट भाषा, या अमानक भाषा (SLANG)
(4) व्यक्ति बोली (Idiolect)
(5) विशिष्ट भाषा (Professional Language)
(6) कूट भाषा (Secret Language)
(7) कृत्रिम भाषा (Artificial Language)
(8) राष्ट्रभाषा (National Language)।

विश्व की भाषाएँ और वर्गीकरण

❑ कुछ विद्वानों ने गणना करके विश्व की सभी भाषाओं की संख्या 2796 बताई है। किन्तु कुछ विद्वान अनुमानत: इसकी संख्या 3000 बताते हैं।

❑ संसार की भाषाओं के दो प्रकार के वर्गीकरण हैं—

(1) आकृति मूलक वर्गीकरण और (2) पारिवारिक वर्गीकरण।

❑ **आकृतिमूलक वर्गीकरण** को रूपात्मक, रचनात्मक, व्याकरणिक वाक्यात्मक, पदात्मक, पदाश्रित के नाम से भी जाना जाता है।

❑ वाक्य रचना एवं रूप (पद) रचना को आधार मानकर जो वर्गीकरण किया जाता है उसे आकृतिमूलक वर्गीकरण कहते हैं।

❑ विश्व की भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण सर्वप्रथम प्रो० श्लेगल ने किया था।

❑ आकृतिमूलक वर्गीकरण का वंशवृक्ष निम्न ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है—

भाषा
- (1) अयोगात्मक
- (2) योगात्मक
  - (क) अश्लिष्ट
    - (i) पूर्वयोगात्मक
    - (ii) मध्ययोगात्मक
    - (iii) अन्तयोगात्मक
    - (iv) पूर्वान्त योगात्मक
  - (ख) श्लिष्ट
    - (i) अन्तर्मुखी
      - (अ) संयोगात्मक
      - (ब) वियोगात्मक
    - (ii) बहिर्मुखी
      - (अ) संयोगात्मक
      - (ब) वियोगात्मक
  - (ग) प्रश्लिष्ट
    - (i) पूर्ण प्रश्लिष्ट
    - (ii) आंशिक प्रश्लिष्ट

❑ आकृतिमूलक भाषाओं की महत्वपूर्ण विशिष्टताएँ एवं उदाहरण निम्नलिखित हैं—

भाषा	विशिष्टताएँ	उदाहरण
(1) अयोगात्मक भाषा (एकाक्षर, निरवयव या स्थान प्रधान भाषा)	इसमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्व और सम्बन्धतत्व का संयोग नहीं होता है। यह स्वतन्त्र शब्दात्मक भाषा है।	चीनी, तिब्बती, बर्मी, सुदामी आदि
(2) योगात्मक भाषा	इसमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्व और सम्बन्ध तत्व का संयोग होता है।	
(क) अश्लिष्ट	यह प्रत्यय प्रधान भाषा है।	तुर्की
(i) पूर्वयोगात्मक	इसमें प्रत्यय प्रकृति के पूर्व लगाता है।	काफिर, जुलू
(ii) मध्य योगात्मक	इसमें प्रत्यय प्रकृति के बीच में लगता है।	संथाली
(iii) अन्तयोगात्मक	इसमें प्रत्यय प्रकृति के अन्त में जोड़ा जाता है।	कन्नड़
(iv) पूर्वांत योगात्मक	इसमें प्रत्यय प्रकृति के पूर्व व अन्त में जोड़ते हैं	मफोर
(ख) श्लिष्ट	इसमें प्रकृति और प्रत्यय घनिष्टता से मिले होते हैं।	
(i) अन्तर्मुखी	इसमें प्रकृति व प्रत्यय बीच में घुलमिल जाते हैं।	
(अ) संयोगात्मक	इसमें अलग से प्रत्यय नहीं लगाया जाता।	अरबी
(ब) वियोगात्मक	इसमें अलग से प्रत्यय लगाया जाता है।	हिब्रू
(ii) बहिर्मुखी	इसमें प्रत्यय प्रकृति के अन्त में या बाद में लगते हैं	
(अ) संयोगात्मक	इसमें प्रत्यय प्रकृति के साथ जुड़ा होता है।	संस्कृत
(ब) वियोगात्मक	इसमें प्रत्यय प्रकृति से अलग लगाया जाता है।	हिन्दी, अंग्रेजी, बांग्ल
(ग) प्रश्लिष्ट	यह समास प्रधान भाषा है।	
(i) पूर्ण प्रश्लिष्ट	यह पूर्ण समास प्रधान भाषा है।	चेरोकी
(ii) अशांकि प्रश्लिष्ट	यह अंशतः समास प्रधान भाषा है।	बास्क

❑ पारिवारिक वर्गीकरण को वंशात्मक, वंशानुक्रमिक, कुलात्मक या ऐतिहासिक वर्गीकरण भी कहते हैं।

❑ पारिवारिक वर्गीकरण में रचना तत्व और अर्थतत्व दोनों का ध्यान रखा जाता है।

❑ पारिवारिक वर्गीकरण में भाषा के इतिहास को आधार बनाया जाता है।

❑ पारिवारिक वर्गीकरण के लिए महत्वपूर्ण आधार निम्न हैं—

(1) पद-रचना, (2) वाक्य रचना, (3) ध्वनि, (4) अर्थ, (5) शब्द और (6) स्थानिक समीपता।

❑ विश्व की भाषाओं के पारिवारों की संख्या के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। विल्हेल्म फॉन हुम्बोल्ट और भोलानाथ तिवारी ने इसकी संख्या 13 मानी है। फ्रीड्रिश म्यूलर ने इसकी संख्या 100 मानी है। निर्विवाद रूप से 4 भौगोलिक क्षेत्र के अन्तर्गत 18 भाषा परिवारों को प्रमुखता दी जाती है, जो निम्न हैं—

भौगोलिक क्षेत्र	भाषा-परिवार
(क) यूरेशिया (यूरोप-एशिया)	(1) भारोपीय (भारत-यूरोपीय), (2) द्राविड़ परिवार, (3) काकेशी परिवार, (4) बुरुशस्की, (5) उराल अल्ताई परिवार, (6) चीनी परिवार, (7) जापानी-कोरियाई परिवार, (8) अत्युत्तरी (हाइपरबोरी) परिवार, (9) बास्क परिवार, (10) सामी हामी परिवार।
(ख अफ्रीका भूखण्ड	(1) सुदानी परिवार, (2) वन्तू परिवार, (3) होतेंतोत-बुशमैन परिवार।
(ग) प्रशान्त महासागीरी भूखण्ड	(1) मलय-पोलिनेशियाई परिवार, (2) पापुई परिवार, (3) आस्ट्रेलियन परिवार, (4) दक्षिण पूर्व एशियाई परिवार।
(घ) अमेरिका भूखण्ड	(1) अमेरिकी परिवार।

भारोपीय परिवार

❑ भारोपीय परिवार को इण्डो-जर्मनिक, आर्य परिवार, भारत-हित्ती परिवार के न से भी जाना जाता है।

❑ भारोपीय परिवार की 10 शाखाएँ हैं जिन्हें ध्वनि के आधार पर 'शतम' (सत और 'केन्तुम' दो वर्गों में बाँटा जाता है—

सतम वर्ग	केतुम वर्ग
(1) भारत-ईरानी (आर्य)	(5) जर्मानिक (ट्यूटानिक)
(2) बाल्टो-स्लाविक	(6) केल्टिक
(3) आर्मीनी	(7) ग्रीक
(4) अल्बानी (इलीरियन)	(8) तोखरी
	(9) हिटाइट
	(10) इटालिक।

❑ डॉ० ग्रियर्सन ने 'भारत-ईरानी (आर्य)' की तीन उपवर्गों का उल्लेख कि है—

(1) ईरानी, (2) दरद और (3) भारतीय आर्यभाषा।

❑ ईरानी साहित्य का प्राचीनतम धर्मग्रन्थ 'अवेस्ता' (7वीं सदी ई० पू०) 'अवेस्ता' का अर्थ 'शास्त्र' है।

❑ अवेस्ता को बैक्ट्रिया की राजभाषा होने के कारण प्राचीन बैक्ट्रियम भी जाता है। कुछ लोग भूलवश 'अवेस्ता' को 'जिन्द' भी कहते हैं।

❑ महाकवि फिरदौसी का 'शाहनामा' ईरान का राष्ट्रीय महाकाव्य है।

❑ ईरानी भाषाओं का वंशवृक्ष निम्न ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है—

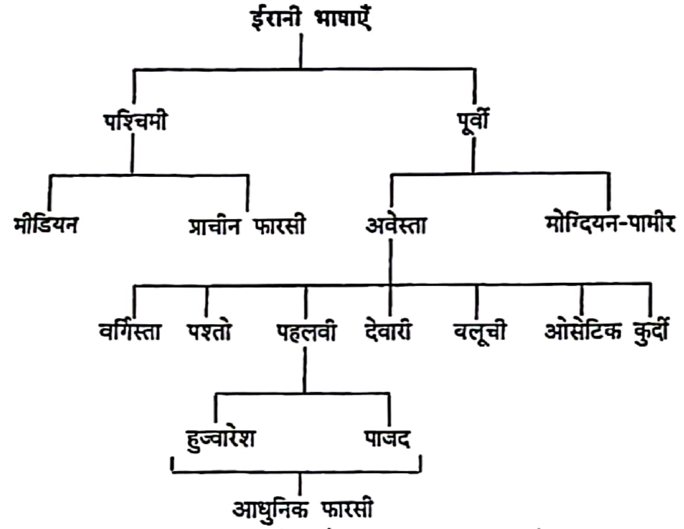

❑ 'दरद' शब्द का अर्थ 'पर्वत' होता है। इसका प्राचीन नाम 'पैशाची प्राकृत' भी है।

❑ दरद भाषाओं का क्षेत्र पामीर और पश्चिमोत्तर पंजाब है।

❑ दरद उपवर्ग की प्रमुख भाषाएँ कश्मीरी, शीना, चित्राली, काफिर, कोहिस्तानी आदि हैं।

भारतीय आर्यभाषाएँ

भारतीय आर्य-भाषा-समूह को काल क्रम की दृष्टि से निम्न वर्गों में बाँटा गया है—

(अ) प्राचीन भारतीय आर्य-भाषा–2000 ई० पू० से 500 ई० पू० तक।

(1) वैदिक संस्कृत—2000 ई० पू० से 800 ई० पू० तक।

(2) संस्कृत अथवा लौकिक संस्कृत—800 ई० पू० से 500 ई० पू० तक।

(ब) मध्य कालीन आर्य-भाषा–500 ई० पू० से 1000 ई० पू० तक।

(1) पालि (प्रथम प्राकृत)—500 ई० पू० से 1 ई० तक।

(2) प्राकृत (द्वितीय-प्राकृत)—1 ई० से 500 ई० तक।

(3) अपभ्रंश (तृतीय प्राकृत)—500 ई० से 1000 ई० तक।

(स) आधुनिक भारतीय आर्य-भाषा–1000 से अब तक।

(अ) प्राचीन भारतीय आर्य-भाषा

(1) वैदिक संस्कृत—प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का प्राचीनतम नमूना

वैदिक-साहित्य में दिखाई देता है। वैदिक साहित्य का सृजन वैदिक संस्कृत में हुआ है। वैदिक संस्कृत को वैदिकी, वैदिक, छन्दस्, छान्दस् आदि भी कहा जाता है। वैदिक साहित्य को तीन विभागों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(1) संहिता, (2) ब्राह्मण एवं (3) उपनिषद्।

संहिता-विभाग में 'ऋक् संहिता', 'यजुः संहिता', 'साम संहिता' एवं 'अथर्व संहिता' आते हैं। महत्व की दृष्टि से प्रधान 'ऋक् संहिता' है। 'ऋक्' का शाब्दिक अर्थ है स्तुति करना। ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त एवं 10580 ऋचाएँ हैं। इसके सूक्त प्रायः य के अवसरों पर पढ़ने के लिए देवताओं की स्तुतियों से सम्बन्ध रखने वाले गीतात्म काव्य हैं। 'यजुः संहिता' में यज्ञों के कर्मकाण्ड में प्रयुक्त मन्त्र पद्य एवं गद्य दोनों रू में संगृहीत हैं। 'यजुः संहिता', कृष्ण एवं शुक्ल इन दो रूपों में सुरक्षित है। 'कृष्ण यजुर्वे संहिता में मंत्र भाग एवं गद्यमय व्याख्यात्मक भाग साथ-साथ संकलित किये गये हैं। पर शुक्ल यजुर्वेद संहिता में केवल मन्त्र भाग संगृहीत है। 'सामवेद' में सोम यागों में वी के साथ गाये जाने वाले सूक्तों को गेय पदों के रूप में सजाया गया है। 'सामवेद' केवल 75 मन्त्र ही मौलिक हैं शेष ऋग्वेद से लिए गए हैं। 'अथर्ववेद संहिता' जन साधा में प्रचलित मन्त्र-तन्त्र, टोने-टोटको का संकलन है।

ब्राह्मण-भाग में कर्मकाण्ड की व्याख्या की गई है। प्रत्येक संहिता के अपने-अ ब्राह्मण ग्रंथ हैं। इनमें ऋग्वेद का 'ऐतरेय ब्राह्मण', सामवेद का 'ताण्डव अथवा पंचवि ब्राह्मण', शुक्ल यजुर्वेद का 'शतपथ ब्राह्मण', कृष्ण यजुर्वेद का तैत्तिरीय-ब्राह्मण' प्र महत्वपूर्ण है।

ब्राह्मण ग्रन्थों के परिशिष्ट या अन्तिम भाग उपनिषदों के नाम से प्रसिद्ध हुए। इ वैदिक मनीषियों के आध्यात्मिक एवं पारमार्थिक चिन्तन के दर्शन होते हैं। उपनिषदों संख्या 108 बताई गई है किन्तु 12 उपनिषद ही मुख्य हैं—(1) ईश, (2) केन, (3) क (4) प्रश्न, (5) वृहदारण्यक, (6) ऐतरेय, (7) छान्दोग्य, (8) तैत्तरीय, (9) मुण्डक, (1 माण्डूक्य, (11) कौषीतकी, (12) श्वेताश्वेतर उपनिषद।

ऋषियों द्वारा निर्मित सूक्त दीर्घकाल तक श्रुति-परम्परा में ऋषि-परिवारों में सुर रखे जाते रहे। परन्तु शनैः शनैः बोलचाल की भाषा से सूक्तों की भाषा (साहित्यिक भा की भिन्नता बढ़ती गई। सूक्तों के प्राचीन रूप को सुरक्षित रखने के लिए संहिता प्रत्येक पद को सन्धि रहित अवस्था में अलग-अलग कर 'पद-पाठ' बनाया गया तथा पाठ से संहिता पाठ बनाने के नियम निर्दिष्ट किये गये और इस प्रकार वेद की विभि शाखाओं के 'प्रातिशाख्यों' की रचना हुई। वेद की 1130 शाखाएँ मानी गयी हैं कि वर्तमान में छह प्रातिशाख्य ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं—

(1) शौनक कृत ऋक्-प्रातिशाख्य, (2) कात्यायन शुक्ल-यजुः-प्रातिशाख्य, (3) तैत्तिरीय संहिता का तैत्तिरीय-प्रातिशाख्य, मैत्रायणी-संहिता का मैत्रायणी-प्रातिशाख्य (कृष्ण यजुर्वेद के प्रातिशाख्य), सामवेद का पुष्प सूत्र, (6) अथर्ववेद का शौनक कृत अथर्व प्रातिशाख्य। प्रातिशाख्यों में अपनी-अपनी शाखा से सम्बन्धित वर्ण विचार, उच्चारण, पद

आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। ये ग्रन्थ वैदिक काल के सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक ध्वनि विज्ञान के ग्रन्थ हैं।

वैदिक संस्कृत ध्वनियाँ—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० उदय नारायण तिवारी, डॉ० कपिल देव द्विवेदी प्रभृति विद्वानों ने वैदिक ध्वनियों की संख्या 52 मानी है जिसमें 13 स्वर तथा 39 व्यंजन हैं। डॉ० हरदेव बाहरी ने वैदिक स्वरों की संख्या 14 मानी है। वैदिक ध्वनियों का वर्गीकरण निम्न ढंग से किया जा सकता है—

वैदिक स्वर (संख्या 13)

मूल स्वर—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ

संयुक्त स्वर—ए, ओ, ऐ, औ

वैदिक व्यंजन (संख्या 39)

स्थान	अघोष		घोष			अघोष	अर्धस्वर
	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	ऊष्म/ महाप्राण	अन्तस्थ
कण्ठ	क	ख	ग	घ	ङ		
तालव्य	च	छ	ज	झ	ञ	श	य
मूर्धन्य	ट	ठ	ड, ळ	ढ, ळह्	ण	ष	र
दन्त्य	त	थ	द	ध	न	स	ल
ओष्ठ	प	फ	व	भ	म		व
				ह	(ं) अनुस्वार	(:) विसर्ग जिह्वामूलीय उपध्मानीय	

अल्पप्राण - 1,3,5. महाप्राण - 2,4
अघोष - 1,2, सघोष - 3,4,5

वैदिक संस्कृत की विशेषताएँ

(1) वैदिक संस्कृत श्लिष्ट योगात्मक है।

(2) वैदिक संस्कृत में संगीतात्मक एवं बलात्मक दोनों ही स्वराघात मौजूद है।

(3) वैदिक संस्कृत में तीन लिंग (पुलिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकं लिंग), तीन वचन (एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन), तीन वाच्य (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य) एवं आठ विभक्तियों (कर्ता, सम्बोधन, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण) का प्रयोग मिलता है।

(4) वैदिक संस्कृत में धातुओं के रूप आत्मने एवं परस्मै दो पदों में चलते थे। कुछ एक धातुएँ उभयपदी थीं।

(5) डॉ० भोलानाथ तिवारी के अनुसार वैदिक संस्कृत में केवल तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि एवं द्वन्द्व ये चार ही समास मिलते हैं।

(6) वैदिक संस्कृत में काल एवं भाव (क्रियार्थ) मिलाकर क्रिया के 10 प्रका रूपों का प्रयोग मिलता है—

चार-काल—(1) लट् (वर्तमान), (2) लिट् (परोक्ष या सम्पन्न), (3) (अनद्यतन या सम्पन्न), (4) लुङ् (सामान्य भूत)।

छह भाव—(1) लोट् (आज्ञा), (2) विधि लिङ् (सम्भावनार्थ), (3) आशी (इच्छार्थ), (4) लृङ् (हेतुहेतु समुद्भाव या निर्देश), (5) लेट (अभिप्राय) और (6) (निर्बन्ध)।

क्रिया के 10 काल और भाव भेद को ही लकार कहते हैं।

(7) वैदिक संस्कृत में विकरण की भिन्नता के अनुसार धातुओं को 10 ग विभिक्त किया गया था जो निम्न है—

गण	भ्वादिगण	अदादिगण	जुहोत्यादिगण	दिवादिगण	स्वादि
विकरण	अ	विकरण रहित	द्वित्व	य	नु
गण	तुदादि	रुधादि	तनादि	क्रयादि	चु
विकरण	अ	न	उ	ना	अ

(2) **लौकिक संस्कृत**—'प्राचीन-भारतीय-आर्य-भाषा' का वह रूप जिसका की 'अष्टाध्यायी' में विवेचन किया गया है, वह 'लौकिक संस्कृत' कहलाता है। में 48 ध्वनियाँ ही शेष रह गई। वैदिक संस्कृत की 4 ध्वनियाँ ळ, ळ्ह, जिह्वामूलीय उपध्मानीय के लुप्त होने से लौकिक संस्कृत की 48 ध्वनियाँ शेष बच गयी।

(ब) मध्यकालीन आर्य भाषा

(1) **पालि (प्रथम प्राकृत)**—'पालि' का अर्थ 'बुद्ध वचन' (पा रक्खतीति बुद्ध इति पालि) होने से यह शब्द केवल मूल त्रिपिटक ग्रन्थों के लिए प्रयुक्त हुआ ही त्रिपिटक ग्रन्थों की रचना हुई। त्रिपिटकों की संख्या तीन है—(1) सुत पिट विनय पिटक एवं (3) अभिधम्म पिटक। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से अशोक के पुत्र कुमार महेन्द्र त्रिपिटकों के साथ लंका गए। वहाँ लंका नरेश 'वट्ट (ई० पू० 291) के संरक्षण में थेरवाद का त्रिपिटक (बुद्ध के उपदेशों का संग्रह) बद्ध हुआ। 'पालि' भारत की प्रथम 'देश भाषा' है।

□ 'सुत्त पिटक' साधारण वातचीत के ढंग पर दिये गये बुद्ध के उपदेशों का है। इस पिटक के अन्तर्गत पाँच निकाय आते हैं जो निम्न हैं—(1) दीघ निकाय, मज्झिम निकाय, (3) संयुक्त निकाय, (4) अंगुत्तर निकाय और (5) खुद्दक निकाय। निकाय में पन्द्रह ग्रन्थ हैं—(1) खुद्दक पाठ, (2) धम्म पद, (3) उदान, (4) इति (5) सुत्तनिपात, (6) विमानवत्थु, (7) पेतवत्थु, (8) थेरगाथा, (9) थेरीगाथा, जातक, (11) निद्देस, (12) पटिसम्भिदामग्ग, (13) अपदान, (14) बुद्धवंस एवं चरियापिटक।

□ 'विनय-पिटक' में बुद्ध की उन शिक्षाओं का संकलन है जो उन्होंने समय-समय पर संघ-संचालन को नियमित करने के लिए दी थीं। 'विनय-पिटक' में निम्नलिखित ग्रन्थ है—(1) महावग्ग, (2) चुल्लवग्ग, (3) पाचित्तिय, (4) पाराजिक, (5) परिवार।

□ 'अभिधम्म-पिटक' में चित्त, चैतसिक आदि धर्मो का विशद् विश्लेषण किया गया है। 'सुत्तपिटक' के उपदिष्ट सिद्धान्तों के आधार पर ही वस्तुतः 'अभिधम्म पिटक' का विकास हुआ है। 'अभिधम्म पिटक' में सात ग्रन्थ हैं—(1) धम्म संगणी, (2) विभंग, (3) धातुकथा, (4) पुग्गल पञ्ञत्ति, (5) कथावत्थु (6) यमक, (7) पट्ठान।

□ 'पालि' में त्रिपिटक साहित्य के अलावा 'अट्ठकथा साहित्य', 'मिलिन्दपञ्हो', 'दीपवंश', 'महावंश' आदि ग्रन्थ भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन ग्रन्थों के अनुशीलन से पता चलता है कि पालि का प्रचार न केवल उत्तरी भारत में था अपितु बर्मा, लंका, तिव्वत, चीन आदि देशों तक विस्तारित था।

□ 'अट्ठकथा—साहित्य' के प्रणेता आचार्य बुद्धघोष वतलाये जाते हैं, जिनका समय ईसा की पाँचवीं शताब्दी निश्चित है।

□ बुद्धघोष कृत 'विसुद्धि मग्ग' (विशुद्धमार्ग) को बौद्ध सिद्धान्तों का कोश भी कहा जाता है।

□ पालि भाषा के तीन व्याकरण ग्रन्थ उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैं—(1) कच्चान व्याकरण, (2) मोग्गलान व्याकरण तथा (3) सद्नीति।

□ 'कच्चान व्याकरण' (7वीं शती) के रचयिता महाकच्चायन माने जाते हैं। कालक्रम में यह सर्वप्राचीन पालिव्याकरण है।

□ 'कच्चान व्याकरण' को 'कच्चान गन्ध' या 'सुसन्धिकप्प' भी कहा जाता है।

□ 'कच्चायन व्याकरण' में चार कप्प (सन्धि कप्प, नाम कप्प, आख्यात कप्प तथा किब्बिधानकप्प), 23 परिच्छेद तथा 675 सूत्र हैं।

□ 'मोग्लान व्याकरण' के रचयिता मोग्गलान है। इन्होंने ही इस पर वृत्ति और पंचिका लिखी है।

□ मोग्गलान श्रीलंका के अनुराधपुर के थूपाराम बिहार में रहते थे तथा वे अपने समय के संघराज थे।

□ 'मोग्लान व्याकरण', पालि व्याकरण में पूर्णता तथा गम्भीरता में सर्वश्रेष्ठ व्याकरण है। इस व्याकरण में 817 सूत्र हैं।

□ 'सद्नीति व्याकरण ' (1154 ई०) के रचयिता बर्मी भिक्षु अग्गवंश थे, ये 'अग्गपण्डित तृतीय' भी कहलाते थे।

□ 'सद्नीति व्याकरण' तीन भाग (पदमाला, धातुमाला और सूत्तमाला)। 27 अध्याय तथा 1391 सूत्रों में निबद्ध है।

□ विभिन्न विद्वानों द्वारा 'पालि' शब्द की व्युत्पत्ति निम्नलिखित ढंग से बताई गई है—

विद्वान	व्युत्पत्ति
आचार्य विधुशेखर	पन्ति > पत्ति > पट्ठि > पल्लि > पालि
मैक्स वालेसर	पाटलि पुत्र या पाटलि
भिक्षु जगदीश काश्यप	परियाय > पलियाय > पालियाय > पालि
भण्डारकर व वाकर नागल	प्राकृत > पाकट > पाअड > पाउल > पालि
भिक्षु सिद्धार्थ	पाठ > पाळ > पाळि > पालि
कोसाम्बी	पाल् > पालि
उदयनारायण तिवारी	पा + णिच् + लि = पालि

❑ पालि भाषा के प्रदेश को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद है। विभिन्न विद्वानों द्वारा वर्णित पालि भाषा का प्रदेश निम्नांकित है—

विद्वान	पालि भाषा प्रदेश
श्रीलंकाई बौद्ध तथा चाइल्डर्स	मगध
वेस्टरगार्ड तथा स्टेनकोनो	उज्जयिनी या विन्ध्य प्रदेश
ग्रियर्सन व राहुल	मगध
ओलडेन वर्ग	कलिंग
रीज़ डेविड्स	कोसल
सुनीतिकुमार चटर्जी	मध्यदेश की बोली
देवेन्द्रनाथ शर्मा	मथुरा के आसपास का भू-भाग
उदयनारायण तिवारी	मध्यदेश की बोली

❑ सर्वसम्मति से विद्वानों ने पालि भाषा का प्रदेश, मध्य प्रदेश की बोली को स्वीकार किया है।

पालि की वर्ण संघटना या ध्वनियाँ—पालि के प्रसिद्ध वैयाकरण कच्चायन के अनुसार पालि में 41 ध्वनियाँ होती है तथा मोग्गलान के अनुसार पालि में कुल 43 ध्वनियाँ होती है।

❑ कच्चायन के अनुसार पालि में 8 स्वर तथा 33 व्यंजन होते हैं तथा मोग्गलान के अनुसार 10 स्वर तथा 33 व्यंजन होते हैं।

❑ पालि में वर्णों का वर्गीकरण निम्न ढंग से किया जा सकता है—

स्वर—

हृस्व—अ, इ, उ, एँ, ओं

दीर्घ—आ, ई, ऊ, ए, ओ

व्यंजन—

क वर्ग—क, ख, ग, घ, ङ

च वर्ग—च, छ, ज, झ, ञ

ट वर्ग—ट, ठ, ड, ढ, ण

त वर्ग—त, थ, द, ध, न

प वर्ग—प, फ, ब, भ, म

य, र, ल, व, स, ह, ळ, अं

❑ पालि भाषा की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) अनुस्वार (अं) पालि में स्वतन्त्र ध्वनि है जिसे पालि वैयाकरण ने निग्गहीत नाम से अभिहित किया है। (बिन्दु निग्गहीत)।

(2) टर्नर के अनुसार पालि में वैदिकी की भाँति ही संगीतात्मक एवं बलात्मक, दोनों स्वराघात थीं। ग्रियर्सन तथा भोलानाथ तिवारी पालि में बलात्मक स्वराघात मानते हैं। जबकि जूल ब्लाक किसी भी स्वराघात को नहीं स्वीकार करते हैं।

(3) पालि में तीन लिंग, तीनवाच्य तथा दो वचन (एक वचन और बहुवचन) का प्रयोग मिलता है। पालि में द्विवचन नहीं होता है।

(4) पालि हलन्त रहित, छह कारक, आठ लकार (चार काल, चार भाव) तथा आठ गण युक्त भाषा है।

❑ प्रथम प्राकृत (पालि) के अन्तर्गत ही **अभिलेखी प्राकृत या शिलालेखी प्राकृत** भी आता है। इसके अधिकांश लेख शिला पर अंकित होने के कारण इसकी संज्ञा 'शिलालेखी प्राकृत' हुई।

(2) प्राकृत (द्वितीय प्राकृत)—मध्यकालीन आर्यभाषा को 'प्राकृत' भी कहा गया है। 'प्राकृत' की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में दो मत प्रचलित है जो निम्न है—

(1) प्राकृत प्राचीनतम् जनभाषा है—प्राकृत प्राचीनतम प्रचलित जनभाषा है। नमि साधु ने इसका निर्वचन करते हुए लिखा है—"प्राक् पूर्व कृतं प्राकृतं" अर्थात् प्राक् कृत शब्द से इसका निर्माण हुआ है जिसका अर्थ है पहले की बनी हुई। जो भाषा मूल से चली आ रही है उसका नाम 'प्राकृत' है (नाम प्रकृते: आगतं प्राकृतम)। नामि साधु ने 'काव्यालंकार' की टीका में लिखा है, "प्राकृतेति सकल-जगज्जन्तूनां व्याकरणादि मिरनाहत संस्कार: सहजो वचन व्यापार: प्रकृति: प्रकृति तत्र भव: सेव वा प्राकृतम्" अर्थात सकल जगत के जन्तुओं (प्राणियों) के व्याकरण आदि संस्कारों से रहित सहजवचन व्यापार को प्रकृति कहते हैं। उससे उत्पन्न अथवा वही प्राकृत है। वाक्पतिराज ने 'गउडबहो' में लिखा है—

"सयलाओ इमं वाया विसंति एत्तो य णेंति वायाओ।
एंति समुद्दं चिह णेंति सायराओ च्चिय जलाईं॥"

अर्थात् जिस प्रकार जल सागर में प्रवेश करता है और वही से निकलता है उसी प्रकार समस्त भाषाएँ प्राकृत में ही प्रवेश करती हैं और प्राकृत से ही निकलती हैं।

(2) प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है—इस मत की पुष्टि करने वाले विद्वान निम्न लिखित है—

(i) "प्रकृति: संस्कृतं तत्र भवं तत आगतंवा प्राकृतम्" अर्थात् प्रकृति या मूल

संस्कृत है और जो संस्कृत से आगत है, वह प्राकृत है। (हेमचन्द्र)

(ii) "प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते" अर्थात् प्रकृति या मूल संस्कृत है, उससे उत्पन्न भाषा को प्राकृत कहते हैं। (प्राकृत सर्वस्य—मार्कण्डेय)

(iii) "प्राकृतस्य सर्वमेव संस्कृत योनिः "अर्थात् प्राकृत की जननी संस्कृत है। (प्राकृत-संजीवनी—वासुदेव)

(iv) "प्रकृतेः संस्कृतायास्तु विकृतिः प्राकृती मता" अर्थात् संस्कृत की विकृति प्राकृत है। (षड् भाषाचन्द्रिका—लक्ष्मीधर)[1]

(v) "प्रकृतेः संस्कृतात् आगतं प्राकृतम्" अर्थात् प्रकृति संस्कृत से आगत प्राकृत है। (सिंह देवमणि)

❑ अब प्रायः सभी विद्वानों से इस वात को स्वीकार लिया है कि प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है।

❑ द्वितीय प्राकृत को 'साहित्यिक प्राकृत' भी कहते हैं। प्राकृत भाषाओं के विषय में सर्वप्रथम भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में विचार किया।

❑ भरतमुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में 7 मुख्य प्राकृत तथा 7 गौण विभाषा की चर्चा की, जो अग्रांकित है—

मुख्य प्राकृत	गौण विभाषा
मागधी	शाबरी
अवन्तिजा	आभीरी
प्राच्या	चाण्डाली
सूरसेनी (शौरसेनी)	सचरी
अर्धमागधी	द्राविड़ी
बाह्लीक	उद्रजा
दाक्षिणात्य (महाराष्ट्री)	वनेचरी

❑ प्राकृत-वैयाकरणों में सर्वप्रथम नाम वररुचि (7वीं शताब्दी) का आता है। इनके व्याकरण का नाम 'प्राकृत प्रकाश' है। इसमें 12 परिच्छेद है।

❑ वररुचि ने 'प्राकृत प्रकाश' ग्रन्थ में प्राकृत भाषा के चार भेद बताए हैं, जो निम्नांकित है—

(1) महाराष्ट्री, (2) पैशाची, (3) मागधी और (4) शौरसेनी।

❑ हेमचन्द्र ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'प्राकृत-व्याकरण' में प्राकृत भाषा के तीन और भेदों की चर्चा की, जो निम्न है—

(1) आर्षी (अर्धमागधी), (2) चूलिका पैशाची, और (3) अपभ्रंश।

❑ हेमचन्द्र को प्राकृत का पाणिनी माना जाता है। अपने व्याकरण के उदाहरणों के लिए हेमचन्द्र ने भट्टी के समान एक 'द्वयाश्रय काव्य' की भी रचना की है।

❑ हेमचन्द्र की 'चूलिका-पैशाची' को ही आचार्य दण्डी ने 'भूत भाषा' कहा है।

❑ महाराष्ट्री को प्राकृत वैयाकरणों ने आदर्श, परिनिष्ठित तथा मानक प्राकृत माना है। इस प्राकृत का मूल स्थान महाराष्ट्र है।

❑ डॉ० हार्नले के अनुसार महाराष्ट्री का अर्थ 'महान राष्ट्र' की भाषा है। महान राष्ट्र के अन्तर्गत राजपुताना तथा मध्यप्रदेश आदि आते हैं।

❑ जार्ज ग्रियर्सन एवं जूल ब्लाक ने महाराष्ट्री प्राकृत से ही मराठी की उत्पत्ति मानी है।

❑ भरतमुनि ने 'दाक्षिणात्य प्राकृत' भाषा का भेद महाराष्ट्री के लिए ही किया है।

❑ अवन्ती और वाह्लीक, ये दोनों भाषाएँ महाराष्ट्री भाषा में अन्तर्भूत है।

❑ डॉ० मन मोहन घोष और डॉ० सुकुमार सेन का अभिमत है कि महाराष्ट्री प्राकृत शौरसेनी का ही विकसित रूप है।

❑ आचार्य दण्डी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'काव्यादर्श' में महाराष्ट्री को सर्वोत्कृष्ट प्राकृत भाषा बतलाया है—

"महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदु :।
सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयाम्।।"

❑ महाराष्ट्री प्राकृत में लिखी गई प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) राजा हाल कृत 'गाहा सतसई' (गाथा-सप्तशती), (2) प्रवरसेन कृत 'रावण वहो' (सेतुबन्धः), (3) वाक्पति कृत 'गउडवहो' (गौडवधः), (4) जयवल्लभ कृत 'वज्जालग्ग', (5) हेमचन्द्र कृत 'कुमार पाल चरित'।

❑ शौरसेनी प्राकृत मूलतः शूरसेन या मथुरा के आसपास की वोली थी। मध्यदेश की भाषा होने के कारण शौरसेनी का वहुत आदर था। (यो मध्ये मध्यदेशं विवसति स कविः सर्वभाषा निषण्णाः)। डॉ० पिशेल के अनुसार इसका विकास दक्षिण में हुआ।

❑ शौरसेनी मूलतः नाटकों के गद्य की भाषा थी। आचार्य भरतमुनि ने लिखा भी है—"शौरसैनम् समाश्रित्य भाषा कार्य तु नाटके।"

❑ विद्वानों ने शौरसेनी प्राकृत का आधार भिन्न-भिन्न बताया है, जो निम्नलिखित है—

विद्वान	शौरसेनी का आधार
वररुचि	संस्कृत (प्रकृतिः संस्कृतम्)
रामशर्मन	महाराष्ट्री (विरच्यते सम्प्रति शौरसेनी पूर्वेवभाषा प्रकृतिः किलास्याः)
पुरुषोत्तम	संस्कृत तथा महाराष्ट्री ('संस्कृतानुगमनाद् बहुलम'; तथा 'शेषं महाराष्ट्री')

❑ वररुचि ने शौरसेनी प्राकृत को ही प्राकृत-भाषा का मूल माना है (प्रकृतिः शौरसेनी—प्राकृत प्रकाश—10-2)।

❑ पैशाची प्राकृत को पैशाचिकी, पैशाचिका, ग्राम्य भाषा, भूतभाषा, भूतवचन, भूतभाषित आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

❑ जार्ज ग्रियर्सन ने पैशाची भाषा-भाषी लोगों का आदिम-वास-स्थान उत्तर-पश्चिम पंजाब अथवा अफगानिस्तान को माना है तथा इसे 'दरद' से प्रभावित बताया।

❑ लक्ष्मीधर ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'षड् भाषा चँद्रिका' में राक्षस, पिचाश तथा नीच पात्रों के लिए पैशाची भाषा का प्रयोग बतलाया है (रक्ष पिशाचनीचेषु पैशाची द्वितयं भवेत्)।

❑ मार्कण्डेय ने 'प्राकृत सर्वस्व' में कैकय पैशाची, शौरसेन पैशाची और पाञ्चाल पैशाची, इन तीन प्रकार की पैशाची भाषाओं का तीन देशों के आधार पर नामकरण किया है।

❑ **मागधी प्राकृत** मगध देश की भाषा रही है। मार्कण्डेय ने शौरसेनी से मागधी की व्युत्पत्ति बतायी है। (मागधी शौरसेनीत:)।

❑ मागधी के शाकारी, चाण्डाली और शाबरी, ये तीन प्रकार मिलते हैं। मागधी प्राकृत का प्राचीनतम रूप अश्वघोष के नाटकों में मिलता है।

❑ भरतमुनि के अनुसार मागधी अन्त:पुर के नौकरों, अश्वपालों आदि की भाषा थी।

❑ **अर्धमागधी प्राकृत** के सम्बन्ध में जार्ज ग्रियर्सन ने बताया कि यह मध्य देश (शूरसेन) और मगध के मध्यवर्ती देश (अयोध्या या कोसल) की भाषा थी।

❑ श्रीजिनदा सगणिमहत्तर (7वीं शताब्दी) ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'निशीथचूर्णि' में अर्धमागधी को मगधदेश के अर्ध प्रदेश की भाषा में निबद्ध होने के कारण अर्धमागध कहा है (मगहद्ध विसयभाषा निबद्धं अद्धमागहं)।

❑ अर्धमागधी का प्रयोग मुख्यत: जैन-साहित्य में हुआ है। भगवान् महावीर का सम्पूर्ण धर्मोपदेश इसी भाषा में निबद्ध है।

❑ जैनियों ने अर्धमागधी को 'आर्ष', 'आर्षी', 'ऋषिभाषा' या 'आदिभाषा' नाम से भी अभिहित किया है।

❑ डॉ० जैकोबी ने प्राचीन जैन-सूत्रों की भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री कहकर 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है।

❑ आचार्य विश्वनाथ ने 'साहित्य दर्पण' में अर्धमागधी को चेट, राजपूत एवं सेठों की भाषा बताया है।

(3) **अपभ्रंश (तृतीय प्राकृत)**—'अपभ्रंश' मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा और आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के बीच की कड़ी है। इसीलिए विद्वानों ने 'अपभ्रंश' को एक सन्धिकालीन भाषा कहा है।

❑ भर्तृहरि के 'वाक्यपदीयम्' के अनुसार सर्वप्रथम व्याडि ने संस्कृत के मानक शब्दों से भिन्न संस्कारच्युत, भ्रष्ट और अशुद्ध शब्दों को 'अपभ्रंश' की संज्ञा दी। भर्तृहरि ने लिखा है—

"शब्दसंस्कारहीनो यो गौरिति प्रयुयुक्षते।
तमपभ्रंश मिच्छन्ति विशिष्टार्थ निवेशिनम्।।"

❑ व्याडि की पुस्तक का नाम 'लक्षश्लोकात्मक-संग्रह' था जो दुर्भाग्य-वश अनुपलब्ध है।

❑ 'अपभ्रंश' शब्द का सर्वप्रथम प्रामाणिक प्रयोग पतंजलि के 'महाभाष्य' में मिलता है। महाभाष्यकार ने 'अपभ्रंश' का प्रयोग 'अपशब्द' के समानार्थक के रूप में किया है—

"भूयां सोऽपशब्दा: अल्पीयांस: शब्दा: इति। एकैकस्य हि शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशा:।।"

❑ 'अपभ्रंश' के सबसे प्राचीन उदाहरण भरतमुनि के 'नाट्य-शास्त्र' में मिलते हैं, जिसमें 'अपभ्रंश' को 'विभ्रष्ट' कहा गया है।

❑ डॉ० भोलानाथ तिवारी और डॉ० उदयनारायण तिवारी के अनुसार, भाषा के अर्थ में 'अपभ्रंश' शब्द का प्रथम प्रयोग—चण्ड (6वीं शताब्दी) ने अपने 'प्राकृत-लक्षण' ग्रन्थ में किया है। (न लोपोऽपभ्रंशेऽधो रेफस्य)।

❑ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, "अपभ्रंश" नाम पहले पहल बलभी के राजा धारसेन द्वितीय के शिलालेख में मिलता है जिसमें उसने अपने पिता गुहसेन (वि० सं० 650 के पहले) को संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश तीनों का कवि कहा है।"

❑ भामह ने 'काव्यालंकार' में अपभ्रंश को संस्कृत और प्राकृत के साथ एक काव्योपयोगी भाषा के रूप में वर्णित किया है—

"संस्कृतं प्राकृतं चान्यदपभ्रंश इति त्रिधा।"

❑ आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने अपभ्रंश को **'ण-ण भाषा'** कहा है।

❑ आचार्य दण्डी ने 'काव्यादर्श' में समस्त वाङ्मय को संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और मिश्र, इन चार भागों में विभक्त किया है—

"तदेतद् वाङ्मयं भूय: संस्कृत प्राकृतं तथा।
अपभ्रंशश्च मिश्रञ्चेत्याहुशर्याश्चतुर्विधम्।।"

❑ आचार्य दण्डी ने 'काव्यादर्श' में अपभ्रंश को 'आभीर' भी कहा है—

"आभीरादि गिरथ: काव्येष्वपभ्रंश: इति स्मृता:।"

❑ अपभ्रंश को विद्वानों ने विभ्रष्ट, आभीर, अवहंस, अवहट्ठ, पटमंजरी, अवहत्थ, औहट, अवहट आदि नामों से भी पुकारा है।

❑ विभिन्न विद्वानों ने अपभ्रंश के निम्नलिखित भेद बताए हैं—

विद्वान	अपभ्रंश के भेद
नमि साधु	(1) उपनागर, (2) आभीर, (3) ग्राम्य।
मार्कण्डेय	(1) नागर, (2) उपनागर, (3) व्राचड।
याकोबी	(1) पूर्वी, (2) पश्चिमी, (3) दक्षिणी, (4) उत्तरी।
तागरे	(1) पूर्वी, (2) पश्चिमी, (3) दक्षिणी।
नामवर सिंह	(1) पूर्वी और (2) पश्चिमी।

❑ डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी ने अपभ्रंश को भारतीय आर्यभाषा के विकास की एक 'स्थिति' माना है। इनके अनुसार 6वीं से 11वीं शती तक प्रत्येक प्राकृत का अपना

अपभ्रंश रूप रहा होगा—जैसे मागधी प्राकृत के बाद मागधी अपभ्रंश, अर्धमागधी प्राकृत के बाद अर्धमागधी अपभ्रंश, शौरसेनी प्राकृत के बाद शौरसेनी अपभ्रंश एवं महाराष्ट्री प्राकृत के बाद महाराष्ट्री अपभ्रंश आदि।

अपभ्रंश की ध्वनियाँ—डॉ० उदयनारायण तिवारी ने अपभ्रंश की ध्वनियों का वर्गीकरण निम्न ढंग से किया है—

स्वर–

ह्रस्व—अ, इ, उ, एँ, ओँ		10 स्वर
दीर्घ—आ, ई, ऊ, ए, ओ		

व्यंजन–

कण्ठ्य	क, ख, ग, घ	4
तालव्य	च, छ, ज, झ	4
मूर्धन्य	ट, ठ, ड, ढ, ण	5
दन्त्य	त, थ, द, ध, (न-पूर्वी अप०)	5
ओष्ठ्य	प, फ, व, भ, म	5
अन्तस्थ	य, र, ल, व (श-पूर्वी अपभ्रंश)	5
ऊष्म	स, ह	2
		व्यंजन = 30

❑ अपभ्रंश भाषा की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित है—

(1) अपभ्रंश को उकार बहुला भाषा कहा गया है।

(2) अपभ्रंश वियोगात्मक हो रही थी अर्थात् अपभ्रंश में विभक्तियों के स्थान पर स्वतन्त्र परसर्गों का प्रयोग होने लगा था।

(3) अपभ्रंश में दो वचन (एकवचन और बहुवचन) और दो ही लिंग (पुंल्लिंग और स्त्रीलिंग) मिलते हैं।

❑ अवहट्ट अपभ्रंश का ही परवर्ती या परिवर्तित रूप है।

❑ डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी ने अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय आर्य भाषा के बीच की कड़ी को 'अवहट्ट' कहा है।

❑ 'अवहट्ट' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग—ज्योतिश्वर ठाकुर ने अपने 'वर्णरत्नाकर' ग्रन्थ में किया है।

(स) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा

❑ आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास अपभ्रंश से हुआ है।

❑ आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का सर्वप्रथम वर्गीकरण **डॉ० ए० एफ० आर० हार्नले** ने सन् 1880 ई० में किया।

❑ डॉ० हार्नले ने आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं को 4 वर्गों में विभाजित किया है जो निम्नांकित है—

(1) **पूर्वी गौडियन**—पूर्वी हिन्दी, बंगला, असमी, उड़िया।

(2) **पश्चिमी गौडियन**—पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, सिन्धी, पंजाबी।

(3) **उत्तरी गौडियन**—गढ़वाली, नेपाली, पहाड़ी।

(4) **दक्षिणी गौडियन**—मराठी।

❑ डॉ० हार्नले के अनुसार जो आर्य मध्यदेश अथवा केन्द्र में थे 'भीतरी आर्य' कहलाये और जो चारों ओर फैले हुए थे 'बाहरी आर्य' कहलाये।

❑ डॉ० जार्ज ग्रियर्सन ने (लिग्विस्टिक-सर्वे ऑफ इण्डिया—भाग 1 तथा बुलेटिन ऑफ द स्कूल ऑफ ओरियंटल स्टडीज, लण्डन इन्स्टिट्यूशन-भाग 1 खण्ड 3 1920) अपना पहला वर्गीकरण निम्नांकित ढंग से प्रस्तुत किया है—

(1) **बाहरी उपशाखा**—(क) उत्तरी-पश्चिमी समुदाय—(i) लहँदा (ii) सिन्धी।

(ख) दक्षिणी समुदाय—(i) मराठी।

(ग) पूर्वी समुदाय—(i) उड़िया, (ii) बिहारी, (iii) बंगला, (iv) असमिया।

(2) **मध्य उपशाखा**—(क) मध्यवर्ती समुदाय—(i) पूर्वी हिन्दी।

(3) **भीतरी उपशाखा**—(क) केन्द्रीय समुदाय—(i) पश्चिमी हिन्दी, (ii) पंजाबी, (iii) गुजराती, (iv) भीली, (v) खानदेशी, (vi) राजस्थानी।

(ख) पहाड़ी समुदाय—(i) पूर्वी पहाड़ी अथवा नेपाली, (ii) मध्य या केन्द्रीय पहाड़ी, (iii) पश्चिमी-पहाड़ी।

❑ **डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी** ने ग्रियर्सन के वर्गीकरण की आलोचना ध्वनिगत एवं व्याकरणगत आधारों पर करते हुए अपना वैज्ञानिक वर्गीकरण निम्न वर्गों में प्रस्तुत किया—

(1) उदीच्य—सिन्धी, लहँदा, पंजाबी।

(2) प्रतीच्य—राजस्थानी, गुजराती।

(3) मध्य देशीय—पश्चिमी हिन्दी।

(4) प्राच्य—पूर्वी हिन्दी, बिहारी, उड़िया, असमिया, बंगला।

(5) दाक्षिणात्य—मराठी।

❑ **डॉ० धीरेन्द्र वर्मा** ने डॉ० चटर्जी के वर्गीकरण में सुधार करते हुए अपना निम्नांकित वर्गीकरण प्रस्तुत किया—

(1) उदीच्य—सिन्धी, लहँदा, पंजाबी।

(2) प्रतीच्य—गुजराती।

(3) मध्य देशीय—राजस्थानी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी।

(4) प्राच्य—उड़िया, असमिया, बंगला।

(5) दाक्षिणात्य—मराठी।

❑ श्री सीताराम चतुर्वेदी ने सम्बन्ध सूचक परसर्गों के आधार पर अपना वर्गीकरण प्रस्तुत किया, जो निम्न है—

का—हिन्दी, पहाड़ी, जयपुरी, भोजपुरी।
दा—पंजावी, लहँदा।
जो—सिन्धी, कच्छी।
नो—गुजराती।
एर—बंगाली, उड़िया, असमिया।

❑ भोलानाथ तिवारी ने क्षेत्रीय तथा सम्बद्ध अपभ्रंशों के आधार पर अपना वर्गीकरण निम्न ढंग से प्रस्तुत किया है—

अपभ्रंश	आधुनिक भाषाएँ
शौर सेनी (मध्यवर्ती)	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती।
मागधी (पूर्वीय)	बिहारी, बंगाली, उड़िया, असमिया।
अर्धमागधी (मध्य पूर्वीय)	पूर्वी हिन्दी।
महाराष्ट्री (दक्षिणी)	मराठी।
व्राचड-पैशाची (पश्चिमोत्तरी)	सिन्धी, लहँदा, पंजाबी।

❑ डॉ० हरदेव बाहरी ने आधुनिक आर्य भाषाओं का वर्गीकरण इस प्रकार किया है—

हिन्दी वर्ग	हिन्दीतर (अ-हिन्दी) वर्ग
मध्य पहाड़ी, राजस्थानी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, विहारी (ये सभी हिन्दी की उपभाषाएँ हैं)।	उत्तरी—(नेपाली) पश्चिमी—(पंजाबी, सिन्धी, गुजराती) दक्षिणी—(सिंहली, मराठी)। पूर्वी—(उड़िया, वंगला, असमिया)।

प्रमुख आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं की विशेषताएँ

❑ सिन्धी शब्द का सम्बन्ध संस्कृत सिन्धु से है। सिन्धु देश में सिन्धु नदी के दोनों किनारों पर सिन्धी भाषा बोली जाती है।

❑ सिन्धी की मुख्यत: 5 बोलियाँ—विचोली, सिराइकी, थरेली, लासी, लाड़ी हैं।

❑ सिन्धी की अपनी लिपि का नाम 'लंडा' है, किन्तु यह गुरुमुखी तथा फारसी-लिपि में भी लिखी जाती है।

❑ लहँदा का शब्दगत अर्थ है 'पश्चिमी'। इसके अन्य नाम पश्चिमी पंजाबी, हिन्दकी, जटकी, मुल्तानी, चिभाली, पोठवारी आदि हैं।

❑ लहँदा की भी सिन्धी की भाँति अपनी लिपि 'लंडा' है, जो कश्मीर में प्रचलित शारदा-लिपि की ही एक उपशाखा है।

❑ पंजाबी शब्द 'पंजाव' से बना है जिसका अर्थ है पाँच नदियों का देश।

❑ पंजाबी की अपनी लिपि लंडा थी जिसमें सुधार कर गुरु अंगद ने गुरुमुखी लिपि बनाई।

❑ पंजाबी की मुख्य वोलियाँ माझी, डोगरी, दोआबी, राठी आदि हैं।

❑ गुजराती गुजरात प्रदेश की भाषा है। गुजरात का सम्बन्ध 'गुर्जर' जाति से है—गुर्जर + त्रा > गज्जरत्ता > गुजरात।

❑ गुजराती की अपनी लिपि है जो गुजराती नाम से प्रसिद्ध है। वस्तुत: गुजराती कैथी से मिलती जुलती लिपि में लिखी जाती है। इसमें शिरोरेखा नहीं लगती।

❑ मराठी महाराष्ट्र प्रदेश की भाषा है। इसकी प्रमुख बोलियाँ कोंकणी, नागपुरी, कोष्टी, माहारी आदि है।

❑ मराठी की अपनी लिपि देवनागरी है किन्तु कुछ लोग मोड़ी लिपि का भी प्रयोग करते हैं।

❑ बंगला संस्कृत शब्द वंग + आल (प्रत्यय) से वना है। यह बंगाल प्रदेश की भाषा है।

❑ नवीन यूरोपीय विचार-धारा का सर्वप्रथम प्रभाव बंगला भाषा और साहित्य पर पड़ा।

❑ बंगला प्राचीन देवनागरी से विकसित बंगला लिपि में लिखी जाती है।

❑ असमी (असमिया) असम प्रदेश की भाषा है। इसकी मुख्य बोली विश्नुपुरिया है।

❑ असमी की अपनी लिपि बंगला है।

❑ उड़िया प्राचीन उत्कल अथवा वर्तमान उड़ीसा (ओड़ीसा) की भाषा है। इसकी प्रमुख बोली गंजामी, सम्भलपुरी, भत्री आदि है।

❑ उड़िया भाषा बंगला से बहुत मिलती-जुलती है किन्तु इसकी लिपि ब्राह्मी की उत्तरी शैली से विकसित है।

हिन्दी : व्युत्पत्ति और अर्थ

❑ 'हिन्दी' शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में निम्नलिखित मत प्रचलित है—

(1) परम्परावादी संस्कृत पण्डितों के अनुसार, हिन्दी—हिन् (नष्ट करना) + दु (दुष्ट)। अर्थात हिन्द का अर्थ है जो दुष्टों का विनाश करे (हिनस्ति दुष्टान्)।

(2) शब्द कल्पद्रुम के अनुसार, 'हिन्दु' शब्द 'हीन + दुष + डु' से बना है जिसका अर्थ है 'हीनों को दूषित करने वाला (हीन दूषयति)।

(नोट—ये दोनों मत कल्पना प्रसूत हैं।)

❑ डॉ० भोलानाथ तिवारी के अनुसार 'हिन्दु' शब्द का प्राचीनतम प्रयोग 7वीं सदी के अन्तिम चरण के ग्रन्थ **'निशीथचूर्णि'** में प्रथम बार मिला है।

❑ 'हिन्दु' शब्द फारसी है जो संस्कृत शब्द सिन्धु का फारसी रूपान्तरण है।

❑ 'सिन्धु' शब्द का प्रथम प्रयोग ऋग्वेद में सामान्य रूप से नदी (सप्त सिंधवः), नदी विशेष तथा नदी के आस पास के प्रदेश के लिए हुआ है।

❑ 500 ई० पू० के आस-पास दारा प्रथम के काल में सिन्धु नदी का स्थानीय प्रदेश ईरानी लोगों के हाथों में था।

❑ संस्कृत के 'सिन्धु' का ईरानी में हिन्दु हो गया जो सिन्धु नदी के आस पास के प्रदेश के अर्थ में प्रयुक्त हुआ।

❑ कालान्तर में आर्थिक विकास के साथ 'हिन्दु' का अर्थ 'भारत' हो गया। 'इ' पर बलाघात के कारण अन्त्य 'उ' का लोप हो गया। (हिन्दु—हिन्द)।

❑ 'हिन्द' शब्द में विशेषणार्थक प्रत्यय 'ईक' जोड़ने से 'हिन्दीक' शब्द बना जिसका अर्थ है 'हिन्द का'। कालान्तर में 'क' लुप्त हो जाने से 'हिन्दी' शब्द बना।

❑ 'हिन्दी' व्याकरण की दृष्टि से विशेषण है जिसका मूल अर्थ (सं०) सिन्धु (अवे०) हिन्दु→ हिन्द→ हिन्दीक→ हिन्दी।

❑ ग्रीक लोगों ने सिन्धु नदी को 'इन्दोस', यहाँ के निवासियों को 'इन्दोई' ल प्रदेश को 'इन्दिके' अथवा 'इन्दिका' नाम से सम्बोधित किया। 'इन्दिका' शब्द अंग्रेजी अ में 'इण्डिया' हो गया।

❑ किसी भी प्राचीन भारतीय आर्यभाषा में 'हिन्दी' का प्रयोग नहीं मिलता केवल कालकाचार्य द्वारा लिखित जैन महाराष्ट्री में 'हिन्दुग' शब्द मिलता (जैसे—"सूरिणा भणियम् रामाणो जेण हिन्दुग देसम् बच्चामो")।

भाषा के अर्थ में हिन्दी शब्द का प्रयोग व विकास

❑ भाषा के अर्थ में 'हिन्दी' का प्रयोग फारस और अरब से होता है।

❑ ईरान के बादशाह नौशेरवाँ (531-579 ई०) ने अपने दरबारी हकीम ब को भारतीय ग्रन्थ 'पंचतन्त्र' का अनुवाद करने के लिए नियुक्त किया। वाजरोया ने 'क और दमनक' के आधार पर अपने अनुवाद का नाम 'कलीला व दिमना' रखा।

❑ 'कलीला व दिमना' की भूमिका नौशेरवाँ के मन्त्री बुजर्च मिहर ने लिखी। में कहा गया कि यह अनुवाद 'जबाने-हिन्दी' से किया गया है।

❑ अरबी-फारसी में 'जबाने-हिन्दी' शब्द का प्रयोग सम्भवतः भारत की भाषाओं संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश के लिए मिलता है।

❑ भारत के फारसी कवि ओफी ने सर्वप्रथम सन् 1228 ई० में 'हिन्दवी' का प्रयोग समस्त भारतीय भाषाओं के लिए न करके भारत की (सम्भवतः मध्यदेश) देशी भाषाओं के लिए किया।

❑ तैमूरलंग के पोते शरफुद्दीन यज्दी ने सन् 1424 ई० में अपने ग्रन्थ 'ज में विदेशों में 'हिन्दी भाषा' के अर्थ में 'हिन्दी' शब्द का प्रथम प्रयोग किया।

❑ डॉ० धीरेन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित 'हिन्दी साहित्य कोश' (भाग-1) के अ "13-14वीं शती में देशी भाषा को 'हिन्दी' या 'हिन्दकी' या 'हिन्दुई' नाम देने में अ

हसन या अमीर खुसरो का नाम सवस अधिक महत्वपूर्ण है।"

❑ डॉ० भोलानाथ तिवारी एवं उदय नारायण तिवारी ने भाषा के अर्थ में खुसरो द्वारा प्रयुक्त 'हिन्दी' को संदिग्ध माना है। उक्त दोनों विद्वानों ने 'हिन्दी' शब्द के प्रयोग को 'भारतीय मुसलमान' के अर्थ में रेखांकित किया है।

❑ डॉ० भोलानाथ तिवारी ने लिखा है, 'खुसरो ने 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग भारतीय मुसलमानों के लिए किया है और 'हिन्दवी' शब्द का 'मध्यदेशीय भाषा' के लिए यह 'हिन्दवी' शब्द वस्तुतः 'हिन्दुवी' या 'हिन्दुई' है। हिन्दू + ई = अर्थात् हिन्दुओं की भाषा। 'हिन्दुवी' शब्द के प्रयोग के कुछ दिन वाद 'हिन्दी' (अर्थात् भारतीय मुसलमानों) की भाषा के लिए कदाचित 'हिन्दी' शब्द चल पड़ा।"

❑ हिन्दी कवि नूर मुहम्मद ने लिखा है—"हिन्दू मग पर पाँव न राखौं। का जो बहुतै हिन्दी भाख्यौं।।"

❑ 18वीं सदी तक 'हिन्दी' मुसलमानों की भाषा न रहकर हिन्दुओं की भाषा की ओर झुक रहा था।

❑ 19वीं सदी मध्य के पूर्व तक 'हिन्दी' का प्रयोग 'उर्दू' या 'रेख्ता' के समानार्थी रूप में चल रहा था।

❑ 'उर्दू' मूलतः तुर्की शब्द है जिसका अर्थ है 'शाही शिविर' या 'खेमा'।

❑ डॉ० ग्राहम बेल तथा डॉ० ताराचन्द आदि का कहना है कि 'उर्दू' का भाषा के निश्चित अर्थ में सबसे पुराना प्रयोग मुसहफ़ी में मिलता है—"खुदा रक्खे जवाँ हमने सुनी है, मीर-वो-मिरजा की, कहें किस मुँह से हम मुसहफी 'उर्दू' हमारी है।"

❑ प्रो० आजाद ने 'आबे हयात' में व्रजभाषा से उर्दू का जन्म माना है

❑ 'रेख्ता' का फारसी में अर्थ 'गिरा हुआ' या 'गिराकर वनाया हुआ ढेर' है।

❑ भारत में 'रेख्ता' शब्द का प्रयोग पहले छंद और संगीत के क्षेत्र में हुआ।

❑ 'रेख्ता' नाम 18वीं सदी से प्रारम्भ होकर लगभग 19वीं सदी के मध्य तक उर्दू के लिए चलता रहा।

❑ हिन्दी का नवीन अर्थ में लिखित प्रयोग सर्वप्रथम कैप्टिन टेलन ने सन् 1812 ई० में फोर्ट विलियम कालेज के वार्षिक विवरण में किया।

❑ वर्तमान में 'हिन्दी' शब्द मुख्यतः निम्न अर्थों में प्रयुक्त हो रहा है—

(1) हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में 'हिन्दी' का अर्थ है—हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा बिहार की भाषा। इस पूरे क्षेत्र को 'हिन्दी प्रदेश' कहते है।

(2) वर्तमान भारतीय साहित्य में 'हिन्दी' शब्द भारतीय संघ की राजभाषा (संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी होगी—भारतीय संविधान, अनुच्छेद 343) तथा राष्ट्रभाषा के नाम का द्योतक है।

हिन्दी की बोलियाँ

□ हिन्दी और उसकी उपभाषाओं तथा बोलियों का वर्गीकरण निम्न ढंग से किया जा सकता है—

अपभ्रंश	उपभाषा		बोली
शौरसेनी अपभ्रंश	पश्चिमी हिन्दी	आकार बहुल	कौरवी, हरियाणी या बाँगरू, दक्खिनी
		ओकार बहुल	ब्रजभाषा, बुन्देली, कन्नौजी
	राजस्थानी हिन्दी	ट वर्ग बहुला	मारवाड़ी, जयपुरी या ढुँढाड़ी, मेवाती, मालवी
	पहाड़ी हिन्दी		कुमाऊनी, गढ़वाली
अर्धमागधी	पूर्वी हिन्दी		अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
मागधी	बिहारी हिन्दी		भोजपुरी, मगही, मैथिली

□ डॉ० भोलानाथ तिवारी ने पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत दो अन्य बोलियाँ ताजुव्बेकी तथा निमाड़ी को भी स्वीकार किया है।

□ हिन्दी भाषा की प्रमुख बोलियों के अन्य नाम एवं उसकी उपबोलियाँ निम्नांकित हैं—

बोली	अन्य नाम	उपबोलियाँ
हरियाणी	बाँगरू, देसवाली	जाटू, चमरवा
ब्रजभाषा	अन्तर्वेदी	भुक्सा, जादोवाटी, डांगी
बुन्देली	बुन्देलखण्डी	पाँवरी, बनाफरी, लोधान्ती, निभट्टा
अवधी	कोशली, बैसवाड़ी	जोलहा, गहोरा, जूड़र
कौरवी	खड़ी बोली	
छत्तीसगढ़ी	खल्टाही, लरिया	
बघेली	रीवाई	निबट्टा
डिंगल	भाटभाषा	
पिंगल	नागभाषा	

□ हिन्दी की प्रमुख बोलियों के नामकरण कर्ता निम्नांकित हैं—

बोली	नामकरणकर्ता
कौरवी	राहुल सांकृत्यायन
ब्रजबुली	ईश्वरचन्द्र गुप्त
राजस्थानी (भाषा)	ग्रियर्सन
डिंगल	बाँकीदास
बिहारी	ग्रियर्सन
भोजपुरी	रेमण्ड
मैथिली	कोलब्रुक

□ हिन्दी की प्रमुख बोलियों का क्षेत्र अग्रांकित है—

विशिष्टता	बोली	बोली क्षेत्र
(क) ओकारबहुला	1 ब्रजभाषा	मथुरा, आगरा, अलीगढ़, बरेली, वदायूँ, एटा, मैनपुरी, गुड़गावाँ, भरतपुर, करौली।
	2 बुंदेली	उ० प्र०—झाँसी, उरई, जालौन, हमीरपुर, म० प्र०—सागर, ओरछा, दतिया, होशंगाबाद।
	3 कन्नौजी	इटावा, फर्रुखाबाद, हरदोई, पीलीभीत, शाहजहाँपुर, कानपुर।
	4 मारवाड़ी	जोधपर, अजमेर, किशनगढ़, जैसलमेर।
	5 कुमाऊनी	नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़।
	6 गढ़वाली	टिहरी, गढ़वाल, चमोली, उत्तरकाशी।
	7 मालवी	उज्जैन, प्रतापगढ़, रतलाम, इन्दौर, देवास।
(ख) आकार बहुला	1 कौरवी	बिजनौर, रामपुर, मुरादावाद, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, दिल्ली, गाजियाबाद।

	2 दक्खिनी	दक्षिण भारत (बीजापुर, गोलकुण्डा, अहमद नगर, हैदराबाद)।
(ग) उदासीन आकार बहुला	1 अवधी	अयोध्या, लखीमपुर खीरी, बहराइच, गोंडा, बाराबंकी, लखनऊ, सीतापुर, उन्नाव, फैजाबाद, सुल्तानपुर, रायबरेली, इलाहाबाद, जौनपुर, मिर्जापुर, प्रतापगढ़।
	2 बघेली	रीवाँ, जबलपुर, मण्डला, मिर्जापुर।
(घ) इकार बहुला	1 भोजपुरी	भोजपुर, शाहाबाद, छपरा-चम्पारण, गोरखपुर, देवरिया, गाजीपुर, बलिया, बनारस।

❑ हिन्दी की चार महत्वपूर्ण बोलियों की प्रमुख विशिष्टताएँ निम्न ढंग से प्रस्तुत की जा सकती हैं—

ब्रजभाषा	अवधी	कौरवी	भोजपुरी
(1) शौरसेनी	अर्धमागधी	शौरसेनी	मागधी
(2) पश्चिमी हिन्दी	पूर्वी हिन्दी	पश्चिमी हिन्दी	बिहारी हिन्दी
(3) ओकार बहुला	अकार बहुला	आकार बहुला	इकार बहुला
(4) स्वर — अतिह्रस्व, ह्रस्व, दीर्घ	स्वर — अतिह्रस्व, ह्रस्व	स्वर — ह्रस्व, दीर्घ	स्वर — अतिह्रस्व, ह्रस्व, दीर्घ
(5)	व्यंजनांत बोली		व्यंजनांत बोली
(6) ण → न	ण के बदले न		शब्द के मध्य 'र' का लोप
(7) ड़ → र	श, ष के बदले स		ल/ड़ → र
(8) श, ष → स	ल के बदले र		श/स/व → ह
(9) य/व यथावत रहते हैं	य/व के बदले ज/ब		'ण' ध्वनि नहीं है।
(10) ऐ, औ मूल स्वर है	ऐ, औ के बदले अइ, अउ		'ङ' स्वतन्त्र ध्वनि है।
(11) 'अ' विवृत ध्वनि	'अ' संवृत ध्वनि है।	'अ' अर्धविवृत ध्वनि है	'अ' अर्धविवृत ध्वनि है

लिपि

❑ पं० कामता प्रसाद गुरु के अनुसार, "लिखित भाषा में मूल ध्वनियों के लिए जो चिह्न मान लिए गए हैं, वे भी वर्ण कहलाते हैं, पर जिस रूप में ये लिखे जाते हैं उसे लिपि कहते हैं।"

❑ लिपि विकास की मुख्यत: निम्न अवस्थाएँ मानी जाती हैं—

चित्रलिपि
↓
प्रतीकलिपि
↓
भावलिपि
↓
ध्वनिलिपि
↓

अक्षरात्मक (Syllabic) — वर्णात्मक (Alphabetic)

(भारत की सारी लिपियाँ अक्षरात्मक हैं) (रोमन लिपि वर्णात्मक है)

❑ भारत में प्राचीन समय में तीन लिपियाँ प्रचलित थीं—

(1) सिन्धु घाटी लिपि, (2) खरोष्ठी लिपि और (3) ब्राह्मी लिपि।

❑ सिन्धु घाटी लिपि के प्राचीनतम नमूने सिन्धु घाटी में मांटगोमरी जिले के हड़प्पा तथा सिन्ध के लरकाना जिले के मोहनजोदड़ों में प्राप्त सीलों पर मिले हैं।

❑ डिरिंजर महोदय ने सिन्धु घाटी लिपि को 'ट्रांजिशनल स्क्रिप्ट' (भाव-ध्वनिमूलक लिपि) कहा है।

❑ सिन्धु घाटी लिपि की ध्वनि चिन्हों की संख्या को लेकर विद्वानों में मतभेद है, जो निम्न है—

विद्वान	ध्वनि-चिह्न संख्या
हण्टर	253
लैंग्डन	228
गैड एवं स्मिथ	396

❑ खरोष्ठी लिपि का प्राचीनतम नमूना पश्चिमोत्तर भारत के शाहबाज गढ़ी (पंजाब का युसुफजई जिला) और मानसेरा (पंजाब का हजारा जिला) में अशोक के अभिलेखों में प्राप्त हुआ है।

❑ खरोष्ठी लिपि के नामकरण के सम्बन्ध में विद्वानों का अभिमत—

विद्वान	अभिमत
चीनी कोश 'फा वान शु लीन'	खरोष्ठ नामक व्यक्ति से
डॉ० राजबली पाण्डेय	खर (गदहे) के ओष्ठ के समान
डॉ० सुनीति चटर्जी	खरोशोथ से खरोष्ठी बना है।

❑ खरोष्ठी दाएँ से बाएँ लिखी जाती है। इसमें 37 वर्ण (5 स्वर 11 व्यंजन) होते हैं तथा इसमें संयुक्ताक्षरों का सर्वथा अभाव है।

❑ ब्राह्मी लिपि के प्राचीनतम नमूने वस्ती जिले में प्राप्त पिपराला के स्तूप में तथा अजमेर जिले के बड़ली गाँव के शिलालेख में मिले हैं।

❑ ब्राह्मी लिपि के नामकरण के सन्दर्भ प्रमुख मत निम्न हैं—

(1) ब्रह्मा द्वारा निर्मित लिपि ब्राह्मी कहलायी।

(2) ब्रह्म (वेद या ज्ञान) की रक्षार्थ लिपि ब्राह्मी कहलायी।

(3) ब्राह्मणों द्वारा निर्मित या प्रयुक्त लिपि ब्राह्मी कहलायी।

(4) चीनी विश्वकोष 'फास्वान-शु लीन' (668 ई०) के अनुसार ब्रह्म नामक आचार्य के आधार पर ब्राह्मी कहलायी।

❑ ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति को लेकर मुख्यत: दो मत प्रचलित है—(1) यह भारतीय-लिपि है, और (2) यह विदेशी लिपि है।

❑ ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति भारत में हुई है, इस वर्ग में भी अनेक मत प्रचलित है, जो निम्न है—

विद्वान	अभिमत
(1) एडवर्ड थामस	मूल आविष्कारक द्रविड़ थे।
(2) जगत मोहन वर्मा	वैदिक चित्र लिपि से व्युत्पन्न है।
(3) श्री आर० श्याम शास्त्री	सांकेतिक चिह्नों से व्युत्पन्न है।
(4) डॉ० राजबलि पाण्डेय	सिन्धु घाटी लिपि से विकसित है।
(5) डाउसन, कनिंघम, लसन	आर्यों की पुरानी चित्रलिपि से विकसित है।
(6) डॉ० भोलानाथ तिवारी	हड़प्पा, मोहनजोदड़ों की लिपि से विकसित है।

❑ ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति विदेश में हुई है, इस वर्ग में भी अनेक मत है जो निम्न है—

विद्वान	अभिमत
(1) डॉ० अल्फ्रेडमूलर, जैम्स पिंसेप, सेनार्ट	यूनानी या फोनसी से उत्पन्न
(2) डॉ० बूलर, डॉ० डेविड डिरिंजर	उ० सामी से उत्पन्न
(3) टेलर, डिके, कैनन	द० सामी से उत्पन्न
(4) वेबर, वेनफे, जेन्सेन	फोनेशीय से उत्पन्न

❑ प्रो० बूलर के अनुसार ब्राह्मी लिपि में 41 अक्षर थे—9 स्वर और 32 व्यंजन।

❑ ब्राह्मी लिपि का विकास इस प्रकार दर्शाया जा सकता है—

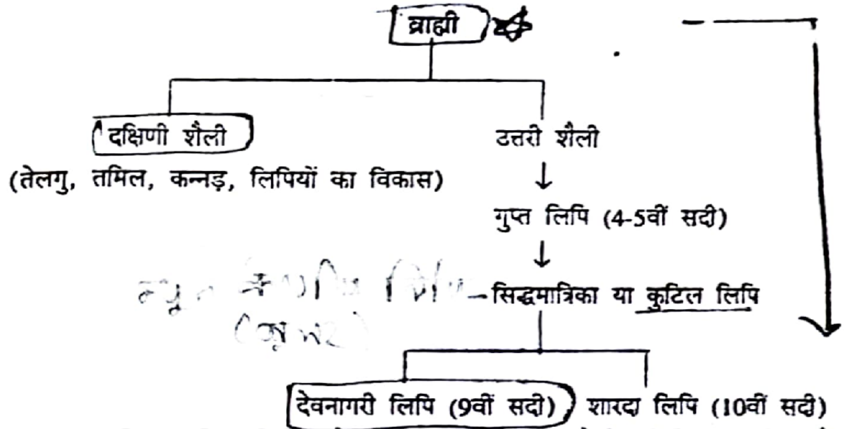

❑ 'सिद्ध मात्रिका लिपि' को डॉ० बूलर ने 'न्यून कोणीय लिपि' नाम दिया है। यही लिपि कालान्तर में 'कुटिल लिपि' नाम से प्रसिद्ध हुई।

❑ सन्588-89 ई० का बोधगया का अभिलेख 'सिद्धमात्रिका-लिपि' में हो है।

देवनागरी लिपि

❑ ब्राह्मी की उत्तरी शैली से 4-5वी सदी में गुप्त लिपि तथा गुप्त लिपि से छठी सदी में कुटिल लिपि विकासित हुई है। इसी कुटिल लिपि से 9वीं सदी के लगभग नागरी के प्राचीन रूप का विकास हुआ, जिसे **प्राचीन नागरी** कहते हैं।

❑ देवनागरी लिपि के नाम के विषय में अनेक मत हैं, जो इस प्रकार हैं—

(1) प्रसिद्ध बौद्धग्रन्थ 'ललित-विस्तार' में वर्णित 'नागलिपि' से 'नागरी' नामकरण हुआ।

(2) नगरों में प्रचलित होने से 'देवनागरी' नाम पड़ा।

(3) पाटलिपुत्र को 'नागर' और चन्द्रगुप्त को 'देव' कहने के कारण 'देवनागरी' नामकरण किया गया।

(4) श्री आर० श्याम शास्त्री के अनुसार, "देवताओं की प्रतिमाओं के बनने के पूर्व उनकी उपासना सांकेतिक चिह्नों द्वारा होती थी, जो कई प्रकार के त्रिकोणादि यन्त्रों के मध्य में लिखे जाते थे। वे यन्त्र 'देवनागर' कहलाते थे, और उनके मध्य लिखे जाने वाले अनेक प्रकार के सांकेतिक चिह्न वर्ण माने जाने लगे। इसी से उनका नाम 'देवनागरी' हुआ।"

(5) गुजरात के नागर ब्राह्मणों के नाम पर 'नागरी' नाम पड़ा।

(6) डॉ० धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार मध्य युग के स्थापत्य की एक शैली का नाम नागर होने से 'नागरी' नाम पड़ा।

❑ देवनागरी का सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात के राजा जयभट्ट (7वीं-8वीं सदी ई०) के एक शिलालेख में हुआ है।

देवनागरी लिपि का वैशिष्ट्य

❑ देवनागरी लिपि आक्षरिक है।

❑ देवनागरी में एक वर्ण के लिए ध्वनि है अर्थात् प्रत्येक अक्षर उच्चरित होते हैं।

❑ देवनागरी की वर्णमाला का वर्णक्रम वैज्ञानिक है।

सुधार

❑ सर्वप्रथम बालगंगाधर तिलक ने सन् 1904 ई० में अपने पत्र 'केसरी' के लिए 1926 टाइपों की छटाई करके 190 टाइपों का एक फॉंट, जिसे 'तिलक फॉंट' भी कहते हैं, बनाकर देवनागरी लिपि सुधार का आरम्भ किया।

❑ सर्वप्रथम महाराष्ट्र के सावरकर बन्धुओं ने 'अ' की बारह खड़ी तैयार की तथा महात्मा गाँधी के 'हरिजन सेवक' में इसका प्रयोग हुआ।

❑ सर्वप्रथम डॉ० श्याम सुन्दर दास ने पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, न, म) के स्थान पर अनुस्वार (ं) के प्रयोग का प्रस्ताव रखा।

❑ डॉ० गोरखप्रसाद ने मात्राओं को व्यंजन के बाद दाहिने तरफ लिखने का प्रस्ताव रखा।

❑ श्रीनिवास ने सुझाव दिया कि महाप्राण वर्णों के बदले अल्पप्राण वर्णों के नीचे कोई चिह्न लगा दिया जाए जिससे वर्णों की संख्या में कमी आएगी।

❑ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इन्दौर के 24वें अधिवेशन में सन् 1935 ई० में महात्मा गाँधी के सभापतित्व में 'नागरी लिपि सुधार समिति' का गठन किया गया।

❑ 'नागरी लिपि सुधार समिति' के संयोजक काका कालेलकर थे। सम्मेलन में कुल 4 सुझावों को स्वीकार किया गया था।

❑ नागरी प्रचारिणी सभा ने सन् 1945 ई० में नागरी लिपि सुधार हेतु एक समिति का गठन किया।

❑ उत्तर प्रदेश सरकार ने 31 जुलाई, 1947 में आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में नागरी लिपि सुधार समिति का निर्माण किया।

❑ इस समिति की कुल 9 बैठकें हुई तथा समिति ने 25 मई, 1949 को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

❑ नरेन्द्र देव समिति की रिपोर्ट के बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने 28-29 नवम्बर सन् 1953 ई० में नागरी लिपि सुधार सम्बन्धी सुझाओं पर विचार करने के लिए लखनऊ में 'लिपि सुधार-परिषद' का गठन किया और विभिन्न राज्यों के मन्त्रियों और विद्वानों को परिषद में आमन्त्रित किया।

❑ उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित 'लिपि सुधार परिषद' की बैठक की अध्यक्षता तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने की थी।

❑ डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी ने कतिपय परिवर्तनों के साथ देवनागरी लिपि के स्थान पर रोमन लिपि को स्वीकार कर लेने का सुझाव दिया था।

राजभाषा

❑ 14 सितम्बर, 1949 ई० को भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा (Official Language) की मान्यता प्रदान की गई।

❑ भारतीय संविधान के भाग-17 में अनुच्छेद 343-351 तक राजभाषा का संविधान में प्रावधान किया गया है तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई हैं। जो निम्न हैं—

1. असमिया
2. बंगला
3. बोडो
4. डोगरी
5. गुजराती
6. हिन्दी
7. कन्नड़
8. कश्मीरी
9. कोंकणी
10. मैथिली
11. मलयालम
12. मणिपुरी
13. मराठी
14. नेपाली
15. उड़िया
16. पंजाबी
17. संस्कृत
18. सन्थाली

19. सिन्धी
20. तमिल
21. तेलगु
22. उर्दू।

☐ मूल संविधान में 14 भाषाएँ थीं। संविधान (21वाँ संशोधन) अधिनियम, 19 द्वारा सिन्धी के जोड़े जाने पर यह संख्या 15 हो गई थी। 71वें संशोधन अधिनि 1992 से कोंकणी, नेपाली और मणिपुरी को सम्मिलित कर दिए जाने पर यह संख्या हो गई है। 92वें संशोधन अधिनियम 2003 ने इसमें बोडो, डोगरी, मैथिली और सन्थ को सम्मिलित कर दिया गया है। जिससे अब यह संख्या बढ़कर 22 हो गई है।

संविधान में हिन्दी भाषा सम्बन्धी उपबन्ध

अनुच्छेद 343—संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी तथा भा अंकों का रूप अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा। किन्तु संविधान में अनुमति प्रदान की कि 15 वर्ष की अवधि अर्थात् 1965 ई० तक अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता रहेगा इस अवधि की समाप्ति के बाद भी संसद विधि द्वारा अंग्रेजी भाषा या अंकों के देवन रूप का ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग कर सकेगी जो विधि में विनिर्दिष्ट किया जा

अनुच्छेद 344—राष्ट्रपति पाँच वर्ष के बाद और उसके बाद हर 10 वर्ष की सम पर राजभाषा आयोग का गठन करेगा। आयोग का कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को निम्नलिखित के बारे में सिफारिश करे—

(1) शासकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग।
(2) शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी के प्रयोग पर निर्बन्धन।
(3) उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में और संघ के और राज्य की अधिनियमितियों के उनके अधीन बनाए गए अधीनस्थ विध के पाठों में प्रयोग की जाने वाली भाषा।
(4) संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों के रूप।
(5) संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा।

आयोग से यह अपेक्षा की गई कि वह भारत की औद्योगिक सांस्कृतिक और वैज्ञानि उन्नति का और लोक सेवाओं के सम्बन्ध में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंग दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा।

अनुच्छेद 345—किसी राज्य का विधान मण्डल, विधि द्वारा, उस राज्य में इस्तेमा होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिन्दी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंगीकार कर सकता है। जब तक ऐसा नहीं किया जाता, अंग्रेजी का प्रयोग उसी प्रकार किया जाता रहेगा जिस प्रकार उससे ठीक पहले किया जा रहा था।

अनुच्छेद 346—संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा अर्थात् अंग्रेजी एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की भाषा होगी। यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की भाषा हिन्दी होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

अनुच्छेद 347—यदि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह माँग करे कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को उस राज्य में दूसरी भाषा के रूप में मान्यता दी जाए तो राष्ट्रपति उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में शासकीय प्रयोजन के लिए उस भाषा को मान्यता देने का उपबन्ध कर सकता है।

अनुच्छेद 348—जब तक संसद विधि द्वारा उपबन्ध न करे, तब तक उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों में सभी कार्यवाहियाँ अंग्रेजी भाषा में होगी। इसके अलावा संघ तथा राज्यों के स्तरों पर सभी विधेयकों, संशोधनों, अधिनियमों, अध्यादेशों, आदेशों, नियमों, विनियमों तथा उपनियमों के प्राधिकृत पाठ भी केवल अंग्रेजी में ही होंगे। लेकिन किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उस उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में हिन्दी भाषा के प्रयोग को या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त किसी भाषा के प्रयोग को प्राधिकृत कर सकेगा। लेकिन अनिवार्य है कि निर्णय डिक्रियाँ तथा आदेश अंग्रेजी में ही दिये जाते रहेंगे।

अनुच्छेद 349—संविधान के प्रारम्भ से 15 वर्ष की अवधि के दौरान प्रयोग की जाने वाली भाषा के लिए उपबन्ध करने वाला कोई विधेयक राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति, जोकि वह राजभाषा आयोग तथा भाषा समिति के प्रतिवेदन पर विचार करके देगा, के बाद ही संसद में प्रस्तुत किया जा सकता है।

अनुच्छेद 350—(i) प्रत्येक व्यक्ति किसी शिकायत को दूर करने के लिए संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने का हकदार होगा।

(ii) किसी राज्य में भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा के लिए उचित प्रबन्ध किया जाएगा।

(iii) भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के लिए राष्ट्रपति एक विशेष अधिकारी नियुक्त करेगा। यह अधिकारी उस वर्ग के भाषायी हितों की रक्षोपायों से सम्बन्धित राष्ट्रपति को प्रतिवेदन देगा तथा राष्ट्रपति इसे संसद में रखवाएगा और सम्बन्धित राज्यों की सरकारों को भिजवाएगा।

अनुच्छेद 351—संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार करे, उसका विकास करे ताकि वह भारत को मिली-जुली संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्ताक्षेप किए बिना आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो, वहाँ उसके शब्द-भण्डार के लिए मुख्यतया संस्कृत से और गौणतया अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

विधान मण्डलों की भाषा

❑ संविधान के भाग-5 के अनुच्छेद 120 में संसद की भाषा का उपबन्ध है। उसमें कहा गया है कि संसद कार्य हिन्दी या अंग्रेजी में किया जाएगा। लेकिन यथास्थिति सदन का पीठासीन अधिकारी किसी सदस्य को उसकी मातृभाषा में सदन को सम्बोधित करने की अनुमति दे सकता है।

❑ संविधान के भाग-6 के अनुच्छेद 210 में राज्य विधान मण्डलों की भाषा का उपबन्ध है। राज्य के विधानमण्डल में कार्य राज्य की राजभाषा या हिन्दी अथवा अंग्रेजी में किया जाएगा। किसी सदन का पीठासीन अधिकारी किसी सदस्य को उसकी मातृ-भाषा में सदन को सम्बोधित करने की अनुमति दे सकता है।

सन् 1950 ई० के बाद हिन्दी की प्रगति

❑ राष्ट्रपति (राजेन्द्र प्रसाद) ने सन् 1955 ई० में बाल गंगाधर (बी० जी०) खेर की अध्यक्षता में 'राजभाषा आयोग' का गठन किया। इस आयोग में 21 सदस्य थे।

❑ 'राज्यभाषा आयोग' ने अपना प्रतिवेदन 1956 में दिया जो संसद के समक्ष 1957 में रखा गया।

❑ 'राजभाषा आयोग' की सिफारिशों की समीक्षा करने के लिए सन् 1957 ई० में गोविन्द बल्लभ पंत की अध्यक्षता में संयुक्त संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया।

❑ संयुक्त संसदीय समिति में 30 सदस्य थे जिनमें लोक सभा के 20 तथा राज्य सभा के 10 सदस्य थे। इसने अपना प्रतिवेदन 1959 ई० में दिया।

❑ संयुक्त संसदीय समिति के सुझावों पर ध्यान देते हुए राष्ट्रपति ने 'दो स्थायी आयोगों' की स्थापना की। जो निम्न हैं—

आयोग	वर्ष	मन्त्रालय
राजभाषा (विधायी) आयोग	1961	विधि मन्त्रालय
वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग	1961	शिक्षा मन्त्रालय

❑ सन् 1976 ई० में 'राजभाषा (विधायी) आयोग' को समाप्त कर दिया गया था।

❑ राजभाषा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण अधिनियम निम्न है—

अधिनियम	वर्ष
राजभाषा अधिनियम	1963 (1967 में संशोधित)
राजभाषा संकल्प	1968
प्राधिकृत पाठ (केन्द्रीय विधि) अधिनियम	1973
राजभाषा नियम	1976

❑ राजभाषा अधिनियम, 1963 में कुल 9 धाराएँ हैं।

❑ राजभाषा नियम, 1976 में कुल 12 नियम है।

❑ राजभाषा नियम, 1976 के अधीन केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों को तीन वर्ग क्षेत्रों में विभाजित किया गया है, जो निम्न हैं—

क-वर्ग के क्षेत्र	ख-वर्ग के क्षेत्र	ग-वर्ग के क्षेत्र
(पत्र-व्यवहार हिन्दी में ही किये जाएँ)	(पत्र-व्यवहार में द्विभाषिक नीति का पालन हो)	(पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में ही किए जाएँ।)
उत्तर-प्रदेश	पंजाब	पश्चिम बंगाल
मध्य प्रदेश	गुजरात	उड़ीसा
राजस्थान	महाराष्ट्र	उत्तरपूर्वी क्षेत्र
बिहार	चण्डीगढ़	द्रविड भाषी क्षेत्र
हिमाचल प्रदेश	अण्डमान-निकोबार	
हरियाणा		
दिल्ली		

हिन्दी व्याकरण का इतिहास : एक परिचय

❑ सम्भवतः 1658 ई० में मिर्जा खाँ द्वारा रचित 'ब्रजभाषा व्याकरण' हिन्दी का सबसे प्राचीन व्याकरण है।

❑ खड़ी बोली का प्रथम व्याकरण सन् 1715 ई० के आस पास बोलचाल की भाषा को आधार बनाकर डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मचारी जोहानस जोशुआ केटलर ने लिखा था।

❑ जार्ज ग्रियर्सन तथा सुनीति कुमार चाटुर्ज्या के अनुसार हिन्दी का प्रथम व्याकरण जान गिलक्राइस्ट द्वारा रचित 'हिन्दुस्तानी ग्रामर' (1790 ई०) है।

❑ 'हिन्दुस्तानी ग्रामर' अंग्रेजी पद्धति पर लिखा हिन्दी का प्रथम व्याकरण है।

❑ हिन्दी व्याकरण से सम्बन्धित कुछ प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) जान फर्ग्युसन	ए डिक्शनरी ऑफ द हिन्दुस्तानी लैंग्वेज
(2) जान बार्यनिक गिलक्राइस्ट	(1) ए ग्रामर ऑफ द हिन्दुस्तानी लैंग्वेज, (2) द ओरिएण्टल लिंग्विस्ट।
(3) एस० एच० केलाग	ए ग्रामर ऑफ द हिन्दी लैंग्वेज (1875 ई०)
(4) ई० ग्रीव्ज	आधुनिक हिन्दी व्याकरण (1896 ई०)
(5) हडले	शार्ट ग्रामर ऑफ द मूर्स लैंग्वेज (1779 ई०)
(6) लल्लू लाल	हिन्दी कवायद
(7) श्री लाल	भाषा चन्द्रोदय (1853 ई०)
(8) रामजतन	भाषा-तत्व-बोधनी (1858 ई०)

(9) नवीनचन्द्र राय — नवीन चन्द्रोदय (1869 ई०)
(10) राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' — हिन्दी व्याकरण (1870 ई०)
(11) पं० हरिगोपाल — भाषातत्व दीपिका
(12) पादरी एथरिंगटन — भाषा भास्कर
(13) केशवराम भट्ट — हिन्दी व्याकरण
(14) ठाकुर रामचरण सिंह — भाषा प्रभाकर
(15) रामावतार शर्मा — हिन्दी व्याकरण
(16) विश्वेश्वर दत्त शर्मा — भाषा तत्व प्रकाश
(17) राम दहिन मिश्र — प्रवेशिका हिन्दी व्याकरण
(18) गोविन्द नारायण मिश्र — विभक्ति विचार
(19) अम्बिका प्रसाद वाजपेयी — हिन्दी कौमुदी
(20) कामता प्रसाद 'गुरु' — हिन्दी व्याकरण
(21) किशोरी दास वाजपेयी — (1) ब्रजभाषा का व्याकरण (1943 ई०)
(2) राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण (1949 ई०)
(3) हिन्दी शब्दानुशासन (1957 ई०)
(22) डॉ० धीरेन्द्र वर्मा — ब्रजभाषा व्याकरण

❑ अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने सम्भवतः प्रथम बार हिन्दी व्याकरण को प्राकृत के आधार पर लिखने या बनाने पर बल दिया।

❑ अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने किशोरी दास वाजपेयी के 'ब्रजभाषा का व्याकरण' को "हिन्दी के व्याकरणों का व्याकरण" कहा है।

❑ पण्डित कामता प्रसाद 'गुरु' को हिन्दी व्याकरण का 'पाणिनि' कहा जाता है।

❑ पं० किशोरीदास वाजपेयी कृत 'हिन्दी शब्दानुशासन' भाषा विज्ञान से संवलित हिन्दी का व्याकरण है।

❑ हिन्दी के अन्य प्रमुख व्याकरण ग्रन्थ निम्न हैं—

(1) आर्येन्द्र शर्मा — आधुनिक हिन्दी का आधार व्याकरण
(2) रामचन्द्र वर्मा — अच्छी हिन्दी
(3) शिवेन्द्र कुमार वर्मा — हिन्दी व्याकरण का विधिवत विवरण
(4) शिवपूजन सहाय — व्याकरण-दर्पण
(5) दीमशित्स — हिन्दी व्याकरण की रूप रेखा
(6) स्वामी निगमानन्द — हिन्दी का मौलिक व्याकरण
(7) रमाकान्त अग्निहोत्री — हिन्दी एक मौलिक व्याकरण
(8) बदरीनाथ कपूर — परिष्कृत हिन्दी व्याकरण
(9) हरदेव बाहरी — व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना
(10) वचनदेव कुमार — वृहद हिन्दी भाष्कर

(11) वासुदेव नन्दन प्रसाद — आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना
(12) हजारी प्रसाद द्विवेदी — हिन्दी भाषा का वृहद ऐतिहासिक व्याकरण

मानक वस्तुनिष्ठ हिन्दी व्याकरण

❑ ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण या अक्षर कहते हैं।

❑ हिन्दी में स्वर वर्णों की संख्या 11 तथा व्यंजन वर्णों की संख्या 33 स्वीकार किया जाता है।

हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण

❑ हिन्दी वर्णमाला में कुल 52 ध्वनियाँ हैं। वस्तुतः वर्णमाला में ध्वनियों को संख्या को लेकर काफी विवाद रहा है।कामता प्रसाद 'गुरु' ने 43 वर्ण माना है।

मानक हिन्दी वर्णमाला

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	
	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
व्यंजन	क	ख	ग	घ	ङ	
	च	छ	ज	झ	ञ	
	ट	ठ	ड	ढ	ण	
	त	थ	द	ध	न	
	प	फ	ब	भ	म	
	य	र	ल	व		
	श	ष	स	ह		
संयुक्त व्यंजन	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		
अयोगवाह	अं (अनुस्वर)		अः (विसर्ग)			
द्विगुण व्यंजन	ड़	ढ़				

❑ अनुस्वर (अं) तथा विसर्ग (अः) का स्वर और व्यंजन के साथ योग न होने के कारण, इन ध्वनियों को 'अयोगवाह' कहते हैं। किशोरी दास वाजपेयी के अनुसार, 'अयोगवाह' स्वरों के ही अनन्तर आते हैं।

स्वरों का वर्गीकरण

❑ उच्चारण स्थान, मात्रा, जीभ की स्थिति, मुखविवर ओष्ठ की स्थिति आदि के आधार पर स्वरों का निम्न ढंग से वर्गीकरण किया जा सकता है—

स्वर	उच्चारण	मात्रा	जीभ की स्थिति	मुख्य विवर	ओष्ठ की स्थिति
अ	कण्ठ	ह्रस्व	मध्य	अर्धविवृत	उदासीन
आ	कण्ठ	दीर्घ	पश्च	विवृत	अवृत्तमुखी
इ	तालव्य	ह्रस्व	अग्र	अर्धसंवृत	अवृत्तमुखी
ई	तालव्य	दीर्घ	अग्र	संवृत	अवृत्तमुखी
उ	ओष्ठ्य	ह्रस्व	पश्च	अर्ध संवृत	वृत्तमुखी
ऊ	ओष्ठ्य	दीर्घ	पश्च	संवृत	वृत्तमुखी
ए	कंठ-तालव्य	दीर्घ	अग्र	अर्धविवृत	अवृत्तमुखी
ऐ	कंठ-तालव्य	दीर्घ	अग्र	विवृत	अवृत्तमुखी
ओ	कंठोष्ठ्य	दीर्घ	पश्च	अर्धविवृत	वृत्तमुखी
औ	कंठोष्ठ्य	दीर्घ	पश्च	विवृत	वृत्तमुखी

□ स्वर वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुख विवर से निकलती है। इसकी प्रमुख विशेषता निम्न है—

(1) स्वरों का स्वतन्त्र उच्चारण किया जा सकता है।
(2) सभी स्वर आक्षरिक (syllabic) होते हैं।
(3) सभी स्वर अल्पप्राण होते हैं।
(4) सभी स्वर घोष वर्ण होते हैं।

व्यंजनों का वर्गीकरण

□ व्यंजनों को दो आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है—

(1) उच्चारण-स्थान
(2) प्रयत्न-स्थान

(1) उच्चारण-स्थान के आधार पर–

कण्ठ्य (कण्ठ से)	क, ख, ग, घ, ङ
तालव्य (तालु से)	च, छ, ज, झ, ञ, य, श
मूर्धन्य (तालु के मूर्धाभाग से)	ट, ठ, ड, ढ, ण, ष
दन्त्य (दाँतों के मूल से)	त, थ, द, ध
वर्त्स्य (दन्तमूल से)	न, स, र, ल
ओष्ठ्य (दोनों होंठो से)	प, फ, ब, भ, म
दन्तोष्ठ्य (निचले होंठ और ऊपर के दाँतों से)	व, फ़
स्वर यन्त्रीय (काकल्य)	ह

(2) प्रयत्न के आधार पर

□ प्रयत्न के आधार पर किया गया विभाजन भी दो ढंग का होता है—(क) आभ्यंतर प्रयत्न, (ख) बाह्य प्रयत्न।

(क) आभ्यंतर प्रयत्न—

स्पर्श व्यंजन—	क, ख, ग, घ, ङ —क वर्ग
	च, छ, ज, झ, ञ —च वर्ग
	ट, ठ, ड, ढ, ण —ट वर्ग
	त, थ, द, ध, न —त वर्ग
	प, फ, ब, भ, म —प वर्ग
अन्तःस्थ व्यंजन	य, र, ल, व
ऊष्म व्यंजन	श, ष, स, ह
अर्ध स्वर	य, व
पार्श्विक	ल
लुण्ठित/प्रकंपित	र
अनुनासिक	ङ, ञ, ण, न, म

(ख) बाह्य प्रयत्न—

घोष 1 2	प्रत्येक वर्ग का प्रथम व द्वितीय वर्ण (12)
अघोष 3 4 5	प्रत्येक वर्ग का तृतीय, चतुर्थ व पंचम वर्ण
महाप्राण 2 4	प्रत्येक वर्ग का द्वितीय व चतुर्थ वर्ण (24)
अल्पप्राण 1 3 5	प्रत्येक वर्ग का प्रथम, तृतीय व पंचम वर्ण

शब्द भेद

□ रूपान्तर के अनुसार शब्दों के दो भेद होते हैं—

(क) विकारी	(ख) अविकारी या अव्यय
(i) संज्ञा	(i) क्रियाविशेषण
(ii) सर्वनाम	(ii) सम्बन्ध सूचक
(iii) विशेषण	(iii) समुच्चय बोधक
(iv) क्रिया	(iv) विस्मयादि बोधक।

□ रचना या बनावट के अनुसार शब्दों के तीन भेद हैं—(1) रूढ़, (2) यौगिक, (3) योग रूढ़।

□ उत्पत्ति/इतिहास/विकास के अनुसार शब्दों के चार भेद होते हैं—

(1) तत्सम, (2) तद्भव, (3) देसज, (4) आगत/विदेशी शब्द।

□ वाक्य के प्रयोग के अनुसार शब्दों के 8 भेद होते हैं—

शब्द	परिभाषा
संज्ञा	जिससे किसी वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं।
सर्वनाम	संज्ञा के बदले आने वाले शब्द को सर्वनाम कहा जाता है।
विशेषण	संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं।
क्रिया	जिससे किसी काम का करना होना समझा जाए, उसे क्रिया कहते हैं।
क्रिया विशेषण	जिससे क्रिया, विशेषण अथवा अन्य क्रियाविशेषण की विशेषता प्रकट हो, उसे क्रियाविशेषण कहते हैं।
समुच्चय बोधक	दो शब्दों या वाक्यों को मिलाने वाले शब्द को समुच्चय बोधक कहते हैं।
विस्मयादि बोधक	मनोविकार को सूचित करने वाले शब्द को विस्मयादि बोधक कहते हैं।

संज्ञा

❑ संज्ञा के मुख्यत: पाँच भेद होते हैं—

संज्ञा-भेद	परिभाषा
व्यक्तिवाचक	जिस संज्ञा से किसी एक ही वस्तु, पदार्थ अथवा व्यक्ति का बोध हो।
जाति वाचक	जिस संज्ञा से किसी एक ही प्रकार की वस्तुओं, पदार्थों अथवा व्यक्तियों का बोध हो।
समूह वाचक	जिस संज्ञा से किसी वस्तु या व्यक्ति के समूह का बोध हो।
द्रव्यवाचक	जिस संज्ञा से माप तौल वाली वस्तु का बोध हो।
भाववाचक	जिस संज्ञा से पदार्थ में पाये जाने वाले धर्म या गुण, अवस्था अथवा व्यापार का बोध हो।

❑ द्रव्य वाचक एवं भाव वाचक संज्ञा का प्राय: बहुवचन नहीं होता है।

❑ संज्ञा के रूपान्तर या विकार तीन कारणों से होते हैं—

संज्ञा के रूपान्तर	परिभाषा
लिंग	संज्ञा के जिस शब्द से स्त्री या पुरुष की जाति का बोध हो।
वचन	विकारी शब्दों के जिस रूप से संख्या का बोध हो।
कारक	संज्ञा (या सर्वनाम) के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ प्रकाशित होता है उस रूप को कारक कहते हैं।

❑ हिन्दी में लिंग के दो भेद हैं—(1) पुलिंग और (2) स्त्रीलिंग।

❑ हिन्दी में वचन के दो भेद हैं—(1) एक वचन और (2) बहुवचन।

❑ हिन्दी में कारक के आठ भेद हैं, जो निम्न हैं—

कारक	विभक्ति/परसर्ग
कर्ता कारक	ने
कर्म कारक	को
करण कारक	से
सम्प्रदान कारक	को, के लिए
अपादान कारक	से
सम्बन्ध कारक	का, के, की, रा, रे, री
अधिकरण कारक	में, पर
सम्बोधन कारक	हे, अजी, अहो इत्यादि।

❑ सर्वनाम में केवल सात कारक होते हैं। इसमें सम्बोधन कारक नहीं होता।

सर्वनाम

❑ प्रयोग के अनुसार सर्वनाम के 6 भेद हैं—

सर्वनाम	परिभाषा व उदाहरण
पुरुष वाचक	पुरुषों (वक्ता, श्रोता व अन्य) के नाम के बदले आने वाला शब्द, पुरुष वाचक कहलाता है। (मैं, तू, आप)।
निजवाचक	जिस सर्वनाम का प्रयोग स्वयं अपने लिए-हो वह निज वाचक सर्वनाम कहलाता है। (आप—पुरुष वाचक 'आप' से भिन्न)।
निश्चय वाचक	वक्ता के पास अथवा दूर की किसी वस्तु का बोध होता है। (यह, वह, से)।
अनिश्चय वाचक	जिस सर्वनाम से किसी विशेष वस्तु का बोध नहीं होता। (कुछ, कोई)।
सम्बन्ध वाचक	जिससे वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से सम्बन्ध स्थापित किया जाए। (सो)।
प्रश्नवाचक	प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनामों का उपयोग होता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। (कौन, क्या)।

❑ पुरुष वाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं—(1) उत्तम, (2) मध्यम (3) अन्य पुरुष।

❑ हिन्दी में सब मिलाकर ग्यारह (11) सर्वनाम हैं—

क्रमांक	एक वचन	बहु वचन
1.	मैं	हम
2.	तू	तुम

3.	यह	ये
4.	वह	वे
5.	सो	से
6.	आप	आप
7.	जो	जो
8.	कौन	कौन
9.	क्या	क्या
10.	कोई	कोई
11.	कुछ	कुछ

- ☐ सर्वनाम के रूपान्तर तीन कारणों से होते हैं—
  (1) पुरुष, (2) वचन एवं (3) कारक।
- ☐ सर्वनाम में लिंग के कारण रूपान्तर नहीं होता है।
- ☐ सर्वनाम में केवल सात कारक होते हैं।

विशेषण

कामता प्रसाद 'गुरु' के आधार पर विशेषण के भेद एवं उपभेद का रेखाचित्र नि... है—

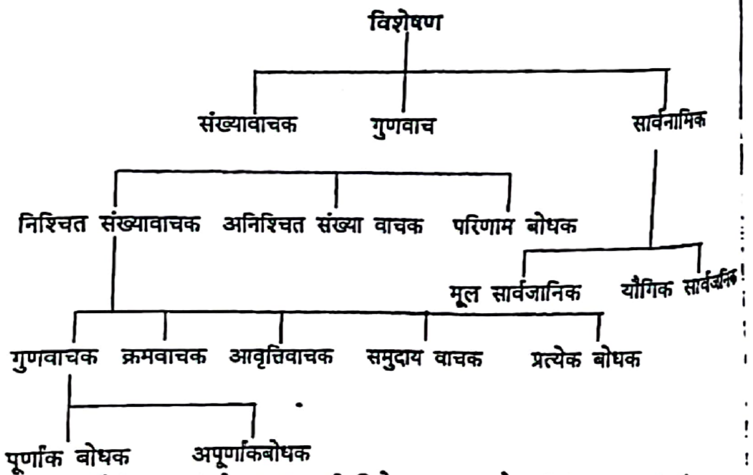

- ☐ जो शब्द विशेषण शब्द की विशेषता बताए उसे 'प्रविशेषण' कहते हैं।
- ☐ विशेषण के रूपान्तर के सम्बन्ध में कामता प्रसाद 'गुरु' का मत सर्वमान्य है। जो निम्न हैं—

"हिन्दी में आकारांत विशेषणों को छोड़कर दूसरे विशेषणों में कोई रूपान्तर नहीं होता, परन्तु सब विशेषणों का प्रयोग संज्ञाओं के समान होता है, इसलिए यह कह सकते हैं कि विशेषणों में परोक्ष रूप से लिंग, वचन और कारक होते हैं। इस प्रकार के विशेषणों का विकार संज्ञाओं के समान उनके 'अन्त' के अनुसार होता है।"

- ☐ हिन्दी में विशेषण की तीन तुलनावस्था मानी जाती है—
  (1) मूलावस्था (Positive Degree)
  (2) उत्तरावस्था (Comparative Degree)
  (3) उत्तमावस्था (Superlative Degree)

क्रिया

- ☐ क्रिया के मूल को 'धातु' कहते हैं।
- ☐ व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'धातु' के दो भेद होते हैं—(1) मूल धातु और (2) यौगिक धातु।
- ☐ यौगिक धातु तीन प्रकार से बनते हैं—
  (1) धातु में प्रत्यय जोड़ने से 'सकर्मक' तथा 'प्रेरणार्थक' धातु बनते हैं।
  (2) संज्ञा या विशेषण में प्रत्यय जोड़ने से 'नाम धातु' बनते हैं।
  (3) एक धातु में एक या दो धातु जोड़ने से 'संयुक्त धातु' बनते हैं।

क्रिया के भेद

- ☐ रचना की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं—(1) अकर्मक क्रिया एवं (2) सकर्मक क्रिया।
- ☐ क्रिया के रूपान्तर निम्नलिखित कारणों से होते हैं—

क्रिया के रूपान्तर	परिभाषा
1. वाच्य	जिससे यह जाना जाता है कि वाक्य में कर्ता के विषय में विधान किया गया है या कर्म के विषय में अथवा भाव के विषय में।
2. काल	जिससे क्रिया के व्यापार का समय तथा उसकी पूर्ण या अपूर्ण अवस्था का बोध हो।
3. अर्थ (भाव)	क्रिया के जिस रूप से विधान करने की रीति या प्रयोजन का बोध होता है उसे 'अर्थ कहते हैं।
4. पुरुष	तीन पुरुष हैं।
5. लिंग	दो लिंग हैं।
6. वचन	दो वचन हैं।

- ☐ वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष के निर्धारण करने को 'प्रयोग' कहा

ा है। 'प्रयोग' तीन प्रकार के होते हैं—

(1) **कर्तरि प्रयोग**—कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार जिस क्रिया रू
ान्तर होता है, उसे कर्तरि प्रयोग कहते हैं।

(2) **कर्मणि प्रयोग**—जिस क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कर्म के पुरुष लि
र वचन के अनुसार होते हैं, उसे कर्मणि प्रयोग कहते हैं।

(3) **भावे प्रयोग**—जिस क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कर्ता या कर्म के अनुसा
ि होते, उसे भावे प्रयोग कहते हैं।

❑ कर्मणि प्रयोग के दो भेद होते हैं—(1) कर्तृवाच्य कर्मणि प्रयोग, (2) कर्मवाच्य
र्मणि प्रयोग।

❑ भावे प्रयोग के तीन भेद होते हैं—(1) कर्तृवाच्य भावे प्रयोग, (2) कर्मवाच्य
वे प्रयोग, और (3) भाववाचक भावे प्रयोग।

❑ वाच्य के तीन भेद होते हैं—(1) कर्तृवाच्य, (2) कर्मवाच्य, (3) भाववाच्य।

❑ हिन्दी में क्रिया के कालों के मुख्यत: तीन भेद होते हैं जो निम्न है—

वर्तमान काल	भूत काल	भविष्य काल
सामान्य वर्तमान	सामान्य भूत	सामान्य भविष्य
तात्कालिक वर्तमान	आसन्न भूत	सम्भाव्य भविष्य
पूर्ण वर्तमान	पूर्ण भूत	हेतु हेतुमद् भविष्य
संदिग्ध वर्तमान	अपूर्ण भूत	
सम्भाव्य वर्तमान	संदिग्ध भूत	
	हेतु हेतुमद्भूत	

❑ भाव या अर्थ की दृष्टि से क्रिया मुख्यत: 5 भेद हैं—

(1) निश्चयार्थक, (2) सम्भावनार्थ, (3) सन्देहार्थ, (4) आज्ञार्थ और (5) संकेतार्थ।

❑ क्रिया के जिन रूपों का उपयोग संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण आदि शब्द
ादों के समान हो, उन्हें कृदन्त कहते हैं।

❑ रूप के अनुसार कृदन्त दो प्रकार के होते हैं—

विकारी कृदन्त	अविकारी या अव्यय कृदन्त
क्रियार्थक संज्ञा	पूर्वकालिक कृदन्त
कर्तृवाचक संज्ञा	तात्कालिक कृदन्त
वर्तमान कालिक कृदन्त	अपूर्ण क्रियाद्योतक
भूतकालिक कृदन्त	पूर्ण क्रियाद्योतक।

क्रियाविशेषण

❑ प्रयोग के अनुसार क्रियाविशेषण के 3 भेद है—(1) साधारण, (2) संयोजक, (3) अनुबद्ध।

❑ रूप के अनुसार क्रिया विशेषण के तीन भेद हैं—(1) मूल या रूढ़, (2) यौगिक, (3) स्थानीय (इस भेद को हरदेव बाहरी नहीं स्वीकार करते हैं)।

❑ अर्थ की दृष्टि से क्रिया विशेषण के मुख्यत: दो भेद हैं—(1) रीति वाचक और (2) परिणाम वाचक।

❑ परिणाम वाचक क्रिया विशेषण के 5 भेद हैं—(1) अधिकता बोधक, (2) न्यूनता बोधक, (3) पर्याप्ति वाचक, (4) तुलनात्मक वाचक और (5) श्रेणि वाचक।

सम्बन्ध सूचक

❑ प्रयोग के अनुसार सम्बन्ध सूचक दो प्रकार के होते हैं—(1) सम्बद्ध, (2) अनुबद्ध।

❑ व्युत्पत्ति के अनुसार सम्बन्ध सूचक दो प्रकार के होते हैं—(1) मूल और (2) यौगिक।

समुच्चय बोधक

❑ समुच्चय बोधक अव्ययों के मुख्य दो भेद हैं—(1) समानाधिकरण, और (2) व्यधिकरण।

❑ समानाधिकरण समुच्चय के मुख्यत: चार भेद हैं, जो अग्रांकित है—

भेद	उदाहरण
संयोजक	और, व, एवं, तथा भी
विभाजक	या, वा, अथवा किंवा, कि, या-या, क्या-क्या
विरोध दर्शक	पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर, वरन्, बल्कि
परिणाम दर्शक	इसलिए, सो, अत: अतएव।

❑ व्यधिकरण समुच्चय के मुख्यत: चार भेद हैं, जो निम्न हैं—

भेद	उदाहरण
कारण वाचक	क्योंकि, जो कि, इसलिए।
उद्देश्य वाचक	कि, जो, ताकि, इसलिए कि।
संकेत वाचक	जो-तो यदि-तो यद्यपि-तथापि, चाहे-परन्तु।
स्वरूप वाचक	कि, जो, अर्थात् याने, मानों।

निपात

वे अव्यय शब्द 'निपात' कहलाते हैं जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया विशेषण के साथ प्रयुक्त होकर उस पर बल देने, उसे सीमित करने अथवा दूसरों के साथ मिलाने

का काम करते हैं।

निपात के मुख्यत: 9 भेद हैं, जो निम्न हैं—

निपात	उदाहरण
स्वीकार्य	हाँ, जी,
नकारार्थक	नहीं, जी नहीं
निषेधात्मक	मत
प्रश्नबोधक	क्या? न
विस्मयादि बोधक	क्या, काश, काश कि
बलदायक या सीमा बोधक	तो, ही, तक, पर, सिर्फ, केवल
तुलना बोधक	सा
अवधारण बोधक	ठीक, लगभग, करीब
आदर बोधक	जी

समास

❑ कामता प्रसाद गुरु के अनुसार, "दो या अधिक शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर, उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतंत्र शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है, वह समास कहलाता है।"

❑ हिन्दी में समास के मुख्यत: चार भेद माने जाते हैं, जो निम्न है—

समास	परिभाषा या लक्षण
अव्ययीभाव	अव्ययीभाव समास में पहला या पूर्व शब्द प्रधान होता है और सामासिक पद क्रियाविशेषण अव्यय हो जाता है।
तत्पुरुष	तत्पुरुष समास में अंतिम या दूसरा शब्द प्रधान होता है। इस समास में पहला शब्द बहुधा संज्ञा या विशेषण होता है।
द्वन्द्व	जिस समास में दोनों पद प्रधान होता है, वह द्वन्द्व कहलाता है।
बहुव्रीहि	जिस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता और जो अपने पदों से भिन्न किसी संज्ञा का विशेषण होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

❑ तत्पुरुष समास के मुख्य दो भेद हैं—(1) व्यधिकरण तत्पुरुष और (2) समानाधिकरण तत्पुरुष (कर्मधारय)।

❑ सामासिक शब्दों का सम्बन्ध व्यक्त कर दिखाने की रीति को 'विग्रह' कहते ।

❑ प्रमुख सामासिक पदों की सूची अग्रांकित है—

अव्ययीभाव

यथाविधि	यथाशक्ति	निधड़क	बर्जिस
यथास्थान	यथासाध्य	भरपेट	बखूबी
यथाक्रम	प्रतिमान	भरदौड़	नाहक
यथासंभव	व्यर्थ	अनजाने	हरघड़ी
आजन्म	प्रत्यक्ष	हररोज	हरदिन
आमरण	समक्ष	हरसाल	बेकाम
यावज्जीवन	परोक्ष	बेशक	बेखटके
प्रतिदिन	निडर	बेफायदा	हाथोंहाथ
पलपल	दिनानुदिन	उपकूल	निर्भय
साल-दर-साल	बीचोबीच	बराबर	आपादमस्तक

तत्पुरुष

स्वर्गप्राप्त	जलपिपासु	दुःखार्त	तुलसीकृत
गगन चुंबी	आशातीत	मदांध	भक्तिवश
चिड़ीमार	देशागत	देहचोर	कष्टसाध्य
गृहागत	प्रेमसिक्त	मुँहचोर	गुणहीन
कठखोदवा	जलसक्ति	मुँहमाँगा	शराहत
गिरहकट	रंसभरा	अकालपीड़ित	मनमाना
मुँहतोड़	रोगपीड़ित	ईश्वरदत्त	गुणभरा
दईमारा	कपड़छन	दुगुना	दस्तकारी
प्यादामात	हैदराबाद	करुणापूर्ण	कामचोर
कृष्णार्पण	विद्यागृह	रोकड़बही	मालगोदाम
देशभक्ति	रसोईघर	राहखर्च	लोकहितकारी
बलिपशु	घुड़वच	शहरपनाह	गोशाला
रणनिमंत्रण	ठकुरसुहाती	कारवाँसराय	विधानसभा
जन्मांध	भवतारण	शाहजादह	ईश्वरविमुख
ऋणमुक्त	देशनिकाला	लोकोत्तर	व्ययमुक्त
पदच्युत	गुरुभाई	बलहीन	प्रेमरिक्त
जातिभ्रष्ट	कामचोर	माथारिक्त	जलरिक्त
धर्मविमुख	नामसाख	धर्मच्युत	धनहीन
राजपुत्र	सेनानायक	राजपूत	रेतघड़ी
प्रजापति	लक्ष्मीपति	लखपति	अमचूर
देवालय	पितृगृह	पनचक्की	हुक्मनामा
नरेश	वनमानुष	रामकहानी	बंदरगाह
पराधीन	घुड़दौड़	मृगछौना	नूरजहाँ
[illegible]	बैल[illegible]	राजदरबार	शकरपारा

रामायण	अमरस	आमोद्धार
खरारि	पुस्तकालय	देशसेवा
आनन्दाश्रम	राष्ट्रपति	चंद्रोदय
चरित्रचित्रण	हिमालय	गंगाजल
खग	वाचस्पति	नृप
देशाटन	कर्तरिप्रयोग	जलधर
प्रेमगमन	आत्मनेपद	पापहर
मनमौजी	ऊटपटाँग	सर्वोत्तम
आपबीती	चूहेमार	पुरुषोत्तम
कानाफूसी	ग्रंथकार	ध्यानमग्न
हरफनमौला	तटस्थ	लकड़फोड़
मनसिज	जलद	तिलचट्टा
युधिष्ठिर	डरम	कनकटा
खेचर	कृतघ्न	मुँहचीरा
कलमतराश	अयोग्य	अधूरा
चोपदार	अनाचार	अनजाना
सौदागर	अनिष्ट	अटूट
अधर्म	अनबनं	अनगढ़ा
अन्याय	अनचाहा	अकाज
अनरीत	अनहोनी	नापसंद
नाबालिग	गैरहाजिर	गैरवाजिब
नपुंसक	प्रतिध्वनि	अतिक्रम
उपदेव	अतिवृष्टि	प्रतिबिंब
प्रगति	दुर्गुण	वशीकरण
शुचीभाव	नराधम	क्षत्रियाधम

कर्मधारय अथवा समानाधिकरण तत्पुरुष

कालीमिर्च	साढ़ेतीन	शीतोष्ण
मझधार	खुशबू	श्यामसुन्दर
तलघर	जवाँमर्द	शुद्धाशुद्ध
खड़ीबोली	नौरोज	मृदुमंद
सुन्दरलाल	जन्मान्तर	भलाबुरा
पुच्छलतारा	प्रभुदयाल	ऊंचनीच
भलामानस	शिवदीन	खट्टामिट्ठा
कालापानी	रामदहिन	बड़ा छोटा
छुटभैया	लालपीला	मोटाताजा
तिलचावला	चन्द्रमुख	पाणिपल्लव

पर्णशाला	गोबरगणेश	घनश्याम	गुरुदेव
छायातरु	जेबघड़ी	वज्रदेह	कर्मबंध
देवब्राह्मण	चितकबरा	प्राणप्रिय	पुरुषरत्न
दहीबड़ा	पनकपड़ा	चरणकमल	धर्मसेतु
गुड़ंबा	गीदड़भभकी	राजर्षि	बुद्धिबल
गुड़धानी	साधुसमाजप्रयाग	कृताकृत	महाकाव्य

द्विगु

□ कामता प्रसाद गुरु ने 'द्विगु' को कर्मधारय तत्पुरुष का एक भेद माना है और इसे 'संख्यापूर्व कर्मधारय' कहा है। जैसे

त्रिभुवन	पंसेरी	अठवाड़ा	चतुर्वेद
त्रैलोक्य	दोपहर	दुपट्टा	पंचपात्र
चतुष्पदी	चौबोला	दुअन्न	दुधारी
पंचवटी	चौमासा	चवन्नी	पंचप्रमाण
त्रिकाल	सतसई	नवरत्न	चहारदीवारी
अष्टाध्यायी	चौराहा	षट्रस	शतांश

द्वंद्व

माता-पिता	बासनबर्तन	खानपान	घरद्वार
गायबैल	मारपीट	घासफूस	गोलाबारूद
दालरोटी	चमकदमक	अन्नजल	जंगलझाड़ी
हुक्कापानी	दीयाबत्ती	जैसातैसा	आगापीछा
बेटाबेटी	चालचलन	बोलचाल	देनदेन

बहुव्रीहि

अनंत	प्राप्तकाम	पीतांबर	
कृतकार्य	उपहतपशु	चतुर्भुज	दीर्घबाहु
चंद्रमौली	निर्जन	नीलकंठ	राजीवलोचन
प्राप्तोदक	निर्विकार	चक्रपाणि	गजानन
आरूढ़वानर	विमल	तपोधन	कनफटा
दत्तचित्त	दशानन	प्रतिव्रता	दुधमुँहा
धृतचाप	सहस्त्रबाहु	लंबकर्ण	मिठबोला
बारहसिंहा	प्रफुल्लकमल	बदरंगा	अद्वितीय
अनमोल	स्वरांत	शाकप्रिय	अप्राप्य
हँसमुख	त्रिकोन	नाट्यप्रिय	अनाथ
सिरकटा	सतखंड	पाषाणहृदय	अकर्मक
टुटपुँजिया	पतझड़	शिवशब्द	अनोमल
बड़भागी	चौलड़ी	यशोधन	अजान

बहुरुपिया	मंदबुद्धि	तपोबल	अथाह
मनचला	बड़ापेट	कोकिलकंठा	अचेत
घुड़मुँहा	लम्बोदर	मृगनेत्रा	अमान
कमजोर	लालकुर्ती	अभिज्ञानशाकुंतलम	अनगिनती
बदनसीब	लगातार	मुद्राराक्षस	एकरूप
खुशदिल	साफदिल	हाथीपाँव	पंचानन
नेकनाम	जबरदस्त	नाक (स्वर्ग)	पंजाब
दुआब	सितार	सतलड़ी	सफल
सपुत्र	सकर्मक	सदेह	सावधान
सार्थक	सवेरा	सचेत	साढ़े
मुष्टामुष्टि	हस्ताहस्ति	दंडादंडी	लठालठी
मारामारी	बदाबदी	कहाकही	धक्काधक्की
घूसाघूसी	मुक्कामुक्की	निर्दय	विफल
विधवा	कुरुप	निर्धन	सुडौल

नोट—(1) कभी कभी एक ही समास का विग्रह अर्थ भेद से कई प्रकार का होता है। जैसे—'सत्यव्रत' शब्द का विग्रह निम्न ढंग से हो सकता है—

समास	अर्थभेद
तत्पुरुष	सत्य का व्रत
कर्मधारय	सत्य ही व्रत
द्वंद्व	सत्य और व्रत
बहुव्रीहि	सत्य है व्रत जिसका

(2) कभी-कभी बिना अर्थ भेद के एक ही समास के दो विग्रह हो सकते हैं। जैसे 'पीतांबर' शब्द कर्मधारय भी हो सकता है और बहुव्रीहि भी।

शब्द-भण्डार

□ उत्पत्ति या विकास की दृष्टि से शब्दों के चार भेद हैं—

शब्द	परिभाषा
तत्सम	वे संस्कृत शब्द हैं, जो अपने असली स्वरूप में हिन्दी भाषा में प्रचलित हैं।
तद्भव	वे शब्द हैं जो या तो सीधे प्राकृत से हिन्दी भाषा में आ गए हैं या प्राकृत के द्वारा संस्कृत से निकले हैं।
देशज	वे शब्द जिनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता उन्हें देशज कहते हैं।
विदेशी	विदेशी भाषा से हिन्दी में आए शब्दों को विदेशी या आगत शब्द कहते हैं।

तत्सम-तद्भव

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अंगरक्षक	अँगरखा	आखेट	अहेर
अग्निष्ठिका	अँगीठी	अक्षि	आँख
अंगुष्ठ	अँगूठा	अर्चि	आँच
अंगुष्ठका	अँगूठी	आँत्र	आँत
अंगप्रोंछा	अँगोछा	आमा	आँव
अन्धकार	अन्धेरा	आमलक	आँवला
अक्षोट	अखरोट	अश्रु	आँसू
अक्षवाट	अखाड़ा	अग्नि	आग
अग्रहायन	अगहन	अग्रे	आगे
अट्टालिका	अटारी	अद्य	आज
अत्यद्भुत	अचम्भा	अष्ट	आठ
आश्चर्य	अचरज	आढ्यत्व	आढ़त
अष्टाविंशति	अट्ठाईस	अर्ध	आधा
अष्टादश	अठारह	आत्मा	आप
अर्धतृतीय	अढ़ाई	आम्र	आम
अर्धपूरक	अधूरा	आदर्शिका	आरसी
अन्नाद्य	अनाज	आपाक	आवाँ
अनुत्य	अनूठा	आशा	आस
आत्मन	अपना	आश्रय	आसरा
आपदहस्त	अपाहज	एकत्र	इकट्ठा
आम्रचूर्ण	अमचूर	इयत	इतना
अलवण	अलोना	आदित्यवार	इतवार
अम्लिका	इमली	कांस्यकार	कसेरा
एतस्य	इस	कर्षपट्टिका	कसौटी
इन्धन	ईंधन	कथानिका	कहानी
अंगुलि	उंगली	कर्त	काट
उद्गत	उगना	काष्ठ	काठ
उद्गलन	उगलना	क्वाथ	काढ़ा
उद्घाटन	उघाड़ना	कर्ण	कान
उज्ज्वल	उजला	कृष्ण	कान्ह
उत्तिष्ठ	उठना	कर्म	काम
उत्पद्यते	उपजना	कपाट	किवाड़
उद्वर्तन	उबटन	कृषाण	किसान

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
उच्च	ऊँचा	कीटक	कीड़ा
इक्षु	ऊख	कुञ्चिका	कुंजी
उद्खल	ऊखल	कूप	कुआँ
ऊर्णा	ऊन	कश्चित्	कुछ
ईदृश	ऐसा	कुष्माण्ड	कुम्हड़ा
ऊखल	ओखल	कुंभकार	कुम्हार
उपाध्याय	ओझा	कूर्चिका	कूची
ओष्ठ	ओंठ	कूट	कूड़ा
अवर	ओर	कर्कट	ककड़ा
अवश्याय	ओस	केवर्त	केवट
अवमूर्ध	औंधा	कुक्षि	कोख
अपर	और	कोष्ठक	कोठा
कंकती	कंघी	कोष्ठागारिक	कोठारी
स्कन्ध	कन्धा	कुष्ठ	कोढ़
कमल	कँवल	क्रोश	कोस
कति	कई	कदर्पिका	कौड़ी
कृत्यगृह	कचहरी	काक	कौआ
कच्छप	कछुआ	कवल	कौर
काष्ठगृह	कटहरा	केदारक	क्यारा
कंटफल	कटहल	खर्जूर	खजूर
कर्पास	कपास	स्कम्भ	खम्भा
कल्य	कल	खाति	खाई
खजू	खाज	चतुष्काष्ठ	चौखट
खट्वा	खाट	चमरी	चौंरी
खर्जू	खुजली	शकट	हरकड़ा
क्षेत्र	खेत	छत्रक	छाता
क्षेत्रित	खेती	शकल	छिलका
क्षोदन	खोदना	क्षुरिका	छुरी
गर्दभ	गधा	छिद्र	छेद
गलन	गलना	छेदकी	छेनी
गभीर	गहरा	क्षोड्न	छोड़ना
ग्रन्थि	गाँठ	जृम्भिका	जम्हाई
गृध्र	गीध	ज्वलन	जलना
कन्दुक	गेंद	जाग्रण	जागना
गैरिक	गेरू	जाड्य	जाड़ा

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
गोधूम	गेहूँ	याति	जाना
क्रोड	गोद	ज्ञान	जानना
घट	घड़ा	जिह्वा	जीभ
घृणा	घिन	द्यूत	जूआ
घृष्ण	घिसना	यव	जौ
घृत	घी	जीर्ण	झीना
गुंठन	घूँघट	जुष्ट	झूठा
घोटक	घोड़ा	टंकशाला	टकसाल
चर्वण	चबाना	त्रुट्यते	टूटना
चर्मकार	चमार	स्तब्ध	ठण्ढा
चन्द्र	चाँद	दंश	डंक
इच्छते	चाहे	दण्ड	डाँड़
चिक्कण	चिकना	अर्धतृतीय	ढाई
चटिका	चिड़िया	धृष्ठ	ढीठ
चित्रक	चीता	शिथिल	ढीला
चिनोति	चुनना	अर्धपंच	ढौंचा
चूर्ण	चूना	ताम्बूलिका	तमोली
चुम्बन.	चूमना	ताम्र	ताँबा
चञ्चु	चोंच	तर्कन	ताकना
चौरिका	चोरी	तडाग	तालाब
तृण	तिनका	पक्व	पक्का
तिरश्च	तिरछा	पतन	पड़ना
त्रिभागिका	तिहाई	प्रतिपदा	पड़िवा
तीक्ष्ण	तीखा	प्रतिवेश्चमिक	पड़ोसी
तैल	तेल	प्रस्तर	पत्थर
तिथिवार	त्योहार	पण्यशालिका	पनसारी
स्तन	थन	परीक्षा	परख
स्तम्भन	थामना	परश्व	परसों
स्तोक	थोड़ा	पर्यंक	पलंग
द्राक्षा	दाख	पल्लव	पल्ला
दधि	दही	प्रस्विन्न	पसीना
दंष्ट्रा	दाढ़	प्रत्यभिज्ञान	पहचान
दद्रु	दाद	परिधान	पहनना
द्विसृत	दूसरा	प्रथिल	पहला
द्विवर	देवर	प्रभूत्य	पहुँच

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
धनिका	धनिया	प्रापण	पाना
धूम	धुआँ	पृच्छ	पूछना
नग्न	नंगा	पुच्छ	पूँछ
ननांदृपति	नन्दोई	पुष्कर	पोखरा
नवति	नब्बे	पौत्र	पोता
अन्यपरश्व	नरसों	पादोन	पौना
नखहरण	नहना	पिपासा	प्यास
लंघन	नाँधना	स्फटिक	फटकरी
नापित	नाई	पदिर	पैर
नक्र	नाक	परशु	फरुआ
नृत्य	नाच	पाशिका	फाँसी
नप्तृक	नाती	स्फूर्ति	फुरती
नस्ता	नाथ	स्फोट	फोड़ा
नारिकेल	नारियल	वत्स	बच्चा, बछड़ा
निर्गलन	निगलना	वृत्तक	बड़ा
निम्ब	नीम	वर्धन	बढ़ना
ज्ञातिगृह	नैहर	वणिक	बनिया
पक्ष	पंख	वासगृह	बसेरा
भगिनी	बहन	वाष्प	भाप
वधिर	वहिर	भातृजाया	भावज
वक्र	बाँका	भिक्षाकारी	भिखारी
वन्ध्या	बाँझ	अपि	भी
वंश	बाँस	अभ्यन्तर	भीतर
वल्गा	बाग	बुभुक्षा	भूख
व्याघ्र	बाघ	बुष	भूसा
वाद्य	बाजा	भ्रमर	भौंरा
वाटिका	बाड़ी	मार्जन	माँजना
वार्तानि	बातें	मण्डप	मण्डुआ
वारिद	बादल	मक्षिका	मक्खी
विकार	बिगाड़	मत्सर	मच्छर
ृश्चिक	बिच्छू	मत्स्य	मछली
ंद्युत	बिजली	मञ्जिष्ठ	मजीठ
ज्ञप्ति	बिन्ती	मृत्तिका	मिट्टी
तृश्वसा	बुआ	मन्त्रकारी	मदारी
र्म	बीच	श्मशान	

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
वृद्ध	बुड्ढा	महार्घ	महँगा
बिन्दु	बूँद	महापात्र	महावत
बुध्यते	बूझना	मधूक	महुआ
वृत्तिक	बूटी	माता	माँ
बलीवर्द	बैल	मातृ	माई
वपन	बोना	मार्ग	माँग
वामन	बौना	मृक्षण	माँगना
भाण्डागार	भण्डार	मस्तक	माथा
भ्राष्ट्रिका	भट्ठी	मिस्ट	मीठा
भ्रातृव्य	भतीजा	मुख	मुँह
विभूति	भभूत	मृत	मुआ
परवश्यता	भरोसा	मुद्ग	मूँग
भद्रक	भला	श्मश्रु	मूँछ
भागिनेय्य	भान्जा	मुष्टि	मूठ
भाटक	भाड़ा	मौक्तिक	मोती
भाद्रपद	भादों	मयूर	मोर
मिष्टि	मिठाई		
मुकुट	मौर	सर्प	साँप
एष	यह	सच्चक	साँचा
रक्तिका	रत्ती	श्यामल	साँवला
रश्मि	रस्सी	श्वास	साँस
अरघट्ट	रहट	शाक	साक
क्षार	राख	षष्ठि	साठ
रात्रि	रात	शाटी	साड़ी
राज्ञी	रानी	सार्द्ध	साढ़े
राशि	रास	सप्त	सात
ईर्ष्या	रीस	सार्थ	साथ
अरिष्ठ	रीठा	श्याल	साला
रिक्त	रीता	श्रावण	सावन
वृक्ष	रुख	श्वश्रु	सास
रूक्ष	रूठा	शल्यकी	साही
रजनी	रैन	साधु	साहू
रोम	रोआँ	शृंगार	सिंगार
लिंगपट्ट	लँगोट	शृंखला	सिकड़ी
			सियार

अहमक	कब्र	खयाल	तरक्की
अल्ला	कसर	गरीब	तजुरबा
आसार	कमाल	गैर	दाखिल
आखिर	कर्ज	जाहिल	दिमाग
आदमी	किस्त	जिस्म	दवा
आदत	किस्मत	जलसा	दावा
इनाम	किस्सा	जनाब	दावत
इजलास	किला	जवाब	दफ्तर
इज्जत	कसम	जहाज	दगा
इमारत	कीमत	जालिम	दुआ
इस्तीफा	कसरत	जिक्र	दफा
इलाज	कुर्सी	तमाम	जलेबी
दल्लाल	बाज	मवाद	लायक
दुकान	बहस	मौसम	वारिस
दिक	बाकी	मौका	वहम
दुनिया	मुहावरा	मौलवी	वकील
दौलत	मदद	मुसाफिर	शराब
दान	मुद्दई	मशहूर	हिम्मत
दीन	मरजी	मजमून	हैजा
नतीजा	माल	मतलब	हिसाब
नशा	मिसाल	मानी	हरामी
नाल	मजबूर	मात	हुक्म
नकद	मुन्सिफ	यतीम	हाजिर
नकल	मालूम	राय	हाल
नहर	मामूली	लिहाज	हाकिम
फ़कीर	मुकदमा	लफ्ज	हमला
क़ायदा	मुल्क	लहजा	हवालात
फ़ैसला	मल्लाह	लिफाफा	हौसला

(3) पुर्तगाली

अलकतरा	काजू	परात	मस्तूल
अनन्नास	किरानी	पपीता	मेज
आलपीन	क्रिस्तान	पादरी	लबादा
अलमारी	गमला	पाव (रोटी)	साया

भाषा	गिरजा	पिस्तौल	सागू
आया	गोभी	फर्मा	
इस्पात	चाबी	फीता	
इस्तिरी	तम्बाकू	बम्बा	
कमीज	तौलिया	बाल्टी	
कनस्टर	नीलाम	बुताम	
कमरा			

(4) चीनी

चाय, लीची

(5) जापानी

झम्पान, रिक्शा

(6) फ्रेन्च

अंग्रेज, कारतूस, कूपन, फ्रान्सीसी, रिपोर्ताज

(7) रूसी

वोदका, रूबल, स्पुतनिका आदि।

(8) तुर्की

उर्दू	चेचक	सराय	तमगा
कालीन	तलाश	सुराज	तमंचा
काबू	तोप	गलीचा	बेग
कैंची	तोशक	सौगात	खाँ
कुली	दारोगा	बीबी	खातून
कुर्की	बारुद	कुर्ता	आका
चाकू	बहादुर	मुगल	नागा
चिक	बेगम	खच्चर	
चम्मच	लफंगा	चोगा	
चकमक	लाश	बख्शी	

(9) पोश्तो

गटागट	पटाखा	रोहिला	
अचार	गूँटरगूँ	डेरा	मटरगश्ती
अटकल	गुण्डा	कुड़कुड़ाना	लताड़
कलूटा	टसमस	नगाड़ा	लुच्चा
खचड़ा	जमालगोटा	तहस-नहस	हमजोली
खर्राटा	पठान	तड़ाक	भड़ास

(10) डच

तुरूप, बम (टाँगे का) आदि।

(11) ईरानी

क्षत्रप, मिहिर, तीर, तूत आदि।

(13) अंग्रेजी

अपील	अस्पताल	टीम	नर्स
कोर्ट	डाक्टर	मशीन	वोट
मजिस्ट्रेट	पेपर	यूनियन	टैक्स
पुलिस	आपरेशन	सिनेमा	गार्ड
कलक्टर	गैस	पार्टी	स्कूटर
पेन्सिल	अफसर	डायरी	हिरो
पेन	टेलीफोन	स्वेटर	बस
लाइब्रेरी	टिकट	कालरा	कार
स्कूल	ट्रेन	कैंसर	कार्ड
कालेज	फीस	कोट	आर्डर

देशज

(1) द्रविड़ भाषा से

उड़द	कुप्पी	टोपी	मीन
ओसार	केतकी	ठेस	मुकुट
कज्जल	घुण	डंका	लाही
कच्चा	चन्दन	नीर	लोटा
कटोरा	चिकना	पापड़	सूजी
काच	चूंड़ी	पिंड	इडली
काका	झण्डा	पेट	सांभर
केड	झूठ	भंगी	डोसा
कुटी	टंटा	माला	पिल्ला

(2) अनुकरणात्मक शब्द

किलकारी, खटखटाना, किलकारी, खर्राटा, सनसनाहट आदि।

☐ कुछ विद्वानों ने विकास के अनुसार शब्द का पाँचवाँ भेद 'संकर शब्द' भी माना है।

☐ दो भाषाओं के तत्वों के मिश्रण से निर्मित शब्द को 'संकर शब्द' कहते हैं। जैसे—वोटदाता, फैशन परस्त, मोटरगाड़ी आदि।

भाषा-विज्ञान

☐ भाषा के मुख्यत: चार तत्व होते हैं—(1) ध्वनि (2) शब्द (पद), (3) वाक्य और (4) अर्थ। इन चार तत्वों को ही भाषा-विज्ञान के अन्तर्गत भाषा विज्ञान का चा अंग माना जाता है।

☐ भाषा के चारों तत्वों की परिभाषा निम्नवत है—

(1) "उच्चारण की दृष्टि से भाषा की लघुतम इकाई ध्वनि है।"

(2) "सार्थकता की दृष्टि से भाषा की लघुतम इकाई शब्द है।"

(3) "भाषा की व्याकरणीय योग्यता प्राप्त लघुतम इकाई पद या रूप है।'

(4) भाषा की पूर्ण सार्थक इकाई को वाक्य कहते हैं।

(1) ध्वनि-विज्ञान

☐ 'ध्वनि' को 'स्वनिम' (Phoneme) भी कहते हैं। 'स्वनिम' शब्द-संस्कृत वे 'स्वन्' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है 'ध्वनि'।

☐ ध्वनि के तीन पक्ष होते हैं—(1) उत्पादन, (2) संवहन, और (3) ग्रहण। ध्वि का उत्पादन वागिन्द्रियों से होता है, उसके संवहन के लिए वायु तरंगे कार्य करती हैं औ ग्रहण की क्रिया कर्ण (कान) द्वारा होती है।

☐ 'ध्वनि गुण' चार माने गए हैं—मात्रा, स्वर, आघात, वृत्ति। 'ध्वनिगुण' व ध्वनि लक्षण, रागीय तत्व, अखण्ड ध्वनि, रागिम आदि भी कहते हैं।

☐ मानस्वर की कल्पना अमेरिका के प्रो० डेनियन ने सन् 1953 ई० में की थ इसे 'Cordinal Vowels' भी कहते हैं।

☐ मानस्वरों की संख्या 8 है, जो किसी भाषा विशेष से सम्बद्ध न होकर ए काल्पनिक स्वर हैं।

☐ जीभ की स्थिति, ओंठ की आकृति एवं मुख-विवर के आधार पर 'मानस्वर का वर्गीकरण निम्न ढंग से किया जा सकता है—

मानस्वर	मुख-विवर	जीभ की स्थिति	ओंठ की स्थिति
ई (i)	संवृत्त	अग्र	अवृत्तमुखी
ए (e)	अर्धसंवृत्त	अग्र	अवृत्तमुखी

ऍ (e)	अर्धविवृत	अग्र	अवृत्तमुखी
अऽ (a)	विवृत	अग्र	अवृत्तमुखी
आ (a)	विवृत	पश्च	वृत्तमुखी
ऑ (ɛ)	अर्ध विवृत	पश्च	वृत्तमुखी
ओ (o)	अर्धसंवृत	पश्च	वृत्तमुखी
ऊ (u)	संवृत	पश्च	वृत्तमुखी

❑ 'मानस्वर' को 'प्रधान स्वर', 'मेय स्वर' भी कहते हैं।

❑ 'गौण मानस्वरों' की संख्या सात है।

❑ 'स्वनिम' को 'ध्वनि ग्राम' भी कहा जाता है जो अंग्रेजी के 'Phoneme' का रूपान्तर है। किन्तु भारत सरकार के पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने 'Phoneme' का हिन्दी अनुवाद 'स्वनिम' माना है।

❑ स्वनिम के दो भेद होते हैं—(1) खण्ड्य (Segmental) और (2) खण्डेतर (Supra Segmental)।

❑ ऐसी ध्वनियाँ जिन्हें हम स्वतन्त्र रूप से उच्चरित कर सकते है, उन्हें खण्ड्य स्वनिम कहते हैं। इसके दो भेद हैं—(1) स्वर व (2) व्यंजन।

❑ जिन ध्वनियों का स्वतन्त्र उच्चारण नहीं हो सकता, उन्हें खण्डेतर स्वनिम कहते हैं। इसके प्रमुख भेद है—अनुनासिकता, सुर, अनुतान, संगम।

❑ प्रसिद्ध 'ध्वनि-नियम' निम्नलिखित हैं—

ध्वनि-नियम	प्रवर्तक	जन्म-मृत्यु	स्थान
ग्रिम-नियम	याकोब ग्रिम	1785-1663	जर्मन
ग्रासमैन-नियम	हेर्मन ग्रासमैन	1809-1877	जर्मन
वर्नर-नियम	कार्ल अडोल्फ वर्नर	1846-1896	जर्मन
तालव्य-नियम	विल्हेल्म थामसन व कालित्स	—	—
मूर्धन्य-नियम	प्रो० पॉट व प्रो० फोर्तुनातावे	—	रुसी

(2) पद या रूप विज्ञान

❑ प्रयोग समर्थ सार्थक शब्द को पद कहते हैं।

❑ यास्काचार्य ने 'पद' के मुख्यतः चार भेद माने हैं—

(1) नाम, (2) आख्यात, (3) उपसर्ग और (4) निपात

❑ रूपिम को चार प्रमुख आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है जो निम्न है—

प्रयोग	रचना	अर्थ व सम्बन्ध तत्व	खण्डीकरण
मुक्त रूपिम बद्ध रूपिम	संयुक्त रूपिम मिश्रित रूपिम	अर्थ तत्व प्रदर्शक रूपिम सम्बन्ध तत्व प्रदर्शक रूपिम	खण्डात्मक रूपिम अखण्डात्मक रूपिम

(3) वाक्य विज्ञान

❑ पण्डित कामता प्रसाद 'गुरु' के अनुसार, "एक विचार पूर्णता से प्रकट करने वाले शब्द समूह को वाक्य कहते हैं।"

❑ आचार्य शुक्ल के अनुसार, "आकांक्षा, योग्यता और आसत्ति से युक्त पद समूह वाक्य कहलाता है।"

❑ 'पद' और 'वाक्य' के महत्व की प्रतिष्ठा को लेकर दो दार्शनिक सिद्धान्त प्रसिद्ध हैं, जो निम्न हैं—

सिद्धान्त	प्रवर्तक	कथन
अभिहितान्वयवाद (पदवाद)	कुमारिल भट्ट	अभिहितानां पदार्थानान् अन्वयः
अन्विताभि धानवाद (वाक्यवाद)	प्रभाकर गुरु	अन्वितानां पदार्थानाम् अभिधानम्

❑ कविराज विश्वनाथ ने वाक्य के तीन अनिवार्य तत्व माने हैं—

(1) आकांक्षा—अर्थज्ञान की पूर्ति की जिज्ञासा

(2) योग्यता—बुद्धिसंगत सम्बन्ध

(3) आसत्ति—अव्यवधान।

❑ वाक्य के मुख्यतः दो अवयव होते हैं—उद्देश्य और विधेय।

❑ विभिन्न आधारों पर वाक्य के भेद अग्रांकित हैं—

अर्थ (8 भेद)	क्रिया (2 भेद)	रचना (3 भेद)	शैली (3 भेद)	आकृति (2 भेद)
विधान सूचक	क्रिया युक्त	सरल वाक्य	शिथिल	योगात्मक
निषेध सूचक	क्रियाविहीन	मिश्र वाक्य	समीकृत	अयोगात्मक
आज्ञा सूचक		संयुक्त वाक्य	आवर्तक	
प्रश्न सूचक				
विस्मय सूचक				
सन्देह सूचक				
इच्छा सूचक				
संकेत सूचक				

(4) अर्थ विज्ञान

❑ शब्द के द्वारा जो प्रतीति होती है, उसे 'अर्थ' कहते हैं।

❑ संकेत ग्रह (अर्थबोध) के भारतीय विद्वानों ने 8 साधन माने हैं तथा पाश्चात्य विद्वानों ने 3 साधन माने हैं, जो निम्न हैं—

भारतीय—(1) व्याकरण, (2) आप्तवाक्य, (3) उपमान, (4) वाक्य शेष (प्रकरण), (5) विवृति (व्याख्या, विवरण), (6) प्रसिद्ध पद का सन्निधि, (7) व्यवहार, (8) कोश।

पाश्चात्य—(1) व्यवहार (Demonstration), (2) विवरण (Circumlocution), (3) अनुवाद (Translation)।

❑ हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार, "शब्द की शक्ति उसके अन्तर्निहित अर्थ को व्यक्त कराने वाले व्यापार हैं। इसके प्रमुख भेद निम्न हैं—

शब्द	शब्द शक्ति या वृत्ति	अर्थ
वाचक	अभिधा	वाच्य (मुख्य)
लक्षक	लक्षणा	लक्ष्य (गौण)
व्यंजक	व्यंजना	व्यंग्य (प्रतीयमान)

❑ प्रमुख शब्द शक्तियों की परिभाषा निम्नलिखित हैं—

शब्द शक्ति	परिभाषा
अभिधा	साक्षात संकेतित अर्थ (मुख्यार्थ) का बोध कराने वाले व्यापार को 'अभिधा शक्ति' कहते हैं।
लक्षणा	मुख्यार्थ का बाधा होने पर रूढ़ि के कारण या किसी प्रयोजन के लिए मुख्यार्थ से सम्बद्ध अन्य अर्थज्ञान जिस शक्ति के द्वारा होती है, वह लक्षणा है। अर्थात् लक्षणा के तीन हेतु (कारण) हैं—(1) मुख्यार्थ का बाध, (2) मुख्यार्थ का लक्ष्यार्थ से योग और (3) रूढ़ि या प्रयोजन।
व्यंजना	व्यंजना शक्ति ऐसे अर्थ को बतलाती है जो अभिधा, लक्षणा या तात्पर्य वृत्ति द्वारा उपलब्ध नहीं होता। व्यंजना व्यापार को ध्वनन, गमन, प्रत्यागमन आदि कहते हैं।

❑ पाश्चात्य विद्वानों ने अर्थ के तीन भेद माने हैं—

(1) कोशार्थ, (2) व्याकरणार्थ और (3) अनित्यार्थ।

❑ शब्द मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं—(1) एकार्थक और (2) अनेकार्थक।

❑ एकार्थक शब्दों के अर्थ-निर्णय के 10 साधन माने गए है तथा अनेकार्थक शब्दों के अर्थ-निर्णय के 14 साधन माने गए हैं, जो निम्न हैं—

एकार्थक—(1) वक्ता, (2) बोद्धा (श्रोता), (3) वाक्य, (4) वाच्य, (5) अन्य सन्निधि, (6) प्रकरण, (7) देश, (8) काल, (9) काकु और (10) चेष्टा।

अनेकार्थक—(1) संयोग, (2) वियोग, (3) साहचर्य, (4) विरोध, (5) अर्थ, (6) प्रकरण, (7) लिंग, (8) अन्य शब्द का सन्निधि, (9) सामर्थ्य, (10) औचित्य, (11) देश, (12) काल, (13) व्यक्ति और (14) स्वर।

❑ अर्थ परिवर्तन की तीन दिशाएँ हैं जो निम्न हैं—

(1) अर्थ-विस्तार (Expansion of Meaning)

(2) अर्थ-संकोच (Centraction of Meaning)

(3) अर्थादेश (Transferance of Meaning)

❑ अर्थ परिवर्तन की दिशाओं का रेखाचित्र निम्न है—

अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ

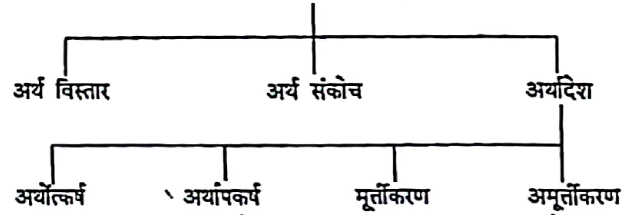

❑ अर्थ परिवर्तन या विकास के अन्तर्गत 'अर्थ-विस्तार' की दृष्टि से प्रमुख शब्दों की सूची निम्न है—

शब्द	मूल अर्थ	परिवर्तित अर्थ (विस्तार)
स्याही	काली स्याही	सभी रंगों की लिखने की स्याही
तेल	तिल का तेल	सभी प्रकार का तेल
कुशल	कुशों को लाना	निपुण, चतुर
प्रवीण	वीणा वादन में निपुण	दक्ष, चतुर
महाराज	राजा	रसोइया
गवेषणा	गाय चाहना	खोज

❑ अर्थ परिवर्तन या विकास के अन्तर्गत 'अर्थ-संकोच' की दृष्टि से प्रमुख शब्दों की सूची निम्न है—

शब्द	मूल अर्थ	परिवर्तित अर्थ (संकोच)
सर्प	जो सरकता है	साँप

बाढ़	बढ़ने की क्रिया	जलावेग
लगान	जो लगाया गया	कर
गौ	इन्द्रिय, पृथ्वी	गाय
ऋक्ष	नक्षत्र, ऋषि	रीछ (भालू)
आदर्श	दर्पण, प्रतिलिपि	अनुकरणीय
आशा	दिशा, इच्छा	इच्छा
अवतार	उतार, भूमिका	देवता का जन्म
मृग	पशु	हिरन
मुर्गा	पक्षी	कुक्कुट
मदक	नशीला	अफीम
खाजा	खाद्य	एक मिठाई
अन्न	खाया हुआ	चना, गेहूँ आदि
लोह	धातु	लोहा

❑ अर्थ परिवर्तन के अन्तर्गत 'अर्थादेश' की दृष्टि से कुछ प्रमुख शब्दों की सूची निम्न हैं—

अर्थोत्कर्ष	**अर्थापकर्ष**	**अमूर्त्तीकरण**	**मूर्त्तीकारण**
मुग्ध	असुर	लाठी (सहारा)	उपन्यास
फिरंगी	जुगुप्सा	काँटा (दर्द)	सुहाग (सौभाग्य)
पाखण्ड	शौच	भार (जिम्मेदारी)	सामग्री (संचय)
चाल	कृष्ण (काला)	निमग्न (व्यस्त)	वात उड़ाना
जमादार	त्योहार	गधा (मुर्ख)	विचार बिखर गये
चार्वाक	मुहूर्त	पूँछ (उपाधि)	विरहाग्नि
सुहागिन	घृणा	आँख दिखाना	विचारधारा
देहाती	मधुर	माथा ठनकाना	विद्याधन
चमार	वज्रवटुक	अन्धकार (निराशा)	[illegible]
सीधा-सादा	[illegible]		

तासी ने किया।

- गार्सा द तासी ने अपनी पुस्तक की रचना **फ्रेंच भाषा** में की।
- तासी ने अपनी पुस्तक का नाम '**इस्त्वार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी**' रखा है।
- यह पुस्तक **दो भागों** में विभक्त है जिसका प्रकाशन क्रमशः 1839 ई० तथा 1847 ई० में हुआ।
- यह ग्रन्थ ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड की प्राच्य साहित्य-अनुवादक समिति की ओर से पेरिस में मुद्रित किया गया।
- '**इस्त्वार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी**' द्वितीय संस्करण में **तीन भागों** में विभक्त हो गया, जिसका प्रकाशन सन् 1871 ई० में हुआ।
- तासी ने अपनी पुस्तक में हिन्दी और उर्दू के अनेक कवियों का विवरण अंग्रेजी वर्णक्रमानुसार दिया है।
- गार्सा द तासी के ग्रन्थ में कुल 738 कवि हैं जिनमें हिन्दी के 72 तथा शेष उर्दू के हैं।
- डॉ० **लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय** ने तॉसी के ग्रन्थ का हिन्दी-अनुवाद '**हिन्दुई साहित्य का इतिहास**' नाम से प्रकाशन सन् 1952 ई० में कराया।
- तासी की पुस्तक '**इस्त्वार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी**' में '**ऐन्दुई**' के लिए **हिन्दवी (हिन्दी)** और '**ऐन्दुस्तानी**' के लिए **हिन्दुस्तानी (उर्दू)** अर्थ प्रयुक्त होता है।
- हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा में हिन्दी भाषा में लिखा प्रथम ग्रन्थ श्री **महेशदत्त शुक्ल** द्वारा रचित '**भाषा काव्य संग्रह**' है।
- भाषा काव्य संग्रह का प्रकाशन सन् 1873 ई० में नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से हुआ।
- **शिव सिंह सेंगर** ने '**शिव सिंह सरोज**' नाम से हिन्दी भाषा में दूसरा महत्त्वपूर्ण इतिहास ग्रन्थ रचा।

- जार्ज ग्रियर्सन द्वारा रचित 'द माडर्न वर्नेक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' को सच्चे अर्थों में हिन्दी साहित्य का पहला इतिहास ग्रन्थ माना जाता है।
- ग्रियर्सन ने अपने ग्रन्थ में 952 कवियों को शामिल किया है।
- डॉ० किशोरीलाल गुप्त ने 'द माडर्न वर्नेक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' का 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' शीर्षक से हिन्दी अनुवाद किया। जिसका प्रकाशन सन् 1957 ई० में हुआ।
- ग्रियर्सन ने कवियों और लेखकों का कालक्रमानुसार वर्गीकरण तथा उनकी प्रवृत्तियों को स्पष्ट किया।
- विभिन्न युगों की काव्य प्रवृत्तियों की व्याख्या करते हुए उनसे सम्बन्धित सांस्कृतिक परिस्थितियों व प्रेरणा स्रोतों का उद्‌घाटन किया।
- प्रस्तुत ग्रन्थ को विभिन्न काल-खण्डों में विभक्त किया गया है तथा प्रत्येक अध्याय काल विशेष का सूचक है।
- जार्ज ग्रियर्सन ने प्रथम बार हिन्दी साहित्य का भाषा की दृष्टि से क्षेत्र निर्धारण करते हुए संस्कृत-प्राकृत एवं अरबी-फारसी मिश्रित उर्दू को उससे पृथक् किया।
- हिन्दी साहित्य के विकास क्रम का निर्धारण चारण काव्य, धार्मिक काव्य, प्रेमकाव्य, दरबारी काव्य के रूप में किया गया है।
- 16वीं-17वीं शताब्दी के युग (भक्तिकाल) को हिन्दी काव्य का स्वर्ण युग मानना ग्रियर्सन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।
- मिश्र बन्धुओं ने 'मिश्रबन्धु विनोद' नामक इतिहास ग्रन्थ की रचना की।
- मिश्र बन्धुओं में 'गणेश विहारी', 'श्याम विहारी' तथा 'शुकदेव विहारी मिश्र' है।
- मिश्रबन्धु विनोद चार भागों में विभक्त है जिसके प्रथम तीन भाग का प्रकाशन सन् 1913 ई० में तथा चतुर्थ भाग का 1934 ई० में प्रकाशन हुआ।
- 'मिश्रबन्धु विनोद' में 4591 कवियों का जीवनवृत्त वर्णित है।
- इसमें अनेक अज्ञात कवियों को प्रकाश में लाने के साथ ही उनके साहित्यिक महत्त्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।
- 'मिश्रबन्धु विनोद' में कवियों का सापेक्षिक महत्त्व निर्धारित करने के लिए उनकी चार श्रेणियाँ बनाई गयी हैं।
- हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' का स्थान सर्वोच्च है।
- आचार्य शुक्ल का इतिहास मूलतः नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्दसागर' की भूमिका के रूप में 'हिन्दी-साहित्य का विकास' के नाम से सन् 1929 ई० में प्रकाशित हुआ।
- 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में एक हजार कवियों और लेखकों को शामिल किया गया है।

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने शिवसिंह सेंगर, जार्ज ग्रियर्सन तथा मिश्र बन्धुओं के इतिहास को 'कवि वृत्त संग्रह' संज्ञा से अभिहित किया।
- आचार्य शुक्ल ने लिखा है, "जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अन्त तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य-परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।"
- सर्वप्रथम आचार्य शुक्ल ने साहित्येतिहास को आलोचना से पृथक् किया तथा अपने विकासवादी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिचय दिया।
- आचार्य शुक्ल ने साहित्येतिहास के प्रति एक निश्चित व सुस्पष्ट दृष्टिकोण का परिचय देते हुए युगीन परिस्थितियों के सन्दर्भ में विकास क्रम की व्याख्या करने का प्रयास किया।
- आचार्य शुक्ल ने 'काल विभाजन' के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य के 900 वर्षों के इतिहास को चार सुस्पष्ट काल खण्डों में विभक्त किया है।
- शुक्लजी ने भक्तिकाल को चार भागों या शाखाओं में बाँट कर उसे सर्वप्रथम शुद्ध दार्शनिक एवं धार्मिक आधार पर प्रतिष्ठित किया।

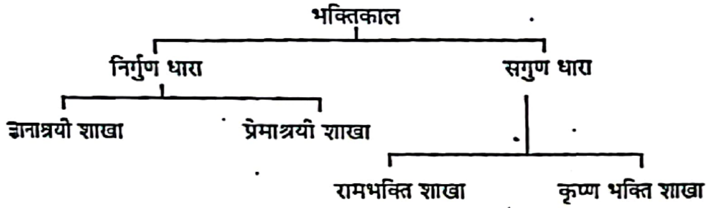

- रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास में पहली बार कवियों और साहित्यकारों के जीवन-चरित सम्बन्धी इतिवृत्ति के स्थान पर उनकी रचनाओं के साहित्यिक मूल्यांकन को प्रमुखता दी।
- एडविन ग्रीव्स महोदय ने सन् 1917 ई० में अंग्रेजी भाषा में 'ए स्केच ऑफ हिन्दी लिट्रेचर' नाम से हिन्दी साहित्य का एक संक्षिप्त इतिहास ग्रन्थ लिखा।
- इन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास के पाँच विभाग किये हैं।
- सन् 1920 ई० में एफ०ई०के० ने अंग्रेज़ी भाषा में 'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिट्रेचर' नाम से एक इतिहास ग्रन्थ लिखा।
- 'तजकिरा-ई-शुअराई-हिन्दी' (1848 ई०) नामक इतिहास ग्रन्थ मौलवी करीमुद्दीन द्वारा लिखा गया। इसमें कुल कवियों की संख्या 1004 है जिसमें हिन्दी के 62 कवि हैं। इस ग्रन्थ में प्रथम बार काल-क्रम का ध्यान रखा गया।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तीन इतिहास ग्रन्थों की रचना क्रमशः 'हिन्दी

साहित्य की भूमिका' (1940), 'हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास' (1952) और 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' (1952) नाम से की।

आचार्य द्विवेदी ने अपने इतिहास में परम्परा की निरन्तरता का अनुशीलन करते हुए एक व्यापक इतिहास-दर्शन की भूमिका तैयार की।

डॉ० रामकुमार वर्मा ने 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' नामक पुस्तक लिखी।

'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' का प्रकाशन सन् 1938 ई० में हुआ।

डॉ० वर्मा ने अपने इतिहास ग्रन्थ में 693 ई० से 1693 ई० तक की कालावधि अर्थात् संधिकाल से लेकर भक्ति काल तक की अवधि को ही लिया।

डॉ० वर्मा ने सम्पूर्ण ग्रन्थ को सात प्रकरण में विभक्त किया।

डॉ० वर्मा ने स्वयंभू को, जो कि अपभ्रंश के सबसे पहले कवि हैं, हिन्दी का पहला कवि मानते हुए हिन्दी साहित्य का आरम्भ 693 ई० से स्वीकार किया।

नागरी प्रचारिणी सभा से 'हिन्दी-साहित्य का बृहद् इतिहास' का प्रकाशन 16 खण्डों में हो चुका है।

अनेकानेक विद्वानों ने अलग-अलग खण्डों का सम्पादन कार्य किया है, जो अग्रांकित है—

भाग	प्रत्येक भाग का नाम	सम्पादक
प्रथम	हिन्दी साहित्य की पीठिका	डॉ० राजबली पाण्डेय
दूसरा	हिन्दी भाषा का विकास	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा
तीसरा	आदिकाल	पं० करुणापति त्रिपाठी व वासुदेव सिंह
चौथा	भक्तिकाल : निर्गुण भक्ति	परशुराम चतुर्वेदी
पाँचवाँ	भक्तिकाल : सगुण भक्ति	देवेन्द्रनाथ शर्मा व विजयेंद्र स्नातक
छठा	रीतिकाल : रीतिबद्ध	डॉ० नगेन्द्र
सातवाँ	रीतिकाल : रीतिमुक्त	डॉ० भगीरथ मिश्र
आठवाँ	हिन्दी साहित्य का अभ्युत्थान भारतेन्दु काल (संवत् 1900-1950 वि० तक)	डॉ० विनयमोहन शर्मा
नवाँ	द्विवेदी काल (सं० 1950-75 वि०)	पं० सुधाकर पाण्डेय
दसवाँ	उत्कर्ष काल : काव्य, (सं० 1975-95 वि०)	डॉ० नगेन्द्र
ग्यारहवाँ	उत्कर्ष काल : नाटक (सं० 1975-95 वि०)	सवित्री सिंह व दशरथ ओझा
बारहवाँ	कथा-साहित्य (सं० 1975-95 वि०)	डॉ० निर्मला जैन
तेरहवाँ	समालोचना, निबन्ध और, पत्रकारिता (सं० 1975-95 वि०)	सं० लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'
चौदहवाँ	अद्यतन काल (सं० 1995-2017 वि०)	सहा० डॉ० हरवंशलाल शर्मा और डॉ० कैलाशचन्द्र भाटिया
पन्द्रहवाँ	आंतर भारती हिन्दी साहित्य	डॉ० नगेन्द्र और पं० राहुल सांकृत्याय
सोलहवाँ	हिन्दी का लोक साहित्य	डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

- डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने विभिन्न विद्वानों के सामूहिक सहयोग से 'हिन्दी साहित्य' नाम इतिहास ग्रन्थ का सम्पादन कार्य किया।
- इस ग्रन्थ में सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को तीन कालों—आदिकाल, मध्यकाल ए आधुनिक काल में विभक्त करते हुए प्रत्येक काल की काव्य-परम्पराओं का विवर अविच्छिन्न रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- हिन्दी साहित्येतिहास सम्बन्धी प्रमुख ग्रन्थ तथा रचनाकार—

(1) हिन्दी काव्यधारा (1944 ई०) : पं० राहुल सांकृत्यायन
(2) हिन्दी साहित्य का इतिहास (1973 ई०) : सं० डॉ० नगेन्द्र
(3) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त (दो भाग में, प्रथम व द्वितीय खण्ड 1965 ई०)
(4) हिन्दी साहित्य का अतीत (दो भाग) : आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मि
(5) हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास (1986 ई०) : डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी
(6) साहित्य का इतिहास-दर्शन : डॉ० नलिन विलोचन शर्मा
(7) हिन्दी भाषा का विकास (1924 ई०) : डॉ० श्यामसुन्दर दास
(8) हिन्दी भाषा और साहित्य (1930 ई०) : डॉ० श्यामसुन्दर दास
(9) हिन्दी कोविद रत्नमाला : डॉ० श्यामसुन्दर दास [दो भाग (प्रथम 1909 में व द्वितीय 1914 में प्रकाशित)]
(10) राजस्थानी भाषा और साहित्य : डॉ० मोतीलाल मेनारिया
(11) राजस्थानी पिंगल साहित्य : डॉ० मोतीलाल मेनारिया
(12) हिन्दी वीरकाव्य (1945 ई०) : डॉ० टीकम सिंह तोमर
(13) हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास : डॉ० भगीरथ मिश्र
(14) आधुनिक हिन्दी का आदिकाल (1973 ई०) : श्री नारायण चतुर्वेदी
(15) हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी (1945 ई०) : नन्ददुलारे वाजपेयी
(16) आधुनिक हिन्दी साहित्य (1950 ई०) : नन्ददुलारे वाजपेयी
(17) हिन्दी साहित्य का इतिहास (1931 ई०) : रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'
(18) हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास : उदयनारायण तिवारी
(19) हिन्दी साहित्य विमर्श (1923 ई०) : पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
(20) कविता कौमुदी (1917 ई०) : रामनरेश त्रिपाठी
(21) भाषा काव्य संग्रह (1873 ई०) : महेश दत्त शुक्ल

(22) हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास (1930 ई०) : सूर्यकान्त शास्त्री
(23) आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास (1934 ई०) : कृष्णशंकर शुक्ल
(24) मार्डन हिन्दी लिट्रेचर (1939 ई०) : डॉ० इन्द्रनाथ मदान
(25) खड़ी वोली हिन्दी साहित्य का इतिहास (1941 ई०) : व्रजरत्नदास
(26) आधुनिक हिन्दी साहित्य (1941 ई०) : लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
(27) व्रजमाधुरी सार (1923 ई०) : वियोगी हरि
(28) हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास (1996 ई०) : डॉ० वच्चन सिंह
(29) हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास (2003 ई०) : सुमन राजे
(30) हिन्दी साहित्य का मौखिक इतिहास : नीलाभ
(31) हिन्दी साहित्य का ओझल नारी इतिहास (2013 ई०) : नीरजा माधव

हिन्दी साहित्य : काल-विभाजन और नामकरण

डॉ० जॉर्ज गियर्सन का काल-विभाजन—(1) चारण काल (700-1300 ई०), (2) पन्द्रहवीं शती का धार्मिक पुनर्जागरण, (3) जायसी की प्रेम कविता, (4) व्रज का कृष्ण सम्प्रदाय, (5) मुगल दरवार, (6) तुलसीदास, (7) रीतिकाव्य, (8) तुलसीदास के अन्य परवर्ती, (9) अट्ठारहवीं शताब्दी, (10) कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान, (11) महारानी विक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान।

जार्ज ग्रियर्सन ने सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य के आरम्भिक काल को 'चारण काल' से अभिहित किया।

ग्रियर्सन ने 'चारण काल' के अन्तर्गत 9 कवियों—पुष्य कवि, खुमाण सिंह, केदार, कुमार पाल, अनन्यदास, चन्द, जगनिक, जोधराज एवं शार्ङ्गधर का उल्लेख किया है।

ग्रियर्सन ने अपने इतिहास में केवल प्रवृत्तिगत काल-विभाजन किया है।

ग्रियर्सन ने कालों का नामकरण एक आधार पर नहीं किया।

मिश्र-वन्धुओं का काल-विभाजन

(1) प्रारम्भिक काल	पूर्व प्रारम्भिक काल (700-1343 वि०)
	उत्तरारंभिक काल (1344-1444 वि०)
(2) माध्यमिक काल	पूर्व माध्यमिक काल (1445-1560 वि०)
	प्रौढ़ माध्यमिक काल (1561-1680 वि०)
(3) अलंकृत काल	पूर्वालंकृत काल (1681-1790 वि०)
	उत्तरालंकृत काल (1791-1889 वि०)
(4) परिवर्तन (1890-1924 वि०)	

(5) वर्तमान काल (1926 वि० से अब तक)

- आचार्य शुक्ल का काल विभाजन
  (1) आदिकाल (वीरगाथा काल, सं० 1050 - 1375)
  (2) पूर्व-मध्यकाल (भक्ति काल, सं० 1375 - 1700)
  (3) उत्तर-मध्यकाल (रीति काल, सं० 1700 - 1900)
  (4) आधुनिक काल (गद्य काल, सं० 1900 - 1984)
- डॉ० रामकुमार वर्मा का काल-विभाजन
  (1) संधि काल (सं० 750 - 1000 वि०)
  (2) चारण काल (सं० 1000 - 1375 वि०)
  (3) भक्ति काल (सं० 1375 - 1700 वि०)
  (4) रीतिकाल (सं० 1700 - 1900 वि०)
  (5) आधुनिक काल (सं० 1900 से अब तक)
- डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त का काल विभाजन
  (1) आदिकाल (सन् 1184-1350)
  (2) पूर्व मध्यकाल (सन् 1350-1600 ई०)
  (3) उत्तर मध्यकाल (सन् 1600-1857 ई०)
  (4) आधुनिक काल (सन् 1857 से अब तक)
- डॉ० नगेन्द्र द्वारा सम्पादित ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के अनुसार काल-विभाजन—
  (1) आदिकाल—सातवीं शती के मध्य से चौदहवीं शती के मध्य तक
  (2) भक्तिकाल—14वीं शती के मध्य से 17वीं शती के मध्य तक।
  (3) रीतिकाल—17वीं शती के मध्य से उन्नीसवीं शती के मध्य तक।
  (4) आधुनिक काल—19वीं शती के मध्य से अब तक
  (i) पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु काल) 1857-1900 ई०
  (ii) जागरण-सुधार-काल (द्विवेदी काल) 1900-1918 ई०
  (iii) छायावाद काल 1918-1938 ई०
  (iv) छायावादोत्तर काल
  (क) प्रगति- प्रयोग काल 1938-1953 ई०
  (ख) नवलेखन-काल 1953 ई० से अब तक
- डॉ० वच्चन सिंह का काल-विभाजन
  (1) अपभ्रंश काल
  (2) भक्तिकाल (सन् 1400-1650)
  (3) रीतिकाल (सन् 1650-1857)
  (4) आधुनिक काल (सन् 1857 से अब तक)
- आदिकाल का नामकरण

नाम	प्रयोक्ता
चारण काल	जार्ज ग्रियर्सन

प्रारम्भिक काल	मिश्र बन्धु
बीज वपन काल	आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
वीरगाथा काल	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
सिद्ध सामंत काल	पं० राहुल सांकृत्यायन
वीरकाल	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
संधिकाल एवं चारण काल	डॉ० रामकुमार वर्मा
आदिकाल	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
आधार काल	सुमन राजे

□ **रीतिकाल का नामकरण**

नाम	प्रयोक्ता
रीतिकाव्य	जार्ज ग्रियर्सन
अलंकृत काल	मिश्र बन्धु
रीतिकाल	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
शृंगारकाल	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
कला काल	रमाशंकर शुक्ल रसाल

□ **डॉ० उदयनारायण तिवारी, डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत और डॉ० महेन्द्रनाथ दुबे द्वारा 'भाषा' की दृष्टि से किया काल विभाजन**

(1) पृष्ठभूमि	अवहट्ठ काल
(2) उन्मेष काल	भाषा व्रजबुलि, पुरानी व्रजी, कौरवी या खड़ी बोली एवं अवधी काल
(3) पूर्व भाग	व्रजभाषा – अवधी काल
(4) उत्तर भाग	खड़ी बोली काल

आदिकाल

पूर्व पीठिका

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा वर्णित आदिकाल के सन्दर्भ में

प्रमुख कथन

□ प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव माना जा सकता है।

□ हिन्दी साहित्य का आदिकाल संवत् 1050 से लेकर संवत् 1375 तक अर्थात् महाराज भोज के समय से लेकर हम्मीरदेव के समय के कुछ पीछे तक माना जा सकता है।

□ राजाश्रित कवि और चारण जिस प्रकार नीति, शृंगार आदि के फुटकल दोहे राज सभाओं में सुनाया करते थे, उसी प्रकार अपने आश्रयदाता राजाओं के पराक्रमपूर्ण चरितों या गाथाओं का वर्णन भी किया करते थे। यही प्रबन्ध परम्परा 'रासो' के नाम से पायी जाती है जिसे लक्ष्य करके इस काल को हमने 'वीरगाथा काल' कहा है।

□ अपभ्रंश नाम पहले पहल बलभी के राजा धारसेन द्वितीय के शिलालेख में मिलता है जिसमें उसने अपने पिता गुहसेन (वि०सं० 650 के पहले) को संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश तीनों का कवि कहा है।

□ सिद्धों की उद्धृत रचनाओं की भाषा देशभाषा मिश्रित अपभ्रंश या पुरानी हिन्दी की काव्यभाषा है।

□ पुरानी हिन्दी की व्यापक काव्यभाषा का ढाँचा शौरसेनी प्रसूत अपभ्रंश अर्थात् व्रज और खड़ी बोली (पश्चिमी हिन्दी) का था।

□ आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गये हैं। उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों ने 'गीतगोविन्द' के पदों को आध्यात्मिक संकेत बताया है, वैसे ही विद्यापति के इन पदों को भी।

महत्त्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

1. "जो जिण सासण भाषियउ सो भइ कहियउ सारु।
जो पालइ सइ भाउ करि सो सरि पावइ पारु॥"—देवसेन (श्रावकाचार)

2. "पंडिअ सअल सत्त वक्खाणइ। देहहि रुद्ध वसंत न जाणइ।
अमणागमण ण तेन विखंडिअ। तो वि णिलज्जइ भणइ हउँ पंडिय॥"
—सरहपा

"जहि मन पवन न संचरइ, रवि ससि नाहि पवेश।
तहि वत चित्त विसाम करु, सरेहे कहिअ उवेश॥"—सरहपा
"घोर अधारे चंदमणि जिमि उज्जोअ करेइ।
परम महासुह एषु कणे दुरिअ अशेष हरेइ॥"—सरहपा

3. "काआ तरुवर पंच विडाल"—लूइपा
"भाव न होइ, अभाव ण जाइ"—लूइपा

4. "सहजे थर करि वारुणी साध"—विरुपा

5. "एक्क ण किज्जइ मंत्र ण तंत"—कण्हपा

6. "हालो डोंवी! तो पुछमि सदभावे
सदगुरु पाअ पए जाइब पुणु जिणउरा"—कण्हपा

7. "भल्ला हुआ जो मारिया"—हेमचन्द्र
"पिय संगमि कउ निद्दड़ी"—हेमचन्द्र

8. "गंगा जउँना माझे बहइ रे नाई"—डोम्भिपा

9. "नगर वाहिरे डोंवी तोहरि कुडिया छइ।"
"छोइ जाइ सो बाह्म नाड़िया॥"—कण्हपा
"जिमि लोण बिलिज्जइ पाणि एहि तिमि धरणी लइ चित्त"—कण्हपा

10. "देसिल बयना सब जन मिट्ठा। ते तैंसन जंपओ अवहट्ठा॥"—विद्यापति
"हिन्दू बोले दूरहि निकार। छोटे तरुका भभकी मार॥"
—विद्यापति (कीर्तिलता से)

11. "मनहु कला ससभान कला सोलह सो बन्निय"
"विगसि कमलस्रिग, भ्रमर, वेनु, खंजन मृग लुट्टिय"—पृथ्वीराज रासो से

"बज्जिय घोर निसान रान चौहान चहौं दिस।"—पृथ्वीराज रासो से
"उट्टि राज प्रिथिराज बाग मनो लग्ग वीर नट"—पृथ्वीराज रासो से

12. "बारह बरिस लै कूकर जीऐं औ तेरह लौ जिऐं सियार।
वरिस अठारह छत्री जीऐं, आगे जीवन को धिक्कार॥" —जगनिक

13. "एक थाल मोती से भरा"—अमीर खुसरो
"एक नार ने अचरज किया"—अमीर खुसरो
"गोरी सोवै सेज पर, मुख पर डारै केस"—अमीर खुसरो
"मेरा जोबना नवेलरा भयो है गुलाल"—अमीर खुसरो

14. "जे हाल मिसकी मकुन तगाफुल दुराय नैना, बनाय बतियाँ"—अमीर खुसरो

15. "सरस वसंत समय भल पावलि"—विद्यापति (पदावली से)
"कालि कहल पिय साँझहिरे, जाइव मइ मारू देस"
—विद्यापति (पदावली से)

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- 'प्राकृताभास हिन्दी' का तात्पर्य है प्राकृत की रूढ़ियों में वहुत कुछ बद्ध हिन्दी।
- कवि विद्यापति ने दो प्रकार की भाषा का प्रयोग किया हैं—(1) पुरानी अपभ्रंश का और (2) बोलचाल की देशी भाषा का।
- 'गाहा' या 'गाथा' कहने से प्राकृत का बोध होता है।
- 'दोहा' या 'दूहा' कहने से अपभ्रंश या लोक प्रचलित काव्य-भाषा का बोध होता है।
- भरतमुनि (वि० तीसरी शती) ने नाट्यशास्त्र में 'अपभ्रंश' नाम न देकर लोकभाषा को 'देशभाषा' ही कहा है।
- अपभ्रंश या प्राकृताभास हिन्दी की रचना विक्रम की सातवीं शताव्दी से होने लगा था।
- चौरासी सिद्धों के नाम ये हैं—

(1) लुइपा – कायस्थ, (2) लीलापा, (3) विरूपा, (4) डोम्बिपा – क्षत्रिय, (5) शवरपा – क्षत्रिय, (6) सरहपा – ब्राह्मण, (7) कंकालीपा – शूद्र, (8) मीनपा – मछुआ, (9) गोरक्षपा, (10) चोरंगिपा – राजकुमार, (11) वीणापा –राजकुमार, (12) शान्तिपा – ब्राह्मण, (13) तंतिपा – तँववा, (14) चमारिपा – चर्मकार, (15) खड्गपा – शूद्र, (16) नागार्जुन – ब्राह्मण, (17) कण्हपा – कायस्थ, (18) कर्णरिपा, (19) थगनपा – शूद्र, (20) नारोपा – ब्राह्मण, (21) शलिपा – शूद्र, (22) तिलोपा – ब्राह्मण, (23) छत्रपा – शूद्र, (24) भद्रपा – ब्राह्मण, (25) दोखंधिपा, (26) अजोगिपा – गृहपति, (27) कालपा, (28) धोम्पिपा – धोवी, (29) कंकणपा – राजकुमार, (30) कमरिपा, (31) डेंगिपा – ब्राह्मण, (32) भदेपा, (33) तंधेपा – शूद्र, (34) कुक्कुरिपा – ब्राह्मण, (35) कुचिपा – शूद्र, (36) धर्मपा – ब्राह्मण, (37) महीपा – शूद्र, (38) अचिंतपा – लकड़हारा, (39) भलहपा – क्षत्रिय, (40) नलिनपा, (41) भुसुकिपा – राजकुमार,

(42) इन्द्रभूति – राजा, (43) मेकोपा – वणिक्, (44) कुठालिपा, (45) कमरिपा – लोहार, (46) जालंधरपा – ब्राह्मण, (47) राहुलपा – शूद्र, (48) मेदनीपा, (49) धर्वरिपा, (50) धोकरिपा – शूद्र, (51) पंकजपा – ब्राह्मण, (52) घंटापा – क्षत्रिय, (53) जोगीपा – डोम, (54) चेकुलपा – शूद्र, (55) गुंडरिपा – चिड़ीमार, (56) लुचिकपा – ब्राह्मण, (57) निर्गुणपा – शूद्र, (58) जयानन्त – ब्राह्मण, (59) चर्पटीपा – कहार, (60) चम्पकपा, (61) भिखनपा – शूद्र, (62) भलिपा – कृष्ण घृत वणिक्, (63) कुमरिपा, (64) चवरिपा, (65) मणिभद्रा – (योगिनी) गृहदासी, (66) मेखलापा (योगिनी) गृहपति कन्या, (67) कनपलापा (योगिनी) गृहपति कन्या, (68) कलकलपा – शूद्र, (69) कंतालीपा – दर्जी, (70) धहुलिपा – शूद्र, (71) उधलिपा – वैश्य, (72) कपालपा – शूद्र, (73) किलपा – राजकुमार, (74) सागरपा – राजा, (75) सर्वभक्षपा – शूद्र, (76) नागबोधिपा – ब्राह्मण, (77) दारिकपा – राजा, (78) पुतुलिपा – शूद्र, (79) पनहपा – चमार, (80) कोकालिपा – राजकुमार, (81) अनंगपा –शूद्र, (82) लक्ष्मीकरा – (योगिनी) राजकुमारी, (83) समुदपा, (84) भलिपा – ब्राह्मण

- सिद्धों में सबसे पुराने 'सरह' (सरोजवज्र भी नाम है) है।
- 'महासुखवाद' का प्रवर्तन वज्रयान शाखा में हुआ। 'महासुख' का अर्थ है आनन्दस्वरूप ईश्वरत्व। प्रज्ञा और उपाय के योग से इस 'महासुख' दशा की प्राप्ति मानी गई है।
- गोरखनाथ का नाथ पंथ मूल रूप से वज्रयान शाखा का ही एक रूप है।
- गोरखनाथ ने पतंजलि के उच्च लक्ष्य, ईश्वर प्राप्ति को लेकर हठयोग का प्रवर्तन किया।
- वज्रयानी सिद्धों का लीला क्षेत्र भारत का पूरबी भाग था।
- गोरखनाथ ने अपने ग्रन्थ का प्रचार देश के पश्चिमी भागों में विशेषकर राजपुताने और पंजाब में किया।
- नाथों की संख्या नौ माना गया है। लोग इन्हें नवनाथ भी कहते हैं। 'गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह' में इनका नाम निम्न क्रम में बताया गया है—
नागार्जुन, जड़भरत, हरिश्चन्द्र, सत्यनाथ, भीमनाथ, गोरक्षनाथ, चर्पट, जलंधर और मलयार्जुन।

अपभ्रंश साहित्य

- डॉ० रामकुमार वर्मा ने अपभ्रंश भाषा के प्रथम कवि स्वयंभू को हिन्दी का प्रथम कवि माना है।
- स्वयंभू आठवीं शती (783 ई०) के आसपास विद्यमान थे।
- स्वयंभू को ही जैन परम्परा का भी प्रथम कवि माना जाता है।
- स्वयंभू के तीन ग्रन्थ बताये जाते हैं—(1) पउम चरिउ, (2) रिट्ठणेमि चरिउ तथा (3) स्वयंभू छंद।
- स्वयंभू को अपभ्रंश भाषा का वाल्मीकि तथा व्यास कहा जाता है।

- स्वयंभू ने अपनी भाषा को 'देशी भाषा' कहा है।
- स्वयंभू के 'पउमचरिउ' को उसके पुत्र त्रिभुवन ने पूरा किया।
- 'पउमचरिउ' में राम का चरित्र विस्तार से वर्णित है।
- शिवसिंह सेंगर ने अपने ग्रन्थ 'शिवसिंह सरोज' में किसी पुरानी अनुश्रुति के आधार पर सातवीं शताब्दी के पुष्य या पुंड कवि को हिन्दी का प्रथम कवि माना है।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार—"यह पुष्य सम्भवतः अपभ्रंश का प्रसिद्ध कवि पुष्पदंत है जिसका आविर्भाव 9वीं शती में हुआ।"
- सर्वमान्य धारणा है कि पुष्पदंत का आविर्भाव 972 ई० (10वीं शती) में हुआ।
- पुष्पदंत की प्रमुख रचनाएँ हैं—(1) तिरसठी महापुरिस गुणालंकार, (2) णयकुमारचरिउ तथा (3) जसहर चरिउ।
- पुष्पदंत के 'तिरसठी महापुरिस गुणालंकार' को ही महापुराण नाम से जाना जाता है।
- महापुराण में 63 महापुरुषों का जीवन चरित वर्णित है।
- पुष्पदंत ने अपने चरित काव्यों में चौपाई छंद का प्रयोग किया है।
- पुष्पदंत ने साहित्य की रचना विशुद्ध धार्मिक भाव से किया है।
- अपभ्रंश और अवहट्ठ में चउपई (चौपाई) 15 मात्राओं का छन्द था।
- पुष्पदंत को हिन्दी का भवभूति कहा जाता है।
- शिवसिंह सेंगर ने पुष्य कवि को 'भाखा की जड़' कहा है।
- पुष्पदंत ने स्वयं को 'अभिमान मेरु', 'काव्यरत्नाकर', 'कविकुल तिलक' आदि उपाधियों से विभूषित किया है।
- हरिषेण ने अपनी 'धम्म-परीक्खा' में अपभ्रंश के तीन कवि माने हैं—(1) चतुर्मुख, (2) स्वयंभू और (3) पुष्पदंत।
- स्वयंभू ने चतुर्मुख को पद्धड़िया बंध का प्रवर्तक तथा सर्वश्रेष्ठ कवि कहा है।
- पद्धरी 16 मात्रा का मात्रिक छंद है। इस छंद के नाम पर इस पद्धति पर लिखे जाने वाले काव्यों को पद्धड़िया बंध कहा गया है।
- पुष्पदंत मान्यखेट के प्रतापी राजा कर्ण के महामात्य भीम के सभा-कवि थे।
- धनपाल वाक्यपतिराज मुंज के कवि सभा रत्न थे जिन्हें मुंज ने 'सरस्वती' की उपाधि दी थी।
- अपभ्रंश के तीसरे प्रमुख कवि धनपाल ने दसवीं शती में 'भविसयत्तकहा' की रचना की।
- 12वीं शताब्दी में जिनदत्त सूरी द्वारा लिखित ग्रन्थ 'उपदेश रसायन रास' (1114 ई०) को जैन रास काव्य परम्परा का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है।
- 'उपदेश रसायन रास' अपभ्रंश भाषा का प्रथम रास काव्य है।
- रास काव्य परम्परा का हिन्दी में प्रवर्तन करने का श्रेय 'भरतेश्वर बाहुबली रास' (1184 ई०) के रचयिता श्री शालिभद्र सूरी को है।
- 'उपदेश रसायनरास' 80 पद्यों का नृत्य गीत रासलीला काव्य है।
- अब्दुल रहमान द्वारा लिखित 'संदेश रासक' पहला धर्मेतर रास ग्रन्थ है।
- देशी भाषा में किसी मुसलमान द्वारा लिखित प्रथम काव्य ग्रन्थ 'संदेशरासक' है।

- संदेशरासक एक खण्ड काव्य है जिसमें विक्रमपुर की एक वियोगिनी के विरह की कथा वर्णित है।
- विद्वानों ने उसका समय बारहवीं शती का उत्तरार्द्ध और 13वीं शती का आरम्भ माना है।
- मुनि रामसिंह जैन-साहित्य में सर्वश्रेष्ठ रहस्यवादी कवि कहे जाते हैं।
- डॉ० हीरालाल मुनि रामसिंह का आविर्भाव-काल सं० 1057 के लगभग मानते हैं।
- मुनिराम सिंह ने 'पाहुड़ दोहा' की रचना की।
- अपभ्रंश भाषा में दोहा काव्य का आरम्भ छठी शताब्दी के कवि जोइन्दु से माना जाता है।
- जोइन्दु ने दो पुस्तकों की रचना की है—(1) परमात्म प्रकाश और (2) योगसार।
- जार्ज ग्रियर्सन ने आदिकाल के अन्तर्गत नौ कवियों को शामिल किया—पुष्य कवि, खुमान सिंह, केदार, कुमार पाल, अनन्यदास, चन्द्र, जगनिक, शार्ङ्गधर एवं जोधराज।
- मिश्र बन्धुओं ने 'मिश्र बन्धु-विनोद' के प्रथम संस्करण में 'आरम्भिक काल' (700-1444 वि०) के अन्तर्गत 19 कवियों को स्थान दिया है।
- ये 19 कवि इस प्रकार हैं—

(1)	पुष्य या पुण्ड	रचना अज्ञात	770 वि०
(2)	अज्ञात कवि	खुमान रासो	890 वि०
(3)	नन्द कवि	रचना अज्ञात	1137 वि०
(4)	मसऊद	रचना अज्ञात	1180 वि०
(5)	कुतुब अली	रचना अज्ञात	1180 वि०
(6)	साईदान चारण	सम्वतसार	1191 वि०
(7)	अकरम फैज	वर्तमाल	1205-58 वि०
(8)	चन्द	पृथ्वीराज रासो	1225-49 वि०
(9)	जगनिक	आल्हा	—
(10)	केदार कवि	—	—
(11)	बारदर वेणी	अज्ञात	1225 वि०
(12)	जल्हन	—	—
(13)	भूपति	भागवत दशम स्कन्ध भाषा	1344 वि०
(14)	नरपति नाल्ह	विसलदेव रासो	1354 वि०
(15)	नल्हसिंह	विजयपाल रासो	1355 वि०
(16)	शार्ङ्गधर	हम्मीर काव्य	1357 वि०
(17)	अमीर खुसरो	—	—
(18)	मुल्ला दाऊद	नूरक चंदा की प्रेम कहानी	1385 वि०
(19)	गोरखनाथ	40 ग्रन्थ	1407 वि०

- मिश्र बन्धुओं ने अपने 'मिश्र बन्धु-विनोद' के अगले संस्करणों में नाथपंथियों और सिद्धों को सम्मिलित करते हुए इस काल में कवियों की संख्या 75 तक पहुँचा दी।

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास में आदिकालीन रचनाओं को दो वर्गों में विभक्त किया है—(1) अपभ्रंश और (2) देशभाषा (बोलचाल) की रचनाएँ।
- आचार्य शुक्ल ने निम्नांकित 12 रचनाओं को ही साहित्य में स्थान दिया—
  (क) अपभ्रंश की रचनाएँ—(1) विजयपाल रासो, (2) हम्मीर रासो, (3) कीर्तिलता और (4) कीर्ति पताका।
  (ख) 'देशभाषा काव्य' की रचनाएँ—(1) खुमान रासो, (2) बीसलदेव रासो, (3) पृथ्वीराज रासो, (4) जयचन्द्र प्रकाश, (5) जयमयंक जस चन्द्रिका, (6) परमाल रासो (आल्हा का मूल रूप), (7) खुसरो की पहेलियाँ और (8) विद्यापति पदावली।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल के अन्तर्गत नौ कवियों को शामिल किया है।
- हेमचन्द्र गुजरात के सोलंकी राजा सिद्धराज जयसिंह और उनके भतीजे कुमार पाल के राजदरबार में रहते थे।
- आचार्य के व्याकरण का नाम 'सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन' था।
- हेमचन्द्र का व्याकरण 'सिद्ध हेम' नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- 'सिद्ध हेम' में संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश तीनों का समावेश किया गया है।
- हेमचन्द्र प्रसिद्ध जैन आचार्य थे और इनका जन्म 1088 ई० में हुआ।
- हेमचन्द्र के अन्य पुस्तकों का नाम निम्न है—'कुमार पाल चरित्र', 'योगशास्त्र', 'प्राकृत व्याकरण', 'छन्दोनुशासन' और 'देशी नाममाला कोष'।
- हेमचन्द्र को प्राकृत का पाणिनी माना जाता है। अपने व्याकरण के उदाहरणों के लिए हेमचन्द्र ने भट्टी के समान एक 'द्वयाश्रय काव्य' की भी रचना की है।
- सोमप्रभ सूरी गुजरात के एक प्रसिद्ध जैन साधु थे जिनका आविर्भाव 1252 वि०स० में माना जाता है।
- सोमप्रभ सूरी ने 'कुमारपाल प्रतिबोध' (1241 वि०सं०) नाम एक गद्य-पद्य मय संस्कृत-प्राकृत काव्य लिखा।
- जैनाचार्य मेरुतुंग ने संवत् 1361 में 'प्रबन्धचिन्तामणि' नामक एक ग्रन्थ की रचना संस्कृत भाषा में की।
- 'प्रबन्ध चिन्तामणि' में कुछ दोहे मालवा नरेश राजा भोज के चाचा मुंज के कहे हुए हैं।
- 'प्रबन्ध-चिन्तामणि' में 'दूहा विद्या' में विवाद करने वाले दो चारणों की कथा आई है इसीलिए अपभ्रंश काव्य को 'दूहा विद्या' भी कहा जाने लगा।
- अपभ्रंश से पूर्व दोहा का प्रयोग नहीं होता था।
- लक्ष्मीधर ने 14वीं शताब्दी के अन्त में 'प्राकृत पैंगलम' नामक एक ग्रन्थ का संग्रह किया।
- 'प्राकृत पैंगलम्' में विद्याधर, शार्ङगधर, जज्जल, बब्बर आदि कवियों की रचनाओं को संकलित किया गया है।
- 'प्राकृत पैंगलम' में प्राकृत और अपभ्रंश छन्दों की विवेचना की गई है।

- 'प्राकृत पैंगलम्' को 'प्राकृत पिंगल सूत्र' भी कहा जाता है।
- 'प्राकृत पैंगलम्' की टीका वंशीधर नामक किसी विद्वान ने लिखा है।
- शार्ङगधर एक अच्छे कवि और सूत्रकार थे।
- शार्ङगधर ने 'शार्ङगधर पद्धति' के नाम से एक सुभाषित संग्रह बनाया।
- 'शार्ङगधर पद्धति' में बहुत से शाबर मंत्र और भाषा चित्र-काव्य भी दिया गया है।
- आचार्य शुक्ल ने 'प्राकृत पैंगलम्' के कुछ छंद के आधार पर 'हम्मीररासो' ग्रन्थ के अस्तित्व की कल्पना की जिसका रचनाकार शार्ङगधर को बताया।
- राहुल सांकृत्यायन ने जज्जल नामक किसी कवि को इसका रचयिता घोषित किया।
- हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन है कि 'हम्मीर' शब्द अमीर का विकृत रूप है, जो किसी पात्र का न होकर एक विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है।
- शिवसिंह सेंगर के अनुसार चंद की औलाद में शार्ङगधर कवि हुए थे, जिन्होंने हम्मीर रैंसा और हम्मीर काव्य भाषा में बनाया था।
- शार्ङगधर कृत 'शार्ङगधर पद्धति' संस्कृत भाषा में लिखा एक पद्यकोष है किन्तु बीच-बीच में देशभाषा के वाक्य भी आये हैं।
- श्रीमल्लदेव राजा की प्रशंसा में 'शार्ङगधर पद्धति' में श्रीकंठ पण्डित का संगृहीत यह श्लोक उल्लेख योग्य है—

  नूनं बादलं छाइ खेह पसरी निःश्राण शब्दः खरः।
  शत्रुं पाड़ि लुटालि तोड़ हसिनौं एवं भणन्त्युद्भटाः॥
  झूठे गर्वभरा मघालि सहसों रे कंत मेरे कहे।
  कंठे पाग निवेश जाह शरणं श्रीमल्लदेवं विभुम्॥

- डॉ० बच्चन सिंह ने अनुमान व्यक्त किया है कि शार्ङगधर कुंडलिया छन्द के प्रथम प्रयोक्ता हैं।

सिद्ध साहित्य

- सरहपा को हिन्दी का प्रथम कवि माना जाता है।
- इन्हें सरोजवज्र, राहल भद्र आदि नामों से भी जाना जाता है।
- सिद्धों में सबसे पुराने सरहपाद हैं।
- सिद्धों ने बौद्ध-धर्म के वज्रयान तत्त्व का प्रचार करने के लिए जो साहित्य जन-भाषा में लिखा, वह हिन्दी के सिद्ध-साहित्य की सीमा में आता है।
- वज्रयान का केन्द्र श्रीपर्वत पर रहा।
- सहजयानियों की भाषा का नाम संध्या भाषा है।
- कुछ विद्वानों ने संध्या भाषा का अर्थ यह बताया है कि यह ऐसी भाषा है, जिसमें संध्या के समान प्रकाश तथा अन्धकार का मिश्रण है, ज्ञान के आलोक से उसकी सारी बातें स्पष्ट हो जाती है।
- कुछ विद्वानों ने संध्या भाषा का अर्थ अभिसंधि या अभिप्राययुक्त वाणी बताया है।
- पण्डित विधुशेखर शास्त्री ने बताया कि मूल शब्द संध्या भाषा नहीं, बल्कि संधा भाषा रहा होगा।

- ज्योतिरीश्वर ठाकुर रचित वर्ण रत्नाकर नामक 14वीं शताब्दी के मैथिली ग्रन्थ में 84 सिद्धों के नाम दिये गये हैं।
- सहजयानियों की संध्या भाषा का प्रभाव संत कवियों पर भी पड़ा और वे उलटवासियाँ लिखने लगें।
- राहुल सांकृत्यायन ने सरहपाद का समय 769 ई० स्थिर किया है।
- विनयतोष भट्टाचार्य ने सरहपाद का समय वि०सं० 690 (633 ई०) स्थिर किया है। इनके लिखे 32 ग्रन्थ बताये जाते हैं जिनमें 'दोहा कोश' प्रसिद्ध है।
- महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री द्वारा सम्पादित 'बौद्ध गान ओ दोहा' में सरहपा और कृष्णाचार्य का दोहा संगृहीत है।
- महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने 'बौद्ध गान ओ दोहा' में संगृहीत पुस्तकों की भाषा को 'प्राचीन बंगला' कहा है।
- 'दोहा कोश' का सम्पादन डॉ० प्रबोध चन्द्र वागची ने किया।
- 'दोहा कोश' में तिल्लोपा, सरहपा, कण्हपा के दोहे संगृहीत हैं।
- सरहपा की जीवन दृष्टि संक्षेप में इस प्रकार है—

सहज संयम
↓
पाखण्ड और आडम्बर-विनाश
↓
गुरु सेवा
↓
सहज मार्ग

महासुख की प्राप्ति

- बच्चन सिंह ने लिखा है—"आक्रोश की भाषा का पहला प्रयोग सरहपा में ही दिखायी देता है।"
- सिद्धों की भाषा को 'संध्या भाषा' का नाम मुनिदत्त तथा अद्वयवज्र ने दिया।
- शवरपा सरहपा के शिष्य तथा लुइपाद के गुरु थे।
- शबरों को भेषभूषा में रहने के कारण इनका नाम शवरपाद पड़ा।
- इनका जन्म क्षत्रिय कुल में सन् 780 ई० में हुआ।
- चर्यापद शवरपा की प्रसिद्ध पुस्तक है।
- चर्यापद एक प्रकार का गीत है जो सामान्यत: अनुष्ठानों के समय गाया जाता है। चर्यापद संधा भाषा के दृष्ट-कूट में लिखी गई हैं जिनके दुहरे अर्थ होते हैं।
- सिद्ध साहित्य में दोहा कोश की रचना परिनिष्ठित अपभ्रंश में हुई है तथा चर्यापदों की अवहट्ट में।
- सिद्धों का दोहा और चर्यापद संत साहित्य में क्रमश: 'साखी' और 'सबदी' में किंचित रूपान्तरित हो गया।
- लुइपा का जन्म राजा धर्मपाल के शासन काल में सन् 773 ई० में एक कायस्थ परिवार में हुआ था।
- लुइपा शवरपा के शिष्य थे।

- 84 सिद्धों में लुइपा का स्थान प्रथम तथा सबसे ऊँचा माना जाता है।
- लुइपा साधना में इतने ऊँचे थे कि उड़ीसा के राजा दारिकपा और उनके मंत्री डेंगीपा इनके शिष्य हो गये थे।
- डोम्भिपा का जन्म मगध के क्षत्रिय वंश में सन् 840 ई० के आसपास हुआ।
- इनके द्वारा रचित 21 ग्रन्थ बताये जाते हैं, जिनमें 'डोम्बि-गीतिका', 'योगचर्या', 'अक्षरद्विकोपदेश' आदि प्रसिद्ध हैं।
- डोम्भिपा विरूपा के शिष्य थे।
- कण्हपा सिद्धों में सर्वश्रेष्ठ विद्वान तथा सबसे बड़े कवि थे।
- कण्हपा का जन्म कर्नाटक के ब्राह्मण वंश में सन् 820 ई० में हुआ था।
- राहुल सांकृत्यायन के अनुसार "कण्हपा पाण्डित्य और कवित्व में बेजोड़ थे।"
- कण्हपा विहार के सोमपुरी स्थान पर रहते थे तथा जलन्धरपा को अपना गुरु बनाया था।

जैन साहित्य

- जैन साधुओं ने अपने मत का प्रसार हिन्दी कविता के माध्यम से पश्चिमी क्षेत्र में किया।
- रास काव्य परम्परा में प्राचीनतम ज्ञात ग्रन्थ 'रिपुदारणरास' है। डॉ० दशरथ ओझा ने इसका समय 905 ई० बताया है।
- 'रिपुदारण रास' संस्कृत भाषा में लिखा है तथा इसमें अभिनय, नृत्य और गान इन तीनों तत्त्वों का मिश्रण है।
- जिनदत्त सूरी द्वारा रचित 'उपदेश रसायनरास' अपभ्रंश भाषा का सर्वप्रथम रास ग्रन्थ है।
- अपभ्रंश भाषा का दूसरा रास या रासक काव्य अब्दुर्रहमान द्वारा रचित 'संदेश रासक' है।
- हिन्दी का प्रथम ऐतिहासिक रास ग्रन्थ 'पंचपाण्डव रचित रास' है।
- 'पंचपाण्डव रचित रास' के लेखक शालिभद्र सूरी द्वितीय को माना जाता है। इसका रचनाकाल 1350 ई० था।
- मुनिजिन विजय, डॉ० दशरथ ओझा, डॉ० गणपति चन्द्रगुप्त ने श्रीशालिभद्र सूरी द्वारा रचित 'भरतेश्वर बाहुबली रास' को हिन्दी-जैन-रास परम्परा का आदिकाव्य माना है।
- डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त ने शालिभद्र सूरी को हिन्दी का प्रथम कवि माना है।
- 'भरतेश्वर बाहुबली रास' की रचना 1184 ई० में हुई तथा इस ग्रन्थ में भरतेश्वर तथा बाहुबली का चरित वर्णित है।
- यह ग्रन्थ 205 छन्दों में रचित एक सुन्दर खण्ड काव्य है।
- 'भरतेश्वर बाहुबली' का सम्पादन मुनिजिन विजय ने किया है।
- प्रसिद्ध जैन आचार्य देवसेन कृत 'श्रावकाचार' को डॉ० नगेन्द्र ने हिन्दी की प्रथम रचना माना है।

- देवसेन ने सन् 933 ई० में श्रावकाचार की रचना की। श्रावकाचार में 250 दोहों में श्रावक-धर्म का प्रतिपादन किया है।
- देवसेन के अन्य ग्रन्थ हैं—'नयचक्र', 'दर्शन सार', 'भाव संग्रह', 'आराधनासार' और 'तत्त्वसार' तथा 'सावय धम्म दोहा'।
- इन ग्रन्थों में इनका 'नयचक्र' बहुत प्रसिद्ध है।
- देवसेन के 'नयचक्र' को 'लघुनयचक्र' का नाम भी दिया गया है।
- देवसेन अपने ग्रन्थ में जैन धर्म के अनेक संघों की उत्पत्ति लिखी है जिसे इन्होंने 'जैनाभास' का नाम दिया।
- 'बृहदनयचक्र' की रचना देवसेन के शिष्य माइल्ल धवल ने किया जो कि देवसेन के नाम से प्रसिद्ध है।
- 'बृहद नयचक्र' का वास्तविक नाम 'दव्व सहाव पयास' (द्रव्य स्वभाव प्रकाश) है। पहले यह ग्रन्थ 'दोहाबन्ध' में था किन्तु बाद में किसी शुभंकर के कहने से प्राकृत में 'गाथा-बन्ध' कर दिया।
- 'द्रव्य स्वभाव प्रकाश' (दव्व सहाव पयास) पहले पुरानी हिन्दी या अपभ्रंश भाषा में लिखा था।
- 'दव्व सहाव पयास' अब प्राकृत भाषा में मिलती है।
- 'दव्व सहाव पयास' माइल्ल धवल की रचना है।
- शालिभद्र सूरी के 'बुद्धि रास' नामक ग्रन्थ का संग्रह उनके शिष्य सिवि ने किया था।
- आसुग नामक कवि ने जालौर में लगभग 1200 ई० के आसपास 35 छन्दों का एक लघु खण्डकाव्य 'चन्दनबाला रास' नाम से लिखा।
- आसुग ने 'जीव-दया रास' नामक एक अन्य ग्रन्थ की भी रचना की है।
- जिन धर्म सूरी ने 1209 ई० में 'स्थूलि भद्र रास' की रचना है।
- 'स्थूलिभद्र रास' में रचयिता का नाम 'जिणधाम' मिलता है जो जिनधर्म का ही पर्याय समझा जाता है।
- विजय सेन सूरी ने 'रेवंतगिरि रास' की रचना 1231 ई० के आस-पास किया।
- 'रेवंतगिरि रास' में जैन तीर्थ रेवंत गिरि तथा तीर्थंकर नेमिनाथ की प्रतिमा के महत्त्व का प्रतिपादन ऐतिहासिक एवं पौराणिक इतिवृत्त तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के आधार पर किया गया है।
- 'रेवंतगिरि रास' चार कड़वकों में विभक्त है।
- 'रेवंतगिरि रास' की ही भाँति कवि पल्हण द्वारा रचित 'आबू रास' (1232 ई०) में भी जैनियों के प्रसिद्ध स्थान आबू मन्दिर का वर्णन किया गया है।
- मुनि सुमतिगणि ने 'नेमिनाथ रास' में जैन तीर्थंकर नेमिनाथ के चरित का वर्णन अत्यन्त संक्षेप में किया है।
- 'नेमिनाथ रास' की रचना 1213 ई० में हुई। इसमें 58 छन्द हैं।
- चौपाई छंद में बारहमासा का वर्णन विनयचन्द्र सूरि द्वारा रचित 'नेमिनाथ चउपई' से माना जाता है।

- विनयचन्द्र सूरि की अन्य रचनाएँ 'मल्लिनाथ महाकाव्य', 'पार्श्वनाथ चरित', 'कल्पनिरुक्त', 'उवएसमाला कहाणय छप्पय' आदि हैं।
- जैन रास परम्परा के अन्य कवि एवं काव्य

प्रमुख कवि	रचना
(1) प्रज्ञातिलक	कच्छुली रास (1306 ई०)
(2) देल्हण	गय सुकुमाल रास (14वीं शती)
(3) सारमूर्ति	जिन पद्मसूरी पट्टाभिषेक रास (1333 ई०)
(4) अभयदेव सूरि	जय तिहुअण
(5) चन्द्रमुनि	पुराण-सार
(6) कनकामर मुनि	करकंड्ड चरिए
(7) कवि णयणंदि	सुदंसण चरिउ
(8) जिनवल्लभ सूरि	संघपट्टक
(9) योगचन्द्र मुनि (प्रसिद्ध दोहाकार)	योगसार
(10) जिनदत्त सूरि	'चाचरि', 'कालस्वरूप कुलक' एवएस रसायण (उपदेश रसायण)
(11) हरिभद्र सूरि	ललित विस्तरा, धूर्ताख्यान, जसहर, चरिए, सम्बोध प्रकरण, णेमिणाह चरिउ।
(12) सोमप्रभ सूरि	कुमार पाल प्रतिबोध
(13) जिनपद्म सूरि	स्थूलिभद्द फागु
(14) धर्मसूरि	जम्बू स्वामी रासा
(15) अम्बदेव सूरि	संघपति समरा रासा
(16) राजशेखर सूरि	नेमिनाथ फाग

फागु काव्य

- आदिकाल की रास-परम्परा की ही भाँति फागु-काव्य परम्परा भी जैन कवियों की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।
- 'फागु' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'फल्गु' (वसन्त) प्राकृत के 'फागु' और हिन्दी के 'फाग' से मानी गई है।
- फागु काव्य परम्परा का सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ 'जिनचंद सूरि' द्वारा रचित 'जिनचंद सूरि फागु' (1284 ई०) है।
- फागु काव्य का अर्थ है वसन्त ऋतु का काव्य।
- 'जिनचंद सूरि' में 25 छंद हैं।
- 'सिरिथूलिभद्द फागु' (श्रीस्थूलिभद्र फागु) फागु काव्य परम्परा का सर्वाधिक सुन्दर काव्य है।
- 'श्रीनेमिनाथ फागु' की रचना राजशेखर सूरी ने किया।
- 'श्रीनेमिनाथ फागु' की रचना 1350 ई० में हुई जिसमें नेमिनाथ एवं राजुल के विवाह की घटना का चित्रण है।

पूरा काव्य सिर्फ 27 छन्दों में निबद्ध है।

'वसंत विलास फागु' संज्ञक अनेक रचनाएँ मिलती हैं; जिनमें से एक 14वीं शती की तथा दूसरी 16वीं शती की है।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने परिश्रमपूर्वक 'वसंतविलास फागु' का सम्पादन किया तथा इसका समय 13वीं शताब्दी बताया।

'वसंत विलास फागु' 84 छन्दों में रचित एक शृंगारिक काव्य है जिसमें वसंत और स्त्रियों पर उसके विलासपूर्ण प्रभाव का मनोहारी चित्रण है।

थ साहित्य

गोरखनाथ का 'नाथपंथ' बौद्धों की वज्रयान शाखा से निकला हुआ माना जाता है।

गोरखनाथ ने पतंजलि के उच्च लक्ष्य, ईश्वर प्राप्ति को लेकर हठयोग का प्रवर्तन किया।

सिद्धों की वाममार्गी भोग प्रधान योग-साधना की प्रतिक्रिया के रूप में आदिकाल में नाथ पंथियों की हठयोग साधना आरम्भ हुई।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार—"नाथ-पंथ या नाथ सम्प्रदाय के सिद्ध-मत, सिद्ध-मार्ग, योगमार्ग, योग सम्प्रदाय, अवधूत-मत एवं अवधूत सम्प्रदाय नाम भी प्रसिद्ध हैं।"

- हठयोगियों के 'सिद्ध-सिद्धान्त-पद्धति' ग्रन्थ के अनुसार 'ह' का अर्थ है सूर्य तथा 'ठ' का अर्थ है चन्द्र। इन दोनों के योग को ही 'हठयोग' कहते हैं।
- हिन्दी-साहित्य में षट्चक्रों वाला योग-मार्ग गोरखनाथ ने चलाया।
- गोरखनाथ को नाथ-साहित्य का आरम्भकर्ता माना जाता है।
- गोरखनाथ के गुरु का नाम मत्स्येन्द्रनाथ था।
- मत्स्येन्द्रनाथ को मीननाथ और मछन्दरनाथ भी कहा गया है।
- मत्स्येन्द्रनाथ चौथे बोधिसत्व अवलोकितेश्वर के नाम से भी प्रसिद्ध हुए हैं।
- मिश्र बन्धुओं ने गोरखनाथ को हिन्दी का प्रथम गद्य लेखक माना है।
- राहुल सांकृत्यायन ने गोरखनाथ का समय 845 ई० माना है, डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी उन्हें नवीं शती का मानते हैं, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और डॉ० रामकुमार वर्मा 13वीं शती का बताते हैं तथा डॉ० पीताम्बर दत्त बडथ्वाल उन्हें ग्यारहवीं शती का मानते हैं।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, "शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ। भारतवर्ष के कोने-कोने में उनके अनुयायी आज भी पाये जाते हैं। भक्ति आन्दोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आन्दोलन गोरखनाथ का भक्ति मार्ग ही था। गोरखनाथ अपने युग के सबसे बड़े नेता थे।"
- डॉ० पीताम्बर दत्त बडथ्वाल ने गोरखनाथ के 14 ग्रन्थों को प्रमाणित मानकर उनका सम्पादन 'गोरखबानी' नाम से किया।

- 'गोरखबानी' में संकलित गोरखनाथ के प्रामाणिक ग्रन्थ निम्नलिखित हैं—
  (1) शब्द, (2) पद, (3) शिष्या दर्शन, (4) प्राणसंकली, (5) नरवैबोध, (6) आत्मबोध, (7) अभयमात्रा योग, (8) पंद्रहतिथि, (9) सप्तवार, (10) मछिन्द्र गोरखबोध, (11) रोमावली, (12) ज्ञान तिलक, (13) ग्यान चौंतीसा, (14) पंचमात्रा।
- गोरखनाथ के संस्कृत भाषा में लिखे निम्नलिखित ग्रन्थ बताये जाते हैं—(1) सिद्ध-सिद्धान्त-पद्धति, (2) विवेक मार्तंड, (3) शक्ति संगम तंत्र, (4) निरंजन पुराण, (5) वैराट पुराण, (6) गोरक्षशतक, (7) योगसिद्धान्त पद्धति, (8) योग चिन्तामणि इत्यादि।
- 10वीं शताब्दी के प्रसिद्ध कश्मीरी आचार्य अभिनव गुप्त ने अपने तंत्रालोक में मच्छंद विभु या मत्स्येन्द्रनाथ की वन्दना की है।
- नाथों की संख्या नौ मानी गई है। 'गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह' में नव प्रवर्तकों के निम्नलिखित नाम गिनाए गये हैं—(1) नागार्जुन, (2) जड़भरत, (3) हरिश्चन्द्र, (4) सत्यनाथ, (5) भीमनाथ, (6) गोरक्षनाथ, (7) चर्पट, (8) जलन्धर और (9) मलयार्जुन।
- डॉ रामकुमार वर्मा ने 'नवनाथों' का निम्नलिखित नाम बताया है—
  (1) आदिनाथ, (2) मत्स्येन्द्रनाथ, (3) गोरखनाथ, (4) गाहिणीनाथ, (5) चर्पटनाथ, (6) चौरंगीनाथ, (7) ज्वालेन्द्रनाथ, (8) भर्तृनाथ एवं (9) गोपीचन्द नाथ।
- आदिनाथ को परवर्ती संतों ने 'शिव' माना है।
- चर्पटनाथ का पूर्व नाम 'चरकानन्द' था।
- चौरंगीनाथ गोरक्षनाथ के शिष्य थे और ये 'पूरनभगत' नाम से प्रसिद्ध हुए।
- नाथ सम्प्रदाय में जलन्धर को 'बालनाथ' कहा जाता है।
- 'नागार्जुन', 'गोरखनाथ', 'चर्पट' तथा 'जलंधर' का नाम नाथ और सिद्ध दोनों में गिना जाता है।
- नाथों में 'रसायनी' नागार्जुन को माना जाता है।
- नाथ पंथ के जोगियों को कनफटा भी कहा जाता है।
- नाथपंथियों की भाषा 'सधुक्कड़ी' भाषा थी, जिसका ढाँचा कुछ खड़ी बोली लिये हुए राजस्थानी थी।
- गोरखनाथ ने अपनी रचनाओं में गुरु-महिमा, इंद्रिय-निग्रह, प्राण-साधना, वैराग्य, मनःसाधना, कुण्डलिनी-जागरण, शून्य-समाधि आदि का वर्णन किया है।
- मत्स्येन्द्रनाथ का वास्तविक नाम विष्णु शर्मा माना जाता है। इनकी लिखी संस्कृत रचना 'काल ज्ञान निर्णय' का सम्पादन प्रबोधचन्द्र बागाची ने किया है।

रासो साहित्य

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रासो साहित्य का विवरण 'वीरगाथा काल' के अन्तर्गत दिया है।

- आचार्य शुक्ल के अनुसार, वीरगीत परम्परा का प्राचीनतम ग्रन्थ 'बीसलदेव रासो' है।
- विद्वानों ने 'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति निम्न ढंग से बतायी है—

विद्वान/प्रस्तोता	मूल शब्द
गार्सा द तासी	राजसूय
हर प्रसाद शास्त्री	राजयश
नरोत्तम स्वामी	रासक
कविराज श्यामलदास	रहस्य
काशी प्रसाद जायसवाल	रहस्य
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	रसायण — रास या रासो
नंद दुलारे वाजपेयी	रास
हजारी प्रसाद द्विवेदी	रासक (उपरूपक)
रामस्वरूप चतुर्वेदी	राउस या रस
दशरथ शर्मा	रासक
माताप्रसाद गुप्त	रासक
गणपति चन्द्र गुप्त	रासक → रास → रासा → रासु → रासो

- रासो साहित्य के प्रमुख रचनाकार व रचना आचार्य शुक्ल के अनुसार निम्न हैं—

कवि	रचना	समय	रस	अध्याय	भाषा	काव्यरूप
दलपति विजय	खुमाण रासो	9वीं सदी	वीर		राजस्थानी	प्रवन्ध
नरपति नाल्ह	बीसलदेव रासो	1212	श्रृंगार	चार खण्ड		वीरगीत
जगनिक	परमाल रासो (आल्ह खण्ड)	1230	वीर			वीरगीत
चन्दवरदायी	पृथ्वीराजरासो		वीर श्रृंगार	69 समय सर्ग	डिंगल	प्रबन्ध
केदार भट्ट	जयचन्द प्रकाश	1224	वीर			प्रवन्ध
मधुकर भट्ट	जयमयंक जसचंद्रिका	1243				प्रबन्ध
शार्ङगधर	हम्मीर रासो					
नल्ह सिंह	विजयपाल रासो		वीर	42 छंद		वीरगीत
श्रीधर	रणमल्ल छंद	1454	वीर	70 छंद	डिंगल	वीरगीत

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "चन्दबरदाई हिन्दी के प्रथम महाकवि माने जाते हैं और इनका 'पृथ्वीराज रासो' हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है।"
- मिश्र बन्धुओं ने लिखा है, "हिन्दी का वास्तविक प्रथम महाकवि चन्द्रवरदाई को ही कहा जा सकता है।"
- 'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता-अप्रामाणिकता में विद्वानों के बीच मतभेद है जो निम्नांकित है—

प्रामाणिक	अप्रामाणिक	अर्ध प्रामाणिक
श्यामसुन्दर दास	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	मुनिजन विजय
मिश्र बन्धु	देवी प्रसाद	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
मोहनलाल विष्णु लाल पंड्या	कविराज श्यामलदास	डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी
कर्नल टाड	गौरीशंकर हीराचन्द ओझा	डॉ० दशरथ ओझा
	बूल्हर	
	मुरारिदान	

- 'पृथ्वीराज रासो' में 68 छन्दों का प्रयोग किया गया है। मुख्य छंद निम्न है—कवित्त, छप्पय, दूहा, तोमर, त्रोटक, गाहा और आर्या। चन्दवरदाई को 'छप्पय छंद' का विशेषज्ञ माना जाता है।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'पृथ्वीराजरासो' को शुक-शकी संवाद के रूप में रचित माना है।
- डॉ० बूल्हर ने सर्वप्रथम कश्मीरी कवि जयानक कृत 'पृथ्वीराजविजय' के आधार पर सन् 1875 में 'पृथ्वीराज रासो' को अप्रामाणिक घोषित किया।
- 'पृथ्वीराज रासो' को चन्दवरदायी के पुत्र जल्हन ने पूर्ण किया।
- डॉ० वच्चन सिंह ने लिखा है, "यह (पृथ्वीराज रासो) एक राजनीतिक महाकाव्य है, दूसरे शब्दों में राजनीति की महाकाव्यात्मक त्रासदी है।"
- हिन्दी में सर्वप्रथम बारहमासा का वर्णन नरपतिनाल्ह कृत 'बीसलदेव रासो' में मिलता है।
- 'कयमास बध' 'पृथ्वीराज रासो' का एक महत्वपूर्ण समय (सर्ग) है।
- आचार्य शुक्ल ने वीरकाव्य परम्परा का प्रथम ग्रन्थ 'बीसलदेव रासो' को स्वीकार किया है।
- 'परमाल रासो' में आल्हा-ऊदल नामक दो सरदारों की वीरता का वर्णन है।
- 'आल्हखण्ड' को सर्वप्रथम सन् 1865 ई० में फर्रुखाबाद के तत्कालीन जिलाधीश 'चार्ल्स इलियट' ने प्रकाशित करवाया था।
- आल्ह खण्ड बरसात ऋतु में उत्तर प्रदेश के बैसवाड़ा, पूर्वांचल और बुन्देलखण्ड क्षेत्र में गाया जाता है।

विद्यापति (1350-1450 ई०)

- विद्यापति के गुरु का नाम पण्डित हरि मिश्र था।
- विद्यापति बिहार प्रान्त के दरभंगा जिले के 'विपसी' नामक गाँव के निवासी थे।
- भाषा की दृष्टि से विद्यापति द्वारा रचित ग्रन्थ निम्न हैं—

संस्कृत	अवहट्ट	मैथिली
शैव सर्वस्व सार	कीर्तिलता	पदावली
गंगा वाक्यावली	कीर्ति पताका	गोरक्ष विजय (नाटक)

(2) "एक नार ने अचरज किया। साँप मारि पिंजड़े में दिया॥
जों जों सांप ताल को खाए। सूखे ताल साँप मर जाए॥" (दिया बत्ती)

(3) "एक नार दो को ले बैठी। टेढी होके बिल में पैठी॥
जिसके बैठे उसे सुहाय। खुसरो उसके बल बल जाय॥" (पायजामा)

(4) "अरथ ते इसका बूझेगा। मुँह देखो तो सूझेगा॥" (दर्पण)

ब्रजभाषा रूप—

(1) "चूक भई कुछ वासों ऐसी। देस छोड़ भयो परदेसी॥"

(2) "एक नार पिया को भानी। तन वाको सरगा ज्यों पानी॥"

(3) "चाम मास वाके नहिं नेक। हाड़ हाड़ में वाके छेद॥
मोहि अचंभों आवत ऐसे। वामें जीव बसत है कैसे॥"

दोहे और गीत ब्रजभाषा में—

(1) "उज्जल वरन, अधीन तन, एक चित्त दो ध्यान।
देखत में तो साधु है, निपट पाप की खान।"
"खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग।
तन मेरो मन पीउ को, दोउ भए एक रंग।"
"गोरी सोवै सेज पर, मुख पर डारै केस।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहु देस।"

(2) "मोरा जोबना नवेलरा भयो है गुलाल। कैसे गर दीनी कस मोरी माल॥
सूनी सेज डरावन लागै, विरहा अगिन मोहि डस डस जाय।"

(3) "जे हाल मिसकी मकुन तगाफुल दुराय नैना, बनाय बतियाँ।
किताबे हिज्राँ न दारम, ऐ जाँ! न लेहु काहे लगाय छतियाँ॥"

महत्वपूर्ण पंक्तियाँ

गोरखनाथ के छंद—

(1) "नौ लख पातरि आगे नाचैं, पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसे मन लौ जोगी खेलै, तव अंतरि वसै भंडारा॥"

(2) "अंजन मांहि निरंजन भेद्या, तिल मुख भेद्या तेलं।
मूरति मांहि अमूरति परस्या भया निरंतरि खेलं॥"

(3) "नाथ वोलै अमृतवाणी। वरिषैगी कवली पांणी॥
गाड़ि पडरवा वांधिलै खूँटा। चलै दमामा वजिले ऊँटा॥"

(4) "गुर कीजै महिला निगुरा न रहिला, गुरु विन ग्यानं न पायला रे भाईला।"

(5) "अवधू रहिया हाटे वाटे रूप विरष की छाया।
तजिवा काम क्रोध लोभ मोह संसार की माया॥"

(6) "स्वामी तुम्हई गुरु गोसाईं। अम्हे जो सिव सवद एक वूझिवा॥
निरारंबे चेला कूण विधि रहै। सतगुरु होइ स पुछया कहै॥"

(7) "अभि-अन्तर को त्यागै माया"

(8) "दुबध्या मेटि सहज में रहैं"

(9) "जोइ-जोइ पिण्डे सोई-ब्रह्माण्डे"

(10) "अवधू मन चंगा तो कठौती में गंगा"

कुक्कीरपा के छंद—

(1) "हाउनिवासी खमण भतारे, मोहारे बिगोआकहण न जाइ।"

(2) "ससुरी निंद गेल, वहुड़ी जागअ"

पृथ्वीराज रासो से—

(1) "राजनीति पाइयै। ग्यान पाइयै सु जानिय॥
उकति जुगति पाइयै। अरथ घटि वढ़ि उनमानिया॥"

(2) "उक्ति धर्म विशालस्य। राजनीति नवरसं॥
खट भापा पुराणं च। कुरानं कथितं मया॥"

(3) "कुट्टिल केस सुदेस पोह परिचियत पिक्क सद।
कमलगंध वटासंध हंसगति चलित मंद मंद॥"

(4) "रघुनाथ चरित हनुमंत कृत, भूप भोज उद्धरिय जिमि।
पृथ्वीराज सुजस कवि चंद कृत, चंद नंद उद्धरिय तिमि॥"

लौकिक साहित्य

- 'ढोला-मारू रा दूहा' 11वीं शताब्दी में रचित एक प्रसिद्ध प्रेम काव्य है।
- 'ढोला-मारू-रा दूहा' मूलतः दोहा छंद में रचित था, जिसमें 17वीं शताब्दी में कुशलराय नामक कवि ने कुछ चौपाइयाँ जोड़कर इसका विस्तार कर दिया।
- इसमें ढोला नामक राजकुमार और मारवणी नामक राजकुमारी की प्रेम कथा का वर्णन है। इस काव्य का मूल कवि कल्लोल था।
- इस काव्य की महत्वपूर्ण पंक्ति निम्न है—

"सोरठियो दूहा भलो, भली मरवण री बात।
जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात॥"

- 'वसन्त विलास' 13वीं शताब्दी में रचित महत्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ है।
- 'वसन्त विलास' 84 दोहों में रचित एक शृंगारिक काव्य है जिसमें वसन्त और स्त्रियों पर उसके विलास पूर्ण प्रभाव का मनोहारी चित्रण है।
- वसन्त विलास का सम्पादन सर्वप्रथम केशवलाल हर्षादराय ने किया।
- इस काव्य की महत्वपूर्ण पंक्ति निम्न है—

"इणि पर कोइलि कूजइ, पूंजइ युवति मणोर।
विधुर वियोगिनि धूजइं, कूजइ मयण किसोर॥"

विविध

- अपभ्रंश भाषा में तीन प्रकार के बन्ध पाये जाते हैं—(1) दोहा बंध, (2) पद्धड़िया बंध और (3) गेय पद बन्ध।
- हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, "दोहा या दूहा अपभ्रंश का अपना छंद है। उसी

प्रकार जिस प्रकार गाथा प्राकृत का अपना छंद है।''

- अपभ्रंश का चरित काव्य पद्धड़िया बंध में लिखा गया है।
- चरित काव्यों में पद्धड़िया छंद की आठ-आठ पंक्तियों के बाद धत्ता दिया रहता है जिसे 'कडवक' कहते हैं।
- हिन्दी में सर्वप्रथम चौपाई और दोहा पद्धति का प्रयोग बौद्ध सिद्ध सरहपा की रचनाओं में मिलता है।
- हिन्दी के प्रथम कवि, उनका समय एवं उनके प्रस्तोता निम्न हैं—

प्रस्तोता	प्रथम कवि	समय
शिव सिंह सेंगर	पुष्य या पुण्ड	सातवीं शताब्दी
राहुल सांकृत्यायन	सरहपा	सन् 769 ई०
रामकुमार वर्मा	स्वयंभू	विक्रम की आठवीं शताब्दी
गणपति चन्द्र गुप्त	शालिभद्र सूरि	सन् 1184 ई०

- डॉ० बी० भट्टाचार्य सरहपा को बांग्ला भाषा का प्रथम कवि मानते हैं।
- कवि भुवाल (10वीं शताब्दी) हिन्दी के प्रथम कवि हैं जिन्होंने दोहा-चौपाई छंद में 'भगवद्गीता' का अनुवाद किया।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अब्दुल रहमान को हिन्दी का प्रथम कवि माना है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आदिकाल को 'अनिर्दिष्ट लोक प्रवृत्ति' का युग कहा है।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल को 'अत्यधिक विरोधी और व्याघातों का युग' कहा है।
- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, राहुल सांकृत्यायन एवं रामचन्द्र शुक्ल अपभ्रंश को पुरानी हिन्दी मानते हैं।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी और रामविलास शर्मा अपभ्रंश को हिन्दी से पृथक् मानते हैं।
- भोलाशंकर व्यास ने हिन्दी के आरम्भिक रूप को 'अवहट्ठ' कहा था।
- अमीर खुसरो को संगीत के क्षेत्र में कव्वाली, तराना गायन शैली एवं सितार वाद्य यंत्र का जन्मदाता माना जाता है।
- डॉ० रामकुमार वर्मा ने अमीर खुसरो को अवधी भाषा का प्रथम कवि माना है।

भक्तिकाल

पूर्वपीठिका

- मोनियर विलियम्स के अनुसार 'भक्ति' शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' धातु से हुई है।
- 'भक्ति' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख श्वेताश्वेतर उपनिषद में मिलता है।
- भक्ति आन्दोलन के उदय के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों का अभिमत निम्नलिखित है—

विद्वान/प्रस्तोता	अभिमत
ग्रियर्सन	ईसाइयत की देन
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	इस्लामी आक्रमण की प्रतिक्रिया
हजारी प्रसाद द्विवेदी	भारतीय चिन्तनधारा का स्वाभाविक विकास
गजानन माधव मुक्तिबोध	ऐतिहासिक-सामाजिक शक्तियों के रूप में जनता के दुःख व कष्टों से हुआ।
रामविलास शर्मा	भक्ति आन्दोलन एक जातीय और जनवादी आन्दोलन है।

- भक्ति आन्दोलन के उद्गम स्थल के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों के मत निम्न हैं—

"भक्ति का जो सोता दक्षिण की ओर से धीरे-धीरे उत्तर भारत की ओर पहले से ही आ रहा था उसे राजनीतिक परिवर्तन के कारण शून्य पड़ते हुए जनता के हृदय क्षेत्र में फैलने के लिए पूरा स्थान मिला।'' —रामचन्द्र शुक्ल

"भक्ति द्राविड उपजी, लाये रामानन्द।
परगट किया कबीर ने, सात दीप नौ खण्ड॥'' —कबीरदास

"उत्पन्ना द्राविडे साहं वृद्धिं कर्णाटके गता।
क्वचित्क्वचिन्महाराष्ट्रे गुर्जरे जीर्णतां गता॥'' —श्रीमद्भागवत

- आचार्य शुक्ल ने दक्षिण में भक्ति का उद्भव स्वीकार किया है।
- भक्ति आन्दोलन के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के कथन निम्नलिखित हैं—

"बिजली की चमक के समान अचानक समस्त पुराने धार्मिक मतों के अन्धकार के ऊपर एक नयी बात दिखायी दी। कोई हिन्दू यह नहीं जानता कि यह बात कहाँ से आयी और कोई भी इसके प्रादुर्भाव का कारण निश्चित नहीं कर सकता।''

—ग्रियर्सन

"देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया। उसके सामने ही उसके देव मन्दिर गिराए जाते थे, देव मूर्तियाँ तोड़ी जाती थी और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ भी न कर सकते थे। ऐसी दशा में अपनी वीरता के गीत न तो वे गा ही सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे। आगे चलकर जब मुस्लिम साम्राज्य दूर तक स्थापित हो गया तब परस्पर लड़ने वाले स्वतंत्र राज्य भी नहीं रह गए। इतने भारी राजनीति उलटफेर के पीछे हिन्दू जन समुदाय पर बहुत दिनों तक उदासी सी छाई रही। अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?''

—रामचन्द्र शुक्ल

"लेकिन जोर देकर कहना चाहता हूँ कि अगर इस्लाम नहीं आया होता तो भी इस साहित्य को बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।'' —हजारी प्रसाद द्विवेदी

"म्लेच्छाक्रान्तेषु देशेषु, पापैकनिलयेषु च।
सत्पीड़ाव्यग्रलोकेषु कृष्ण एव गतिर्मम॥''

—वल्लभाचार्य (कृष्णनामाश्रयस्त्रोत से)

- जार्ज ग्रियर्सन ने भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का 'स्वर्ण युग' कहा था।
- डॉ० रामविलास शर्मा ने भक्तिकाल को 'लोक जागरण काल' नाम से पुकारा है।
- आचार्य हजारी प्रसाद ने भक्ति आन्दोलन को 'लोक जागरण' की संज्ञा दी।

(क) निर्गुणधारा (ज्ञानाश्रयी शाखा)

- निर्गुण धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा को विद्वानों ने कई नाम दिया, जो निम्न है—

प्रस्तोता	नामकरण
रामचन्द्र शुक्ल	ज्ञानाश्रयी शाखा
हजारी प्रसाद द्विवेदी	निर्गुण भक्ति
रामकुमार वर्मा	संत काव्य
परशुराम चतुर्वेदी	संत काव्य
गणपतिचन्द्र गुप्त	संत काव्य

- संत काव्य धारा के प्रथम कवि और प्रस्तोता निम्नलिखित हैं—

प्रस्तोता	प्रथम कवि
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	कबीरदास
हजारी प्रसाद द्विवेदी	कबीरदास
गणपतिचन्द्र गुप्त	नामदेव
रामकुमार वर्मा	नामदेव
रामस्वरूप चतुर्वेदी	कबीर

- रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा, "निर्गुण मार्ग' के निर्दिष्ट प्रवर्तक कबीरदास ही थे।"
- हिन्दी में भक्ति साहित्य की परम्परा का प्रवर्तन नामदेव ने किया।
- महाराष्ट्र के संत परम्परा के आदि कवि मुकुंद राज को माना जाता है। इन्होंने सन् 1190 ई० में मराठी का पहला काव्य ग्रन्थ 'विवेक सिन्धु' लिखा।
- महाराष्ट्र में 'महानुभाव' और 'बारकरी' नामक दो सम्प्रदाय प्रचलित है।
- 'महानुभाव' सम्प्रदाय के प्रवर्तक चक्रधर और 'बारकरी' सम्प्रदाय के मूल प्रवर्तक संत पुण्डलिक माने जाते हैं। किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से बारकरी सम्प्रदाय के प्रथम उन्नायक संत ज्ञानेश्वर हैं।
- महाराष्ट्र के भक्त संत नामदेव का संक्षिप्त परिचय निम्न है—

सम्प्रदाय	जन्म-मृत्यु	जाति	गुरु का नाम	रचना	
				मराठी	हिन्दी
वारकरी	1135-1215 ई०	दरजी	विसोवा खेचर	अभंग	गुरुग्रन्थ साहिब में

- नामदेव की हिन्दी रचनाओं की भाषा निम्नलिखित है—
  (1) सगुण भक्ति के पदों की भाषा ब्रज है।
  (2) निर्गुण पदों की भाषा नाथ पंथियों द्वारा गृहीत खड़ी बोली या सधुक्कड़ी भाषा।
- प्रमुख संत कवियों का संक्षिप्त जीवन-वृत्त निम्न हैं—

संत कवि	जन्म-मृत्यु	जन्मस्थल	गुरु का नाम	जाति	माता-पिता
रैदास	1388-1518	काशी	रामानन्द	चमार	
कबीरदास	1398-1518	काशी	रामानन्द	जुलाहा	नीरु-नीमा
जंभनाथ	1451-1523	नागौर	बाबा गोरखनाथ	राजपूत	
हरिदास निरंजनी	1455-1543	डीड़वाण	प्रागदास		

संत कवि	जन्म-मृत्यु	जन्मस्थल	गुरु का नाम	जाति	माता-पिता
गुरुनानक	1469-1538	ननकाना		खत्री	कालूराम-तृप्ता
सींगा	1519-1659	खजूर (म.प्र.)	मनरंगीर	ग्वाला	
लालदास	1540-1648	अलवर	गदन चिश्ती	मेव	
दादू दयाल	1544-1603	अहमदाबाद	वृद्ध भगवान	धुनिया या मोची	
मलूक दास	1574-1682	इलाहाबाद	पुरुषोत्तम	खत्री	सुन्दरदास
बाबा लाल	1590-1655	पंजाब		क्षत्रिय	
सुन्दरदास	1596-1689	जयपुर	दादू दयाल	बनिया	परमानन्द-सती

- डॉ० बच्चन सिंह ने लिखा है, 'हिन्दी भक्ति काव्य का प्रथम क्रान्तिकारी पुरस्कर्ता कबीर है।'
- मुसलमानों के अनुसार कबीर के गुरु का नाम सूफी फकीर शेख तकी था। ये सिकन्दर लोदी के पीर (गुरु) थे।
- कबीर की वाणी का संग्रह उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' नाम से सन् 1464 ई० में किया। बीजक के तीन भाग किए गए हैं—(1) रमैनी, (2) सबद और (3) साखी।
- कबीर की रचनाओं में प्रयुक्त छंद एवं भाषा निम्न है—

रचना	अर्थ	प्रयुक्त छंद	भाषा
रमैनी	रामायण	चौपाई + दोहा	ब्रजभाषा और पूर्वी बोली
सबद	शब्द	गेय पद	ब्रजभाषा और पूर्वी बोली
साखी	साक्षी	दोहा	राजस्थानी, पंजाबी मिली खड़ी बोली

- कबीरदास की भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी', सधुक्कड़ी आदि नाम से अभिहित किया जाता है।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'भाषा का डिक्टेटर' कहा है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, "कबीर की वचनावली की सबसे प्राचीन प्रति सन् 1512 ई० की लिखी है।"
- कबीरदास के भाषा के सम्बन्ध में विद्वानों ने निम्नलिखित मत प्रस्तुत किये—

विद्वान	कबीर की भाषा
श्याम सुन्दर दास	पंचमेल खिचड़ी
रामचन्द्र शुक्ल	सधुक्कड़ी
हजारी प्रसाद द्विवेदी	भाषा के डिक्टेटर

- कबीर की बानियों का सबसे पुराना नमूना 'गुरु ग्रन्थ साहिब' में मिलता है।
- कबीर के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण कथन अग्रांकित हैं—
  (1) "इसमें कोई सन्देह नहीं कि कबीर ने ठीक मौके पर जनता के उस बड़े भाग को सँभाला जो नाथ पंथियों के प्रभाव से प्रेमभाव और भक्ति रस से शून्य शुष्क पड़ता जा रहा था।"—रामचन्द्र शुक्ल
  (2) "उन्होंने भारतीय ब्रह्मवाद के साथ सूफियों के भावात्मक रहस्यवाद, हठयोगियों के साधनात्मक रहस्यवाद और वैष्णवों के अहिंसावाद तथा प्रपत्तिवाद

का मेल करके अपना पंथ खड़ा किया।''—रामचन्द्र शुक्ल

(3) ''भाषा बहुत परिष्कृत और परिमार्जित न होने पर भी कबीर की उक्तियों में कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है। प्रतिभा उनमें बड़ी प्रखर थी इसमें सन्देह नहीं है।'' —रामचन्द्र शुक्ल

- कबीरदास की मृत्यु मगहर में हुई थी।
- कबीर की पत्नी का नाम लोई था तथा पुत्र-पुत्री का नाम कमाल तथा कमाली था।
- संत रैदास (रविदास) मीरावाई और उदय के गुरु माने जाते हैं।
- रैदास के 40 पद 'गुरु ग्रन्थ साहब' में संकलित हैं।
- गुरुनानक देव सिख सम्प्रदाय के मूल प्रवर्तक एवं आदि गुरु थे।
- गुरुनानक देव की पत्नी का नाम सुलक्षणी था तथा उनके दो पुत्र थे—(1) श्रीचन्द और (2) लक्ष्मीचन्द।
- गुरुनानक देव की प्रमुख रचनाएँ—'जपुजी', 'आसदीवार', 'रहिरास' और 'सोहिला'—गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित हैं।
- 'जपुजी' नानक दर्शन का सार तत्त्व है।
- 'नसीहतनामा' नानकदेव की महत्वपूर्ण रचना है।
- प्रमुख संत कवियों से सम्बन्धित प्रसिद्ध स्थल निम्नलिखित है—

प्रसिद्ध स्थल	सम्बन्धित संत कवि
संभराथल (समाधि स्थल)	जम्भनाथ
अलखदरीवा (सत्संग-स्थल)	दादू दयाल
वावा लाल का शैल (बड़ौदा)	बाबा लाल
मगहर (मृत्यु-स्थल)	कबीरदास
सांगानेर (मृत्यु-स्थल)	सुन्दरदास
भराने (राजस्थान) (मृत्यु-स्थल)	दादू दयाल
द्वारका (मृत्यु-स्थल)	मीराबाई

- संत कवियों द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय, मुख्य केन्द्र और उनके प्रमुख शिष्य इस प्रकार हैं—

सम्प्रदाय	प्रवर्तक	केन्द्र	प्रमुख शिष्य
कबीर पंथ	कबीर	काशी	धर्मदास
सिख	गुरुनानक	पंजाब	
उदासी	श्रीचन्द		
विश्नुई	जंभनाथ	बीकानेर	(1) हावली पावजी, (2) लोहा पागल, (3) दत्तनाथ, (4) मालदेव
निरंजनी	हरिदास निरंजनी	डीडवाणा	(1) नारायणदास, (2) रूपदास
लालपंथ	लालदास	अलवर	
दादू पंथ	दादू दयाल	राजस्थान	(1) रज्जब, (2) सुन्दरदास, (3) प्रागदास, (4) जनगोपाल
बाबा लाली	बाबा लाल	गुरुदासपुर	
बावरी	वावरी साहिबा		
सत्यनामी	जगजीवनदास	नरलोन	(1) गोविन्द साहव, (2) भीखा साहब
साधो	वीर भानु	फर्रुखावाद	

- दादू दयाल के सम्प्रदाय को 'ब्रह्म सम्प्रदाय' या 'परब्रह्म सम्प्रदाय' नाम से भी जाना जाता है।
- 'निरंजनी सम्प्रदाय' उड़ीसा में प्रचलित है।
- दादू पंथ के उत्तराधिकारी दादू के पुत्र 'गरीबदास' तथा 'मिस्कीनदास' थे।
- कबीरदास के उत्तराधिकारी 'कमाल' व 'धर्मदास' थे।
- प्रमुख संत कवियों द्वारा रचित ग्रन्थ एवं भाषा इस प्रकार है—

संत कवि	पुस्तक एवं भाषा
हरिदास निरंजनी	: (1) अष्टपदी जोग ग्रन्थ, (2) ब्रह्म स्तुति, (3) हंस प्रबोध ग्रन्थ, (4) निरपख मूल ग्रन्थ, (5) पूजा जोग ग्रन्थ, (6) समाधिजोग ग्रन्थ, (7) संग्राम जोग ग्रन्थ । (भाषा : सरल ब्रजभाषा)
सींगा	: (1) सींगाजी का दृढ़ उपदेश, (2) सींगाजी का आत्मबोध, (3) सींगाजी का दोष-बोध, (4) सींगाजी का नरद, (5) सींगाजी का शरद, (6) सींगा जी की वाणी, (7) सींगाजी की वाणीवली, (8) सींगाजी का सातवार, (9) सींगाजी की पन्द्रह तिथि, (10) सींगाजी की बारहमासी, (11) सींगाजी के भजन । (भाषा : निमाड़ी)
दादू दयाल	: (1) हरडे बानी, (2) अंग बंधु, (3)काया वोली। (भाषा : राजस्थानी खड़ी बोली मिश्रित ब्रज)
मलूक दास	: (1) रत्नखान, (2) ज्ञानवोध, (3) ज्ञान परोछि, (अवधी भाषा) (4) भक्तवच्छावली, (5) भक्ति विवेक, (6) बारह खड़ी, (7) रामावतार लीला, (8) ब्रजलीला, (9) ध्रुवचरित, (10) सुखसागर, (11) शब्द। (भाषा : ब्रजभाषा)
बाबा लाल	: (1) असरारे-मार्फत, (2) नादिरून्निकात।
सुन्दरदास	: (1) ज्ञान समुद्र, (2) सुन्दर विलास (भाषा : परिष्कृत ब्रजभाषा)
रज्जब	: (1) सब्बंगी
गुरु अर्जुन सिंह	: (1) सुखमनी, (2) वावन अखरी, (3) वारहमासा। (भाषा : ब्रजभाषा)
निपट निरंजन	: (1) शान्त सरसी, (2) निरंजन-संग्रह
अक्षर अनन्य	: (1) राजयोग, (2) विज्ञान योग, (3) ध्यान योग, (4) सिद्धान्त बोध, (5) विवेकदीपिका, (6) ब्रह्म ज्ञान, (7) अनन्य प्रकाश।

- दादू दयाल की वाणियों का सर्वप्रथम सम्पादन उनके दो शिष्य संतदास और जगन्नदास ने 'हरडे बानी' शीर्षक से किया था पुनः रज्जब ने 'अंगबंधू' शीर्षक से इसका सम्पादन किया।
- वावालाल कृत 'असरारे-मार्फत' में उनका और दाराशिकोह का वार्तालाप संगृहीत है।

❑ बाबालाल के विचारों का संग्रह 'नादिरुन्निकात' पुस्तक है।
❑ हिन्दी के अन्य प्रमुख संत कवि निम्नलिखित हैं—

संत कवि	जन्म-मृत्यु	जन्मस्थल	गुरु का नाम	जाति
धर्मदास		बाधोगढ	कबीरदास	वनिया
धन्ना	1415	धुवान	रामानन्द	जाट
पीपा	1425	गगरौनगढ़	रामानन्द	
सेन		बाधोगढ	रामानन्द	नाई
शेख फरीद		कोठीवाल		मुसलमान
वीरभान	1543		उदयदास	
बावरी साहिबा	1542-1605		मायानंद	
रज्जब	1567-1689	राजस्थान	दादूदयाल	मुसलमान
सदना				कसाई
निपट निरंजन	1531	दौलताबाद		गौड़ ब्राह्मण
अक्षर अनन्य		दतिया		कायस्थ
भीषन				

❑ संत कवियों में बावरी साहिबा महिला संत साधिका थी।
❑ अक्षर अनन्य प्रसिद्ध छत्रसाल के गुरु थे।
❑ संत रज्जब का पूरा नाम 'रज्जब अली खाँ' था
❑ संत शेख फरीद का दूसरा नाम 'शाह ब्रह्म' या 'इब्राहीम शाह' या 'शंकरगंज' था।
❑ हिन्दी में रचना करने वाले प्रमुख सिख गुरु निम्नलिखित हैं—

संत सिख कवि	जन्म-मृत्यु	ग्रन्थ
गुरु अंगद	1504-1552	आदि ग्रन्थ साहब में कुछ श्लोक या दोहा संकलित
गुरु अमरदास	1479-1574	तीसरे गुरु हैं, गुरु ग्रन्थ साहब में संकलित है
गुरु राम दास	1514-1581	चौथे गुरु हैं, आदिग्रन्थ के चौथे महला में संकलित
गुरु अर्जुनदेव	1563-1606	पाँचवें गुरु हैं, आदि ग्रन्थ के पाँचवें महला में संगृहीत
गुरुतेग बहादुर सिंह	1622-1675	नौवें गुरु हैं, नौवें महला में संकलित हैं।
गुरु गोविन्द सिंह	1664-1718	अन्तिम गुरु हैं। (1) चण्डी चरित्र, (2) विचित्र नाटक

संत कवियों की महत्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

(क) कबीरदास

(1) "झिलमिल झगरा झूलत बाकी रही न काहु।
गोरख अटके कालपर कौन कहावै साह॥"

(2) "वहुत दिवस ते हिंडिया, सुन्नि समाधि लगाइ।
करहा पडिया गाड़ में दूरि परा पछिताइ॥"
(3) "माधो मैं ऐसा अपराधी तेरी भगति होत नहीं साधी।
(4) "तंत्र न जानूँ, मंत्र न जानूँ, जानूँ सुन्दर काया।
(5) "हरि रस पीया जानिए, जे कबहूँ न जाय खुमार।
मैंमंता घूमत फिरै, नाहीं तन की सार॥
(6) "दसरथ सुत तिहुँ लोक वखाना।
रामनाम का मरम है आना।"
(7) "आपुहि देवा आपुहि पाती। आपुहि कुल आपुहि जाती॥
(8) "तत्त्व मसि इनके उपदेसा। ई उपनीसद कहैं संदेसा॥
(9) "जागवलिक और जनक सवादा। दत्तात्रेय वहै रस स्वादा॥
(10) "गहना एक कनक ते गहना, न मह भाव न दूजा।
कहन सुनन कोई दुई करि पापिन, इक मिजाज इक पूजा॥"
(11) "दिन भर रोजा रहत हैं रात हनत हैं गाय।
यह तो खून वह बंदगी, कैसे खुसी खुदाय॥"
(12) "नैया विच नदिया डूबति जाय।
मुझको तूँ क्या ढूँढ़े बंदे मैं तो तेरे पास में॥"
(13) मसि कागज छुयौ नहीं, कलम गह्यौ नहिं हाथ।
(14) तुम जिन जानो गीत है, यह निज ब्रह्म-विचार।
(15) मैं कहता हूँ आखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी।
(16) हरि जननी मैं बालक तोरा
(17) "सतगुरु हमसूँ रीझ कर, कह्या एक प्रसंग।
वादर बरसा प्रेम का भीजी गया सव अंग॥"
(18) जे तूँ बाभन वभनीं जाया। तो आन बाट होइ काहे न आया॥
(19) हरि मोरा पिउ मैं हरि की बहुरिया
(20) हमनं है इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या?
(21) साई के सब जीव हैं कीरी कुंजर दोय।
(22) रस गगन गुफा अजर झरै।
(23) माया महा ठगनी हम जानी।
(24) जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
(25) मोरि चुनरी में परि गयो दाग पिया।
(26) मेरा तेरा मनुआ कैसे एक होई रे।
(27) नैना अंतरि आव तू ज्यूं तो नैन झंपेऊँ

(28) भीजे चुनरिया प्रेम रस बूँदन।
(29) गुरु मोहि घुंटिया अजर पियाई
(30) दुलहिन गावहु मंगल चारु।
हमरे घर आये राजा राम भरतार
(31) पीछे लागा जाई था, लोक वेद के साधि।
आगे थै सतगुरु मिल्या, दीपक दीया हाथि॥
(32) घूँघट के पट खोल बहुरिया।
(33) सपने में साँई मिले, सोवत लिये जगाय।
(34) संतो आई ज्ञान की आंधी।
(35) पूजा-सेवा-नेम-व्रत, गुडियन का-सा खेल।
(36) गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
(37) तरसै बिन बालम मोर जिया।

) संत नामदेव

(1) मन मेरी सुई, तन तेरा धागा। खेचरजी के चरण पर नामा सिंपी लागा॥
(2) सुफल जन्म मोको गुरु कीना। दुःख बिसार सुख अन्तर कीना॥
ज्ञान दान मोको गुरु दीना। राम नाम बिन जीवन हीना॥
(3) किस हूँ पूजूँ दूजा नजर न आई
एकै पाथर किज्जे भाव। दूजे पाथर धुरिए पाँव
जो वो देव तो हम बी देव। कहै नामदेव हम हरि की सेव॥
(4) भगत हेत मारयो हरिना कुस, नृसिंह रूप हवै देह धरयो।
नामा कहै भगति बस के सव, अजहूँ बलि के द्वार खरो॥
(5) दसरथनंद राजा रामचन्द्र। प्रणवै नामातत्त्व रस अमृत पीजै॥
(6) धनि धनि मेघा रोमावली, धनि धनि कृष्ण ओढ़े काँवली
धनि धनि तू माता देवकी, जिह गृह रमैया कँवलापति॥
(7) माइ न होती, बाप न होते, कर्म्म न होता काया।
हम नहिं होते, तुम नहिं होते, कौन कहाँ ते आया॥
(8) पाण्डे तुम्हारी गायत्री लोधे का खेत खाती थी।
लैकरि ठेंगा टँगरी तोरी लंगत लंगत लाती थी।
(9) हिन्दू पूजै देहरा, मुसलमान मसीद।
नामा सेविया जहँ देहरा न मसीद॥

) रैदास (संत रविदास)

(1) जाके कुटुंब सब ढोर ढोवंत। फिरहि अजहुँ बानारसी आसपासा॥
आचार सहित विप्र करहि डंडउति। तिन तिनै रविदास दासानुदास॥

(2) ऐसी मेरी जाति विख्यात चमार।
(3) पावर जंगम कीट पतंगा पूरि रह्यो हरिराई।
(4) गुन निर्गुन कहियत नहि जाके।
(5) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभुजी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग अंग वास समानी॥
(6) जाति ओछा पाती ओछा, ओछा जनमु हमारा।
(7) दूध त बछरै थनह विडारेउ। फुलू भँवर, जलु मीन विगारेउ॥
माई, गोबिन्द पूजा कहा लै चढ़ावउँ। अवरु त फूल अनुपू न पावऊँ॥
मलयागिरिवै रहै है भुअंगा। विपु अमृत बसहीं इक संगा॥
तन मन अरपउँ पूज चढावउँ। गुरु परसादि निरंजन पावउँ॥
(8) अखिल खिलै नहिं, का कह पण्डित, कोई न कहै समुझाई।
अबरन वरन रूप नहिं जाके कहँ लौ लाइ समाई॥
चंद सूर नहिं, राति दिवस नहिं, धरनि अकास न भाई।
करम अकरम नहिं सुभ असुभ नहिं का कहि देहुँ बडाई॥
(9) जब हम होते तब तू नाहीं, अब तू ही, मैं नाहीं।
अतल अगम जै लहरि मइ उदधि, जल केवल जलमाहीं॥
(10) माधव क्या कहिए प्रभु ऐसा, जैसा मानिए होइ न तैसा।
नरपति एक सिंहासन सोइया, सपने भया भिखारी॥
अछत राज बिछुरत दुखु पाइया, सो गति भई हमारी।
(11) मन चंगा तो कठौती में गंगा।

(घ) गुरुनानक देव

(1) इस दम दा मैंनूँ कीबे भरोसा, आया न आया न आया।
यह संसार रैन दा सुपना, कही देखा, कहीं नाहिं दिखाया॥
(2) जो नर दुख में दुख नहि मानै
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै॥
(3) आवै जाणै आपे देई आखहि सिभि केई कई।
जिसनौ बखसे सिफति सालाह, नानक पाति साही पातिसाहुँ॥
(4) सुरखान खमसान कीआ हिन्दुस्तान डराइया।
आपै दोस न देई करता जपु करि मुगल चढाइया।
एकती मार पई कुर लाणै तै की दरदु न आइया।
(5) जिन सिर सोहन पटीआ मांगी पाइ संधूर।
ते सिर काती मुनी अहि गल विधि आपै धूड़॥

(ङ) दादू दयाल

(1) भाई रे! ऐसा पंथ हमारा।
है पख रहित पंथ गह पूरा अबरन एक अधारा।

(2) घीव दूध से रमि रह्या व्यापक सब ही ठौर।
(3) यह मसीत यह देहरा सत गुरु दिया दिखाइ।
भीतर सेवा बंदगी बाहिर काहे जाइ।
(4) असत मिलइ अंतर पडइ, भाव भगति रस जाइ।
साध मिलइ सुख ऊपजई, आनन्द अंग नवाइ॥
(5) अपना मस्तक काटिकै वीर हुआ कवीर।

(च) मलूक दास

(1) अब तो अजपा जपु मनमेरे।
सुर न असुर टहलुआ जाके मुनि गंध्रव हैं जाके चेरे।
(2) नाम हमारा खाक है, हम खाकी बंदे।
खाकहि से पैदा किए अति गाफिल गंदे।
(3) अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।

(छ) सुन्दरदास

- संत सुन्दरदास शृंगार रस के कट्टर विरोधी थे। वे लिखते हैं—

(1) रसिक प्रिया रसमंजरी और सिंगारहि जानि।
चतुराई करि वहुत विधि विषैं बनाई आनि॥

- सुन्दरदास ने विभिन्न प्रदेशों की रीति-नीति पर अनेक व्यंग्यपूर्ण उक्तियाँ कही हैं जो निम्न है—

(2) आभउछीत अतीत सों होत विलार और कूकर चाटत हांडी —गुजरात पर
(3) बृच्छ न नीरन उत्तम चीर सुदेसन में गत देस है मारू —मारवाड़ पर
(4) गंधत प्याज, विगारत नाज न आवत लाज, करै सब भच्छन—दक्षिण पर
(5) ब्राह्मन क्षत्रिय वे सरु सूदर चोराइ वर्न के मच्छ बधारत —पूरब
(6) है यह अति गम्भीर उठति लहरि आनंद की
मिष्ठ सु याकौ नीर, सकल पदारथ मध्य हैं।
(7) बोलिए तौ तव जव बोलिवे को बुद्धि होय,
ना तौ मुख मौन गहि चुप होय रहिए।
(8) पति ही सूँ प्रेम होय, पति ही सूँ नेम होय,
पति ही सूँ छेम होय, पति ही सूँ रत है।
(9) व्रह्म तें पुरुष अरु प्रकृति प्रकट भई,
प्रकृति तें महत्तत्त्व, पुनि अहंकार है।

(ज) बाबा लाल

(1) आशा विषय विकार की, बध्या जा संसार।
लख चौरासी फेर में, भरमत बारंबार॥
(2) देहा भीतर श्वास है, श्वासे भीतर जीव।
जीवे भीतर वासना, किस विधि पाइये पीव॥

(झ) रज्जब (रज्जव अली खाँ)

(1) धुनि ग्रभे उत्पन्नो, दादू योगेन्द्रा महामुनि
(2) वेद सुवाणी कूपजल, दुखसूँ प्रापति होय।
शब्द साखी सरवर सलिल, सुख पीवै सब कोय॥
(3) संतो, मगन भया मन मेरा।
अह निसि सदा एक रस लागा, दिया दरीवै डेरा॥

(ञ) हरिदास निरंजनी

गुणग्राही गोविन्द गुण गावा, भजि भजि राम परम पद पावा

(ट) जंभनाथ

गगन हमारा बाजा वाजे, मतर फल हाथी।
संसै का बल गुरु मुख तोड़ा, पाँच पुरुष मेरे साथी।

(ठ) सींगा

जल विच कमल, कमल विच कलियाँ, जहं वासुदेव अविनाशी। घर में गंगा घर में जमुना, नहीं द्वारका काशी॥

(ड) मन रंगीर

समुझि ले और मन आई, अंत न होय कोई अपणा।
यहो माया के फंदे में, नर आन भुलाणा॥

(ढ) धर्मदास

(1) बरनौ मैं साहेब तुम्हरे चरना,
संतन सुखलायक दायक प्रभु दुःख हरना॥
(2) झरि लागै महलिया गगन घहराय
मितऊ मडैया सुनि करि गैलो।

(ण) संत भीषन

हरि का नामु अमृत जलु निरमल इहु अउखध जगि सारा।
गुरु परसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुवारा॥

(त) अक्षर अनन्य

परलोक लोक दोउ सधै जाय। सोइ राजयोग सिद्धान्त आय॥
निज राजयोग ज्ञानी करंत। हठि मूढ धर्म साधत अनंत॥

विविध

- संत कवियों ने नारी के 'कामिनी रूप' की आलोचना की है।

(ख) निर्गुणधारा [प्रेममार्गी (सूफी) शाखा]

- भारत में सूफी धर्म का प्रचार-प्रसार 12वीं शताब्दी में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने किया था।

- सूफी धर्म की संक्षिप्त रूपरेखा निम्न है—

- इस्लाम
  - शरा (सनातनी)
  - बेशरा (सूफी)
    - चिश्ती सम्प्रदाय
      - साबिरी
      - निजामी
    - सुहरावर्दी सम्प्रदाय
      - जलाली
      - मखदूमी
      - मीरन शाही
      - दौला शाही
      - इस्माइशाही
    - कादरी सम्प्रदाय
      - वहाबिया
      - रजाकिया
    - नक्शबंदी सम्प्रदाय

- प्रमुख सूफी सम्प्रदाय की संक्षिप्त रूपरेखा निम्नांकित है—

सम्प्रदाय	आदि प्रवर्तक	भारत में प्रवर्तक	समय
चिश्ती सम्प्रदाय	आबू अब्दुल्लाह चिश्ती	मुईनुद्दीन चिश्ती	12वीं शताब्दी का उत्तरार्ध
सुहरावर्दी सम्प्रदाय		जलालुद्दीन सुर्खपोश	13वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
कादरी सम्प्रदाय	अब्दुल कादिर जीलानी	बंदगी मुहम्मद गौस	15वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
नक्शबंदी सम्प्रदाय	वहा अलदीन नक्शबंद	मुहम्मद वाकी गिल्लाह बैरंग	16वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध

- 'सूफी' दर्शन को 'तसव्वुफ' कहते हैं। 'सूफी' शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में निम्नलिखित मत है—

मूल शब्द	अर्थ
सूफ	ऊन
सफ	पंक्ति
सूफा	चबूतरा
सोफिया	विद्या
सफा	पवित्र, निर्मल

- सूफी या प्रेममार्गी शाखा के प्रथम कवि और प्रस्तोता निम्न हैं—

प्रस्तोता	रचना	वर्ष ई०	रचनाकार/कवि
गणपतिचन्द्र गुप्त	हंसावली	1370	असाइत
रामकुमार वर्मा	चंदायन	1379	मुल्ला दाऊद
हजारी प्रसाद द्विवेदी	सत्यवती कथा	1501	ईश्वरदास
रामचन्द्र शुक्ल	मृगावती	1501	कुतुबन

- असाइत कृत 'हंसावली' का रचना स्रोत विक्रम वैताल की कथा है। इसमें पाटन की राजकुमारी हंसावली की कहानी है।
- रामकुमार वर्मा ने मुल्ला दाऊद को अपने इतिहास ग्रन्थ में संधिकाल के अन्तर्गत रखा है।
- डॉ० माता प्रसाद गुप्त ने 'चंदायन' को 'लोर कहा' या 'लोर कथा' नाम से अभिहित किया है।
- हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य निम्नलिखित है—

रचना/काव्य	वर्ष (ई०)	कवि	प्रयुक्त भाषा	प्रयुक्त छंद
हंसावली	1370	असाइत	राजस्थानी	चौपाई-दोहा
चंदायन	1379	मुल्ला दाऊद	अवधी	चौपाई-दोहा
लखमसेन पद्मावती कथा	1459	दामोदर कवि	राजस्थानी	चौपाई-दोहा, सोरठा
सत्यवती कथा	1501	ईश्वरदास	अवधी	दोहा-चौपाई
मृगावती	1501	कुतुबन	अवधी	दोहा-चौपाई
माधवानल कामकंदला	1527	गणपति	राजस्थानी	सिर्फ दोहा छंद प्रयुक्त है
पद्मावत	1540	जायसी	अवधी	चौपाई-दोहा
मधुमालती	1545	मंझन	अवधी	दोहा-चौपाई
माधवानल कामकंदला चौपाई	1556	कुशललाभ	राजस्थानी	चौपाई-दोहा, सोरठा
प्रेमविलास प्रेमलता की कथा	1556	जटमल	राजस्थानी	
रूपमंजरी	1568	नंददास	ब्रजभाषा	दोहा-चौपाई
माधवानल कामकंदला	1584	आलम	अवधी	चौपाई-दोहा, सोरठा
छिताई वार्ता	1590	नारायणदास	राजस्थानी ब्रजभाषा	दोहा-चौपाई
चित्रावली	1613	उसमान	अवधी	चौपाई-दोहा
रस रतन	1618	पुहकर	अवधी	दोहा-चौपाई
ज्ञानदीप	1619	शेख नबी	अवधी	दोहा-चौपाई
नल-दमयंती	1625	नरपति व्यास	अवधी	दोहा-चौपाई
हंस जवाहिर	1731	कासिम शाह	अवधी	दोहा-चौपाई
नलचरित्र	1641	मुकुंद सिंह	अवधी	दोहा-चौपाई
इंद्रावती	1744	नूर मुहम्मद	अवधी	दोहा-चौपाई
अनुराग बाँसुरी	1764	नूर मुहम्मद	अवधी	बरवै-चौपाई

- सत्रहवीं शती के मध्य संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक प्रेमाख्यानकों की रचना जान कवि ने की है जिनका रचना-काल 1612-1664 ई० माना जाता है।
- जान कवि ने 78 ग्रन्थों की रचना की थी, जिसमें 29 प्रेमाख्यानक है। इनमें से प्रमुख हैं—(1) कथा रतनावली, (2) कथा कनकावती, (3) कथा मोहिनी, (4) कथा कंवलावती, (5) कथा नल दमयंती, (6) कथा कलावन्ती, (7) कथा रूपमंजरी, (8) कथा पिजरषां साहिजा दैवा देवलदे, (9) कथाकलन्दर, (10) ग्रन्थ लैलै मंजनू।
- जान कवि प्रथम हिन्दी कवि हैं जिन्होंने फारसी के लैला-मजनू आख्यान को लेकर 'लै लै मंजनू' काव्य की रचना की है।
- जान कवि की भाषा राजस्थानी प्रभावित व्रजभाषा है।
- दामोदर कवि ने अपनी रचना 'लखनसेन पद्मावती कथा' को 'वीर कथा' कहा है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ईश्वरदास कृत 'सत्यवती कथा' को भक्तिकाल के किसी धारा में स्थान नहीं दिया।
- 'मृगावती' के रचयिता कुतुबन चिश्ती वंश के शेखबुरहान के शिष्य थे और जौनपुर के बादशाह हुसैन शाह के आश्रित कवि थे।
- 'मृगावती' में चन्द्रनगर के गणपति देव के राजकुमार और कंचनपुर की रानी रूपमुरारि की कन्या 'मृगावती' की प्रेमकथा का वर्णन है।
- मंझन कृत 'मधुमालती' हिन्दी का प्रथम प्रेमाख्यानक काव्य है जिसमें बहुपत्नीवाद का सर्वथा अभाव है।
- 'मधुमालती' में नायक 'मनोहर' और महारस नगर की राजकुमारी 'मधु मालती' की प्रेम कथा के अनन्तर प्रेमा और ताराचंद की भी प्रेमकथा समानान्तर रूप से चलती है।
- बनारसीदास ने अपनी आत्मकथा 'अर्ध कथानक' में दो प्रेमाख्यानक—(1) मृगावती और (2) मधु मालती का उल्लेख किया है जो निम्नांकित है—

  तब घर में बैठे रहैं, नाहिंन हाट बाजार।
  मधुमालती, मृगावती पोथी दोय उचार॥

- सन् 1643 (सं० 1700) में दक्षिण के शायर नसरती ने 'मधुमालती' के आधारपर दक्खिनी उर्दू में 'गुलशने इश्क' के नाम से एक प्रेमकथा लिखी।
- जायसी कृत 'पद्मावत' में कुल 57 खण्ड है और इनका प्रिय अलंकार 'उत्प्रेक्षा' है।
- मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने पूर्व लिखे गये चार प्रेमाख्यानकों का उल्लेख किया है—(1) मधुमालती, (2) मृगावती, (3) मुग्धावती और (4) प्रेमावती।
- जायसी प्रसिद्ध सूफी फकीर शेख मोहिदी (मुहीउद्दीन) के शिष्य थे और शेरशाह के समकालीन कवि थे तथा अमेठी के निकट जायस में रहते थे।
- जायसी द्वारा रचित महत्वपूर्ण ग्रन्थ और उनके विषय में निम्न हैं—

रचना	विषय
पद्मावत	नागमती, पद्मावती और रत्नसेन की प्रेम कहानी है।
अखरावट	वर्णमाला के एक-एक अक्षर को लेकर सिद्धान्त सम्बन्धी तत्वों से भरी चौपाई है।
आखिरी कलाम	कयामत का वर्णन तथा मुगल बादशाह बाबर की प्रशंसा है
चित्ररेखा	लघु प्रेमाख्यानक।
कहरानामा	आध्यात्मिक विवाह का वर्णन है। यह कहरवा शैली में लिखी है।
मसलानामा	ईश्वर भक्ति के प्रति प्रेम निवेदन है।
कन्हावत	

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी के द्वारा रचित तीन ग्रन्थों—(1) पद्मावत, (2) अखरावट तथा (3) आखिरी कलाम का ही उल्लेख किया है।
- आचार्य शुक्ल के अनुसार 'पद्मावत' की कथा का पूर्वार्द्ध 'कल्पित' और उत्तरार्द्ध का 'ऐतिहासिक' है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "कबीर ने केवल भिन्न प्रतीत होती हुई परोक्ष सत्ता की एकता का आभास दिया था। प्रत्यक्ष जीवन की एकता का दृश्य सामने रखने की आवश्यकता बनी थी। यह जायसी द्वारा पूरी हुई।"
- पद्मावत में प्रयुक्त प्रतीकार्थ निम्न है—

पद्मावत	प्रतीकार्थ
रत्नसेन	मन (आत्मा)
सिंहल	हृदय
पद्मावती	श्रद्धा या सात्विक बुद्धि (परमात्मा)
सुवा या हीरामन तोता	गुरु
नागमती	दुनिया धंधा या सांसारिक बुद्धि
राघव चेतन	शैतान
अलाउद्दीन	माया

- विजयदेव नारायण साही ने 'पद्मावत' को हिन्दी में अपने ढंग की अकेली ट्रेजिक कृति कहा है।
- 'पद्मावत' का 'नागमती वियोग खण्ड' हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है।
- प्रेमाख्यानक काव्यों में पाँच चौपाई के बाद एक दोहा देने की परम्परा निम्नांकित कृतियों में पायी जाती है—
  (1) मृगावती, (2) मधुमालती, (3) इन्द्रावती, (4) सत्यवती कथा, (5) चंदायन, (6) आलमकृत माधवानल कामकंदला में।
- प्रेमाख्यानक काव्यों में सात चौपाई के बाद एक दोहा देने की परम्परा निम्नांकित कृतियों में पायी जाती है—(1) पद्मावत, (2) चित्रावली।
- सूफी कवि उसमान चिश्ती वंश परम्परा में 'हाजीबाबा' के शिष्य थे और बादशाह जहाँगीर के समकालीन थे।
- उसमान कृत 'चित्रावली' में नेपाल के राजकुमार 'सुजान' और रूपनगर की राजकुमारी 'चित्रावली' की प्रेमकथा का वर्णन है।
- 'चित्रावली' में अंग्रेजों के द्वीप का भी वर्णन किया गया है।
- नूर मुहम्मद दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के समकालीन थे।
- नूर मुहम्मद ने फारसी भाषा में 'रौजतुल हकायक' नामक ग्रन्थ की रचना की।

- नूर मुहम्मद कृत 'इंद्रावती' में कालिंजर के राजकुमार राजकुँवर और आगमपुर की राजकुमारी इंद्रावती की प्रेम कहानी है।
- आचार्य शुक्ल ने नूर मुहम्मद कृत 'अनुराग बासुरी' की निम्न विशेषताओं का उल्लेख किया है—
  (1) इसकी भाषा सूफी रचनाओं से बहुत अधिक संस्कृतगर्भित है।
  (2) हिन्दी भाषा के प्रति मुसलमानों का भाव।
  (3) शरीर, जीवात्मा और मनोवृत्तियों को लेकर पूरा अध्यवसित रूपक (एलेगरी) खड़ा करके कहानी बाँधी है।
  (4) चौपाइयों के बीच-बीच में इन्होंने दोहे न लिखकर बरवै रखे हैं।
- आचार्य शुक्ल ने नूर मुहम्मद कृत 'इन्द्रावती' को सूफी आख्यान काव्यों की अखण्डित परम्परा की समाप्ति माना है।
- आचार्य शुक्ल ने सूफी या प्रेममार्गी शाखा का एकमात्र हिन्दू कवि सूरदास नामक एक पंजाबी को माना है जो शाहजहाँ का समकालीन था तथा 'नल-दमयंती' नामक प्रेम कथा लिखी।
- महत्वपूर्ण प्रेमाख्यानक काव्य और उसके नायक-नायिका निम्न हैं—

काव्य	नायक-नायिका
चन्दायन	लोर (लोरिक)-चन्दा
सत्यवती कथा	राजकुमारी सत्यवती और राजकुमार ऋतुपर्ण
मृगावती	राजकुमार-मृगावती
पद्मावत	रत्नसेन - पद्मावती और पत्नी नागमती
मधुमालती	मधुमालती-मनोहर और प्रेमा-ताराचन्द
माधवानल कामकंदला	कामकंदला-माधव
रूपमंजरी	विवाहिता रूपमंजरी - कृष्ण
रतनसेन	रम्भा-सोमा

सूफी कवियों की महत्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

(अ) कुतुबन

रूकंमिनि पुनि वैसहि मरि गई। कुलवंती सत सों सति भई॥
बाहर वह भीतर वह होई। घर बाहर को रहै न जोई॥
विधि कर चरित न जानै आनू। जो सिरजा सो जाहि नियानू॥

ब) मंझन

(1) देखत ही पहिचानेउ तोहीं। एही रूप जेहि छँदर्‌यों मोही॥
एही रूप बुत अहै छपाना। एही रूप रव सृष्टि समाना॥
एही रूप सकती और सीऊ। एही रूप त्रिभुवन कर जीऊ॥
एही रूप प्रकटे बहु भेसा। एही रूप जग रंक नरेसा॥

(2) बिरह अवधि अवगाह अपारा। कोटि माहिं एक परै त पारा॥
बिरह कि जगत अविरथा जाही। बिरह रूप यह सृष्टि सबाही॥

नैन बिरह अंजन जिन सारा। बिरह रूप दरपन संसारा॥
कोटि माहिं बिरला जग कोई। जाहि सरीर बिरह दुख होई॥
रतन की सागर सागरहिं, जगमोती जग कोइ।
चंदन की बन बन उपजै, बिरह की तन तन होई?

(स) मलिक मुहम्मद जायसी

(1) विक्रम धँसा प्रेम के बारा। सपनावती कहँ गयउ पतारा॥
(2) आदि अंत जसि कथ्था अहै। लिखि भाषा चौपाई कहै।
(3) औ मन जानि कवित्त अस कीन्हा। मकु यह रहे जगत मह चीन्हा॥
(4) तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंहल बुद्धि पदमिनी चीन्हा॥
गुरु सुवा जेहि पंथ देखावा। बिनु गुरु जगत को निरगुनपावा॥
नागमती यह दुनिया धंधा। बांचा सोइ नएहि चित बंधा॥
(5) प्रेम कथा एहि भाँति विचारहु। बूझि लेउ जो बूझै पारहु॥
(6) सरवर तीर पद्मिनि आई। खोंपा छोरि केस मुकलाई॥
(7) बरुनिबान अस ओपहँ, बेधे रन बन दाख।
सौजहि न सब रोवाँ, पंखिहि तन सब पाँख॥
(8) ओहि मिलान जो पहुचै कोई। तब हम कहब पुरुष भल होइ॥
है आगे परबत कै बाटा। विषम पहार अगम सुठि घाटा॥
(9) मानुस प्रेम भयउ बैकुंठी। नाहित काह छार भई मूठी॥
(10) छार उठाय लीन्ह एक मूँठी। दीन्ह उड़ाइ पिरिथिमी झूठी॥
(11) मुहमद जीवन जल भरन रहट घरी के रीति।
घरी सो आई ज्यों भरी ढरी जनम गा नीति॥
(12) होतहि दरस परस भा लोना। धरती सरग भयउ सब सोना॥
(13) साजन लेइ पठावा आयसु जाइ न भेंट।
तन मन जोवन साजि कै देह चली लेइ भेंट॥
(14) पिउ सो कहहु संदेसड़ा हे भौंरा हे काग!
सो धनि विरहे जरि मुई तेहिक धुँआ हम लाग।
(15) जौहर भइ इस्तिरी पुरुष गये संग्राम।
पातसाहि गढ चूरा, चितउर भा इस्लाम॥
(16) नयन जो देखा कँवल भा निरमल नीर सरीर।
हँसत जो देखा हंस भा, दसन जोति नग हीर॥
(17) फिर फिर रोइ कोइ नहीं बोला। आधी रात विहंगम बोला॥
(18) बरसै मघा झँकोरी झँकोरी। मोर दोउ नयन चुवइ जनु ओरी॥
(19) मुहम्मद कवि कहि जोरि सुनावा। सुना जो प्रेम पीर गा पावा॥
(20) जे मुख देखा तेई हँसा। सुना तो आये आसु॥
(21) कवि बिआस रस कँवला पूरी। दूरिहि निअर निअर भा दूरी॥
(22) जेहि के बोल बिरह के धाया। कहु केहि भूख कहाँ ते छाया॥

(23) भयउँ बिरह जलि कोइलि कारी। डार डार जो कूकि पुकारी॥
(24) प्रेम पहार कठिन विधि गढ़ा। सो पे चढि जो सिर सौ चढा॥
पंथ सूरि कर उठा अंकूरू। चोर चढ़े की चढ़ मंसूरू॥

विविध

- सूफी कवियों ने 'परमात्मा' को 'स्त्री' तथा 'आत्मा' को 'पुरुष' रूप में स्वीकार किया जबकि संत कवियों ने इसके विपरीत साधना की।
- सूफी कवियों की प्रेम-पद्धति में 'इश्क मजाजी' (लौकिक प्रेम) से 'इश्क हकीकी' (अलौकिक प्रेम) तक पहुँचने को कोशिश है।
- सूफी सिद्धान्त में 'इश्क हकीकी' तक पहुँचने के लिए साधक को निम्नलिखित चरण एवं अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है—

मनुष्य के चार विभाग	चार जगत	साधक की चार अवस्था
नफ्स (विषय भोगवृत्ति इन्द्रिय)	आमलेनासूत (भौतिक)	शरीअत (धमग्रन्थों का विधि निषेध)
रूह (आत्मा या चित्त)	आमले मलकूत (चित्त जगत)	तरीकत (हृदय की शुद्धता)
कल्ब (हृदय)	आमलेजबरूत (आनंदमय जगत)	हकीकत (भक्ति उपासना से सत्यबोध)
अक्ल (बुद्धि)	आमले लाहत (ब्रह्म जगत)	मारफत (सिद्धावस्था या आत्मा-परमात्मा मिलन)

सगुण धारा

सगुण भक्ति : उद्भव एवं विकास

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, "श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।"
- भक्ति साहित्य में प्रस्थानत्रयी 'उपनिषद', 'गीता' तथा 'ब्रह्मसूत्र' को कहा गया है।
- 'नारद भक्ति सूत्र' में भक्ति के ग्यारह (11) भेद माने गये हैं, जो निम्न है—(1) गुणमाहात्म्यासक्ति, (2) रूपासक्ति, (3) पूजासक्ति, (4) स्मरणासक्ति, (5) दास्यासक्ति, (6) सख्यासक्ति, (7) कांतासक्ति, (8) वात्सल्यासक्ति, (9) आत्मनिवेदनासक्ति, (10) तन्मयतासक्ति, (11) परम विरहासक्ति।
- भागवत पुराण में नवधा भक्ति का उल्लेख है। जो निम्नलिखित है—(1) श्रवण, (2) कीर्तन, (3) स्मरण, (4) पादसेवन, (5) अर्चन, (6) वंदन, (7) दास्य, (8) सख्य और (9) आत्मनिवेदन।

वैष्णव धर्म में सर्वप्रथम भागवत धर्म आता है। भागवत धर्म के बाद क्रमशः सात्वत, पंचरात्र तथा नारायणी धर्म का उदय होता है।
सात्वत धर्म के प्रवर्तक वासुदेव माने जाते हैं।
पांचरात्र में 'रात्र' शब्द का अर्थज्ञान है। परमतत्त्व, मुक्ति, भुक्ति, योग तथा विषय (संसार)—इन पंचविध ज्ञान-वचन को पांचरात्र धर्म कहते हैं।

- वैष्णव भक्ति का उदय दक्षिण भारत में हुआ। दक्षिण भारत में ही सगुण भक्ति की उत्पत्ति स्वीकार की जाती है।
- वैष्णव भक्ति का आधार ग्रन्थ 'भागवत महापुराण' माना जाता है।
- वैष्णव भक्ति के आदि आचार्य रामानुजाचार्य माने जाते हैं।
- वैष्णव भक्ति के सम्प्रदाय, आचार्य, दर्शन निम्नलिखित हैं—

सम्प्रदाय	प्रवर्तक	जन्म-मृत्यु	गुरु	दर्शन	जन्मस्थान
श्री	रामानुजाचार्य	1016-1127 ई० –	यादव प्रकाश	विशिष्टा-द्वैतवाद	कांचीपुरम् (द०भा०)
ब्रह्म	मध्वाचार्य	1199		द्वैतवाद	वेलिग्राम
रूद्र	विष्णु स्वामी	1300		शुद्धाद्वैतवाद	
सनकादि	निम्बार्काचार्य	1114-1162 ई०	नारद मुनि	द्वैताद्वैतवाद	निम्बापुर (वेल्लरीजिला)
रूद्र	वल्लभाचार्य	1478-1530 ई०	विष्णु स्वामी	शुद्धाद्वैतवाद	चंपारन (रायपुर जि०)

- 'रुद्र' सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक विष्णु स्वामी हैं किन्तु कई विद्वान इसका प्रवर्तक वल्लभाचार्य को मानते हैं।
- दक्षिण भारत के वैष्णव भक्तों को आलवार कहते हैं। आलवारों ने कृष्ण और राम दोनों की आराधना की है।
- आलवारों का सम्बन्ध दक्षिण भारत के केरल प्रान्त से था। इनकी संख्या 12 है, जो अग्रांकित है।

तमिल नाम	संस्कृत नाम
1. मोयगै आलवार	सरोयोगिन्
2. भूतन्तालवार	भूतयोगिन्
3. पैयालवार	मह्योगिन या भ्रांतियोगिन
4. नम्न आलवार	भक्तिसार
5. नम्मालवार	शुठकोपाचार्य
6. मधुर कवि आलवार	मधुर कवि
7. कुलशेख आलवार	कुल शेखर
8. पेरो आलवार	विष्णु चरित
9. आंडाल आलवार (महिला)	गोदा
10. तोंडर डिप्पोडो आलवार	भक्ताघ्रिरेणु
11. तिरुप्पान आलवार	योगिवाहन
12. तिरुमंगै आलवार	परकाल

- आलवार संतों में सर्वाधिक लोकप्रिय शठकोप थे। इन्होंने निम्न पुस्तकों की रचना की है— (1) तिरुवायमोलि, (2) तिरुविरुत्तम, (3) तिरुवर्ग शरियम तथा (4) पेरियतिरुवन्दादि, (5) सहस्रगीति।

- सातवें आलवार संत केरल के चेरवंशी राजा कुलशेखर ने 'पेरुमाल तिरुमोवि' नामक ग्रन्थ की रचना की।
- आलवार सन्तों के लोक प्रचलित चार हजार पदों को 'नलियार दिव्य प्रबन्धम' शीर्षक से चार भागों में रंगनाथ मुनि या रघुनाथाचार्य ने संकलित किया।
- रघुनाथाचार्य या रंगनाथ मुनि को श्री सम्प्रदाय का प्रथम आचार्य माना जाता है। इनका जन्म सन् 824 ई० में तथा मृत्यु 924 ई० में हुआ।
- रंगनाथ मुनि ने 'न्यायतत्व' नामक एक दार्शनिक ग्रन्थ संस्कृत में लिखा।
- श्री सम्प्रदाय के प्रवर्तक रामानुजाचार्य के पूर्ववर्ती आचार्य काल क्रमानुसार निम्नलिखित हैं—
  रंगनाथमुनि → पुण्डरीकाक्ष → राम मिश्र → यामुनाचार्य → रामानुजाचार्य
- श्री सम्प्रदाय के चतुर्थ आचार्य यमुनाचार्य (916–1040 ई०) ने 'सिद्धि त्रय', 'आगम प्रामाण्य', 'गीतार्थ संग्रह' आदि दार्शनिक ग्रन्थों की रचना की।
- 'श्री सम्प्रदाय' में राम को आराध्य माना जाता है तथा 'ब्रह्मः', 'रूद्र' एवं 'सनकादि' में कृष्ण को आराध्य स्वीकार किया जाता है।
- अहिंसावाद और प्रपत्तिवाद वैष्णव सम्प्रदाय का वैशिष्ट्य है।
- प्रपत्तिवाद को शरणागति भी कहा जाता है। वैष्णव सम्प्रदाय में प्रपत्ति या शरणागति के छह अंग माने गये हैं, जो निम्न हैं—
  (1) अनुकूल का संकल्प, (2) प्रतिकूल का त्याग, (3) रक्षा का विश्वास, (4) गोतृत्ववरण, (5) आत्म निक्षेप तथा (6) कार्पण्यता।
- शंकराचार्य का जन्म 8वीं शती के आसपास केरल में हुआ था।
- शंकराचार्य ने 'अद्वैतवेदान्त' की स्थापना की तथा प्रस्थानत्रयी का भाष्य किया।
- शंकराचार्य के गुरु का नाम गोविन्द योगी था। शंकराचार्य ने स्मार्त सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया जो पंचदेवोपासना पर आधारित है।
- कुछ विद्वान शंकराचार्य को 'प्रच्छन्न बौद्ध' भी कहते हैं क्योंकि इनके गुरु के गुरु गौड़पाद बौद्ध थे।
- दक्षिण के शैव भक्तों को 'नयनार' कहा जाता है जिनकी संख्या 63 बताई जाती है।
- दक्षिण के आलवार संतों की भाषा तमिल थी।
- आलावारों में प्रसिद्ध एकमात्र महिला आन्दाल (गोदा) को दक्षिण की मीरा कहा जाता है।

सगुणधारा [रामभक्ति शाखा]

- आलवार भक्तों में शठकोप को रामभक्ति का प्रथम कवि माना जाता है। इनकी पुस्तक 'सहस्त्रगीत' में राम की उपासना का उल्लेख है।
- सातवें आलवार कुलशेखर भी राम के अनन्य भक्त थे।
- 'श्री सम्प्रदाय' के आदि आचार्य रंगनाथ मुनि को रामभक्ति परम्परा का प्रथम आचार्य माना जाता है।
- 'श्री सम्प्रदाय' में विष्णु और लक्ष्मी की उपासना मान्य है।

- रामानुजाचार्य ने 'अद्वैत वेदान्त' का खण्डन कर 'विशिष्टद्वैतवाद' की स्थापना की जिसके अनुसार ब्रह्म के ही अंश जगत के सारे प्राणी हैं।
- आलवार शठकोप के पाँच पीढ़ी के पीछे रामानुजाचार्य हुए।
- रामानुजाचार्य को शेष या लक्ष्मण का अवतार माना जाता है।
- 'श्री सम्प्रदाय' की प्रधान गद्दी तोताद्रि में स्थापित है।
- रामानुजाचार्य की 14वीं या 15वीं शिष्य-परम्परा में सुप्रसिद्ध स्वामी रामानन्द हुए।
- हिन्दी में रामकाव्य के पुरस्कर्ता रामानन्द माने जाते हैं।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है—"मध्य युग की समग्र स्वाधीन चिन्ता के गुरु रामानन्द ही थे।"
- रामानन्द के गुरु का नाम राघवानंद था।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने रामानन्द को आकाश धर्मा गुरु कहा है।
- राघवानन्द ने उत्तर भारत में रामभक्ति का प्रवर्तन किया परन्तु इसे प्रतिष्ठित और प्रसारित रामानन्द ने किया।
- रामानन्द 14वीं शती में वर्तमान थे। इनके रचित प्रमुख ग्रन्थ हैं—(1) वैष्णवमताब्ज भास्कर, (2) श्री रामार्चन पद्धति, (3) योगचिंतामणि, (4) रामरक्षास्तोत्र, (5) आनन्दभाष्य आदि।
- रामानन्द रचित प्रमुख काव्य पंक्ति निम्नांकित है—
  (1) आरती कोजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
  जाके बल भर ते महि काँपै। रोग सोग जाकी सिमा न चांपै॥
  (2) कहाँ जाइए हो धरि लागो रंग। मेरो चंचल मन भयो अपंग॥
- रामानन्द ने 'रामावत सम्प्रदाय' की स्थापना की। इस सम्प्रदाय के लोग 'वैरागी' नाम से प्रसिद्ध हुए।
- रामानन्द कृत 'वैष्णवमताब्जभास्कर' में उनके शिष्य सुरसुरानंद ने जो प्रश्न किए हैं जिनके उत्तर में रामतारक मंत्र की विस्तृत व्याख्या, अहिंसा का महत्व इत्यादि विषय है।
- रामानन्द के 12 शिष्य थे। आचार्य शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं रामकुमार वर्मा के अनुसार ये निम्नलिखित हैं—

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	हजारी प्रसाद द्विवेदी	डॉ० रामकुमार वर्मा
अनन्तानन्द	आशानन्द	अनन्तानन्द
सुखानन्द	सुखानन्द	सुखानन्द
सुरसुरानन्द	सुरसुरानन्द	सुरेश्वरानन्द
नरहर्यानन्द	परमानन्द	नरहरियानन्द
भावानन्द	भवानंद	भावानन्द
पीपा	पीपा (राजपूत)	योगानन्द
कबीरदास	कबीर (जुलाहा)	पीपा
सेन	सेना (नाई)	कबीर
धना	धन्ना (जाट)	सेन

रैदास	रैदास (चमार)	धना
पद्मावती	महानन्द	रैदास
सुरसरी	श्री आनन्द	पद्मावती

- अनन्तानन्द के शिष्य कृष्णदास पयहारी सर्वप्रथम गलता (अजमेर राज्य) में रामानन्द सम्प्रदाय की गद्दी स्थापित की।
- रामानन्दी सम्प्रदाय में गलता को उत्तर भारत का 'उत्तर तोताद्रि' कहा जाता है।
- गलता में पहले नाथपंथी योगियों का अधिकार था।
- अजमेर के राजा पृथ्वीराज पयहारीजी के शिष्य बने। पयहारी के दो प्रसिद्ध शिष्य हुए—(1) अग्रदास और (2) कील्हदास।
- कील्हदास ने रामभक्ति में योगाभ्यास का मेल कर एक 'तपसी शाखा' की स्थापना की।
- कील्हदास के शिष्य द्वारकादास थे। इनके सम्बन्ध में नाभादास ने भक्तमाल में लिखा है—"अष्टांग जोग तन त्यागियो द्वारकादास, जानै दुनी"
- अग्रदास ने रामभक्ति परम्परा में रसिक भाव का समावेश कर 'रसिक सम्प्रदाय' की स्थापना की।
- रसिक सम्प्रदाय के प्रमुख कवि निम्न हैं—(1) बालकृष्ण 'बाल अली', (2) रसमाला, (3) रामशरण 'प्रेमकली', (4) प्रयागदास, (5) रामगुलाम द्विवेदी, (6) रीवाँ नरेश महाराज रघुराज सिंह।
- अग्रदास ने अपनी गद्दी जयपुर के पास रैवास में स्थापित किया। रसिक सम्प्रदाय में इन्हें 'अग्रअली' भी कहा जाता है।
- अग्रदास द्वारा रचित प्रमुख ग्रन्थ निम्नलिखित है—

पुस्तक	विषयवस्तु
हितोपदेश उपखाणा बावनी	
ध्यान मंजरी	रसिकोपासना का सिद्धान्त ग्रन्थ
रामध्यानमंजरी	
कुंडलिया	नीतिपरक
अष्टयाम या रामाष्टयाम	संस्कृत भाषा में रचित सीतावल्लभ राम की दैनिक लीला का चित्रण

- अग्रदास के शिष्य नाभादास जी माने जाते हैं।
- विष्णुदास ग्वालियर नरेश डूंगरेन्द्र के राजकवि थे। इनके द्वारा लिखे ग्रन्थ निम्नांकित है—(1) महाभारत कथा, (2) रूक्मिणी मंत्र, (3) स्वर्गारोहण, (4) रामायण कथा।
- विष्णुदास कृत 'रामायण कथा' रामकथा सम्बन्धी हिन्दी का प्रथम प्रबन्ध काव्य है।
- ईश्वरदास ने 'सत्यवती कथा' (1501 ई०), 'भरत मिलाप' और 'अंगदपैज' नामक ग्रन्थों की रचना की।
- गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। इनका सामान्य विवरण निम्नांकित है—

जन्म-मृत्यु	माता-पिता	पत्नी	दीक्षा गुरु	शिक्षा गुरु
1532–1623 ई०	आत्माराम दूबे-हुलसी	रत्नावली	नरहर्यानन्द	शेष सनातन

- तुलसीदास के जन्म स्थान के विषय में मतभेद है, जो निम्न है—

सूकर खेत (सोरों) (जिला एटा) →
- लाला सीताराम
- गौरीशंकर द्विवेदी
- हजारी प्रसाद द्विवेदी
- रामनरेश त्रिपाठी
- रामदत्त भारद्वाज
- गणपतिचन्द्र गुप्त

राजापुर (जिला बाँदा) →
- वेनीमाधव दास
- महात्मा रघुवर दास
- शिव सिंह सेंगर
- रामगुलाम द्विवेदी
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तुलसीदास को 'स्मार्त वैष्णव' मानते हैं।
- आचार्य शुक्ल के अनुसार 'हिन्दी काव्य की प्रौढ़ता के युग का आरम्भ' गोस्वामी तुलसीदास द्वारा हुआ।
- तुलसीदास के महत्त्व के सन्दर्भ में विद्वानों की कही गई उक्तियाँ निम्न हैं—

विद्वान	प्रमुख कथन
नाभादास	कलिकाल का वाल्मीकि।
स्मिथ	मुगलकाल का सबसे महान व्यक्ति।
ग्रियर्सन	बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोक-नायक।
मधुसूदन सरस्वती	आनन्दकानने कश्चिज्जङ्गमस्तुलसी तरुः। कवितामंजरी यस्य रामभ्रमर भूषिता॥
रामचन्द्र शुक्ल	इनकी वाणी की पहुँच मनुष्य के सारे भावों व्यवहारों तक है। एक ओर तो वह व्यक्तिगत साधना के मार्ग में विरागपूर्ण शुद्ध भगवदभजन का उपदेश करती है दूसरी ओर लोक पक्ष में आकर पारिवारिक और सामाजिक कर्त्तव्यों का सौन्दर्य दिखाकर मुग्ध करती है।
रामचन्द्र शुक्ल	यह एक कवि ही हिन्दी को प्रौढ़ साहित्यिक भाषा सिद्ध करने के लिए काफी है।
रामचन्द्र शुक्ल	तुलसीदासजी उत्तरी भारत की समग्र जनता के हृदय मन्दिर में पूर्ण प्रेम-प्रतिष्ठा के साथ विराज रहे हैं।
हजारीप्रसाद द्विवेदी	भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो।
रामविलास शर्मा	जातीय कवि।
अमृतलाल नागर	मानस का हंस।

- गोस्वामी तुलसीदास रामानुजाचार्य के 'श्री सम्प्रदाय' और विशिष्टाद्वैतवाद से प्रभावित थे। इनकी भक्ति भावना 'दास्य भाव' की थी।

गोस्वामी तुलसीदास की गुरु परम्परा का क्रम इस प्रकार है—
राघवानन्द → रामानन्द → अनन्तानन्द → नरहर्यानंद (नरहरिदास) → तुलसीदास
'रत्नावली' के निम्न कथन पर तुलसीदास ने वैराग्य धारण किया—

"लाज न लागत आपको दौरे आयहु साथ।
धिक धिक ऐसे प्रेम को कहा कहौं मैं नाथ॥
अस्थि चर्म मय देह मम तामे जैसी प्रीति।
तैसी जौं श्री राम महँ होति न तौ भवभीति॥"

गोस्वामी तुलसीदास के स्नेही मित्रों में नवाब अब्दुर्रहीम खानखाना, महाराज मानसिंह, नाभादास, मधुसूदन सरस्वती और टोडरमल का नाम प्रसिद्ध है।
टोडर की मृत्यु पर तुलसीदास ने कई दोहे लिखे थे जो निम्न है—

"चार गाँव को ठाकुरो मन को महामहीप।
तुलसी या कलिकाल में अथए टोडर दीप॥
रामधाम टोडर गए, तुलसी भए असोच।
जियबो गीत पुनीत बिनु, यहै जानि संकोच॥"

रहीमदास ने तुलसी के सन्दर्भ में निम्न दोहा लिखा है—

सुरतिय, नरतिय, नागतिय, सब चाहति अस होय। —तुलसीदास
गोद लिए हुलसी फिरैं, तुलसी सो सुत होय॥ —रहीमदास

गोस्वामी तुलसीकृत 12 ग्रन्थों को ही प्रामाणिक माना जाता है। इसमें 5 बड़े और 7 छोटे हैं।
डॉ० उदायभानु सिंह के अनुसार गोस्वामी तुलसीदास की रचनाएँ काल क्रमानुसार निम्नलिखित हैं—

(1) वैराग्य संदीपनी	सं० 1626–27
(2) रामाज्ञा प्रश्न (दोहावली रामायण)	सं० 1627–28
(3) रामललानहछू	सं० 1628–29
(4) जानकी मंगल	सं० 1629–30
(5) रामचरित मानस	सं० 1631
(6) पार्वती मंगल	सं० 1643
(7) कृष्ण गीतावली	सं० 1643–60
(8) गीतावली (पदावली रामायण)	सं० 1630–70
(9) विनय पत्रिका (विनयावली, रामगीतावली)	सं० 1631–79
(10) दोहावली	सं० 1626–80
(11) बरवै रामायण (बरवा)	सं० 1630–80
(12) कवितावली या कवित्तावली (हनुमानबाहुक समेत)	सं० 1631–80

तुलसी की पाँच लघु कृतियों—'वैराग्य संदीपनी', 'रामलला नहछू', 'जानकी मंगल', 'पार्वती मंगल' और 'बरवै रामायण' को 'पंचरत्न' कहा जाता है।
कृष्णदत्त मिश्र ने अपनी पुस्तक 'गौतम चन्द्रिका' में तुलसीदास की रचनाओं के अष्टांगयोग' का उल्लेख किया है। ये आठ अंग निम्न हैं—(1) रामगीतावली,

(2) पदावली, (3) कृष्ण गीतावली, (4) बरवै, (5) दोहावली, (6) सुगुनमाला, (7) कवितावली और (8) सोहिलोमंगल।

- तुलसीदास की प्रथम रचना 'वैराग्य संदीपनी' तथा अन्तिम रचना 'कवितावली' को माना जाता है। 'कवितावली' के परिशिष्ट में 'हनुमानबाहुक' भी संलग्न है। किन्तु अधिकांश विद्वान 'रामलला नहछू' को प्रथम कृति मानते हैं।
- गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं का संक्षिप्त परिचय निम्न है—

पुस्तक	काव्यरूप	भाषा	प्रयुक्त छंद	छंद सं०	मुख्य रस	काण्ड (सर्ग)
वैराग्य संदीपनी	मुक्तक	ब्रजभाषा	दोहा-सोरठा			
रामाज्ञा प्रश्न	मुक्तक	अवधी	दोहा			
रामलला नहछू	प्रबन्ध	ठेठ अवधी	सोहर छंद			
जानकी मंगल	प्रबन्ध	अवधी	सोहर (हंसगति)	216		
रामचरितमानस	प्रबन्ध	अवधी	दोहा-चौपाई	1074 दोहा	भक्तिरस	7 काण्ड
पार्वती मंगल	प्रबन्ध	अवधी	मंगल, हरि-गीतिका	164		
कृष्णगीतावली	गीतिकाव्य	ब्रजभाषा		61		
गीतावली	गीतिकाव्य	ब्रजभाषा			वात्सल्य भक्ति	7 काण्ड
विनय पत्रिका	गीतिकाव्य	ब्रजभाषा		279	भक्तिरस	
दोहावली	मुक्तक	ब्रजभाषा	दोहा-सोरठा	573		
बरवै रामायण	मुक्तक	अवधी	बरवै छंद	69		7 काण्ड
कवितावली	मुक्तक	ब्रजभाषा	कवित्त, छप्पय			7 काण्ड

- 'रामचरितमानस' की रचना संवत् 1631 में चैत्र शुक्ल रामनवमी (मंगलवार) को हुआ। इसकी रचना में कुल 2 वर्ष 7 महीना 26 दिन लगा।
- 'रामाज्ञा प्रश्न' एक ज्योतिष ग्रन्थ है।
- 'कृष्ण गीतावली' में गोस्वामीजी ने कृष्ण से सम्बन्धी पदों की रचना की तथा 'पार्वती मंगल' में पार्वती और शिव के विवाह का वर्णन किया।
- 'रामचरितमानस' और 'कवितावली' में गोस्वामीजी ने 'कलिकाल' का वर्णन किया है।
- 'कवितावली' में बनारस (काशी) के तत्कालीन समय में फैले 'महामारी' का वर्णन 'उत्तरकाण्ड' में किया गया है।
- तुलसीदास ने अपने बाहु रोग से मुक्ति के लिए 'हनुमानबाहुक' की रचना की।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'रामचरितमानस' को 'लोकमंगल की साधनावस्था' का काव्य माना है।

- 'मानस' में सात काण्ड या सोपान हैं जो क्रमशः इस प्रकार हैं—(1) बालकाण्ड, (2) अयोध्याकाण्ड, (3) अरण्यकाण्ड, (4) किष्किन्धाकाण्ड, (5) सुन्दरकाण्ड, (6) लंकाकाण्ड, (7) उत्तरकाण्ड।
- 'अयोध्याकाण्ड' को 'रामचरितमानस' का हृदयस्थल कहा जाता है। इस काण्ड को 'चित्रकूट सभा' को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'एक आध्यात्मिक घटना' की संज्ञा प्रदान की।
- 'चित्रकूट सभा' में 'वेदनीति', 'लोकनीति' एवं 'राजनीति' तीनों का समन्वय दिखाई देता है।
- 'रामचरितमानस' की रचना गोस्वामीजी ने 'स्वान्तः सुखाय' के साथ-साथ 'लोकहित' एवं 'लोकमंगल' के लिए किया है।
- 'रामचरितमानस' के मार्मिक स्थल निम्नलिखित है—(1) राम का अयोध्या त्याग और पथिक के रूप में वन गमन, (2) चित्रकूट में राम और भरत का मिलन, (3) शबरी का आतिथ्य, (4) लक्ष्मण को शक्ति लगने पर राम का विलाप, (5) भरत की प्रतीक्षा आदि।
- तुलसी ने 'रामचरितमानस' की कल्पना 'मानसरोवर' के रूपक के रूप में की है। जिसमें 7 काण्ड के रूप में सात सोपान तथा चार वक्ता के रूप में चार घाट हैं।
- सप्तसोपान 'मानस' के चारों घाटों का संक्षिप्त विवरण निम्न है—

काकभुशुंडि-गरुड़-संवाद
उपासना घाट : पनघट

शिव-पार्वती-संवाद
ज्ञानघाट : राजघाट
(प्रथम वक्ता : श्रोता)

रामयश जल से परिपूर्ण
रामचरितमानस

तुलसी-संत-संवाद
प्रपत्तिघाट : गायघाट

याज्ञवल्क्य-भरद्वाज-संवाद
कर्मघाट : पंचायती घाट

- 'मानस रूपक' तुलसी साहित्य का सबसे बड़ा रूपक है।
- अलंकार-योजना के सम्बन्ध में तुलसी को प्राप्त उपाधियाँ निम्न हैं—

उपाधि के प्रस्तोता	प्राप्त उपाधि
लाला भगवानदीन और वच्चन सिंह	रूपकों का बादशाह
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	अनुप्रास का बादशाह
डॉ० उदयभानु सिंह	उत्प्रेक्षाओं का बादशाह

- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, "तुलसी का सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।"
- 'रामचरितमानस' पर सर्वाधिक प्रभाव 'अध्यात्म रामायण' का पड़ा है।
- तुलसीदास ने सर्वप्रथम 'मानस' को रसखान को सुनाया था।
- 'रामचरितमानस' की प्रथम टीका अयोध्या के बाबा रामचरणदास ने लिखी।

- 'रामचरितमानस' के सन्दर्भ में रहीमदास ने लिखा है—

  रामचरित मानस विमल, सन्तन जीवन प्रान।
  हिन्दुवान को वेद सम, यवनहि प्रकट कुरान॥

- भिखारीदास ने तुलसी के सम्बन्ध में लिखा है—

  तुलसी गंग दुवौ भए सुकविन के सरदार।
  इनके काव्यन में मिली भाषा विविध प्रकार॥

- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने इनके सम्बन्ध में लिखा है—

  'कविता करके तुलसी न लसे, कविता पा लसी तुलसी की कला'

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है—"भाषा पद्य के स्वरूप को लेते हैं तो गोस्वामीजी के सामने कई शैलियाँ प्रचलित थीं जिनमें से मुख्य हैं—(क) वीरगाथा काल की छप्पय पद्धति, (ख) विद्यापति और सूरदास की गीत पद्धति, (ग) गंग आदि भाटों की कवित्त सवैया पद्धति, (घ) कबीरदास की नीति सम्बन्धी बानी की दोहा पद्धति जो अपभ्रंश से चली आती थी और (ङ) ईश्वरदास की दोहे चौपाई वाली प्रबन्ध पद्धति। इस प्रकार भाषा के दो रूप (अवधी और ब्रज) और रचना की पाँच प्रमुख शैलियाँ साहित्य क्षेत्र में गोस्वामीजी को मिली।"
- नाभादास गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन रामभक्त कवि हैं। इनका जन्म अनुमानतः 1570 के आस-पास हुआ था।
- नाभादास ने हिन्दी में भक्तमाल की परम्परा का सूत्रपात किया। इनके गुरु का नाम 'अग्रदास' था।
- डॉ० ग्रियर्सन ने नाभादास का उपनाम 'नारायणदास' बताया है।
- नाभादास ने सन् 1585 ई० (सं० 1642) के आसपास ब्रजभाषा में 'भक्तमाल' की रचना की।
- 'भक्तमाल' में 200 कवियों का जीवनवृत्त और उनकी भक्ति की महिमासूचक बातों को 316 छप्पयों में लिखा गया है।
- सन् 1712 ई० में प्रियादास ने 'भक्तमाल' की टीका 'रसबोधिनी' शीर्षक से ब्रजभाषा के कवित्त सवैया शैली में लिखी।
- नाभादास ने रामचरित से सम्बन्धित दो अष्टयामों की रचना की जो संस्कृत के चम्पूकाव्य शैली में रचित है।
- नाभादास ने 'अष्टयाम' की रचना शृंगार भक्ति अथवा रसिक भावना लेकर की है। इसकी अन्य विशेषता निम्न है—

पुस्तक	भाषा	विशेषता
अष्टयाम	ब्रजभाषा	गद्य में राम और सीता के आठों पहरों का वर्णन
अष्टयाम	अवधी	दोहा चौपाई शैली में राम-सीता का वर्णन

- नाभादास द्वारा विभिन्न कवियों के सन्दर्भ में 'भक्तमाल' में कही गई महत्त्वपूर्ण पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

कवि	महत्वपूर्ण काव्य पंक्ति
कबीरदास	कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षट्दरसनी

मीराबाई	निरअंकुश अति निडर, रसिक जस रसना गायो
तुलसीदास	त्रेता काव्य निबन्ध करी सत कोटि रसायन। इक अक्षर उच्चरें ब्रह्महत्यादि परायन। अब भक्तन सुख दैन वहुरि लीला विस्तारी। रामचरन रस मत्त रहत अहनिसि व्रतधारी॥ संसार अपार के पार को सुगम रूप नौका लियो। कलि कुटिल जीव निस्तारहित वाल्मीकि तुलसी भयो॥
सूरदास	उक्ति, चोज, अनुप्रास, वरन, अस्थिति अति भारी। वचन, प्रीति निर्वाह, अर्थ अद्भुत तुकधारी। विमल वुद्धि गुन और को, जो वह गुन स्वननि धरै। 'सूर' कवित सुनि कौन कवि जो नहिं सिर चालन करै॥
नन्ददास	लीला-पद-रस-रीति-ग्रन्थ-रर्चना में नागरं। सरस-उक्ति-युत-युक्ति, भक्ति-रह-गान-उजागर चंद्रहास-अग्रज-सुहृद, परम प्रेम-पथ में पगे। नन्ददास आनन्दनिधि, रसिक सुप्रभु-हित-रंगमगे॥

'अष्टयाम' में नाभादास ने लिखा है—
अवधपुरी की शोभा जैसी। कहि नहिं सकहि शेप श्रुति तैसी॥
केशवदास का जन्म बुन्देलखण्ड के ओरछा नामक नगर में सन् 1555 ई० में और मृत्यु सन् 1617 ई० में हुआ।
केशवदास का उपनाम वेदान्ती मिश्र था और ये निम्वार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे।
केशवदास ओरछा नरेश महाराज रामसिंहके भाई इन्द्रजीत सिंह के गुरु और राज्याश्रित कवि थे।
केशवदास की रचनाओं का काल क्रमानुसार संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है—

पुस्तक	वर्ष ई.	अध्याय	प्रकार	विशेपता/विषय
रसिक प्रिया	1591	16 प्रभाव	रीतिग्रन्थ	रस (शृंगार) का वर्णन
रामचन्द्रिका	1601	39 प्रकाश	प्रवन्ध	राम के चरित्र पर आधारित
कविप्रिया	1601	16 प्रकाश	रीतिग्रन्थ	अलंकारों का वर्णन
रतन वावनी	1607	53 छंद	प्रवन्ध	डिंगल शैली का एक राजनीतिक ग्रन्थ
वीरसिंह देव चरित	1607	33 प्रकाश	प्रवन्ध	वीरसिंह देव पर आधारित ऐतिहासिक काव्य
विज्ञान गीता	1610	21 प्रभाव	प्रवन्ध	प्रवोधचन्द्रोदय का अनुवाद
जहाँगीर जस चन्द्रिका	1612		प्रवन्ध	जहाँगीर के दरवार का वर्णन
नखशिख			रीतिग्रंथ	राधा के अंगों-उपांगों का वर्णन
छंदमाल			रीतिग्रंथ	छन्दों का वर्णन

- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ० नगेन्द्र और गणपतिचन्द्र गुप्त प्रभृति विद्वानों ने केशवदास को हिन्दी में रीतिकाव्य का प्रवर्तक माना है।
- 'कविप्रिया' रीति ग्रन्थ की रचना इन्द्रजीत सिंह की एकनिष्ठ प्रेमिका गणिका (वेश्या) 'प्रवीण राय' को शिक्षा देने के लिए की गयी थी।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल केशव को अलंकारवादी मानते हैं। केशवदास ने स्वयं लिखा है—

  जदपि सुजति सुलच्छनी, सुवरन सरस सुवृत्त।
  भूपन बिनु न विराजई, कविता वनिता मित्त॥
- केशवदास भामह, दंडी और उद्‌भट के अनुयायी थे।
- ऐसा माना जाता है कि केशवदास ने 'रामचन्द्रिका' की रचना तुलसीदास के 'रामचरितमानस' की प्रतिस्पर्धा में एक रात में की।
- गुमान कवि ने 'रामचन्द्रिका' की प्रतिस्पर्धा में 'कृष्णचन्द्रिका' लिखी।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने केशवदास की कटु आलोचना करते हुए लिखा है, "केशव को कवि हृदय नहीं मिला था। उनमें वह सहृदयता और भावुकता न थी जो एक कवि में होनी चाहिए। वे संस्कृत साहित्य से सामग्री लेकर अपने पाण्डित्य और रचना कौशल की धाक जमाना चाहते थे।"
- डॉ० विजयपाल सिंह ने केशवदास को 'कोर्ट का कवि' कहा है।
- केशवदास कृत रामचन्द्रिका पर प्रसन्नराघव, हनुमन्नाटक, अनर्घराघव कादम्वरी तथा नैपधचरित का प्रभाव पड़ा है।
- आलोचकों के केशवदास व रामचन्द्रिका के सम्वन्ध में निम्नांकित कथन हैं—

आलोचक	प्रमुख कथन
	कवि को दीन न चहै विदाई। पूछँ केसव की कविताई॥
नाभादास	उडगन केशवदास
रामचन्द्र शुक्ल	कठिन काव्य का प्रेत
रामस्वरूप चतुर्वेदी	रामचन्द्रिका छन्दों का एक अजायबघर है।

- सेनापति का जन्म सन् 1589 ई० के आसपास माना जाता है। इनके गुरु का नाम 'हीरामणि दीक्षित' था।
- सेनापति द्वारा रचित दो ग्रन्थ है—
  (1) कवित्त रत्नाकर—इसमें पाँच तरंग और 394 छंद में राम कथा का वर्णन है।
  (2) काव्य कल्पद्रुम—इसे एक रीति ग्रन्थ माना जाता है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सेनापति के सन्दर्भ में लिखा है—'ये बड़े ही सहृदय कवि थे। ऋतु वर्णन तो इनके जैसा और किसी शृंगारी कवि ने नहीं किया।'
- सेनापति व्रजभाषा के कवि हैं और इनका सर्वाधिक प्रिय अलंकार 'श्लेष' है।
- अन्य राम भक्त कवि निम्नांकित हैं—

कवि	रचनाएँ
प्राणचन्द चौहान	रामायण महानाटक (1610 ई०)
माधवदास चरण	(1) रामरासो (1618), (2) अध्यात्म रामायण (1624 ई०)

हृदय राम	हनुमन्नाटक (1623 ई०)
रायमल्ल पांडे	हनुमच्चरित (1639 ई०)
नरहरि बारहट	पौरुषेय रामायण
लालदास	अवध विलास (1643 ई०)
कपूर चन्द्र त्रिखा	रामायण (1646 ई०)

- 'रामायण महानाटक' एक संवादात्मक प्रबन्ध काव्य है जिसमें दोहा-चौपाई की प्रधानता है।
- हृदयराम कृत 'हनुमन्नाटक' पर संस्कृत के 'हनुमन्नाटक' का सर्वाधिक प्रभाव है। इसका एक नाम 'रामगात' भी है।
- 'पौरुषेय रामायण' नरहरिकृत 'चतुर्विंशति अवतार चरित्र' नामक विशाल ग्रन्थ का एक अंश है।
- कपूरचन्द्र त्रिखा कृत 'रामायण' गुरुमुखी लिपि में लिखी 145 छंदों की ब्रजभाषा की कृति है।

रामभक्ति शाखा के कवियों की प्रमुख काव्य पंक्तियाँ

(क) रामानन्द

(1) आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की॥
(2) जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहु लोक उजागर॥

(ख) अग्रदास

(1) कुण्डलललित कपोल जुगल अस परम सुदेसा।
(2) मेचक कुटिल विसाल सरोरुह नैन सुहाये,
मुख पंकज के निकट मनौ अलि छौन छाये॥
(3) पहरे राम तुम्हारे सोवत। मैं मतिमंद अंध नहिं जोवत॥

(ग) गोस्वामी तुलसीदास

'दोहावली' से

(1) हिय निर्गुन नयनन्हि सगुन, रसना राम सुनाम।
मनहुँ परट-संपुट लसत, तुलसी ललित ललाम॥
(2) एक भरोसे एक वल एक आस विस्वास।
एक राम घन श्याम हित चातक तुलसीदास॥
(3) साखी सवदी दोहरा, कहि किहनी उपखान।
भगति निरूपहि भगत कलि निंदहि वेद पुरान॥
(4) का भाखा का संस्कृत प्रेम चाहिए साँचु।
का जुआवै कामारी का लै करै कमाचु।

'कवितावली' से

(5) गोरख जगायो जोगु, भगति भगायो लोगु।
निगम नियोगते, सो केलि ही छरो सो है॥

(6) धूत कहो अवधूत कहौं, रजपूत कहौ जुलहा कहौ कोऊ।
काहू को बेटी सौं बेटा न ब्याहब काहू की जाति बिगार न सोऊ॥
(7) खेती न किसान को भिखारी को न भीख भली।
(8) माँगी के खइवौ मसीत को सोइबो, लेबे को एक न दैबे को दोऊ॥
(9) आगि वडवागि ते बड़ी है आगि पेट की
(10) अवधेस के द्वारे सकारें गई सुत गोद कै भूपति लै निक से।
(11) पुरतें निकसी रघुवीर बधू धरि धीर दए मग में डग द्वै॥
(12) बालधी विसालबिकराल, जवाल जाल मानो,
लंक लीलिबे को काल रसना पसारी है॥
(13) झूठो है, झूठो है, झूठो सदा जुग, संत कहंत जे अंतु लहा है।
(14) मातु-पिता जग जाइ तज्यो विधि हूँ न लिखो कछु भाल भलाई॥
(15) अंतर जामिहुतें बड़े बाहेरजामि हैं राम जे नाम लियेतें।
(16) लालची ललात, विललात द्वार-द्वार दीन
बदन मलीन, मन मिटै ना विसूरना॥
(17) प्यासेहूँ न पावै बारि, भूखे न चनक चारि,
चाहत अहारन पहार, दारि घूरना॥
(18) आश्रम-बरन कलि बिबस बिकल भए
निज-निज मरजाद मोटरी-सी डार दी॥

'विनय पत्रिका' से

(19) अवलौं नसानी, अब न नसैहौं।
राम कृपा भव निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं॥
(20) ऐसो को उदार जग माहीं।
विनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं॥
(21) कबहुँक अंब, अवसर पाइ। मेरिऔ सुधि घाइबी कछु करुन कथा चलाइ॥
(22) कबहुँक हौ यहि रहनि रहौंगो।
परुप वचन अति दुसह श्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो॥
(23) केसव! कहि न जाइ का कहिये।
सून्य भीति पर चित्र रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे॥
(24) जाके प्रिय न राम बैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही॥
(25) माधव! मो समान जग माहीं।
सब बिधि हीन, मलीन, दीन अति, लीन-बिषय कोउ नाहीं॥
(26) श्रीराम चन्द्र कृपालु भजु मन हरण भय भव दारुणं॥
(27) सुनि सीतापति-सील सुभाउ।

'रामचरितमानस' से

(28) वर्णानामर्थ संघानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ॥
(29) नानापुराणनिगमागम सम्मतं यद् रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबन्धमतिमञ्जुलमात नोति।
(30) बंदउगुरु पद पदमु परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा॥
(31) सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥
(32) निज कवित्त केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका॥
(33) कवित बिबेक एक नहिं मोरें। सत्य कहउँ लिखी कागद कोरे॥
(34) गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न।
(35) मैं पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकर खेत॥
(36) कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥
(37) अगुन सगुन दुई ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा॥
(38) पुरइनि सघन चारु चौपाई। जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई॥
छंद सोरठा सुन्दर दोहा। सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा॥
(39) कामिहि नारि पियारी जिमि लोभहि प्रिय जिमि दाम॥
(40) कत विध सृज नारी जग माही। पराधीन सपनेहु सुख नाहीं॥
(41) जेहि के जेहि पर सत्य संनेहू। सो तिन्ह मिलई न कछु संदेहू॥
(42) भगतिह ग्यानहि नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा॥
(43) ढोल गँवार सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी॥
(44) वरनाश्रम निज निज धरम निरत बेदपथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुख नहिं भय सोक न रोग॥
(45) विधिहु न नारि हृदय गति जानी।
(46) मैं सुकुमारि नाथ वन जोगू, तुमहि उचित तप मो कहं भोगू॥
(47) श्रुति सम्मत हरि भगत पथ संजुत विरति विवेक।
(48) वादहि शुद्र द्विजन सन हम तुमते कछु घाटि।
जानहिं ब्रह्म सो विप्रवर आँखि दिखावहि डाँटि॥
(49) जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिनहिं बिलोकत पातक भारी॥
(50) सव नर करहिं परस्पर प्रीति। चलहिं स्वधर्म निरतिश्रुति रीती।
(51) ईश्वर अंस जीव अविनासी। चेतन, अमल, सहज सुख रासी॥

(घ) केशवदास

(1) भाषा बोलि न जानहिं जिनके कुल के दास।
भाषा कवि भो मंदमति तेहि कुलकेसवदास॥
(2) केसव केसनि अस करी वैरिहु जस न कराहिं
चन्द्रवदनि मृगलोचनी 'बाबा' कहि-कहि जाहिं॥

(3) जदपि सुजाति सुलक्षनी, सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषन विनु न बिराजई, कविता बनिता मित्त॥
(4) देखे मुख भावै, अनदेखेई कमल चंद
ताते मुख मुखै, सखी कमलौ न चंद री॥
(5) केशव केशवराय मनौ कमलासन के सिर ऊपरे सोहै।
(6) बासर की सम्पति उलूक ज्यों न चितवत।
(7) मातु! कहाँ नृपतात? गए सुरलोकहि, क्यों? सुतसोक किए।
(8) राम को काम कहाँ रिपु जीतहि कौन कवै रिपु जीत्यों कहा॥
(9) अरुण गात अति प्रात पद्मिनी प्राननाथ भय।
मानहु केशवदास कोकनद कोक प्रेम मय॥

(ङ) सेनापति

(1) दूरि जदुराई, सेनापति सुखदाई देखौ,
आई रितु पाउस, न पाई प्रेम पतियाँ॥
(2) सेनापति उनए नये जलद सावन के
चारिहू दिसान घुमरत भरे तोयकै॥
(3) वृष को तरनि तेज सहसौ करनि तपै,
ज्वालनि के जाल विकराल वरसत है।
(4) सेनापति सोई, सीतापति के प्रसाद जाकी,
सब कवि कान दै सुनत कविताई है॥

विविध

- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा है, "वाल्मीकि ने सर्वप्रथम नर-काव्य का प्रवर्तन किया।"
- मीराबाई के एक पत्र के जवाब में गोस्वामी तुलसीदास ने निम्नांकित पद कही थी, जो 'विनय पत्रिका' में संकलित है—
  जाके प्रिय न राम बैदेही।
  तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही॥
- अंग्रेज भाषा वैज्ञानिक बिम्स ने तुलसी की भाषा को 'पुरानी बैसवाड़ी' कहा है।

सगुण धारा (कृष्ण भक्ति शाखा)

- 'कृष्ण' का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद के 8वें मंडल में 85 सूक्त के रचयिता के रूप में मिलता है।
- संस्कृत साहित्य में सर्वप्रथम कृष्ण के अलौकिक कर्मों का वर्णन ई०पू० प्रथम शताब्दी के कवि अश्वघोष के 'बुद्ध चरित' में मिलता है।
- राधा का प्रथम वर्णन हाल की प्राकृत रचना 'गाथा सतसई' या 'गाथा सप्तशती' में हुआ जो प्रथम शताब्दी की रचना है।
- कृष्ण भक्त कवियों का आधार ग्रन्थ 'भागवत महापुराण' है।

- कृष्ण काव्य परम्परा के प्रमुख सम्प्रदाय एवं आचार्य प्रवर्तकों का संक्षिप्त विवरण कालक्रमानुसार निम्न है—

आचार्य	जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्म स्थान	गुरु	सम्प्रदाय	दार्शनिक मत
निम्बाकाचार्य	1114-1162	निम्बापुर	नारद मुनि	सनकादि	द्वैताद्वैतवाद
वल्लभाचार्य	1478-1530	चंपारन	विष्णु स्वामी	रूद्र	शुद्धाद्वैतवाद
स्वामी हरिदास	1478-1578	वृन्दावन राजपुर	आसधीर	सखी	
चैतन्य महाप्रभु	1486-1533	नवद्वीप बंगाल	केशव भारती	गौड़ीय	अचिन्त्य भेदाभेदवाद
हितहरिवंश	1502-1552	बाँदगाव मथुरा	गोपालभट्ट	राधावल्लभ	

- कवि हाल का वास्तविक नाम शालिवाहन था जो प्रथम शताब्दी में प्रतिष्ठानपुर के राजा थे।
- 'भागवत पुराण' का रास 'शरद रास' है तथा 'गीत गोविन्द' का 'वसंत रास' है।
- बंगाल के अन्तिम शासक राजा लक्ष्मण सेन के सभा कवि जयदेव ने 12 सर्गों में कोमलकान्त पदावली में 'गीत गोविन्द' की रचना की।
- 'भागवत महापुराण' में कुल 12 स्कन्ध है।

सनकादि या निम्बार्क सम्प्रदाय

- भक्ति के निमित्त विष्णु के स्थान पर कृष्ण के सगुण रूप का सर्वप्रथम प्रतिपादन निम्बार्काचार्य ने किया था।
- निम्बर्काचार्य का मूलनाम नियमानन्द था। निम्बार्क का अर्थ है 'नीम पर सूर्य के दर्शन कराने वाला'।
- निम्बार्क को भगवान कृष्ण के सुदर्शन चक्र का अवतार माना जाता है। इनका एक नाम 'सुदर्शन' भी था।
- निम्बार्क सम्प्रदाय में कृष्ण के वामांग में सुशोभित राधा के स्वकीय रूप का विधान है।
- निम्बार्काचार्य के चार शिष्य थे—(1) श्री निवासाचार्य, (2) औदुम्बाचार्य, (3) गौर मुखाचार्य और (4) श्री लक्ष्मण भट्ट। श्री निवासाचार्य ने 'वेदान्त कौस्तुभ' ग्रन्थ की रचना की।
- निम्बार्काचार्य ने पाँच ग्रन्थों की रचना की है जो निम्न है—
  (1) वेदान्त पारिजात सौरभ, (2) दशश्लोकी, (3) श्रीकृष्णस्तवराज, (4) मंतरहस्य षोडशी, (5) प्रपन्नकल्पपल्लवी।
- निम्बार्क सम्प्रदाय की सबसे बड़ी गद्दी राजस्थान के सलेमाबाद स्थान पर है।

प्रमुख कवि

- श्रीभट्ट का जन्म मथुरा में ध्रुवटीला में सन् 1538 में हुआ। इनके गुरु का नाम केशव कश्मीरी था।
- श्री भट्ट को निम्बार्क सम्प्रदाय में 'हितू सखी' का अवतार माना जाता है।
- श्रीभट्ट के लिए दो ग्रन्थ है—
  (1) युगल शतक—इसमें 100 पद हैं। प्रत्येक पद के पूर्व उक्त पद के मूल भाव को व्यक्त करने वाला एक दोहा दिया है।
  (2) आदि बानी।
- हरिव्यास देव के गुरु का नाम श्रीभट्ट था। इन्होंने ब्रजभाषा में 'महावाणी' नामक ग्रन्थ की रचना की।
- परशुराम देव के गुरु का नाम 'हरिव्यासदेव' था। इन्होंने ही निम्बार्क सम्प्रदाय की गद्दी को राजस्थान के सलेमावाद में स्थापित किया।
- परशुरामदेव ने 'परशुराम सागर' नामक एक बड़े ग्रन्थ की रचना की। इसकी भाषा राजस्थानी प्रधान सधुक्कड़ी है।

वल्लभ सम्प्रदाय

- वल्लभाचार्य सुल्तान सिकन्दर लोदी तथा बाबर के समकालीन थे।
- वल्लभाचार्य संक्षिप्त परिचय निम्न है—

जन्म-मृत्यु	जन्म स्थान	पत्नी	दो पुत्र	भक्ति
1478-1530 ई०	चम्पारन	मधुमंगल	(1) गोपीनाथ (2) विट्ठलनाथ	पुष्टिमार्गी

- वल्लभ सम्प्रदाय में कृष्ण पूर्णानन्द स्वरूप पूर्ण पुरुषोत्तम परब्रह्म हैं।
- पुष्टिमार्गी भक्ति में 'पुष्टि' भगवद् अनुग्रह या कृपा को कहा जाता है। भागवत महापुराण में लिखा है—
  "पुष्टि किं मे ? पोषणम्। पोषणं किम्। तदनुग्रहः भगवत्कृपा।"
- पुष्टि मार्गी भक्ति में तीन प्रकार के मार्ग, जीव तथा भक्त होते हैं जो निम्न हैं—

मार्ग	जीव	भक्त
मर्यादा मार्ग (वैदिक मार्ग)	मर्यादा जीव	मर्यादा भक्ति
प्रवाह मार्ग (लौकिक सुख भोग)	प्रवाह जीव	प्रवाह भक्ति
पुष्टि मार्ग (भक्ति मार्ग)	पुष्टि जीव	पुष्टि या शुद्ध भक्ति

- वल्लभाचार्य ने निम्नांकित ग्रन्थों की रचना की है—
  (1) पूर्व मीमांसा भाष्य (2) उत्तर मीमांसा या ब्रह्मसूत्र भाष्य, जो अणुभाष्य के नाम से प्रसिद्ध है। इनके शुद्धाद्वैतवाद का प्रतिपादक यही प्रधान दार्शनिक ग्रन्थ है।
  (3) श्रीमद्भागवत की सूक्ष्म टीका तथा सुबोधिनी टीका, (4) तत्त्वदीप निबन्ध
- 'अणुभाष्य' वल्लभाचार्य का अधूरा ग्रन्थ था जिसे उनके पुत्र विट्ठलनाथ ने पूरा किया।
- वल्लभ सम्प्रदाय में अष्टयाम की सेवा का उल्लेख है—

(1) मंगलाचरण, (2) शृंगार, (3) ग्वाल, (4) राजयोग, (5) उत्थापन, (6) भोग, (7) संध्या-आरती और (8) शयन।

- सन् 1519 ई० में वल्लभाचार्य के शिष्य पूरनमल खत्री ने गोवर्धन पर्वत पर श्रीनाथजी का मन्दिर बनवाया जिसका प्रबन्ध दायित्व कृष्णदास पर था।
- गोस्वामी विट्ठलनाथ सन् 1565 ई० चार वल्लभाचार्य और चार अपने शिष्यों को मिलाकर 'अष्टछाप' की स्थापना की।
- वल्लभाचार्य के कुल 84 तथा विट्ठलनाथ के कुल 252 शिष्य थे।
- कालक्रमानुसार अष्टछाप कवियों का संक्षिप्त विवरण निम्न है—

कवि	जन्म-मृत्यु (ई०)	गुरु	जन्मस्थान
कुंभनदास	1468–1583	वल्लभाचार्य	जमुनावतौ (उ०प्र०)
सूरदास	1478–1583	वल्लभाचार्य	सीही (उ०प्र०)
परमानंद दास	1493–	वल्लभाचार्य	कन्नौज (उ०प्र०)
कृष्णदास	1496–1578	वल्लभाचार्य	चिलोतरा (गुजरात)
गोविन्द स्वामी	1505–1585	विट्ठलनाथ	आंतरी (राजस्थानी)
छीत स्वामी	1515–1585	विट्ठलनाथ	मथुरा (उ०प्र०)
चतुर्भुजदास	1530–1585	विट्ठलनाथ	जमुनावती (उ०प्र०)
नंददास	1533–1583	विट्ठलनाथ	रामपुर (उ०प्र०)

- कुंभनदास प्रथम अष्टछापी कवि थे। ये जाति के क्षत्रिय थे।
- कुंभनदास ने सन् 1492 ई० में वल्लभाचार्य से दीक्षा ग्रहण की।
- कुंभनदास अकबर के निमन्त्रण पर पैदल ही फतेहपुर सीकरी गए जिस पर अफसोस करके लिखते हैं—

  "संतन को कहा सीकरी सों काम।
  आवत जात पन्हैया टूटी विसरि गयो हरिनाम।"
- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, "सूरदास ही व्रजभाषा के प्रथम कवि हैं और लीलागान का महान समुद्र 'सूरसागर' ही उसका प्रथम काव्य है।"
- सूरदास का जन्म वैशाख शुक्ल 5, दिन मंगलवार संवत् 1535 वि० को हुआ। ये वल्लभाचार्य से 10 दिन ही छोटे थे।
- सूरदास के जन्म स्थान के संबंध में दो मत है, जो निम्न है—

रूनकता (गऊघाट)			सीही
	श्याम सुन्दरदास	वार्ता साहित्य	
	रामचन्द्र शुक्ल	डॉ० नगेन्द्र	
	हजारी प्रसाद द्विवेदी	गणपतिचन्द्र	

- वल्लभाचार्य ने सूरदास को भगवत्लीला वर्णन करने का उपदेश दिया—

  सूर ह्वै के घिघियात काहे क है, कुछ भगवत्लीला वर्णन करो।
- सूरदास द्वारा रचित 25 ग्रन्थ बताया जाता है जिसमें कि तीन ही उपलब्ध है जो निम्न है—(1) सूरसागर, (2) सूरसारावली और (3) साहित्य लहरी।
- सूरदास की रचनाओं का सर्वप्रथम सम्पादन कलकत्ता में सन् 1841 ई० में 'रागकल्पद्रुम' नाम से हुआ।

- सूरदासकृत सूरसागर का उपजीव्य 'भागवत महापुराण' का दशम स्कन्ध है।
- सूरसागर में 4936 पद तथा 12 स्कन्ध है।
- सूरदास ने सूरसागर में तीन भ्रमर गीतों की योजना की है।

  प्रथम भ्रमरगीत (पद संख्या 4078 से 4710) ही मुख्य है। शेष दो भ्रमरगीत (क) पद संख्या 4711–4712 तथा (ख) 4713 कथात्मक है।
- भ्रमरगीत का सर्वप्रथम एक पूर्ण प्रसंग के रूप में वर्णन श्रीमद्भागवत के दशम् स्कन्ध के 47वें अध्याय के 12 से 21 श्लोक में मिलता है।
- हिन्दी साहित्य में 'भ्रमरगीत' काव्य परम्परा का प्रवर्तन सूरदास ने किया।
- सूरसागर के काव्य रूप के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों का मत निम्न है—

विद्वान	अभिमत
डॉ० चन्दवली पाण्डेय	लीला प्रबन्धकाव्य या भाव प्रबन्ध काव्य
हजारी प्रसाद द्विवेदी	गीत काव्यात्मक मनोरागों पर आधारित विशाल महाकाव्य
व्रजेश्वर वर्मा	कृष्णचरित का महाकाव्य
सर्वसम्मति से	गेय मुक्तक काव्य

- 'भ्रमरगीत' में कुल 700 पद हैं। प्रो० मैनेजर पाण्डेय ने 'भ्रमर' का तीन रूप वताया है—(1) कृष्ण का प्रतीक, (2) उद्धव का प्रतीक और (3) स्वतंत्र रूप में।
- 'भ्रमरगीत' को उपालम्भ काव्य भी कहते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसे 'ध्वनिकाव्य' कहा है।
- सूर सारावली में 1107 छंद है। इसकी रचना संसार को होली का रूपक मानकर की गयी है।
- 'साहित्य लहरी' (1550 ई०) में अलंकार और नायिका भेदों के उदाहरण प्रस्तुत करने वाले 118 दृष्टिकूट पद हैं।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है—"वात्सल्य और शृंगार के क्षेत्र का जितना अधिक उद्घाटन सूर ने वन्द आँखों से किया, उतना किसी और कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का कोना-कोना वे झाँक आए।"
- आचार्य शुक्ल ने लिखा है, "सूर की वड़ी भारी विशेषता है नवीन प्रसंगों की उद्भावना। प्रसंगोद्भावना करने वाली ऐसी प्रतिभा हम तुलसी में नहीं पाते।"
- शुक्लजी ने लिखा है, "आचार्यों की छाप लगी हुई आठ वीणाएँ श्रीकृष्ण की प्रेमलीला कीर्तन करने उठी, जिनमें सवसे ऊँची, सुरीली और मधुर झंकार अन्धे कवि सूरदास की वीणा की थी।"
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, "सूरदास जब अपने विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकार शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है। संगीत के प्रवाह में कवि स्वयं बह जाता है।"
- सूरदास की मृत्यु पर विट्ठलदास ने कहा था—

  "पुष्टि मार्ग कौ जहाज जात है।
  जाय कछू लैनों होय सो लेठ॥"

- सूरदास का अन्तिम पद निम्नलिखित है—

  "खंजननयन रूप रस माते
  अति सै चारा चपल अनियारे, पल पिंजरा न समाते॥"
- सूरदास को वात्सल्य रस का सम्राट माना जाता है।
- परमानन्द ने वल्लभाचार्य से अरैला (प्रयाग) में दीक्षा ग्रहण किया।
- परमानन्ददास की रचनाओं में 'परमानन्दसागर' प्रमुख है जिसमें 635 पद है। इसके अतिरिक्त 'दानलीला' तथा 'ध्रुवचरित' भी इनकी रचना है।
- कृष्णदास कुनबी जाति के शूद्र थे। इनके प्रमुख ग्रन्थ है—(1) जुगल मान चरित्र, (2) भ्रमरगीत और (3) प्रेमतत्व निरूपण।
- गोविन्द स्वामी ब्रजमण्डल के महावन नामक स्थान पर रहते थे।
- गोविन्द स्वामी जहाँ रहते थे वह स्थान 'गोविन्द स्वामी की कदमखंडी' नाम से प्रसिद्ध है।
- अकबर के नवरत्न में तानसेन गोविन्द स्वामी से संगीत गायन की शिक्षा ग्रहण करते थे।
- इनके पदों का संकलन 'गोविन्द स्वामी के पद' नाम से प्रसिद्ध है।
- छीत स्वामी बीरबल के पुरोहित थे। पुष्टिमार्ग में दीक्षित होने के बाद ये गोवर्धन पर्वत के निकट 'पुंछरी' नामक स्थान पर तमाल वृक्ष की छाया में रहते थे।
- इनकी स्फुट रचनाओं का संकलन 'पदावली' नाम से प्रसिद्ध है।
- चतुर्भुज दास प्रसिद्ध अष्टछाप कवि कुंभनदास के कनिष्ठ पुत्र थे।
- चतुर्भुजदास के स्फुट पदों का संकलन 'चतुर्भुज कीर्तन संग्रह', 'कीर्तनावली' और 'दानलीला' नाम से प्रकाशित है।
- अष्टछाप के कवियों में नंददास का स्थान काव्य सौष्ठव और भाषा की प्रांजलता में सूरदास के बाद है।
- नंददास के ग्रन्थ, पद संख्या एवं कथ्य निम्न है—

ग्रन्थ	पद संख्या	कथ्य/विषय
अनेकार्थ मंजरी	228	पर्याय कोश
मानमंजरी		अमरकोश के आधार पर लिखा गया पर्यायकोश
सुदामा चरित		श्रीमद्भागवत की कथानक पर सुदामा-कृष्ण के सख्य भाव का वर्णन
रसमंजरी	270	नायिका-भेद
रूपमंजरी		लघु प्रेमाख्यानक काव्य
विरहमंजरी	147	नायिकाओं का विरह वर्णन। इसमें बारहमासा भी है।
प्रेमबारह खड़ी		
श्यामसागाई	63	श्यामा-श्याम की सगाई
रुक्मिणी मंगल	90	विवाह काव्य
भँवर गीत	216	सगुण और निर्गुण पर गोपी और उद्धव का संवाद
रासपंचाध्यायी		कृष्ण की रासलीला का अनुप्रासादियुक्त साहित्यिक भाषा में वर्णन
सिद्धान्त पंचाध्यायी		कृष्ण की रासलीला का वर्णन
दशमस्कंध भाषा	1700	श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध का पद्यमय अनुवाद.

- 'रासपंचाध्यायी' रोला छंद में लिखा गया है। वियोगी हरि ने इसे 'हिन्दी का गीत गोविन्द' कहा है। यह पाँच अध्याय में विभक्त है।
- हिन्दी के समस्त भ्रमरगीतों में नंददास का 'भँवरगीत' दार्शनिक दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है।
- नंददास को 'जड़िया' कहा जाता है—

  "और कवि गढ़िया, नंददास जड़िया।"

सखी सम्प्रदाय

- स्वामी हरिदास ने वृन्दावन में निम्बार्क मतांतर्गत सखी सम्प्रदाय या टट्टी सम्प्रदाय की स्थापना की।
- स्वामी हरिदास का ऐतिहासिक परिचय किशोरदास की रचना 'निजमत सिद्धान्त' से प्राप्त होता है।
- अकबर के दरबारी गायक तानसेन स्वामी हरिदास के शिष्य थे।
- सखी सम्प्रदाय में निकुंज बिहारी श्रीकृष्ण सर्वोपरि हैं।
- हरिदास के दो ग्रन्थ प्राप्य हैं—
  (1) सिद्धान्त के पद—इसमें रूप और प्रेम का सिद्धान्त है।
  (2) केलिमाला : इसमें 110 पदों में श्री श्यामाकुंज बिहारी की लीलाओं का वर्णन है।

प्रमुख कवि

- जगन्नाथ गोस्वामी स्वामी हरिदास के भाई थे। इनकी रचना 'अनन्य सेवानिधि' ही प्राप्य है।
- बिहारिनदास सखी सम्प्रदाय के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। इनका मूल नाम हरिनाम था।
- बिहारिनदास को सखी सम्प्रदाय में 'गुरुदेव' नाम से पुकारा जाता है। ये जगन्नाथ के पौत्र और बीठल विपुल के शिष्य थे।
- इनकी रचना 'बिहारिनदास जी की वाणी' के नाम से प्रसिद्ध है। जिसमें इन्होंने 'नित्यविहार' को सर्वोपरि स्थान दिया है।
- बीठल विपुल को नाभादास ने 'रस सागर' की उपाधि दी है।
- बीठल विपुल को केवल 40 पद ही मिले हैं।
- नागरीदास बिहारिनदास के शिष्य थे। इनको लिखी 20 साखियाँ, 42 चौबोले, 39 कवित्त सवैया तथा 70 पद प्राप्त है।
- सरसदास नागरीदास के छोटे भाई थे। इनकी रचना कुल 66 छंदों की है जो 'अष्टाचार्यों की वाणी' में सम्मिलित है।

गौड़ीय सम्प्रदाय

- गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रवर्तक कृष्ण चैतन्य महाप्रभु है।
- चैतन्य महाप्रभु का मूलनाम विश्वम्भर मिश्र था। घर में इन्हें 'निमाई' और 'गौर' या 'गौरांग' नाम से पुकारते थे।
- चैतन्य मत का दार्शनिक सिद्धान्त 'अचिन्त्य भेदाभेद' कहलाता है।

प्रमुख कवि

- रामराय प्रारम्भ में वल्लभ मतानुयायी विट्ठलनाथ के शिष्य थे। किन्तु बाद में जगन्नाथपुरी में श्री नित्यानन्द से दीक्षा ग्रहण की।
- रामराय संस्कृत तथा ब्रजभाष दोनों के ही पण्डित थे।
- रामराय ने संस्कृत में ब्रह्मसूत्र के कुछ अंश पर 'गौर-विनोदिनी' नामक वृत्ति की रचना की तथा गीता पर 'गौर भाष्य', 'स्तवपंचकम्' और 'गोविन्द तत्व दीपिका' का प्रणयन किया।
- ब्रजभाषा में इनकी 'आदिवाणी' तथा 'गीत गोविन्द भाषा' दो रचनाएँ प्राप्य हैं।
- मदनमोहन सूरदास अकबर के दीवान थे और संडीला में नियुक्त थे।
- बाबा कृष्णदास ने इनके 105 पदों का 'सुहृदवानी' शीर्षक से संग्रह किया है।
- गदाधर भट्ट ब्रजभाषा के सुप्रसिद्ध कवि तथा भागवत के अद्वितीय वक्ता थे।
- गदाधर भट्ट रघुनाथ भट्ट गोस्वामी के शिष्य थे।
- चन्द्रगोपाल रामराय के अनुज थे। इन्होंने संस्कृत तथा ब्रज दोनों भाषाओं में ग्रन्थ लिखा, जो निम्न हैं—

ब्रजभाषा	संस्कृत
(1) चंद्र चौरासी	(1) श्रीराधा माधव भाष्य
(2) गौरांग अष्टयाम	(2) गायत्री भाष्य
(3) अष्टयाम सेवा सुधा	(3) श्री राधामाधवाष्टक
(4) ऋतु विहार	
(5) राधा विरह	

- 'चन्द्र चौरासी' हितहरिवंशजी की 'हित चौरासी' की प्रेरणा से लिखी गयी है।.
- 'गौरांग अष्टयाम' में चैतन्य महाप्रभु की अष्टयाम सेवा का वर्णन है।
- माधवदास 'माधुरी' वृन्दावनवासी खत्री थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—
  (1) केलि माधुरी (1630 ई०), (2) वंशीवट माधुरी (1642 ई०) और (3) वृंदावन माधुरी (1642 ई०)।
- माधवदास की तीनों रचनाओं का एक साथ संकलन 'श्री माधुरी वाणी' नाम से किया गया है।
- भगवत मुदित माधव मुदित के पुत्र तथा आगरा के सूबेदार शुजा के दीवान थे। इनकी एकमात्र रचना 'वृन्दावन शत' (1650 ई०) है।
- 'वृन्दावन शत' श्री प्रबोधनंद सरस्वती द्वारा रचित संस्कृत ग्रन्थ 'वृन्दावन महिमामृत' का ब्रजभाषानुवाद है।

राधावल्लभ सम्प्रदाय

- राधावल्लभ सम्प्रदाय का प्रवर्तन सन् 1534 ई० में आचार्य हितहरिवंश ने वृन्दावन में किया।
- राधावल्लभ सम्प्रदाय में 'राधा' का स्थान सर्वोपरि है तथा इसमें 'तत्सुखीभाव' को महत्व प्रदान किया गया है।

- हितहरिवंश का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्नांकित है—

माता-पिता	पत्नी	ब्रजभाषा ग्रन्थ	संस्कृत ग्रन्थ
केशवदास मिश्र-तारावती	रुक्मिनी देवी	हित चौरासी	(1) राधासुधानिधि (2) यमुनाष्टक

- हित हरिवंश अपनी रचना की मधुरता के कारण श्रीकृष्ण की वंशी के अवतार कहे जाते हैं।

प्रमुख कवि

- हरिराम व्यास ओरछा नरेश मधुकरशाह के राजगुरु हैं।
- हरिराम व्यास को वैष्णव भक्तों में 'विशाख सखी' का अवतार माना जाता है।
- हरिराम व्यास को प्रमुख रचनाएँ निम्नांकित हैं—
  (1) व्यासवाणी—758 पद और 148 दोहे
  (2) रागमाला—604 दोहे (संगीतशास्त्र)
  (3) नवरत्न और स्वधर्म पद्धति (संस्कृत ग्रन्थ)
- चतुर्भुजदास अष्टछापी कवि चतुर्भुजदास से भिन्न हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—(1) द्वादश यश, (2) मंगलसार यश तथा (3) हितजू को मंगल।
- ध्रुवदास ने स्वप्न में हित हरिवंश से शिष्यत्व ग्रहण किया।
- ध्रुवदास की प्रमुख रचनाएँ निम्नांकित हैं—

पुस्तक	पुस्तक	पुस्तक
जीवदशा लीला	मन श्रृंगार लीला	रसविहार लीला
वैदक ज्ञान लीला	हित श्रृंगार लीला	रंग हुलास लीला
मनशिक्षा लीला	सभामंडल	रंग विनोद लीला
वृन्दावनसत लीला	रस मुक्तावली लीला	आनन्ददशा विनोद लीला
ख्याल हुलास लीला	रस हीरावली लीला	रहस्यलता लीला
भक्तनामावली लीला	रस रत्नावली लीला	आनन्दलता लीला
वृहदवावन पुराण को भाषा	प्रेमावली लीला	अनुराग लता लीला
सिद्धान्तविचार लीला (गद्य)	प्रियाजी नामावली लीला	प्रेमदशा लीला
प्रीति चौवनी लीला	रहस्यमंजरी लीला	रसानंद लीला
आनन्दाष्टक लीला	सुखमंजरी लीला	ब्रजलीला
भजनाष्टक लीला	रतिमंजरी लीला	जुगलध्यान लीला
भजन कुंडलिया लीला	नेह मंजरी लीला	नित्यविलास लीला
भजनसत लीला	वन विहार लीला	मानलीला
भजन श्रृंगार सत लीला	रंग विहार लीला	दान लीला

- 'नेही' नागरीदास ने वृन्दावन में हित हरिवंशजी के पुत्र गोस्वामी वनचन्द्र से दीक्षा ग्रहण की।

सम्प्रदाय निरपेक्ष कृष्ण भक्त कवि

- मीराबाई ने श्रीकृष्ण की उपासना प्रियतम या पति के रूप में की।

□ मीराबाई का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्नांकित है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्मस्थान	पिता	पति	गुरु	भक्ति	मृत्यु स्थान
1516-1546	कुड़की	रत्न सिंह	भोजराज	रैदास	माधुर्य	रणछोड़ मन्दिर

□ मीराबाई की भाषा राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है।

□ मीराबाई की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

(1) गीत गोविन्द की टीका, (2) नरसीजी का मायरा, (3) राग सोरठा, (4) राग गोविन्द, (5) मलार राग, (6) सत्यभामा नु रूसणं, (7) मीरां की गरबी, (8) रुक्मणी मंगल।

□ मीराबाई के स्फुट पद 'मीराबाई की पदावली' नाम से प्रकाशित है।

□ मीराबाई ने तुलसीदास को एक पत्र में लिखा था—

स्वति श्री तुलसी कुल भूषन दूषन हरन गोसाई।
बारहि बार प्रनाम करहुँ, अब हरहु सोक समुदाई॥

□ रसखान का मूलनाम सैयद इब्राहीम था। इनका जन्म अनुमानतः दिल्ली में सन् 1533 में तथा मृत्यु 1618 ई० में हुआ।

□ सवैया छंद में कृष्णलीला का गान करने वाले प्रथम कवि रसखान हैं।

□ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, ''और कृष्णभक्तों के समान इन्होंने 'गीति-काव्य' का आश्रय न लेकर कवित्त सवैयों में अपने सच्चे प्रेम की व्यंजना की है।''

□ रसखान की प्रमुख काव्य कृतियाँ निम्न हैं—

(1) सुजान रसखान—181 सवैया, 17 कवित्त, 12 दोहा, 4 सोरठा (कुल 214 छंद)
(2) प्रेम वाटिका (1614)—53 दोहों की लघु काव्य कृति।
(3) दानलीला—11 छन्दों का खण्ड काव्य।
(4) अष्टयाम—कृष्ण की दिनचर्या का वर्णन।

□ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा है, ''इस मुसलमान हरिजनन पर केतिन हिन्दुन वारिए।''

कृष्ण भक्ति शाखा के कवियों की प्रमुख पंक्ति

निम्बार्क सम्प्रदाय

श्रीभट्ट

(1) भीजत कब देखौं इन नैना।
स्यामा जू की सुरँग चूनरी, मोहन को उपरैना॥
(2) ब्रजभूमि मोहनी मैं जानी।
मोहनकुंज, मोहन वृन्दावन, मोहन जमुना पानी॥
(3) बसौ मेरे नैननि में दोउ चंद
गोरे वदनि वृषभानु, नंदिनी, स्याम वरन नँद नंद॥
(4) रस को रेलि वेलि अति बाढ़ी।
दम्पति की हित बावरि विहरनि रहो सदा मेरे चित चाढ़ी॥
(5) स्यामा स्याम कुंजतर ठाढे, जतन कियो कछु मैं ना।
(6) आनन्द कंद श्रीनंद सुवन, श्री वृषभानु सुता भजन

वल्लभ सम्प्रदाय

सूरदास

(1) नंद जू मेरे मन आनंद भयो, हौ गोवर्धन ते आयो।
(2) है हरि भजन को परमान। नीच पावै ऊँच पढ़वी, वाजते नीसान॥
(3) शोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुन चलन रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए॥
(4) सिखवत चलन जसोदा मैया।
अरबराय कर पानि गहावति, डगमगाय धरै पैयाँ॥
(5) पाहुनि करि दै तनक मह्यौ।
आरि करै मनमोहन मेरो, अंचल आनि गह्यौ॥
(6) मैया कबहि बढेगी चोटी!
कितिक वार माहिं दूध पियत भइ, यह अजहूँ है छोटी॥
(7) खेलत में को काको गोसैयाँ?
(8) धेनु दुहत अति ही रति बाढी।
एक धार दोहनि पहुँचावत एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी॥
(9) देखि री! हरि के चंचल नैन।
खंजन मीन मृंगज चपलाई नहिं पटतर एक सैन॥
(10) मेरे नैन विरह की वेल बई।
सींचत नैन नीर के, सजनी! मूल पतार गई॥
(11) मुरली तऊ गोपालहि भावति।
(12) मधुबन तुम कत रहत हरे।
(13) ऊधौ! तुम अपनो जतन करौ।
(14) निर्गुन कौन देस को बासी?
मधुकर हँसि समुझाय सौह दै बूझति सांच, न हांसी॥
(15) बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहति, काकी है बेटी, देखी नहीं कहूँ ब्रज खोरी।
(16) मानौ माई घन-घन अंतर दामिनी।
(17) प्रभु हौं सब पतितन कौ टीकौ।
(18) रूपरेख-गुन जाति-जुगति-बिनु निरालंब कित धावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातै सूर-सगुन पद गावै॥
(19) जसोदा हरि पालनै झुलावैं।
हलरावै, दुलराइ, मल्हावै, जोई सोइ कछु गावै।
(20) मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ।
(21) फटि न गई बज्र की छाती कत ये सूल सहे
(22) नंद ब्रज लीजै ठोंकि बजाय
(23) लरिकाई कौ प्रेम कहौ अलि कैसे करि के छूटत॥

(24) हरि है राजनीति पढि आए।
समुझी बात कहत मधुकर जो? समाचार कछु पाए?
(25) सूर मिलौ मन जाहि-जाहि सों ताको कहा करै करजी।
(26) संदेसो देवकी सों कहियों।
(27) जहँ जहँ रहौ, राज करौ तहँ तहँ लेहु कोटि सिर भार।
यह असीस हम देति सूर पुनुन्हात खसै नहि बार॥
(28) निरखत अंक स्याम सुन्दर के बार-बार लावति छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलिकै ह्वै गई स्याम-स्याम की पाती॥
(29) बिहँसि कह्यौ हम तुम नहिं अंतर, यह कहिके उन ब्रज पठई।
सूरदास प्रभु राधा माधव, व्रज बिहार नित नई-नई॥
(30) मो सम कौन कुटिल खल कामी।
(31) प्रभु जी मेरे अवगुन चित न धरो।
(32) चरण कमल बंदौ हरि राई।
(33) काहे को गोपीनाथ कहावत।
(34) मधुकर! तुम रस लंपट लोग।
(35) बिनु गोपाल बैरिन भई कुंजै।
(36) अति मलिन बृषभानु कुमारी।
(37) पिया बिनु सांपिनि कारि राति।
(38) निसि दिन बरसत नैन हमारे।
(39) हम सो कहत कौन की बातें।
(40) आयो घोष बड़ो व्यापारी।
(41) उर में माखन चोर गड़े
अब कैसहु निकसत नहिं ऊधो तिरछे ह्वैजो अड़े॥
(42) काहे को रोकत मारग सुधो?
(43) आये जोग सिखावन पांडे।
(44) हम तो कान्ह केलि की भूखी।
(45) अँखियाँ हरि दरसन की प्यासी।
(46) हमारे हरि हारिल की लकरी।
(47) हम भक्तन के भक्त हमारे।
सुन अर्जुन परतिज्ञा मेरी यह व्रत टरत न टारे॥

परमानन्ददास

(1) जब ते प्रीति श्याम ते कीनी।
ता दिन ते मेरे इन नैननि नेंकह नींद न लीनी॥
(2) कहा करौ बैकुंठहि जाय।
जहँ नहिं नंद, जहा न जसोदा, नहि जँह गोपी ग्वाल न गाय॥
(3) राधे जू हीरावलि टूटी।
उरज कमलदल माल मरगजी, बाम कपोल अलकलट छूटी॥

कृष्णदास

(1) मो मन मन गिरधर छवि पर अटक्यौ।
ललित त्रिभंगी, अंगन पर चलि, गयो तंहाई ट्टक्यौ।
(2) कंचन मनि मरकत रस ओपी।
नंद सुवन के संगम सुखकर अधिक विराजति गोपी।

नंददास

(1) ताही छिन उडुराज उदित रस रास सहायक।
कुंकुम-मंडित-वंदन प्रिया जनु नागरि नायक॥
(2) नव मर्कत मनि स्याम कनक मनिगम ब्रजवाला।
वृन्दावन को रीझि मनहुँ पहिराइ माला॥

गौड़ीय सम्प्रदाय

गदाधर भट्ट

(1) सखी हौं स्याम रंग रंगी।
देखि विकाय गई वह मूरति, सूरत माहिं पगी॥
(2) झूलति नागरि नागर लाल
मंद मंद सब सखी झुलावति, गावति गीत रसाल॥
(3) जयति श्री राधिके, सकल-सुख साधिके,
तरुन मनि नित्य नव तन किसोरी॥

राधावल्लभ सम्प्रदाय

हितहरिवंश

(1) रहो कोउ काहू मनहिं दिए।
मेरे प्राननाथ श्री स्यामा सपथ करौ तिन छिए॥
(2) ब्रज नवतरुनि कदंब मुकुटमनि स्यामा आजु वनी।
नख सिख लौ अंग अंग माधुरी मोहे श्याम धनी॥
(3) विपिन घन कुंज रति केलि भुज केलि रुचि।
स्याम स्यामा मिले सरद की जामिनी॥
(4) सबसों हित निष्काम मति वृन्दावन विश्राम।
राधावल्लभ लाल कौ, हृदय ध्यान मुख नाम॥

हरिराम व्यास

(1) यह जो एक मन बहुत ठौर करि कहि कौन सचु पायो।
जहँ तहँ विपति जार जुवती ज्यों प्रकट पिंगला गायो॥
(2) हुतो रस रसिकन को आधार।
बिन हरिवंसहि सरस रीति को कापै चलिहै भार?
(3) आज कछु कुंजन में वरषा सी।
बादल दल में देखि सखी री! चमकति है चपला सी॥

(4) सुधर राधिका प्रवीन बीना, बर रास रच्यो,
स्याम संग वर सुढंग तरनि तनया तीरे ?
(5) प्रेम अनत या जगत में, जानै बिरला कोय।
व्यास सतन क्यों परिसिहै, पचि हार्‌यो जग रोय॥

सम्प्रदाय निरपेक्ष

मीराबाई

(1) बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
(2) मन रे परसि हरि के चरन।
सुभग सीतल कमल कोमल त्रिविध ज्वाला हरन॥
(3) घायल की गति घायल जानै और न जानै कोई।
(4) जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोइ।
(5) जोगी, मत जा, मत जाइ पाइ परूँ चेरी तेरी हौ।
प्रेम-भगति को पैंड़ा ही न्यारो हमको गैल बता जा।
(6) पग बाध घुँघुर्‌या नाचा री।

रसखान

(1) मानुष हो तो वही रसखान बसौं सँग गोकुल गाँव के ग्वारन।
(2) या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
(3) ब्रह्म मैं ढूढ्‌यो पुरानन गानन, वेदरिया सुनो चौगुने चायन।
(4) मोर पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गले पहिरौंगी।
ओढ़ि पितांबर लै लकुटी वन गोधन ग्वालन संग फिरौंगी॥
(5) सेस महेस गनेस दिनेस सुरेसहु जाहिं निरंतर गावैं।
ताहि अहीर को छोहरियां छछिया भर छाछ पै नाच नचावै॥
(6) धूरि भरे अति सोभित स्याम जू वैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरै अंगना पग पैंजनि वाजति पीरी कछोटी॥
(7) होती जू पै कूबरी हयाँ सखि भरि लावन मूका बकोटती केती।
लेती निकाल हिये की सबै नक छेदि कै कौड़ी पिराई कै देती॥
(8) कारय उपाय वास डोरिया कटाय।
नाहिं उपजैगो बाँस डोरिया कटाय॥
(9) रसखानि कबौं इन आँखिन सो व्रज के बन वाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक हौंकल धौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं॥
(10) जेहि बिनु जाने कछुहि नहिं जान्यों जात बिसेस।
सोइ प्रेम जेहि जान के रहिन जात कछु सेस॥

भक्तिकाल की अन्य काव्य प्रवृत्तियाँ एवं कवि

(क) वीर-काव्य

- सन् 1454 ई० में श्रीधर कृत 'रणमल्ल छंद' डिंगल में ऐतिहासिक चरित काव्य का *प्रथम ग्रन्थ है।*

- 'रणमल्लछंद' में ईडर के राजा रणमल्ल राठौर और पाटण के सूबेदार जफर खाँ के युद्ध का वर्णन 70 छन्दों में निबद्ध है।
- भक्तिकाल के अन्य वीर काव्य और कवि निम्नांकित हैं—

ग्रन्थ	कवि	वर्ष (ई०)	छंद संख्या	विषय
विजयपाल रासो	नल्ह सिंह	1543	42	विजयपाल और पंग का युद्ध वर्णन
राउ जैतसी रासो		1543	90	राव जैतसी और कामरान का युद्ध वर्णन
विरुद छिहत्तरी	दुरसाजी आढ़ा		76 दोहा	महाराणा प्रताप का यशोगान
राणा रासो	दयाराम	1624	875	सीसोदिया कुल के राजाओं का वर्णन
रतन रासो	कुम्भकर्ण	1624		रतलाम के महाराज रतन सिंह का प्रशस्ति वर्णन
क्याम खा रासो	न्यामत खाजान	1634		क्याम खाँ चौहान के वंशजों का युद्ध वर्णन

(ख) प्रबन्धात्मक चरित काव्य

- सन् 1354 ई० में जैन कवि सुधारु अग्रवाल द्वारा रचित 'प्रद्युम्न चरित' हिन्दी का प्रथम पौराणिक प्रबन्ध काव्य है।
- भक्तिकालीन अन्य प्रबन्धात्मक चरित काव्य निम्नांकित है—

ग्रन्थ	कवि	भाषा
पंचपाण्डव चरित रास	शालिभद्र सूरी	अपभ्रंश प्रभावित राजस्थानी हिन्दी
गौतम रास		अपभ्रंश प्रभावित राजस्थानी हिन्दी
हरिचन्द पुराण	जाखू मणियार	ब्रजभाषा
कुमारपाल रासो	देवप्रभ	राजस्थानी हिन्दी
कान्हड दे प्रबन्ध	पद्मनाभ	राजस्थानी हिन्दी

(ग) नीति काव्य

- सन् 1486 ई० में पद्मनाभ ने सर्वप्रथम हिन्दी में विशुद्ध रूप से नीतिकाव्य की रचना की।
- पद्मनाभ ने 'डूंगर-बावनी' शीर्षक से नीति काव्य की रचना की। इसमें कुल 53 छप्पय है।
- भक्तिकालीन अन्य नीतिकाव्य और नीतिकार निम्न हैं—

नीतिकार	नीतिकाव्य
ठाकुर सिंह	(1) कृपण चरित्र (1523ई०), (2) पंचेन्द्री बेलो (1528 ई०)
छीहल	(1) पंच सहेली (1518 ई०), (2) बावनी (1527 ई०)
देवीदास	(1) राजनीति के कवित्त
जमाल	(1) जमाल दोहावली (1570)

उदैराज	(1) उदैराज को दूहा (1603)
बान कवि	(1) कलि चरित्र
वाजिद (दादू के शिष्य)	(1) ग्रन्थ गुण उत्पत्तिनामा, (2) ग्रन्थ प्रेमनामा, (3) ग्रंथ गरज नामा, (4) साखी वाजिद।
बनारसीदास जैन	(1) नवरस पद्यावली, (2) समयसार नाटक, (3) बनारसी विलास, (4) अर्द्ध कथानक, (5) भाषा सूक्ति मुक्तावली।
राजसमुद्र	(1) शालिभद्र चौपाई, (2) गजसुकमाल चौपाई, (3) प्रश्नोत्तर रत्नमाला, (4) कर्म बत्तीसी, (5) शील बत्तीसी, (6) बालावबोध।
कुशलवीर	(1) भोज चौपाई, (2) सीलवती रास, (3) कर्म चौपाई, (4) वर्णन सम्पुट, (5) उद्दिम कर्म संवाद।

(घ) अकबरी दरबार का काव्य

- भक्तिकाल के दरबारी कवियों का काल क्रमानुसार विवरण निम्न है—

कवि	जन्म-मृत्यु (ई०)	ग्रन्थ
टोडरमल	1493-1589	कुछ फुटकर छन्द
नरहरि महापात्र	1505-1607	(1) रुक्मिणी मंगल, (2) छप्पय नीति, (3) कवित्त संग्रह।
बीरबल 'ब्रह्म'	1528-1583	कुछ फुटकर छंद।
तानसेन	1531-1583	(1) संगीत सार, (2) रागमाला, (3) गणेश स्तोत्र।
गंग (गंगाप्रसाद)	1538-1617	(1) गंग पदावली, (2) गंग पच्चीसी, (3) गंग रत्नावली।
पृथ्वीराज	1549-	(1) वेलि क्रिसन रुक्मिणी री पृथ्वीराज कथी, (2) श्यामलता, (3) दशरथ रावउत, (4) वसुदेव रावउत, (5) गंगालहरी।
रहीमदास	1553-1626	(1) दोहावली या सतसई (2) बरवै नायिका भेद, (3) नगर शोभा, (4) मदनाष्टक, (5) खेल कौतुकम्, (6) शृंगार सोरठा, (7) रास पंचाध्यायी।

- कवि गंग बीरबल के बाल सखा तथा रहीमदास के विशेष कृपा पात्र थे।
- कवि गंग ने शहजादा-खुर्रम की प्रशंसा में एक छंद लिखा जिस कारण नूरजहाँ ने ईर्ष्यावश उन्हें हाथी से कुचलवा दिया था।
- कवि गंग का अन्तिम छंद निम्नलिखित है—

कबहुं न भडुंआ रन चढ़ै, कबहुं न बाजी बंग।
सरस सभाहि प्रनाम करि, बिदा होत कवि गंग॥

- भिखारीदास ने गंग के सन्दर्भ में लिखा था—
  तुलसी गंग दुवौ भए सुकविन के सरदार।
- रहीमदास का मूलनाम 'अब्दुल रहीम खानखाना' था। इनकी रचनाओं की खो: सर्वप्रथम भरतपुर के मायाशंकर याज्ञिक ने किया।
- रहीमदास की रचनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है—

रचना	छंद संख्या	भाषा	विषय
दोहावली	300	ब्रजभाषा	नीति के दोहे
नगर शोभा	144	ब्रजभाषा	विभिन्न जाति की स्त्रियों का वर्णन
शृंगार सोरठा	6	ब्रजभाषा	शृंगार का वर्णन
मदनाष्टक	8	खड़ी बोली	कृष्ण की रासलीला का वर्णन
बरवै नायिका भेद		अवधी	नायिका भेद का निरूपण

- 'बरवैनायिका भेद' अवधी भाषा में लिखा प्रथम रीति निरूपक ग्रन्थ है। इसकी रचना संस्कृत के भानुदत्त की 'रसमंजरी' के आधार पर हुई है।
- रहीमदास ने संस्कृत फारसी और हिन्दी मिश्रित भाषा में 'खेलकौतुक जातकम्' नामक एक ज्योतिष ग्रन्थ की रचना की।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "रहीम का हृदय द्रवीभूत होने के लिए कल्पना की उड़ान की अपेक्षा नहीं रखता था। वह संसार के सच्चे और प्रत्यक्ष व्यवहारों में ही द्रवीभूत होने के लिए पर्याप्त स्वरूप पा जाता था।"

(ङ) रीतिकाव्य

- हिन्दी की रीति काव्य परमपरा में रचनाकाल की दृष्टि से सर्वप्रथम कवि 'कृपाराम' हैं।
- सन् 1541 ई० में कृपाराम ने दोहा छंद में 'हिततरंगिणी' नामक रीति काव्य की रचना की। यह पाँच तरंगों में विभक्त है।
- हिततरंगिणी ब्रजभाषा में रचित हिन्दी सतसई काव्य परम्परा का प्रथम ग्रन्थ है।
- भक्ति काल के अन्य प्रमुख रीति निरूपक कवि निम्नांकित हैं—

कवि	रीति ग्रन्थ
सुन्दर कविराम	(1) सुन्दर शृंगार (1631 ई०)
न्यामत खाँ जान	(1) रसकोश (1619), (2) कवि वल्लभ, (3) सिंगार तिलक (1652), (4) रसमंजरी (1652 ई०)
बलभद्र मिश्र	(1) शिखनख, (2) बलभद्री व्याकरण, (3) गोवर्धन सतसई, (4) हनुमन्नाटक, (5) दूषण विचार।
मोहनलाल मिश्र	(1) शृंगार सागर (1589 ई०)
मुबारक	(1) तिलक शतक, (2) अलक शतक

अन्य कवि

- नरोत्तमदास का जन्म सीतापुर जिले के वाड़ी नामक कस्बे में हुआ था।
- नरोत्तमदास की प्रमुख कृतियाँ निम्नांकित हैं—
  (1) सुदामाचरित (खण्डकाव्य), (2) ध्रुवचरित, (3) विचारमाला।

रीतिकाल

पूर्वपीठिका

- 'रीतिकाल' का नामकरण विभिन्न विद्वानों के अनुसार निम्न है—

नाम	प्रस्तोता
रीतिकाव्य	डॉ० जार्ज ग्रियर्सन
अलंकृत काल	मिश्र बन्धु (श्यामबिहारी, सुखदेव बिहारी, गणेश बिहारी)
रीतिकाल	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
शृंगारकाल	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
कला काल	डॉ० रमाशंकर शुक्ल
अन्धकार काल	त्रिलोचन

- रीतिकाल के प्रवर्तक के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है जो निम्न है—

प्रवर्तक	रचनाकाल	प्रस्तोता	कारण
कृपाराम	1541 ई०		कालक्रम की दृष्टि
केशवदास	1555–1617 ई०	डॉ० नगेन्द्र	रचनाकार–व्यक्तित्व की समृद्धि की दृष्टि से
चिन्तामणि	1643 ई०	रामचन्द्र शुक्ल	अखण्ड परमपरा चलाने की दृष्टि से

- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'हिन्दी साहित्य का अतीत में रीतिकाल का विभाजन निम्न ढंग से किया है—

रीतिकाल (शृंगार काल)
- रीतिबद्ध धारा
  - लक्षण बद्ध काव्य
  - लक्ष्यमात्र काव्य
- रीतिमुक्त या स्वच्छंद काव्यधारा
  - रहस्योन्मुख काव्य
  - शुद्ध प्रेम काव्य

- आचार्य विश्वनाथ मिश्र ने 'शृंगार काल' को तीन भागों में बाँटा है—
  (1) रीतिबद्ध—रचना लक्षणों और उदाहरणों से युक्त होती है।
  (2) रीति सिद्ध—रीति की बँधी परिपाटी के अनुकूल स्वतंत्र काव्य रचनाएँ।
  (3) रीतिमुक्त—रीति परम्परा की साहित्यिक रूढ़ियों से मुक्त रचनाएँ।
- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार जो 'रीतिसिद्ध कवि' हैं, वे डॉ० नगेन्द्र के अनुसार 'रीतिबद्ध कवि' हैं।
- रीतिकाल के कवियों का संक्षिप्त वर्गीकरण ...

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- रीतिबद्ध
  - केशवदास
  - सेनापति
  - जसवंत सिंह
  - मतिराम
  - देव
  - भिखारीदास
  - पद्माकर
- रीतिसिद्ध → विहारीलाल
- रीतिमुक्त
  - रसखान
  - शेख आलम
  - घनानन्द
  - ठाकुर
  - वोधा
  - द्विजदेव

बच्चन सिंह
- बद्धरीति कवि
  - रीतिचेतस कवि
    - चिन्तामणि
    - जसवंत सिंह
    - भिखारीदास
    - प्रताप साहि
    - ग्वाल
  - काव्य चेतस → कवि
    - मतिराम
    - भूषण
    - देव
    - पद्माकर
- रीतिइतर काव्य
- मुक्तरीति कवि
  - अभिजात्य वर्ग → बिहारीलाल
  - स्वच्छन्द काव्यधारा
    - आलम
    - घनानन्द
    - ठाकुर
    - बोधा

☐ डॉ० नगेन्द्र द्वारा रीतिकालीन कवियों का कालक्रमानुसार वर्गीकरण निम्नांकित है—

- ति कवि
  - सर्वांग निरूपक कवि
    - चिन्तामणि (1609–1685)
    - कुलपति मिश्र
    - कुमारमणि (1665 ई०)
    - सोमनाथ
    - भिखारीदास
    - रसिक गोविन्द (1743–1838 ई०)
    - देव (1673–1767 ई०)
    - अमीरदास (1783 ई०)
    - ग्वाल (1791–1868 ई०)
    - प्रताप साहि
  - विशिष्टांगनिरूपक कवि
    - सर्व रस निरूपक कवि
      - तोप
      - सुखदेव मिश्र
      - रसलीन (1699–1750 ई०)
      - पद्माकर (1753–1833 ई०)
      - रामसिंह
      - उजियारे
      - चन्द्रशेखर वाजपेयी
      - याकूब खाँ
      - बेनी प्रवीन
    - शृंगार रस निरूपक कवि
      - मतिराम (1617 ई०)
      - कृष्णभट्ट देव ऋषि
    - छंदोनिरूपक कवि
      - भूषण (1613–1715 ई०)
      - मतिराम (1617 ई०)
      - सुखदेव मिश्र
      - माखन
      - दशरथ
      - रामसहाय
    - अलंकार निरूपक कवि
      - भूषण
      - मतिराम
      - जसवंत सिंह (1626–1688 ई०)
      - गोप (1716 ई०)
      - रसिक सुमति
      - रघुनाथ बंदीजन
      - दूलह
      - रसरूप
      - पद्माकर (1653–1833 ई०)
      - सेवादास
      - गिरिधरदास

डॉ० नगेन्द्र: ति कवि — रीतिमुक्त कवि — तेसिद्ध कवि

डॉ० नगेन्द्र: रीति कवि

- रीतिमुक्त कवि
  - शेख आलम
  - घनानन्द (1689–1739 ई०)
  - बोधा
  - ठाकुर (1766–1833 ई०)
  - द्विजदेव (1820–1869 ई०)
- रीतिसिद्ध कवि
  - सेनापति (1589 ई०)
  - बिहारीलाल (1595–1663ई०)
  - रसनिधि (1603–1660ई०)
  - वृन्द (1643–1723ई०)
  - नृपशंभु (1657 ई०)
  - नेवाज (1680 ई०)
  - कृष्णकवि (1720 ई०)
  - हठी जी (1780 ई०)
  - विक्रमादित्य
  - रामसहाय
  - पजनेस (1815 ई०)
  - बेनी वाजपेयी (1823 ई०)

रीतिबद्ध कवि

☐ प्रमुख रीतिबद्ध कवियों का संक्षिप्त जीवन-वृत्त निम्नांकित है—

कवि	जन्म-मृत्यु (ई.)	जन्म स्थान	आश्रयदाता
चिन्तामणि त्रिपाठी	1609–1685	तिकवांपुर	(1) शाहजी भोसला, (2) शाहजहाँ।
भूषण	1613–1715	तिकवांपुर	(1) शिवाजी, (2) छत्रसाल।
मतिराम	1617	तिकवांपुर	(1) जहाँगीर, (2) ज्ञानचंद, (3) भावसिंह हाड़ा, (4) स्वरूप सिंह बुन्देला।
जसवंत सिंह	1626–1688	मारवाड	ये मारवाड़ प्रतापी नरेश थे।
सुखदेव मिश्र		कंपिला रायबरेली	(1) भगवंत राय खाची, (2) राव मर्दन सिंह, (3) देवी सिंह, (4) फाजिल अली शाह।
तोष निधि		शृंगवेरपुर	
कुलपति मिश्र		आगरा	(1) रामसिंह।
देव (देवदत्त)	1673–1767	इटावा	(1) आजमशाह, (2) भवानीदत्त वैश्य, (3) कुशल सिंह, (4) सेठ भोगीलाल, (5) उद्योत सिंह, (6) सुजान मणि, (7) अली अकबर खाँ।

सैयद गुलामनबी रसलीन	1699–1750	बिलग्राम (हरदोई)	
भिखारीदास		ट्योंगा (प्रतापगढ़)	हिन्दूपति सिंह।
पद्माकर सिंह	1753–1833	बाँदा	(1) रघुराव अप्पा, (2) महाराज जैतपुर, (3) नोने अर्जुन सिंह, (4) पारीक्षित, (5) अनूपगिरि (उपनाम हिम्मत बहादुर), (6) रघुनाथ राव, (7) प्रताप सिंह, (8) जगत सिंह, (9) भीम सिंह, (10) दौलत राव सिन्धिया।

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने चिन्तामणि त्रिपाठी को रीतिकाव्य का प्रवर्तक माना है।
- चिन्तामणि त्रिपाठी सिद्धान्ततः रसवादी आचार्य थे।
- चिन्तामणि त्रिपाठी के सहोदर मतिराम, भूषण और जटाशंकर त्रिपाठी थे।
- भूषण वीर रस के कवि हैं। चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्र ने इन्हें 'कवि भूषण' की उपाधि दी थी।
- डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ने भूषण का मूल नाम 'पतिराम या मनीराम' बताया है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इनका मूलनाम 'घनश्याम' बताया है।
- महाराज छत्रसाल ने एक बार भूषण की पालकी को कन्धा लगाया था, जिस पर भूषण ने कहा था— "सिवा को बखानौं कि बखानौ छत्रसाल को।"
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है—"भूषण के वीर रस के उद्‌गार सारी जनता के हृदय की सम्पत्ति हुए।" "शिवाजी और छत्रसाल की वीरता के वर्णनों को कोई कवियों की झूठी खुशामद नहीं कह सकता।" "वे हिन्दू जाति के प्रतिनिधि कवि हैं।"
- मतिराम चिन्तामणि त्रिपाठी और भूषण के सहोदर माने जाते हैं।
- मतिराम ने अपने ग्रन्थों को अपने आश्रयदाताओं को समर्पित किया है जो निम्नांकित है—

आश्रयदाता	स्थान	ग्रंथ	वर्ष (ई०)	विषय निरूपण
जहाँगीर	दिल्ली	फूल मंजरी		60 दोहे में किसी एक-एक फूल का वर्णन।
बिना आश्रयदाता के		रसराज	1663	शृंगार रस निरूपण
भाव सिंह हाड़ा	बूंदी	ललितललाम	1664	अलंकार निरूपण
सेठ भोगनाथ		सतसई	1681	बिहारी सतसई का अनुकरण
ज्ञानचन्द्र	कुमायूँ	अलंकार पंचाशिका	1690	अलंकार निरूपण
स्वरूप सिंह बुंदेला	बुन्देलखण्ड	वृत्त कौमुदी	1701	छन्दों का निरूपण
अनुपलब्ध		लक्षण शृंगार		
अनुपलब्ध		साहित्य सार		नायिका भेद निरूपण

- आचार्य शुक्ल ने 'वृत्त कौमुदी' या 'छंद सार' को महाराज शंभुनाथ सोलंकी के लिए लिखा गया माना है।
- मतिराम का प्रथम ग्रन्थ फूलमंजरी है। किन्तु डॉ० बच्चन सिंह ने 'रसराज' को ही प्रथम ग्रन्थ माना है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "मतिराम की सी रस स्निग्ध और प्रसाद पूर्ण भाषा रीति का अनुसरण करने वालों में बहुत ही कम मिलती है।"
- जसवंत सिंह हिन्दी साहित्य के प्रधान आचार्य या शिक्षक के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- जसवंत सिंह ने साहित्यिक और आध्यात्मिक दो प्रकार की रचनाएँ लिखी हैं जो निम्नांकित हैं—

ग्रन्थ	विषय वस्तु
भाषा भूषण	212 दोहे में अलंकारों का निरूपण
प्रबोध चन्द्रोदय	संस्कृत नाटक प्रबोध चन्द्रोदय का व्रजभाषा का पद्यानुवाद
अपरोक्ष सिद्धान्त	वेदान्त विषय का निरूपण
अनुभव प्रकाश	वेदान्त विषय का निरूपण
आनन्द विलास	वेदान्त विषय का निरूपण
सिद्धान्त बोध	वेदान्त विषय का निरूपण
सिद्धान्त सार	वेदान्त विषय का निरूपण

- सुखदेव मिश्र के सन्दर्भ में आचार्य शुक्ल ने लिखा है, "छंदशास्त्र पर इनका सा विशद निरूपण और किसी कवि ने नहीं किया है।"
- सुखदेव मिश्र को राजा राजसिंह गौड़ ने 'कविराज' की उपाधि दी थी।
- इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नांकित हैं—
(1) वृत्त विचार (1671 ई०), छंद विचार, (3) फाजिल अली प्रकाश, (4) रसार्णव, (5) शृंगार लता, (6) अध्यात्म प्रकाश (1698), (7) दशरथ राय।
- तोष रसवादी आचार्य है। इनका मूलनाम तोष निधि है।
- इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—(1) सुधानिधि (1634 ई०), (2) नखशिख, (3) विनयशतक।
- कुलपति मिश्र रस ध्वनिवादी आचार्य थे। ये प्रसिद्ध कवि बिहारी लाल के भांजे थे।
- कुलपति मिश्र का कविता काल 1667 ई० से 1686 ई० तक माना जाता है।
- कुलपति मिश्र की प्रमुख कृतियाँ निम्न हैं—

ग्रन्थ	वर्ष (ई०)	विषयवस्तु
रस रहस्य	1670	मम्मट के रस रहस्य का छायानुवाद
द्रोण पर्व	1680	महाभारत के द्रोण पर्व का पद्यबद्ध अनुवाद
युक्तितरंगिणी (अप्राप्य)	1686	
नखशिख (अप्राप्य)		
संग्राम सार		

- डॉ० नगेन्द्र ने एक अन्य पुस्तक 'दुर्गा भक्ति चन्द्रिका' का भी उल्लेख किया है।
- महाकवि देव का मूल नाम देवदत्त था। देव आचार्य और कवि दोनों रूपों में प्रसिद्ध हैं।

- देव हित हरिवंश के अनन्य सम्प्रदाय में दीक्षित थे।
- देव की प्रमुख रचनाएँ निम्नांकित हैं—

ग्रन्थ विषय	वस्तु/आधार
भाव विलास (1689 ई०)	रस एवं नायक-नायिका भेद वर्णन
अष्टयाम	आठ पहरों में नायक-नायिका के बीच का विलास वर्णन
भवानी विलास	भवानीदत्त वैश्य को समर्पित
राग रत्नाकर	राग-रागिनियों के स्वरूप का वर्णन
कुशल विलास	कुशल सिंह के नाम पर आधारित
देवचरित	कृष्ण के जीवन से सम्बद्ध प्रबन्ध काव्य
प्रेमचंद्रिका	उद्योत सिंह को समर्पित
जाति विलास	विभिन्न जाति एवं प्रदेशों की स्त्रियों का वर्णन
रस विलास	राजा मोतीलाल को समर्पित रचना
शब्द या काव्य रसायन	शब्द शक्ति, रसादि का वर्णन
सुखसागर तरंग	अनेक ग्रन्थों से लिए हुए कवित्त-सवैया का संग्रह
देवमाया प्रपंच	संस्कृत नाटक प्रबोध चंद्रोदय का पद्यानुवाद
देवशतक	अध्यात्म सम्बन्धी ग्रन्थ
सुजान विनोद	
प्रेम तरंग	

- 'सुख सागर तरंग' का सम्पादन मिश्र बन्धुओं के पिता बालदत्त मिश्र ने सन् 1897 ई० में किया।
- डॉ० नगेन्द्र ने 'सुखसागर तरंग' को 'नायिका भेद का विश्वकोश' माना है।
- सर्वप्रथम शिवसिंह सेंगर ने देव की रचनाओं की संख्या 72 बतायी। कुछ विद्वानों ने 52 ग्रन्थों का उल्लेख किया है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल देव की कुछ अन्य कृतियाँ भी बतायी हैं जो निम्न है—(1) वृक्ष विलास, (2) पावस विलास, (3) ब्रह्मदर्शन पचीसी, (4) तत्त्व दर्शन पचीसी, (5) आत्मदर्शन पचीसी, (6) जगदर्शन पचीसी, (7) रसानंद लहरी, (8) प्रेम दीपिका, (9) नखशिख, (10) प्रेम दर्शन।
- देव कविता में 'अभिधा' को महत्त्व देते हुए 'काव्य रसायन' में लिखते हैं—
  "अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लच्छना लीन।
  अधम व्यंजना रसबिरस, उलटी कहत नवीन॥"
- डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'मध्यकालीन हिन्दी काव्यभाषा' पुस्तक में लिखा है, "देव की ध्वनि-संवेदनशीलता रीतिकालीन काव्यभाषा में अप्रतिम है।"
- रसलीन का मूल नाम गुलाम नबी था। ये मीर तु फैल अहमद के शिष्य थे।
- रसलीन की प्रमुख कृतियाँ निम्न हैं—

ग्रन्थ	वर्ष ई०	विषय निरूपण
अंग दर्पण	1737	अंगों का उपमा, उत्प्रेक्षा से चमत्कारपूर्ण वर्णन
रस प्रबोध	1741	1155 दोहे में रसों का वर्णन।

- भिखारीदास का रचनाकाल 1728–1750 ई० तक माना जाता है।
- भिखारीदास की प्रमुख रचनाएँ निम्नांकित हैं—

ग्रन्थ	वर्ष ई०	विषय निरूपण
नाम कोश	1738	कोश ग्रन्थ
रस सारांश	1742	रस के भेदोपभेदों का वर्णन
छंदार्णव पिंगल	1742	छंदों का विस्तृत वर्णन
काव्य निर्णय	1746	काव्य के भेदोपभेदों का वर्णन
शृंगार निर्णय	1750	नायक नायिका भेद वर्णन
विष्णु पुराण भाषा		विष्णु पुराण का दोहा-चौपाई शैली में अनुवाद
शतरंजशतिका		शतरंज खेलने के तौर तरीकों का वर्णन
अमर कोश		संस्कृत के अमरकोश का पद्यानुवाद

- जयपुर नरेश प्रताप सिंह ने पद्माकर भट्ट को 'कविराज शिरोमणि' की उपाधि दी।
- पद्माकर भट्ट की प्रमुख रचनाएँ निम्नांकित हैं—

ग्रन्थ	विषय निरूपण
हिम्मत बहादुर विरुदावली	211 छंदों में हिम्मत बहादुर का शौर्य वर्णन (प्रबन्ध काव्य)
पद्माभरण	अलंकारों का वर्णन
जगद् विनोद	छह प्रकाश एवं 731 छंदों में नव रसों का विवेचन
प्रबोध पचासा	भक्ति निरूपण
गंगालहरी	संस्कृत कवि जगन्नाथ कृत 'गंगा लहरी' का पद्यानुवाद
प्रताप सिंह विरुदावली	117 छन्दों में प्रताप सिंह का शौर्य वर्णन (प्रबन्ध काव्य)
कलिपच्चीसी	
राम रसायन	वाल्मीकि के 'रामायण' का छायानुवाद
अलीजाह प्रकाश	महाराज ग्वालियर के नाम लिखा गया है।

- पद्माकर भट्ट ने होली, फाग और त्यौहारों का वर्णन पूरी तल्लीनता के साथ किया है।
- रीतिकाल के प्रमुख अलंकार निरूपक ग्रन्थ और आचार्य निम्न हैं—

जसवंत सिंह	भाषा भूषण
मतिराम	ललित ललाम, अलंकार पंचाशिका
भूषण	शिवराजभूषण
श्रीधर कवि	भाषाभूषण
रसिक सुमति	अलंकार चन्द्रोदय
रघुनाथ	रसिक मोहन
गोविन्द कवि	कर्णाभरण
दूलह	कविकुल कण्ठाभरण
ऋषिनाथ	अलंकार मणि मंजरी
रामसिंह	अलंकार दर्पण
पद्माकर	पद्माभरण
गिरिधरदास	भारती भूषण

❑ रीतिकाल के विविध काव्यांग निरूपक ग्रन्थ निम्नांकित हैं—

रचनाकार	सर्वांग निरूपक ग्रन्थ
चिन्तामणि	कवि कुल कल्पतरु
कुलपति	रस रहस्य
देव	काव्य रसायन अथवा शब्द रसायन
सूरति मिश्र	काव्य सिद्धान्त
कुमार मणि	रसिक रसाल
श्रीपति	काव्य सरोज
सोमनाथ (शशिनाथ)	रसपीयूषनिधि
भिखारीदास	काव्य निर्णय
रूप साही	रूप विलास
जनराज	कविता रस विनोद
जगत सिंह	साहित्य सुधानिधि
रणवीर सिंह	काव्य रत्नाकर
प्रताप साहि	काव्य विलास
थान कवि	दलेल प्रकाश
रतन कवि	फतह प्रकाश

❑ रीतिकाल के छंद निरूपक ग्रन्थ निम्नांकित हैं—

रचनाकार	छंद निरूपक ग्रन्थ
चिन्तामणि	पिंगल
मुरलीधर 'भूषण'	छन्दो हृदय प्रकाश
मतिराम	छंदसार
सुखदेव मिश्र	वृत्त विचार
माखन	श्रीनाग पिंगल छंद विलास
जयकृष्ण भुजंग	पिंगल रूपदोष भाषा
भिखारीदास	छंदार्णव
नारायण दास	छंदसार
दशरथ	वृत्त विचार
नंद किशोर	पिंगल प्रकाश
चेतन	लघु पिंगल
राम सहाय	वृत्त तरंगिणी
हरिदेव	छंद पयोनिधि
अयोध्या प्रसाद वाजपेयी	छंदानंद पिंगल

❑ रीतिकाल के रस निरूपक कवि और ग्रन्थ निम्नांकित हैं—

रचनाकार	रस निरूपक ग्रन्थ
तोष निधि	सुधा निधि
मतिराम	रसराज

देव	भाव विलास, भवानी विलास, रस विलास
भिखारीदास	रस सारांश, शृंगार निर्णय
रसलीन	रस प्रबोध
पद्माकर	जगत विनोद
बेनीप्रवीन	नवरस तरंग
प्रताप साहि	व्यंग्यार्थ कौमुदी
सुखदेव मिश्र	रसरत्नाकर, रसार्णव, शृंगार लता
मंडन	रस रत्नावली
ग्वाल	रस रंग
श्रीपति	रस सागर
याकूब खाँ	रसभूषण
रघुनाथ	काव्यकलाधर
उदयनाथ कवीन्द्र	रस चंद्रोदय
शंभुनाथ	रस कल्लोल, रस तरंगिणी
समनेस	रसिक विलास
शिवनाथ	रस सृष्टि
उजियारे (दौलतराम)	रस चन्द्रिका, जुगल प्रकाश
राम सिंह	रस निवास
सेवादास	रस दर्पण
बेनी बंदीजन	रस विलास
करन कवि	रस कल्लोल
नवीन	रंग तरंग
चन्द्रशेखर	रसिक विनोद
सोमनाथ	शृंगार विलास
कृष्णभट्ट देवऋषि	शृंगार रस माधुरी
यशवंत सिंह	शृंगार शिरोमणि
लालकवि (गोरे लाल)	विष्णु विलास

❑ हिन्दी के प्रमुख रीतिबद्ध कवि और उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं—

रचनाकार	प्रमुख रचनाएँ
चिन्तामणि	(1) रस विलास, (2) छन्द विचार पिंगल, (3) शृंगार मंजरी, (4) कविकुलकल्पतरु, (5) कृष्णचरित, (6) काव्य विवेक, (7) काव्य प्रकाश, (8) कवित्त विचार, (9) रामायण।
कुलपति मिश्र	(1) रस रहस्य, (2) संग्राम सार, (3) युक्ति तरंगिणी, (4) नख शिख, (5) द्रोण पर्व।
कुमार मणि	(1) रसिक रंजन, (2) रसिक रसाल
देव	(1) भावविलास, (2) भवानी विलास, (3) काव्य रसायन,

	(4) जाति विलास, (5) देवमाया प्रपंच, (6) रसविलास, (7) राम रत्नाकर, (8) सुख सागर तरंग।
सोमनाथ	(1) रस पीयूष निधि, (2) शृंगार विलास, (3) कृष्ण लीलावती, (4) पंचाध्यायी, (5) सुजान विलास, (6) माधव विनोद।
भिखारीदास	(1) रस सारांश, (2) काव्य निर्णय, (3) शृंगार निर्णय, (4) छंदार्णव पिंगल, (5) शब्दनाम कोश, (6) विष्णु पुराण भाषा, (7) शतरंजशतिका।
रसिक गोविन्द	(1) रसिक गोविन्दानन्दघन, (2) पिंगल, (3) रसिक गोविन्द, (4) युगल रस माधुरी, (5) समय प्रबन्ध, (6) लछिमन चंद्रिका, (7) अष्टदेश भाषा।
प्रताप साहि	(1) व्यंग्यार्थ कौमुदी (1825 ई०), (2) काव्य विलास (1809 ई०), (3) जयसिंह प्रकाश, (4) शृंगार मंजरी, (5) शृंगार शिरोमणि, (6) अलंकार चिन्तामणि, (7) काव्य विनोद, (8) जुगल नखशिख।
अमीरदास	(1) सभा मंडन (1827 ई०), (2) वृत्त चन्द्रोदय (1830 ई०), (3) व्रजविलास सतसई (1832 ई०), (4) श्रीकृष्ण साहित्य सिन्धु (1833 ई०), (5) शेर सिंह प्रकाश (1840 ई०), (6) फाग पचीसी, (7) ग्रीष्म विलास, (8) भागवत रत्नाकर, (9) दूषण उल्लास, (10) अमीर प्रकाश, (11) वैद्य कल्पतरु, (12) अश्व-संहिता प्रकाश।
ग्वाल	(1) यमुना लहरी, (2) भक्त भावन, (3) रसिकानन्द, (4) रसरंग, (5) कृष्ण जू को नखशिख, (6) दूषण दर्पण, (7) राधा माधव मिलन, (8) राधाष्टक, (9) कवि हृदय विनोद, (10) कवि दर्पण, (11) नेह निर्वाह, (12) बंसी बीसा, (13) कुब्जाष्टक, (14) षड्ऋतु वर्णन, (15) अलंकार भ्रम भंजन, (16) रसरूप, (17) दृग शतक।
तोष निधि	(1) सुधा निधि, (2) नख शिख, (3) विनय शतक।
रसलीन	(1) रस प्रबोध (1741 ई०), (2) अंग दर्पण (1737 ई०)।
पद्माकर भट्ट	(1) हिम्मत बहादुर विरुदावली, (2) पद्माभरण, (3) जगत विनोद, (4) प्रबोध पचासा, (5) गंगालहरी, (6) प्रताप सिंह विरुदावली, (7) कलि पच्चीसी।
बेनी 'प्रवीन'	(1) शृंगार भूषण, (2) नवरस तरंग (1817 ई०), (3) नानाराव प्रकाश।
सुखदेव मिश्र	(1) वृत्त विचार, (2) छंद विचार, (3) फाजिल अली प्रकाश, (4) अध्यात्म प्रकाश, (5) रसार्णव, (6) रस रत्नाकर, (7) शृंगार लता।

याकूब खाँ	(1) रस भूषण (1812 ई०)
उजियारे (दौलतराम)	(1) रस चन्द्रिका, (2) जुगल रस प्रकाश।
राम सिंह	(1) जुगल विलास, (2) रस शिरोमणि, (3) अलंकार दर्पण, (4) रस निवास।
चन्द्रशेखर वाजपेयी	(1) रसिक विनोद, (2) नख शिख, (3) वृन्दावन शतक (4) गुरु पंचाशिका, (5) ताजक, (6) माधवी वसंत (7) हरिमानस विलास, (8) हम्मीर हठ (प्रबन्ध काव्य)।
मतिराम	(1) फूलमंजरी, (2) लक्षण शृंगार, (3) साहित्य सार, (4) रसराज, (5) ललित ललाम, (6) सतसई, (7) अलंकार पंचाशिका, (8) वृत्त कौमुदी।
कृष्णभट्ट देव ऋषि	(1) शृंगार रसमाधुरी (1712 ई०), (2) अलंकार कलानिधि।
कालिदास त्रिवेदी	(1) वारवधूविनोद, (2) राधामाधव बुध मिलन विनोद, (3) कालिदास हजारा।
जसवंत सिंह	(1) भाषा भूषण, (2) अपरोक्ष सिद्धान्त, (3) अनुभव प्रकाश, (4) आनन्द विलास, (5) सिद्धान्त बोध, (6) सिद्धान्त सार।
भूषण	(1) शिवराज भूषण (1673), (2) शिवा बावनी, (3) छत्रसाल दशक।
गोप	(1) रामालंकार, (2) रामचन्द्र भूषण, (3) राम-चन्द्राभरण।
रसिक सुमित	(1) अलंकार-चन्द्रोदय (1729 ई०)।
रघुनाथ वंदीजन	(1) रसिक मोहन (1739 ई०) (2) काव्य कलाधर (1745 ई०) और (3) जगत मोहन (1750 ई०)।
दूलह	(1) कविकुलकंठाभरण।
रसरूप	(1) तुलसीभूषण (1754 ई०)।
सेवादास	(1) नखशिख, (2) रसदर्पण, (3) गीता माहात्म्य, (4) अलबेले लाल जू को नख शिख, (5) राधा सुधा शतक, (6) रघुनाथ अलंकार।
मण्डन	(1) रस रत्नावली, (2) रस विलास, (3) नखशिख, (4) काव्यरत्न, (5) नैन पचासा, (6) जनक पचीसी।
गिरिधरदास	(1) भारती भूषण (1833 ई०)।
भूषण 'मुरलीधर'	(1) छन्दो हृदय प्रकाश (1666 ई०), (2) अलंकार प्रकाश (1648 ई०)।
रामसहाय	(1) वृत्त तरंगिणी (1816 ई०), (2) अलंकार प्रकाश (1648 ई०), (3) वाणी भूषण।
माखन	(1) श्रीनाग पिंगल अथवा छंदविलास (1702 ई०)।
दशरथ	(1) वृत्त विचार (1799 ई०)।

सूरति मिश्र	(1) अलंकार माला, (2) रसरत्न माला, (3) रस सरस, (4) रसग्राहक चंद्रिका, (5) नखशिख, (6) काव्य-सिद्धान्त, (7) रस रत्नाकर, (8) भक्ति विनोद, (9) शृंगार सागर।
उदयनाथ कवीन्द्र	(1) रसचन्द्रोदय, (2) विनोद चन्द्रिका, (3) जोगलीला।

- भिखारीदास ने सर्वप्रथम हिन्दी काव्य-परम्परा, भाषा, छंद, तुक आदि पर विचार किया।
- माखन ने हिन्दी में सर्वप्रथम कुम्भक, हरिमालिका, मदनमोहन, सुरस, तरलगति, सदागति, सुबल, प्रवाह और गन्धार नामक मात्रिक छन्दों का निरूपण किया।
- हिन्दी में रीति का अर्थ 'काव्यरचना पद्धति' है किन्तु कहीं-कहीं इसे 'पंथ' से भी अभिहित किया गया है। कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं—

केशवदास— समुझैंवाला बालकन वर्णन पंथ अगाध।
चिन्तामणि— रीति सु भाषा कवित की बरनत बुध अनुसार।
मतिराम— सो विश्रब्ध नवोढ़ यो बरनत कवि रसरीति।
भूषण— सुकविन हूँ कछु कृपा, समुझि कविन को पंथ।
देव— अपनी अपनी रीति के काव्य और कवि रीति।
सुरति मिश्र— वरनन मनरंजन जहाँ रीति अलौकिक होइ।
निपुन कर्म कवि कौ जु तिहि काव्य कहत सब कोई॥
सोमनाथ— छंद रीति समुझे नहीं विन पिंगल के ज्ञान।
भिखारीदास— (क) काव्य की रीति सिखी सुकवीन्ह सों॥
(ख) अरु कछु मुक्तक रीति लखि, कहत एक उल्लास।
(ग) बंदउ सुकविन के चरण अरु सुकविन के ग्रन्थ
जाते कछु हौं हूँ लह्यौ, कविताई को पंथ॥
दूलह— थोरे क्रम क्रम ते कहौं अलंकार की रीति।
पद्माकर— ताही को रति कहत हैं, रस ग्रंथन की रीति॥
वेनी प्रवीन— या रस अरु नव तरंग में, नव रस रीतहिं देखि।
अति प्रसन्न है ललनजो, कीन्हों प्रीति विसेखि॥
प्रताप साहि— कवित रीति कछु कहत है व्यंग्य अर्थ चित लाये॥

- डॉ० वच्चन सिंह ने लिखा है कि रीतिकालीन कवि 'कविता के सौदागर' थे। देव ने सुकेवि को कविता का सौदागर कहा है।
- रीति काव्य को 'यौवन की रमणीयता का काव्य' भी कहा जाता है।
- नलिन विलोचन शर्मा ने रीतिकालीन काव्य की आलोचना-पद्धति को ''भारतीय मनीषा का ह्रासकालीन वर्गीकरण प्रेम'' कहा है।

रीतिसिद्ध कवि

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने बिहारीलाल को रसवादी माना है जबकि डॉ० नगेन्द्र ने ध्वनिवादी स्वीकार किया है।
- श्रीराधा चरण गोस्वामी ने बिहारी को 'पीयूषवर्षी मेघ' की उपमा दी है।

- बिहारीलाल का संक्षिप्त जीवन वृत्त निम्नांकित है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्मस्थान	पिता	गुरु	सम्प्रदाय	आश्रयदाता
1595-1663	गोविन्दपुर	केशवदास	नरहरिदास	निम्बार्क	महाराज जय सिंह

- बिहारीलाल की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' दोहा छंद में रचित है। इसकी भाषा परिनिष्ठित साहित्यिक ब्रजभाषा है।
- बिहारीलाल की 'सतसई' की प्रशंसा में किसी कवि ने निम्नलिखित पंक्ति लिखी है—

सत सैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, बेधैं सकल सरीर॥

- डॉ० जॉर्ज ग्रियर्सन के अनुसार, ''यूरोप में 'बिहारी सतसई' के समकक्ष कोई रचना नहीं है।''
- 'बिहारी सतसई' पर हिन्दी में 50 से अधिक टीका प्राप्त है। बिहारीलाल के पुत्र कृष्णलाल कवि ने बिहारी सतसई की टीका सर्वप्रथम सवैया छंद में ब्रजभाषा में लिखी।
- बिहारी सतसई के अन्य टीकाकार निम्नांकित हैं—

टीकाकार	टीका	विशेषता
कृष्णलाल कवि	कृष्णलाल की टीका	प्रत्येक दोहे का सवैया में विवेचन।
सुरति मिश्र	अमर चंद्रिका	टीका का प्रणयन दोहों में हुआ है।
लल्लू लाल	लालचंद्रिका	
प्रभुदयाल पाण्डेय	प्रभुदयाल पांडे की टीका (1896 ई०)	आधुनिक खड़ी बोली में लिखी गई है।
अम्बिकादत्त व्यास	विहारी विहार	दोहे के भावों का रोला छंद में पल्लवन।
पद्मसिंह शर्मा	संजीवनी भाष्य	तुलनात्मक पद्धति में अर्थ निरूपण है।
आनन्दीलाल शर्मा	फिरंगे सतसई	फारसी भाषा में लिखी गई है।
जगन्नाथदास रत्नाकर	बिहारी रत्नाकर (1921 ई०)	हिन्दी खड़ी-बोली में सर्वश्रेष्ठ टीका।

- बिहारी सतसई का अन्य भाषा में किया गया अनुवाद निम्नांकित है—

अनुवादक	अनुदित नाम	भाषा
पंडित परमानंद	शृंगार सप्तशती	संस्कृत
मुंशी देवी प्रसाद 'प्रीतम'	गुलदस्त बिहारी	उर्दू

- विहारीलाल के समस्त दोहों की संख्या 719 है। किन्तु जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' ने इनके दोहों की संख्या 713 माना है।
- 'बिहारी सतसई' पर सर्वाधिक प्रभाव निम्न कवियों का पड़ा है—

कवि	रचना	भाषा
अमरुक	अमरुक शतक	संस्कृत

हाल (शालिवाहन)	गाथा-सप्तशती	प्राकृत
गोवर्धनाचार्य	आर्या-सप्तशती	संस्कृत

□ संस्कृत के आचार्य बलदेव उपाध्याय ने लिखा है, "हाल 'गाथा' के, गोवर्धन 'आर्या' के तथा बिहारी 'दोहा' के बादशाह हैं।"

□ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने बिहारी के सन्दर्भ में निम्न बातें लिखी हैं—

(1) शृंगार रस के ग्रन्थों में जितनी ख्याति और जितना मान 'बिहारी सतसई' का हुआ उतना और किसी का नहीं। इसका एक-एक दोहा हिन्दी साहित्य में एक-एक रत्न माना जाता है।

(2) यदि प्रबन्ध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है।

(3) जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति के साथ भाषा की समाहार शक्ति जितनी अधिक होगी उतनी ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा। यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से वर्तमान थी।

(4) बिहारी की रस व्यंजना का पूर्ण वैभव उनके अनुभावों के विधान में दिखाई पड़ता है।

(5) बिहारी की कृति का मूल्य जो बहुत अधिक आँका गया है उसे अधिकतर रचना की बारीकी या काव्यांगों के सूक्ष्म विन्यास की निपुणता की ओर ही मुख्यत: दृष्टि रखने वाले पारखियों के पक्ष से समझना चाहिए—उनके पक्षों से समझना चाहिए जो किसी हाथी-दाँत के टुकड़े पर महीन बेलबूटे देख घंटों वाह-वाह किया करते हैं। पर जो हृदय के अन्तस्तल पर मार्मिक प्रभाव चाहते हैं, किसी भाव की स्वच्छ निर्मल धारा में कुछ देर अपना मन मग्न रखना चाहते हैं, उनका सन्तोष बिहारी से नहीं हो सकता।

(6) भावों का बहुत उत्कृष्ट और उदात्त स्वरूप बिहारी में नहीं मिलता। कविता उनकी शृंगारी है, पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुँचती नीचे ही रह जाती है।

□ वृन्द का पूरा नाम वृन्दावन था। इनका जन्म मेडवे में हुआ तथा इनके पिता का नाम श्री रूप था।

□ वृन्द के आश्रयदाता औरंगजेब तथा किशनगढ़ के महाराज राजसिंह थे।

□ वृन्द की प्रमुख रचनाएँ काल क्रमानुसार निम्नांकित हैं—

रचना	वर्ष (ई०)	विषयवस्तु
बारहमासा	1668	बारहों महीनों का वर्णन।
भाव पंचाशिका	1686	शृंगार के विभिन्न भावों का वर्णन।
नयन पचीसी	1686	नेत्रों द्वारा प्रकट विभिन्न भावों का वर्णन।
पवन पचीसी	1691	षड्ऋतु का छप्पय छंद में वर्णन।
शृंगार शिक्षा	1691	आभूषण एवं शृंगार के साथ नायिकाओं का वर्णन।
यमक सतसई	1706	715 छंदों में यमक अलंकार का वर्णन।

□ हिन्दी के अन्य प्रमुख रीतिकालीन कवियों की रचनाएँ निम्न हैं—

कवि	रचनाएँ
रसनिधि (पृथ्वी सिंह)	(1) रतनहजारा, (2) विष्णुपद कीर्तन, (3) कवित्त, (4) बारहमासा, (5) रसनिधि सागर, (6) हिंडोला।
नृप शंभुनाथ सिंह सोलंकी	(1) नायिका भेद, (2) नखशिख, (3) सात शतक।
नेवाज	(1) शकुन्तला नाटक।
कृष्ण कवि लाल	(1) बिहारी सतसई की टीका, (2) विदुर प्रजागर।
हठीजी	(1) श्री राधा सुधाशतक (103 छंद में)।
विक्रमादित्य	(1) विक्रम सतसई, (2) ब्रजलीला।
रामसहाय 'भगत'	(1) राम सतसई, (2) वाणी भूषण, (3) वृत्त तरंगिणी, (4) ककहरा।
बेनी वाजपेयी	(1) फुटकर छंद
पजनेस	(1) पजनेस प्रकाश, (2) नखशिख, (3) मधुर प्रिया।

□ राम सहाय 'भगत' का 'ककहरा' जायसी की 'अखरावट' की शैली में रचित है।

रीति मुक्त कवि

□ आलम जाति के ब्राह्मण थे किन्तु शेख नाम की रंगरेजिन से विवाह कर मुसलमान हो गए।

□ आलम औरंगजेब के दूसरे बेटे बहादुरशाह मुअज्जम के आश्रय में रहते थे।

□ आलम का कविता काल सन् 1683 से 1703 तक माना जाता है। इनकी प्रमुख कृतियाँ निम्न हैं—

(1) आलमकेलि, (2) माधवानलकामकंदला, (3) सुदामा चरित, (4) स्याम सेनही।

□ आलम के विषय में आचार्य शुक्ल ने लिखा है—

(1) ये प्रेमोन्मत्त कवि थे और अपनी तरंग के अनुसार रचना करते थे। इसी से इनकी रचनाओं में हृदय तत्व की प्रधानता है। 'प्रेम की पीर' या 'इश्क का दर्द' इनके एक-एक वाक्य में भरा पाया जाता है।

(2) प्रेम की तन्मयता की दृष्टि से आलम की गणना 'रसखान' और 'घनानन्द' की कोटि में ही होनी चाहिए।

□ आचार्य रामचन्द्र ने घनानंद के विषय में लिखा है, "ये साक्षात रसमूर्ति और ब्रजभाषा काव्य के प्रधान स्तम्भों में हैं।"

□ घनानंद का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्न है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्मस्थान	मृत्यु स्थान	सम्प्रदाय	प्रेयसी	आश्रयदाता
1689-1739	बुलंद शहर	वृन्दावन	निम्बार्क	गणिकासुजान	मुहम्मदशाह रंगीले

□ घनानंद के सन्दर्भ में ब्रजनाथ ने दो सवैया लिखा है, जो निम्न है—

(1) नेही महाब्रज भाषा प्रवीन औ, सुंदरताहु के भेद को जानै।
जो वियोग की रीति में कोविद, भावना भेद स्वरूप को जानै॥

चाह के रंग में भीज्यो हियो, बिछुरे मिले प्रीतम सांति न माने।
भाषा प्रवीन सुछंद सदा रहै, सो घन जू के कवित्त बखानौ॥

(2) प्रेम सदा अति ऊँचै लहैं, सुकहैं इहि भाँति की बात छकी।
सुनि कै सब के मन लालच दौरें पै बौरे लखें सब बुद्धि चकी॥
जग की कबिताई के धोखें रहै ह्याँ प्रबीनन की मति जाति जकी।
समुझै कविता घनआँनन्द की हिय-आँखिन नेह की पीर तकी॥

- घनानन्द की प्रमुख काव्य कृतियाँ निम्नांकित हैं—
(1) सुजान सार, (2) इश्कलता, (3) विरहलीला, (4) वियोगबेलि, (5) कोकसार, (6) कृपाकंद, (7) रस केलि वल्ली, (8) यमुनायश।
- इनकी 'विरहलीला' ब्रजभाषा में है किन्तु फारसी के छंद में है।
- घनानन्द के संदर्भ में आचार्य शुक्ल की निम्न पंक्तियाँ महत्वपूर्ण हैं—
(1) इनकी सी विशुद्ध, सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई समर्थ नहीं हुआ। विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता और माधुर्य भी अपूर्व है।
(2) प्रेम की पीर ही को लेकर इनकी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ। प्रेममार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ।
(3) प्रेम की अनिर्वचनीयता का आभास घनानंद ने विरोधाभासों के द्वारा दिया है।
(4) घनानंदजी उन विरले कवियों में हैं जो भाषा की व्यंजकता बढ़ाते हैं। अपनी भावनाओं के अनूठे रूपरंग की व्यंजना के लिए भाषा का ऐसा बेधड़क प्रयोग करने वाला हिन्दी के पुराने कवियों में दूसरा नहीं हुआ। भाषा के लक्षण और व्यंजक बल की सीमा कहाँ तक है, इसकी पूरी परख इन्हीं को थी।
(5) लाक्षणिक मूर्तिमत्ता और प्रयोगवैचित्र्य की जो छटा इनमें दिखायी पड़ी, खेद है कि वह फिर पौने दो सौ वर्ष पीछे जाकर आधुनिक काल के उत्तरार्द्ध में, अर्थात् वर्तमान काल की नूतन काव्य धारा में ही, 'अभिव्यंजनावाद' के प्रभाव से कुछ विदेशी रंग लिए प्रकट हुई।
- रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है, "रीतिकाल की बौद्धिक विरहानुभूति, निष्प्राणता और कुंठा के वातावरण में घनानंद की पीड़ा की टीस सहसा ही हृदय को चीर देती है और मनसहज ही मान लेता है कि दूसरों के लिए किराये पर आँसू बहाने वालों के बीच यह एक ऐसा कवि है जो सचमुच अपनी पीड़ा में ही रो रहा है।"
- बोधा का वास्तविक नाम बुद्धिसेन था। पन्ना नरेश खेत सिंह ने बुद्धिसेन का उपनाम बोधा किया था।
- पन्ना के दरबार की सुभान (सुबहान) नाम की एक गणिका से बोधा प्रेम करते थे।
- बोधा की प्रमुख रचनाएँ हैं—(1) विरह वारीश, (2) इश्कनामा।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तीन ठाकुर की चर्चा की है—(1) असली वाले प्राचीन ठाकुर, (2) असनी वाले दूसरे ठाकुर और (3) ठाकुर बुन्देल खंडी।
- रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा से ठाकुर बुन्देलखण्डी का सम्बन्ध है। इनका मूल नाम लाला ठाकुरदास था।

- ठाकुर के आश्रयदाता जैतपुर नरेश राजा केसरी सिंह तथा उनके पुत्र राजा पारीछत थे।
- ठाकुर की प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं—(1) ठाकुर ठसक, (2) ठाकुर शतक।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ठाकुर के सम्बन्ध में लिखा है—
(1) ठाकुर बहुत ही सच्ची उमंग के कवि थे। इनमें कृत्रिमता का लेश नहीं है। न तो कहीं व्यर्थ का शब्दाडम्बर है, न कल्पना की झूठी उड़ान और न अनुभूति के विरुद्ध भावों का उत्कर्ष।
(2) ठाकुर प्रधानतः प्रेम निरूपक होने पर भी लोक व्यवहार के अनेकांगदर्शी कवि थे।
- द्विजदेव (महाराज मानसिंह) अयोध्या के महाराज थे।
- द्विजदेव प्रमुख रचनाएँ हैं—(1) शृंगारलतिका, (2) शृंगार बत्तीसी।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है—
(1) ब्रजभाषा के शृंगारी कवियों की परम्परा इन्हें अन्तिम प्रसिद्ध कवि समझना चाहिए। जिस प्रकार लक्षण ग्रन्थ लिखने वाले कवियों में पद्माकर अन्तिम प्रसिद्ध कवि हैं उसी प्रकार समूचा शृंगार परम्परा में ये इनकी सी सरस और भावमयी फुटकल शृंगारी कविता फिर दुर्लभ हो गई।
(2) ऋतु वर्णनों में इनके हृदय का उल्लास उमड़ पड़ता है।

रीतिकालीन कवियों की महवत्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

रीतिबद्ध कवि

(क) चिन्तामणि

(1) रीति सुभाषा कवित्त की बरनत बुध अनुसार। (कविकुलकल्पतरु)
(2) येई उधारत हैं तिन्हें जे, परे मोह महोदधि के जल फेरे।
(3) इक आजु मैं कुंदन बेलि लखी, मनिमंदिर की रुचिवृंद भरैं।
अरविंद के पल्लव इंदु तहाँ, अरविन्दन ते मकरंद झरैं॥
(4) आँखिन मुंदिबे के मिस आनि, अचानक पीठि उरोज लगावै।
कैहूँ कहूँ मुसकाय चितै, अगराय अनूपम अंग दिखावै॥
(5) अवलोकनि में पलकैं न लगें, पलकौं अवलोकि बिना ललकै।
पति के परिपूरन प्रेम पगी मन और सुभाव लगै न लकै॥
तिय की बिहं सौही विलोकनि में, 'मनि' आनंद आँखिन यो झलकै।
रसवंत कवित्तन को रस ज्यों अखसन के ऊपर है छलकै॥
(6) सगुन अलंकारन सहित दोष रहित जो होई। अर्थ शब्द ताको कवित्त कहत विबुध सब कोई।

(ख) मतिराम

(1) नृपति नैन कमलनि वृथा, चितवत बासर जाहि।
हृदय कमल में हरि लै, कमलमुखी कमलाहि॥ (सतसई)
(2) छोड़ि आपनो भौन तुम, भौन कौन के जात।
(3) ते धनि ले ब्रजराज लखें गृहकाज करें अरु लाज संभारें।

(4) कोऊ कितेक उपाय करो, कहुँ होत हैं आपुने पीव पराये।
(5) कुंदन को रंग फीकौ लगै झलकै सब अंगन चारु गुराई।
आँखनि में अलसानि चितौनि में, मंजु बिलासन की सरसाई॥
को बिनु मोल बिकात नहीं मतिराम लहै मुसकानि मिठाई।
ज्यों ज्यों निहारिए नेरे है नैननि त्यों त्यों खरी निकरै सी निकाई॥
(6) क्यों इन आंखिन सो निहसंक, है मोहन को तन पानिप पीजै?
नेकु निहारे कलंक लगै यहि गाँव बसे कहु कैसे कै जीजै॥
(7) केलि कै राति अघाने नहीं दिन ही में लला पुनि घात लगाई।
(8) दोऊ अनंद सो आँगन माझ विराजै असाढ़ की साँझ सुहाई।
आँखिन तें गिरे आँसुन की बूँद, सुहास गयो उड़ि हंस की नाई॥

(ग) देव

(1) अपनी-अपनी रीति के काव्य और कवि रीति।
(2) भाषा प्राकृत संस्कृत देखि महाकवि पंथ। (शब्द रसायन)
(3) अभिधा उत्तम काव्य है; मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस बिरस, उलटी कहत नवीन॥
(4) पर रस चाहै परकीया, तजै आपु गुन गोत।
(5) प्रेमहीन प्रिय वेश्या है शृंगाराभास।
(6) दधि, धृत, मधु, पायस तजि वायसु चाम चबात।
(7) साँसन ही में समीर गयो अरु आँसुन ही सब नीर गयो ढरि।
(8) बेगि ही बूड़ि गई पंखियाँ अखियाँ मधु की मखिया भई मेरी।
(9) साँवरै लाल को रूप में नैनन को कजरा करि राख्यो॥
(10) प्रेम तो कहत ठाकुर न ऐठों सुन, बैठो, गड़ि, गहिरे तौ पैठो प्रेम सर में।
(11) साथ में रखियों नाथ उन्हें हम हाथ-नें चाहत चार चुरीये।
(12) रावरो रूप भरयो अँखियान भरयो सु भरयो उनरयो सु दरयो परै।
(13) वंसीवट तट नटनागर नटतु मों।
(14) है उपजे रज बीजहि ते, बिनसे तू सबै छिति छार के छाँड़े।
एक से देखु कछू न विसेखु ज्यों एकै उन्हार कुन्हार के भाँड़े॥
तापर ऊँच औ नीच विचारि वृथा बकियाद बढावत चाँड़े।
वेदन मूँद कियो इन दुंदुकि सूद अपावन, पावन पाड़े॥
(15) पारावार पूरन अपार परब्रह्म रासि जसुदा के कोरै एक बार ही कुरै परी।
(16) बड़े-बड़े नैनन सों आँसू-भरि भरि ढरि।
गोरो गोरो मुख आज ओरो सो विलानो जात॥

(घ) भूषण

(1) सुकविन हूं की कछु कृपा समुझि कविन को पंथ। (शिवराज भूषण)
(2) शिवा को बखानों कि बखानौ छत्रशाल को।
(3) इंद्र जिमि जंभ पर बाड़व सुअंभ पर
त्यों म्लेच्छ बंस पर सेर सिवराज है।

(4) दारा की दौर यह रार नहीं खुजबे की।
(5) सिवा जो न होत तो सुनत हो सबकी।
(6) ऊँचे घोर मंदर के अन्दर रहनबासे, ऊँचे घोर मंदर रहाती हैं।
कंदमूल भोग करें, कंदमूल भोग करें, तीन बेर खातीं सो तीन बेर खाती हैं।
(7) पच्छी पर छीने ऐसे परे परछीने बीर। तेरी बरछीने बर छीने हैं खलन के।

(ङ) भिखारीदास

(1) काव्य की रीति सिखी सुकबीन सों देखी सुनी बहुलोक की बाते।
(2) ब्रजभाषा हेतु ब्रजवास ही न अनुमानौ,
ऐसे ऐसे कविन की वानी हूँ सों जानिए।
(3) आगे के कवि रीझहै, तो कविताई न तो
राधा कन्हाई सुमिरन कौ बहानौ है।
(4) ब्रजभाषा भाषा रुचिर, कहै सुमति सब कोई।
मिल संस्कृत पारस्यौ, पै अति प्रवाट जु होई॥
ब्रज, मागधी मिलै अमर, नाग यवन भाखनि।
सहज पारसी हूँ मिलै, षट् विधि कहत बखानि॥
(5) जातें कछु हौं हूँ लह्यों कविताई को पंथ।
(6) श्रीमानन के भौन में भोग्य भामिनी और।
तिनहूँ को सुकियाह में गनैं सुकवि सिरमौर॥
(7) आँखियाँ हमारी दई मारी सुधि बुधि हारी।
(8) भाषा-बरनन में प्रथम, तुक चाहिए विसेषि।
उत्तम मध्यम अधम से, तीन भाँति को लेखि॥
(9) अधर मधुरता कठिनता कुच तिक्षनता त्यौर।
रस कवित्त परिपक्वता जाने रसिक न और॥
(10) एक लहै तप पुंजनि के फल ज्यों तुलसी अरु सूर गोसाईं।
एक लहै बहुसंपति के सब भूषन ज्यों बर बीर बड़ाई॥
एकनि को जस ही सो प्रयोजन है रसखानि रहीम की नाईं।
दास कवित्तन की चरचा बुधिवतंनी को सुख दैव सब ठाईं॥
(11) अलक पै अलिवृंद भाल पै अधर चंद। भ्रूपै धनु नगननि पै वारों कंजदल में॥
(12) अरविन्द प्रफुल्लित देखि कै भौर अचानक जाई अरैं पै अरैं।

(च) पद्माकर

(1) आखर लगाय लेत लाखन को सामा हौं।
(2) फागु की भीर, अभीरिन में गहि गोविन्द लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पद्माकर, ऊपर नाई अबीर की झोरी॥
छीनि पितंबर कम्मर ते सु बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नैन नचाय कही मुसकाय, लला फिर आइयो खेलन होरी॥
(3) गवरे रंग रँगी आँखियान में ए बलबीर अबीर न मैलो।
(4) ऊधम ऐसो मचो ब्रज मैं सबे रंग तरंग उमंगनि सींचैं।

(5) बीर अबीर अभीरन को दु:ख भाषैं न वनै न वनै विन भापै।

(6) मीनागढ बंबई, समुंद मंद राज वंग।
बंदर को बंद करि बंदर ब सावैगो॥ **(दौलतराम सिन्धिया की मृत्यु पर)**

(7) औरे रस औरै रीति औरे राग और रंग औरे तन औरे मन औरे वनह्वै गये॥

(8) साजि चतुरंग चमू जंग जीतिवे के हेतु,
हिम्मत वहादुर चढत फर फैल पै।

(9) एक पग भीतर और एक देहरी पै धरे,
एक कर कंज, एक कर है किवार पर॥

(10) एक संग धाये नंदलाल और गुलाल दोऊ, दृगनि गये जुमरि आनन्द गढै नहीं।

(छ) रसलीन

(1) अमिय हलाहल मद भरे, सेत स्याम रतनार।
जियत, मरत, झुकि झुकि परत, जेहि चितवत एक बार॥

(2) व्रजबानी सीखन रची यह रसलीन रसाल।
गुन सुवरन नग अरथ लहि, हिय धरियो ज्यौं माल॥

(3) फूले कुंजर अलि भ्रमत, सीतल चलत समीर।
भान जात काको न मन जात भानुजा तीर॥

(4) दृगन जोरि मुसकाय अरु, भौहें दोउ नचाय।
ओठनि आँठि वनाइ यह, प्राण उमेठत जाइ॥

(5) तिय सैसव-जोवन मिले, भेद न जान्यो जात।
प्रात समय निसि द्योसे के दुवौ भाव दरसात॥

(6) कत दिखाइ कामिनी दई, दामिनी को यह बाँह।
थरथराति सो तन फिरै फरफरात घन माँह॥

(7) चख चलि स्रवन मिल्यो चहत, कच वढि छुवन छवानि।
कटि निज दरब धर्‌यो चहत, वक्षस्थल में आनि॥

रीतिसिद्ध कवि

(क) विहारीलाल

(1) नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सो बध्यो, आगे कौन हवाल॥

(2) तंत्रीनाद कवित्त रस, सरस राग रतिरंग।
अनवूड़े वूड़े तिरे, जे वूड़े सब अंग॥

(3) अंग-अंग नग जगमगी, दीप शिखा सी देह।
दीया वुझाय हूँ रह्यो, वड़े उजेरो गेह॥

(4) रस सिंगार मंजन किये, कंजन भंजन दैन।
अंजन रंजन हूँ विना, खंजन गंजन नैन॥

(5) अनियारे, दीरघ दृगनि किती न तरुनि समान।
वह चितवनि औरै कछु, जिहि बस होत सुजान॥

(6) बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौहनि हँसे, दैन कहै नटि जाय॥

(7) नासा मोरि नचाय दृग, करी कका की सौंह।
काँटे सी कसकै हियै, गड़ी कँटीली भौंह॥

(8) इति आवत चलि जातउत, चली छ सातक हाथ।
चढी हिंडोरे सी रहै, लगी उसासन हाथ॥

(9) आड़े दै आले वसन, जाड़े हूँ कि राति।
साहस कै कै नेह वस, सखी सवै ढिंग जाति॥

(10) दृग उरझत टूटत कुटुम जुरत चतुर चित प्रीति।
परति गाँठ दुरजन हिए, दई नई यह रीति॥

(11) सघन कुंज छाया सुखद, सीतल मंद समीर।
मन ह्वै जात अजौ वहे, वा यमुना के तीर॥

(12) कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वह खाए बौराए नर, यह पाए बौराय॥

(13) लरिका लैवे के मिसुन, लंगरु मोग ढिग आइ।
गयो अचानक आँगुरी, छाती छैल छुवाई॥

(14) कहत नटत रीझत खीझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैननि ही सों बात॥

(15) मेरी भव बाधा हरौ राधा नागर सोइ।
जा तन को छाई परै स्याम हरित दुति होइ॥

(16) अपने अंग को जानिकै, जोवन नृपति प्रवीन।
स्तन मन नैन नितंव को वड़ो इजाफा कीन॥

(17) कागद पर लिखत न वनत, कहत संदेश लजात।
कहिहै सब तेरो हियो, मेरे हिय की बात॥

(18) या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहि कोय।
ज्यौं ज्यौं बूड़े स्याम रंग त्यौं त्यौं उज्ज्वल होय॥

(19) जौ वाके तन की दशा देख्यो चाहत आप।
तौ बलि नैक विलोकियत चलि औचक चुपचाप॥

(20) सीस मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल।
इहिं वानिक मो मन वसौ सदा विहारी लाल॥

(21) समै समै सुन्दर सबै रूप कुरूप न कोय।
मन की रुचि जेती जितै तित तेती रुचि होय॥

(22) चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट पट झीन।
मानहू सुरसरिता विमल जल उछरत जुग मीन॥

(23) सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलोने गात।
मनौ नीलमनि-सैल पर आतप पर्‌यौ प्रभात॥

(24) पत्रा ही तिथि पाइए, वा घर के चहुँपास।
नित प्रति पून्योई रहै, आनन ओप उजास॥

रीतिमुक्त कवि

(क) शेख आलम

(1) कनक छुरी सी कामनी, काहे को कटि छीन। (आलम)
कटि को कंचन काटि विधि, कुचन मध्य धरि दीन॥ (शेख)
(2) प्रेम रंग-पगे जगमगे जगे जामिनी के
जोबन की जोति जगी जोर उमगत है।
(3) जा थल किने बिहार अनेकन ता थल काँकर बैठि चुन्यो करैं।
नैननि में जो सदा रहते तिनकी अब कान कहानी सुन्यौ करैं॥
(4) कैधौं मोर सोर तजि गए री अनत भाजि,
कैधौं उत दादुर न बोलत हैं, ए दई॥
(5) रात के उनींदें अरसाते मदमाते राते,
अति कजरारे दृग तेरे यों सुहात हैं॥
(6) दाने की न पानी की, न आवै सुध खाने की,
यौं गली महबूब की अराम खुसखाना है॥
(7) दिल से दिलासा दीजै हाल के न ख्याल हूजै
बेखुद फकीर, वह आशिक दीवाना है।

(ख) घनानंद

(1) यों घन आनन्द छावत भावत, जान सजीवन ओर ते आवत॥
लोग है लागि कवित्त बनावत मोहि तो मेरे कवित्त बनावत॥
(2) अति सुधों सनेह को मारगु हैं, जहँ नैकु सयानप बाँक नहीं॥
(3) तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला मन लेहु पै देहु छटांक नहीं॥
(4) हीन भय जल मीन अधीन कहा कछु मों अकुलानि समानै॥
(5) प्रेम की महोदधि अपार हेरि कै विचार खरे अवरन भरे है उठि जानको।
(6) उरजिन बसी है हमारी अँखियानी, देखो सुवस सुदेव जहाँ रावरे बसत हौं।
(7) जमुना के तीर केलि कोलाहल भीर ऐसी पावन पुलिन पै पतित परे रहि रे।
(8) रावरे, रूप की रीति अनूप नयी नयी लागत ज्यौं-ज्यौं निहारिये॥
(9) उघरो जग छाय रहे घन आनंद, चातक ज्यौं तकिए अब तो।
(10) कहिए सु कहाँ, अब मौन भलो, नहिं खोवते जौं हमें पावते जू॥
(11) झूठ की सचाई छाक्यौ त्यों हित कचाई पाक्यो, ताके गुबगन घनआनंद कहा गनौ॥
(12) अंतर की किधौं अंत रहौं, दृग फारि फिरौं की अभागनि भीरौ॥
(13) झलकै अति सुन्दर आनन गौर छके दृग राजति कानन छ्वै।
(14) तीछन ईछन बान बखान, पैनी दसाहि लै सान चढावत।
(15) कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन मों अँसुवानि लै बरसौ।

(16) अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहैं मनो रूप अबै धर च्वै॥
(17) हिय में जु आरति सुजारति उजारति है मारति मरो रै जिय डारति कहा कहौं॥
(18) बदरा बरसै रितु में घिरकै नित ही अखियाँ उधरी बरसैं।
(19) यह कैसो संजोग न बूझि परै जु वियोग न क्यों हूँ विछोहतु हैं॥
(20) गति सुनि हारी, देखि थकनि मैं चली जाति, थिर चर दसा कैसी ढकी उघरति है।
(21) बहुत दिनान को अवधि आसपास परे, खरे अरबरन भरे हैं उठि जानको।
(22) उघर लगे हैं आनि करिकै पयान प्रान चाहत चलन ये संदेसो लै सुजान को।
(23) इत बाट परी सुधि रावरे भूलनि कैसे उराहनो दीजिए जू।
(24) सलोने स्याम प्यारे क्यों न आवौ। दरस प्यासी मरैं तिनकौं जिवावौं॥
(25) जिन आँखिन रूप चिन्हारी भई, तिनकी नित नीरहि जागनि है।
(26) जग की कठिनाई के धोखे रहे हयाँ प्रवीनन की मति जाति जकी।
(27) पूरन प्रेम को मंत्र महा पन जा मधि सोधि सुधारि है लेख्यो।
(28) परकारज देह को धारे फिरौ परजन्य! जथारथ है दरसौ।
(29) ऐरे बीर पौन! तेरो सबै और गौन वारि। तो सो और कौन मनै ढरकै ही बानि दै।
(30) जगत के प्रान ओछे बड़ का समान, घंन आनन्द निदान सुखदान दुखियानि दै।

(ग) बोधा (बुद्धि सेन)

(1) अति खीन मृनाल के तारहु तें नहिं ऊपर पाँव दै आवनो है।
यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पै धावनो है॥
(2) एक सुभान के आनन पै कुरवान जहाँ लगि रूप जहाँ को।
जान मिलै तो जहान मिलै, नहिं जान मिलै तो जहान कहाँ को।
(3) कबहूँ मिलिबो, कबहूँ मिलिबो, वह धीरज ही में धरैबो करै।
सेहत ही बनै, कहते न बनै, मन ही मन पीरपिरैबो करै॥
(4) दाता कहा, सूर कहा, सुन्दर सुजान कहा,
आपको न चाहै ताके बाप को न चाहिए॥

(घ) ठाकुर

(1) सीखि लीन्हों मीन मृग खंजन कमल नैन,
सीखि लीन्हों जस और प्रताप को कहाना है।
× × ×
लोगन कवित्त कीबो खेल करि जानो है॥
(2) भूप से लसत कवि, कवि से लसत भूप
भूप और कवि से लसत सभा की गरुआनो है।
(3) हम कविराज हैं, पै चाकर चतुर के।
(4) वा निरमोहिनी रूप कीं रासिजऊ उर हेतु न ठानति ह्वै है।
आवत है नित मेरे लिए इतनो तो विसेपकै जानति ह्वैं है।
(5) सेवक सिपाही हम उन राजपूतन को।
दान जुद्ध जुरिबे में नेकु जे न मुरको॥

(6) बिधि के बनाए जीव जेते हैं जहाँ के तहाँ,
खेलत फिरत तिन्हैं खेलन फिरन देव॥

रीतिकाल की अन्य काव्य प्रवृत्तियाँ एवं कवि

(अ) नीतिकाव्य

- रीतिकाल के प्रमुख नीतिकार निम्नलिखित हैं—

कवि	जन्म-मृत्यु ई०	जाति	रचनाएँ
गिरधर कविराय	1722	भाट	स्फुट कुंडलिया
सम्मन	1777	ब्राह्मण	(1) स्फुट दोहा, (2) पिंगल काव्यभूषण
वैताल	1782	बंदीजन	स्फुट कुंडलिया
दीनदयाल गिरि	1802–1858	गोसाई	(1) अन्योक्तिकल्पद्रुम (1855 ई०), (2) अनुराग बाग (1831 ई०), (3) वैराग्य दिनेश (1849 ई०), (4) विश्वनाथ रत्न (1822 ई०), (5) दृष्टांत तरंगिणी (1822 ई०)

- वैताल ने सभी कुंडलियों की रचना 'विक्रम' को सम्बोधित करके लिखी है।

(ब) वीर काव्य

- रीतिकाल के प्रमुख प्रबन्धात्मक वीर काव्य के रचनाकार निम्न हैं—

कवि	रचनाएँ
लाल कवि (गोरेलाल)	छत्र प्रकाश
सूदन	सुजान चरित
खुमान 'मान'	(1) नृसिंह चरित्र, (2) लक्ष्मण शतक
जोधराज	हम्मीर रासो
बांकीदास	(1) सूरछतीसी, (2) वीर विनोद

(स) भक्तिकाव्य

(1) संत-काव्य

- यारी साहब का मूल नाम यार मुहम्मद था। ये बावरी सम्प्रदाय के प्रसिद्ध संत थे।
- दरिया साहब (1664-1780 ई०) मूलतः बिहार के रहने वाले थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—(1) ज्ञानदीपक, (2) दरिया सागर।
- जगजीवन दास (1670-1761 ई०) दादू दयाल के शिष्य थे। ये 'सत्यनामी' (सतनामी) सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे।
- जगजीवनदास के मुख्य शिष्य गोविन्द साहब, भीखा साहब, पलटू साहब थे।
- सतनामी सम्प्रदाय की प्रधान गद्दी बाराबंकी जिले के कोटवा नामक स्थान पर है।

- जगजीवनदास की प्रमुख रचनाएँ हैं—(1) प्रथम ग्रन्थ, (2) ज्ञान प्रकाश, (3 शब्द सागर, (4) आगम पद्धति, (5) महाप्रलय, (6) प्रेम पंथ, (7) अघ विनाश
- चरनदास (1703-1782) ने 'चरनदासी सम्प्रदाय' का प्रवर्तन किया।
- चरनदास अपना गुरु शुकदेव मुनि को मानते थे। चरनदासी सम्प्रदाय की 52 शाखा इनके बावन शिष्यों ने स्थापित किये।
- इनके प्रमुख ग्रन्थ हैं—(1) अमर लोक अखण्ड धाम वर्णन, (2) अष्टांग योग (3) ज्ञान स्वरोदय, (4) धर्म जहाज, (5) पंचोपनिषद, (6) ब्रजचरित्र, (7) ब्रह्मज्ञान सागर शब्द, (8) भक्तिसागर, (9) मनविकृतिकरण गुटकासार, (10) योग सन्देह सागर, (11) भक्ति पदार्थ।
- शिवनारायण (1716-1791 ई०) ने 'शिवनारायणी सम्प्रदाय' का प्रवर्तन किया।
- शिवनारायण ने संत दुखहरनदास को अपना गुरु स्वीकार किया।
- शिवनारायण की सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना 'गुरु अन्यास' है।
- तुलसी साहब (1760-1884 ई०) का मूल नाम श्यामराव था। ये स्वयं को गोस्वामी तुलसीदास का अवतार मानते थे।
- तुलसी साहब ने हाथरस (अलीगढ़) में 'साहब पंथ' का प्रवर्तन किया।
- तुलसी साहब की प्रमुख रचनाएँ निम्नांकित हैं—(1) घट रामायण, (2) रत्नसागर, (3) शब्दावली, (4) पद्म सार (अपूर्ण)।

अन्य संत कवि

संत कवि ग्रन्थ

गुरु तेगबहादुर—'आदि ग्रन्थ' (गुरुमुखी लिपि में लिखी रचनाएँ)
आनन्दघन—(1) आनन्दघन चौबीसी, (2) आनन्दघन बहोत्तरी।
अक्षर अनन्य—(1) सिद्धान्तबोध, (2) ध्यान योग, (3) विज्ञान योग, (4) राजयोग, (5) विवेक दीपिका और (6) अनन्य प्रकाश।
प्राणनाथ—(1) मारफत सागर, (2) कयामतनामा, (3) सिद्धिभाषा, (4) सागर सिंगार, (5) किरतन, (6) खुलास, (7) संबंध, (8) खेलवात, (9) पट्‌ऋतु, (10) कलस, (11) रामग्रन्थ।
धरणीदास—(1) प्रेमप्रकाश, (2) रत्नावली
बूला साहब—(1) शब्दसागर
दयाबाई—
सहजोबाई—(1) सहज प्रकाश
शिवदयाल—(1) स्वामीजी महाराज

- गुरु तेग बहादुर सिंह सिखों के नवें गुरु थे।
- दयाबाई और सहजोबाई संत चरणदास की शिष्या थीं। दोनों चचेरी बहनें थीं।
- शिवदयाल 'राधास्वामी सतसंग' के प्रवर्तक थे।

प्रेमाख्यानक काव्य

- शेख निसार का मूल नाम गुलाम अशरफ था। ये मुगल बादशाह आसफुद्दौला के समकालीन थे।

- शेख निसार ने सन् 1790 ई० में अवधी भाषा में 'यूसुफ जुलेखा' नाम से प्रेमाख्यानक काव्य लिखा।
- सूरदास गुरदासपुर के निवासी थे। इनके पिता का नाम गोवर्धनदास था।
- सूरदास ने सन् 1657 ई० 'नलदमन' प्रेमाख्यानक काव्य की रचना की।
- दुखहरनदास का मूलनाम मनमनोहर था। ये संत कवि मलूकदास के शिष्य थे।
- दुखहरन ने सन् 1669 ई० में 'पुहुपावती' शीर्षक से प्रेमाख्यानक काव्य लिखा।

अन्य सूफी कवि

सूफी कवि		प्रेमाख्यानक काव्य
केसि	—	माधवानल नाटक (1660 ई०)
दामोदर	—	माधवानल कथा (1680 ई०)
हंस	—	चन्द्रकुवर री बात (1693 ई०)
जनकुंज	—	उषा चरित्र (1780 ई०)
चतुर्भुजदास	—	मधुमालती (1780 ई०)
सेवाराम	—	नल दमयंती चरित्र (1796 ई०)
जीवनदास नागर	—	उषा अनिरुद्ध (1829 ई०)
मुरलीदास	—	उषा अनिरुद्ध (1831 ई०)
रामदास	—	उषा अनिरुद्ध (1837 ई०)

रामकाव्य

- रीतिकाल में रचित महत्वपूर्ण रामकाव्य निम्नांकित हैं—

कवि — रामकाव्य

जानकी रसिक शरण—(1) अवध सागर, (2) अष्टयाम प्रसंग।

भगवन्तराय खीची—(1) रामायण, (2) हनुमत्पच्चीसी (1760 ई०)।

जनकराज किशोरी शरण—(1) सीताराम सिद्धान्त मुक्तावली, (2) सीताराम रस तरंगिणी, (3) जानकी करुणा भरण, (4) रघुवर करुणा भरण।

नवल सिंह—(1) रामचन्द्र विलास, (2) आल्हा रामायण, (3) अध्यात्म रामायण, (4) रूपक रामायण, (5) सीता स्वयंवर, (6) राम विवाह खण्ड, (7) नाम रामायण, (8) रामायण सुमिरनी, (9) मिथिला खण्ड।

विश्वनाथ सिंह—(1) आनन्द रघुनंद नाटक, (2) रामचन्द्र की सवारी।

रामप्रिया शरण—(1) सीतायन (सीताराम प्रिया)।

रसिक अली—(1) पट्ऋतु पदावली, (2) होरी, (3) अष्टयाम और मिथिला विहार।

सूरजराम पण्डित—जैमिनी पुराण भाषा (1748 ई०)।

कृपानिवास—(1) भावना पच्चीसी, (2) समय प्रबन्ध, (3) माधुरी प्रकाश, (4) जानकी सहस्त्रनाम।

मधुसूदन—रामाश्वमेघ (1782 ई०)।

जानकीशरण—(1) सियाराम रसमंजरी।

बाल अली जू—(1) नेह प्रकाश

गोकुल नाथ—(1) सीताराम गुणार्णव (1813 ई०)

मनियार सिंह—(1) हनुमत छब्बीसी, (2) सौन्दर्यलहरी, (3) सुन्दरकाण्ड।

ललूकदास—(1) सत्योपाख्यान

गणेश—(1) वाल्मीकि रामायण श्लोकार्थ प्रकाश, (2) हनुमत पच्चीसी।

प्रेमसखी—(1) राम तथा सीताजी का नखशिख

- विश्वनाथ सिंह कृत 'आनन्द रघुनन्दन' को कई विद्वान हिन्दी का प्रथम नाटक मानते हैं।
- कृपानिवास ने 18वीं शती के अन्तिम चरण में 'रामायत सखी सम्प्रदाय' का प्रवर्तन किया।
- प्रेम सखी का मूलनाम 'वख्शी हंसराज श्रीवास्तव' था।

कृष्णकाव्य

- रीतिकाल में रचित प्रमुख प्रबन्धात्मक कृष्ण काव्य और कवि निम्नांकित हैं—

कवि — ग्रन्थ

गुमान मिश्र— (1) कृष्णचंद्रिका (1781 ई०), (2) नैषध काव्य, (3) छंदाटवी।

व्रजवासीदास— (1) व्रजविलास (1770 ई०)

कवि मंचित— (1) कृष्णायन, (2) सुरभीदान लीला।

- गुमान मिश्र ने हर्षकृत 'नैषध काव्य' का अनुवाद ब्रजभाषा में किया।
- रीतिकाल में रचित मुक्तक शैली में रचित कृष्ण काव्य अग्रांकित हैं—

कवि	सम्प्रदाय	गुरु	रचनाएँ
रूपरसिक देव	निम्बार्क	हरिव्यासदेव	(1) लीलाविंशति (1730), (2) हरिव्यास यशामृत, (3) नित्यविहार पदावली, (4) वृहदोत्सव मणिमाला।
नागरीदास (सावंत सिंह)			(1) मनोरथ मंजरी (1723 ई०), (2) इश्क चमन, (3) जुगल रस-माधुरी, (4) फाग विलास, (5) रास-रसलता, (6) फाग बिहार (1751 ई०), (7) रसिकरत्नावली (1725 ई०)।
अलबेली अलि	विष्णु स्वामी	वंशी अली	(1) श्री स्तोत, (2) समय प्रबन्ध पदावली।
चाचा हितवृंदानदास	राधावल्लभ		(1) लाड़ सागर, (2) ब्रज प्रेमानन्द सागर, (3) जुगल सनेह पत्रिका, (4) कृपा अभिलाष वेली, (5) भ्रमरगीत।
भगवत रसिक	सखी	ललित मोहनीदास	(1) अनन्य निश्चयात्मका ग्रन्थ

वृन्दावन देव	निम्बार्क		(1) निम्बार्क-माधुरी (कृष्णामृत गंगा)
पीताम्बरदास	सखी	रसिकदास	(1) केलिमाल की टीका, (2) समय प्रबन्ध, (3) सिद्धान्त और रस की साखी, (4) सिद्धान्त और रस के पद
सुंदरी कुंवरिबाई	राधावल्लभ		(1) नेह निधि, (2) संकेत युगल, (3) भावना प्रकाश
प्रेम सखी	सखी	विजय सखी	(1) सनेह सागर, (2) विरह विलास, (3) कृष्ण जू की पाती, (4) बारह-मासा, (5) विरह पत्रिका, (6) फागतरंगिनी।
सहचरि सरन	सखी		(1) ललित प्रकाश, (2) सरस मंजावली।
कृष्णदास			(1) माधुर्य लहरी (1796 ई०)।
रत्नकुँवरि			(1) प्रेमरत्न (1800) (प्रबन्धकाव्य)
दामोदर चौधरी उरदाम			(1) उरदाम प्रकाश, (2) कुंवरी किलोल, (3) कान्हा की बंशी, (4) मनमौज सागर, (5) कोरदार बत्तीसी।

- ◻ वृन्दावनदेव प्रसिद्ध कवि घनानन्द के गुरु थे।
- ◻ सुन्दरी कुंवरिबाई पीताम्बरदास की उपपत्नी थीं।
- ◻ रत्नकुँवरि राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की दादी थीं।

हास्य-व्यंग्य

- ◻ अली मुहिब खाँ 'प्रीतम' ने 'खटमल बाईसी' नामक एक हास्य रस की पुस्तक लिखी।

आधुनिक काल

भारतेन्दु युग (पुनर्जागरणकाल)

- ◻ हिन्दी साहित्य में 'आधुनिक काल' नाम सर्वप्रथम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा दिया गया था।
- ◻ 'रेनेसाँ' (नवजागरण या पुनर्जागरण) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम प्रसिद्ध फ्रांसीसी इतिहासकार मिशेलेट ने 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में किया था।
- ◻ कुछ आलोचकों ने 'नवजागरण' और 'पुनर्जागरण' में शाब्दिक भेद करते हुए भक्तिकाल को 'नव जागरण' तथा १९वीं सदी से आरम्भ होने वाले जागरण को 'पुनर्जागरण' कहा है।
- ◻ डॉ० राम विलास शर्मा ने 'हिन्दी नवजागरण' के दो हिस्से किये हैं—
  (१) लोक जागरण (भक्ति आन्दोलन)

  (२) नवजागरण (हिन्दी नवजागरण या आधुनिककाल)

- ◻ डॉ० रामविलास शर्मा ने 'लोक जागरण' तथा 'नवजागरण' में निम्नलिखित ढंग से अन्तर व्यक्त किया है—

  लोकजागरण प्रथम जातीय निर्माण को व्यक्त करने वाला सांस्कृतिक आन्दोलन है, जिसका मुख्य स्वर सामन्त विरोधी तथा मानवतावादी है। भक्ति आन्दोलन का काव्य ही 'लोक जागरण' का काव्य है।

  नवजागरण या हिन्दी नवजागरण राष्ट्रीय स्वाधीनता का सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आन्दोलन है, जिसका मुख्य स्वर साम्राज्यवाद विरोधी तथा सामन्तवाद विरोधी है।

- ◻ डॉ० रामविलास शर्मा ने लिखा है, "जो नवजागरण १८५७ के स्वाधीनता संग्राम से आरम्भ हुआ, वह भारतेन्दु युग में और व्यापक बना, उसकी साम्राज्यवाद विरोधी, सामन्तवाद विरोधी प्रवृत्तियाँ द्विवेदी युग में और पुष्ट हुई फिर निराला के साहित्य में कलात्मक स्तर पर तथा उनकी विचारधारा में ये प्रवृत्तियाँ क्रान्तिकारी रूप में व्यक्त हुई।"
- ◻ डॉ० मैनेजर पाण्डेय ने लिखा है, "रामविलास शर्मा हिन्दी नव-जागरण और उसके साहित्य की विशेषताओं का सशक्त, स्वतन्त्र और प्रामाणिक विवेचन करने वाले पहले व्यक्ति है।"
- ◻ डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है, "पुनर्जागरण दो जातीय संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न रचनात्मक ऊर्जा है।"
- ◻ हिन्दी में आधुनिकता और पुनर्जागरण के प्रवर्तक और पितामह भारतेन्दु हरिश्चन्द को माना जाता है।
- ◻ विभिन्न विद्वानों ने भारतेन्दु युग का काल निर्धारण निम्न ढंग से किया है—

प्रस्तोता	सीमांकन (ई०)	काल का नामकरण
मिश्रबन्धु	1869-1888	वर्तमान काल
रामचन्द्र शुक्ल	1868-1893	नई धारा : प्रथम उत्थान
रामकुमार वर्मा	1870-1900	आधुनिक काल
केसरीनारायण शुक्ल	1865-1900	
रामविलास शर्मा	1857-1900	नवजागरण

भारतेन्दु पूर्व काव्यधारा (1843-1867 ई०)

- ◻ सन् 1843 से 1867 ई० तक का कृतित्व भारतेन्दु युग की पृष्ठभूमि के रूप में जाना जाता है।
- ◻ भारतेन्दु पूर्व काव्यधारा में रचित महत्वपूर्ण भक्तिकाव्य निम्नांकित हैं—

कवि	रचनाएँ
रीवाँ नरेश रघुराज सिंह	(1) राम स्वयंवर (1969 ई०), (2) रुक्मिणी

	परिणय, (3) आनंदांबुनिधि, (4) रामाष्टयाम।
रघुनाथदास रामसनेही	(1) विश्रामसागर (1854 ई०)।
सरदार कवि	(1) राम रत्नाकर, (2) रामलीला प्रकाश, (3) हनुमतभूपण, (4) तुलसीभूपण।
ललितकिशोरी (कुंदनलाल)	स्फुट छंद।
गोपालचंद 'गिरिधरदास'	(1) राधा स्तोत्र, (2) गोपालस्तोत्र, (3) जरासन्ध वध, (4) बलराम कथामृत, (5) रामकथामृत।

❑ भारतेन्दु पूर्व ब्रजभाषा में रचित शृंगारिक रचनाएँ निम्नांकित हैं—

कवि	रचनाएँ
सेवक	नखशिख
सरदार कवि	(1) षड्ऋतु, (2) साहित्य-सरसी, (3) शृंगार संग्रह।
चन्द्रशेखर वाजपेयी	(1) नखशिख, (2) हम्मीर हठ (1845 ई०)।

❑ भारतेन्दु पूर्व काव्य रीति निरूपण रचनाएँ निम्नांकित हैं—

कवि — रचनाएँ

रामदास (राजकुमार)—कविकल्पद्रुम (1844 ई०)।

सेवक—वाग्विलास।

गोपालचंद्र 'गिरिधरदास'—(1) भारतीभूपण, (2) छंदोवर्णन।

वैजनाथ द्विवेदी—(1) सीतारामाभरण मंजरी (1864 ई०), (2) रामरहस्य (1866 ई०), (3) वृत्तनि दोप कदम्ब (1866 ई०), (4) वामाविलास (1866 ई०), (5) उद्दीपन शृंगार (1867 ई०), (6) अनुभव उल्लास (1867 ई०), (7) चित्राभरण (1867 ई०)।

लछिराम (ब्रह्मभट्ट)—(1) मानसिंहाष्टक, (2) प्रताप रत्नाकर, (3) प्रेम रत्नाकर, (4) लक्ष्मीश्वर रत्नाकर, (5) रावणेश्वर कल्पतरु, (6) कमलानंद-कल्पतरु।

भारतेन्दु और उनका मण्डल

❑ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का संक्षिप्त जीवन वृत्त निम्नांकित है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्मस्थान	पिता	गुरु	उपाधि	उपनाम
1850-1885	काशी	गोपालचन्द	'सितारे हिन्द'	भारतेन्दु	रसा

❑ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की समस्त रचनाओं की संख्या 175 है और उनके काव्य-ग्रन्थों की संख्या 70 है। इनके काव्य संग्रह निम्नांकित हैं—

(1) भक्ति सर्वस्व, (2) प्रेम-मालिका, (3) कार्तिक स्नान, (4) वैशाख माहात्म्य, (5) प्रेम सरोवर, (6) प्रेमाश्रुवर्पण, (7) जैन कुतूहल, (8) प्रेम माधुरी, (9) प्रेमतरंग, (10) उत्तरार्द्ध भक्तमाल, (11) प्रेम प्रलाप, (12) गीत गोविन्दानंद, (13) सतसई शृंगार, (14) होली, (15) मधु-मुकुल (16) राग

संग्रह, (17) वर्षा विनोद, (18) विनय प्रेम पचासा, (19) फूलों का गुच्छा, (20) प्रेम फुलवारी, (21) कृष्णचरित, (22) श्री अलवरत-वर्णन, (23) श्री राजकुमार सुस्वागत-पत्र, (24) सुमनोऽञ्जलिः, (25) श्री जीवनजी महाराज, (26) चतुरंग, (27) देवी छद्म लीला, (28) प्रातःस्मरण मंगलपाठ, (29) दैन्य प्रलाप, (30) उरेहना, (31) तन्मय लीला, (32) दान-लीला, (33) रानी छद्म लीला, (34) संस्कृत लावनी, (35) वसन्त होली, (36) स्फुट समस्याएँ, (37) मुँह-दिखावनी, (38) उर्दू का स्यापा, (39) प्रबोधिनी, (40) प्रातः समीरन, (41) बकरी-विलाप, (42) स्वरूप चिन्तन, (43) श्री राजकुमार शुभागमन वर्णन, (44) भारत भिक्षा, (45) श्री पंचमी, (46) श्री सर्वोत्तम स्तोत, (47) निवेदन पंचक, (48) मान सोपायन, (49) प्रातः स्मरण स्तोत्र, (50) हिन्दी की उन्नति पर व्याख्यान, (51) अपवर्गदाष्टक, (52) मनोमुकुल माला, (53) वेणु-गीति, (54) श्रीनाथ स्तुति, (55) मूक प्रश्न, (56) अपवर्ग पंचक, (57) पुरुषोत्तम पंचक, (58) भारत वीरत्व, (59) श्री सीतावल्लभ स्तोत्र, (60) श्री रामलीला, (61) भीष्म स्तवराज, (62) मान लीला फूल-बुझौअल, (63) बंदर सभा, (64) विजय वल्लरी, (65) विजयिनी-विजय-वैजयन्ती, (66) नये जमाने की मुकरी, (67) जातीय संगीत, (68) रिपुनाष्टक, (69) स्फुट कविताएँ, (70) प्रिंस ऑफ वेल्स के पीड़ित होने पर कविता।

❑ भारतेन्दु कृत 'विजयिनी विजय वैजयंती' शीर्षक कविता मिस्र में भारतीय सेना की विजय प्राप्ति पर लिखी गयी थी।

❑ भारतेन्दु ने 'नारद भक्ति सूत्र' और 'शाण्डिल्य भक्ति सूत्रों' का अनुवाद क्रमश 'तदीय सर्वस्व (1874 ई०)' और 'भक्ति सूत्र वैजयन्ती' शीर्षक से किया।

❑ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'पैरोडी', 'स्यापा', 'गाली', 'लावनी' आदि शैलीगत रूपों में कविताएँ लिखी हैं, जो निम्नांकित हैं—

कविताएँ	शैली / छंद
बंदर सभा	पैरोडी
उर्दू का स्यापा	स्यापा
समधिन मधुमास	गाली
नये जमाने की मुकरी	मुकरी
प्रातः समीरन	पयार
वर्षा विनोद	लावनी
'रानी छद्मलीला', 'तन्मय लीला' और देवी छद्म लीला	प्रबन्ध गीति
'विजयिनी विजय वैजयंती' और 'हिन्दी भाषा'	निबन्ध काव्य

❑ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'फूलों का गुच्छा' कविता खड़ी बोली में लिखी है।

❑ भारतेन्दु मण्डल के अन्य कवि कालक्रमानुसार निम्न हैं—

कवि — जन्म-मृत्यु (ई०) — रचनाएँ

बदरीनारायण चौधरी	1855–1923	(1) जीर्ण-जनपद (दुर्दशा-दत्तापुर), (2) आनन्द अरुणोदय, (3) हार्दिक हर्षादर्श, (4) मयंक महिमा, (5) अलौकिक लीला, (6) वर्षा बिन्दु, (7) लालित्य लहरी, (8) बृजचन्द पंचक, (9) सूर्य-स्तोत्र।
प्रतापनारायण मिश्र	1856–1894	(1) प्रेम पुष्पावली, (2) मन की लहर, (3) लोकोक्ति शतक, (4) तृप्यन्ताम्, (5) शृङ्गार विलास, (6) हर गंगा।
ठाकुर जगमोहन सिंह	1857–1899	(1) प्रेम सम्पत्ति लता (1885 ई०), (2) श्यामा लता (1885 ई०), (3) श्यामा सरोजिनी (1886 ई०), (4) देवयानी (1886 ई०)
अम्बिकादत्त व्यास	1858–1900	(1) पावस पचासा (1886 ई०), (2) सुकवि सतसई (1887 ई०), (3) हो हो होरी (1891 ई०)
राधाकृष्णदास	1865–1907	(1) भारत बारहमासा, (2) देश दशा

- बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' उर्दू में 'अब्र' नाम से कविताएँ लिखते थे।
- प्रेमघन की समस्त काव्य कृतियों का संकलन 'प्रेमघन-सर्वस्व' शीर्षक से किया गया है।
- प्रेमघन ने विलायत में दादा भाई नौरोजी को 'काला' कहे जाने पर क्षोभपूर्ण कविताएँ लिखी थी।
- प्रेमघन की कविताओं में यति भंग प्रायः मिलता है। इन्होंने 'मयंक महिमा' की रचना खड़ी बोली में की।
- प्रतापनारायण मिश्र की प्रतिनिधि कविताओं को 'प्रताप-लहरी' शीर्षक से संकलित किया गया है।
- प्रतापनारायण मिश्र ने 'हरगंगा', 'तृप्यंताम्', 'बुढ़ापा', 'हिन्दी की हिमायत' शीर्षक से महत्वपूर्ण कविताएँ लिखीं।
- ठाकुर जगमोहन सिंह ने शृंगार और प्रकृति-सौन्दर्यपरक कविताओं की रचना की। इन्होंने विंध्य क्षेत्र की प्रकृति का वैविध्यपूर्ण वर्णन किया है।
- जगमोहन सिंह ने कालिदास कृत 'ऋतु संहार' और 'मेघदूत' का ब्रज भाषा में अनुवाद किया।
- अम्बिकादत्त व्यास ने अपने कवि जीवन का आरम्भ कवितावर्द्धिनी सभा में 'पूरी अमी की कटोरिया-सी, चिरंजीवो रहौ विक्टोरिया रानी' समस्या की पूर्ति करके किया और इस पर उन्हें 'सुकवि' की उपाधि प्राप्त हुई थी।
- अम्बिकादत्त व्यास ने खड़ी बोली में 'कंस-वध' (अपूर्ण) शीर्षक प्रबन्ध-काव्य की रचना

की। साथ ही फारसी छंद में 'दशरथ विलाप' नामक कविता खड़ी बोली में लिखी।

- राधाकृष्णदास भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के फुफेरे भाई थे। इन्होंने रहीम के दोहों पर कुण्डलियों की रचना की।
- भारतेन्दु काल के अन्य कवि अग्रांकित हैं—

कवि	रचनाएँ
नवनीत चतुर्वेदी	कुब्जा पच्चीसी
गोविन्द गिल्लाभाई	शृङ्गार सरोजिनी, पावस पयोनिधि, राधामुख षोडसी, षड्ऋतु, नीति विनोद
दिवाकर भट्ट	नख शिख (1884 ई०), नवोढ़ा रत्न (1888 ई०)
रामकृष्ण वर्मा 'बलबीर'	बलबीर पचासा
राजेश्वरीप्रसाद सिंह 'प्यारे'	प्यारे प्रमोद
रावकृष्णदेव शरण सिंह 'गोप'	प्रेम सन्देसा
दुर्गादत्त व्यास	अधमोद्धार शतक (1872 ई०)
राधाचरण गोस्वामी	नवभक्तमाल
गुलाब सिंह	प्रेम सतसई

- भारतेन्दुयुगीन प्रमुख समस्यापूर्ति संग्रह और कवि निम्नलिखित हैं—

कवि	समस्यापूर्ति संग्रह
दुर्गादत्त व्यास	समस्यापूर्ति-प्रकाश
अम्बिकादत्त व्यास	समस्यापूर्ति-सर्वस्व
गोविन्द गिल्लाभाई	समस्यापूर्ति-प्रदीप
गंगाधर 'द्विजगंग'	समस्या-प्रकाश
नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह	पंचरत्न

भारतेन्दुयुगीन कवियों की महत्त्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द

(1) सहसन बरसन सो सुन्यो जो सपने नहिंकान, सो जय आरज शब्द।

(2) फरकि उठीं सबकी भुजा, खरकि उठी तरवार।
क्यों आपुहिं ऊँचे भए आर्य मोछ के बार॥

(3) हाय! वहै भारत-भुव भारी। सब ही विधि सों भई दुखारी॥
हाय चित्तौर! निलज तू भारी। अजहुँ खरो भारतहि मँझारी॥

(4) निज भाषा उन्नत अहै, सब उन्नति कै मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान कै मिटै न हिय कै सूल॥

(5) कहाँ करुणानिधि केशव सोए?
जागत नाहिं अनेक जतन करि भारतवासी रोए॥

(6) मेरे तो साधन एक ही है, जग नन्द लला वृषभानु दुलारी॥

(7) पिय प्यारे तिहारे निहारे विना अँखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं।
(8) सिसुताई अजौं न गई तन ते, तऊ जोवन जोति वटोरे लगी।
(9) आजु लौं न मिले तो कहा हम तो तुमरे सव भाँति कहावैं।
प्यारे जू है जग को यह रीति विदा को समैं सव कण्ठ लगावैं॥
(10) मुँह जव लागै, तव नहिं छूटै, जाति मान धन सव कुछ लूटै।
पागल करि मोहिं करे खराव, क्यों सखि सज्जन नहीं सराव॥
(11) हैं हैं उर्दू हाय हाय! कहाँ सिधारी हाय! हाय!
(12) सभा में दोस्तों वंदर की आमाद है,
गधे और फूलों के अफसर की आमाद आमाद है॥
(13) भीतर-भीतर सव रस चूसै, हँस हँस कै तन मन धन मूसै।
जाहिर वातन में अति तेज क्यों सखि सज्जन नहिं अंगरेज॥
(14) 'रसा' महवे फसाहत दोस्त क्या दुश्मन भी हैं सारे।
जमाने में तेरे तर्जे-सुखन की यादगारी है।
(15) श्री राधा माधव युगल चरण रस का अपने को मस्त वना।
पी प्याला भर भरकर कुछ इस मैं का भी देख मजा॥
(16) रोवहु सव मिलि, आवहु भारत भाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई॥
(17) रहै क्यों एक म्यान असि दोय।
जिन नैनन में हरि-रस छायो तेहि क्यों भावै कोय॥
(18) सखा प्यारे कृष्ण के गुलाम राधा रानी के।

(ङ) वदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

(1) निरधन दिन दिन होत है, भारत भुव सव भाँति।
ताहि वचाइ न कोउ सकत निज भुज वुधि वल काँति॥
(2) अचरज होत तुमहुँ सम गोरे वाजत कारे।
तासों कारे 'करि' शव्दहु पर हैं वारे॥
(3) भयो भूमि भारत में महा भयंकर भारत।
भए वीरवल सकल सुभट एकहिं सँग गारत॥
(4) आजु लौं रही अनेक भाँति धीर धारि कै।
पै न भाव मोहिं वैठनो सु मौन मारि कै॥
(5) वगियान वसन्त वसेरो कियो, वसिए तेहि त्यागि तपाइए ना।
दिन काम कुतूहल के जो वने, तिन वीच वियोग वुलाइए ना॥
'घन प्रेम' वढ़ाय के प्रेम, अहो! विथा वारि वृथा वरसाइए ना॥
चित चैत की चाँदनी चाह भरी, चरचा चलिवे की चलाइए ना॥
(6) धन्यभूमि भारत सव रतननि की उपजावनि।

(ग) प्रतापनारायण मिश्र

(1) चह हु सौंचहु निज कल्यान, तौ सव मिलि भारत संतान।
जपो निरन्तर एक जवान, हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान।
(2) तवहिं लख्यौ जहँ रह्यो एक दिन कंचन वरसत।
तहं चौथाई जन रूखी रोटिहुँ को तरसत।
(3) पढ़ि कमाय कीन्हों कहा, हरे देश कलेस।
जैसे कंता घर रहे, तैसे रहे विदेश॥
(4) जग जानै इंगलिश हमैं वाणी वस्त्रहि जोय।
मिटै वदन कर श्याम रंग जन्म सुफल तव होय॥
(5) नौन तेल लकरी घासहु पर टिक्स लगै जहं।
चना चिरौंजी मोल मिलैं जहं दीन प्रजा कहं॥
(6) अभी देखिए क्या दशा देश की हो।
वदलता है रंग आसमां कैसे कैसे!
(7) कौन करे जो नहिं कसकत सुनि विपति वाल विधवन की।
(8) विधवा विलपैं नित धेनु कटैं कोउ लागत हाव गोहार नहीं॥

(घ) ठाकुर जगमोहन सिंह

(1) अव यों उर आवत है सजनी, मिलि जाउं गरे लगि कै छतियाँ।
मन की करि भांति अनेकन औ मिलि की जियरी रस की वतियाँ॥
हम हारि अरी करि उपाय, लिखी वहु नेह भरी पतियां।
जगमोहन मोहनी मूरति के विना कैसे कटै दुःख की रतियाँ॥
(2) पहार अपार कैलास से कोटिन ऊँची शिखा लगि अम्बर चूम।
निहारत दीठि भ्रमै पगिया गिरि जात उतंगता ऊपर झूम॥
(3) कुलकानि तजी गुरु लोगन में वसिकै सव चैन कुचैन सहा।
सव छोड़ि तुम्हैं हम पायो अहो तुम छोड़ि हमैं कहो पायो कहा॥

विविध

- सन् 1888 ई० में प्रकाशित 'खड़ीवोली आन्दोलन' पुस्तक से मुजफ्फरपुर निवासी अयोध्या प्रसाद खत्री ने काव्य में खड़ीवोली का सूत्रपात किया।
- अयोध्या प्रसाद खत्री कृत 'खड़ीवोली आन्दोलन' में व्रजभाषा और अवधी को रचनाओं को हिन्दी-साहित्य के अन्तर्गत स्थान देने से इन्कार कर दिया गया था।
- अयोध्याप्रसाद खत्री ने 'खड़ीवोली का पद्य' (1889 ई०) शीर्षक से एक अन्य रचना में विभिन्न शैलियों में रचित उस समय को खड़ी वोली कविताओं का संकलन किया था।
- अयोध्याप्रसाद खत्री ने खड़ीवोली पद्य की पाँच स्टाइलें बताई थीं—जैसे मौलवी स्टाइल, मुंशी स्टाइल, पण्डित स्टाइल, मास्टर स्टाइल।
- आधुनिक काल में व्रजभाषा पद्य के लिए संस्कृत वृत्तों का व्यवहार पहले पहल स्वर्गीय पण्डित सरयू प्रसाद मिश्र ने रघुवंश महाकाव्य के अपने 'पद्यवद्ध भाषानुवाद' में किया था।

द्विवेदी युग (जागरण सुधार काल)

- डॉ० नगेन्द्र ने द्विवेदी काल को 'जागरण सुधार काल' नाम से अभिहित किया और इसकी समयावधि 1900 से 1918 ई० तक माना।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने द्विवेदी युग को 'नई धारा : द्वितीय उत्थान' के अन्तर्गत रखा है तथा समयावधि सन् 1893 से 1918 ई० तक माना है।

द्विवेदी मण्डल : कालक्रमानुसार कवि विवरण

- श्रीधर पाठक (1859-1928 ई०) खड़ीबोली के प्रथम स्वच्छंदतावादी कवि हैं।
- श्रीधर पाठक ने ब्रजभाषा में मौलिक काव्य 'कश्मीर सुषमा' की रचना सन् 1904 ई० में की।
- श्रीधर पाठक द्वारा अनूदित काव्य ग्रन्थ निम्नांकित है—

अनूदित रचना	अनूदित वर्ष ई०	मूल रचना	मूल रचनाकार	अनूदित भाषा
गडेरिये और दार्शनिक		शेफर्ड एण्ड फिलाशफर	ग्रे	
एकांतवासी योगी	1886	हरमिट	गोल्डस्मिथ	खड़ी बोली
उजड़ग्राम	1889	डेजर्टेड विलेज	गोल्डस्मिथ	ब्रजभाषा
श्रांत पथिक	1902	ट्रैवलर	गोल्डस्मिथ	खड़ी बोली
ऋतुसंहार		ऋतुसंहार	कालिदास	ब्रज

- श्रीधर पाठक की खड़ी बोली में मौलिक कृतियाँ निम्नांकित हैं—
  (1) वनाष्टक, (2) देहरादून (1915 ई०), (3) भारतगीत (1928 ई०), (4) जगत सचाई सार, (5) स्वर्गीय वीणा, (6) धनविजय, (7) सांध्य अटन, (8) गुनवंत हेमंत (1900 ई०)।
- श्रीधर पाठक द्वारा ब्रजभाषा में रचित मौलिक काव्य निम्न हैं—
  (1) कश्मीर सुषमा (1904 ई०), (2) मनोविनोद (1882 ई०)
- श्रीधर पाठक ने 'एकांतवासी योगी' की रचना लावनी या ख्याल शैली में की है तथा 'श्रांत पथिक' की रचना रोला छंद में की है।
- श्रीधर पाठक द्वारा खड़ी बोली में रचित प्रथम कविता 'गुनवंत हेमंत' है तथा खड़ी बोली की प्रथम पुस्तक 'एकांतवासी योगी' है।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864-1938 ई०) का जन्म रायबरेली के दौलतपुर गाँव में हुआ था।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "हम पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी को पद्य रचना की एक प्रणाली के प्रवर्तक के रूप में पाते हैं।"
- महावीर प्रसाद द्विवेदी ने गद्य और पद्य दोनों के लिए खड़ी बोली में सामान्य बोलचाल की भाषा को प्राथमिकता देने की वकालत की।

महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनूदित व मौलिक लगभग 80 ग्रन्थ हैं। इनके प्रमुख

काव्य-संग्रह निम्नांकित हैं—(1) काव्य मंजूषा, (2) सुमन (1923 ई०), (3) कान्य कुब्ज-अवला-विलाप, (4) देवी स्तुति शतक, (5) कान्यकुब्जावलीव्रतम्।

- महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, "कविता का विषय मनोरंजन एवं उपदेशजनक होना चाहिए। यमुना के किनारे केलि कौतूहल का अद्भुत वर्णन बहुत हो चुका। न परकीयाओं पर प्रबन्ध लिखने की अब कोई आवश्यकता है और न स्वकीयाओं के 'गतागत' की पहेली बुझाने की। चींटी से लेकर हाथीपर्यन्त, भिक्षुक से लेकर राजापर्यन्त मनुष्य, बिन्दु से लेकर समुद्र पर्यन्त जल, अनन्त आकाश, अनन्त पृथ्वी, अनन्त पर्वत—सभी पर कविता हो सकती है।"
- महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित अनूदित काव्य निम्न हैं—

अनुवाद	आधार ग्रन्थ
विनय शतक भर्तृहरि	भर्तृहरि के वैराग्यशतक का दोहों में अनुवाद
विहार-वाटिका	जयदेव के गीतगोविन्द का संक्षिप्त अनुवाद
स्नेह माला	भर्तृहरि के शृंगार शतक का दोहों में अनुवाद
गंगा लहरी	पण्डित राज जगन्नाथ की गंगा लहरी का सवैया में अनुवाद
ऋतु तरंगिणी	कालिदास के ऋतुसंहार का छायानुवाद

- महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रसिद्ध कविता 'सरगौ नरक ठेकाना नाहिं' है।
- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947 ई०) को डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ने आधुनिक काल का सूरदास कहा है।
- हरिऔध ने तीन प्रबन्ध काव्य लिखे जो निम्न हैं—

प्रबन्धकाव्य	वर्ष ई०	सर्ग	विषय
प्रिय प्रवास	1914	17	कृष्ण के बचपन से लेकर मथुरा प्रस्थान तक का वर्णन
पारिजात	1937	15	आध्यात्मिक एवं धार्मिक विषयों का वर्णन
वैदेही वनवास	1941	18	इसमें राम के द्वारा सीता के निर्वासन की कथा है।

- 'प्रिय प्रवास' को खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। 'प्रिय प्रवास' का सर्वप्रथम नाम 'ब्रजांगना विलाप' था। यह सम्पूर्ण काव्य संस्कृत के वर्णवृत्तों पर आधारित है।
- हरिऔध के अन्य प्रमुख काव्य ग्रन्थ निम्नांकित हैं—
  (1) कृष्णशतक (1882 ई०), (2) रसिक रहस्य (1899 ई०), (3) प्रेमांबुवारिधि (1900 ई०), (4) प्रेम प्रपंच (1900 ई०), (5) प्रेमांबु प्रश्रवण (1901 ई०), (6) प्रेमांबु प्रवाह (1901 ई०), (7) चोखे चौपदे (1932 ई०), (8) चुभते चौपदे (1924 ई०), (9) पद्म प्रसून (1925 ई०), (10) बोलचाल (1928 ई०), (11) रस कलस (1931 ई०), (12) फूल पत्ते (1935 ई०) (13) कल्पलता (1937 ई०), (14) ग्रामगीत (1938 ई०), (15) हरिऔध सतसई (1940 ई०), (16) मर्म स्पर्श (1956 ई०)।
- हरिऔध द्वारा ब्रजभाषा में रचित 'रसकलश' (1931 ई०) एक रीति ग्रन्थ है।

- हरिऔध कृत 'चुभते चौपदे', 'चोखे चौपदे' और 'बोलचाल' मुहावरेदार भाषा में लिखा गया है।
- हरिऔध को 'कवि सम्राट' तथा 'प्रिय प्रवास' पर इन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया था।
- रामचरित उपाध्याय (1872–1938 ई०) द्विवेदी युग के प्रमुख सूक्तिकार के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- रामचरित उपाध्याय के प्रमुख काव्य निम्नांकित हैं—(1) रामचरित चिन्तामणि (1920 ई०, प्रबन्ध काव्य), (2) राष्ट्रभारती, (3) देवदूत, (4) देवसभा, (5) विचित्र विवाह, (6) भारत भक्ति, (7) देवी द्रौपदी, (8) सूक्ति मुक्तावली।
- मैथिलीशरण गुप्त (1886–1964 ई०) को आधुनिक युग का तुलसी स्वीकार किया जाता है।
- मैथिलीशरण गुप्त का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्नांकित है—

जन्मस्थान	पिता	गुरु	प्रथम कविता	प्रथम काव्य संग्रह
चिरगाँव (झाँसी)	रामशरण दास	महावीरप्रसाद द्विवेदी	हेमन्त (1905 ई०)	रंग में भंग (1909 ई०)

- मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित प्रमुख काव्य ग्रन्थ निम्नांकि हैं—
  (1) रंग में भंग (1909 ई०), (2) जयद्रथ वध (1910 ई०), (3) किसान (1917 ई०), (4) विकट भट (1929 ई०), (5) गुरुकुल (1929 ई०), (7) साकेत (1931 ई०), (7) भारत-भारती (1912 ई०), (8) झंकार (1929 ई०), (9) यशोधरा (1932 ई०), (10) द्वापर (1936 ई०), (11) जय भारत (1952 ई०), (12) विष्णु प्रिया (1957 ई०), (13) सिद्धराज (1936 ई०), (14) हिन्दू (1927 ई०), (15) वैतालिक, (17) पंचवटी (1925 ई०)।
- हिन्दी साहित्य में 'रामचरितमानस' के बाद रामकाव्य का दूसरा स्तम्भ मैथिलीशरण गुप्त कृत 'साकेत' है।
- मैथिलीशरण गुप्त को 'साकेत' रचना की मूल प्रेरणा सन् 1908 ई० में सरस्वती पत्रिका में महावीरप्रसाद द्विवेदी के लेख 'कवियों की उर्मिला-विषयक उदासीनता' से मिली। यह लेख महावीरप्रसाद द्विवेदी ने अपने छद्म नाम 'भुजंग भूषण भट्टाचार्य' नाम से प्रकाशित कराया।
- 'साकेत' शब्द मूलतः पालि भाषा का शब्द है जिसका अर्थ अयोध्या है। इसमें 12 सर्ग है। इसे डॉ० नगेन्द्र ने 'जनवादी काव्य' कहा है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गुप्तजी को 'सामंजस्यवादी कवि' कहा है।
- मैथिलीशरण गुप्त को 'भारत-भारती' रचना की मूल प्रेरणा 'मुसद्दसे हाली' तथा ब्रजमोहन दत्तात्रेय कैफी कृत 'भारत दर्पण' पुस्तक से प्राप्त हुई।
- मैथिलीशरण गुप्त ने स्वयं को 'कौटुंबिक कविमात्र' कहा है। इन्हें 'भारत भारती' लिखने पर महात्मा गांधी ने राष्ट्रकवि की उपाधि दी।

- मैथिलीशरण गुप्त द्वारा अनूदित काव्य निम्नांकित हैं—
  (1) प्लासी का युद्ध, (2) मेघनाथ वध, (3) वृत्र संहार।
- मैथिलीशरण गुप्त ने बांग्ला कवि माइकेल मधुसूदन दत्त की रचनाओं का 'मधुप' उपनाम से अनुवाद किया।
- गुप्तजी ने मार्क्स की पुत्री 'जैनी' पर 'जयिनी' नामक काव्य लिखा है।
- गुप्तजी को द्विवेदी काल में 'हरिगीतिका' छंद का बादशाह कहा जाता है।
- द्विवेदी मंडल के अन्य कवि निम्न हैं—

कवि	जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्म स्थान	रचनाएँ
गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'	1881–1961	झालरापाटन	(1) मातृवंदना (मौलिक कृति)
लोचन प्रसाद पाण्डेय	1886–1959	बालापुर (म०प्र०)	(1) प्रवासी, (2) मेवाड़ गाथा, (3) महानदी, (4) पद्य पुष्पांजलि, (5) मृगी दुःखमोचन।

- गिरिधर शर्मा ने गोल्डस्मिथ कृत 'हरमिट' का संस्कृत श्लोकों में अनुवाद किया।
- सन् 1928 ई० में गिरिधर शर्मा ने माघ के 'शिशुपाल वध' के दो सर्गों का 'हिन्दी माघ' नाम से अनुवाद किया।
- लोचन प्रसाद पाण्डेय ने चित्तौड़ के भीमसेन के अपूर्व स्वत्व त्याग की कथा नंददास की रासपंचाध्यायी के ढंग पर लिखी है।
- लोचन प्रसाद पाण्डेय कृत 'मृगीदुःखमोचन' में इनकी पशुओं तक पहुँचने वाली व्यापक और सर्वभूत दयापूर्ण काव्यदृष्टि का पता चलता है।
- लोचन प्रसाद पाण्डेय को 'काव्य विनोद' तथा 'साहित्य-वाचस्पति' की उपाधि प्राप्त थी।

द्विवेदी मण्डल के बाहर के कवि : कालक्रमानुसार

- द्विवेदी मण्डल से बाहर के कवियों का विवरण निम्नांकित हैं—

कवि	जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्मस्थान	रचनाएँ
नाथूराम शर्मा 'शंकर'	1859–1932	अलीगढ़	(1) अनुरागरत्न, (2) शंकर सरोज, (3) शंकर सर्वस्व (1951 ई०), (4) गर्भरण्डा रहस्य।
बालमुकुन्द गुप्त	1865–1907	रोहतक	(1) स्फुट कविता (1905 ई०)
लाला भगवानदीन	1866–1930	फतेहपुर	(1) वीर क्षत्राणि, (2) वीर बालक (3) वीर पंचरत्न, (4) नवीन बीन।
राय देवीप्रसाद 'पूर्ण'	1868–1915	जबलपुर	(1) धाराधर धावन (1902 ई०) (2) स्वदेशी कुंडल (1910

			ई०), (3) मृत्युंजय (1904 ई०), (4) राम-रावण विरोध (1906 ई०), (5) वसंत वियोग (1912 ई०), (6) पूर्ण संग्रह।
सैयद अमीर अली 'मीर'	1873–1937	सागर	(1) उलाहना पंचक, (2) अन्योक्तिशतक।
कामता प्रसाद गुरु	1875–1947	सागर	(1) भौमासुर वध, (2) विनय पचासा, (3) पद्य पुष्पावली, (4) शिवाजी, (5) दासी रानी।
गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'	1883–1972	उन्नाव	(1) कृषक क्रंदन, (2) प्रेम पचीसी, (3) राष्ट्रीय वीणा, (4) त्रिशूल तरंग, (5) करुणा कादम्बिनी।
रूपनारायण पाण्डेय	1884	लखनऊ	(1) पराग (1924 ई०), (2) वन-वैभव।
रामनरेश त्रिपाठी	1889–1962	जौनपुर	(1) मिलन (1917 ई०), (2) पथिक (1920 ई०), (3) मानसी (1927 ई०), (4) स्वप्न (1929 ई०), (5) कविता-कौमुदी।
ठाकुर गोपाल शरण सिंह	1891–1960	रीवा	(1) माधवी, (2) मानवी, (3) संचिता, (4) ज्योतिष्मती।
मुकुटधर पाण्डेय	1895–1984	बालापुर (म०प्र०)	(1) आँसू, (2) उद्गार, (3) पूजा फूल, (4) कानन कुसुम।

- नाथूराम शर्मा समस्यापूर्ति और अतिशयोक्तिपूर्ण कविता करने में प्रवीण थे।
- नाथूराम शर्मा 'शंकर' को 'कविता-कामिनी-कान्त', 'भारतेन्दु प्रज्ञा', 'साहित्य सुधाकर' आदि उपाधियाँ प्राप्त थीं।
- नाथूराम शर्मा 'शंकर' कृत 'गर्भरण्डारहस्य' एक प्रबन्ध काव्य है जिसमें विधवाओं की बुरी स्थिति और देव मन्दिरों के अनाचार का वर्णन किया गया है।
- रायदेवी प्रसाद 'पूर्ण' ने सन् 1902 ई० में कालिदास के 'मेघदूत' का ब्रजभाषा में 'धाराधर धावन' शीर्षक से अनुवाद किया।
- राय देवी प्रसाद 'पूर्ण' की खड़ी बोली में रचित कविताएँ निम्न हैं—(1) अमलतास, (2) वसंत वियोग, (3) स्वदेशी कुण्डल, (4) नये सन् का स्वागत, (5) नवीन संवत्सर का स्वागत।
- कामता प्रसाद गुरु के प्रसिद्धि का मूलाधार उनका 'हिन्दी व्याकरण' है। इन्हें हिन्दी भाषा का पाणिनी भी कहा जाता है।
- कामता प्रसाद गुरु का 'भौमासुर-वध' और 'विनय पचासा' ब्रजभाषा में है तथा 'पद्य पुष्पावली' खड़ी बोली में है।

- गया प्रसाद शुक्ल श्रृंगारिक कविताएँ 'सनेही' उपनाम से लिखते थे तथा राष्ट्रीय भावनाओं की कविताएँ 'त्रिशूल' उपनाम से लिखते थे।
- गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' खड़ी बोली में कवित्त और सवैया छंदों का प्रयोग करने में प्रवीण थे।
- रामनरेश त्रिपाठी स्वच्छन्दतावाद के दूसरे प्रसिद्ध कवि हैं।
- रामनरेश त्रिपाठी ने 'मिलन', 'पथिक' और 'स्वप्न' शीर्षक से तीन काल्पनिक खण्डकाव्य लिखा।
- रामनरेश त्रिपाठी कृत 'मानसी' इनकी फुटकर कविताओं का संग्रह है।
- रामनरेश त्रिपाठी ने 'कविता कौमुदी' शीर्षक से आठ भागों में ग्राम-गीतों, उर्दू, बांग्ला एवं संस्कृत की कविताओं का संकलन एवं सम्पादन किया।
- मुकुटधर पाण्डेय को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद का प्रवर्तक स्वीकार किया है।
- मुकुटधर पाण्डेय लोचन प्रसाद पाण्डेय के अनुज थे। इन्हें पाण्डे बन्धु भी कहा जाता है।
- मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पाण्डेय द्विवेदी युग के प्रसिद्ध प्रगीतकार माने जाते हैं।

द्विवेदी काल : ब्रजभाषा काव्य काल क्रमानुसार

- जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्न है—

मूलनाम	जन्म-मृत्यु (ई०)	पिता	गुरु	उपनाम
जगन्नाथदास	1866–1932	पुरुषोत्तमदास	नवनीतलाल चतुर्वेदी	रत्नाकर

- रत्नाकर उर्दू में 'ज़की' उपनाम से कविता करते थे।
- रत्नाकर की प्रमुख काव्य कृतियाँ निम्नांकित हैं—
  (1) गंगावतरण (1927 ई०), (2) उद्धवशतक (1929 ई०), (3) हरिश्चन्द्र, (4) हिंडोला (1894 ई०), (5) श्रृंगार लहरी, (6) कलकाशी, (7) वीराष्टक।
- रत्नाकर ने अंग्रेजी विद्वान पोप के 'एसे ऑन क्रिटिसिज्म' का रोला छंद में 'समालोचनादर्श' शीर्षक से अनुवाद किया।
- सत्यनारायण 'कविरत्न' (1880–1918 ई०) की समस्त रचनाओं का संकलन बनारसीदास चतुर्वेदी ने 'हृदय तरंग' शीर्षक से प्रकाशित कराया।
- 'कविरत्न' की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—(1) भ्रमरदूत, (2) प्रेमकली।
- कविरत्न ने भवभूति के 'उत्तररामचरितम्' और 'मालतीमाधव' तथा लार्ड मैकाले के अंग्रेजी खण्डकाव्य 'होरेशस' का ब्रजभाषा में अनुवाद किया।

द्विवेदीयुगीन महत्त्वपूर्ण कवि एवं उनके महाकाव्य

कवि	महाकाव्य
द्वारका प्रसाद मिश्र	कृष्णायन (1943 ई०)
बलदेव प्रसाद मिश्र	साकेत संत (1946 ई०)
उदयशंकर भट्ट	तक्षशिला (1931 ई०)
प्रताप नारायण पुरोहित	नल नरेश (1933 ई०)

गुरु भक्त सिंह	(1) नूरजहाँ (1935 ई०), (2) विक्रमादित्य (1947 ई०)
अनूप शर्मा	(1) सिद्धार्थ (1937 ई०), (2) शर्वाणी (1948 ई०), (3) वर्द्धमान (1951 ई०)
श्यामनारायण पाण्डेय	(1) हल्दीघाटी, (2) जौहर (1945 ई०)
मोहनलाल महतो	आर्यावर्त (1943 ई०)
हरदयालु सिंह	(1) दैत्यवंश (1940 ई०), (2) रावण (1952 ई०)

द्विवेदीयुगीन कवियों की महत्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

(क) श्रीधर पाठक

(1) निज भाषा बोलहु लिखहु पढ़हु गुनहु सब लोग।
करहु सकल विषयन विषै निज भाषा उपजोग॥

(2) वंदनीय वह देश जहाँ के देशी निज अभिमानी हों।
बन्धवता में बँधे परस्पर परता के अज्ञानी हो॥

(3) जगत है सच्चा, तनिक न कच्चा समझो बच्चा इसका भेद।

(4) प्रकृति यहाँ एकान्त बैठि निज रूप सँवारति।
पल-पल पलटति भेस छनिक छवि छिन छिन धारति॥

(5) लिखो न करो लेखनी बंद। श्रीधर सम सब कवि स्वच्छन्द।

(6) नाना कृपान निज पानि लिए, वपु नील वसन परिधान किए।
गंभीर घोर अभिमान हिए, छकि पारिजात मधुपान किए।

(7) विजन वन प्रान्त था; प्रकृतिमुख शान्त था;
अटन का समय था, रजनि का उदय था।

(8) कहीं पै स्वर्गीय कोई बाला सुमंजु वीणा बजा रही है।
सुरों के संगीत की सो कैसी सुरीली गुंजार आ रही है॥

(9) इस भारत में बन पावन तू ही तपस्वियों का तप-आश्रम था
जग तत्त्व की खोज में लग्न जहाँ ऋषियों ने अभग्न किया श्रम था।

(ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(1) सुरम्यरूपे, रसराशि-रंजिते,
विचित्र वर्णाभरणे! कहाँ गई?
अलौकिकानन्द विधायनी महा
कवीन्द्रकांते, कविते! अहो कहाँ?
मांगल्य मूलमय वारिद-वारि-वृष्टि॥

(2) तुम्हीं अन्नदाता भारत के सचमुच बैलराज! महाराज!
बिना तुम्हारे हो जाते हम दाना-दाना को मोहताज॥

(3) श्रीयुक्त नागरि विहारि दशा तिहारी।
होवै विषाद मन मांहि अतीव भारी॥

(4) भैंसि भवानी कै तब सेवा लागे करन पढ़व गा छूटि।
बदुवन दूध दुहा इन हाथन धार न कबहुँ दुहत माँ टूटि॥

(5) सारी प्रजा निपढ़ दीन दुःखी जहाँ है,
कर्त्तव्य क्या न कुछ भी तुझको वहा है?

(ग) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(1) दिवस का अवसान समीप था। गगन था कुछ लोहित हो चला॥
तरु-शिखा पर थी अब राजती। कमलिनी कुल-वल्लभ की प्रभा॥

(2) प्रिय पति, वह मेरा प्राण प्यारा कहा है? दुःख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है?
लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ। वह हृदय हमारा नैन तारा कहाँ है।

(3) रूपोद्यान प्रफुल्लप्राय कलिका राकेंदुविम्बानना। तन्वंगी कलहासिनी सुरसिका क्रीड़ाकलापुत्तली।

(4) शोभा वारिधि की अमूल्य मणि सी लावण्यलीला मयी।
श्री राधामृदुभाषिणी मृगदृगी माधुर्यसन्मूर्ति थी॥

(5) धीरे-धीरे दिन गत हुआ पद्मिनीनाथ डूबे।
आई दोषा फिर गत हुई, दूसरा वार आया॥

(6) क्यों पले पीर कर किसी को तू?
है बहुत पालिसी बुरी तेरी
हम रहे चाहते पटाना ही
पेट तुझसे पटी नहीं मेरी॥

(7) चार डग हमने भरे तो क्या किया।
है पड़ा मैदान कोसों का अभी॥

(घ) मैथिलीशरणगुप्त —(भारत भारती से)

(1) भू-लोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है॥

(2) हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी॥

(3) केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए॥

(4) क्षत्रिय! सुनो अब तो कुयश की कालिमा को मेट दो।
निज देश को जीवन सहित तन मन और धन भेंट दो।
वैश्यो! सुनो व्यापार सारा मिट चुका है देश का।
सब धन विदेशी हर रहे हैं, पार है क्या क्लेश का॥

साकेत से—

(5) राम, तुम मानव हो? ईश्वर नहीं हो क्या?
विश्व में रमे हुए नहीं सभी कहीं हो क्या?

तब मैं निरीश्वर हूँ, ईश्वर क्षमा करे,
तुम न रमो तो मन तुममें रमा करे॥

(6) भव में नव वैभव व्याप्त कराने आया, नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।
संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया, इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया॥

(7) पहले आँखों में थे, मानस में कूद मग्न प्रिय अब थे।
छींटे वही उड़े थे, बड़े-बड़े अश्रु वे कब थे?

(8) सखि! नील नभस्सर से उतरा यह हंस अहा! तरता तरता।
अब तारक-मौक्तिक शेष नहीं, निकला जिनको चरता चरता।

(9) घटना हो चाहे घटा, उठ नीचे से नित्य।
आती है ऊपर, सखी! छा कर चंद्रादित्य॥

(10) वेदने! तू भी भली बनी।
पाई मैंने आज तुझी में अपनी चाह धनी॥

(11) हा! मेरे कुंजों का कूजन रोकर, निराश होकर सोया।
वह चन्द्रोदय उसका उड़ा रहा है धवल वसन-सा धोया॥

(12) मेरे चपल यौवन-बाल!
अचल अंचल में पड़ा सो, मचल कर मत साल॥

(13) सखि, निरख नदी की धारा।
ढलमल ढलमल चंचल अंचल, झलमल झलमल तारा।

(14) ओ मेरे मानस के हास। खिलस सहस्रदल, सरस सुवास॥

(15) सजनि, रोता है मेरा गान।
प्रिय तक नहीं पहुँच पाती है उसकी कोई तान।

(16) बस इसी प्रिय-काननकुंज में, मिलन भाषण के स्मृतिपुंज में—
अभय छोड़ मुझे तुम दीजियो, हासन रोदन से न पसीजियो।

यशोधरा से—

(17) सखि वे मुझसे कहकर जाते।

(18) अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

पंचवटी से—

चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में।
स्वच्छ चाँदनी छिटक रही है अवनि और अम्बर तल में॥

ङ) नाथू राम शर्मा 'शंकर'

(1) देशभक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।

(2) छड़ी धार छैल छबीले बनो, रंगीले, रसीले, फबीले बनो।
न चूको भले भोग भोगी बनो, किसी वेड़नी के वियोगी बनो।

(3) भड़क भुला दो भूतकाल की सजिये वर्तमान के साज।
फैसन फेर इंडिया भर के गोरे गॉड बनो ब्रजराज॥

(4) शंकर नदी नद नदी सन के नीरन की,
भाप बन अंबर ते ऊँची चढ़ जाएगी।

(च) रामनरेश त्रिपाठी

(1) गंध-विहीन फूल हैं जैसे चंद्र चंद्रिका-हीन।
यों ही फीका है मनुष्य का जीवन प्रेम-विहीन॥

(2) प्रेम स्वर्ग है, स्वर्ग-प्रेम है, प्रेम अशंक अशोक।
ईश्वर का प्रतिबिम्ब प्रेम है, प्रेम हृदय आलोक॥

(3) सच्चा प्रेम वही है जिसकी तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है करो प्रेम पर प्राण निछावर॥

(4) देश-प्रेम वह पुण्य-क्षेत्र है, अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें, मनुष्यता होती है विकसित॥

(5) पराधीन रह कर अपना सुख शोक न कह सकता है।
वह अपमान जगत में केवल पशु ही सह सकता है।

(छ) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

(1) नंद औ जसोमति के प्रेम-पगे पालन की,
लाड़ भरे लालन की लालच लगावती।

(2) रूप रस पीवत अघात ना हुते जो तब
सोइ अब आँसू ह्वै उबरि गिरिबौ करैं॥

(3) भेजे मन-भावन के उधव के आवन की,
सुधि ब्रज-गावनि में पावन जबै लगीं।

(4) दीन दसा देखि ब्रज-बालनि की उधव को,
गरिगो गुमान ग्यान गौरव गुठाने-से।

(5) कान्ह-दूत के धौं ब्रह्म-दूत है पधारे आप।
धारे प्रन फेरन कौ मति ब्रजबारी की॥

(ज) सत्यनारायण 'कविरत्न'

(1) अलबेली कहु बेलि द्रुमन सों लिपटि सुहाई।
धोए धोए पातन की अनुपम कमनाई॥

(2) लखि वह सुषमा जाल लाल निज बिन नंदरानी।
हरि सुधि उमड़ी घुमड़ी तन उर अति अकुलानी॥

(3) कौने भेजौं दूत, पूत सों बिथा सुनावे।
बातन में बहराइ जाइ ताको यहँ लावै॥

(4) नित नव परत अकाल, काल को चलत चक्र चहु।
जीवन को आनंद न देख्यों जात यहाँ कहु॥

(5) जे तजि मातृभूमि सों ममता होत प्रवासी।
तिन्हैं विदेसी तंग करत दै विपदा खासी॥

(6) पढ़ो न अच्छर एक, ग्यान सपनें ना पायौ।
दूध दही चाटन में, सबरो जन्म गमायौ॥

(7) नारी सिच्छा निरादरत जे लोग अनारी।
ते स्वदेस-अवनति प्रचंड पातक अधिकारी॥

छायावाद (सन् 1918 से 1936 ई०)

- हिन्दी में सर्वप्रथम पं० मुकुटधर पाण्डेय ने जबलपुर से प्रकाशित पत्रिका में सन् 1920 ई० में 'हिन्दी में छायावाद' शीर्षक से चार किस्तों में एक लेख प्रकाशित करवाया।
- मुकुटधर पाण्डेय को लिखित रूप में 'छायावाद' शब्द का प्रथम प्रयोक्ता स्वीकार किया जाता है।
- सन् 1920 ई० में सुशील कुमार ने 'सरस्वती' में 'हिन्दी में छायावाद' शीर्षक से एक संवादात्मक लेख प्रकाशित करवाया। इस संवाद में चार लोगों ने भाग लिया है—(1) सुशीला देवी, (2) हरिकिशोर बाबू, (3) चित्रकार रामनरेश जोशी तथा (4) सुमित्रानन्दन पंत।
- छायावाद की विभिन्न परिभाषाएँ इस प्रकार हैं—

(1) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल—छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ इसका सम्बन्ध काव्यवस्तु से है, अर्थात् जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है।... छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।

(2) नंददुलारे वाजपेयी—मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म, किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।

(3) जयशंकर प्रसाद—जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक विधान तथा उपचार-वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषताएँ हैं।

(4) महादेवी वर्मा—छायावाद तत्वतः प्रकृति के बीच जीवन का उद्‌गीथ है।... उसका मूल दर्शन सर्वात्मवाद है।

(5) डॉ० नगेन्द्र—छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। वह एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है और जीवन के प्रति विशेष प्रकार का भावनात्मक दृष्टिकोण।

(6) डॉ० रामविलास शर्मा—छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह नहीं रहा है, वरन् थोथी नैतिकता, रूढ़िवाद और सामन्ती साम्राज्यवादी बंधनों के प्रति विद्रोह रहा है। परन्तु यह विद्रोह मध्यवर्ग के तत्वावधान से हुआ था। इसलिए उसके साथ मध्यवर्गीय असंगति, पराजय और पलायन की भावना भी जुड़ी हुई है।

(7) डॉ० नामवर सिंह—छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति है, जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से।

(8) डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी—वह (छायावाद) मूलतः शक्ति काव्य है, पुनर्जागरण चेतना का व्यापक और सूक्ष्म रूप है और अपनी अर्थ-प्रक्रिया में मानव व्यक्तित्व को गहरे स्तरों पर समृद्ध करता है।

- छायावाद के प्रवर्तक और प्रस्तोता निम्नलिखित हैं—

प्रस्तोता	प्रवर्तक
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पाण्डेय
आचार्य नंददुलारे वाजपेयी	सुमित्रानंदन पंत
प्रभाकर माचवे	माखनलाल चतुर्वेदी
इलाचन्द्र जोशी व अन्य विद्वान	जयशंकर प्रसाद

छायावादी कवि

- छायावाद के कवि चतुष्टय में जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' तथा महादेवी वर्मा आती हैं।
- छायावाद के वृहत्त्रयी तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश निम्न हैं—

ब्रह्मा	जयशंकर प्रसाद
विष्णु	सुमित्रानंदन पंत
महेश	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

- छायावाद की लघुत्रयी में महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा और भगवती चरण वर्मा आते हैं।
- जयशंकर प्रसाद का संक्षिप्त जीवन-वृत्त निम्नांकित है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	माता-पिता	गुरु	बाल्यनाम/उपनाम
1889–1937	देवीप्रसाद-मुन्नीदेवी	मोहिनीलाल	झारखंडी/कलाधर

- जयशंकर प्रसाद की महत्वपूर्ण काव्य कृतियाँ निम्नांकित हैं—
(1) उर्वशी (1909 ई०), (2) वन मिलन (1909 ई०), (3) प्रेमराज्य (1909 ई०), (4) अयोध्या का उद्धार (1910 ई०), (5) शोकोच्छ्‌वास (1910 ई०), (6) वभ्रुवाहन (1911 ई०), (7) कानन कुसुम (1913 ई०), (8) प्रेम पथिक (1914 ई०), (9) महाराणा का महत्व (1914 ई०), (10) चित्राधार (1918 ई०), (11) झरना (1918 ई०), (12) आँसू (1925 ई०), (13) लहर (1933 ई०), (14) कामायनी (1935 ई०)
- जयशंकर प्रसाद की प्रथम कविता 'सावन-पंचक' सन् 1906 ई० में 'भारतेन्दु पत्रिका में कलाधर उपनाम से प्रकाशित हुई।
- जयशंकर प्रसाद की प्रथम छायावादी कविता 'प्रथम प्रभात' सन् 1918 ई० में प्रकाशित हुई जो झरना में संकलित है।
- जयशंकर प्रसाद की प्रथम पुस्तकाकार रचना 'उर्वशी' है। यह चंपूकाव्य है।
- खड़ी बोली में जयशंकर प्रसाद का प्रथम काव्य संग्रह 'कानन-कुसुम' है।

- जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'झरना' को छायावाद की प्रथम रचना स्वीकार किया जाता है। इसको 'छायावाद की प्रथम प्रयोगशाला' भी कहा जाता है।
- जयशंकर प्रसाद कृत 'आँसू' 133 छन्दों का विरह प्रधान स्मृति काव्य है। इसे 'हिन्दी का मेघदूत' कहा जाता है।
- जयशंकर प्रसाद कृत 'चित्राधार' में इनकी ब्रज में रचित कविताएँ संकलित हैं।
- प्रसाद कृत 'प्रेम पथिक' प्रथमतः ब्रजभाषा में सन् 1909 में लिखा गया था जिसका इन्होंने खड़ी बोली में अनुवाद सन् 1914 में किया।
- जयशंकर प्रसाद कृत 'कामायनी' महाकाव्य का संक्षिप्त विवरण निम्न है—

सर्ग	अंगीरस	दर्शन	मुख्य पात्र	मुख्य छंद
15 सर्ग	शांत (निर्वेद) रस	समरसतावाद-आनंदवाद	मनु, श्रद्धा, इड़ा, कुमार	ताटंक छंद

- कामायनी के सर्ग—(1) चिन्ता, (2) आशा, (3) श्रद्धा, (4) काम, (5) वासना, (6) लज्जा, (7) कर्म, (8) ईर्ष्या, (9) इड़ा, (10) स्वप्न, (11) संघर्ष, (12) निर्वेद, (13) दर्शन, (14) रहस्य, (15) आनन्द

प्रतीक –	पात्र	
मन	मनु	कामायनी के पात्र
हृदय	श्रद्धा	
बुद्धि	इड़ा	
मानव	कुमार	

- आचार्य शांतिप्रिय द्विवेदी ने 'कामायनी' को छायावाद का उपनिषद् कहा है।
- जयशंकर प्रसाद को प्रेम और सौन्दर्य का कवि माना जाता है।
- महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्न है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्मस्थान	मृत्यु स्थान	पिता	पत्नी	पुत्री
1899–1961	महिषादल (मेदनीपुर)	इलाहाबाद	रामसहाय त्रिपाठी	मनोहरा देवी	सरोज

- निराला की महत्वपूर्ण काव्य कृतियाँ निम्नांकित हैं—
(1) अनामिका (1923 ई०), (2) परिमल (1930 ई०), (3) गीतिका (1936 ई०), (4) तुलसीदास (1938 ई०), (5) कुकुरमुत्ता (1942 ई०), (6) अणिमा (1943 ई०), (7) बेला (1946 ई०), (8) नये पत्ते (1946 ई०), (9) अर्चना (1950 ई०), (10) आराधना (1953 ई०), (11) गीतगुंज (1954 ई०), (12) सांध्यकाकली (1969 ई०)।
- निराला के काव्य संसार में प्रथम व अन्तिम तथ्य निम्नांकित है—

प्रथम संग्रह	अन्तिम संग्रह	प्रथम कविता	अन्तिम कविता
अनामिका	सांध्यकाकली	जूही की कली (1916 ई०)	पत्रोत्कंठित जीवन का विष बुझा हुआ है

- निराला कृत 'अनामिका' और परिमल में संकलित महत्वपूर्ण कविताएँ निम्न हैं—

अनामिका (द्वितीय संस्करण, 1938)		परिमल
	सरोज स्मृति (1935 ई०)	अधिवास
	सम्राट एडवर्ड के प्रति	जुही की कली
	प्रेयसी	बादल राग
	राम की शक्तिपूजा (1936 ई०)	विधवा
	रेखा	भिक्षुक
	तोड़ती पत्थर	संध्या सुन्दरी
	सच है (1935 ई०)	पंचवटी प्रसंग

- पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को हिन्दी में मुक्त छंद का प्रवर्तक माना जाता है। कुछ आलोचक मुक्त छंद को 'रबर' या 'केंचुआ छंद' भी कहते हैं।
- निराला ने 'कवित्त' को 'हिन्दी का जातीय छंद' कहा है।
- निराला ने 'परिमल' की भूमिका में लिखा है, "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है।"
- निराला कृत 'सरोज-स्मृति' को हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ तथा प्रथम शोकगीत माना जाता है।
- निराला कृत 'राम की शक्तिपूजा' महाकाव्य का उपजीव्य बांग्ला ग्रन्थ 'कृत्तिवास रामायण' है।
- निराला कृत 'तुलसीदास' 101 छंदों में रचित एक खण्ड काव्य है।
- निराला ओज, औदात्य और विद्रोह के कवि हैं।
- निराला अकुंठ एवं वयस्क शृंगार-दृष्टि तथा तृप्ति के कवि हैं।
- आचार्य शुक्ल के अनुसार, "बहुवस्तुस्पर्शिनी प्रतिभा निरालाजी में है।"
- प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत का संक्षिप्त जीवन वृत्त निम्नांकित हैं—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्मस्थान	मृत्यु स्थान	बाल्य नाम	प्रथम कविता
1900–1977	कौशानी (अल्मोड़ा)	इलाहाबाद	गुसाईं दत्त	गिरजे का घंटा (1916 ई०)

- सुमित्रानन्दन पंत के काव्य को विद्वानों ने चार चरणों में बाँटा है जो निम्न हैं—
छायावादी—उच्छ्वास (1920 ई०), ग्रंथि (1920 ई०), वीणा (1927 ई०), पल्लव (1928 ई०), गुंजन (1932 ई०)।
प्रगतिवादी—युगान्त (1936 ई०), युगवाणी (1939 ई०), ग्राम्या (1940 ई०)।
अन्तश्चेतनावादी—स्वर्ण किरण (1947 ई०), स्वर्ण धूलि (1947 ई०), युग पथ (1949 ई०)।
नवमानवतावादी—उत्तरा (1949 ई०), कला और बूढ़ा चाँद (1959 ई०), अतिमा (1955 ई०), लोकायतन (1964 ई०), चिदम्बरा।
- सुमित्रानन्दन की प्रथम छायावादी रचना 'उच्छ्वास' है तथा अन्तिम छायावादी रचना 'गुंजन' है।
- सुमित्रानन्दन पंत ने 'लोकायतन' नामक महाकाव्य महात्मा गाँधी के जीवन पर लिखा है।
- सुमित्रानन्दन की महत्वपूर्ण कविताओं का संकलन 'चिदम्बरा' शीर्षक से प्रकाशित है। इस पर इन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

- सुमित्रानंदन कृत 'पल्लव' की भूमिका को छायावाद का घोषणा पत्र (मेनीफेस्टो) कहा जाता है।
- पंत जी को 'संवेदनशील इन्द्रिय बोध का कवि' कहा जाता है।
- सुमित्रानन्दन पंत मूल रूप में अरविन्द दर्शन से प्रभावित थे।
- महादेवी वर्मा का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्नांकित है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्मस्थान	मृत्यु स्थान	पिता	उपाधि
1907–1987	फर्रुखाबाद	इलाहाबाद	गोविन्द प्रसाद	आधुनिक युग की मीरा

- महादेवी वर्मा को 'हिन्दी के विशाल मन्दिर की वीणा पाणि' कहा जाता है।
- महादेवी की महत्त्वपूर्ण काव्य कृतियाँ निम्नांकित हैं—
  (1) नीहार (1930 ई०), (2) रश्मि (1932 ई०), (3) नीरजा (1935 ई०), (4) सांध्यगीत (1936 ई०), (5) यामा (1940 ई०), (6) दीपशिखा (1942 ई०), सप्तपर्णा (1960 ई०)।
- महादेवी वर्मा कृत 'यामा' में उनके नीहार, रश्मि, नीरजा और सांध्यगीत के महत्वपूर्ण गीतों का संकलन किया गया है। 'यामा' पर महादेवी वर्मा को 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ।
- महादेवी वर्मा कृत 'सप्तपर्णा' में ऋग्वेद के मंत्रों का हिन्दी काव्यानुवाद संकलित है।
- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने महादेवी के प्रथम काव्य-संकलन 'नीहार' की भूमिका सन् 1930 ई० में लिखी थी।
- महादेवी वर्मा की ब्रजभाषा और आरम्भिक खड़ी बोली की कविताओं का संकलन सन् 1984 ई० में 'प्रथम आयाम' शीर्षक से प्रकाशित हुआ।
- महादेवी वर्मा को बौद्ध दर्शन से प्रभावित रहस्यवादी कवयित्री के रूप में स्वीकार किया जाता है। इनका सर्वाधिक प्रिय प्रतीक दीपक और बादल हैं।
- छायावाद के अन्य कवि निम्नांकित हैं—

कवि	जन्म-मृत्यु	रचनाएँ
उदयशंकर भट्ट	1898–1966	राका, मानसी, विसर्जन, युगदीप, अमृत और विष, यथार्थ और कल्पना।
मोहनलाल महतो वियोगी	1899–1990	निर्माल्य (1926 ई०), एक तारा, कल्पना (1935 ई०)।
लक्ष्मीनारायण मिश्र	1903	अन्तर्जगत्।
डॉ० रामकुमार वर्मा	1905–1990	रूपराशि (1931 ई०), निशीथ, चित्ररेखा (1935 ई०), आकाशगंगा।
जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'		अनुभूति, अन्तर्ध्वनि।
गोपाल सिंह नेपाली	1913–1963	पंछी, रागिनी, उमंग (1934 ई०)।
केदारनाथ मिश्र	1907–1984	चिर स्पर्श, सेतुबंध।
आरसी प्रसाद सिंह	1911	कलापी (1938 ई०), संचयिता (1942 ई०), जीवन और यौवन (1944 ई०), नई दिशा (1944 ई०), पांचजन्य (1945 ई०), प्रेमगीत (1954 ई०)।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवि : काल क्रमानुसार

- राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवियों का कालक्रमानुसार विवरण निम्न है—

कवि	जन्म-मृत्यु	रचनाएँ
माखनलाल चतुर्वेदी	1889–1968	हिमकिरीटिनी (1943 ई०), हिमतरंगिनी (1949 ई०), माता (1951 ई०), समर्पण (1956 ई०)।
सियारामशरण गुप्त	1895–1963	मौर्य विजय (1914 ई०), अनाथ (1917 ई०), दूर्वादल (1924 ई०), विषाद (1925 ई०), आर्द्रा (1927 ई०), आत्मोत्सर्ग (1931 ई०), पाथेय (1933 ई०), मृण्मयी (1936 ई०), बापू (1937 ई०), उन्मुक्त (1940 ई०), दैनिकी (1942 ई०), नकुल (1946 ई०)।
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	1897–1960	कुंकुम (1939 ई०), रश्मि रेखा, अपलक, क्वासी, हम विषपायी जनम के, विनोबा स्तवन, ऊर्मिला।
सुभद्राकुमारी चौहान	1905–1948	त्रिधारा, मुकुल (1931 ई०)।
जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द	1907–1986	जीवन संगीत (1940 ई०), नवयुवक के गान।
महेशचन्द्र प्रसाद		कांग्रेस-शतक।

- माखनलाल चतुर्वेदी को 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से भी जाना जाता है।
- माखनलाल चतुर्वेदी की प्रसिद्ध कविता 'कैदी और कोकिला', 'पुष्प की अभिलाषा' आदि है।
- सियारामशरण गुप्त राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुज थे।
- सियारामशरण गुप्त की प्रथम कविता 'इन्दु' में सन् 1910 ई० में प्रकाशित हुई।
- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' उपनाम से कविता लिखते थे। इनका प्रथम काव्य संग्रह 'कुंकुम' है।
- सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म प्रयाग जिले के निहालपुर गाँव में हुआ था।
- सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रसिद्ध कविताएँ निम्न हैं—
  (1) झाँसी की रानी, (2) झण्डे की इज्जत में, (3) स्वदेश के प्रति, (4) जालियाँवाला बाग।

प्रेम और मस्ती का काव्य (व्यक्तिवादी कवि)

□ प्रेम और मस्ती के कवियों का विवरण निम्नांकित हैं—

कवि	जन्म-मृत्यु	रचनाएँ
भगवतीचरण शर्मा	1903-1981	मधुकण (1932 ई०), प्रेम-संगीत (1937 ई०), मानव (1940 ई०), एक दिन।
हृदयनारायण 'हृदयेश'	1905	स्फुट गीत।
हरिवंशराय बच्चन	1907-2003	मधुशाला (1935 ई०), मधुबाला (1936 ई०), मधुकलश (1937 ई०), निशा निमंत्रण (1938 ई०), एकान्त संगीत (1939 ई०), आकुल अंतर (1943 ई०), सतरंगिनी (1945 ई०), बंगाल का अकाल (1946 ई०), हलाहल (1946 ई०), खादी के फूल (1948 ई०), मिलन यामिनी (1950 ई०)।
हरिकृष्ण प्रेमी	1908	अग्निगान, वन्दना के बोल, आँखों में, अनन्त के पथ पर।
नरेन्द्र शर्मा	1913-1991	प्रभातफेरी (1938 ई०), प्रवासी के गीत (1938 ई०), पलाश वन (1939 ई०), मिट्टी और फूल (1942 ई०), कामिनी (1942 ई०), हंसमाला (1946 ई०), रक्तचंदन (1949 ई०), अग्निशस्य (1951 ई०)।
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	1915-1996	मधुलिका (1938 ई०), अपराजिता (1939 ई०), किरणवेला (1941 ई०), करील (1942 ई०), लाल चूनर (1944 ई०), वर्षान्त के बादल।
जानकी वल्लभ शास्त्री	1916	रूप-अरूप (1940 ई०), तीर तरंग (1944 ई०), शिप्रा (1945 ई०), मेघगीत (1950 ई०), अवन्तिका (1953 ई०)।
विद्यावती 'कोकिल'		अंकुरिता, माँ, सुहागिन, पुनर्मिलन, आरती।
सुमित्रा कुमारी सिन्हा		विहाग, आशा पर्व, पंथिनी, बोलों के देवता।

हरिवंश राय बच्चन को हिन्दी साहित्य में 'हालावाद' का प्रवर्तक माना जाता है। इन पर उमर खैय्याम का प्रभाव सर्वाधिक पड़ा।

□ बच्चनजी को हिन्दी का 'बायरन' भी कहा जाता है।

□ रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' को हिन्दी में मांसलवाद का प्रवर्तक माना जाता है।

छायावाद के हास्य-व्यंग्यकार कवि

□ छायावाद के प्रमुख हास्य व्यंग्यकार कवि निम्न हैं—

रचनाकार	रचनाएँ
ईश्वरी प्रसाद शर्मा	(1) चना चबेना (1924 ई०)
हरिशंकर शर्मा	(1) पिंजरापोल, (2) चिड़ियाघर
कान्तानाथ पाण्डेय 'चोंच'	(1) चोंच चालीसा, (2) पानी पांडे, (3) महाकवि सांड।
शिवरत्न शुक्ल 'बलई'	(1) परिहास प्रमोद (1930 ई०)
चतुर्भुज चतुरेश	(1) हँसी का फव्वारा
ज्वालाराम नागर 'विलक्षण'	(1) छायापथ

□ हरिशंकर शर्मा कृत 'पिंजरा पोल' और 'चिड़ियाघर' गद्य-रचना है इसमें कुछ व्यंग्यात्मक कविताएँ संकलित हैं।

छायावाद : ब्रजभाषा काव्य — कालक्रमानुसार

कवि	जन्म-मृत्यु	रचनाएँ
रामनाथ ज्योतिषी	1874	(1) रामचन्द्रोदय काव्य (1936 ई०)
रामचन्द्र शुक्ल	1884-1941	(1) बुद्धचरित (1922 ई०)
रायकृष्णदास	1892	(1) ब्रजरज (1936 ई०)
दुलारेलाल भार्गव	1895	(1) दुलारे दोहावली
वियोगी हरि	1896-1988	(1) वीर सतसई (1927 ई०), (2) चरखा स्तोत्र
किशोरीदास वाजपेयी	1898-1981	(1) तरंगिणी (1936 ई०)
अनूप शर्मा	1900	(1) फेरि मिलिबौ (1938 ई०), चम्पू काव्य
रामेश्वर करुण	1901	(1) करुण सतसई

□ रामचन्द्र शुक्ल ने एडविन अर्नाल्ड के काव्य 'लाइट ऑफ एशिया' का 'बुद्धचरित' शीर्षक से ब्रजभाषा में अनुवाद किया।

छायावादी कवियों की महत्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

(क) जयशंकर प्रसाद (आँसू से)

(1) बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से।
मणि वाले फणियों का मुख क्यों भरा हुआ है हीरों से॥

(2) विद्रुम-सीपी-संपुट में मोती के दाने कैसे?
है हंस न, पर शुक फिर क्यों चुगने के मुक्ता ऐसा॥

(3) झंझा झकोर गर्जन है, बिजली है नीरद माला।
पाकर इस शून्य हृदय को, सबने आ डेरा डाला॥

(4) पतझड़ था, झाड़ खड़े थे सूखे से फुलवारी में।
किसलयदल कुसुम बिछाकर आए तुम इस क्यारी में॥
(5) इस करुणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती।
क्यों हाहाकार स्वरों में वेदना असीम गरजती?
(6) मानव जीवन वेदी पर परिणय हो विरह मिलन का।
दुःख सुख दोनों नाचेंगे है खेल आँख का मन का॥
(7) जल उठा स्नेह दीपक-सा, नवनीत हृदय था मेरा।
अब शेष धूम रेखा से, चित्रित कर रहा अँधेरा॥
(8) तेरे प्रकाश में चेतन संसार वेदना वाला।
मेरे समीप होता है पाकर कुछ करुण उजाला॥
(9) सबका निचोड़ लेकर तुम सुख से सूखे जीवन में।
वरसो प्रभात हिमकन-सा आँसू इस विश्व सदन में॥

हर' से

(10) उठ उठ, गिर गिर, फिर फिर आती
नर्तित पदचिह्न वना जाती;
सिकता की रेखाएँ उभार
भर जाती अपनी तरल सिहर।
(11) तुम हो कौन और मैं क्या? इसमें क्या है धरा सुनो।
मानस जलधि रहे चिर चुंवित मेरे क्षितिज! उदार वनो॥
(12) ले चल वहाँ भुलावा देकर मेरे नाविक! धीरे धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी अंवर के कानों में गहरी
निश्छल प्रेम कथा कहती हो तज कोलाहल की अवनी रे॥
(13) श्रम विश्राम क्षितिज वेला से, जहाँ सृजन करते मेला से—
अमर जागरण, उषा नयन से—विखराती हो ज्योति घनी रे॥
(14) बीती विभावरी जाग री!
अंवर पनघट में डुवो रही तारा घट उषा नागरी।
खगकुल 'कुल कुल' सा वोल रहा, किसलय का अंचल डोल रहा।
लो, यह लतिका भी भर लाई, मधु मुकुल नवल रस गागरी॥
15) मेरा अनुराग फैलने दो, नभ के अभिनव कलरव में,
जाकर सूनेपन के तम में, वन किरण कभी आ जाना।
16) जग की सजल कालिमा रजनी में मुखचन्द्र दिखा जाओ;
प्रेम वेणु की स्वर लहरी में जीवन गीत सुना जाओ।

ायनी' से

17) ओ चिन्ता की पहली रेखा, अरी विश्व वन की व्याली,
ज्वालामुखी विस्फोट के भीषण प्रथम कंप-सी मतवाली॥
8) वुद्धि, मनीषा, मति आशा, चिन्ता तेरे हैं कितने नाम!
अरी पाप है तू, जा, चल जा यहाँ नहीं कुछ तेरा काम!

(19) सिन्धु सेज पर धरा वधू अव तनिक संकुचित वैठी सी,
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में मान किए सी ऐंठी-सी॥
(20) संवेदन का और हृदय का यह संघर्ष न हो सकता,
फिर अभाव असफलताओं को गाथा कौन कहाँ वकता!
(21) फटा हुआ था नील वसन क्या ओ यौवन की मतवाली!
देख अंकिचन जगत लूटता तेरी छवि भोली भाली!
(22) हृदय की अनुकृति वाह्य उदार एक लंवी काया उन्मुक्त।
मधु-पवन-क्रीड़ित ज्यों शिशु साल, सुशोभित हो सौरभ संयुक्त॥
(23) नील परिधान वीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों विजली का फूल मेघवन वीच गुलावी रंग॥
(24) नित्य-यौवन छवि से ही दीप्त विश्व की करुण कामना मूर्ति।
स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्ति॥
(25) कुसुम कानन अंचल में मंद-पवन प्रेरित सौरभ साकार,
रचित-परमाणु-पराग-शरीर खड़ा हो, ले मधु का आधार॥
(26) काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल वनाते हो असफल भवधाम॥
(27) एक तुम, यह विस्तृत भू-खण्ड प्रकृति वैभव से भरा अमंद।
कर्म का भोग, भोग का कर्म यही जड़ का चेतन आनन्द।
(28) शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त विकल विखरे हैं हो निरुपाय,
समन्वय उसका करे समस्त विजयिनी मानवता हो जाए!
(29) कोमल किसलय के अंचल में नन्हीं कलिका ज्यों छिपती-सी,
गोधूली के धूमिल पट में दीपक के स्वर में दीपती-सी।
(30) मैं रति की प्रतिकृति लज्जा हूँ मैं शालीनता सिखाती हूँ।
मतवाली सुन्दरता पग में नूपुर सी लिपट मनाती हूँ॥
(31) नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास-रजत-नग पगतल में।
पीयूष-स्रोत-सी वहा करो जीवन के सुन्दर समतल में॥
(32) आँसू से भींगे अंचल पर मन का सव कुछ रखना होगा—
तुमको अपनी स्मित रेखा से यह संधि पत्र लिखना होगा।
(33) तुम भूल गए पुरुषत्व-मोह में कुछ सत्ता है नारी की।
समरसता है संवंध वनी अधिकार और अधिकारी की।
(34) विखरी अलकें ज्यों तर्क जाल—
यह विश्व मुकुट-सा उज्ज्वलतम शशिखण्ड सदृश था स्पष्ट भाल
(35) दो पद्म-पलाश चषक से दृग देते अनुराग विराग ढाल॥
(36) जो वुद्धि कहे उनको न मानकर फिर किसकी नर शरण जाए।
(37) वह विज्ञानमयी अभिलाषा, पंख लगाकर उड़ने की,
जीवन की असीम आशाएँ कभी न नीचे मुड़ने की॥

(38) प्रकृति-शक्ति तुमने यंत्रों से सबकी छीनी।
शोषण कर जीवनी बना दी जर्जन झीनी।

(39) स्वप्न, स्वाप, जागरण भस्म हो इच्छा क्रिया ज्ञान मिल लय थे।
दिव्य अनाहत पर-निनाद में श्रद्धायुत मनु बस तन्मय थे॥

(40) समरस थे जड़ या चेतन सुन्दर साकार बना था,
चेतनता एक विलसती आनन्द अखण्ड घना था।

(ख) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (*'राम की शक्ति पूजा' से*)

(1) ऐसे क्षण अंधकार घन में जैसे विद्युत।
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत॥

(2) है अमा-निशा; उगलता गगन घन अन्धकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान; स्तब्ध है पवन चार।

(3) लख शंकाकुल हो गये अतुल-वल शेष-शयन,
खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन।

(4) काँपते हुए किसलय—झरते पराग समुदय,
गाते खग नव जीवन-परिचय, तरु मलय वलय,
ज्योति प्रपात स्वर्गीय, ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कंपन तुरीय।

(5) धिक् जीवन जो पाता ही आया है विरोध
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।

(6) अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति। कहते छल-छल।
हो गए नयन, कुछ बूँद पुनः ढलके दृगजल॥

(7) शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

(8) होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन!
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।

'सरोज स्मृति' से

(9) अशब्द अधरों का सुना भाष,
मैं कवि हूँ, पाया है प्रकाश।

(10) धन्ये, मैं पिता निरर्थक था, कुछ भी तेरे हित न कर सका।
जाना तो अर्थागमोपाय पर रहा सदा संकुचित-काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर हारता रहा मैं स्वार्थ समर।

(11) यह हिन्दी का स्नेहोपहार, यह नहीं हार मेरी, भास्वर
यह रत्नहार-लोकोत्तर वर।

(12) एक साथ जब शत घातघूर्ण, आते थे मुझ पर तुले तूर्ण
देखता रहा मैं खड़ा अपल, वह शर-क्षेप, वह रण कौशल।

(13) तब भी मैं इसी तरह समस्त, कवि-जीवन में व्यर्थ भी व्यस्त।
लिखता अबाध-गति मुक्त छंद, पर सम्पादकगण निरानंद॥

(14) धीरे धीरे फिर बढ़ा चरण, बाल्य की केलियों का प्रांगण।
कर पार, कुंज-तारुण्य सुघर आइ, लावण्य-भार थर-थर॥

(15) क्या दृष्टि! अतल की सिक्तधार ज्यों भोगावती उठी अपार,
उमड़ता ऊर्ध्व को कल सलील जल टलमल करता नील नील।
पर बँधा देह के दिव्य-बाँध, छलकता दृगों के साथ-साथ॥

(16) ये कान्यकुब्ज-कुल-कुलांगार खाकर पत्तल में करें छेद,
इनके कर कन्या, अर्थ खेद।

(17) देखा मैंने, वह मूर्ति-धीति मेरे वसंत की प्रथम गीति-
शृंगार, रहा जो निराकार, रस कविता में उच्छ्वसित-धार
गाया स्वर्गीया-प्रिया-संग भरता प्राणों में राग रंग
रति-रूप प्राप्त कर रहा वही आकाश बदलकर बना मही॥

(18) दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही।

'तुलसीदास' से

(19) भारत के नभ का प्रभापूर्य
शीतलच्छाय सांस्कृतिक सूर्य
अस्तमित आज रे—तमस्तूर्य दिङ्मंडल
उर के आसन पर शिरस्त्राण
शासन करते हैं मुसलमान;
है ऊर्मिल जल, निश्चलत्प्राण पर शतदल।

(20) होगा फिर से दुर्धर्ष समर
जड़ से चेतन का निशिवासर,
कवि का प्रति छवि से जीवन हर, जीवन भर;
भारती इधर, है उधर सकल
जड़ जीवन के संचित कौशल;
जय, इधर ईश, हैं उधर सबल माया-कर।

(21) जागो, जागो आया प्रभात, बीती वह बीती अंध रात,
झरता भर ज्योतिर्मय प्रपात पूर्वाचल,
बाँधो, बाँधो किरणें चेतन, तेजस्वी, है तमजिज्जीवन;
आती भारत की ज्योतिर्धन महिमाबल॥

***'बादल राग' से* (सं० रामविलास शर्मा)**

(22) जागो फिर एक बार
शेरों की माँद में आया है आज स्यार

(23) विजन वन वल्लरी पर
सोती थी सुहाग भरी
स्नेह स्वप्न मग्न अमल कोमल तनु तरुणी,
जुही की कली
दृग बंद किए शिथिल पत्रांक में (जूही की कली)

(24) स्नेह निर्झर वह गया है।
रेत ज्यों तन रह गया है।

(25) यौवन के तीर पर प्रथम था आया जब
स्रोत सौन्दर्य का,
वीचियों कलरव सुख चुंवित प्रणय का
था मधुर आकर्षणमय
मज्जनावेद मृदु फूटता सागर में॥

(26) जीर्ण वाहु है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृपक अधीर
ए विप्लव के वीर!

ग) सुमित्रानंदन पंत

(1) छोड़ द्रुमो की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
वाले तेरे वाल जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?

(2) प्रथम रश्मि का आना रंगिणी! तूने कैसे पहचाना?
कहाँ कहाँ हे वाल विहंगिनी! पाया तूने यह गाना?

(3) अरुण अधरों की पल्लव प्रात,
मोतियों सा हिलता हिम हास।

(4) सैकत-शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म, विरल,
लेटी है श्रांत, क्लान्त निश्चल!
तापस-वाला गंगा निर्मल, शशि-मुख से दीपित मृदु करतल,
लहरे उर पर कोमल कुंतल!

(5) इस धारा-सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्‌गम,
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम!

(6) तुम्हारे छूने में था प्राण, संग में पावन गंगा स्नान।
तुम्हारी वाणी में कल्याणि त्रिवेणी की लहरों गान॥

(7) धूम धुंआरे काजर कारे हम ही विकरारे वादर।
मदनराज के वीर-वहादुर, पावस के उड़ते फणिधर॥

(8) धूलि की ढेरी में अनजान छिपे हैं मेरे मधुमय गान।

(9) वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान।
निकलकर आँखों से चुपचाप वही होगी कविता अनजान॥

(10) द्रुत झरों जगत के जीर्ण पत्र, हे स्रस्त ध्वस्त हे शुष्क शीर्ण।
हिम ताप पीत मधुवात भीत, तुम वीतराग जड़ पुराचीन॥

(11) लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिह्न निरन्तर।
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षस्थल पर॥

12) दूर उन खेतों के उस पार, जहाँ तक गई नील झंकार॥

(13) तुम वहन कर सको जन मन में मेरे विचार।
वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार!

(14) भूतवाद उस धरा-स्वर्ग के लिए मात्र सोपान,
जहाँ आत्मदर्शन अनादि से समासीन अम्लान॥

(15) सुन्दर है विहग, सुमन सुन्दर
मानव तुम सबसे सुन्दरतम्।

(घ) महादेवी वर्मा

(1) मैं नीर भरी दुःख की बदली
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली॥

(2) पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की क्रीड़ा,
तुमको पीड़ा में ढूँढा तुममे ढूँढूँगी पीड़ा।

(3) जो तुम आ जाते एक वार!
कितनी करुणा कितने संदेश पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाता प्राणों का तार-तार अनुराग भरा उन्माद राग।

(4) क्या पूजा क्या अर्चन रे?
उस असीम का सुन्दर मन्दिर मेरा लघुतम जीवन रे।

(5) मधुर मधुर मेरे दीपक जल
युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर।

(6) मिलन का मत नाम लो मैं विरह में चिर हूँ।

(7) बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।
दूर हूँ तुमसे अखण्ड सुहागिनी भी हूँ॥

(8) विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन
क्या डुवा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना
जाग तुझको दूर जाना॥

(9) वे मुस्काते फूल नहीं जिनको आता है मुरझाना।
वे तारों के दीप नही जिनको भाता है वुझ जाना॥

(ङ) वालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

(1) ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मललूम, अरे चिरदोहित,
तू अखण्ड भण्डार शक्ति, जाग अरे निद्रा सम्मोहित।

(2) है वलिवेदी, सखे प्रज्ज्वलित माँग रही ईंधन क्षण-क्षण,
आओ युवक, लगा दो तो तुम अपने यौवन का ईंधन॥

(3) हम अनिकेतन, हम अनिकेतन, हम तो रमते राम हमारा क्या घर,
कैसा वतन?

(4) हो जाने दो ग़र्क नशे में, मत पड़ने दो फर्क नशे में॥

(5) कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये।

विविध

- छायावादी कवि चतुष्टय निम्नलिखित दर्शनों से प्रभावित थे—

कवि	दर्शन
जयशंकर प्रसाद	शैव दर्शन (आनन्दवाद)
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	अद्वैत वेदान्त
सुमित्रानंदन पंत	अरविन्द दर्शन
महादेवी वर्मा	बौद्ध दर्शन (दुःखवाद)

- पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने प्रगतिवादी चेतना से अनुप्राणित रचनाएँ भी लिखी, जो निम्नांकित हैं—
(1) कुकुरमुत्ता, (2) गर्म पकौड़ी, (3) मास्को डायलाग्स, (4) नये पत्ते, (5) खजोहरा, (6) रानी और कानी।
- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को छायावाद का शलाका पुरुष भी कहा जाता है।
- प्रसिद्ध राष्ट्रगीत 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' की रचना श्यामलाल पार्षद ने सन् 1924 में की। यह गीत सर्वप्रथम 1925 ई० में कानपुर कांग्रेस के ध्वजोत्तोलन के समय गाया गया।

छायावादोत्तर काल

प्रगतिवाद (1936 से 1942 ई०)

- लखनऊ में अप्रैल, 1936 ई० में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना और प्रथम अधिवेशन के समय से हिन्दी में प्रगतिवादी आन्दोलन की शुरुआत होती है। इस अधिवेशन के प्रथम अध्यक्ष मुंशी प्रेमचंद थे।
- सन् 1934 ई० में गोर्की के नेतृत्व में रूस में 'सोवियत लेखक संघ' की स्थापना हुई। यह विश्व का पहला लेखक संगठन था।
- सन् 1935 ई० में हेनरी बारबुस की पहल पर पेरिस में ई०एम० फोर्स्टर ने 'प्रगतिशील लेखक संघ' (Progressive Writer's Association) की स्थापना की।
- मुल्कराज आनन्द, सज्जाद जहीर, ज्योति घोष, के०एम० भट्ट, हीरेन मुखर्जी, एस० सिन्हा और मोहम्मद्दीन तासीन ने भारत की तरफ से सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में जुलाई 1935 ई० में 'भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' का गठन किया।
- प्रगतिवाद का सैद्धान्तिक आधार मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है। राजनीति के क्षेत्र में जो समाजवाद या साम्यवाद है, साहित्य के क्षेत्र में वही प्रगतिवाद है।
- डॉ० बच्चन सिंह ने सुमित्रानन्दन पंत कृत 'युगवाणी' को खड़ी बोली का प्रथम प्रगतिवादी काव्य माना है।
- डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ने कालक्रम की दृष्टि से रामेश्वर 'करुण' कृत ब्रजभाषा काव्य 'करुण सतसई' को प्रथम प्रगतिवादी कवि और काव्य माना है।

प्रमुख कवि : कालक्रमानुसार

- केदारनाथ अग्रवाल का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्नांकित है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्मस्थान	माता-पिता	पत्नी	प्रथम संग्रह
1911-2000	कमासिन (बाँदा)	हनुमानप्रसाद-घिसट्टो	पार्वती	युग की गंगा

- केदारनाथ अग्रवाल अपनी काव्य-यात्रा के आरम्भिक दौर में 'बालेन्दु' उपनाम से रचनाएँ करते थे। तब वे ब्रजभाषा में कवित्त, सवैया छंद में लिखते थे।
- केदारनाथ अग्रवाल ने देश-विदेश के तमाम कवियों की कविताओं का अनुवाद 'देश-विदेश की कविताएँ' शीर्षक से किया।
- केदारनाथ अग्रवाल की रचनाओं की कालक्रमानुसार सूची निम्न है—

1. युग की गंगा (1947)
2. नींद के बादल (1947)
3. लोक और आलोक (1957)
4. फूल नहीं रंग बोलते हैं (1965)
5. आग का आईना (1970)
6. गुलमेंहदी (1978)
7. पंख और पतवार (1979)
8. बंबई का रक्त स्नान (1981)
9. हे मेरी तुम ((1981))
10. मार प्यार की थापें (1981)
11. कहें केदार खरी-खरी (1983)
12. अपूर्वा (1984)
13. जमुन जल तुम (1984)
14. बोले बोल अबोल (1985)
15. जो शिलाएँ तोड़ते हैं (1985)
16. आत्मगंध (1988)
17. अनहारी हरियाली (1990)
18. खुली आँखें : खुले डैने (1993)
19. पुष्पदीप (1994)
20. वसंत में हुई प्रसन्न पृथ्वी (1996)

- नागार्जुन का संक्षिप्त जीवन-वृत्त निम्नांकित है—

जन्म-मृत्यु	जन्म स्थान	मूल नाम	माता-पिता	उपनाम
1911-1998	तरउनी (दरभंगा)	वैद्यनाथ मिश्र	गोकुल मिश्र- उमा देवी	यात्री, नागार्जुन

- नागार्जुन का पहला साहित्यिक उपनाम 'यात्री' था। संस्कृत और मैथिली में ये 'यात्री' नाम से कविताएँ लिखते थे।
- नागार्जुन की खड़ी बोली में सर्वप्रथम प्रकाशित रचना 'राम के प्रति' है जो सन् 1935 ई० में लाहौर से निकलने वाली साप्ताहिक पत्रिका 'विश्वबन्धु' में छपी थी।
- नागार्जुन की रचनाओं की कालक्रमानुसार सूची निम्न है—

1. युगधारा (1953)
2. सतरंगे पंखों वाली (1959)
3. प्यासी पथराई आँखें (1962)
4. भस्मांकुर (1971)
5. तालाब की मछलियाँ (1975)
6. खिचड़ी विप्लव देखा हमने (1980)
7. तुमने कहा था (1980)
8. हजार-हजार बाँहों वाली (1981)
9. पुरानी जूतियों का कोरस (1983)

- नागार्जुन कृत 'भस्मांकुर' एक खण्डकाव्य है जो 'बरवै' छंद में है।
- नागार्जुन ने मैथिली भाषा में 'पत्रहीन नग्न गाछ' शीर्षक से काव्य लिखा। इसमें 52 कविताएँ संकलित हैं। इस कृति पर उन्हें सन् 1968 ई० में 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला।
- नागार्जुन ने अपनी कविता 'प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है' के सन्दर्भ में लिखा है, "यह तो नागार्जुन-साहित्य का 'मेनिफेस्टो' है।"

- डॉ० बच्चन सिंह ने नागार्जुन की कविताओं को 'नुक्कड़ कविता' की संज्ञा दी है।
- नागार्जुन को राजनीतिक कवि के रूप में भी जाना जाता हैं। इनकी निम्नलिखित कविताएँ प्रसिद्ध हैं—(1) बादल को घिरते देखा है, (2) पाषाणी, (3) सिन्दूर तिलकित भाल, (4) तुम्हारी दंतुरित मुस्कान, (5) पाँच पूत भारत माता के, (6) कालिदास, (7) हरिजन गाथा, (8) अकाल और उसके बाद।
- नागार्जुन को प्रगतिवाद का शलाका पुरुष कहा जाता है।
- शिवमंगल सिंह 'सुमन' का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्नांकित है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्म स्थान	मूलनाम	उपनाम	प्रथम संग्रह
1915-2002	झगरपुर (उन्नाव)	शिवमंगल सिंह	सुमन	हिल्लोल (1939)

- शिवमंगल सिंह की प्रमुख रचनाएँ निम्नांकित हैं—
  (1) हिल्लोल, (2) जीवन के गान, (3) युग का मोल (1945), (4) प्रलय-सृजन (1950), (5) विश्वास बदलता ही गया, (6) विंध्य हिमालय (1960), (7) मिट्टी की बारात (1972), (8) वाणी की व्यथा (1980), (9) पर आँखें नहीं भरी, (10) हम पक्षी उन्मुक्त गगन के।
- शिवमंगल सिंह 'सुमन' की प्रसिद्ध कविताएँ निम्न हैं—(1) गुनिया का यौवन, (2) कलकत्ते का अकाल, (3) चल रही कुदाली।
- वासुदेव सिंह 'त्रिलोचन' का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्न है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्म-स्थान	मूल नाम	उपनाम	प्रथम संग्रह
1917-2007	चिरानी पट्टी (सुल्तानपुर)	वासुदेव सिंह	त्रिलोचन	धरती (1945 ई०)

- गजानन माधव 'मुक्तिबोध' ने त्रिलोचन को 'अवध का किसान कवि' कहा है।
- त्रिलोचन की रचनाओं की काल क्रमानुसार सूची निम्न है—

1. धरती (1945)	6. उस जनपद का कवि हूँ (1981)
2. गुलाब और बुलबुल (1956)	7. अरघान (1984)
3. दिगन्त (1957)	8. तुम्हें सौंपता हूँ (1985)
4. ताप के ताए हुए दिन (1980)	9. फूल नाम है एक (1985)
5. शब्द (1980)	10. अनकहनी भी कुछ कहनी है (1986)

- 'अमोला' त्रिलोचनजी की अवधी काव्य कृति है। 1990 में प्रकाशित इस कृति में 2700 बरवै संगृहीत हैं।
- हिन्दी में सॉनेट लिखने के लिए त्रिलोचन शास्त्री प्रसिद्ध हैं।
- रांगेय राघव (1923-1963 ई०) का मूलनाम त्र्यंबक वीर राघवाचार्य है।
- रांगेय राघव ने तीन आख्यानात्मक काव्य लिखे हैं जो निम्न हैं—(1) अजेय खण्डहर (1944), (2) मेधावी (1947), (3) पांचाली (1955)।
- 'अजेय खण्डहर' में तीन शीर्षकों—झंकार, ललकार, हुंकार से स्तालिनग्राद युद्ध के कतिपय स्थलों का वर्णन किया गया है।
- रांगेय राघव के दो अन्य मुक्तक काव्य हैं जो निम्न हैं—(1) पिघलते पत्थर (1946) और (2) राह के दीपक।

प्रगतिवादी कवियों की महत्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

(क) केदारनाथ अग्रवाल

(1) धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आयी बेटी की तरह मगन है।

(2) एक बीते के बराबर,
यह हरा ठिगना चना
बांधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का।

(3) मैंने उसको जब-जब देखा,
लोहा जैसे तपते देख, गलते देखा, ढलते देखा।
मैंने उसको गोली जैसे चलते देखा॥

(4) आज का लेखन
आग के अँगूठे की
क्रान्तिकारी कतार का
बन्दूक मार लेखन है।

(5) कविता यों ही बन जाती है, बिना बनाए
क्योंकि हृदय में, तड़प रही है याद तुम्हारी।

(6) माँझी न बजाओ वंशी मेरा प्रन टूटता
मेरा प्रन टूटता है जैसे तन टूटता॥

(7) बाप बेटा बेचता है भूख से बेहाल होकर,
धर्म, धीरज, प्राण खोकर।

(8) कांग्रेस की राज में आयो नहीं बसन्त
अपत कँटीली डाल के गावत है गुनवंत॥

(9) काटो काटो काटो करबी मारो मारो मारो हँसिया।
हिंसा और अहिंसा क्या है। जीवन में बढ़ हिंसा क्या है?

(ख) नागार्जुन

(1) जन-जन में जो ऊर्जा भर दे,
मैं उद्गाता हूं उस रवि का।

(2) याद आता मुझे अपना 'तरउनी' ग्राम
याद आती लीचियाँ औ आम।

(3) कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास।

(4) कालिदास, सच-सच बतलाना।
इंदुमती के मृत्युशोक से
अज रोया या तुम रोये थे?
कालिदास, सच-सच बतलाना।

(5) घून खाये शहतीरों पर बारह खड़ी विधाता बाँचे।
फटी भीत है, छत चूती है, आले पर विसतुइया नाचे।

(6) अमल धवल गिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है।

(7) पाँच पूत भारतमाता के दुश्मन था खूँखार।
गोली खाकर एक मर गया बाकी रह गए 4॥

(ग) त्रिलोचन

(1) मुझे जगत जीवन का प्रेमी
बना रहा है प्यार तुम्हारा।

(2) यों ही कुछ मुसकाकर तुमने
परिचय की वह गाँठ लगा दी
× × ×
जड़ता है जीवन की पीड़ा
निस्तरंग पाषाणी क्रीड़ा
तुमने अनजाने वह पीड़ा
छवि के सर से दूर भगा दी।

रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908–1974 ई०)

- रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना तथा प्रगतिवादी चेतना दोनों विद्यमान है।
- रामधारी सिंह 'दिनकर' को 'समय-सूर्य' तथा 'अधैर्य का कवि' भी कहा जाता है।
- दिनकर की प्रमुख कृतियाँ निम्नांकित हैं—

1. रेणुका (1935)	9. दिल्ली (1954)
2. हुंकार (1939)	10. उर्वशी (1961) (गीति नाट्य)
3. रसवंती (1940)	11. परशुराम की प्रतीक्षा (1963)
4. द्वन्द्वगीत (1940)	12. आत्मा की आँखें (1964)
5. कुरुक्षेत्र (1946) (प्रबन्ध काव्य)	13. हारे के हरिनाम
6. सामधेनी (1947)	14. धूप और धुँआ (1951)
7. रश्मिरथी (1952) (खण्ड काव्य)	15. नीम के पत्ते
8. नील कुसुम (1954)	16. इतिहास के आँसू (1951)

- दिनकर ने मैथिलीशरण गुप्त के सामने स्वयं को 'महज डिप्टी राष्ट्रकवि' ही माना है।
- दिनकर को 'उर्वशी' महाकाव्य के लिए सन् 1972 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। इसे 'गीति नाट्य' भी माना जाता है।

दिनकर की महत्वपूर्ण काव्य-पंक्तियाँ

(1) ओ द्विधाग्रस्त शार्दूल वोल।

(2) श्वानों को मिलता दूध-भात बच्चे भूखे अकुलाते हैं।
माँ की हड्डी से ठिठुर चिपक जाड़े की रात विताते हैं॥

(3) हटो व्योम के मेघ, पंथ से, स्वर्ग लूटने हम आते हैं,
दूध-दूध ओ वत्स! तुम्हारा दूध खोजने हम आते हैं।

(4) रे! रोक युधिष्ठिर को न यहाँ, जाने दे उनको स्वर्ग धीर।
पर फिरा हमें गांडीव गदा, लौटा दे अर्जुन भीम वीर॥

प्रयोगवाद और नयी कविता

- प्रयोगवाद का आरम्भ सन् 1943 ई० में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के सम्पादकत्व में प्रकाशित 'तार सप्तक' से माना जाता है। 'तार सप्तक' में सात कवि संगृहीत हैं।
- 'प्रयोगवाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग नंददुलारे वाजपेयी ने 'प्रयोगवादी रचनाएँ' शीर्षक निबन्ध में किया।
- नंद दुलारे वाजपेयी ने प्रयोगवाद को 'बैठे ठाले का धंधा' कहा है।
- 'अज्ञेय' के सम्पादकत्व में चार सप्तक प्रकाशित हो चुका है, जो निम्न है—(1) तार सप्तक (1943 ई०), (2) दूसरा सप्तक (1951 ई०), (3) तीसरा सप्तक (1959 ई०), (4) चौथा सप्तक (1979 ई०)।
- अज्ञेय ने 'तार सप्तक' की भूमिका में प्रयोगवादी कवियों को 'राहों के अन्वेषी' कहा है।
- अज्ञेय ने 'दूसरा सप्तक' की भूमिका में लिखा है—
(1) प्रयोग का कोई वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहे, नहीं हैं। न प्रयोग अपने-आप में इष्ट या साध्य है। ठीक इसी तरह कविता का भी कोई वाद नहीं है; कविता भी अपने-आप में इष्ट या साध्य नहीं है। अत: हमें 'प्रयोगवादी' कहना उतना ही सार्थक या निरर्थक है जितना हमें 'कवितावादी' कहना।
(2) प्रयोग अपने-आप में इष्ट नहीं है, वह साधन है और दोहरा साधन है क्योंकि एक तो वह उस सत्य को जानने का साधन है जिसे कवि प्रेषित करता है, दूसरे वह उस प्रेषण की क्रिया को और उसके साधनों को जानने का भी साधन है।
- 'तार सप्तक' (1943) में संकलित कवियों का कालक्रमानुसार विवरण निम्न है—

कवि	जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्म स्थान
अज्ञेय	1911–1987	देवरिया
रामविलास शर्मा	1912–2000	उन्नाव
गजानन माधव मुक्तिबोध	1917–1964	ग्वालियर
प्रभाकर माचवे 'बलवंत'	1917–1991	ग्वालियर
नेमिचन्द्र जैन	1918	आगरा
गिरिजा कुमार माथुर	1918–1994	मध्य प्रदेश
भारतभूषण अग्रवाल	1919–1975	मथुरा

- 'दूसरा सप्तक' (1951) में संकलित कवियों का कालक्रमानुसार विवरण निम्नलिखित है—

कवि	जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्म स्थान
शमशेर बहादुर सिंह	1911–1993	देहरादून
भवानीप्रसाद मिश्र	1913–1985	होशंगाबाद
शकुन्त माथुर	1922	दिल्ली
हरिनारायण घनश्याम व्यास	1923	मध्य प्रदेश
नरेश मेहता	1924	गुजरात
धर्मवीर भारती	1926–1997	इलाहाबाद
रघुवीर सहाय	1929–1990	लखनऊ

- 'तीसरा सप्तक' (1959) में संकलित कवियों का काल क्रमानुसार विवरण निम्नलिखित है—

कवि	जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्म स्थान
प्रयागनारायण त्रिपाठी	1919	रायबरेली
मदन वात्स्यायन	1922	
विजयदेव नारायण साही	1924–1982	काशी
कुँवर नारायण	1927	फैजाबाद
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	1927–1983	बस्ती
केदारनाथ सिंह	1932	
कीर्ति चौधरी	1935	उन्नाव

- 'चौथा सप्तक' (1979) में संकलित कवि निम्न हैं— (1) अवधेश कुमार, (2) राजकुमार कुंभज, (3) स्वदेश भारती, (4) नंदकिशोर आचार्य, (5) सुमन राजे, (6) श्रीराम वर्मा, (7) राजेन्द्र किशोर।
- प्रयोगवाद का प्रवर्तन करने का श्रेय सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' को दिया जाता है।
- डॉ० रामविलास शर्मा ने लिखा है, "प्रयोगवादी कविता में युग से उत्पन्न अनास्था, शंका, घुटन, कुण्ठा, भग्नाशा में से एक नये पथ के अन्वेषण की व्याकुल भावना दिखायी पड़ती है। ये कवि एक नये मार्ग का अनुसंधान करने के लिए व्याकुल हैं।"
- प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं—(1) अहंवादी प्रवृत्ति का प्राधान्य, (2) यथार्थवाद का आग्रह, (3) निराशावाद, (4) बौद्धिकता का प्राधान्य, (5) उपमानों की नवीनता, (6) साधारण विषयों का निरूपण, (7) भाषा का प्रयोग।
- प्रयोगवाद फ्रायड के दर्शन से प्रभावित है।
- प्रयोगवाद के सन्दर्भ में कुछ विद्वानों के मत इस प्रकार हैं—
  (1) "प्रयोगवाद शैलीगत विद्रोह है।" —डॉ० नगेन्द्र
  (2) "प्रयोगवाद दृष्टिकोण का अनुसन्धान है।" —केशरी कुंमार
  (3) "प्रयोग कलात्मक अनुभव का क्षण है।" —रघुवीर सहाय
  (4) "समाज के हित में जैसी क्रान्ति का सतत प्रक्रिया काम्य है, वैसे ही रचना के हित में प्रयोग की।" —डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी

प्रपद्यवाद (1956 ई०)

- प्रपद्यवाद का प्रवर्तन नलिन विलोचन शर्मा ने सन् 1956 में प्रकाशित 'नकेन के प्रपद्य' संकलन से किया।
- प्रपद्यवाद को 'नकेनवाद' भी कहा जाता है क्योंकि इसमें बिहार के तीन कवि नलिन विलोचन शर्मा, केशरी कुमार और नरेश के नाम के प्रथम अक्षरों को आधार मानकर 'नकेन' बनता है।
- प्रपद्यवाद और प्रयोगवाद में मूल अंतर यह है कि प्रपद्यवाद 'प्रयोग' को साध्य मानता है जबकि प्रयोगवाद 'प्रयोग' को साधन मानता है।
- आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने 'प्रपद्यवाद' के संबंध में लिखा है, "नकेनवाद जिसे उसके हिमायतियों ने प्रपद्यवाद भी कहा है, वास्तव में, प्रयोगशीलता का एक अतिवाद था। प्रयोगवाद के प्रवक्ताओं ने जो कुछ नया कहा था, उससे सन्तुष्ट न होकर उसे एक तार्किक सीमा तक पहुँचाने का कार्य नकेन-1, नकेन-2 नामक संग्रह की भूमिकाओं में दिखाई पड़ा था।"
- सन् 1952 में नरेश के सम्पादकत्व में प्रकाशित पत्रिका 'प्रकाश' में नकेनवादियों ने प्रपद्यवाद को तथाकथित 'प्रयोग – दश – सूत्री' घोषित किया।

नयी कविता (1954 ई०)

- 'नयी कविता' नाम अज्ञेय का दिया हुआ है। अपनी एक रेडियो वार्ता में उन्होंने इस पद का सर्वप्रथम प्रयोग किया था, जो बाद में 'नये पत्ते' के जनवरी-फरवरी, 1953 अंक में 'नयी कविता' शीर्षक से प्रकाशित हुई।
- 'नयी कविता' का आरम्भ सन् 1954 में जगदीश गुप्त द्वारा सम्पादित 'नयी कविता' पत्रिका के प्रकाशन से माना जाता है।
- बच्चन सिंह 'नयी कविता' का आरम्भ सन् 1951 से मानते हैं। इनके अनुसार नयी कविता प्रयोगवादी कविता का परिष्कृत रूप है।
- मुक्तिबोध ने लिखा है, "नयी कविता वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस् व्यक्ति की प्रतिक्रिया है। नयी कविता का स्वर एक नहीं विविध है।"
- डॉ० धर्मवीर भारती ने लिखा है, "नयी कविता प्रथम बार समस्त जीवन को व्यक्ति या समाज इस प्रकार के तंग विभाजनों के आधार पर न मापकर मूल्यों को सापेक्ष स्थिति में व्यक्ति और समाज दोनों को मापने का प्रयास कर रही है।"
- डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है, "नयी कविता में समग्र मनुष्य की बात ही नहीं कही गई है, वरन् मनुष्य के समग्र अनुभव-खण्डों को संयोजित किया गया है।"
- डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'भाषा-संवेदना और सर्जन' पुस्तक में नयी कविता के सन्दर्भ में लिखा है, "आज की कविता को जाँचने के लिए जो 'प्रास के रजत पाश' से मुक्त हो चुकी है, अलंकारों की उपयोगिता अस्वीकार हो चुकी है और छन्दों की पायले उतार चुकी हैं, काव्य भाषा का ही आधार शेष रह गया है क्योंकि कविता के संघटन में भाषा-प्रयोग की मूल केन्द्रीय स्थिति है। "कविता उत्कृष्ट शब्दों का उत्कृष्ट क्रम है।"
- विजयदेव नारायण साही ने 'नयी कविता' में 'लघु मानव' की प्रतिष्ठा की।

- 'नयी कविता' में दो प्रमुख तत्व हैं—(1) अनुभूति को प्रामाणिकता और (2) बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि।
- नयी कविता में 'कैक्टसवाद' का जन्म होता है। नयी कविता में कैक्टस प्रतीक रूप में अपनाया गया है जो अदम्य उत्साह, जीवनाकांक्षा और अनगढ़ता का प्रतीक है।

प्रमुख कवि

- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का संक्षिप्त जीवन-वृत्त निम्न है—

जन्म-मृत्यु	माता-पिता	प्रथम काव्य संग्रह	अन्तिम काव्य संग्रह
1911–1987	हीरानंद-वयंती देवी	भग्नदूत	ऐसा कोई घर आपने देखा है

- 'अज्ञेय' के काव्य-संग्रह निम्नलिखित हैं—

1. भग्नदूत (1933)
2. चिन्ता (1942)
3. इत्यलम् (1946)
4. हरी घास पर क्षण भर (1949)
5. बावरा अहेरी (1954)
6. इंद्रधनुष रौंदे हुए ये (1957)
7. अरी ओ करुणा प्रभामय (1959)
8. आँगन के पार द्वार (1961)
9. पूर्वा (1965)
10. सुनहले शैवाल (1966)
11. कितनी नावों में कितनी बार (1967)
12. क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1969)
13. सागर मुद्रा (1970)
14. पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1973)
15. महावृक्ष के नीचे (1977)
16. नदी की बाँक छाया (1981)
17. ऐसा कोई घर आपने देखा है (1986)

- अज्ञेय अस्तित्ववाद में आस्था रखने वाले कवि हैं।
- अज्ञेय को प्रयोगवाद तथा नयी कविता का शलाका पुरुष भी कहा जाता है।
- अज्ञेय की चर्चित कविताएँ निम्नांकित हैं—(1) असाध्य वीणा, (2)कलगी बाजरे की, (3) साँप, (4) नदी के द्वीप, (5) हरी घास पर क्षण भर, (6) जितना तुम्हारा सच, (7) शब्द और सत्य, (8) यह दीप अकेला।
- 'असाध्य वीणा' एक लम्बी कविता है। इसका मूल भाव 'अहं का विसर्जन' है।
- मुक्तिबोध का पूरा नाम गजानन माधव था। इन्हें 'गहन अनुभूति और तीव्र इंद्रियबोध' का कवि भी कहा जाता है।
- मुक्तिबोध की दो काव्य कृतियां प्रकाशित हैं—(1) चाँद का मुँह टेढ़ा है (1964) और (2) भूरि भूरि खाक धूल (1980 ई०)।
- मुक्तिबोध की चर्चित कविताएँ निम्नांकित हैं—(1) अँधेरे में, (2) ब्रह्म राक्षस, (3) अंतःकरण का आयतन, (4) भूल गलती।
- 'अँधेरे में' का पहला प्रकाशन 'कल्पना' में 1964 में 'आशंका के द्वीप अँधेरे में' नाम से हुआ।
- रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है—"मुक्तिबोध का काव्य-संकलन 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' एक बड़े कलाकार की 'स्कैच-बुक' लगता है।"
- 'अँधेरे में' एक लम्बी कविता है। विभिन्न आलोचकों ने इसे विभिन्न दृष्टिकोण से देखा है। जो निम्न हैं—

शमशेर बहादुर सिंह—"यह कविता देश के आधुनिक जन इतिहास का स्वतंत्रता

पूर्व और पश्चात एक दहकता इस्पाती दस्तावेज है। इसमें अजब और अद्‌भुत रूप से व्यक्ति और जन का एकीकरण है।"

रामविलास शर्मा—"अपराध भावना का अनुसन्धान"।

नामवर सिंह—"अस्मिता की खोज"।

इन्द्रनाथ मदान—"आत्म संशोधन का अनुसन्धान"।

निर्मला जैन—"अन्तस्थल का विप्लव"।

प्रभाकर माचवे—"लावा"।

रामविलास शर्मा—"अरक्षित जीवन की कविता"।

रामस्वरूप चतुर्वेदी—"अँधेरे में के लम्बे खण्डों में कवि की समस्या है समाज के उत्थान-पतन और आन्दोलन के बीच अपनी रचना के प्रेरक तत्त्वों का अभिज्ञान, रचना कैसे बाहर से अन्दर आती है और फिर कैसे बाहर दूर-दूर तक परिव्याप्त हो जाती है।"

- मुक्तिबोध ने 'अँधेरे में' कविता की रचना फैंटेसी में की है।
- मुक्तिबोध ने फैंटेसी को निम्न ढंग से परिभाषित किया है—

(1) "ज्ञान गर्भ फैंटेसी द्वारा, सार रूप में, जीवन की पुनर्रचना करता है।"

(2) "फैंटेसी के अन्तर्गत भाव-पक्ष प्रधान और विभाव-पक्ष गौण और प्रच्छन्न तो होता ही है, साथ ही यह भाव-पक्ष कल्पना को उत्तेजित करके, बिम्बों की रचना करते हुए, एक ऐसा मूर्त विधान उपस्थित करता है कि जिस विधान में उस विधान ही के नियम होते हैं।"

- शमशेर बहादुर सिंह प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं।
- शमशेर बहादुर सिंह के प्रमुख काव्य-संग्रह निम्न हैं—

(1) कुछ कविताएँ (1959), (2) कुछ और कविताएँ (1961), (3) चुका भी हूँ नहीं मैं (1975), (4) इतने अपने पास (1980), (5) उदिता अभिव्यक्ति का संघर्ष (1980), (6) बात बोलेगी (1981), (7) काल तुमसे होड़ है मेरी (1988), (8) कहीं बहुत दूर से सुन रहा हूँ (1995), (9) सुकून की तलाश (1998)।

- शमशेर की कविताओं के सन्दर्भ में कुछ महत्वपूर्ण कथन निम्न हैं—

विद्वान — कथन

अज्ञेय—"शमशेर कवियों का कवि हैं।"

मलयज—"शमशेर 'मूड्स' के कवि हैं किसी विजन के नहीं।"

मुक्तिबोध—"शमशेर की आत्मा ने अपनी अभिव्यक्ति का एक प्रभावशाली भवन अपने हाथों तैयार किया है। उस भवन में जाने से डर लगता है—उसकी गम्भीर प्रयत्न साध्य पवित्रता के कारण।"

मुक्तिबोध—"शमशेर की मूल मनोवृत्ति एक इंप्रेशनिस्टिक चित्रकार की है।"

मुक्तिबोध—"प्रणय जीवन का प्रसंगबद्ध रसवादी कवि।"

विष्णु खरे—"शमशेर की शमशेरियत"।

रामचन्द्र तिवारी—"शमशेर का गद्य हिन्दी का जातीय गद्य है।"

रामस्वरूप चतुर्वेदी—"भाषा में बोलचाल के गद्य का लहजा, और लय में संगीत का चरम अमूर्तन इन दो परस्पर प्रतिरोधी मनःस्थितियों को उनकी कला साधती है।"

- शमशेर बहादुर सिंह ने लिखा है, "टेकनीक में एजरा पाउंड शायद मेरा सबसे बड़ा आदर्श बन गया था।"
- शमशेर का कथन है, "मैं उर्दू और हिन्दी का दोआब हूँ।"
- शमशेर बहादुर सिंह की चर्चित कविताएँ निम्न हैं—(1) टूटी हुई बिखरी हुई, (2) अमन का राग (लम्बी कविता), (3) एक पीली शाम, (4) धूप कोठरी के आईने में खड़ी, (5) घिर गया है समय का रथ, (6) समय साम्यवादी।
- कहानीकार उदय प्रकाश ने भवानीप्रसाद मिश्र को 'कविता का गाँधी' कहा है लेकिन उन्होंने खुद को 'गाँधी का बेटा' कहा है।
- भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य-संग्रह निम्न हैं—

1. गीत फरोश (1953)	10. परिवर्तन जिये (1976)
2. चकित है दु:ख (1968)	11. इद्‌म न मम् (1977)
3. अँधेरी कविताएँ (1968)	12. त्रिकाल संध्या (1978)
4. गाँधी पंचशती (1969)	13. शरीर कविता फसलें और फूल (1980)
5. बुनी हुई रस्सी (1971)	14. मानसरोवर दिन (1981)
6. खुशबू के शिलालेख (1973)	15. सम्प्रति (1982)
7. व्यक्तिगत (1973)	16. नीली रेखा तक (1984)
8. अन्तर्गत (1979)	17. तूस की आग (1985)
9. अनाम तुम आते हो (1979)	18. कालजयी (1980) (खण्डकाव्य)

- भवानी प्रसाद मिश्र को 'सहजता का कवि' कहा जाता है।
- भवानी प्रसाद मिश्र की चर्चित कविताएँ निम्नांकित हैं—(1) कमल के फूल, (2) सतपुड़ा के जंगल, (3) वाणी की दीनता, (4) टूटने का सुख, (5) गीत फ़रोश।
- नरेश मेहता नये कवियों में महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं—
  (क) काव्य संग्रह—(1) वन पाखी सुनो, (2) बोलने दो चीड़ को, (3) मेरा समर्पित एकांत, (4) चैत्या, (5) उत्सवा।
  (ख) प्रबन्ध काव्य—(1) संशय की एक रात, (2) महाप्रस्थान, (3) प्रवाद पर्व, (4) शबरी।
- 'समय देवता' शीर्षक कविता इनकी एक लम्बी कविता है जिसमें धरती के विभिन्न भागों की सांस्कृतिक-राजनीतिक स्थिति का 'सीनिरियो' प्रस्तुत किया गया है।
- नरेश मेहता की अन्य चर्चित व महत्वपूर्ण रचनाएँ निम्न हैं—
  (1) उपस् (1, 2, 3, 4), (2) किरन धेनुएँ, (3) चाहता मन।
- धर्मवीर भारती मूलत: प्रेम के कवि हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—(1) ठण्डा लोहा (1952), (2) अंधा युग (1955), (3) कनुप्रिया (1959), (4) सात गीत वर्ष (1959), (5) देशान्तर।
- 'कनुप्रिया' में राधा और कृष्ण के प्रेम का वर्णन है।
- 'देशान्तर' काव्य-संग्रह विदेशी कविताओं का संग्रह है।
- 'प्रेमथ्यु गाथा' एक लम्बी कविता है। 'प्रेमथ्यु' एक यूनानी पौराणिक पुरुष है।
- मदन वात्स्यायन का मूल नाम लक्ष्मीनिवास सिंह है।
- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। इनकी निम्नांकित कृतियाँ

प्रकाशित हैं—
(1) काठ की घण्टियाँ, (2) बाँस का पुल, (3) एक सूनी नाव, (4) गर्म हवाएँ, (5) कुआनो नदी, (6) कविताएँ-1, (7) कविताएँ-2, (8) जंगल का दर्द, (9) खूटियों पर टँगे लोग।

- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की चर्चित कविताएँ निम्नांकित हैं—
  (1) काफी हाउस में एक मेलोड्रामा, (2) अहं से मेरे बड़ी हो तुम, (3) विगत प्यार, (4) लिपटा रजाई में, (5) मैंने कब कहा।
- केदारनाथ सिंह नयी कविता में बिम्ब को बहुत महत्व देते हैं।
- केदारनाथ सिंह की महत्वपूर्ण काव्य कृतियाँ निम्नलिखित हैं—
  (1) अभी बिल्कुल अभी, (2) जमीन पक रही है, (3) यहाँ से देखो, (4) अकाल में सारस, (5) उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ, (6) बाघ (लम्बी कविता), (7) तालसताय और साइकिल।
- केदारनाथ सिंह की चर्चित कविताएँ निम्न हैं—
  (1) बनारस, (2) अनागत, (3) फर्क नहीं पड़ता।
- प्रयोगवाद के अन्य कवि और उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

कवि	काव्य-संग्रह
रामविलास शर्मा	(1) रूप तरंग (1956), (2) सदियों के सोए जाग उठे (1988), (3) बुद्ध वैराग्य तथा प्रारम्भिक कविताएँ (1997)।
प्रभाकर माचवे	(1) मेपल, (2) स्वप्न भंग, (3) अनुक्षण।
नेमिचन्द्र जैन	(1) अचानक हम फिर, (2) एकान्त।
गिरिजा कुमार माथुर	(1) मंजीर (1941), (2) नाश और निर्माण (1946), (3) धूप के धान, (4) शिला पंख चमकीले, (5) छाया मत छूना, (6) भीतरी नदी की यात्रा (1975), (7) अभी कुछ और, (8) साक्षी रहे वर्तमान, (9) पृथ्वी कल्प।
भारतभूषण अग्रवाल	(1) छवि के बंधन, (2) जागते रहो, (3) मुक्ति मार्ग, (4) ओ अप्रस्तुत मन, (5) कागज के फूल, (6) एक उठा हुआ हाथ, (7) उतना वह सूरज है, (8) अनुपस्थित लोग।
शकुंत माथुर	(1) चाँदनी चूनर, (2) अभी और कुछ, (3) लहर नहीं टूटेगी।
हरिनारायण व्यास	(1) मृग और तृष्णा, (2) त्रिकोण पर सूर्योदय, (3) बरगद के चिकने पत्ते।
रघुवीर सहाय	(1) सीढ़ियों पर धूप में (1960), (2) आत्महत्या के विरुद्ध (1967), (3) हँसो हँसो जल्दी हँसो (1975), (4) लोग भूल गए हैं (1982), (5) कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ (1989), (6) एक समय था।
विजयदेव नारायण साही	(1) साखी, (2) मछलीघर, (3) संवाद तुमसे।
कुँवर नारायण	(1) चक्रव्यूह (1956), (2) परिवेश : हम तुम (1961)।

(3) अपने सामने (1979), (4) कोई दूसरा नहीं (1993), (5) इन दिनों (2002), प्रबन्ध काव्य—(6) आत्मजयी (1965), (7) वाजश्रवा के बहाने (2008)।

साठोत्तरी कविता आन्दोलन

- सातवें दशक के आरम्भ में सात कवियों का एक काव्य संग्रह इलाहाबाद से 'विद्रोही पीढ़ी' नाम से प्रकाशित हुआ।
- सन् 1963 ई० में जगदीश चतुर्वेदी के सम्पादन में 14 कवियों का काव्य-संग्रह 'प्रारम्भ' शीर्षक से प्रकाशित हुआ जिसमें 'अभिनव काव्य' की स्थापना का दावा किया गया।
- 'प्रारम्भ' में संकलित 14 कवि निम्न हैं—

1. जगदीश चतुर्वेदी	8. विष्णु चन्द्र शर्मा
2. कैलाश वाजपेयी	9. श्याम मोहन श्रीवास्तव
3. नरेन्द्र धीर	10. मनमोहिनी
4. राजकमल चौधरी	11. रमेश गौड़
5. केशु	12. राजीव सक्सेना
6. ममता अग्रवाल	13. स्नेहमयी चौधरी
7. श्याम परमार	14. नर्मदा प्रसाद त्रिपाठी

- जगदीश चतुर्वेदी ने सन् 1964 ई० में डॉ० इन्द्रनाथ मदान एवं रमेश कुन्तल 'मेघ' द्वारा सम्पादित 'अभिव्यक्ति' में 'अभिनव काव्य' को एक नया नाम 'एंटी पोइट्री' या 'अकविता' दिया।
- सन् 1965 ई० में श्याम परमार ने 'अकविता' पत्रिका का प्रवर्तन किया। श्याम परमार ही 'अकविता' आन्दोलन के प्रवर्तक हैं।
- श्याम परमार ने अकविता को निषेध काव्य से अलग मानते हुए लिखा है, "यह अन्तर्विरोधों को अन्वेषक, विभाजित व्यक्तित्व की शोधक और परिपक्व निर्वैयक्तिकता की द्योतक है।"
- सन् 1973 ई० में जगदीश चतुर्वेदी ने 11 कवियों का एक नया काव्य-संकलन 'निषेध' शीर्षक से प्रकाशित करवाया।
- 'अस्वीकृत कविता' की स्थापना श्रीराम शुक्ल ने 'उत्कर्ष' (जुलाई, 1969) के माध्यम से की।
- 'बीट जैनरेशन' की स्थापना सर्वप्रथम सन् 1952 ई० में अमेरिका में हुई। इसके प्रवर्तक जैक कैरूआक एवं एलेन गिंसबर्ग हैं।
- गिंसबर्ग की महत्वपूर्ण काव्य कृति 'हाउल' का प्रकाशन सन् 1954 में हुआ।
- हिन्दी में 'बीट पीढ़ी' बंगाल की 'भूखो पीढ़ी' के माध्यम से आया। हिन्दी में 'बीट पीढ़ी' का प्रवर्तक राजकमल चौधरी को माना जाता है।
- 'युयुत्सावादी कविता' आन्दोलन का प्रवर्तन शलभ श्री रामसिंह ने सन् 1965 में कलकत्ता से प्रकाशित 'युयुत्सा' पत्रिका से किया।
- 'नव प्रगतिशील' काव्यान्दोलन का प्रवर्तन नवल किशोर ने किया।

- सन् 1968 ई० में डॉ० रणजीत ने आठ कवियों की रचनाओं का संकलन 'प्रतिश्रुत पीढ़ी' शीर्षक से प्रकाशित करवाया।
- 'आज की कविता' आन्दोलन का प्रवर्तन हरीश मादानी ने किया।
- 'वाम कविता' या 'प्रतिबद्ध कविता' आन्दोलन का प्रवर्तन डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव ने किया।
- 'सनातन सूर्योदयी' आन्दोलन का प्रवर्तन वीरेन्द्र कुमार जैन ने 'भारती पत्रिका' के माध्यम से मार्च 1962 में किया।
- सन् 1967 में डॉ० रवीन्द्र भ्रमर द्वारा 'सहज कविता' आन्दोलन का प्रवर्तन किया गया।
- 'संचेतना' पत्रिका के जून 1973 के 'विचार कविता विशेषांक' के माध्यम से 'विचार कविता' आन्दोलन का प्रवर्तन हुआ। 'संचेतना' के तत्कालीन सम्पादक डॉ० महीप सिंह और डॉ० नरेन्द्र मोहन थे।
- 'साम्प्रतिक कविता' आन्दोलन का प्रवर्तन श्याम नारायण ने किया।
- 'निर्दिशायामी कविता' का प्रवर्तन सत्यदेव राजहंस ने किया।
- 'ताजी कविता' का प्रवर्तन लक्ष्मीकांत वर्मा ने किया।
- 'टटकी कविता' का प्रवर्तन रामवचन राय ने किया।
- 'समकालीन कविता' आन्दोलन का प्रवर्तन डॉ० विशम्भरनाथ उपाध्याय ने सन् 1976 में अपनी पुस्तक 'समकालीन कविता की भूमिका' के माध्यम से किया।
- 'कैप्सूल या सूत्र कविता' आन्दोलन का प्रवर्तन डॉ० ओंकारनाथ त्रिपाठी ने किया।

समकालीन कवि और काव्य संग्रह

कवि — **काव्य-संग्रह**

जगदीश गुप्त—(1) नाव के पाँव, (2) शब्द-दंश, (3) हिम विद्ध, (4) युग्म, (5) छंदशती, (6) आदिम एकांत।

दुष्यंत कुमार—(1) सूर्य का स्वागत (1957), (2) आवाजों के घेरे (1963), (3) जलते हुए वन का वसंत, (4) साये में धूप (1975)।

श्रीकांत वर्मा—(1) दिनारंभ (1967), (2) माया-दर्पण (1967), (3) जलसा घर (1973), मगध।

राजकमल चौधरी—(1) कंकावती, (2) मुक्ति प्रसंग, (3) स्वर गंधा।

रामदरश मिश्र—(1) बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ, (2) पक गयी है धूप, (3) कंधे पर सूरज, (4) दिन एक नदी बन गया, (5) शब्द सेतु, (6) बारिश में भींगते हुए बच्चे।

सुदामा पाण्डे धूमिल—(1) संसद से सड़क तक (1972), (2) कल सुनना मुझे (1976), (3) सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र (1984)।

चंद्रकांत देवताले—(1) हड्डियों में छिपा ज्वर (1973), (2) दीवारों पर खून से (1975), (3) लकड़बग्घा हँस रहा है (1980), (4) रोशनी के मैदान की तरफ (1982), (5) भूखण्ड तप रहा है (1982), (6) आग हर चीज में बताई गई थी (1987), (7) पत्थर की बेंच (1996), (8) इतनी पत्थर रोशनी (2002), (9) [illegible] मौदा (1995), (10) उजाड़ में संग्रहालय (2003), (11)

जहाँ थोड़ा-सा सूर्योदय होगा (2008), (12) पत्थर फेंक रहा हूँ (2010)।

विनोद कुमार शुक्ल—(1) लगभग जयहिन्द, (2) वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह, (3) सब कुछ होना बचा रहेगा, (4) अतिरिक्त नहीं, (5) कविता से लम्बी कविता, (6) आकाश धरती को खटखटाता है।

भगवत रावत—(1) समुद्र के बारे में (1977), (2) दी हुई दुनिया (1981), (3) हुआ कुछ इस तरह (1988), (4) सुनो हीरामन (1991), (5) अथ रूप कुमार कथा (1992), (6) सच पूछो तो (1996), (7) विथा कथा (1997), (8) हमने उनके घर देखे (2001), (9) ऐसी कैसी नींद (2004), (10) निर्वाचित कविताएँ (2004), (11) कहते हैं कि दिल्ली की है कुछ आबोहवा और (2007), (12) अम्मा से बातें (2008), (13) देश एक राग है (2009)।

लक्ष्मीकांत वर्मा—(1) अतुकान्त, (2) तीसरा पक्ष।

लीलाधर जगूड़ी—(1) शंखमुखी शिखरों पर, (2) नाटक जारी है, (3) इस यात्रा में, (4) रात अब भी मौजूद है, (5) बची हुई पृथ्वी, (6) घबराए हुए शब्द, (7) भय भी शक्ति देता है, (8) अनुभव के आकाश में चाँद, (9) महाकाव्य के विना, (10) ईश्वर की अध्यक्षता में, (11) खबर का मुँह विज्ञापन से ढँका है।

अशोक वाजपेयी—(1) शहर अब भी संभावना है (1966), (2) एक पतंग अनंत में (1984), (3) इतने से (1986), (4) तत्पुरुष (1989), (5) कहीं नहीं वहीं (1991), (6) बहुरि अकेला (1992), (7) थोड़ी-सी जगह (1994), (8) घास में दुबका आकाश (1994), (9) आविन्यों (1995), (10) जो नहीं है (1996), (11) अभी कुछ और (1998)।

इब्बार रब्बी—(1) खाँसती हुई नदी (1969), (2) घोषणा पत्र (1981), (3) लोग बाग (1985), (4) वर्षा में भींगकर (2000)।

लीलाधर मंडलोई—(1) घर-घर घूमा, (2) रात विरात, (3) मगर एक आवाज, (4) काल बाँका तिरछा, (5) देखा-अदेखो, (6) क्षमा याचना, (7) उपस्थित है समुद्र, (8) ये बदमस्ती तो होगी, (9) मन बेपरवाह, (10) लिक्खे में दुःख, (11) एक बहुत कोमल तान।

मलयज—(1) जख्म पर धूल।

कुमार विमल—(1) एक छोटी-सी लड़ाई (1980), (2) रंग खतरे में है (1982)।

विमल कुमार—(1) सपने में एक औरत से बातचीत, (2) यह मुखौटा किसका है, (3) पानी का दुखड़ा।

कैलाश वाजपेयी—(1) संक्रांत, (2) देहान्त से हटकर, (3) तीसरा अँधेरा, (4) महास्वप्न का मध्यान्तर, (5) हवा में हस्ताक्षर।

सौमित्र मोहन—(1) लुकमन अली, (2) निषेध, (3) पहचान, (4) चाकू से खेलते हुए।

वीरेन डंगवाल—(1) इसी दुनिया में (1991)।

राजेश जोशी—(1) समरगाथा (लंबी कविता), (2) एक दिन बोलेंगे पेड़, (3) मिट्टी का चेहरा, (4) नेपथ्य में हँसी, (5) दो पंक्तियों के बीच, (6) चाँद की वर्तनी।

मंगलेश डबराल—(1) पहाड़ पर लालटेन, (2) घर का रास्ता, (3) हम जो देखते हैं, (4) आवाज भी एक जगह है, (5) मुझे दिखा एक मनुष्य।

नरेन्द्र जैन—(1) दरवाजा खुलता है, (2) तीता के लिए कविताएँ, (3) यह मैं हूँ पत्थर, (4) उदाहरण के लिए, (5) सराय में कुछ दिन, (6) काला सफेद में प्रविष्ट होता है, (7) चौराहे पर लोहार।

ऋतुराज—(1) एक मरणधर्मा और अन्य।

मदन कश्यप—(1) लेकिन उदास है पृथ्वी (1992), (2) नीम रोशनी में (2000), (3) कुरूज (2006)।

अरुण कमल—(1) अपनी केवल धार (1980), (2) सबूत (1989), (3) नये इलाके में (1996), (4) पुतली में संसार (2001)।

ज्ञानेन्द्रपति—(1) आँख हाथ बनते हुए (1970), (2) शब्द लिखने के लिए ही यह कागज बना है (1981), (3) गंगा तट (2000), (4) संशयात्मा (2004), (5) भिनसार (2006)।

कुमार अम्बुज—(1) किवाड़ (1992), (2) क्रूरता (1996), (3) अनंतिम (1998), (4) अतिक्रमण (2002), (5) अमीरी रेखा (2011)।

स्वप्निल श्रीवास्तव—(1) ईश्वर एक लाठी है, (2) ताख पर दियासलाई, (3) मुझे दूसरी पृथ्वी चाहिए।

बद्रीनारायण—(1) सच सुने कई दिन हुए, (2) शब्द पदीयम, (3) खुदाई में हिंसा।

निलय उपाध्याय—(1) अकेला घर हुसैन का, (2) कटौती।

एकांत श्रीवास्तव—(1) मिट्टी से कहूँगा धन्यवाद, (2) नागरिक व्यथा, (3) अन्न हैं मेरे शब्द।

बोधिसत्व—(1) सिर्फ कवि नहीं (1991), (2) हम जो नदियों का संगम है (2000), (3) दुःख तन्त्र (2004), (4) खत्म नहीं होती बात (2010)।

उदय प्रकाश—(1) सुनो कारीगर (1980), (2) अबूतर कबूतर (1984), (3) रात में हारमोनियम, (4) 'क' से कबूतर।

प्रयाग शुक्ल—(1) यह लिखता हूँ, (2) बीते कितने बरस, (3) कविता 93

रमेशचन्द्र शाह—(1) कछुए की पीठ पर, (2) हरिश्चन्द्र आओ, (3) नदी भागती आयी, (4) प्यारे मुचकुन्द, (5) देखते हैं शब्द भी अपना समय

बलदेव वंशी—(1) अँधेरे के बावजूद, (2) बच्चे की दुनिया, (3) कोई आवाज नहीं, (4) उपनगर में वापसी, (5) वाक गंगा।

आलोक धन्वा—(1) दुनिया रोज बनती है।

श्रीराम वर्मा—(1) कालपात्र।

प्रमुख समकालीन महिला कवयित्री

कवयित्री	काव्य-संग्रह

कात्यायनी—(1) चेहरों पर आँच, (2) सात भाइयों के बीच चंपा, (3) इस

पौरूष पूर्ण समय में, (4) जादू नहीं कविता, (5) राख अँधेरे की बारिश में, (6) फुटपाथ पर कुर्सी।

अनामिका—(1) गलते पत्तों की चिट्ठी, (2) बीजाक्षर, (3) समय के शहर में, (4) अनुष्टुप, (5) कविता में औरत, (6) खुरदरी हथेलियाँ।

नीलेश रघुवंशी—(1) घर निकासी (1997), (2) पानी का स्वाद।

इंदु जैन—(1) आँख से भी छोटी चिड़िया, (2) हमसे पहले भी लोग यहाँ थे, (3) हवा की मोहताज क्यूँ रहूँ?, (4) कौन तेरा कौन-सा, (5) कुछ न कुछ टकराएगा जरूर।

मैत्रेयी पुष्पा—(1) लकीरें।

गगन गिल—(1) एक दिन लौटेगी लड़की, (2) अँधेरे में बुद्धा, (3) यह आकांक्षा समय नहीं, (4) थपक-थपक दिल थपक-थपक।

अर्चना वर्मा—(1) कुछ दूर तक, (2) लौटा है विजेता।

पद्मा सचदेव—(1) मेरी कविता मेरे गीत।

जया जादवानी—(1) मैं शब्द हूँ, (2) अनन्त सम्भावनाओं के बाद भी।

गीताश्री—(1) कविता जितना हक।

नीरजा माधव—(1) प्रथम छंद से स्वप्न, (2) प्यार लौटाना चाहेगा, (3) प्रस्थानत्रयी।

वर्तिका नंदा—(1) मरजानी।

प्रयोगवादी कवियों की महत्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

(क) अज्ञेय

(1) वही परिचित दो आँखें ही
चिर माध्यम हैं
सब आँखों से सब दर्दों से
मेरे लिए परिचय का।

(2) यह दीप अकेला स्नेह भरा,
है गर्व भरा मदमाता,
पर इसको भी पंक्ति दे दो।

(3) किन्तु हम हैं द्वीप।
हम धारा नहीं हैं।
स्थिर समर्पण है हमारा हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के।

(4) हम निहारते रूप,
काँच के पीछे
हाँफ रही है मछली

(5) साँप! तुम सभ्य तो हुए नहीं—
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।
तब कैसे सीखा डँसना-विष कहाँ पाया?

(6) भोर का बावरा अहेरी
पहले बिछाता है आलोक की
लाल-लाल कनिया।

(7) मौन भी अभिव्यंजना है
जितना तुम्हारा सच है
उतना ही कहो।

(8) अगर मैं तुमको
लजाती साँझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता
× × ×
ये उपमान मैले हो गये हैं।
देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच!

(9) मूत्र सिंचित मृत्तिका के वृत्त में
तीन टाँगों पर खड़ा नतग्रीव
धैर्यधन गदहा।

(10) यह अनुभव अद्वितीय
जो केवल मैंने जिया
सब तुम्हें दिया

(11) आह, मेरा श्वास है उत्तप्त
धमनियों में उमड़ आयी है लहू की धार
प्यार है अभिशप्त
तुम कहाँ हो नारि।

(12) अहं! अन्तर्गुहा वासी! स्वरति! क्या मैं चीन्हता कोई न दूजी राह?

(13) वंचना है चाँदनी
झूठ वह आकाश का निरवधि गहन विस्तार
शिशिर की राका निशा की शान्ति है निस्सार!

(14) एक तीक्ष्ण अपांग से कविता उत्पन्न हो जाता है
एक चुंबन में प्रणय फलीभूत हो जाता है
पर मैं अखिल विश्व का प्रेम खोजता फिरता हूँ।
क्योंकि मैं उसके असंख्य हृदयों का गाथाकार हूँ।

(ख) मुक्तिबोध

(1) हर एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सुस्मित में, विमल सदानीरा है
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य-पीड़ा है।
'अँधेरे में' से

(2) ओ मेरे आदर्शवादी मन,
ओ मेरे सिद्धान्तवादी मन

पौरुष पूर्ण समय में, (4) जादू नहीं कविता, (5) राख अँधेरे की बारिश में, (6) फुटपाथ पर कुर्सी।

अनामिका—(1) गलते पत्तों की चिट्ठी, (2) बीजाक्षर, (3) समय के शहर में, (4) अनुष्टुप, (5) कविता में औरत, (6) खुरदरी हथेलियाँ।

नीलेश रघुवंशी—(1) घर निकासी (1997), (2) पानी का स्वाद।

इंदु जैन—(1) आँख से भी छोटी चिड़िया, (2) हमसे पहले भी लोग यहाँ थे, (3) हवा की मोहताज क्यूँ रहूँ ?, (4) कौन तेरा कौन-सा, (5) कुछ न कुछ टकराएगा जरूर।

मैत्रेयी पुष्पा—(1) लकीरें।

गगन गिल—(1) एक दिन लौटेगी लड़की, (2) अँधेरे में बुद्धा, (3) यह आकांक्षा समय नहीं, (4) थपक-थपक दिल थपक-थपक।

अर्चना वर्मा—(1) कुछ दूर तक, (2) लौटा है विजेता।

पद्मा सचदेव—(1) मेरी कविता मेरे गीत।

जया जादवानी—(1) मैं शब्द हूँ, (2) अनन्त सम्भावनाओं के बाद भी।

गीताश्री—(1) कविता जितना हक।

नीरजा माधव—(1) प्रथम छंद से स्वप्न, (2) प्यार लौटाना चाहेगा, (3) प्रस्थानत्रयी।

वर्तिका नंदा—(1) मरजानी।

प्रयोगवादी कवियों की महत्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

(क) अज्ञेय

(1) वही परिचित दो आँखें ही
चिर माध्यम हैं
सब आँखों से सब दर्दों से
मेरे लिए परिचय का।

(2) यह दीप अकेला स्नेह भरा,
है गर्व भरा मदमाता,
पर इसको भी पंक्ति दे दो।

(3) किन्तु हम हैं द्वीप।
हम धारा नहीं हैं।
स्थिर समर्पण है हमारा हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के।

(4) हम निहारते रूप,
काँच के पीछे
हाँफ रही है मछली

(5) साँप! तुम सभ्य तो हुए नहीं—
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।
तब कैसे सीखा डँसना-विष कहाँ पाया ?

(6) भोर का बावरा अहेरी
पहले बिछाता है आलोक की
लाल-लाल कनिया।

(7) मौन भी अभिव्यंजना है
जितना तुम्हारा सच है
उतना ही कहो।

(8) अगर मैं तुमको
ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता
× × ×
ये उपमान मैले हो गये हैं।
देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच।

(9) मूत्र सिंचित मृत्तिका के वृत्त में
तीन टाँगों पर खड़ा नतग्रीव
धैर्यधन गदहा।

(10) यह अनुभव अद्वितीय
जो केवल मैंने जिया
सब तुम्हें दिया

(11) आह, मेरा श्वास है उत्तप्त
धमनियों में उमड़ आयी है लहू की धार
प्यार है अभिशप्त
तुम कहाँ हो नारि।

(12) अहं! अन्तर्गुहा वासी! स्वरति! क्या मैं चीन्हता कोई न दूजी राह ?

(13) वंचना है चाँदनी
झूठ वह आकाश का निरवधि गहन विस्तार
शिशिर की राका निशा की शान्ति है निस्सार!

(14) एक तीक्ष्ण अपांग से कविता उत्पन्न हो जाता है
एक चुंबन में प्रणय फलीभूत हो जाता है
पर मैं अखिल विश्व का प्रेम खोजता फिरता हूँ।
क्योंकि मैं उसके असंख्य हृदयों का गाथाकार हूँ।

(ख) मुक्तिबोध

(1) हर एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सुस्मित में, विमल सदानीरा है
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य-पीड़ा है।

'अँधेरे में' से

(2) ओ मेरे आदर्शवादी मन,
ओ मेरे सिद्धान्तवादी मन

एक दुःख लेकर वह गान देता था
कितना कुशल था प्रगतिवादी
हर दुःख का कारण पहचान लेता था।

(छ) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

(1) लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं
हमें तो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।

(2) लोकतंत्र को जूते की तरह
लाठी में लटकाए
भागे जा रहे हैं सभी
सीना फुलाए।

(3) मैं नया कवि हूँ—
इसी से जानता हूँ
सत्य की चोट बहुत गहरी होती है।

(ज) केदारनाथ सिंह

(1) मैंने जब भी सोचा
मुझे रामचंद्र शुक्ल की मूँछें याद आई।

(2) मैं पूरी ताकत के साथ
शब्दों को फेंकना चाहता हूँ।

समकालीन कवियों की महत्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

(क) दुष्यंत कुमार

(1) कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।

(2) हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

(3) मत कहो आकाश में कुहरा घना है,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।

दामा पाण्डे 'धूमिल'

(1) यह जनतंत्र
जिसकी रोज सैकड़ों बार हत्या होती है

(2) [illegible]
तेली की वह घा[illegible]
जिसमें आधा तेल है
आधा पानी है।

(3) भूख से रिरियाती हुई हथेली का नाम
दया है
और भूख से
तनी हुई मुट्ठी का नाम
नक्सलवाड़ी है।

(4) हाँ, हाँ, मैं कवि हूँ
कवि-यानी भाषा में भदेस हूँ।

(5) कविता
भाषा में
आदमी होने की तमीज है।

(6) भाषा उस तिकड़मी दरिन्दे की कौर है
जो सड़क पर और है।

(7) क्रांति
यहाँ के असंगत लोगों के लिए
किसी अबोध बच्चे के
हाथों की जूजी है।

(8) एक सही कविता
पहले
एक सार्थक वक्तव्य होती है।

(9) कविता
शब्दों की अदालत में
अपराधियों के कटघरे में खड़े
एक निर्दोष आदमी का हलफनामा है।

(10) अब उसे मालूम है कि कविता
घेराव में
किसी बौखलाए हुए आदमी का
संक्षिप्त एकालाप है।

(11) जिस पर कोई नहीं
खाना चाहता
आजादी एक जूठी थाली है।

(13) दरअस्ल, अपने यहाँ जनतंत्र
एक ऐसा तमाशा है
जिसकी जान
मदारी की भाषा है।

(14) मेरी निगाह में
न कोई छोटा है
न बड़ा है
मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है
जो मेरे सामने मरम्मत के लिए खड़ा है।

नवगीत

- हिन्दी में 'नवगीत' परम्परा का आरम्भ राजेन्द्र प्रसाद सिंह द्वारा सन् 1958 में सम्पादित 'गीतांगिनी' शीर्षक नवगीत संकलन से माना जाता है।
- डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ने राजेन्द्र प्रसाद सिंह को हिन्दी नवगीत का प्रवर्तक माना है।
- विद्वानों की दृष्टि में 'नवगीत' का अर्थ इस प्रकार है—

विद्वान — **नवगीत का अर्थ**

वीरेन्द्र मिश्र—"नवगीत आस्थाशील अनुभूतियों का निर्बन्ध समवेत स्वर है।"

उमाकांत मालवीय—"नवगीत काव्य जगत में व्याप्त अराजकता के मध्य मर्यादा का जयघोष है।"

रवीन्द्र भ्रमर—"नवगीत रागात्मक चेतना का पर्याय है।"

माहेश्वर तिवारी—"नवगीत अपने समय की आधुनिकता बोध से सम्पन्न समाज संपृक्त छांदसिक रचना है।"

श्रीकृष्ण तिवारी—"नवगीत हिन्दी कविता की खोई हुई अस्मिता की तलाश है।"

सोम ठाकुर—"नवगीत सामाजिक पलायन के विरुद्ध है। वह व्यवस्था से जूझता हुआ, भीड़ की तरह हर इकाई को सुनता है और उसकी आवाज पर पूरे दायित्व के साथ क्रियाशील रहता है।"

- हिन्दी के प्रमुख नवगीतकार और उनका नवगीत-संकलन निम्न है—

नवगीतकार — **नवगीत-संकलन**

डॉ० शम्भुनाथ सिंह—(1) रूप रश्मि, (2) छायालोक, (3) मन्वन्तर, (4) उदयाचल (1946), (5) दिवालोक (1951), (6) समय की शिला पर (1968), (7) जहाँ दर्द नील है (1977)।

वीरेन्द्र मिश्र—(1) गीतम, (2) लेखनी-वेला, (3) अविराम चल मधुवन्ति।

नीरज—(1) संघर्ष (1944), (2) अन्तर्ध्वनि (1946), (3) विभावरी (1951), (4) प्राण-गीत (1954), (5) दर्द दिया है (1956), (6) बादर बरस गयो (1958), (7) नीरज की पाती (1958), (8) नदी किनारे (1958), (9) दो गीत (1958), (10) आसावरी (1958), (11) लहर पुकारे (1959), (12) मुक्तकी (1960), (13) गीत भी अगीत भी।

रामनाथ अवस्थी—(1) आग और पराग।

रामावतार त्यागी—(1) नया खून (1953), (2) आठवाँ स्वर (1958), (3) गुलाब और बबूल वन (1973), (4) गाता हुआ दर्द (1984)।

रामानंद दोषी—(1) गीले पंख (1959)।

बालस्वरूप राही—(1) मेरा रूप तुम्हारा दर्पण, (2) जो नितान्त मेरी है।

रवीन्द्र भ्रमर—(1) रवीन्द्र भ्रमर के गीत, (2) सोन मछरी मन बसी।

राजेन्द्र प्रसाद सिंह—(1) भूमिका (1950), (2) दिग्वधू, (3) संजीवन कहाँ (1965), (4) आओ खुली बयार (1972), (5) भरी सड़क पर (1980), (6) गरज आधी रात का (1981)।

उमाकांत मालवीय—(1) मेंहदी और महावर, (2) सुबह रक्त पलाश की।

ठाकुर प्रसाद सिंह—(1) वंशी और मादल।

देवेन्द्र शर्मा 'इंद्र'—(1) पथरीले शोर में, (2) पंखकटी महराबें, (3) कुहरे की प्रत्यंचा, (4) यात्रा में साथ-साथ।

कुँवर बेचैन—(1) पिन बहुत सारे (1972), (2) भीतर साँकल : बाहर साँकल (1978), (3) शामियाने काँच के (1983), (4) महावर इन्तजारों का (1983)।

रमेश रंजक—(1) किरनों के पाँव, (2) गीत विहग उतरा, (3) हरापन नहीं टूटेगा, (4) मिट्टी बोलती है (5) इतिहास दुबारा लिखो।

नईम—पथराई आँखें।

माहेश्वर तिवारी—(1) हरसिंगार कोई तो हो।

नचिकेता—(1) आदमकद खबरें, (2) सुलगते पसीने।

बुद्धिनाथ मिश्र—(1) जाल फेंक रे मछेरे।

- डॉ० शम्भुनाथ सिंह ने 'नवगीत दशक' (1, 2, 3) शीर्षक से विभिन्न गीतकारों के गीतों का संकलन किया।
- डॉ० चन्द्रदेव सिंह ने 'पाँच जोड़ बाँसुरी' शीर्षक नवगीत संकलन का सम्पादन किया।

छायावादोत्तरकालीन ब्रजभाषा काव्य

कवि	काव्य
अमृतलाल चतुर्वेदी	(1) श्याम संदेसौ, (2) गालिब अमृत।
बलदेव प्रसाद मिश्र	(1) शृंगार शतक, (2) वैराग्य शतक, (3) श्याम शतक (1958)
डॉ० रसाल	(1) अजसमोचन, (2) रसालमंजरी, (3) उद्धव शतक
हृषीकेश चतुर्वेदी	(1) रामकृष्ण काव्य (1943)
सेवकेन्द्र त्रिपाठी	(1) ब्रजवर्तिका (1965)
लक्ष्मीनारायण सिंह 'ईश'	(1) लंकादहन (1950) (खण्डकाव्य)
गोपालप्रसाद व्यास	(1) रंग, जंग और व्यंग्य (1966)
अखिलेश त्रिवेदी	(1) गंगा लहरी (1947)

हिन्दी ग़ज़ल

- ग़ज़ल अरबी भाषा का स्त्रीलिंग शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है प्रेमी तथा प्रेयसी का वार्तालाप।
- ग़ज़ल की कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

विद्वान **परिभाषा**

हिन्दी साहित्य कोश—"ग़ज़ल का अर्थ नारियों से प्रेम की बात करना।"

फिराक गोरखपुरी—"ग़ज़ल असंवद्ध कविता है। ग़ज़ल का मिज़ाज मूलतः समर्पणवादी है।"

शमशेर बहादुर सिंह—"ग़ज़ल एक लिरिक विधा है जिसकी कुछ अपनी शर्तें हैं। अपना प्रतीकवाद और जीवन्त परम्परा है।"

- डॉ० रोहिताश्व अस्थाना ने अमीर खुसरो (1253–1325 ई०) को हिन्दी ग़ज़ल का प्रवर्तक स्वीकार किया है। इनकी ग़ज़लों में आवद्ध शेर भाषा की दृष्टि से हिन्दी और फारसी का संगम प्रस्तुत करते हैं।
- कुछ विद्वान कबीरदास को हिन्दी ग़ज़ल का आदि प्रवर्तक मानते हैं।
- आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल का प्रवर्तक दुष्यंत कुमार (1933–1975) को माना जाता है।
- दुष्यंत कुमार का मूलनाम दुष्यंत नारायण त्यागी था। प्रारम्भ में ये 'परदेशी' तथा 'अनुरागी' उपनाम से कविताएँ लिखते थे।
- दुष्यंत कुमार को 'हिन्दी ग़ज़ल सम्राट' भी कहा जाता है।
- हिन्दी के कुछ महत्त्वपूर्ण ग़ज़ल संग्रह निम्नांकित हैं—

ग़ज़लकार	संग्रह
रामेश्वर शुक्ल अंचल	(1) इन आवाजों को ठहरा लो
हरिकृष्ण प्रेमी	(1) रूप दर्शन, (2) रूपरेखा
शमशेरबहादुर सिंह	(1) सुकून की तलाश
त्रिलोचन शास्त्री	(1) गुलाव और वुलवुल
दुष्यंत कुमार	(1) साये में धूप
गोपालदास 'नीरज'	(1) नीरज की पाती
रामदरश मिश्र	(1) हँसी ओठ पर आँखें नम है, (2) बाजार को निकले हैं लोग।
कुँवर वेचैन	(1) शामियाने काँच के, (2) पत्थर की बाँसुरी, (3) महावर इन्तजारों का, (4) रस्सियाँ पानी की।
रामकुमार कृषक	(1) नीम की पत्तियाँ
माधव मधुकर	(1) सूर्य का सवाल, (2) आग का राग
ज्ञान प्रकाश विवेक	(1) धूप के हस्ताक्षर
अदम गोण्डवी	(1) धरती की सतह पर, (2) समय से मुठभेड़
विज्ञानव्रत	(1) वाहर धूप खड़ी है, (2) चूप की आवाज, (3) जैसे कोई लौटेगा।

महेश अश्क	(1) राख की जो पर्त अंगारों पर है।
राजेश रेड्डी	(1) उड़ान, (2) वुजूद, (3) आसमान से आगे
देवेंद्र कुमार आर्य	(1) किताब के बाहर।

हिन्दी ग़ज़ल के चर्चित शेर

(क) अमीर खुसरो

(1) शबाने हिजरां दराज़ यू जुल्फ बरोज़े वसला चू उम्र कोताह,
सखी पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काटूँ अँधेरी रतिया।

(ख) जयशंकर प्रसाद

(1) सरासर भूल करते हैं, उन्हें जो प्यार करते हैं,
बुराई कर रहे हैं और अस्वीकार करते हैं।
उन्हें अवकास ही इतना कहाँ है मुझसे मिलने का,
किसी से पूछ लेते हैं यह उपकार करते हैं।

(ग) गोपालदास 'नीरज'

(1) समय ने जब अँधेरों से दोस्ती की है
जला के अपना ही घर, हमने रोशनी की है।

(2) बदन पे जिसके शराफत का पैरहन देखा,
वो आदमी भी यहाँ हमने बदचलन देखा॥

(घ) रामदरश मिश्र

(1) बाजार को निकले हैं लोग बेच के घर को।
क्या हो गया है जाने आज मेरे शहर को॥

(ङ) कुंवर बेचैन

(1) अपने मन में ही अचानक यू सजल हो जायेंगे।
क्या ख़बर थी आपसे मिलकर ग़ज़ल हो जायेंगे॥

(2) जब तेरी याद ने सीने से लगाया मुझको।
याद आकर भी कोई याद न आया मुझको॥

दलित कविता का विकास

- संत रैदास को हिन्दी का प्रथम दलित कवि माना जाता है।
- आधुनिक युग के दलित कवियों में प्रथम नाम हीरा डोम और स्वामी अछूतानन्द का लिया जाता है।
- वास्तव में, दलित विद्वानों ने सन् 1914 ई० में 'सरस्वती पत्रिका' में प्रकाशित हीरा डोम की कविता 'अछूत की शिकायत' को हिन्दी की प्रथम दलित कविता माना है।
- हिन्दी में प्रकाशित अन्य दलित काव्य संग्रह और कवि निम्न हैं—

कवि	काव्य-संग्रह
हीरा डोम	अछूत की शिकायत (1914)
विहारीलाल हरित	(1) अछूतों का पैगम्बर (1946), (2) चमार हूँ मैं (1975)

गोपाल प्रसाद	सूपर्णखा (1986) (खण्डकाव्य)
डॉ० धर्मवीर	हीरामन (1987)
ओमप्रकाश वाल्मीकि	(1) सदियों का संताप (1989), (2) बस्स! बहुत हो चुका! (1997), (3) अब और नहीं (2009)
मंसाराम विद्रोही	(1) दलित पचासा (1989)
मलखान सिंह	(1) सुनो ब्राह्मण (1995)
जयप्रकाश कर्दम	(1) गूँगा नहीं था मैं (1997)
कर्मशील भारती	(1) कलम को दर्द कहने दो (2000)
सुशीला टकभौरे	(1) स्वाति बूँद और खारे मोती (1993), (2) तुमने उसे कब पहचाना
सोहनपाल सुमनाक्षर	(1) सिन्धु घाटी बोल उठी
श्यौराज सिंह बेचैन	(1) नई फसल, (2) क्रौंच हूँ मैं
कंवल भारती	(1) तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती
एन० सिंह	(1) दर्द के दस्तावेज, (2) सतह से उठते हुए
कुसुम वियोगी	(1) टुकड़े-टुकड़े दंश, (2) व्यवस्था के विषधर
निर्मला पुतुल	(1) अपने घर को तलाश (2004)
पुरुषोत्तम सत्य प्रेमी	द्वार पर दस्तक
रजनी तिलक	करोड़ों पद चाप हूँ
दयानन्द बटोही	यातना की आँखें
सी०बी० भारती	आक्रोश
सुखवीर सिंह	बयान बाहर
लक्ष्मीनारायण सुधाकर	उत्पीड़न की यात्रा
श्याम सिंह शशि	एकलव्य और अन्य कविताएँ
सूरजपाल चौहान	(1) प्रयास, (2) क्यों विश्वास करूँ (2004)
भीमसागर-एन०आर० सागर	(1) हम आजाद हैं
सुदेश तनवर	(1) रात के इस शहर में (1991), (2) नियति नहीं यह मेरी (1999)
ईश कुमार गंगानिया	(1) हार नहीं मानूँगा
चिरंजीलाल कटारिया	(1) शब्द थके जरूर हैं
मनोज सोनकर	(1) गजल गंध (2001)

गद्य

हिन्दी गद्य का विकास

- अद्योतन सूरी ने 778 ई० में 'कुवलय माला' नामक एक गद्य कृति की रचना की।
- 10वीं-11वीं शताब्दी के आस-पास रोडा कवि ने 'राउलवेल' नामक एक ग्रन्थ की रचना की।
- 'राउलवेल' गद्य-पद्य मिश्रित चम्पू काव्य की प्राचीनतम हिन्दी कृति है।
- राउलवेल एक शिलांकित कृति है।
- हिन्दी साहित्य में नख-शिख वर्णन की शृंगार-परम्परा का आरम्भ 'राउलवेल' से माना जाता है।
- 'राउलवेल' में हिन्दी की सात बोलियों के शब्द मिलते हैं जिनमें राजस्थानी प्रधान है।
- 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' हिन्दी का प्रथम गद्य का ग्रन्थ है।
- 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' की रचना महाराज गोविन्दचन्द्र के सभा पण्डित दामोदर शर्मा ने 12वीं शताब्दी के आसपास किया।
- 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण' एक व्याकरण ग्रन्थ है।
- डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी और डॉ० मोतीचन्द्र ने 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' को एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना है।
- 'वर्ण रत्नाकर' मैथिल कवि ज्योतिश्वर ठाकुर की रचना है।
- 'वर्ण रत्नाकर' मैथिली हिन्दी में रचित गद्य की प्रथम रचना है।
- 'वर्ण रत्नाकर' का ढाँचा विश्वकोशात्मक है।
- वस्तुत: साहित्यिक हिन्दी गद्य का क्रमबद्ध इतिहास 19वीं शताब्दी से प्रारम्भ होता है।
- आधुनिक काल या 19वीं शती के पूर्व हिन्दी गद्य के तीन रूप प्रचलित थे—(1) राजस्थानी गद्य, (2) ब्रजभाषा का गद्य, (3) खड़ी बोली का गद्य।
- हिन्दी गद्य के तीनों रूपों में राजस्थानी-गद्य प्राचीनतम माना गया है।
- राजस्थानी गद्य का सूत्रपात 10वीं शताब्दी में हुआ।
- राजस्थानी गद्य की प्रमुख रचनाएँ व लेखक निम्न हैं—

रचना	लेखक
धनपाल कथा (14वीं शती)	
तत्त्व विचार (14वीं शती)	
पृथ्वीचन्द्र चरित्र या वाग्विलास (1421 ई०)	माणिक्यचन्द्र सूरी
पंचाख्यान (1847 ई०)	फतहराम वैरागी

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ब्रजभाषा-गद्य का सूत्रपात संवत् 1400 (1343 ई०) से

माना है।

- आचार्य शुक्ल के अनुसार ब्रजभाषा गद्य का सर्वप्रथम प्रयोग 'गोरखपंथी योगियों' ने संवत् 1400 के आस-पास किया।
- डॉ० वीरेन्द्रनाथ मिश्र ने 'पृथ्वीराजरासो' में 'वचनिका' शीर्षक के अन्तर्गत उपलब्ध गद्य को ब्रजभाषा गद्य का प्राचीनतम रूप माना है।
- महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ की ब्रजभाषा गद्य की रचना 'शृंगार-रस-मण्डन' है।
- विट्ठलनाथ की अन्य रचना 'यमुनाष्टक', 'नवरत्न सटीक' है।
- 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' तथा 'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता' नामक ग्रन्थ के रचनाकार विट्ठलनाथ के पुत्र गोसाई गोकुलनाथजी माने जाते हैं।
- इसमें वैष्णव भक्तों और आचार्यों की महिमा प्रकट करने वाली कथाएँ लिखी गई हैं।
- इसका रचनाकाल विक्रम की 17वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता है।
- नाभादास ने संवत् 1660 के आसपास 'अष्टयाम' नामक पुस्तक ब्रजभाषा में लिखी। इसमें भगवान राम की दिनचर्या का वर्णन है।
- ओरछा नरेश महाराज जसवंत सिंह के आश्रित वैकुण्ठमणि शुक्ल ने सं० 1680 के आसपास ब्रजभाषा गद्य में 'अगहन माहात्म्य' तथा 'वैशाख माहात्म्य' नामक पुस्तक लिखी।
- सूरति मिश्र ने संवत् 1767 में 'बैताल-पचीसी' नामक पुस्तक की रचना की।
- 'बैताल पचीसी' की रचना संस्कृत कवि शिवदास की रचना से कथा लेकर की गई है।
- 'बैताल पचीसी' का खड़ी बोली हिन्दुस्तानी में अनुवाद मजहर अली के साथ मिलकर लल्लू लाल ने 'बैताल पच्चीसी' (1801 ई०) नाम से किया।
- संवत् 1852 (1795 ई०) में लाला हीरालाल ने 'आईने अकबरी की भाषा वचनिका' नामक एक बड़ी पुस्तक की रचना की।
- दनकौर के निवासी प्रियादास ने सन् 1779 ई० में 'सेवक चरित्र' गद्य ग्रन्थ लिखा। ये राधावल्लभीय सम्प्रदाय से सम्बन्धित थे।
- लल्लू लाल ने 'राजनीति' (1802 ई०) तथा 'माधव विलास' (1817 ई०) नामक ब्रजभाषा गद्य-पद्य मिश्रित ग्रन्थ की रचना की।
- 'माधवविलास' 19वीं शताब्दी के सामाजिक जीवन के स्वरूप-चित्रण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रचना है।
- माणिकलाल ओझा ने सन् 1828 ई० में 'सोमवंशन की वंशावली' नामक ब्रजभाषा गद्य में रचना की।
- खड़ी बोली गद्य का प्रारम्भिक रूप दक्षिणी साहित्य में मिलता है। दक्षिण के साहित्यकारों ने अपनी भाषा को 'हिन्दी', 'हिन्दवी', 'दक्खिनी', 'देहलवी', 'जबान हिन्दुस्तान' आदि कई नामों से पुकारा है।
- 'दक्खिनी हिन्दी' के सम्बन्ध में प्रो० एहतेशाम हुसैन ने लिखा है, "इस भाषा में पंजाबी, हरियाणी और खड़ी बोली का मेल था, यह ब्रज भाषा के प्रभाव से भी बची नहीं थी और सबसे बड़ी बात यह थी इसमें फारसी-अरबी के अनेक शब्द भी सम्मिलित हो गये थे। इतिहास से पता चलता है कि आरम्भ में उन्होंने उसी भाषा से

काम चलाया, यहाँ तक कि वह उन्नति करके साहित्य की भाषा बन गई। साहित्यकारों ने उसको कभी 'हिन्दी' कभी 'जबाने हिन्दुस्तान' कहा और कभी 'दकनी' कहकर पुकारा।"

- दक्खिनी हिन्दी के प्रथम गद्य लेखक 'ख्वाजा बन्दा नेवाज गेसूदराज' (1318-1422 ई०) को माना जाता है।
- 'ख्वाजा बंदा नेवाज गेसूदराज' की प्रसिद्ध रचना 'मेराजुल-आशकीन' दक्खिनी गद्य की प्रथम पुस्तक मानी जाती है।
- इनकी अन्य कृतियाँ निम्न हैं—(1) शिकारनामा, (2) तिलावतुल-वजूद, (3) हिदायतनामा, (4) रिसाला सेहवारा या बारहमासा।
- 'मेराजुल-आशकीन' में सूफी धर्म का उपदेश दिया गया है।
- 'कुतुबमुश्तरी' मुल्ला वजही की प्रमुख रचना है।
- मुल्ला वजही ने सन् 1635 ई० में 'सबरस' नामक ग्रन्थ की रचना की।
- 'सबरस' को उर्दू-साहित्य की प्रथम गद्य-रचना माना जाता है।
- 'सबरस' में तसव्वुफ के सिद्धान्तों को प्रतीकात्मक शैली में व्यक्त किया गया है।
- दक्खिनी हिन्दी में 'कुलियाते कुली कुतुबशाह' नामक एक वृहद काव्य की रचना मुहम्मद अली कुतुबशाह ने की।
- हुसेन अली खाँ ने सन् 1838 ई० में 'चारदरवेश' का फारसी से 'दक्खिनी' में अनुवाद किया।
- 'चारदरवेश' का अनुवाद हुसेन अली खाँ ने अपने पुत्रों के लिए किया था।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने खड़ी बोली-गद्य का प्रारम्भ अकबर के समय में गंग कवि द्वारा रचित 'चंद-छंद बरनन की महिमा' से माना है।
- गुरुमुखी लिपि में खड़ी बोली गद्य की रचा सोढी मिहरिवानु, हरिजी, दयाल अनेमी आदि लेखकों ने की।
- सोढी मिहरिवानु (1581-1640 ई०) ने 'सचुखंड पोथी' लिखकर गुरुवाणी की व्याख्या प्रस्तुत की है।
- सोढ़ी मिहरिवानु के पुत्र हरिजी ने तीन पुस्तकों की रचना की है—(1) सुखमनी सहसंराम (परमारथ), (2) गोसट गुरुमिहरिवानु तथा (3) पोथी हरिजी।
- दयालु अनेमी (1675-1721 ई०) की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं—(1) अवगत उल्लास (1675 ई०), (2) असटावक्रभाषा (1679 ई०) तथा (3) गीता भाषा (1721 ई०)।
- जार्ज ग्रियर्सन, आर० डब्ल्यू फ्रेजर, नलिनी मोहन सान्याल प्रभृति विद्वान आधुनिक साहित्यिक खड़ी बोली का आविष्कार सर्वप्रथम गिलक्राइस्ट की अध्यक्षता में लल्लू लाल तथा सदल मिश्र द्वारा बताते हैं।
- सन् 1800 ई० में मथुरा प्रसाद शुक्ल ने 'पंचांग दर्शन' नामक ज्योतिष ग्रन्थ की रचना की।
- संवत् 1818 (1761 ई०) पं० दौलतराम ने हरिषेणाचार्य कृत 'जैन पद्म पुराण' का भाषानुवाद किया।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने विक्रम संवत 1798 (1741 ई०) में रचित

'भाषायोवाशिष्ठ' को परिमार्जित गद्य की प्रथम पुस्तक और राम प्रसाद निरंजनी को प्रथम प्रौढ़ गद्य लेखक स्वीकार किया है।

- 'भाषा योगवाशिष्ठ' की भाषा मूलतः पंजाबी-व्रजभाषा मिश्रित खड़ी बोली है।
- मुंशी सदासुख लाल ने खड़ी बोली में 'सुखसागर' की रचना 'विष्णु पुराण' के आधार पर किया।
- खड़ी बोली गद्य को एक साथ आगे बढ़ाने वाले चार महानुभाव हुए हैं—(1) मुंशी सदासुखलाल 'नियाज़', (2) सैयद इंशा अल्ला खाँ, (3) लल्लू लाल तथा (4) सदल मिश्र।
- मुंशी सदासुखलाल 'नियाज' और इंशा अल्ला खाँ इन दोनों का सम्बन्ध फोर्ट विलियम कॉलेज से नहीं था।
- मुंशी सदासुख लाल ने लिखा है, "रस्मौ रिवाज भाखा का दुनिया से उठ गया है।"
- 'लल्लू लाल' और 'सदल मिश्र' दोनों ही फोर्ट विलियम कॉलेज के प्राध्यापक थे।
- मुंशी सदासुखलाल 'नियाज' की प्रमुख रचना 'सुखसागर' एवं 'मुंतखवुत्तवारीख' है।
- इंशा अल्ला खाँ ने 'रानी केतकी की कहानी' की रचना सन् 1798-1803 ई० के मध्य में की।
- 'रानी केतकी की कहानी' को 'उदयभान चरित' नाम से भी जाना जाता है।
- रानी केतकी की कहानी से सर्वप्रथम खड़ी बोली गद्य-साहित्य में लौकिक शृंगारमय प्रेमाख्यानक परम्परा का सूत्रपात हुआ।
- इंशा अल्ला खाँ ने अपनी भाषा नीति की घोषणा निम्न शब्दों में की—

  "यह वह कहानी है कि जिसमें हिन्दी छुट।
  और न किसी बोली का मेल है न पुट॥"
- शैली की दृष्टि से 'रानी केतकी की कहानी' हास्य प्रधान है।
- इंशा अल्ला खाँ की भाषा सबसे चटकीली, मटकीली, अलंकृत, किस्सागोई शैली, मुहावरेदार और चलती है।
- 'रानी केतकी की कहानी' हिन्दी की पहली मौलिक लिखित गद्य कथा है।
- इंशा ने अपनी भाषा को तीन प्रकार के शब्दों से मुक्त रखने की प्रतिज्ञा की है—(1) बाहर की बोली अर्थात् अरबी, फारसी, तुर्की, (2) गँवारी अर्थात् व्रजभाषा, अवधी इत्यादि और (3) भाखापन अर्थात् संस्कृत के शब्दों का मेल।
- लल्लू लाल ने ग्यारह पुस्तकों की रचना की जो निम्नांकित है—

  (1) सिंहासन बत्तीसी (1801 ई०), (2) बैताल पच्चीसी (1801 ई०), (3) शकुन्तला नाटक (1810 ई०), (4) माधोनल (1801 ई०), (5) राजनीति (1802 ई०), (6) प्रेमसागर (1810 ई०), (7) लतायफ-इ-हिन्दी (1810 ई०), (8) व्रजभाषा-व्याकरण (1811 ई०), (9) सभा विलास (1815 ई०), (10) माधव विलास (1817 ई०) (11) लाल चन्द्रिका (1818 ई०)।
- लल्लू लाल का 'व्रजभाषा व्याकरण' हो इनकी मौलिक रचना है।
- लल्लू लाल कृत 'राजनीति', 'माधवविलास' तथा 'लालचन्द्रिका' व्रजभाषा-गद्य में है तथा शेष रचनाएँ खड़ी बोली गद्य में हैं।
- लल्लू लाल ने सन् 1802 ई० में 'राजनीति' के नाम से 'हितोपदेश' की कहानियों

का व्रजभाषा गद्य में अनुवाद किया।

- लल्लू लाल की वे रचनाएँ जो अन्य लेखक की रचना का आधार लेकर लिखी गईं, निम्नलिखित हैं—

  (1) प्रेमसागर या नागरी दशम—चतुर्भुज मिश्र के भागवत पुराण के दशम स्कन्ध के व्रज भापानुवाद का खड़ी बोली में अनुवाद।
  (2) लाल चन्द्रिका टीका—'बिहारी सतसई' की टीका।
  (3) सिंहासन बत्तीसी—काज़िम अली की सहायता से सुन्दरदास के व्रजभाषानुवाद का हिन्दुस्तानी रूपान्तर।
  (4) बैताल पच्चीसी—शिवदास रचित संस्कृत रचना के सुरति मिश्र कृत व्रजभाषानुवाद का मजहर अली के साथ लिखित खड़ी बोली में रूपान्तर।
  (5) लतायफ-इ-हिन्दी—खड़ी बोली, व्रज और हिन्दुस्तानी की सौ लघु कथाओं का संग्रह।
  (6) माधव विलास—व्रजभाषा में लिखा गया चम्पू।
  (7) भाषा कायदा—व्रजभाषा व्याकरण।
- लल्लू लालजी उर्दू को 'यामिनी भाषा' कहते थे। इन्होंने 'प्रेम सागर' की रचना करते समय 'यामिनीभाषा' को छोड़ने की बात कही थी।
- आचार्य शुक्ल ने लिखा है, "लल्लू लाल की भाषा कृष्णोपासक व्यासों की सी व्रजरंजित खड़ी बोली है।"
- आचार्य शुक्ल ने स्पष्टतः कहा है, "सारांश यह है कि लल्लू लाल का काव्यभाषा गद्य भक्तों की कथावार्ता के काम का ही अधिकतर है, न नित्य व्यवहार के अनुकूल है न सम्बद्ध विचारधारा के योग्य।"
- लल्लू लाल ने आगरा में एक प्रेस खोला जिसका नाम 'संस्कृत प्रेस' था।
- लल्लू लाल ने 'लतायफ-इ-हिन्दी' को 'वजुवान-ई-रेख्ता' कहा है।
- सदल मिश्र बिहार के आरा जिले के निवासी थे।
- सदल मिश्र की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं—(1) चन्द्रावली या नासिकेतोपाख्यान (1803 ई०), (2) रामचरित्र (1806 ई०) और (3) हिन्दी पर्शियन वाकेबुलरी (1809 ई०)।
- सदल मिश्र ने 'चन्द्रावली' या 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना यजुर्वेद के आधार पर कठोपनिषद में वर्णित नचिकेता की कथा को आधार बनाकर खड़ी बोली गद्य में की।
- सदल मिश्र ने 'रामचरित्र' की रचना 'अध्यात्म रामायण' के आधार पर की।
- सदल मिश्र की भाषा 'पूरबीपन' लिए हुए व्यावहारिक खड़ी बोली है।
- महत्त्व की दृष्टि से डॉ० श्याम सुन्दरदास ने हिन्दी गद्य के प्रारम्भिक आचार्यों को निम्न क्रम में रखा है—

  (1) इंशाअल्ला खाँ (निवास : पहले दिल्ली, बाद में लखनऊ)
  (2) सदल मिश्र (निवास : बिहार, जिला आरा, स्थान-शाहाबाद घुवडीहा)
  (3) लल्लू लाल (निवास : आगरा)
  (4) सदासुख लाल (निवास : दिल्ली)

- महत्त्व की दृष्टि से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी गद्य के प्रारम्भिक चार आचार्यों को निम्न क्रम में रखा है—
  (1) सदासुखलाल, (2) इंशा अल्ला खाँ, (3) लल्लू लाल, (4) सदल मिश्र।
- महत्त्व की दृष्टि से डॉ० बच्चन सिंह ने हिन्दी गद्य के प्रारम्भिक चार आचार्यों को निम्नलिखित क्रम में रखा है—
  (1) सदासुख लाल, (2) सदल मिश्र, (3) इंशाअल्ला खाँ, (4) लल्लू लाल।
- खड़ी बोली गद्य के चार महानुभावों की भाषिक विशेषता लिखित है—

महानुभाव	भाषिक विशेषता
मुंशी सदासुखलाल	संस्कृत-मिश्रित हिन्दी या शिष्ट बोलचाल की भाषा
इंशा अल्ला खाँ	चटकीली, मटकीली, मुहावरेदार और चलती भाषा
लल्लू लाल	कृष्णोपासक व्यासों की ब्रजरंजित खड़ी बोला
सदल मिश्र	पूरबीपन लिए हुए व्यावहारिक खड़ी बोली।

- फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना सन् 1800 ई० में मार्किवस वेलेजली ने किया।
- गिलक्राइस्ट का पूरा नाम डॉ० जॉन बौर्थविक गिलक्राइस्ट था।
- गिलक्राइस्ट ने कुल 19 ग्रन्थों की रचना की। इनकी प्रमुख कृति 'ए डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश एण्ड हिन्दुस्तानी' है।
- गिलक्राइस्ट ने अपनी पुस्तक 'ए ग्रामर ऑफ दी हिन्दुस्तानी लैंग्वेज' में 'हिन्दी', 'उर्दू', 'रेख्ता' और 'हिन्दुस्तानी' को समानार्थी माना है।
- गिलक्राइस्ट खड़ी बोली की तीन शैलियाँ मानते हैं—
  (1) दरबारी या फारसी शैली, (2) हिन्दुस्तानी शैली, (3) हिन्दवी शैली।
- 'हिन्दुस्तानी शैली' गिलक्राइस्ट को सर्वाधिक प्रिय थी। इसे वे 'दि ग्रैण्ड पापुलर स्पीच ऑफ हिन्दुस्तान' कहते थे।
- 'कलकत्ता स्कूल बुक सोसाइटी' की स्थापना सन् 1817 ई० में किया गया।
- 'आगरा स्कूल बुक सोसाइटी' की स्थापना सन् 1833 ई० में हुई।
- विलियम केरे ने बाइबिल का हिन्दी अनुवाद सन् 1809 ई० में 'नये धर्म नियम' शीर्षक से किया।
- सन् 1809 ई० में हेनरी मार्टिन ने 'बाइबिल' का हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में अनुवाद किया।
- अन्य महत्त्वपूर्ण रचनाकार एवं रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

रचनाकार	रचना
(1) जे०टी० आमसन	दाऊद के गीत (1836 ई०)
(2) जान म्योर	ईश्वरोक्तशास्त्र धारा (1846 ई०), संतमत निरूपण (1848 ई०)
(3) जे०ए० शरमन	'दि प्रापर नेम्स इन द ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेण्ट्स रेन्डर्ड इन्टू उर्दू एण्ड हिन्दी' (1850 ई०), फूलों का शर (1850 ई०), पॉल का चरित्र (1852 ई०), वेदान्त विचार (1853 ई०)
(4) मार्श मैन	प्राचीन इतिहास का अनुवाद (1839 ई०)

(5) पं० रतन लाल	कथा सार (1839 ई०)

- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 1874 ई० में 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना खड़ी बोली हिन्दी-गद्य में की।
- पण्डित मदनमोहन मालवीय के अथक प्रयत्न से सन् 1900 ई० में कचहरियों में नागरी की प्रतिष्ठा हुई।
- दयानन्द के अनुयायी हिन्दी को 'आर्यभाषा' कहते थे।
- हिन्दी भाषा की प्रथम पत्रिका 'उदंत मार्तंड' का प्रकाशन 30 मई 1826 ई० को कानपुर निवासी पं० जुगलकिशोर के सम्पादकत्व में हुआ।
- 'उदंत मार्तंड' साप्ताहिक पत्रिका थी, जो कलकत्ता से निकलती थी।
- 'उदंत मार्तंड' में 'खड़ी बोली' का 'मध्यदेशीय भाषा' के नाम से उल्लेख किया गया है।
- 'उदंत मार्तंड' के प्रकाशन दिन को आधार मानकर 30 मई को 'राष्ट्रीय हिन्दी पत्रकारिता' दिवस मनाया जाता है।
- कलकत्ता से सन् 1854 ई० में हिन्दी का पहला दैनिक पत्र 'समाचार सुधावर्षण' श्याम सुन्दर सेन के सम्पादकत्व में निकला।
- प्रारम्भिक समय के प्रमुख समाचार पत्र, सम्पादक, वर्ष, प्रकार निम्नांकित हैं—

(1826 से 1867 तक)

समाचार-पत्र	सम्पादक	वर्ष	प्रकार	स्थान
उदन्त मार्तंड	जुगल किशोर	1826 ई०	साप्ताहिक	कलकत्ता
बंगदूत	राजा राममोहन राय	1829 ई०	साप्ताहिक	कलकत्ता
प्रजामित्र		1834 ई०	साप्ताहिक	कलकत्ता
बनारस अखबार	राजा शिवप्रसाद सिंह	1845 ई०	साप्ताहिक	काशी
मार्तण्ड	मौ० नासिरुद्दीन	1846 ई०	साप्ताहिक	कलकत्ता
मालवा अखबार	प्रेमनारायण	1849 ई०	साप्ताहिक	मालवा
सुधाकर	बाबू तारामोहन मित्र	1850 ई०	साप्ताहिक	काशी
बुद्धि प्रकाश	मुंशी सदासुख लाल	1852 ई०	साप्ताहिक	आगरा
समाचार सुधावर्षण	श्यामसुन्दर सेन	1854 ई०	दैनिक	कलकत्ता
प्रजा हितैषी	राजा लक्ष्मण सिंह	1855 ई०		आगरा
जगत दीप भाष्कर	मौ० नासिरुद्दीन	1846 ई०		कलकत्ता
लोकमित्र	ईसाई मिशनरी	1863 ई०		आगरा
अवध अखबार (उर्दू)				लखनऊ
ज्ञानदायिनी पत्रिका	नवीनचन्द्र राय	1867 ई०	मासिक	पंजाब
तत्त्वबोधिनी पत्रिका		1865 ई०		बरेली
वृत्तांत विलास		1867 ई०	मासिक	जम्मू

- बंगदूत पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, फारसी तथा बंगला भाषा में भी होता था।
- 'बनारस अखबार' के विरोध में तारामोहन मित्र ने 'सुधाकर' पत्रिका का प्रकाशन किया।
- मुंशी सदासुखलाल की पत्रिका 'बुद्धि प्रकाश', 'नरुल बाजार' का हिन्दी रूपान्तर

थी।

- पं० वंशीधर ने आगरा से हिन्दी-उर्दू का एक पत्र निकाला था जिसके हिन्दी कालम का नाम 'भारत खण्डामृत' तथा उर्दू कालम का नाम 'आवेहयात' था।
- गार्सा द तासी एक फ्रांसीसी विद्वान थे जो पेरिस में हिन्दुस्तानी या उर्दू के अध्यापक थे।
- तासी ने सन् 1836 में 'हिन्दुस्तानी साहित्य का इतिहास' पुस्तक की रचना की।
- तासी उर्दू भाषा के कट्टर समर्थक थे जिसके कारण वे हिन्दी को एक 'भद्दी बोली' कहते थे।
- पंजाब प्रान्त के पं० नवीनचन्द्र राय हिन्दी भाषा के पक्के समर्थक थे।
- विद्या की उन्नति के लिए नवीन चन्द्र राय ने लाहौर में 'अंजुमन लाहौर' सभा की स्थापना की।
- नवीन चन्द्र ने लाहौर में स्त्री-शिक्षा का प्रचार जोर-शोर से किया।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने पंजाब के श्रद्धाराम फिल्लौरी को अपने समय का सच्चा हिन्दी हितैषी और सिद्धहस्त लेखक माना।
- श्रद्धा राम फिल्लौरी की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं—गद्य—(1) सत्यामृत प्रवाह, पद्य—(2) आत्मचिकित्सा, (3) तत्त्वदीपक, (4) धर्म रक्षा, (5) उपदेश संग्रह, (6) शतोपदेश।
- श्रद्धा राम फिल्लौरी ने प्रसिद्ध आरती 'ओम जय जगदीश हरे' की रचना की।
- राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' (1823-1895 ई०) भारतेन्दु के गुरु थे।
- राजा शिवप्रसाद सिंह सन् 1856 ई० में शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर नियुक्त हुए।
- राजा शिवप्रसाद सिंह की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ निम्नलिखित हैं—(1) राजा भोज का सपना, (2) आलसियों का कोड़ा, (3) इतिहासतिमिर नाशक, (4) मानव धर्मसार, (5) वीर सिंह का वृत्तांत, (6) उपनिपदसार, (7) भूगोल हस्तामलक, (8) वामा मनोरंजन, (9) वर्णमाला, (10) स्वयंबोध, (11) विद्यांकुर, (12) भाषा का इतिहास (लेख), (13) गुटका, (14) हिन्दुस्तान के पुराने राजाओं का हाल, (15) सिक्खों का उदय और अस्त
- राजा शिवप्रसाद सिंह के सम्वन्ध में आचार्य शुक्ल ने लिखा है, "प्रारम्भ काल से ही वे ऐसी हिन्दी के पक्षपाती थे जिसमें सर्वसाधारण के बीच प्रचलित अरबी-फारसी श्ब्दों का स्वच्छन्द प्रयोग हो।"
- राजा शिवप्रसादसिंह कृत 'गुटका' एक संग्रह-पुस्तिका है। यह स्कूली विद्यार्थियों के लिए लिखी गई थी।
- राजा लक्ष्मण सिंह (1826-1896 ई०) संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के समर्थक थे।
- राजा लक्ष्मण सिंह ने कालिदास के तीन ग्रन्थों का अनुवाद हिन्दी में किया है, जो निम्न हैं—(1) शकुन्तला (1862), (2) रघुवंश (1878) और (3) मेघदूत (1882)।
- राजा लक्ष्मण सिंह ने 'रघुवंश' के गद्यानुवाद के प्राक्कथन में लिखा है, "हमारे मत में हिन्दी और उर्दू दो बोली न्यारी न्यारी है। हिन्दी इस देश के हिन्दू बोलते हैं और उर्दू यहाँ के मुसलमान और पारसी पढ़े हुए हिन्दुओं की बोलचाल है।"

- भारत में हुए सांस्कृतिक जागरण, धार्मिक तथा सामाजिक सुधार से सम्बन्धि प्रमुख संस्थाएँ निम्न हैं—

संस्था	स्थापना वर्ष (ई०)	संस्थापक
ब्रह्म समाज	1828	राजा राममोहन राय
तत्वबोधिनी सभा	1839	देवेन्द्रनाथ ठाकुर
प्रार्थना समाज	1867	केशवचन्द्र सेन के सहयोग से राना डे, आत्माराम और देवेन्द्रनाथ
वेद समाज	1867	केशवचन्द्र सेन
सत्य शोधक समाज	1873	ज्योतिबा बाई फुले
आर्य समाज	1875	दयानन्द सरस्वती
थियोसाफिकल सोसाइटी	1882	ब्लाटवस्की एवं कर्नल अल्काट
रामकृष्ण मिशन	1897	स्वामी विवेकानन्द

हिन्दी नाटक का विकास

प्रथम उत्थान : भारतेन्दु युग

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "विलक्षण बात यह है कि आधुनिक गद्य-साहित्य की परम्परा का प्रवर्तन नाटकों से हुआ।"
- हिन्दी का प्रथम नाटक, नाटककार एवं प्रस्तोता—

प्रस्तोता	मूल नाटक	भाषा	मूल नाटककार
डॉ० दशरथ ओझा	गय सुकुमार रास	अपभ्रंश	देल्हण
डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त	गोरक्ष विजय	मैथिल	विद्यापति
डॉ० बच्चन सिंह	आनन्द रघुनंद	ब्रजभाषा	महाराज विश्वनाथ सिंह
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	आनन्द रघुनन्द	ब्रजभाषा	महाराज विश्वनाथ सिंह
भारतेन्दु हरिश्चन्द	नहुष	ब्रजभाषा	गिरिधरदास (गोपालचन्द्र)

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने पिता गिरिधरदास (मूलनाम गोपाल चन्द्र) कृत 'नहुष' (1859 ई०) को हिन्दी का प्रथम नाटक, राजा लक्ष्मण सिंह कृत 'शकुन्तला' (1862 ई०) को द्वितीय, अपने द्वारा लिखे 'विद्यासुंदर' (1868 ई०) को तीसरा और श्री निवासदास के तप्तासंवरण (1883 ई०) को चौथा नाटक माना है।
- भारतेन्दु के अनुसार 'नहुप' की रचना 'विशुद्ध नाटक रीति' तथा 'पात्र प्रवेशादि नियम रक्षण' को ध्यान में रखकर की गई है।
- 'नहुप' नाटक पद्य-बद्ध ब्रजभाषा में लिखा गया है।
- खड़ी बोली में सन् 1862 ई० में राजा लक्ष्मण सिंह द्वारा गद्य में अनूदित 'शकुन्तला' नाटक सबसे पहले आता है।
- हिन्दी भाषा के अन्य प्रमुख नाटककार एवं नाटक निम्नलिखित हैं—

नाटककार	भाषा	नाटक	वर्ष (ई०)
प्राणचन्द चौहान	ब्रजभाषा	रामायण महानाटक	1610
रघुराय नागर	ब्रजभाषा	सभासार	1700
अमानत	ब्रजभाषा	इंदरसभा	1853

यशवंत सिंह	ब्रजभाषा	प्रबोध चन्द्रोदय	1643
गुरु गोविन्द सिंह	ब्रजभाषा	चंडी-चरित्र	
वनारसीदास	ब्रजभाषा	समय सार नाटक	1663
कृष्णजीवन लछिराम	ब्रजभाषा	करुणाभरण	1657
नेवाज	ब्रजभाषा	शकुन्तला	1680
गणेश कवि	ब्रजभाषा	प्रद्युम्न विजय	1863

- अमानत कृत 'इन्दर सभा' एक आपेरा (गीतिनाट्य) है।
- अंग्रेजों द्वारा प्रथम 'रंगशाला', 'प्ले हाउस' नाम से सन् 1776 ई० में कलकत्ता में स्थापित किया गया था।
- सन् 1777 ई० में 'कलकत्ता थियेटर' की स्थापना हुई।
- आधुनिक हिन्दी का पहला अभिनीत नाटक शीतला प्रसाद त्रिपाठी का 'जानकी मंगल' माना गया है। जो 1868 ई० में काशी में खेला गया और जिसमें लक्ष्मण का अभिनय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया।
- शकुन्तला के अभिनय में प्रतापनारायण मिश्र का अपने पिता से मूछ मुड़ाने के लिए आज्ञा माँगना प्रसिद्ध है।
- सही अर्थों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को ही नाट्य-विधा का प्रवर्तक माना जाता है।
- हरिश्चन्द्र को भारतेन्दु की उपाधि 1880 ई० में काशी के पण्डित रघुनाथ ने दी थी।
- भारतेन्दु के समस्त मौलिक एवं अनूदित नाटकों की संख्या 17 है।
- भारतेन्दु का पहला नाटक 'विद्या सुन्दर' माना जाता है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के मौलिक नाटक हैं—

नाटक	वर्ष (ई.)	प्रकार	नाटक के विषय
1. वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति	1873	प्रहसन	सामाजिक धार्मिक विसंगति पर व्यंग्य
2. विपस्य विपमौषधम्	1876	भाण (एक पात्रीय नाटक)	वड़ौदा के गायकवाड़ के गद्दी से उतारे जाने तथा सयाजी राव के उनके स्थान पर बिठाये जाने की घटना पर आधारित
3. प्रेम जोगिनी	1875	4 अंकों की नाटिका	काशी के धर्माडम्वर का छायाचित्र
4. चन्द्रावली	1876	नाटिक	वैष्णव भक्ति और प्रेमतत्त्व का चित्रण
5. भारत-दुर्दशा	1880	नाट्य या रासक या लास्य रूपक	भारतवर्ष के तत्कालीन परिस्थिति का चित्रण व अंग्रेजी राज्य की अप्रत्यक्ष निन्दा
6. नीलदेवी	1881	गीतिरूपक	राजपूतानी आनवान एवं नारी व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा (ऐतिहासिक गीति रूपक)
7. अंधेर नगरी	1881	प्रहसन	राजा की मूर्खता, अन्याय और अंधेरगर्दी पर तीखा व्यंग्य

8. सती प्रताप	1883	पौराणिक नाटक	सावित्री-सत्यवान के पौराणिक आख्यान पर आधारित

- नाटक के उद्देश्य की चर्चा करते हुए भारतेन्दु ने नाटक के पाँच उद्देश्य बताये हैं—
  (1) हास्य, (2) शृंगार, (3) कौतुक, (4) समाज संस्कार, (5) देश वत्सलता।
- देश वत्सलता के उद्देश्य से भारतेन्दु ने 'भारत-जननी', 'नीलदेवी', 'भारत-दुर्दशा' और 'अंधेर नगरी' की रचना की।
- 'सती प्रताप' भारतेन्दु का अधूरा नाटक है जिसे राधा कृष्णदास ने पूरा किया।
- ब्रजरत्नदास ने 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' पुस्तक में लिखा है कि बिहार प्रान्त के किसी जमींदार के अन्यायों को लक्ष्य करके उसे सुधारने के लिए तथा 'नेशनल थियेटर' में अभिनीत किये जाने के लिए 'अंधेर नगरी' की रचना की गई थी।
- भारतेन्दु हरिश्चन्द ने काशी में 'नेशनल थियेटर' की स्थापना में की।
- काशीनाथ खत्री का नाटक 'वाल विधवा संताप' भारतेन्दु के घर पर खेला गया था।
- 'प्रेम जोगिनी' नाटक का पूर्व नाम 'काशी के छायाचित्र या दो भले बुरे फोटोग्राफ' था। जो इसी नाम से 'हरिश्चन्द्र चंद्रिक' पत्रिका में प्रथम वार प्रकाशित हुई।
- भारतेन्दु ने तीन पत्रिकाओं का सम्पादन किया है—
  (1) कविवचन सुधा 1868 ई० में प्रकाशित
  (2) हरिश्चन्द्र मैगजीन 1873 ई० में प्रकाशित मासिक पत्रिका (हरिश्चन्द्र चंद्रिका)
  (3) वालावोधिनी 1874 ई० में प्रकाशित (महिलाओं से सम्बन्धित)
- भारतेन्दु ने 'कवितावर्धिनी सभा', 'त्वदीय समाज', 'पैनी रीडिंग क्लब' आदि की स्थापना की।
- भारतेन्दु हिन्दी के अकेले ऐसे प्रथम नाटककार हैं जिन्होंने अपनी मौलिकता और चिन्तन को नाटक-निबन्ध और अपने नाट्य लेखन में प्रयुक्त नये प्रयोगों द्वारा प्रस्तुत किया।
- हरिश्चन्द्र ने 'नाटक निबन्ध' की रचना सन् 1883 ई० में की।
- भारतेन्दु कृत 'भारत दुर्दशा' हिन्दी भाषा का पहला मौलिक राजनीतिक नाटक है।
- 'भारत जननी' हिन्दी का पहला मौलिक ओपेरा (गीति नाट्य) है।
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अनूदित नाटक—

अनूदित नाटक	वर्ष	मूल नाटक	भाषा	मूल नाटककार
रत्नावली	1868	रत्नावली नाटिका	संस्कृत	हर्ष
विद्या सुन्दर	1868	संस्कृत के चौर पंचासिका का, बंगला विद्यासागर का हिन्दी अनुवाद	संस्कृत से बंगला	संस्कृत में चौर कवि, वंगला में यतीन्द्र मोहन ठाकुर
पाखण्ड विडम्बन	1872	प्रबोध चंद्रोदय (3 अंक)	संस्कृत	कवि कृष्ण मिश्र
धनंजय विजय	1873	धनंजय विजय	संस्कृत	कांचन कवि
मुद्रा राक्षस	1878	मुद्रा राक्षस	संस्कृत	विशाखादत्त
दुर्लभ बन्धु	1880	मरचेन्ट ऑफ वेनिस	अंग्रेजी	विलियम शेक्सपियर

कपूर मंजरी	1875	कर्पूर मंजरी	प्राकृत	राजशेखर
सत्य हरिश्चन्द्र	1875	चंड कौशिक	बंगला	क्षेमेश्वर
भारत जननी	1877	भारतमाता	बंगला	

❑ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा अभिनीत नाटक

नाटक	हरिश्चन्द्र की भूमिका
(1) जानकी मंगल	लक्ष्मण की भूमिका
(2) नील देवी	पागल की भूमिका
(3) सत्य हरिश्चन्द्र	हरिश्चन्द्र की भूमिका

❑ बाबू ब्रजरत्नदास एवं राधाकृष्ण दास के अनुसार भारतेन्दु द्वारा रचित 'प्रवास नाटक' उनका प्रथम नाटक है।

❑ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अनूदित नाटकों के प्रकार व विषय—

अनूदित नाटक	प्रकार	नाटक का विषय
(1) रत्नावली	नाटिका	अपूर्ण नाटक है।
(2) विद्यासुन्दर	नाटक	इसमें 'प्रेम-विवाह' को अधिक श्रेयस्कर माना गया है।
(3) पाखण्ड विडम्बन	रूपक	इसमें वैष्णव मत की विशिष्टता व पाखण्ड मुक्त हरिभक्ति करने का उपदेश है।
(4) धनंजय विजय	व्यायोग	इसमें पाण्डवों के विराट की सभा में अज्ञातवास करने के अन्तिम दिन कौरवों ने विराट का गोधन-हरण कर लिया तब धनंजय ने अकेले परास्त किया।
(5) मुद्रा राक्षस	नाटक	यह एक राजनीतिक नाटक है जिसमें चाणक्य की कूटनीति का महत्व प्रतिपादित है।
(6) दुर्लभ बन्धु (या वंशपुर का महाजन)	नाटक	शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक की कथा का भारतीयकरण किया गया है।
(7) कर्पूर मंजरी	सट्टक	उसमें राजकुमार चन्द्रपाल और कुंतल देश के विदर्भनगर के वल्लभ राजा की कन्या के विचित्र विवाह का वर्णन है।
(8) सत्य हरिश्चन्द्र	नाटक	इसमें सत्य के आदर्श को प्रस्तुत किया गया है।
(9) भारत जननी	आपेरा या लघु नाट्य गीत	इसमें पारस्परिक कलह, ईर्ष्या, द्वेष आदि के परिणामस्वरूप भारतीयों की दुर्दशा पर आँसू बहाये गये हैं।

❑ भारतेन्दु युग के कृष्ण के चरित्र पर आधृत पौराणिक नाटक—

नाटककार	नाटक	वर्ष (ई० में)
(1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	चंद्रावली	1876
(2) अम्बिकादत्त व्यास	ललिता	1884
(3) हरिहरदत्त दूबे	महारास	1884
(4) खड्गबहादुर मल्ल	महारास और कल्पवृक्ष	1885 और 1886
(5) सूर्यनारायण सिंह	श्यामानुराग नाटिका	[illegible]
(6) चन्द्र शर्मा	उषाहरण	1887
(7) कार्तिक प्रसाद खत्री	उषाहरण	1892
(8) अयोध्या सिंह उपाध्याय	प्रद्युम्न विजय, रुक्मिणी परिणय	1893, 1894

❑ भारतेन्दु युग के राम-कृष्ण के चरित्र पर आधृत पौराणिक नाटक—

नाटककार	नाटक	वर्ष (ई० में)
(1) श्रीनिवास दास	प्रह्लाद चरित्र	1888
(2) बालकृष्ण भट्ट	नल-दमयन्ती स्वयंवर, बृहन्नला	1895
(3) शालिग्राम लाल	अभिमन्यु वध, अर्जुन-मद-मर्दन, पुरु-विक्रम	
(4) देवकीनन्दन खत्री	सीताहरण, रामलीला	1876, 1879
(5) शीतला प्रसाद त्रिपाठी	रामचरितावली	1887
(6) द्विज दास	रामचरित्र नाटक	1891

❑ भारतेन्दु युग के प्रेम प्रधान रोमानी नाटक निम्नांकित हैं—

नाटककार	नाटक	वर्ष (ई० में)
(1) श्रीनिवास दास	रणधीर प्रेममोहिनी, तप्ता संवरण	1877, 1883
(2) किशोरीलाल गोस्वामी	प्रणयिनी परिणय, मयंक मंजरी	1890, 1891
(3) खड्ग बहादुर मल्ल	रति कुसुमायुध	1885
(4) शालिग्राम शुक्ल	लावण्यवती सुदर्शन	1892
(5) गोकुलनाथ शर्मा	पुष्पवती	1899

❑ रणधीर प्रेम मोहिनी को हिन्दी का पहला दुःखान्तक नाटक माना जाता है।

❑ हिन्दी के कुछ आलोचक विशेषत: गिरीश रस्तोगी ने भारतेन्दु कृत 'नीलदेवी' को हिन्दी का प्रथम दुःखान्तक नाटक माना है।

❑ भारतेन्दु युग के प्रमुख ऐतिहासिक नाटक निम्नलिखित हैं—

नाटककार	नाटक	वर्ष (ई० में)
(1) श्रीनिवासदास	संयोगिता स्वयंवर	1886
(2) राधाकृष्ण दास	पद्मावती, महाराणा प्रताप	1882, 1897
(3) राधाचरण गोस्वामी	अमर सिंह राठौर, सती चन्द्रावती	1895
(4) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	नील देवी	1881

❑ भारतेन्दु युग के सामाजिक (समसामयिक) नाटक अग्रांकित हैं—

नाटककार	नाटक	वर्ष (ई० में)
(1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	भारत दुर्दशा	1880
(2) बालकृष्ण भट्ट	नई रोशनी का विष	1884
(3) खड्गबहादुर मल्ल	भारत आरत	1885
(4) अम्बिका दत्त व्यास	भारत-सौभाग्य	1887
(5) राधाकृष्ण दास	दुःखिनी बाला	1880
(6) गोपाल राम गहमरी	देश-दशा	1892
(7) काशीनाथ खत्री	विधवा-विवाह	
(8) देवकीनन्दन त्रिपाठी	भारत-हरण	1899

- 'संगीत शाकुन्तला' प्रतापनारायण मिश्र का महत्वपूर्ण नाटक है।
- भारतेन्दुयुगीन महत्वपूर्ण प्रहसन—

नाटककार	प्रहसन	वर्ष (ई०)
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, अंधेर नगरी	1873, 1881
बालकृष्ण भट्ट	जैसा काम वैसा परिणाम, आचार विडम्बन	1877, 1899
विजयानन्द त्रिपाठी	महाअंधेर नगरी	1893
प्रतापनारायण मिश्र	कलि कौतुक रूपक	1886
राधाचरण गोस्वामी	बूढ़े मुँह मुँहासे, तन मन धन गुसाईंजी के अर्पन	1886
अम्बिकादत्त व्यास	देशी घी और चर्बी में व्यवसाय	

- पहला आधुनिक रंगमंच बंगला का माना जाता है जिसके अन्तर्गत एक रूसी नागरिक लेबेडेफ द्वारा 1895 ई० में एक बंगला अनुवाद का मंचन हुआ।
- पारसी थियेटर के लिए लिखे गये नाटक व नाटककार निम्न हैं—

नाटककार	नाटक
नारायण प्रसाद 'बेताब'	(1) कृष्ण-सुदामा, (2) गोरख धंधा, (3) मीठा जहर, (4) रामायण नाटक।
आगा हश्र काश्मीरी	(1) अछूता दामन, (2) असीरे हिर्स (3) खूबसूरत बला, (4) चंडीदास नाटक, (5) जहरी साँप, (6) भीष्म प्रतिज्ञा, (7) यहूदी की लड़की।
राधेश्याम कथावाचक	(1) घंटा-पंथ।
तुलसीदत्त शैदा	(1) जनकनंदिनी, (2) नारी-हृदय।

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के प्रमुख सूक्ति निम्न हैं—

(1) अंग्रेजराज सुख साज सजे सब भारी
पै धन विदेस चलि जात इहै अति ख्वारी। —भारत दुर्दशा

(2) अंधा धुंध मच्यौ सब देसा।
मानहु राजा रहत विदेसा॥ —अंधेर नगरी

संस्कृत भाषा से अनूदित हिन्दी नाटक निम्नांकित हैं—

मूल नाटककार	मूल नाटक	अनुवादक
भवभूति	उत्तररामचरित	(1) देवदत्त तिवारी (1871), (2) नंदलाल विश्वनाथ दूबे (1886), (3) लाला सीताराम (1897)
	मालतीमाधव	(1) लाला शालिग्राम (1881), (2) सीताराम (1898)
	महावीरचरित	(1) लाला सीताराम (1897)
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	(1) लक्ष्मण सिंह (1862), (2) नंदलाल विश्वनाथ दूबे (1888)
	मालविकाग्नि मित्र	(1) लाला सीताराम (1898)
कृष्णमित्र	प्रबोधचन्द्रोदय	(1) शीतला प्रसाद (1879), (2) अयोध्या प्रसाद चौधरी (1885)

शूद्रक	मृच्छकटिक	(1) गदाधर भट्ट (1880), (2) लाला सीताराम (1899)
हर्ष	रत्नावली	(1) देवदत्त तिवारी (1872), (2) बालमुकुन्द सिंह (1898)
भट्टनारायण	वेणी संहार	(1) ज्वाला प्रसाद सिंह (1897)

- बांग्ला भाषा से अनूदित हिन्दी नाटक निम्नलिखित हैं—

मूल नाटककार	मूल नाटक	अनुवादक
माइकेल मधुसूदन	पद्मावती	(1) बालकृष्ण भट्ट (1878)
	शर्मिष्ठा	(1) रामचरण शुक्ल (1880)
	कृष्णमुरारी	(1) रामकृष्ण वर्मा (1899)
मनमोहन वसु	सती	(1) उदित नारायण लाल (1880)
राजकिशोर दे	पद्मावती	(1) रामकृष्ण वर्मा (1889)
द्वारिकानाथ गांगुली	वीर नारी	(1) रामकृष्ण वर्मा (1899)

- अंग्रेजी भाषा से अनूदित हिन्दी नाटक निम्न हैं—

मूल नाटककार	मूल नाटक	अनुवादक	वर्ष	अनूदित नाटक
विलियम शेक्सपियर	मरचेंट ऑफ वेनिस	आर्या	1888	वेनिस का व्यापार
	द कॉमेडी ऑफ ऐरर्स	रत्नचन्द प्लीडर	1879	भ्रम जालक
	ऐज यू लाइक इट	पुरोहित गोपीनाथ	1896	मनभावन
	रोमियो जूलियट	पुरोहित गोपीनाथ	1897	प्रेमलीला
	मैकबेथ	मथुरा प्रसाद उपाध्याय	1893	साहसेन्द्र साहस
जोसेफ एडिसन	केटो	बाबू तोताराम	1879	कृतान्त

- बाबू तोताराम ने 'भाषा संवर्धिनी' सभा की स्थापना की थी।

द्वितीय उत्थान : द्विवेदी युग

- सन् 1903 ई० में बालकृष्ण भट्ट ने लिखा, 'हिन्दू जाति तथा हिन्दुस्तान को जल्द गिरा देने का सुगम लटका यह पारसी थियेटर है, जो दर्शकों को आशिकों-माशूकों का लुफ्त हासिल कराने का बड़ा उम्दा जरिया है।'
- सन् 1912 ई० में बदरीनाथ भट्ट ने संस्कृत के 'वेणी संहार' नाटक का 'कुरुवन दहन' नाम से हिन्दी रूपान्तर किया।
- द्विवेदी युग में रचित ऐतिहासिक नाटक निम्नलिखित हैं—

नाटककार	नाटक
गंगा प्रसाद गुप्त	वीर जयमल (1903)
वृन्दावनलाल वर्मा	सेनापति उदल (1909)
बद्रीनाथ भट्ट	चन्द्रगुप्त (1915)
कृष्ण प्रकाश सिंह	पन्ना (1915)
हरिदास माणिक	संयोगिता हरण (1915)

परमेष्ठीदास	वीर चुडावत सरदार (1918)

□ द्विवेदी युग के समसामयिक उपादानों पर लिखे नाटक निम्न हैं—

नाटककार	नाटक
भगवती प्रसाद	वृद्ध विवाह (1905)
जीवानन्द शर्मा	भारत विजय (1906)
कृष्णानन्द जोशी	उन्नति कहाँ से होगी (1915)
मिश्र बन्धु	नेत्रोन्मीलन (1915)

□ द्विवेदी युग में रचित प्रमुख पौराणिक नाटक निम्नांकित हैं—

नाटककार	नाटक
राधाचरण गोस्वामी	श्रीदामा (1904)
शिवनन्दन सहाय	सुदामा (1907)
वनवारी लाल	(1) कृष्ण कथा (2) कंस वध (1909)
व्रजनन्दन सहाय	उद्धव (1909)
नारायण मिश्र	कंसवध (1910)
रामनारायण मिश्र	जनक वाड़ा (1906)
गंगा प्रसाद	रामाभिषेक (1910)
गिरधर लाल	रामवन यात्रा (1910)
नारायण सहाय	रामलीला (1911)
रामगुलाम लाल	धनुष यज्ञ लीला (1912)
महावीर सिंह	नल दमयंती (1905)
गौरचरण गोस्वामी	अभिमन्यु वध (1906)
सुदर्शनाचार्य	अनर्घ नल चरित (1906)
बाँके विहारी लाल	सावित्री नाटिका (1908)
वालकृष्ण भट्ट	वेणु संहार (1909)
लक्ष्मी प्रसाद	उर्वशी (1910)
हनुमन्त सिंह	सती चरित्र (1910)
शिवन्दन मिश्र	शकुन्तला (1911)
बद्रीनाथ भट्ट	कुरुवन दहन (1912)
माधव शुक्ल	महाभारत पूर्वार्द्ध (1916)
हरिदास माणिक	पाण्डव-प्रताप (1917)
माखनलाल चतुर्वेदी	कृष्णार्जुन-युद्ध (1918)

तृतीय उत्थान : प्रसाद युग

□ जयशंकर प्रसाद ऐतिहासिक नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

□ जयशंकर प्रसाद का प्रथम नाटक सन् 1910 ई० में प्रकाशित 'सज्जन' को माना जाता है।

□ जयशंकर प्रसाद के नाटक निम्नलिखित बताये जाते हैं—

नाटक	वर्ष (ई.)	आधार व विषय
(1) सज्जन	1910	सज्जन का कथानक महाभारत से लिया गया है।
(2) कल्याणी परिणय	1912	कल्याणी परिणय में चन्द्रगुप्त व सिल्यूकस की कथा है।
(3) करुणालय	1912	इसमें हरिश्चन्द्र व विश्वामित्र का पौराणिक आख्यान है।
(4) प्रायश्चित	1913	इसमें जयचंद के मूर्खतापूर्ण कुचक्र के कारण पृथ्वीराज का अन्त दिखाया गया है।
(5) राज्यश्री	1915	इसका आधार 'हर्षचरित' तथा चीनी यात्री ह्वेनसांग का ऐतिहासिक विवरण है।
(6) विशाख	1921	विशाख का कथानक कल्हण की 'राजतरंगिणी' के आरम्भिक अंश के आधार पर निर्मित हुआ है।
(7) अजातशत्रु	1922	इसमें तीन राज परिवारों—मगध, कौशल और कौशाम्बी को केन्द्र मानकर शासकों की महत्वाकांक्षा और सत्तालिप्सा को दिखाया गया है।
(8) जनमेजय का नागयज्ञ	1926	इसमें परीक्षित का प्रतापी पुत्र जनमेजय पिता का बदला लेने के लिए नागों का विध्वंस करना चाहता है।
(9) कामना	1927	कामना संस्कृत के 'प्रबोध चन्द्रोदय' की भाँति अन्योपदेशिक नाटक है। इसमें भावनाओं को नाटकीय पात्रों का रूप दिया गया है।
(10) स्कन्दगुप्त	1928	इसमें कुमारगुप्त के विलासी साम्राज्य की उस स्थिति का चित्रण हुआ है जहाँ आन्तरिक कलह, संघर्ष और विदेशी आक्रमण के फलस्वरूप उसके भावी क्षय के लक्षण प्रकट होने लगे थे।
(11) एक घूँट	1930	इसमें आनन्दवादी सिद्धान्त को व्यावहारिक भूमि पर खड़ा किया गया है। यह एक एकांकी नाटक है।
(12) चन्द्रगुप्त	1931	इसका कथानक प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाओं अलक्षेन्द्र का आक्रमण, नंदवंश का नाश, सिल्यूकस का पराभव, चन्द्रगुप्त की प्रतिष्ठा के आधार पर निर्मित है।
(13) ध्रुवस्वामिनी	1933	ध्रुवस्वामिनी नाटक विशाख के 'देवी चन्द्रगुप्त' के आधार पर लिखा गया है।

□ सन् 1912 ई० में 'कल्याणी परिणय' का प्रकाशन 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में हुआ था। 'चन्द्रगुप्त' नाटक 'कल्याणी परिणय' का ही परिवर्द्धित रूप है।

□ प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' का प्रकाशन सन् 1933 ई० में 'अभिनव चन्द्रगुप्त' के नाम से किया गया था।

□ प्रसाद के नाटकों के प्रमुख पात्र

नाटक	पुरुष पात्र	स्त्री पात्र
स्कन्दगुप्त	पृथ्वीसेन, स्कन्दगुप्त, भट्टार्क, बंधु वर्मा, महादंडनायक, पुरु गुप्त, कुमारगुप्त	अन्त देवकी, देवसेना, विजया
चन्द्रगुप्त	चन्द्रगुप्त, चाणक्य, शकटार, सिंहरण आम्भीक, राक्षस, पर्वतक, सिल्यूकस	कार्नेलिया, कल्याणी, एलिस मालविका, अलका, सुवासिनी
ध्रुवस्वामिनी	चन्द्रगुप्त, रामगुप्त, शिखर स्वामी	ध्रुवस्वामिनी

□ प्रसाद के नाटकों पर बंगला नाटककार द्विजेन्द्रलाल राय तथा अंग्रेजी नाटककार विलियम शेक्सपियर के नाटकों का सर्वाधिक प्रभाव है।

□ ध्रुवस्वामिनी नाटक से समस्या नाटक का प्रवर्तन माना जाता है। इसमें अनमेल विवाह, तलाक एवं पुनर्विवाह की समस्या को उठाया गया है।

□ प्रसाद के नाटकों के प्रमुख संवाद, गीत एवं कथन—

चन्द्रगुप्त नाटक से—

(1) मुझे इस देश से जन्मभूमि के समान स्नेह होता जा रहा है। यहाँ के श्यामल-कुंज, घने जंगल, सरिताओं की माला पहने हुई शैल श्रेणी, हरी-भरी वर्षा, गर्मी की चाँदनी, शीतकाल की धूप और भोले कृषक तथा सरला कृषक-बालिकाएँ, बाल्यकाल की सुनी हुई कहानियों की जीवित प्रतिमाएँ हैं। यह स्वप्नों का देश, यह त्याग और ज्ञान का पालना, यह प्रेम की रंगभूमि—भारत भूमि क्या भुलाई जा सकती है? कदापि नहीं। यह अन्य देशों की जन्मभूमि है, यह भारत मानवता की जन्मभूमि है। (कार्नेलिया चन्द्रगुप्त से)

(2) "यदि प्रेम ही जीवन का सत्य है तो, संसार ज्वालामुखी है।"

—कार्नेलिया सुवासिनी से

(3) "महत्वाकांक्षा का मोती निष्ठुरता की सीपी में रहता है।"

—चाणक्य चन्द्रगुप्त से

(4) अरुण यह मधुमय देश हमारा!
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा। —कार्नेलिया

(5) हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्वला स्वतंत्रता पुकारती। —समवेत गायन

स्कन्दगुप्त नाटक से—

(1) अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन होता है।

—स्कन्दगुप्त का आत्मकथन

□ प्रसादयुगीन ऐतिहासिक नाटक—

(1) हरिकृष्ण प्रेमी	रक्षाबंधन (1934), पाताल विजय (1936), प्रतिशोध (1937), शिवा साधना (1937)
(2) चतुरसेन शास्त्री	उत्सर्ग (1929), अमर सिंह राठौर (1923)
(3) उदयशंकर भट्ट	चन्द्रगुप्त मौर्य (1931), विक्रमादित्य (1929), दाहर अथवा सिन्धु पतन (1933), अंबा (1935)

(4) चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	अशोक (1935), रेवा (1935)
(5) बदरीनाथ भट्ट	दुर्गावती (1925), चन्द्रगुप्त (1915)
(6) प्रेमचंद	कर्बला (1928)
(7) गोविन्दवल्लभ पंत	राजमुकुट (1935), वरमाला (1925)
(8) जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद	प्रताप प्रतिज्ञा (1929)
(9) पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	महात्मा ईसा
(10) रामवृक्ष बेनीपुरी	आम्बपाली

□ प्रसादयुगीन सामाजिक नाटक—

नाटककार	नाटक
(1) विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'	अत्याचार का परिणम (1921), हिन्दू विधवा नाटक (1935)
(2) प्रेमचंद	संग्राम (1922)
(3) सुदर्शन	अंजना (1923), आनरेरी मैजिस्ट्रेट (1926), भाग्य (1937)
(4) गोविन्दवल्लभ पंत	कंजूस की खोपड़ी (1923), अंगूर की बेटी (1937)
(5) पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	चुम्बन (1937), डिक्टेटर (1937)
(6) सेठ गोविन्ददास	प्रकाश (1935)
(7) उदयशंकर भट्ट	कमला (1935)

□ प्रसाद युगीन हास्य-व्यंग्य प्रधान नाटक—

नाटककार	नाटक
(1) जी०पी० श्रीवास्तव	उलटफेर (1918), दुमदार आदमी (1919), गड़बड़झाला (1919), नाक में दम उर्फ जवानी बनाम बुढ़ापा उर्फ मियां की जूती मियां के सर (1926), भूलचूक (1928), चोर के घर छिछोर (1933), चाल बेढव (1934), साहित्य का सपूत (1934), स्वामी चौखटानंद (1936), मरदानी औरत (1920), विवाह विज्ञापन (1927), मिस अमेरीकन (1929)
(2) रामदास गौड़	ईश्वरीय न्याय (1924)

□ प्रसादयुगीन धार्मिक-पौराणिक नाटक—

नाटककार	नाटक
अंबिकादत्त त्रिपाठी	सीय स्वयंवर नाटक (1918)
रामनरेश त्रिपाठी	सुभद्रा (1942), जयंत (1934)
वियोगी हरि	छद्म योगिनी (1928), प्रबुद्ध यामुन (1929)
हरिऔध	प्रद्युम्न विजय व्यायोग (1936), रुक्मिणी परिणय (1937)
सेठ गोविन्द दास	कर्तव्य (1936)
किशोरीदास वाजपेयी	सुदामा (1934)

माखनलाल चतुर्वेदी	कृष्णार्जुन युद्ध (1918)
मैथिलीशरण गुप्त	तिल्लोतमा (1916), अनघ (1925)
उदयशंकर भट्ट	सागर विजय (1933), विद्रोहिणी अंबा (1935), मत्स्यगन्धा (1937), विश्वामित्र (1938), राधा (1940)

- लक्ष्मीनारायण मिश्र को हिन्दी में 'समस्या नाटक' का जन्मदाता माना जाता है।
- लक्ष्मीनारायण मिश्र के मुख्य नाटक हैं—
  (1) अशोक (1927), (2) संन्यासी (1930), (3) मुक्ति का रहस्य (1932), (4) राक्षस का मन्दिर (1931), (5) राजयोग (1933), (6) सिन्दूर की होली (1934) और (7) आधी रात (1934)।
- प्रतीकवादी नाटकों की सार्थक संज्ञा 'अन्योपदेशिक' कही गई है।
- प्रसाद का 'कामना' (1927), पंत का 'ज्योत्स्ना' (1934) और भगवती प्रसाद वाजपेयी का 'छलना' (1939) ये तीनों नाटक अन्योपदेशिक नाटक हैं।
- 'गीति नाट्य' लेखन का प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद को माना जाता है।
- 'करुणालय' को हिन्दी का प्रथम गीति नाट्य माना जाता है।
- कुछ आलोचक विद्वान भारतेन्दु कृत 'भारत-जननी' को प्रथम 'गीति नाट्य' मानते हैं।
- प्रसादयुगीन प्रमुख 'गीतिनाट्य' निम्नलिखित हैं—

जयशंकर	करुणालय (1912)
मैथिलीशरण गुप्त	अनघ (1925)
हरिकृष्ण प्रेमी	स्वर्ण विहान (1930)
भगवतीचरण वर्मा	तारा
उदयशंकर भट्ट	मत्स्यगंधा (1937), विश्वामित्र (1938)
सुमित्रानंदन पंत	रजत शिखर (1952), शिल्पी (1952)
गिरिजा कुमार माथुर	कल्पान्तर
धर्मवीर भारती	अंधायुग (1955 ई०)

- डॉ० नगेन्द्र ने 'गीतिनाट्य' को 'भावनाट्य' की संज्ञा दी है।
- 'समस्या नाटक' का प्रवर्तन हिन्दी में अंग्रेजी इब्सन एवं बनार्ड शॉ के प्रभाव से हुआ।
- प्रमुख 'समस्या नाटक' निम्न हैं—

नाटककार	समस्या नाटक
प्रेम सहाय सिंह	नवयुग (1934)
लक्ष्मीनारायण मिश्र	राक्षस का मन्दिर (1931), संन्यासी (1930 ई०), मुक्ति का रहस्य (1932), राजयोग (1933), सिन्दूर की होली (1934), आधी रात (1934)।
उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	लक्ष्मी का स्वागत (1935), स्वर्ग की झलक (1940), छठा बेटा (1940), जय पराजय (1937), देवताओं की छाया (1940), अलग अलग रास्ते (1954), अंजो दीदी (1955), भँवर (1961), बड़े खिलाड़ी (1967), लौटता हुआ दिन (1972), कैद, उड़ान।

सेठ गोविन्ददास	विकास (1941), सेवापथ (1940), प्रकाश (1935), संतोष कहाँ (1945), महत्व किसे (1947), गरीबी और अमीरी (1947)
वृन्दावनलाल वर्मा	खिलौने की खोज (1950)
हरिकृष्ण प्रेमी	छाया (1941), बंधन (1941)
पृथ्वीनाथ शर्मा	दुविधा (1938), अपराधी (1939), साथ (1944)
गणेश प्रसाद द्विवेदी	सोहाग बिन्दी (1935)
सूर्यनारायण शुक्ल	खेतिहर देश (1939)
विनोद रस्तोगी	नये हाथ (1958)
विष्णु प्रभाकर	डॉक्टर (1958), युगे युगे क्रांति (1969)

चतुर्थ उत्थान : प्रसादोत्तर नाटक

- प्रसादोत्तर युगीन ऐतिहासिक नाटक—

हरिकृष्ण प्रेमी	स्वप्न भंग (1940), आहुति (1940), उद्धार (1949), प्रकाश स्तम्भ (1954), कीर्ति स्तम्भ (1955), शतरंज के खिलाड़ी (1955), संरक्षक (1958), साँपों की सृष्टि (1959), रक्तदान (1962), आन का मान (1962), अमर आन (1964), अमर बलिदान (1968), अमृत पुत्री (1970)।
लक्ष्मीनारायण मिश्र	अशोक (1927), गरुड़ ध्वज (1945), वत्सराज (1950), दशाश्वमेध (1950), वितस्ता की लहरें (1953), धरती का हृदय, काल विजय, गंगाद्वार (1974)।
वृन्दावनलाल वर्मा	झांसी की रानी (1948), पूर्व की ओर (1950), वीरबल (1950), कश्मीर का काँटा (1948), फूलों की बोली (1947), ललित विक्रम (1953)।
उदयशंकर भट्ट	मुक्तिपथ (1944), शक-विजय (1949)
गोविन्दवल्लभ पंत	राजमुकुट (1935), अन्तःपुर का छिद्र (1940), तुलसीदास (1974), आत्मदीप (1978)।
रामकुमार वर्मा	कौमुदी महोत्सव (1954), विजय पर्व (1954)।

- प्रसादोत्तरयुगीन पौराणिक नाटक

नाटककार	नाटक
उदयशंकर भट्ट	राधा (1941), अशोक वन वन्दिनी (1959), गुरु द्रोण का अन्तर्निरीक्षण (1959), अश्वत्थामा (1959), असुर सुन्दरी (1972)।
गोविन्दवल्लभ पंत	ययाति (1951)
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	गंगा का बेटा (1940)

सेठ गोविन्ददास	कर्ण (1946)
श्री रांगेय राघव	स्वर्गभूमि का यात्री (1951)

पंचम उत्थान : समकालीन नाटक

- ❑ सन् 1961 ई० में सर्वप्रथम मार्टिन एसलिन ने 'एब्सर्ड' (विसंगति) शब्द का प्रयोग एवं व्याख्या की।
- ❑ हिन्दी के विसंगति नाटकों पर सर्वाधिक प्रभाव प्रसिद्ध एब्सर्ड नाटककार सैमुअल बेकेट (Samuel Backett) के 'वेटिंग फॉर गोदो' और 'एडगेम' नाटक का पड़ा।
- ❑ हिन्दी में विसंगति नाटकों की शुरुआत भुवनेश्वर के लघु नाटक 'ऊसर' (1938 ई०) से माना जाता है।
- ❑ डॉ० गिरीश रस्तोगी एवं डॉ० मदान ने हिन्दी में विसंगति नाटकों की शुरुआत भुवनेश्वर के नाटक 'ताँबे के कीड़े' (1946 ई०) से माना है।
- ❑ सन् 1936 ई० में प्रकाशित 'कारवाँ' भुवनेश्वर का एकमात्र नाट्य संकलन है। इसमें 'श्यामा—एक वैवाहिक विडम्बना' (1933), 'प्रतिभा का विवाह' (1933 ई०), 'शैतान' (1934) एवं 'रहस्य-रोमांस' (1935) आदि नाटक संकलित है।
- ❑ मोहन राकेश आधुनिकता बोध के नाटककार हैं। इनके प्रमुख नाटक निम्न है—

नाटक	वर्ष	प्रकार	पुरुष	स्त्री
आषाढ़ का एक दिन	1958	ऐतिहासिक	कालिदास, विलोम, मातुल दंतुल	अंबिका मल्लिका
लहरों के राजहंस	1963	ऐतिहासिक	नंद, श्यामांग, आनंद	सुन्दरी, अलका
आधे अधूरे	1969		महेन्द्रनाथ सिंघानिया जगमोहन, अशोक	सावित्री, बिन्नी, किन्नी, जुनेजा
पैर तले जमीन	अधूरा			
अंडे के छिलके	एकांकी			
सिपाही की माँ	एकांकी			
प्यालियाँ टूटती हैं	एकांकी			
बहुत बड़ा सवाल	एकांकी			
रात बितने तक	ध्वनि नाट्य			
छतरिया	पार्श्व नाटक			
शायद	बीजनाटक			
हुँः	बीजनाटक			

- ❑ 'लहरों के राजहंस' नाटक की रचना मोहन राकेश ने अश्वघोष के महाकाव्य 'सौरानन्द' के आधार पर किया है।

- ❑ 'आधे अधूरे' नाटक को समकालीन जिन्दगी का पहला सार्थक हिन्दी नाटक माना जाता है।
- ❑ 'आधे अधूरे' नाटक को 'मील का पत्थर' भी कहा जाता है।
- ❑ बीज नाटक को ही वस्तुतः लघु नाटक कहा जाता है अर्थात् बीजनाटक लघु आकार के ऐसे नाट्य प्रयोग होते हैं जिनमें विस्तार को समेटने की क्षमता होती है।
- ❑ सन् 1958 ई० में प्रकाशित 'डॉक्टर' नाटक विष्णु प्रभाकर का एक मनोवैज्ञानिक सामाजिक नाटक है।
- ❑ विष्णु प्रभाकर के अन्य नाटक निम्नलिखित हैं—
  युग-युगे क्रान्ति (1969), टूटते परिवेश (1974), कुहासा और किरण (1975), डरे हुए लोग (1978), वंदिनी (1979), अब और नहीं (1981), सत्ता के आर-पार (1981), श्वेत कमल (1984)।
- ❑ भीष्म साहनी का नाटक 'हानूश' चेकोस्लोवाकिया में प्रचलित एक लोक कहानी पर आधृत है।
- ❑ भीष्म साहनी के अन्य नाटक निम्नांकित हैं—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
हानूश	1977	चेकोस्लोवाकिया की लोककथा
कबिरा खड़ा बाजार में	1981	कबीर का युग प्रवर्तक व्यक्तित्व
माधवी	1985	महाभारत की कथा पर आधृत
मुआवजे	1993	मूलतः पंजाबी में लिखा स्वयं नाटककार द्वारा हिन्दी में अनूदित
रंग दे बसंती चोला	1998	जलियावाला हत्याकाण्ड पर आधृत
आलमगीर	1999	औरंगजेब व दाराशिकोह के बीच का मजहबी द्वंद्व

- ❑ सन् 1951 में प्रकाशित 'कोर्णाक' नाटक जगदीश चन्द्र माथुर के ख्याति का आधार है।
- ❑ जगदीशचन्द्र माथुर के अन्य नाटक अग्रांकित हैं—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
कोणार्क	1951	सर्जनात्मकता एवं विध्वंस, नयी व पुरानी पीढ़ी का संघर्ष
शारदीया	1959	प्रेम व सर्जनात्मकता का प्रश्न
पहला राजा	1969	इसमें इतिहास के माध्यम से नेहरू युग की समस्या का चित्रण किया गया है।
रघुकुल रीति	1985	रामलीला की पद्धति पर आधारित
दशरथनंदन	1974	रामचरितमानस की मुख्य कथा पर आधारित

- ❑ जगदीशचन्द्र माथुर के सभी नाटक ऐतिहासिक कथानकों पर आधारित हैं।
- ❑ 'पहला राजा' नाटक जगदीशचन्द्र माथुर ने 'इलाहाबाद वाले जवाहर लाल नेहरू की याद' में समर्पित किया है।
- ❑ 'पहला राजा' नाटक के सन्दर्भ में लेखक की उक्ति है, "यह नाटक न पौराणिक है,

न ऐतिहासिक, न यथार्थवादी। यह तो एक 'माडर्न एलिगोरी' आधुनिक अन्योक्ति का मंचीय रूप है।"

- लक्ष्मीकान्त वर्मा आधुनिकता बोध (विसंगति) के नाटककार हैं। इनके नाटक निम्नलिखित हैं—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
तिन्दुवुलम्	1958	
सीमान्त के बादल	1963	
अपना-अपना जूता	1964	
रोशनी एक नदी है	1974	यह एक एब्सर्ड नाटक है।
ठहरी हुई जिन्दगी	1980	
आदमी का जहर		

- विनोद रस्तोगी आधुनिक समस्या के नाटककार हैं। इनके प्रमुख नाटक निम्नलिखित हैं—(1) आजादी के बाद, (2) नये हाथ, (3) बर्फ की मीनार, (4) जनतंत्र जिन्दाबाद, (5) गोपा का दान, (6) देश के दुश्मन, (7) फिसलन और पाँव, (8) भगीरथ के बेटे, (9) सराय के अन्दर।
- लक्ष्मीनारायण लाल समकालीन हिन्दी नाटककारों में चर्चित नाटककार हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नांकित हैं—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
अंधा कुआँ	1955	
मादा कैक्टस	1959	प्रतीकात्मक नाटक
तीन आँखों वाली मछली	1960	
सूखा सरोवर	1960	प्रतीकात्मक काव्य नाटक
नाटक बहुरंगी	1961	
नाटक तोता मैना	1962	लोक नाट्य
रातरानी	1962	
दर्पन	1962	मनोवैज्ञानिक नाटक
रक्तमाल	1963	
सूर्यमुख	1968	महाभारत युद्ध के पश्चात कृष्ण व द्वारिका के नष्ट होने पर आधारित
कलंकी	1969	पौराणिक हिन्दू मिथक पर आधारित
मिस्टर अभिमन्यु	1971	महाभारत के कथानक पर आधारित
कर्फ्यू	1972	लघु नाटक
दूसरा दरवाजा	1972	लघु नाटक
अब्दुल्ला दीवाना	1973	सामाजिक समस्या, स्त्री-पुरुष संबंध, जीवनमूल्य
नरसिंह कथा	1975	पौराणिक कथानक पर आधारित
व्यक्तिगत	1975	सामाजिक समस्या, स्त्री पुरुष समस्या पर आधृत
गुरु	1976	

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
यक्ष प्रश्न	1976	महाभारत के कथानक पर आधारित
एक सत्य हरिश्चन्द्र	1976	लोक नाट्य
गंगामाटी	1977	लोकभूमि से जुड़ा नाटक
सगुन पंछी	1977	
सब रंग मोहभंग	1977	लोकनाट्य शैली पर आश्रित एब्सर्ड नाटक
पंच पुरुष	1978	लोकभूमि से जुड़ा नाटक
राम की लड़ाई	1979	
बलराम की तीर्थयात्रा	1983	
कजरीवन	1980	
सुन्दर रस	1960	
काफी हाउस में इन्तजार		एब्सर्ड नाटक
हाथी घोड़ा चूहा		लघु नाटक

- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जनवादी नाटककार हैं। इनके नाटक लोक नाट्य शैली में आबद्ध हैं।
- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने तीन नाटक—'बकरी' (1974 ई०), 'लड़ाई' (1979 ई०) और 'अब गरीबी हटाओ' लिखे हैं।
- 'लड़ाई' नाटक सर्वेश्वर की एक कहानी का नाट्य-रूपान्तर है।
- शम्भूनाथ सिंह विसंगति बोध के नाटककार हैं। 'दीवार की वापसी' और 'अकेला शहर' इनके दो प्रमुख नाटक है।
- अमृतराय ने तीन नाटक—'चिन्दियों की एक झालर' (1969 ई०), 'शताब्दी' और 'हमलोग' लिखे हैं।
- अमृत राय के तीनों नाटकों को 'आज अभी' (1973 ई०) शीर्षक से एक जिल्द में प्रकाशित किया गया है।
- ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने निम्नांकित नाटकों की रचना की है—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
नेफा की एक शाम	1962	चीनी आक्रमण के समय की स्थिति का चित्रण
माटी जागीर	1964	ग्राम विकास योजनाओं और उसमें बाधक तत्त्वों का चित्रण
वतन की आबरू	1966	पाकिस्तानी आक्रमण के विरुद्ध लड़े युद्ध का चित्रण
अनुष्ठान		हिंसात्मक वृत्ति की निरर्थकता का प्रतिपादन
शुतुरमुर्ग	1968	इसमें नेहरूकालीन राजनीति पर चोट किया गया है।
चिराग जल उठा		टीपू सुल्तान का विदेशियों से युद्ध दिखाया गया है।

- 'अनुष्ठान' नाटक को 'मानव की दिग्भ्रांति यात्रा का नाटक' भी कहा जाता है।
- 'शुतुरमुर्ग' समसामयिकता, प्रतीकात्मकता एवं प्रयोगात्मकता में ज्ञानदेव अग्निहोत्री का प्रथम सार्थक नाटक है।
- 'शुतुरमुर्ग' को राजनीतिक फैंटेसी या सामाजिक-राजनैतिक फार्स कहा जाता है।
- रेवती सरन शर्मा ने निम्न नाटकों की रचना की—

चिराग की लौ (1962), अपनी धरती (1963), अँधेरे का बेटा (1969), न धरम न इमान (1970), दीपशिखा (1973)।

- राजेन्द्र कुमार शर्मा एक सोदेश्यवादी नाटककार हैं। इनके नाटक निम्न हैं—
रेत की दीवार (1963 ई०), अपनी कमाई (1969 ई०) और नीलाम घर (1977)।
- 'अपनी कमाई' पंजाब सरकार द्वारा पुरस्कृत नाटक है।
- सुरेन्द्र वर्मा ने निम्नलिखित नाटकों की रचना की है—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
1. द्रौपदी	1972	महाभारतकालीन द्रौपदी का मिथकीय रूप में चित्रण
2. सेतुबंध	1972	संस्कृत भाषा के वाकाटक नरेश प्रवरसेन द्वितीय कृत सेतुबंध पर आधारित
3. नायक खलनायक विदुषक	1972	दुष्यन्त और शकुन्तला के आचरण पर आधारित
4. सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक	1975	इसमें नारीत्व की सार्थकता की तलाश की गई है।
5. आठवाँ सर्ग	1976	कालिदास के 'कुमारसंभव' महाकाव्य के आठवें सर्ग पर आधारित
6. छोटे सैयद बड़े सैयद	1982	मुगल सम्राट मुहम्मदशाह के समय का यथार्थ चित्रण
7. एक दूनी एक	1987	
8. शकुन्तला की अँगूठी	1990	'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक की पुनर्निर्मिति
9. कैद-ए-हयात	1993	मिर्जा गालिब के जीवन पर आधारित

- 'आठवाँ सर्ग' नाटक प्रथम बार 'हत्या' शीर्षक से 'कथा-पत्रिका' में प्रकाशित हुआ था।
- सुरेन्द्र वर्मा का नाटक 'छोटे सैयद बड़े सैयद' प्रथम बार 'हसन अली हुसैन अली' नाम से प्रकाशित हुआ था।
- रमेश बक्षी बोल्ड आधुनिकतावादी तथा विडम्बना एवं विसंगति के नाटककार हैं। इनके प्रमुख नाटक निम्न हैं—
(1) देवयानी का कहना है (1972 ई०), (2) तीसरा हाथी (1975), (3) वामाचार (1977), (4) यादों के घर और (5) कसे हुए तार (1979)।
- हमीदुल्ला एक व्यंग्य नाटककार के रूप में प्रसिद्ध है। इनके प्रकाशित नाटक निम्नांकित हैं—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
उलझी आकृतियाँ	1973	पैसे की सामाजिक प्रतिष्ठा को दिखाकर यथार्थ का चित्रण
दरिन्दे	1975	इसमें सभ्य मनुष्य के भीतर के पशु का चित्रण है।
उत्तर उर्वशी	1979	
हरबार	1986	

- हमीदुल्ला कृत 'उलझी आकृतियाँ' नाटक में तीन नाटक हैं—(1) समय संदर्भ, (2) एक और युद्ध और (3) उलझी आकृतियाँ।
- सन् 1974 ई० में प्रकाशित नाटक 'अमृत पुत्र', सत्यव्रत सिन्हा का एक विसंगति नाटक है। यह इनकी एकमात्र नाट्य कृति है।
- विपिन कुमार अग्रवाल को कुछ विद्वानों ने हिन्दी में विसंगति बोध के नाटकों के आरम्भ कर्ता के रूप में स्वीकार किया है।
- विपिन कुमार ने तीन एब्सर्ड नाटक लिखे—(1) 'तीन अपाहिज' (सर्वप्रथम कल्पना पत्रिका में सन् 1960 में प्रकाशित), (2) 'लोटन' (1974) और (3) खोए हुए की तलाश
- सुशील कुमार सिंह राजनीतिक नाटककार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके प्रमुख नाटक इस प्रकार हैं—
(1) सिंहासन खाली है (1974 ई०), (2) बापू की हत्या हजारवीं बार, (3) अँधेरे के राही, (4) नागपाश और (5) चार यारों का यार।
- मणि मधुकर लोक-नाट्य शैली में सामाजिक एवं राजनीतिक नाटक लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके प्रमुख नाटक हैं—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
रस गन्धर्व	1975	तत्कालीन राजनीति सामाजिक विसंगति का चित्रण
बुलबुल की सराय	1978	आधुनिक राजनीतिक विसंगति पर व्यंग्य
दुलारीबाई	1978	पुराने अंधविश्वासों, संस्कारों, रूढ़ियों पर व्यंग्य
खेला पोलमपुर	1979	स्वार्थलोलुप सत्ता के दिग्भ्रमित होने की ओर संकेत
इकतारे की आँख	1980	कबीरदास के व्यक्तित्व के आधार पर लिखा है।

- दया प्रकाश सिन्हा राजनीतिक नाटक लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं।
- दया प्रकाश सिन्हा का राजनीतिक नाटकत्रयी है—इतिहासक चक्र, कथा एक कंस की (1976) और सीढ़ियाँ (1990)।
- दया प्रकाश सिन्हा के अन्य नाटक हैं—(1) पंचतंत्र (1960), (2) मन के भँवर (1968), (3) दुश्मन (1969), (4) अपने-अपने दाँव (1972), (5) ओह अमेरिका (1973), (6) साँझ सवेरे (1974), (7) मेरे भाई मेरे दोस्त (1974) और (8) सादर आपका (1980)।
- शंकर शेष विसंगति बोध के नाटककार हैं। इनके प्रमुख नाटक निम्न हैं—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
फंदी		व्यक्ति की विडम्बना का नाटकीय चित्रण
घरौंदा	1978	दफ्तरों में कार्यरत युवतियों के जीवन यथार्थ का चित्रण
एक और द्रोणाचार्य	1977	महाभारतकालीन द्रोणाचार्य का पौराणिक मिथकीय चित्रण

अरे मायावी सरोवर	1980	पौराणिक कथानक पर आधारित
रक्तबीज		
बंधन अपने-अपने		
चेहरे		व्यक्ति व समाज के दोहरे चरित्र का चित्रण
कोमल गांधार		महाभारत के कथानक पर आधारित
पोस्टर		वर्तमान राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक विषमताओं के बीच आम आदमी की त्रासदी का चित्रण
खजुराहो का शिल्पी		काम व अध्यात्म के जीवन दर्शन का विश्लेषण
बिन बाती के दीप		
आधी रात के बाद		

- मुद्रा राक्षस ने रूसी नाटककार गोगोल के नाटक 'इंस्पेक्टर जनरल' का हिन्दी नाट्य रूपान्तर 'आला अफसर' नाम से किया।
- मुद्रा राक्षस के प्रमुख नाटक निम्न हैं—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
तिलचट्टा	1972	स्त्री-पुरुष की यौन-कुण्ठा का चित्रण
योर्स फेथफुली	1974	केन्द्रीय कर्मचारियों की हड़ताल व अधिकारियों की क्रूरता और स्वार्थपरता का चित्रण
मरजीवा		वर्तमान समाज की विसंगति व अभिशप्त व्यक्ति की नियति का चित्रण
तेन्दुआ		मानव की पाशविक प्रवृत्तियों का चित्रण
प्रथम प्रस्तुति		
आला अफसर	1979	नौकरशाही के क्रूर व कुटिल चरित्र का चित्रण
गुफाएँ	1979	द्विपात्रीय प्रयोगात्मक रचना
सन्तोला	1980	वर्तमान सामाजिक स्थिति के बीच से नये समाज की कल्पना

- मुद्राराक्षस ने नाटक की भाषा को 'हाशिए की भाषा' कहा है।
- गिरिराज किशोर के नाटक अग्रांकित हैं—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
नरमेध		
बादशाह गुलाम बेगम	1979	सत्ता की क्रूरता से आक्रोशित जनता का मूर्त चित्रण
प्रजा ही रहने दो	1977	महाभारत के कथानक पर आश्रित
घोड़ा और घास	1980	
चेहरे चेहरे किसके चेहरे	1983	व्यवस्था की निरंकुशता व जनता की पीड़ा का चित्रण
केवल मेरा नाम लो	1984	फ्रायडीय मनोविज्ञान पर आधारित ईडिपस ग्रन्थि से पीड़ित व्यक्ति का चित्रण

जुर्म आयद	1987	न्याय व्यवस्था के खोखलेपन का चित्रण
काठ की तोप	2001	व्यंग्यात्मक नाटक

- गिरिराज किशोर कृत 'नरमेध' के सम्बन्ध में डॉ० गिरीश रस्तोगी लिखती है, "'नरमेध' वस्तुतः आधुनिक बोध से उपजा 'इन्टलकचुअल्स' नाटक है।"
- सन् 1979 ई० प्रकाशित 'पाँचवाँ सवार' नाटक बलराज पण्डित का महत्वपूर्ण (बूढ़े समाज की समस्या पर आधारित) नाटक है।
- दूधनाथ सिंह ने उर्वशी-पुरुवा के पौराणिक गाथा के आधार पर सन् 1900 में 'यमगामा' नाटक की रचना की।
- ललित कुमार सहगल ने 'हत्या एक आकार की' नाटक की रचना की।
- शिवमूरत सिंह ने 'पूर्वार्द्ध' नाटक की रचना की।
- डॉ० विनय ने महाभारत के कथानक पर 'एक प्रश्न मृत्यु' काव्य नाटक लिखा।
- असगर वजाहत ने 'इला की आवाज' नाटक लिखा।
- बृजमोहन शाह व्यंग्य एवं विसंगतिबोधक के नाटककार हैं। इनके प्रमुख नाटक निम्नलिखित हैं—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
त्रिशंकु	1973	व्यंग्य समस्या नाटक
शहयेमात	1976	विसंगति बोध का नाटक
युद्धमन	1975	युद्ध की विवशता, युद्ध का विरोध और युद्ध से विरक्ति स्थिति का चित्रण

- डॉ० दशरथ ओझा का कथन है, 'त्रिशंकु हिन्दी का आधुनिक युग में पहला, तेज, तुर्श और तल्ख नाटक है।'
- 'शह ये मात' हिन्दी का एक 'गिनीफ़िकेन्ट' नाटक है।
- रामेश्वर प्रेम ने निम्नलिखित नाटकों की रचना की—
  (1) चारपाई, (2) राजा नंगा है, (3) कालपात्र, (4) अज्ञात घर, (5) अंतरंग, (6) कैम्प, (7) शस्त्र संतान (1997 ई०) और (8) लोमड़ वेश (1980 ई०)।
- 'लोमड़वेश' नाटक अंग्रेज नाटककार वेन जानसन के हास्य नाटक 'दी फाक्स' या 'वालपोनि' का हिन्दी रूपान्तर है।
- नरेन्द्र मोहन के प्रमुख नाटक इस प्रकार हैं—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
कहै कबीर सुनो भाई साधो	1987	कबीर के व्यक्तित्व के आधार पर
सींगधारी	1988	
कलंदर	1991	सूफियों के मस्ती-आजादी का चित्रण
नो मैन्स लैण्ड	1994	हिन्दुस्तान के बँटवारे की त्रासदी का चित्रण
अभंग गाथा	2000	संत तुकाराम के जीवन पर आधारित

- 'नो मैन्स लैण्ड' नाटक मण्टो की कहानी 'टोवा टेक सिंह' से प्रभावित है।
- शरद जोशी व्यंग्य नाटक लेखक के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके प्रमुख व्यंग्य नाटक निम्न हैं—(1) बैंगन की नाव, (2) एक था गधा (1980), (3) अन्धों का हाथी

(1980)।

- सुदर्शन मजीठिया ने हिन्दी में नुक्कड़ नाटक की शुरुआत की।
- सन् 1986 ई० में सुदर्शन मजीठिया ने 'चौराहा' नाटक की रचना की।
- आचार्य नंदकिशोर ने निम्नलिखित नाटकों की रचना की है—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
देहान्तर	1987	ययाति, शर्मिष्ठा, देवयानी एवं पुरु की पौराणिक कथा-भूमि पर आधारित
पागल घर	1988	काल्पनिक नाटक
हस्तिनापुर		महाभारत की कथा पर आधारित
जिल्ले सुभानी		मुगल बादशाह अकबर की जीवनी पर आधारित
जूते		अरेबियन नाइट्स की लोकप्रिय कथा पर आधारित
गुलाम बादशाह	1992	वलवन के जीवन कथा पर आधारित
किमिदम् यक्षम्		मूर्तिकार पिता एवं उसकी पुत्री के बीच का प्रेम

- समकालीन नाटककारों में कृष्णबलदेव वैद्य का प्रमुख स्थान है। इनके प्रमुख नाटक अग्रांकित है—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
भूख आग है	1998	यह एक विडम्बना प्रधान नाटक है
हमारी बुढ़िया	2000	एक बूढ़ी स्त्री की त्रासदी का चित्रण
सवाल और स्वप्न	2001	स्त्री की अस्मिता एवं त्रासदी का चित्रण

- 'बुढ़िया की गठरी' नामक कहानी पर 'हमारी बुढ़िया' नाटक का सृजन किया गया है। जो लेखक की ही एक कहानी है।
- नागबोडस के प्रमुख नाटक निम्नांकित हैं—

नाटक	वर्ष	नाटक का आधार व विषय
खूबसूरत वहू	1998	ग्रामीण जीवन पर आधारित नाटक
वसीयत	1998	
दलित	1998	एक राजनीतिक नाटक है
तोता झूठ नहीं वोलता	1998	सर्कस की दुनिया की नग्न सच्चाई
पढ़ो फारसी वेचो तेल	2002	आस्ट्रिया के प्रख्यात दार्शनिक 'विटगेंश्टाइन' के जीवन पर आधारित

- स्वदेश दीपक प्रगतिशील नाटककार हैं। इनके प्रमुख नाटक निम्न हैं—

नाटक वाल भगवान	1989	लेखक की इसी शीर्षक की कहानी का नाट्य रूपान्तर
कोर्ट मार्शल	1991	फौजी जीवन की सच्चाई
जलता हुआ रथ	1998	शोषक एवं शोषित के बीच का संघर्ष व दर्द
सबसे उदास कविता	1998	वर्ग संघर्ष का चित्रण
काल कोठरी	1999	कलाकार की पीड़ा का चित्रण

- राजेश जैन व्यंग्य नाटक लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके प्रमुख नाटक निम्न हैं—
(1) वायरस (1994), (2) विषवंश (1999 ई०)।

- 'वायरस' नाटक में एक अन्य नाटक भी संकलित है, जिसका नाम 'धक्कापम्प' है।
- 'धक्का पम्प' एक व्यंग्यात्मक नाटक है।
- प्रताप सहगल ने दो नाटकों की रचना की—(1) अन्वेषक (1992), (2) और नहीं कोई अंत (1999 ई०)।
- अन्य प्रमुख नाटककार अग्रांकित हैं—

नाटककार	नाटक	नाटककार	नाटक
नरेश मेहता	खण्डित यात्राएँ,	शिवप्रसाद सिंह	घाटियाँ गूँजती हैं
	रोटी और बेटी,	कमलेश्वर	अधूरी आवाज
	सुबह के घंटे	रमेश उपाध्याय	पेपरवेट
नरेन्द्र कोहली	शंबूक की हत्या	गोविन्द चातक	काला मुँह
रमेशचन्द्र शाह	मारा जाई खुसरो	राजेश जोशी	जादू जंगल
सुदर्शन चोपड़ा	काला पहाड़	रामकुमार 'भ्रमर'	तमाशा
पृथ्वीनाथ शास्त्री	क्रीड़नक	जयशंकर त्रिपाठी	कुरुक्षेत्र का सवेरा
लक्ष्मीनारायण भारद्वाज	अश्वत्थामा	संतोष कुमार	चाय पार्टियाँ
अजीतकुमार पुष्कल	घोड़ा घास नहीं खाता	नौटियाल	
कणाद ऋषि भटनागर	जहर, जनता का सेवक	सत्यप्रकाश सेंगर	दीप से दीप जले
चिरंजित	तस्वीर उसकी, अभिमन्यु चक्रव्यूह में		

- प्रमुख अनूदित नाटक एवं नाटककार निम्नांकित हैं—

अनुवादक	अनू० नाटक	वर्ष	मूल नाटककार	मूल नाटक	भाषा
राजा लक्ष्मण सिंह	शकुन्तला	1862	कालिदास	अभिज्ञान शाकुन्तलम्	संस्कृत
रत्नचन्द्र 'लीडर'	भरमजालक	1879	विलियम शेक्सपियर	कॉमेडी ऑफ इरर्स	अंग्रेजी
मुद्राराक्षस	आला अफसर	1979	गोगोल	द गवर्नमेंट अफसः	रूसी
रघुवीर सहाय	बरनम वन		विलियम शेक्सपियर	मैकबेथ	अंग्रेजी
विष्णु प्रभाकर	वंदिनी		प्रभातकुमार मुखोपाध्याय	देवी	बंगला
रामेश्वर प्रेम	लोमड़ वेश	1980	वेन जानसन	दी फॉक्स या वालपोनी	अंग्रेजी

- मन्नू भण्डारी ने दो प्रमुख नाटकों की रचना की, जो निम्न हैं—

बिना दीवारों के घर	1965	इसमें पति-पत्नी के बीच के तनाव का चित्रण है
महाभोज	1982	इनके उपन्यास महाभोज का ही यह नाट्य रूपान्तर है।

- शान्ति मेहरोत्रा ने दो प्रमुख नाटक लिखे—(1) एक और दिन, (2) ठहरा हुआ पानी (1975)।
- मृदुला गर्ग ने निम्नलिखित नाटकों की रचना की है—

एक और अजनवी	1978	स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का चित्रण
जादू का कालीन	1993	बँधुआ मजदूर बच्चों की विवशता और त्रासदी का चित्रण
कितनी कैदें	1969	स्त्री-पुरुष के बीच प्रेम व्यापार का चित्रण
दुलहिन एक पहाड़ की	1969	इवेवेल एंड्रस के एकांकी 'ब्राइट फ्राम द हिल्स' पर आधृत
दूसरा संस्करण	1969	

- मृदुला गर्ग के तीन नाटक 'कितनी कैदें', 'दुलहिन एक पहाड़ी की' और 'दूसरा संस्करण' एक ही जिल्द में 'तीन कैदें' (1969 ई०) नाम से प्रकाशित हुआ।
- मृणाल पाण्डेय के नाटक सामाजिक सन्दर्भों से अनुप्राणित हैं, जो निम्न हैं—(1) जो राम रचि राखा (1981), (2) मौजूदा हालत को देखते हुए (1979) और (3) आदमी जो मछुआरा नहीं था (1883 ई०)।
- शोभा भूटानी ने 'शायद हाँ' नाटक की रचना की।
- कुसुम कुमार, महिला नाटककारों में सर्वाधिक संख्या में नाटक लिखी हैं।
- इनके नाटक निम्नलिखित हैं—
  (1) संस्कार को नमस्कार, (2) ओम क्रान्ति क्रान्ति, (3) सुनो शेफाली, (4) दिल्ली ऊँचा सुनती है, (5) रावण लीला, (6) मादा मिट्टी, (7) पवन चतुर्वेदी की डायरी, (8) सलामी मंच एवं (9) लश्कर चौक (1979 ई०)।
- 'लश्कर चौक' नाटक पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कहानी 'खुदा राम' से प्रभावित है।
- त्रिपुरारी शर्मा ने 'काठ की गाड़ी' एवं 'वाँझ घाटी' नाटक की रचना की।
- गिरीश रस्तोगी ने दो मौलिक नाटक 'असुरक्षित' एवं 'मुझे मत मारो' नाटक की रचना की।
- प्रतिभा अग्रवाल द्वारा किया गया लेखकों का नाट्यानुवाद निम्न है—

मूल लेखक	नाट्यानुवाद
वादल सरकार	(1) एवं इंद्रजित, (2) सारी रात, (3) अवू हसन, (4) पागल घोड़ा, (5) वड़ी वुआ जी, (6) घेरा, (7) राम-श्याम जदु, (8) वल्लभपुर की रूपकथा।
प्रेमचंद	गोदान
अमृतलाल नागर	सुहाग के नूपुर
एस०एल० भैरप्पा	वंशवृक्ष

- गिरीश रस्तोगी द्वारा किया गया नाट्य रूपान्तरण—

मूल लेखक	मूल रचना	रूपान्तरण
श्रीलाल शुक्ल	राग दरवारी	रंगनाथ की वापसी
हजारीप्रसाद द्विवेदी	वाणभट्ट की आत्मकथा	वाणभट्ट की आत्मकथा

- हिन्दी का प्रमुख गीति-नाट्य एवं काव्य नाट्य निम्नलिखित है—

नाटककार	नाटक	वर्ष	आधार एवं विषय
निराला	पंचवटी-प्रसंग		
जयशंकर प्रसाद	करुणालय	1912	
सुमित्रानंदन पंत	रजत शिखर, शिल्पी		
भगवती चरण वर्मा	तारा		
डॉ० धर्मवीर भारती—	अंधायुग	1955	महाभारत के अवसान के 'वाद की स्थिति का चित्रण
डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल	सूखा सरोवर	1960	
दुष्यंत कुमार	एक कंठ विषपायी	1963	शिव और सती की पौराणिक कथा पर आधारित
भारतभूषण अग्रवाल	अग्नि-लीक	1976	राम के जीवन-चरित्र पर आधारित
अज्ञेय	उत्तरप्रियदर्शी		सम्राट अशोक के जीवन पर आधारित
विनोद रस्तोगी	सूतपुत्र		
डॉ० विनय	एक प्रश्न मृत्यु		महाभारत को कथानक पर आधारित
वीरेन्द्र नारायण	सूरदास		

- हिन्दी के प्रमुख नाटक एवं उनके प्रमुख पात्र—

नाटककार	नाटक	पुरुष	स्त्री
मोहन राकेश	आषाढ़ का एक दिन	कालिदास, विलोम, मातुल, दंतुल	अंविका, मल्लिका, प्रियंगुमंजरी, रंगिणी संगिणी
	लहरों का राजहंस	नंद, श्यामांग, आनंद	सुंदरी, अलका, मैत्रेय
	आधे-अधूरे	महेन्द्रनाथ, अशोक, सिंघानिया, जगमोहन	सावित्री, बिन्नी, किन्नी जुनेजा
विष्णु प्रभाकर	डॉक्टर	सतीशचन्द्र	डॉ० अनीला, मधुलक्ष्मी
भीष्म साहनी	हानूश	हानूश, पादरी, एमिल जेकव	कात्या, पान्या
उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	अंजो दीदी	श्रीपत	अंजोदीदी (अंजली)
जगदीशचन्द्र माथुर	कोणार्क	विशु, नरसिंह देव, धर्मपाल	
	पहला राजा	पृथु, शुक्राचार्य	
लक्ष्मीनरायण लाल	मादा कैक्टस	अरविन्द	सुजाता, आनन्दा
सुरेन्द्र वर्मा	द्रौपदी	मनमोहन	सुरेखा
शंकर शेष	एक और द्रोणाचार्य	अरविन्द, विमलेन्दु	ललिता, यदु, अनुराधा

एकांकी

- जयशंकर प्रसाद कृत 'एक घूँट' (1930 ई०) को आधुनिक ढंग का प्रथम एकांकी स्वीकार किया जाता है।
- हिन्दी के प्रथम एकांकीकार के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है जो निम्न है—

विद्वान	प्रथम एकांकीकार
डॉ० सत्येन्द्र	भारतेन्दु हरिश्चन्द
रामनाथ सुमन	रामकुमार वर्मा
डॉ० नगेन्द्र, सोमनाथ गुप्त, अज्ञेय	जयशंकर प्रसाद

- डॉ० रामकुमार वर्मा ने हिन्दी में सर्वप्रथम पश्चिमी नाट्य-विधान को ध्यान में रखकर 'बादल की मृत्यु' (1930 ई०) एकांकी की रचना की।
- हिन्दी के प्रमुख एकांकीकार निम्नलिखित हैं—

एकांकीकार	एकांकी
डॉ० रामकुमार वर्मा	(1) पृथ्वीराज की आँखें, (2) रेशमी टाई, (3) चारु मित्रा (1943), (4) विभूति, (5) सप्तकिरण, (6) रूपरंग, (7) कौमुदी-महोत्सव, (8) ध्रुव तारिका, (9) ऋतुराज, (10) रजत रश्मि, (11) दीपदान, (12) काम कंदला, (13) बापू, (14) इन्द्रधनुष, (15) रिमझिम।
भुवनेश्वर	(1) कारवाँ।
उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	सामाजिक व्यंग्य—(1) लक्ष्मी का स्वागत, (2) पापी, (3) मोहब्बत, (4) जोंक, (5) स्वर्ग की झलक, (6) अधिकार का रक्षक, (7) आपस का समझौता, प्रतीकात्मक एकांकी—(8) चरवाहे, (9) देवताओं की छाया में, (10) खिड़की, (11) अंधी गली, प्रहसन—(12) पर्दा उठाओ, (13) पर्दा गिराओ, (14) कैसा साब कैसी आया।
उदयशंकर भट्ट	(1) एक ही कब्र में, (2) दस हजार, (3) दुर्गा, (4) नेता, (5) उन्नीस सौ पैंतीस, (6) वर निर्वाचन, (7) सेठ लाभचन्द, (8) स्त्री का हृदय, (9) बड़े आदमी की मृत्यु, (10) नये मेहमान, (11) धूम शिखा, (12) पर्दे के पीछे, (13) मुंशी अनेखे लाल, (14) विष की पुड़िया।
सेठ गोविन्द दास	(1) स्पर्धा, (2) मानव मन, (3) मैत्री, (4) वह मरा क्यों, (5) हंगर स्ट्राइक, (6) बुद्ध की एक शिष्या, (7) सप्त रश्मि, (8) एकादशी, (9) पंचभूत, (10) चतुष्पथ।
जगदीश चन्द्र माथुर	(1) मेरी बाँसुरी (1936), (2) भोर का तारा, (3) कलिंग विजय, (4) रीढ़ की हड्डी, (5) मकड़ी का जाला, (6) खण्डहर, (7) खिड़की राह, (8) घोंसले, (9) कबूतरखाना, (10) भाषण, (11) ओ मेरे सपने, (12) शारदीय, (13) वंदो।

एकांकीकार	एकांकी
गणेश प्रसाद द्विवेदी	(1) सोहाग बिन्दी, (2) वह फिर आई थी, (3) पर्दे का अपर पार्श्व, (4) दूसरा उपाय ही क्या है, (5) रिहर्सल।
गिरिजा कुमार माथुर	(1) मेघ की छाया, (2) पिकनिक, (3) उमर कैद, (4) लाउडस्पीकर।
भगवतीचरण वर्मा	(1) सबसे बड़ा आदमी, (2) मैं और केवल मैं, (3) दो कलाकार।
चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	(1) मनुष्य की कीमत, (2) हिन्दुस्तान जाकर कहना, (3) ताँगे वाला, (4) भेड़िये, (5) नवप्रभात।
डॉ० सत्येन्द्र	(1) कुणाल, (2) स्वतंत्रता का अर्थ, (3) प्रायश्चित, (4) बलिदान।
विष्णु प्रभाकर	(1) प्रकाश और परछाई, (2) क्या वह दोषी था, (3) दस बजे रात, (4) ऊँचा पर्वत गहरा सागर, (5) ये रेखायें ये दायरे, (6) इंसान।
चतुरसेन शास्त्री	(1) पन्नाधाय, (2) हाड़ा रानी, (3) रूठी रानी, (4) राखी
लक्ष्मीनारायण लाल	(1) नाटक बहुरंगी, (2) पर्वत के पीछे, (3) ताजमहल के पीछे, (4) दूसरा दरवाजा।
धर्मवीर भारती	(1) नदी प्यासी थी।
जैनेन्द्र कुमार	(1) टकराहट।
सुदर्शन	(1) राजपूत की हार।

हिन्दी उपन्यास का विकास

प्रेमचन्द पूर्व (प्रथम उत्थान)

- हिन्दी में 'नावेल' के अर्थ में 'उपन्यास' शब्द का प्रथम प्रयोग भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 1875 ई० में 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' में प्रकाशित अपने अपूर्ण रचना 'मालती' के लिए किया था।
- ब्रजरत्न दास के अनुसार, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'कुछ आपबीती कुछ जग बीती' नाम से एक उपन्यास लिखा था।
- हिन्दी का प्रथम उपन्यास, उपन्यासकार एवं प्रस्तोता—

प्रस्तोता	उपन्यासकार	उपन्यास	वर्ष
डॉ० गोपाल राय	पं० गौरी दत्त	देवरानी जेठानी की कहानी	1870 ई०
डॉ० विजयशंकर मल्ल	श्रद्धाराम फिल्लौरी	भाग्यवती	1877 ई०
श्री रामचन्द्र शुक्ल	श्रीनिवासदास	परीक्षा-गुरु	1882 ई०

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लाला श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा गुरु' को अंग्रेजी के ढंग का हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास माना है।
- प्रेमचंद पूर्व उपदेश प्रधान सामाजिक उपन्यास निम्न हैं—

उपन्यासकार	उपन्यास
गौरीदत्त	देवरानी जेठानी की कहानी (1870)
ईश्वरी प्रसाद व कल्याण राय	वामा शिक्षक (1872)

श्रद्धाराम फिल्लौरी	भाग्यवती (1877)
लाला श्रीनिवासदास	परीक्षा गुरु (1882)
बालकृष्ण भट्ट	(1) नूतन ब्रह्मचारी (1886), (2) रहस्य कथा (1879), (3) सौ अजान एक सुजान (1892)
राधाकृष्ण दास	निस्सहाय हिन्दू (1890)
ठाकुर जगमोहन सिंह	श्यामा स्वप्न (1888)
लज्जाराम मेहता	(1) धूर्त रसिक लाल (1889), (2) स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी (1899), (3) आदर्श दम्पति (1904), (4) बिगड़े का सुधार अथवा सती सुख देवी (1907), (5) आदर्श हिन्दू (1914)
किशोरीलाल गोस्वामी	(1) लवंगलता वा आदर्शबाला (1890), (2) स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी (1889), (3) लीलावती वा आदर्शसती (1901), (4) चपला वा नव्य समाज (1903), (5) तरुण तपस्विनी वा कुटीर वासिनी (1906), (6) पुनर्जन्म वा सौतिया डाह (1907), (7) माधवी माधव वा मदनमोहिनी (1909), (8) अँगूठी का नगीना (1918)।
अयोध्या सिंह उपाध्याय	(1) अधखिला फूल (1907), (2) ठेठ हिन्दी का ठाठ (1899)
ब्रजनन्दन सहाय	(1) सौन्दर्योपासक (1912), (2) राधाकांत (1918)
मन्नन द्विवेदी	रामलाल (1917)
राधिकारमण प्रसाद सिंह	वनजीवन वा प्रेमलहरी (1916)

- अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध कृत 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' उपन्यास को 'मुहावरों का पाठ्य-पुस्तक' कहा जाता है।
- राधाकृष्णदास कृत 'निस्सहाय हिन्दू' हिन्दी का पहला उपन्यास है जिसमें मुस्लिम समाज का अंकन किया गया है। यह गोवध-निवारण के लिए लिखा गया था।
- किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी' (1889 ई०) वेश्या जीवन पर आधारित हिन्दी का प्रथम उपन्यास है।
- किशोरीलाल गोस्वामी को हिन्दी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार माना जाता है।
- डॉ० गोपाल राय पं० बालकृष्ण भट्ट को हिन्दी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार मानते हैं।
- प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार—

किशोरीलाल गोस्वामी	(1) हृदयहारिणी वा आदर्श रमणी (1890), (2) तारा (1902), (3) राजकुमारी (1902), (4) कनक कुसुम वा मस्तानी (1903), (5) लखनऊ की कब्र वा शाही महलसरा (1918), (6) सुल्ताना रजिया बेगम वा रंग महल में हलाहल (1905)।

गंगा प्रसाद गुप्त	(1) पृथ्वीराज चौहान (1902), (2) कुँवर सिंह सेनापति (1903), (3) हम्मीर (1904)
जयरामदास गुप्त	(1) कश्मीर पतन (1907), (2) मायारानी (1908), (3) नवाबी परिस्तान वा वाजिद अली शाह (1908), (4) कलावती (1909)
रामनरेश त्रिपाठी	वीरांगना (1911)
मथुरा प्रसाद शर्मा	नूरजहाँ बेगम व जहाँगीर (1905)
ब्रजनन्दन सहाय	लालचीन (1916)
मिश्र बन्धु	वीरमणि (1917)
श्यामसुन्दर वैद्य	पंजाब पतन
कृष्ण प्रसाद सिंह	वीर चूड़ामणि

- 'निस्सहाय हिन्दू' हिन्दी प्रथम पूर्ण उपन्यास है जिसमें नाटकीय पद्धति पर प्रसंगों के निर्माण तथा कथाओं के युगपत् संक्रमण की प्रविधि अपनाई गई है।
- देवकीनन्दन खत्री को हिन्दी में तिलस्मी-ऐयारी उपन्यासों का प्रवर्तक माना जाता है।
- देवकीनन्दन खत्री के प्रमुख उपन्यास निम्नलिखित हैं—
  चंद्रकांता (1888), चंद्रकांता संतति (24 भाग-1996) (1896), नरेन्द्र मोहिनी (1893), वीरेन्द्र वीर (1895), कुसुम कुमारी (1899), काजर की कोठरी (1902), अनूठी बेगम (1905), गुप्त गोदना (1913), भूतनाथ (6 भाग-अधूरा 1907)।
- देवकीनंदन खत्री के पुत्र दुर्गाप्रसाद खत्री ने अपने पिता कृत 'भूतनाथ' के शेष भाग पूरे किये।
- गोपालराम गहमरी को हिन्दी में जासूसी उपन्यासों का प्रवर्तक माना जाता है।
- गोपाल राम गहमरी के प्रमुख उपन्यास हैं—'अद्‌भुत लाश', 'बेकसूर को फाँसी', 'सरकती लाश', 'खूनी कौन', 'बेगुनाह का खून', 'जासूस की भूल', 'अद्‌भुत खून' आदि।
- गोपालराम गहमरी को हिन्दी का 'कानन डायल' कहा गया है।
- प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी के अन्य महत्वपूर्ण औपन्यासिक रचनाएँ—

उपन्यासकार	उपन्यास
भुवनेश्वर मिश्र	(1) घराऊ घाट (1894), (2) बलवंत भूमिहार (1896)
राधाचरण गोस्वामी	सौदामिनी (1891)
कुँवर हनुमंत सिंह	चन्द्रकला (1893)
जैनेन्द्र किशोर	गुलेनार (1907)
गंगा प्रसाद गुप्त	लक्ष्मी देवी (1910)
अवधनारायण	विमाता (1916)
ब्रजनन्दन सहाय	(1) राजेन्द्र मालती (1897), (2) अद्‌भुत प्रायश्चित (1901), (3) अरण्यबाला (1915)

- कुँवर हनुमंत सिंह कृत 'चन्द्रकला' (1893) हिन्दी का प्रथम उपन्यास है जिसमें स्त्रियों के बलात् शोषण का अंकन किया गया है।

- पं० बालकृष्ण भट्ट कृत 'सौ अजान एक सुजान' (1892) हिन्दी का प्रथम चरित्र प्रधान उपन्यास है।

द्वितीय उत्थान : प्रेमचन्द युग

- मुंशी प्रेमचन्द (1880-1936 ई०) का मूलनाम धनपत राय था। किन्तु वे नाम बदलकर 'नवाब राय' बनारसी के नाम से लिखते थे।
- धनपतराय को 'प्रेमचन्द' नाम उर्दू के लेखक दयानारायण निगम ने दिया था।
- प्रेमचन्द को 'उपन्यास-सम्राट' की संज्ञा बंगला कथाकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय ने दिया था।
- प्रेमचन्द द्वारा लिखे मूल उर्दू में उपन्यास का उनके द्वारा किया गया हिन्दी रूपान्तर निम्नलिखित है—

मूल उर्दू उपन्यास	वर्ष	हिन्दी रूपान्तर	वर्ष
असरारे मआविद	1903-1905	देवस्थान रहस्य	1905
हमखुर्मा व हमसवाव	1906	प्रेमा अर्थात् दो सखियों का विवाह	1907
किशना	1907	गबन	1931
जलवाए ईसार	1912	वरदान	1921
वाजारे हुस्न	1917	सेवासदन	1918
गोशाएँ आफियत		प्रेमाश्रय	1922
चौगाने हस्ती		रंगभूमि	1925

- 'असरारे मआविद' प्रेमचन्द का प्रथम उपन्यास है।
- 'सेवा सदन' प्रेमचन्द का पहला प्रौढ़ हिन्दी उपन्यास है।
- प्रेमचन्द का हिन्दी में मूल रूप से लिखा प्रथम उपन्यास 'कायाकल्प' (1926) है।
- सन् 1907 ई० में प्रेमचन्द ने 'रूठी रानी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास की रचना की।
- प्रेमचन्द के हिन्दी उपन्यास रचना क्रम के अनुसार निम्नांकित है—

देवस्थान रहस्य	1905	मन्दिरों और तीर्थ स्थानों में फैले भ्रष्टाचार, पाखण्ड की आलोचना
प्रेमा	1907	हिन्दुओं में विधवा-विवाह की समस्या का चित्रण
सेवा सदन	1918	वेश्या जीवन से सम्बद्ध समस्या का चित्रण
वरदान	1921	प्रेम एवं विवाह की समस्या का चिण
प्रेमाश्रम	1922	औपनिवेशिक शासन में जमींदार एवं किसानों के सम्बन्ध का चित्रण
रंगभूमि	1925	औद्योगिकीकरण के दोष, पूँजीवादियों की शोषण नीति, अंग्रेजों के अत्याचार एवं भारतीय शिक्षितों की चरित्र-हीनता का विश्लेषण व चित्रण
कायाकल्प	1926	पुनर्जन्म की धारणा पर समाज-सेवा, राजा के अत्याचार विलास एवं सच्चे प्रेम का चित्रण
निर्मला	1927	दहेज एवं अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण
गबन	1931	मध्यवर्गीय जीवन की असंगति का यथार्थ मनोवैज्ञानिक चित्रण
कर्मभूमि	1933	हिन्दू-मुस्लिम एकता, अछूतोद्धार एवं दलित किसानों के उत्थान की कथा
गोदान	1936	किसान जीवन की महागाथा एवं ऋण की समस्या का अंकन
मंगलसूत्र	1948	अधूरा

- प्रेमचन्द ने सन् 1929 ई० में 'प्रेमा' उपन्यास को संशोधित करके 'प्रतिज्ञा' शीर्षक से प्रकाशित करवाया।
- प्रेमचन्द ने 'आदर्शोन्मुख यथार्थवादी' उपन्यास लेखन की परम्परा का प्रवर्तन किया।
- विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' ने तीन उपन्यासों की रचना की—

उपन्यास	वर्ष	विषय
माँ	1929	माँ की महिमा एवं आदर्श का प्रतिपादन
भिखारिणी	1929	अन्तर्जातीय विवाह की समस्या एवं प्रेम की त्रासदी का चित्रण
संघर्ष	1945	आर्थिक विषमता के कारण प्रेम की निष्फलता का चित्रण

- शिवपूजन सहाय ने सन् 1926 ई० में 'देहाती दुनिया' शीर्षक से एक उपन्यास की रचना की।
- डॉ० गोपाल राय के अनुसार 'देहाती दुनिया' एक आंचलिक उपन्यास है।
- चंडी प्रसाद 'हृदयेश' ने भावपूर्ण आदर्शवादी शैली में 'मनोरमा' (1924) और 'मंगल प्रभात' (1926) उपन्यास की रचना की।
- पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र ने सर्वप्रथम हिन्दी उपन्यास में पत्रात्मक प्रविधि का प्रवर्तन किया।
- पत्रात्मक प्रविधि में प्रथम उपन्यास बेचन शर्मा 'उग्र' ने 'चंद हसीनों के खतूत' (1927) शीर्षक से लिखा।
- 'विशाल भारत' पत्रिका के सम्पादक बनारसीदास चतुर्वेदी ने बेचन शर्मा 'उग्र' के उपन्यासों को 'घासलेटी साहित्य' कहा था।
- बेचन शर्मा 'उग्र' ने निम्न उपन्यासों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषय
चंद हसीनों के खतूत	1927	हिन्दू-मुस्लिम के प्रेम एवं विवाह का चित्रण
दिल्ली का दलाल	1927	युवतियों का क्रय-विक्रय करने वाली संस्थाओं का पर्दाफाश
बुधुआ की बेटी	1928	अछूतोद्धार की समस्या ('मनुष्यानंद' नाम से रूपांतरण)
शराबी	1930	वेश्याओं और शराब घरों का नग्न यथार्थ चित्रण
सरकार तुम्हारी आँखों में	1937	शासन तंत्र की अव्यवस्था एवं प्रजा की पीड़ा का चित्रण

चाकलेट	1927	
जी जी जी	1937	हिन्दू समाज की स्त्री की पीड़ा का चित्रण
फागुन के दिन चार	1960	
जुहू	1963	

- प्रकृतिवादी उपन्यासों का जनक ज़ोला को माना जाता है।
- हिन्दी में प्रकृतिवादी उपन्यासों के जनक पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' को स्वीकार किया जाता है।
- ऋषभचरण जैन प्रकृतिवादी शैली के उपन्यासकार हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ अग्रांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	उपन्यास	वर्ष
पैसे का साथी	1928	दिल्ली का कलंक	1936
दिल्ली का व्यभिचार	1928	चम्पाकली	1937
वेश्या पुत्र	1929	हिज हाइनेस	1938
मास्टर साहब	1927	मयखाना	1938
सत्याग्रह	1930	तीन इक्के	1940
रहस्यमयी	1931	दुराचार के अड्डे	1930

- कुछ आलोचकों ने हिन्दी में प्रकृतिवादी या यथार्थवादी उपन्यास का जनक जयशंकर प्रसाद को माना है। प्रसाद के महत्वपूर्ण उपन्यास निम्न हैं—

कंकाल	1929	तत्कालीन समाज का यथार्थ नग्न चित्रण
तितली	1934	पूँजीपतियों द्वारा निम्नवर्ग का शोषण
इरावती	1936	अपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास

- आचार्य चतुरसेन शास्त्री को कुछ औपन्यासिक कृतियों के लिए प्रकृतिवादी उपन्यासकार माना जाता है, जो निम्न हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय
हृदय की परख	1918	विवाह पूर्व प्रेम एवं अवैध सन्तान की समस्या का चित्रण
हृदय की प्यास	1931	
अमर अभिलाषा	1933	विधवाओं पर होने वाले अत्याचार का चित्रण
व्यभिचार	1924	प्रेम के अमर्यादित एवं अश्लील रूप का अंकन
आत्मदाह	1937	आजादी के लिए आन्दोलन एवं देश प्रेम का चित्रण

- अनूपलाल मंडल ने 'निर्वासिता' (1929), 'समाज की वेदी पर' (1931), 'साकी' (1932), 'रूपरेखा' (1934), 'ज्योतिर्मयी' (1934) उपन्यासों की रचना की।
- अनूपलाल ने 'समाज की वेदी पर' एवं 'रूपरेखा' उपन्यास की रचना पत्रात्मक प्रविधि पर की।
- अनूपलाल मण्डल के अन्य उपन्यास हैं—(1) मीमांसा (1937), (2) आवारों की दुनिया (1945), (3) दर्द की तस्वीरें (1945) और (4) बुझने न पाये।
- सियारामशरण गुप्त गाँधीवादी विचारधारा के उपन्यासकार हैं। इनकी प्रमुख रचना है—

उपन्यास	वर्ष	विषय
गोद	1932	संदेह एवं अविश्वास के कारण स्त्री को समस्या एवं दर्द का चित्रण
अन्तिम आकांक्षा	1934	सामाजिक एवं धार्मिक विसंगति का चित्रण
नारी	1937	समकालीन हिन्दू स्त्री की असहायता एवं विवशता का चित्रण

- प्रतापनारायण श्रीवास्तव भी गाँधीवादी (मानवतावादी) उपन्यासकार हैं। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—

विदा	1927	भारतीय एवं पाश्चात्य सभ्यता का समन्वय
विजय	1937	बाल विधवा समस्या का चित्रण
विकास	1938	उच्च वर्ग के विलासिता का चित्रण

- राधिकारमण प्रसाद सिंह के महत्वपूर्ण उपन्यास हैं—(1) रामरहीम (1936), (2) पुरुष और नारी, (3) संस्कार (1942) और (4) चुम्बन और चाटा (1956)।
- प्रेमचंद युग के अन्य महत्वपूर्ण रचनाकार एवं रचनाएँ—

  जी०पी० श्रीवास्तव—(1) महाशय भड़ाम सिंह शर्मा (1919), (2) लतखोरीलाल (1931), (3) विलायती उल्लू (1932), (4) स्वामी चौखटानंद (1936), (5) प्राणनाथ (1925), (6) गंगा जमुनी (1927), (7) दिल की आग उर्फ दिल जले की आग (1932)।

  मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी'—कल्याणी (1921)

  मदारी लाल गुप्त—(1) गौरीशंकर (1923), (2) सखाराम (1924), (3) मानिक मंदिर (1926)।

  गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'—(1) सन्देह (1925), (2) प्रेम की पीड़ा (1930), (3) अरुणोदय (1930), (4) पाप की पहेली, (5) बाबू साहब (1932)।

  प्रफुल्लचंद्र ओझा—(1) संन्यासिनी (1926), (2) पतझड़ (1930), (3) पाप और पुण्य (1930), (4) जेलयात्रा (1931), (5) तलाक (1932)।

  सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'—(1) अप्सरा (1931), (2) अलका (1933), (3) निरुपमा (1936), (4) प्रभावती (1936), (5) चोटी की पकड़, (6) काले कारनामे (1950)।

  गोविन्दवल्लभ पंत—(1) सूर्यास्त (1922), (2) प्रतिमा (1934), (3) मदारी (1935)।

  श्रीनाथ सिंह—(1) उलझन (1922), (2) क्षमा (1925), (3) एकाकिनी (1927), (4) प्रेम परीक्षा (1927), (5) जागरण (1937), (6) प्रजामंडल (1941), (7) एक और अनेक (1951), (8) अपढ़ता (1952)।

  भगवती प्रसाद वाजपेयी—(1) प्रेमपथ (1926), (2) अनाथ पत्नी (1928), (3) मुस्कान (1929), (4) प्रेम निर्वाह (1934), (5) पतिता की साधना (1936), (6) चलते-चलते (1951), (7) टूटते-बंधन (1963)।
- डायरी प्रविधि का हिन्दी में प्रवर्तन आदित्य प्रसन्नराय के उपन्यास 'मित्री की डायरी' से माना जाता है। इसका प्रकाशन सन् 1932 ई० में हुआ था।

- हिन्दी में सहयोगी उपन्यास लेखन की शुरुआत सन् 1927 ई० में प्रकाशित भगवती प्रसाद वाजपेयी, वृन्दावनलाल वर्मा और शम्भू दयाल सक्सेना के उपन्यास 'त्रिमूर्ति' से माना जाता है।

तृतीय उत्थान : प्रेमचन्दोत्तर युग

- जैनेन्द्र कुमार को हिन्दी में मनोविश्लेषणवादी उपन्यास का जनक माना जाता है।
- डॉ० गोपाल राय के अनुसार, "इलाचन्द्र जोशी को हिन्दी में मनोवैज्ञानिक उपन्यास का पुरस्कर्ता माना जा सकता है।"
- जैनेन्द्र कुमार ने निम्नलिखित उपन्यासों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषय
परख	1929	प्रेम का आदर्शीकरण
सुनीता	1934	श्रीकांत, सुनीता एवं हरिप्रसन्न के मनोभावों का विश्लेषण
त्याग पत्र	1937	स्त्री के विद्रोही व्यक्तित्व का चित्रण
कल्याणी	1939	विवाह के पश्चात की समस्या का चित्रण
सुखदा	1952	नायिका सुखदा के मनोभावों का विश्लेषण
विवर्त	1953	भुवनमोहिनी एवं जितेन की प्रेम कथा का चित्रण
व्यतीत	1953	
जयवर्द्धन	1956	व्यक्ति की निजता एवं शासन की सामाजिकता के द्वंद्व का चित्रण
मुक्तिवोध	1965	
अनन्तर	1968	
अनाम स्वामी	1974	मानव के धार्मिक रूढ़ियों से मुक्त होने का चित्रण
दशार्क	1985	विवाह विच्छेद एवं स्त्री जीवन की विडम्बना का चित्रण

- जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों का मूल विषय काम-पीड़ा एवं अहं का समर्पण है।
- इलाचन्द्र जोशी मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार हैं। इनके प्रमुख उपन्यास निम्न है—

उपन्यास	वर्ष	विषय
घृणामयी	1929	एक युवती के पश्चाताप का चित्रण (1950 में 'लज्जा' शीर्षक से)
संन्यासी	1940	नंद किशोर के अहंभाव का मनोविश्लेषण
पर्दे की रानी	1942	मानसिक विकृतियों के व्यक्तियों के चरित्र को मनोवैज्ञानिक व्याख्या
प्रेम और छाया	1944	पारसनाथ की मानसिक कुण्ठा का चित्रण
निर्वासित	1946	महीप और नीलिमा के प्रेम का चित्रण
मुक्तिपथ	1948	
सुबह के भूले	1951	
जिप्सी	1952	मनोविश्लेषणवाद एवं सामाजिक भावना का समन्वय
जहाज का पंछी	1954	ईमानदार एवं आदर्शवादी व्यक्ति के कष्टों का चित्रण
ऋतु चक्र	1969	आधुनिकता के नाम पर पनपती विसंगति का चित्रण
भूत का भविष्य	1973	
कवि की प्रेयसी	1976	

- सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' एक प्रौढ़ मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं।

- जैनेन्द्र ने सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन को 'अज्ञेय' नाम दिया था।
- अज्ञेय की प्रमुख औपन्यासिक कृतियाँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय
शेखर : एक जीवनी	भाग – एक 1940	नायक शेखर के कैशोर्य का विश्लेषण
	भाग – दो 1944	शेखर के युवाकाल की मानसिक स्थिति का अंकन
नदी के द्वीप	1951	रेखा, भुवन एवं गौरा की प्रेम कथा
अपने अपने अजनबी	1961	मृत्यु से साक्षात्कार

- अज्ञेय के अनुसार, "शेखर की खोज अन्ततोगत्वा स्वतंत्रता की खोज है।"
- 'शेखर : एक जीवनी' पर रोम्या रोलां की पुस्तक 'ज्यों क्रिस्तोफ' का प्रभाव लेखक ने स्वीकार किया है।
- आलोचकों ने 'शेखर : एक जीवनी' की आलोचना 'प्रकाशमान पुच्छल तारा' कहकर की है।
- डॉ० देवराज ने निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषय
पथ की खोज	1951	प्रेम एवं विवाह के नैतिकता का प्रश्न
वाहर भीतर	1954	मध्यवर्गीय परिवार में स्त्री की यातनापूर्ण स्थिति का चित्रण
रोड़े और पत्थर	1958	मध्यवर्गीय लोगों के कुण्ठित जीवन की त्रासदी का चित्रण
आज की डायरी	1960	असफल वैवाहिक जीवन एवं प्रेम के त्रासद अन्त का चित्रण
मैं, वे और आप	1969	समकालीन जीवन मूल्यों के विघटन का चित्रण
दोहरी आग की लपट	1973	प्रेम और दाम्पत्य की समस्या का चित्रण
दूसरा सूत्र	1978	

- विष्णु प्रभाकर मानवतावादी उपन्यासकार हैं। इनकी प्रमुख रचनाएं हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय
ढलती रात	1951	सन् 1920-36 तक की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति का चित्रण
तट के बंधन	1955	प्रेम व विवाह एवं नारी मुक्ति का चित्रण
स्वप्नमयी	1956	स्त्री के काल्पनिक, तर्कातीत एवं स्वप्नजीवी चरित्र का अंकन
कोई तो	1980	नैतिक रूढ़ियों एवं बलात्कार की शिकार स्त्रियों की समस्या
अर्धनारीश्वर	1992	स्त्रियों के बलात्कार एवं यातना का चित्रण
संकल्प	1993	परित्यक्ता स्त्री की मनोभावों का अंकन

- उदयशंकर भट्ट एक मानवतावादी उपन्यासकार हैं। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय
नये मोड़	1954	सुशिक्षित एवं आत्मनिर्भर नारी की विवशता का चित्रण

सागर लहरें और मनुष्य	1956	बम्बई के वरसोवा मछुआरों की जिन्दगी का चित्रण
लोक-परलोक	1958	ग्रामीण जीवन पर आधुनिक सभ्यता के प्रभाव का चित्रण
शेष-अशेष	1960	साधु-संन्यासियों के जीवन का यथार्थ चित्रण

- भगवतीचरण वर्मा व्यक्तिवादी एवं नियतिवादी उपन्यासकार हैं। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय
पतन	1927	अपराध एवं बलात्कार प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास।
चित्रलेखा	1934	पाप एवं पुण्य के नैतिक प्रश्न का चित्रण।
तीन वर्ष	1936	प्रेम का विवाह में परिणति, इस समस्या का चित्रण।
टेढ़े मेढ़े रास्ते	1946	गाँधीवाद, साम्यवाद और आतंकवाद का टेढे मेढ़े रास्ते के रूप में चित्रण।
आखरी दाँव	1950	एक जुआरी की असफल प्रेम कथा।
अपने खिलौने	1957	दिल्ली के मार्डन सोसाइटी पर तीखा व्यंग्य।
भूले बिसरे चित्र	1959	तीन पीढ़ियों के जीवन मूल्य में परिवर्तन की कथा।
वह फिर नहीं आई	1960	आधुनिक जीवन की विषमता के बीच गहन जिजीविषा का चित्रण।
सामर्थ्य और सीमा	1962	प्रकृति के समक्ष मनुष्य की असहायता का चित्रण।
थके पाँव	1963	
रेखा	1964	नारी के गहन अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण।
सच्ची सीधी बात	1968	सन् 1938-48 तक के राष्ट्रवादी नेताओं की दृष्टि का मूल्यांकन
सबहिं नचावत राम गोसाईं	1970	सन् 1919 से 1965 तक के इतिहास का चित्रण।
प्रश्न और मरीचिका	1973	व्यक्ति के मन में विघटित मानव मूल्य का प्रश्न एवं शासन की मरीचिका का चित्रण।

- भगवतीचरण वर्मा कृत 'चित्रलेखा' पर फ्रेंच उपन्यासकार अनातोले के उपन्यास 'थाया' का प्रभाव है।
- उपेन्द्रनाथ 'अश्क' को मध्यवर्ग का चितेरा उपन्यासकार कहा जाता है। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं।
  (1) सितारों के खेल (1940), (2) गिरती दीवारें (1947), (3) गर्म राख (1957), (4) बड़ी बड़ी आँखें (1955), (5) पत्थर अल पत्थर (1957), (6) शहर में घूमता आईना (1963), (7) एक रात का नरक (एक नन्हीं कंदील का एक अंश 1968), (8) एक नन्हीं कंदील (1969), (9) बाधों न नाँव इस ठाँव (1974), (10) निमिपा (1980), (11) पलटती धारा (1997)।
- उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ने फ्रांसीसी उपन्यास 'रोमाँ फ्लू' से प्रेरणा लेकर 'गिरती दीवारें' को कई शृंखला में लिखा।

- सुमित्रानन्दन पंत ने 'बड़ी-बड़ी आँखें' को एक गीति उपन्यास की संज्ञा दी।
- लक्ष्मीनारायण लाल व्यक्तिवादी उपन्यासकार हैं। इनकी कृतियाँ निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	उपन्यास	वर्ष
(1) धरती की आँखें	1951	(8) बड़के भैया	1973
(2) बया का घोंसला और साँप	1953	(9) हरा समन्दर गोपी चंदर	1974
(3) काले फूल का पौधा	1955	(10) वसंत की प्रतीक्षा	1975
(4) रूपा जीवा	1959	(11) देवीना	1976
(5) बड़ी चम्पा छोटी चम्पा	1961	(12) पुरुषोत्तम	1983
(6) मन वृन्दावन	1966	(13) गली अनारकली	1985
(7) प्रेम अपवित्र नदी	1972	(14) कनाटपैलेस	1986

- वृन्दावनलाल वर्मा को हिन्दी में 'सर वाल्टर स्काट' की उपाधि दी जाती है।
- वृन्दावनलाल वर्मा के प्रारम्भिक उपन्यास—(1) संगम (1927), (2) प्रत्यागत (1927), (3) लगन (1928), (4) कुण्डलीचक्र एवं (5) प्रेम की भेद—सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति करते हैं।
- वृन्दावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास बुन्देलखण्ड के मुस्लिम शासन काल की पृष्ठभूमि पर आधारित हैं जो निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	उपन्यास	वर्ष
(1) गढकुण्डार	1928	(3) झाँसी की रानी	1946
(2) विराटा की पद्मिनी	1936	(4) कचनार	1948
(5) मृगनयनी	1950	(10) रामगढ़ की रानी	1961
(6) टूटे काँटे	1954	(11) महारानी दुर्गावती	1964
(7) अहिल्याबाई	1955	(12) कीचड़ और कमल	1964
(8) भुवन विक्रम	1957	(13) सोती आग	1966
(9) माधवजी सिंधिया	1957	(14) देवगढ़ की मुस्कान	1973

- राहुल सांकृत्यायन की प्रमुख औपन्यासिक कृतियाँ निम्न हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय
जीने के लिए	1940	भारत के विक्षुब्ध सामाजिक एवं राजनीति स्थिति का चित्रण
सिंह सेनापति	1942	वैशाली तथा तक्षशिला के गणराज्यों की कथा
जय यौधेय	1944	यमुना, सतलज एवं हिमालय के बीच स्थित यौधेय राज्य के अवसान का चित्रण
मधुर स्वप्न	1950	मध्य एशिया में आविर्भूत मज्दक के अनुयायी अन्दर्जगर के जीवन-दर्शन का चित्रण
विस्मृत यात्री	1954	बौद्ध यात्री नरेन्द्र यश की जीवन यात्रा पर आधारित

- राहुल सांकृत्यायन कृत 'जीने के लिए' हिन्दी का पहला खुला राजनीतिक उपन्यास है।
- सन् 1961 में प्रकाशित राहुल कृत 'दिवोदास' उपन्यास में आर्यों के उन्मुक्त कुण्ठा रहित जीवन का चित्रण है।

❑ चतुरसेन शास्त्री की प्रमुख कृतियाँ निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय
वैशाली की नगरवधू	1949	बुद्धकालीन सांस्कृतिक एवं राजनैतिक टकराहट का चित्रण
रक्त की प्यास	1951	
आलमगीर	1954	
वयं रक्षामः	1955	आर्य-अनार्य, देव-दानव आदि संस्कृतियों के संघर्ष एवं समन्वय की कथा
सोमनाथ	1955	शिवोपासना के विकास एवं राजपूतों की मानसिकता का चित्रण
गोली	1956	देशी रियासतों के शासकों की घृणित विलासिता का चित्रण
सोना और खून	1960	

❑ रांगेय राघव की प्रथम रचना सन् 1946 में 'घरौंदा' शीर्षक से प्रकाशित हुई। यह परिसर (विश्वविद्यालय) जीवन पर लिखा हिन्दी का प्रथम उपन्यास है।

❑ रांगेय राघव ने तीन कोटि के उपन्यासों की रचना की है जो निम्न हैं—

1. जीवनीपरक उपन्यास	वर्ष	2. ग्रामीण एवं नगरीय यथार्थ के उपन्यास	वर्ष
देवकी का बेटा		हुजूर	1951
यशोधरा जीत गई		सीधा सादा रास्ता	1951
लोई का ताना		कब तक पुकारूँ	1957
रत्ना की बात		राई और पर्वत	1958
भारती का सपूत	1954	छोटी सी बात	1959
लखिमा की आँखें	1957	पथ का पाप	1959
जब आवेगी काल घटा	1958	धरती मेरा घर	1960
धूनी का धुआँ	1959	आखिरी आवाज	1962

3. ऐतिहासिक उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
मुर्दों का टीला	1948	मोहनजोदड़ो सभ्यता की पृष्ठभूमि पर आधारित
प्रतिदान	1950	महाभारत युग के ब्राह्मण एवं क्षत्रिय के संघर्ष का चित्रण
चीवर	1951	हर्षकाल के ह्रासमान भारतीय सामंतवाद का चित्रण
अँधेरे के जुगनू	1953	दासप्रथा को बचाये रखने के लिए कुलीन वर्ग के प्रयत्न का चित्रण
पक्षी और आकाश	1957	
राह न रूकी	1958	महावीर स्वामी एवं बुद्ध युग के जागरण की कथा

❑ रांगेय राघव का 'कब तक पुकारूँ' उपन्यास जरायम पेशा करनट जाति के जीवन-यथार्थ से सम्बन्धित है।

❑ रांगेय राघव का 'विषाद मठ' (1946 ई०) बंगाल के अकाल पर आधारित है।

❑ अमृतलाल नागर के उपन्यासों को रामविलास शर्मा ने 'हिन्दी के गैर मानक रूपों का पिटारा' कहा है।

❑ अमृतलाल नागर के प्रसिद्ध उपन्यास निम्नलिखित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय
महाकाल	1947	बंगाल के अकाल की त्रासदी का चित्रण
सेठ बाँके लाल	1955	
बूँद और समुद्र	1956	लखनऊ के चौक के रूप में भारत की विभिन्न छवि का चित्रण
शतरंज के मोहरे	1959	अवध के नवाबों के ह्रासोन्मुख जीवन का चित्रण
सुहाग के नुपूर	1960	मध्यकालीन कुलवधुओं एवं नाहर वधुओं का चित्रण
अमृत और विष	1966	भारतीय गणतंत्र के 15 वर्षों का राजनैतिक एवं सामाजिक चित्रण
सात घूँघटवाला मुखड़ा	1968	मसरू बेगम के नारी-हृदय का चित्रण
एकदानैमिषारण्ये	1972	आचार्य भार्गव सोमाहुति, नैमिष आन्दोलन एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण का चित्रण
मानस का हंस	1972	तुलसीदास की जीवनी एवं व्यक्तित्व पर आधारित
नाच्यौ बहुत गोपाल	1978	भंगी समाज का इतिहास एवं उसके वर्तमान जीवन की नारकीयता का गहरी संवेदनात्मकता के साथ चित्रण
खंजन नयन	1981	सूरदास के जीवन और व्यक्तित्व पर आधारित
बिखरे तिनके	1982	
अग्निगर्भा	1983	
करवट	1985	लखनऊ के एक खत्री परिवार की तीन पीढ़ियों का चित्रण
पीढ़ियाँ	1990	'करवट' उपन्यास के अगले चरण के रूप में

❑ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	आधार	विषयवस्तु
बाणभट्ट की आत्मकथा	1946	बाणभट्ट, निपुणिका निउनिया।	प्रेम का उदात्तीकरण एवं हर्ष-कालीन सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का चित्रण
चारुचन्द्र लेख	1963	राजा सातवाहन चन्द्रलेखा	12वीं-13वीं शती के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक स्थिति का चित्रण
पुनर्नवा	1973	लोरिकायन एवं मृच्छकटिकम्	वर्ण व्यवस्था एवं नारी शोषण का चित्रण

अनामदास का पोथा	1976	छान्दोग्य एवं वृहदारण्यक	औपनिषदिक युग के परिवेश एवं जीवन पद्धति का चित्रण

सन्हैयालाल ओझा ने महत्वपूर्ण उपन्यासों की रचना की, जो निम्न हैं—(1) सम्पर्क और समर्पण (1950), (2) मनुष्य का मूल्य, (3) मकड़ी का जाल, (4) सिन्धु सीमांत (1967) और...

(5) सर्वनाम	1976	बंगाल के नक्सलवाड़ी आन्दोलन एवं आर्य अनार्य पर आधृत
(6) सम्भवामि	1983	हड़प्पा सभ्यता एवं देव सभ्यता पर केन्द्रित
(7) कसौटी	2000	

- कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खु' ने निम्न उपन्यास लिखे हैं—
  (1) आदमी का बच्चा (1950), (2) संक्रान्ति (1951), (3) भँवरजाल (1954), (4) नागफनी (1959), (5) सोम देवता की घाटी, (6) सोने का मृग (1960), (7) महाश्रमण सुने (1963), (8) अस्तंगता, (9) रेवती, (10) लाल ढाँग, (11) मौत की सराय (1970), (12) योगमाया, (13) एक और ययाति (1976), (14) रक्तयात्रा (1978), (15) दूर्वा, (16) चंदन वन की आग (1988), (17) तथापि (1975)।
- शिवप्रसाद मिश्र रुद्र 'काशिकेय' ने निम्नलिखित दो उपन्यासों की रचना की है।

उपन्यास	वर्ष	विषय
बहती गंगा	1952	काशी के जीवन और संस्कृति का जीवन्त संवेदनात्मक चित्रण
सचितात		प्रयोगवादी शिल्प प्रधान उपन्यास

- शिवप्रसाद सिंह ने कई महत्वपूर्ण उपन्यास लिखे, जो निम्न हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय
अलग अलग वैतरणी	1967	आजादी के बाद पूर्वांचल के गाँवों की जिन्दगी की नारकीयता का चित्रण
गली आगे मुड़ती है	1974	युवा आक्रोश का काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर के सन्दर्भ में चित्रण
नीला चाँद	1988	भारतीय इतिहास के 'मध्यकाल की काशी' का चित्रण
शैलूष	1989	विन्ध्य क्षेत्र के नटों के कबीलाई जीवन पर आधारित
औरत	1993	नारी के शोषण, दमन एवं पीड़न पर आधारित
मंजुशिमा	1990	लेखक की पुत्री मंजू के जीवन की करुण कथा
कुहरे में युद्ध	1992	बुन्देलखण्ड में मुस्लिम आक्रांताओं की कथा
दिल्ली दूर है	1993	हिन्दू-मुस्लिम के बीच टकराहट एवं समन्वय का चित्रण
वैश्वानर	1996	काशी के वैदिककालीन स्वरूप का चित्रण

- आनन्द प्रकाश जैन की महत्वपूर्ण औपन्यासिक रचनाएँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय
तीसरा नेत्र	1957	

कठपुतली के धागे	1959	अवध के नवाबों एवं उनकी नवाबी ठाठ का चित्रण
कुणाल की आँखें	1967	अशोककालीन इतिहास की वास्तविकता का चित्रण
आठवीं भाँवर	1969	पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एक गोसाईं परिवार की कथा
ताँबे के पैसे	1971	

- इकबाल बहादुर देवसरे ने मध्यकालीन इतिहास को अपने उपन्यासों का विषय बनाया है। इनके प्रमुख उपन्यास निम्नलिखित हैं—
  (1) नालन्दा (1969), (2) ओरछा की नर्तकी (1970), (3) मस्तानी (1972), (4) बेगम हजरत महल (1973), (5) जाने आलम (1974), (6) नवाबे मुल्क, (7) तानसेन (1978), (8) गुलफाम मंजिल (1980)।
- राजीव सक्सेना ने निम्न उपन्यासों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषय-वस्तु
पणि पुत्री सोमा	1972	आर्यों-अनार्यों के संघर्ष का चित्रण
रमैनी	2000	रमैनी सन् 1857 की क्रान्ति पर आधारित है।

- नरेन्द्र कोहली हिन्दी उपन्यास के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं, इनकी निम्न रचनाएँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय-वस्तु
आतंक	1972	समकालीन जीवन में अपराधियों को संरक्षण देने वाली शासन तंत्र का चित्रण
साथ सहा गया दुःख	1974	मध्यवर्गीय शिक्षक नव दम्पत्ति के बाह्य एवं आन्तरिक संघर्ष की कथा

'अभ्युदय' शीर्षक से (दो खण्ड में)	(1) दीक्षा	1975	(3) संघर्ष की ओर	1978
	(2) अवसर	1976	(4) युद्ध	1979
महासमर (आठ खण्ड में)	(1) बंधन	1988	(5) अन्तराल	1995
	(2) अधिकार	1990	(6) प्रच्छन्न	1997
	(3) कर्म	1991	(7) प्रत्यक्ष	1998
	(4) धर्म	1993	(8) निर्बन्ध	2000

अभिज्ञान	1981	कृष्ण-सुदामा की मित्रता का नया सन्दर्भ
तोड़ों कारा तोड़ो (दो भाग में)	1992	विवेकानन्द की जीवनी पर आधारित
	1993	विवेकानन्द की जीवनी पर आधारित

- नरेन्द्र कोहली ने 'अभ्युदय' में रामकथा को तथा 'महासमर' में महाभारत की कथा को नये सन्दर्भ में प्रस्तुत किया।
- वीरेन्द्र कुमार जैन ने 'अनुत्तरयोगी' की रचना चार खण्डों में की, जो क्रमशः (1974-प्रथम भाग), (1975-द्वितीय भाग), (1978-तृतीय भाग) एवं (1981-चतुर्थ भाग) में प्रकाशित हुआ।
- वीरेन्द्र कुमार जैन कृत 'अनुत्तर योगी', 'महावीर स्वामी' के जीवन एवं उनके सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक अवदान पर केन्द्रित है।
- शरत पागरे की महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं—

अनामदास का पोथा	1976	छान्दोग्य एवं वृहदारण्यक	औपनिषदिक युग के परिवेश एवं जीवन पद्धति का चित्रण

सन्हैयालाल ओझा ने महत्वपूर्ण उपन्यासों की रचना की, जो निम्न हैं—(1) सम्पर्क और समर्पण (1950), (2) मनुष्य का मूल्य, (3) मकड़ी का जाल, (4) सिन्धु सीमांत (1967) और...

(5) सर्वनाम	1976	वंगाल के नक्सलवाड़ी आन्दोलन एवं आर्य अनार्य पर आधृत
(6) सम्भवामि	1983	हड़प्पा सभ्यता एवं देव सभ्यता पर केन्द्रित
(7) कसौटी	2000	

कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खु' ने निम्न उपन्यास लिखे हैं—

(1) आदमी का वच्चा (1950), (2) संक्रान्ति (1951), (3) भँवरजाल (1954), (4) नागफनी (1959), (5) सोम देवता की घाटी, (6) सोने का मृग (1960), (7) महाश्रमण सुने (1963), (8) अस्तंगता, (9) रेवती, (10) लाल ढाँग, (11) मौत की सराय (1970), (12) योगमाया, (13) एक और ययाति (1976), (14) रक्तयात्रा (1978), (15) दूर्वा, (16) चंदन वन की आग (1988), (17) तथापि (1975)।

शिवप्रसाद मिश्र रुद्र 'काशिकेय' ने निम्नलिखित दो उपन्यासों की रचना की है।

उपन्यास	वर्ष	विषय
बहती गंगा	1952	काशी के जीवन और संस्कृति का जीवन्त संवेदनात्मक चित्रण
सचितात		प्रयोगवादी शिल्प प्रधान उपन्यास

शिवप्रसाद सिंह ने कई महत्वपूर्ण उपन्यास लिखे, जो निम्न हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय
अलग अलग वैतरणी	1967	आजादी के वाद पूर्वांचल के गाँवों की जिन्दगी की नारकीयता का चित्रण
गली आगे मुड़ती है	1974	युवा आक्रोश का काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर के सन्दर्भ में चित्रण
नीला चाँद	1988	भारतीय इतिहास के 'मध्यकाल की काशी' का चित्रण
शैलूप	1989	विन्ध्य क्षेत्र के नटों के कवीलाई जीवन पर आधारित
औरत	1993	नारी के शोषण, दमन एवं पीड़न पर आधारित
मंजुशिमा	1990	लेखक की पुत्री मंजू के जीवन की करुण कथा
कुहरे में युद्ध	1992	बुन्देलखण्ड में मुस्लिम आक्रांताओं की कथा
दिल्ली दूर है	1993	हिन्दू-मुस्लिम के वीच टकराहट एवं समन्वय का चित्रण
वैश्वानर	1996	काशी के वैदिककालीन स्वरूप का चित्रण

आनन्द प्रकाश जैन की महत्वपूर्ण औपन्यासिक रचनाएँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय
तीसरा नेत्र	1957	

कठपुतली के धागे	1959	अवध के नवाबों एवं उनकी नवाबी ठाठ का चित्रण
कुणाल की आँखें	1967	अशोककालीन इतिहास की वास्तविकता का चित्रण
आठवीं भाँवर	1969	पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एक गोसाईं परिवार की कथा
ताँवे के पैसे	1971	

- इकबाल बहादुर देवसरे ने मध्यकालीन इतिहास को अपने उपन्यासों का विषय वनाया है। इनके प्रमुख उपन्यास निम्नलिखित हैं—
  (1) नालन्दा (1969), (2) ओरछा की नर्तकी (1970), (3) मस्तानी (1972), (4) वेगम हजरत महल (1973), (5) जाने आलम (1974), (6) नवावे मुल्क, (7) तानसेन (1978), (8) गुलफाम मंजिल (1980)।
- राजीव सक्सेना ने निम्न उपन्यासों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषय-वस्तु
पणि पुत्री सोमा	1972	आर्यों-अनार्यों के संघर्ष का चित्रण
रमैनी	2000	रमैनी सन् 1857 की क्रान्ति पर आधारित है।

- नरेन्द्र कोहली हिन्दी उपन्यास के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं, इनकी निम्न रचनाएँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय-वस्तु
आतंक	1972	समकालीन जीवन में अपराधियों को संरक्षण देने वाली शासन तंत्र का चित्रण
साथ सहा गया दुःख	1974	मध्यवर्गीय शिक्षक नव दम्पत्ति के बाह्य एवं आन्तरिक संघर्ष की कथा

'अभ्युदय' शीर्षक से (दो खण्ड में)	(1) दीक्षा	1975	(3) संघर्ष की ओर	1978
	(2) अवसर	1976	(4) युद्ध	1979
महासमर (आठ खण्ड में)	(1) वंधन	1988	(5) अन्तराल	1995
	(2) अधिकार	1990	(6) प्रच्छन्न	1997
	(3) कर्म	1991	(7) प्रत्यक्ष	1998
	(4) धर्म	1993	(8) निर्बन्ध	2000

अभिज्ञान	1981	कृष्ण-सुदामा की मित्रता का नया सन्दर्भ
तोड़ों कारा तोड़ो	1992	विवेकानन्द की जीवनी पर आधारित
(दो भाग में)	1993	विवेकानन्द की जीवनी पर आधारित

- नरेन्द्र कोहली ने 'अभ्युदय' में रामकथा को तथा 'महासमर' में महाभारत की कथा को नये सन्दर्भ में प्रस्तुत किया।
- वीरेन्द्र कुमार जैन ने 'अनुत्तरयोगी' की रचना चार खण्डों में की, जो क्रमशः (1974-प्रथम भाग), (1975-द्वितीय भाग), (1978-तृतीय भाग) एवं (1981-चतुर्थ भाग) में प्रकाशित हुआ।
- वीरेन्द्र कुमार जैन कृत 'अनुत्तर योगी', 'महावीर स्वामी' के जीवन एवं उनके सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक अवदान पर केन्द्रित है।
- शरत पागरे की महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषय-वस्तु
गुलारा बेगम	1984	शाहजादा खुर्रम और गुलारा बेगम की प्रेमकथा का चित्रण
गंधर्व सेन	1987	उज्जयिनी नरेश गंधर्व सेन के रोमांस एवं शौर्य का चित्रण
बेगम जैनावादी	1996	नृत्यांगना जैनावादी और मुगल बादशाह औरंगजेब की प्रेम कथा का चित्रण

- अन्य महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास एवं उपन्यासकार निम्नांकित हैं—

उपन्यासकार उपन्यास

रघुवीर शरण मित्र—(1) आग और पानी (1954), (2) ढाल तलवार, (3) ओस के आँसू, (4) पहली हार (1955), (5) उजला कफन, (6) राख की दुल्हन, (7) काँपती आवाज, (8) दिन रोया रात हँसी, (9) तप का तेज रूप के जाले, (10) प्यास और शोले, (11) सोने की राख (1957), (12) बलिदान, (13) रंग-विरंगे चेहरे, (14) सदा-सदा के प्रश्न।

प्रतापनारायण श्रीवास्तव—वेकली का मजार (1957)

शिवसागर मिश्र—(1) राजतिलक (1961), (2) मगध की जय (1962)

मनु शर्मा—(1) द्रौपदी की आत्मकथा (1974), (2) द्रोण की आत्मकथा (1976), (3) कर्ण की आत्मकथा (1978), (4) अभिशप्त कथा (1982), (5) शिवाजी का आशीर्वाद, (6) कृष्ण की आत्मकथा (आठ भाग), (7) गांधारी की आत्मकथा (2004)।

रामकुमार 'भ्रमर'—(1) फौलाद का आदमी (1969), (2) काँच का घर (1971)।

जयशंकर द्विवेदी—महाकवि कालिदास की आत्मकथा (1987)

आनन्द शर्मा—(1) इतिहास के नुपूर, (2) रस कपूर (1995), (3) एक और भीष्म, (4) नरवद-सुप्यारदे (2003), (5) अमृतपुत्र (2006)

बच्चन सिंह—(1) सूतो वा सूत पुत्रो वा (1998), (2) पांचाली (2001)

मायानंद मिश्र—(1) प्रथमं शैल पुत्री च (1990), (2) मंत्र पुत्र (1990), (3) पुरोहित (1999)।

- फणीश्वरनाथ रेणु हिन्दी में आंचलिक उपन्यास के जनमदाता के रूप में प्रसिद्ध हैं।

वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' रचना क्रम में प्रथम आंचलिक उपन्यासकार हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
रतिनाथ की चाची	1948	मिथिलांचल के सामाजिक जीवन के अन्तर्विरोध एवं नारी शोषण की समस्या का चित्रण
वलचनमा	1952	नायक बलचनमा का अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष
नई पौध	1953	असंगत विवाह एवं जर्जर सामाजिक मान्यताओं का विरोध
बाबा बटेसर नाथ	1954	वरगद के वृक्ष को बचाने के लिए किसानों का संघर्ष

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
बरुणा के बेटे	1957	मिथिला के मछुआरों के संघर्ष की कथा
दुःखमोचन	1957	ग्रामीणों पर आधुनिक सभ्यता का चित्रण
उग्रतार	1963	उगनी और कामेश्वर की प्रेम कथा का चित्रण
हीरक जयंती	1961	समकालीन शासक वर्ग के नेताओं की चरित्रहीनता का चित्रण
जमनिया का बाबा	1968	
इमरतिया	1968	समाज के बगुला भक्तों का पर्दाफाश किया गया है।
पारो	1975	वाल विवाह की कुरीति एवं एक युवती की दारुण कथा
गरीबदास	1979	स्वतंत्र भारत के ग्रामीण जीवन के सामाजिक-आर्थिक अंतर्विरोध का चित्रण

- नागार्जुन ने 'पारो' की रचना मूलतः सन् 1946 ई० में मैथिली भाषा में किया था, जिसका हिन्दी रूपान्तरण वे सन् 1975 में करते हैं।
- देवेन्द्र सत्यार्थी महत्वपूर्ण आंचलिक उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास निम्न हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
रथ के पहिये	1953	मध्य प्रदेश के गोंड जातियों का यथार्थ चित्रण
कठपुतली	1954	नाटक और रंगमंच से जुड़े कलाकारों की साधना का चित्रण
ब्रह्मपुत्र	1956	ब्रह्मपुत्र के माझुली द्वीप और दिसांगमुख के निवासियों की संघर्ष कथा
दूधगाछ	1958	संगीत और संगीतकार के जीवन संघर्ष का चित्रण
कथा कहो उर्वशी	1961	मूर्तिकार की संवेदना और साधना का अंकन
तेरी कसम सतलुज	1988	

- सत्यार्थी जी के तीन उपन्यास, 'कठपुतली', 'दूधगाछ' और 'कथा कहो उर्वशी' कला जगत को समर्पित है।
- फणीश्वरनाथ 'रेणु' आंचलिक उपन्यासकार हैं। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	कथ्य
मैला आँचल	1954	पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव की कथा
परती परिकथा	1957	पूर्णिया जिले के परानपुर गाँव की कथा
दीर्घतपा	1963	भ्रष्ट व्यवस्था के बीच एक ईमानदार व्यक्ति के संघर्ष की कहानी
जुलूस	1965	पूर्वी पाकिस्तान से आए पूर्णिया जिले में शरणार्थियों की समस्या का चित्रण
कितने चौराहे	1966	बालक एवं मनमोहन को केन्द्र में रखकर स्वाधीनता आन्दोलन का चित्रण
पल्टू बाबू रोड	1979	पूर्णिया जिले के एक बंगाली परिवार के चारित्रिक पतन की कहानी
राम रतन राय	1971	अपूर्ण उपन्यास

- अज्ञेय ने रेणु के उपन्यासों में "एक अखण्ड मानवी विश्वास की चिनगारी सुलगती" देखी है।
- फणीश्वरनाथ रेणु अपना साहित्यिक गुरु बंगला उपन्यासकार सती नाथ भादुड़ी को मानते थे।
- श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में राजनीति, व्यंग्य एवं आंचलिकता का मिश्रण है। इनके प्रमुख उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	कथ्य
सूनी घाटी का सूरज	1957	प्रतिभाशाली उच्चवर्गीय निर्धन छात्र की संघर्ष गाथा
अज्ञातवास	1962	एक व्यक्ति का अपनी पत्नी के प्रति क्रूर व्यवहार एवं पश्चाताप का चित्रण
रागदरबारी	1968	शिवपालगंज की जिन्दगी का यथार्थ चित्रण
सीमाएं टूटती हैं	1973	अपराध एवं रोमांस मिश्रित एक कहानी
मकान	1976	संगीतज्ञ 'बाबू' का मकान के लिए अफसरों की खुशामद का चित्रण
पहला पड़ाव	1976	भवन बनाने वाले मजदूरों के शोषण का चित्रण
विश्रामपुर का संत	1998	राजनीतिक पुरुषों के पाखण्ड का चित्रण

- श्रीलाल शुक्ल और अमरकांत को संयुक्त रूप में सन् 2011 का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। 45वाँ
- बलभद्र ठाकुर एक महत्वपूर्ण आंचलिक उपन्यासकार हैं, इनकी कृतियाँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	कथ्य
मुक्तावली	1959	मणिपुर अंचल के जनजीवन के समाज एवं संस्कृति का सजीव चित्रण
नेपाल की वो बेटी	1959	नेपाल की डुटियाल जाति का चित्रण
देवताओं के देश में	1960	कुलू अंचल के पर्वतीय सौन्दर्य एवं संघर्षपूर्ण जीवन का चित्रण
घने और बने	1961	
लहरों की छाती पर	1962	अण्डमान-निकोबार द्वीप के जनजीवन की स्थिति का सजीव चित्रण

- शैलेष मटियानी एक आँचलिक उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- डॉ० गोपाल राय के अनुसार, "मटियानी मुख्यत: दलित विमर्श के उपन्यासकार हैं, जिसमें नारी और दलित वर्ग की मुख्य भूमिका है।"

शैलेष मटियानी का औपन्यासिक संसार विस्तृत है, जो निम्नांकित है—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
बोरीबली से बोरीबंदर तक	1959	बम्बई के भागदौड़ एवं आधुनिक यांत्रिक जीवन का चित्रण
कबूतर खाना	1959	बम्बई के भूलेश्वर मुहल्ले में रहने वाले मध्यवर्गीय जनों का चित्रण

किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई	1960	बम्बई की सेठानियों के अनैतिक यौनाचार का चित्रण
हौलदार	1960	अल्मोड़ा अंचल के एक पंगु पात्र की मानसिक कुण्ठा का चित्रण
तिरिया भली न काठ की	1961	
चिट्ठीरसैन	1961	नारी की अभिशप्त नियति एवं मानवीय संवेदना का अंकन
चौथी मुट्ठी	1962	
बारूद और बचुली	1962	
मुख सरोवर के हंस	1962	कुमायूँ क्षेत्र के प्रसिद्ध लोककथा 'अजित-बफौल' पर आधृत
एक मूठ सरसों	1962	वर्ण संकर शिशु की सामाजिक अवज्ञा एवं अपमान का चित्रण
कोई अजनबी नहीं	1966	पहाड़ी स्त्री रामरती की भटकन एवं मनोव्यथा का चित्रण
दो बूँद जल	1966	देह-व्यापार का सौदा करने वाली दलित पहाड़ी स्त्रियों का अंकन
दो दु:खों का एक सुख	1966	
भागे हुए लोग	1966	धर्म एवं तंत्र साधना के नाम पर फैले पाखण्ड का चित्रण
पुनर्जन्म के बाद	1970	
जल तरंग	1973	स्त्री-पुरुष सम्बन्ध का चित्रण
बर्फ गिर चुकने के बाद	1975	व्यक्ति मन के तनाव और निरर्थकता की पीड़ा का चित्रण
उगते सूरज की किरण	1976	
छोटे-छोटे पक्षी	1977	एक प्रेम कथा
रामकली	1978	
सर्पगन्धा	1979	पर्वतीय क्षेत्र के दलित समाज के अधिकारों की लड़ाई का चित्रण
आकाश कितना अनंत है	1979	पहाड़ी शहर के प्रबुद्ध पात्रों की संघर्ष गाथा
उत्तरकाण्ड	1980	
डेरेवाले	1980	
सविचरी	1980	
गोपुली गफूरन	1981	नायिका गोपली के नारी व्यक्तित्व का अद्भुत चित्रांकन
बावन नदियों का संगम	1981	वेश्या जीवन एवं उनके दलालों की त्रासद जिन्दगी का चित्रण
अर्धकुम्भ की यात्रा	1983	

मुठभेड़	1983	सरकारी तंत्र की संवेदनशून्यता एवं अमानवीयता का अंकन
नागवल्लरी	1985	
माया सरोवर	1987	स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों का चित्रण
चंद औरतों का शहर	1992	

❑ राजेन्द्र अवस्थी 'तृषित' आंचलिक उपन्यासकार हैं, इनकी रचनाएँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	कथ्य
सूरज किरन की छाँव	1959	बस्तर के गोंड जनजाति के जीवन संघर्ष का अंकन
जंगल के फूल	1960	मध्य प्रदेश के गोंड जनजाति के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन का अंकन
उतरते ज्वार की सीपियाँ	1968	बम्बई महानगर में देह व्यापार में लिप्त स्त्रियों का अंकन
जाने कितनी आँखें	1969	बुंदेलखण्ड के एक गाँव 'बीजा बाड़ी' की कथा
बहता हुआ पानी	1971	एक कलाकार के जीवन में आने वाली लड़कियों की कहानी
बीमार शहर	1973	विवाह संस्था का विरोध और मुक्त यौन सम्बन्ध का अंकन
अकेली आवाज़	1976	
मछली बाजार	1977	
एक रजनीगंधा चोरी	1985	

❑ रामदरश मिश्र एक आंचलिक उपन्यासकार हैं, इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
पानी के प्राचीर	1961	गोरखपुर जिले के पाण्डेपुरवा गाँव के किसानों के जिन्दगी का यथार्थ चित्रण
जल टूटता हुआ	1969	स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के ग्रामीण जीवन का यथार्थ
बीच का समय	1970	अनमेल विवाह की त्रासदी एवं तनाव का चित्रण
सूखता हुआ तालाब	1972	नैतिक रूढ़ियों के बंधन में जकड़े हुए गाँव का चित्रण
अपने लोग	1976	गोरखपुर की कस्बाई एवं ग्रामीण जीवन का मिश्रित चित्रण
रात का सफर	1976	नायिका 'ऋता' की ट्रेन यात्रा का चित्रण
आकाश की छत	1979	बाढ़ की विभीषिका से घिरे मनुष्य की मानसिकता का अंकन
बिना दरवाजे का मकान	1984	नायिका दीपा के जीवन संघर्ष और अपराजेय जिजीविषा का अंकन
दूसरा घर	1986	प्रवासी कमलेश के जीवन यथार्थ एवं संघर्ष का चित्रण

थकी हुई सुबह	1993	एक ग्रामीण नारी की कहानी
बीस बरस	1996	रिपोतार्ज शैली में लिखा उपन्यास

❑ हिमांशु श्रीवास्तव ने निम्नलिखित उपन्यासों की रचना की है—
(1) लोहे के पंख (1957), (2) नदी फिर बह चली (1961), (3) रथ से गिरी बाँसुरी (1967), (4) कुहासे में जलती एक धूपबत्ती (1976), (5) रिहर्सल (1978), (6) अपनी अपनी कंदिल (1979), (7) पिछली रात का अँधेरा (1980), (8) भित्त चित्र की मयूरी (1980) और (9) न खुदा न सनम (1980)।

❑ गुलशेर खाँ 'शानी' ने अग्रांकित उपन्यासों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
काला जल	1965	बस्तर जिले के जगदलपुर के दो मुस्लिम परिवार की तीन पीढ़ी की कथा
कस्तूरी	1964	
पत्थरों में बन्द आवाज	1964	
साल बनों के द्वीप	1967	मड़िया जनजाति के जीवन का यथार्थ चित्रण
नदी और सीपियाँ	1970	पुरुष मानसिकता पर आधारित
एक लड़की की डायरी	1973	
फूल तोड़ना मना है	1980	
साँप और सीढ़ी	1983	बस्तर जिले के आदिवासी की जीवन कथा का अंकन

❑ राही मासूम रजा के महत्वपूर्ण उपन्यास अग्रांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
आधा गाँव	1966	गाजीपुर जिले के गंगोली गाँव के सैयद मुसलमानों की कथा
टोपी शुक्ला	1969	हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों की समस्या का चित्रण
हिम्मत जौनपुरी	1969	गाजीपुर जिले के एक मुसलमान की कथा
ओस की बूँद	1970	हिन्दू-मुस्लिम के धार्मिक उन्माद का चित्रण
दिल एक सादा कागज	1973	पाकिस्तान में स्थानान्तरित भारतीय मुसलमानों के मोहभंग की कथा
सीन 75	1977	सन् 1975 ई० में लागू आपातकाल और जनजीवन पर पड़े उसके प्रभाव का चित्रण
कटरा बी आर्जू	1978	इलाहाबाद के एक मुहल्ले में रहने वाले हिन्दू-मुस्लिम की कहानी

❑ हिमांशु जोशी आंचलिक उपन्यासकार के रूप में मान्य हैं। इनकी रचनाएँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
महासागर	1972	अण्डमान-निकोबार द्वीप की आदिवासी लड़की की कथा
अरण्य	1973	पहाड़ी जीवन की व्यथा कथा

छाया मत छूना मन	1974	एक लड़की की अपने परिवार के लिए त्याग एवं बलिदान की कथा
कगार की आग	1976	अल्मोड़ा जिले के 'लघौना' गाँव की गोमती की कहानी
तुम्हारे लिए	1978	
समय साक्षी है	1982	आपात के दौरान देश में फैली अराजकता एवं अस्थिरता का चित्रण
सु-राज	1982	नायिका गांगी के जीवन संघर्ष का चित्रण

- विवेकी राय एक आंचलिक उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
बबूल	1967	
पुरुष पुराण	1975	'दु:खन' के द्वारा नये और पुराने के संघर्ष का चित्रण
लोकऋण	1977	ग्रामीण संस्कृति व आयातित आधुनिक संस्कृति के बीच तनाव का चित्रण
श्वेतपत्र	1979	पूर्वांचल के जन-जीवन का सजीव चित्रण
सोना माटी	1983	गाजीपुर-बलिया के चोव कराइल क्षेत्र के जन-जीवन का चित्रण
समर शेष है	1988	पूर्वांचल के किसान-मजदूर के शोषण एवं उनके संघर्ष की कथा
मंगल भवन्	1994	राष्ट्र-निष्ठा और देश-भक्ति का चित्रण
नमामि ग्रामम्	1997	गाँवों की दुर्दशा का अलग-अलग शीर्षकों में चित्रण
अमंगल हारी	2000	
देहरी के पार	2003	

- भगवानदास मीरलवाल एक महत्वपूर्ण आंचलिक उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनकी प्रकाशित कृतियाँ निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
काला पहाड़	1999	देश में बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता का संवेदनात्मक चित्रण
बाबल तेरे देश में	2004	पितृ सत्तात्मक समाज में स्त्री की दारुण व्यथा की कथा
रेत	2008	

- अन्य महत्वपूर्ण आंचलिक उपन्यासकार व उपन्यास अग्रांकित हैं—

उपन्यास	उपन्यास
यमुनादत्त वैष्णव	शैलवधू (1959)
केशव प्रसाद मिश्र	कोहबर की शर्त (1965)
मनहर चौहान	हिरना साँवरी (1962)
योगेन्द्र सिन्हा	वन के मन में (1962)
श्याम परमार	मोरझाला (1963)
मधुकर गंगाधर	(1) मोतियों वाले हाथ (1963), (2) फिर से कहो (1964), (3) सुबह होने तक (1969)

मायानन्द मिश्र	माटी के लोग सोने की नैया (1967)
रघुवर दयाल सिंह	त्रियुगा (1967)
रामदेव शुक्ल	(1) ग्राम देवता (1982), (2) विकल्प (1986)
हरगुलाल	भीतरी कुआँ (1974)

- प्रगतिवादी या मार्क्सवादी विचारधारा के उपन्यासकारों में प्रथमत: यशपाल का नाम आता है। इनके प्रमुख उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
दादा कामरेड	1941	क्रान्तिकारियों की गतिविधियों का विश्वसनीय चित्रण
देशद्रोही	1943	सन् 1930 से 1942 तक की राजनीतिक स्थिति का अंकन
दिव्या	1945	ऐतिहासिक कल्पना
पार्टी कामरेड	1946	कम्युनिस्ट पार्टी की विचारधारा एवं कार्यक्रम का समर्थन
मनुष्य के रूप	1949	
अमिता	1956	ऐतिहासिक उपन्यास
झूठा सच (भाग-1)	1958	राष्ट्र विभाजन एवं त्रासदी का चित्रण
झूठा सच (भाग-2)	1960	स्वतंत्रता प्राप्ति एवं देश के विकास तथा देश के भावी निर्माण में बुद्धिजीवियों की भूमिका का यथार्थ चित्रण
बारह घण्टे	1962	पातिव्रत्य सम्बन्धी परम्परागत मूल्यों की व्यर्थता का चित्रण
अप्सरा का श्राप	1965	ऐतिहासिक पौराणिक उपन्यास
क्यों फँसे?	1968	काम सम्बन्धों की निर्बाध आज़ादी का चित्रण
मेरी तेरी उसकी बात	1974	स्वाधीनता आन्दोलन एवं उत्तर भारतीय समाज की राजनीतिक संघर्ष का चित्रण

- 'झूठा सच' दो भागों में प्रकाशित उपन्यास है। प्रथम भाग का नाम 'वतन और देश' तथा दूसरे भाग का नाम 'देश का भविष्य' है।
- मन्मथनाथ गुप्त ने निम्न उपन्यासों की रचना की है—
  (1) बहता पानी, (2) चक्को, (3) आस्तीन के साँप, (4) शहीद और शोहदे, (5) षड्यन्त्र, (6) रात और दिन, (7) आधी रात के अतिथि, (8) अल्-जुल्फिकार, (9) ख्याल अच्छा है, (10) तोहम्-फोहम्, (11) दिनदहाड़े, (12) शहादतनामा।
- रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' प्रगतिवादी चेतना के उपन्यासकार हैं। इनके महत्वपूर्ण उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
चढ़ती धूप	1945	सन् 1932-1937 तक की राजनीतिक हलचलों का चित्रण
उल्का	1947	प्रेम विवाह, स्त्री स्वाधीनता आदि का अंकन
नई इमारत	1947	भारत छोड़ो आन्दोलन पर आधारित

मरु प्रदीप	1951	बाल विधवा शान्ति और विमल के प्रेम का चित्रण

- भैरव प्रसाद गुप्त प्रगतिवादी उपन्यासकार हैं। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
शोले	1946	कानपुर के मजदूर आन्दोलन का चित्रण
मशाल	1948	पूर्वांचल की पृष्ठभूमि में द्वितीय विश्वयुद्ध से उत्पन्न आर्थिक संकट एवं राजनीतिक गतिविधि का चित्रण
गंगा मैया	1952	अभावग्रस्त ग्रामीणों के पारस्परिक वैमनस्य का चित्रण
जंजीरें और नया आदमी	1954	
सती मैया का चौरा	1959	किसानों का शोषण, वर्ग चेतना एवं उनके संघर्ष का अंकन
धरती	1962	एक सर्जक साहित्यकार के संघर्ष का चित्रण
आशा	1963	
कालिन्दी	1963	
रंभा	1964	
नौजवान	1972	
काशी बाबू	1987	
भाग्य देवता	1992	
अन्तिम अध्याय	1970	उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के जीवन पर आधारित

- अमृतराय समाजवादी उपन्यासकार हैं। इनके प्रमुख उपन्यास हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
बीज	1952	भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की विचारधारा एवं आम आदमी के जीवन संघर्ष का चित्रण
नागफनी का देश	1953	प्रेम और दाम्पत्य की टकराहट का चित्र
हाथी के दाँत	1956	समाज के दुहरे चरित्र के यथार्थ का चित्रण
जंगल	1969	वर्तमान सभ्यता को जंगल सभ्यता के रूप में चित्रित किया गया है।
सुख-दुःख	1969	जीवन में सुख-दुःख की शाश्वत समस्या का चित्रण
भटियाली	1969	अविवाहित 'चित्रा' के प्रेम द्वंद्व का चित्रण
धुआँ	1977	नई पीढ़ी के भटकाव एवं सामाजिक, राजनीतिक मूल्यहीनता का चित्रण

- अमरकांत एक प्रगतिशील उपन्यासकार हैं। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
सूखा पत्ता	1959	कथानायक कृष्ण की प्रेमकथा का चित्रण
आकाश पक्षी	1967	स्वाधीन भारतीय समाज के अन्तर्विरोधों का अंकन
काले उजले दिन	1969	विमाता के व्यवहार से एक व्यक्ति के विघटित चरित्र का अंकन
ग्राम सेविका	1981	

बीच की दीवार	1981	एक स्त्री की अनेक पुरुषों के प्रति आकर्षण की कथा
सुख जीवी	1982	
सुन्नर पाण्डे की पतोहू		
इन्हीं हथियारों से	2003	भारत छोड़ो आन्दोलन से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक के सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ का चित्रण

- अमरकांत और श्रीलाल शुक्ल को सन् 2011 का 45वाँ भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार संयुक्त रूप में प्राप्त हुआ।
- भीष्म साहनी के महत्वपूर्ण उपन्यास इस प्रकार हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
झरोखा	1967	आर्य समाजी मध्यवर्गीय परिवार का अंकन
कड़ियाँ	1970	दाम्पत्य जीवन की कटुता और स्त्री की असहाय स्थिति का अंकन
तमस	1973	भारत विभाजन की साम्प्रदायिक विभीषिका का महाकाव्यात्मक अंकन
वसंती	1980	दिल्ली महानगर की झुग्गी-झोपड़ी वाली गन्दी बस्तियों का अंकन
मय्यादास की माड़ी	1988	सन् 1840 से 1920 तक पंजाब के राजनीतिक सामाजिक यथार्थ का अंकन
कुंतो	1993	नारी जीवन की चिरन्तन पराधीनता-जन्य पीड़ा का अंकन
नीलू नीलिमा नीलोफर	2000	

- मारकण्डेय मूलतः कहानीकार हैं। इनके महत्वपूर्ण उपन्यास हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
सेमल का फूल	1959	
अग्निबीज	1981	गांधीवादी विचारधारा के बिखराव और अग्निबीज के रूप में क्रान्तिकारी युवा चेतना का अंकन।

- जगदीशचन्द्र महत्वपूर्ण प्रगतिवादी उपन्यासकार हैं। इनकी रचनाएँ निम्न हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
यादों का पहाड़	1966	
धरती धन न अपना	1972	पंजाब के ग्रामीण दलित जीवन पर आधारित
आधा-पुल	1973	युद्ध की विभीषिका का जीवन्त अंकन
कभी न छोड़े खेत	1976	सामन्ती जाटों की कहानी
मुट्ठीभर काँकर	1976	पंजाबी शरणार्थियों के दुःख और संघर्ष की कहानी
टुंडा लाट	1978	अस्थायी कमीशन प्राप्त सैनिक सुनील की प्रेम कथा
घास गोदाम	1985	दिल्ली के आस-पास के किसानों की बरबादी की कहानी
नरक कुण्ड में वास	1994	'धरती धन न अपना' उपन्यास का विस्तार
लाट की वापसी	2000	'टुंडा लाट' उपन्यास का विस्तार
जमीन तो अपनी थी	2001	दलित जीवन से सम्बद्ध कथा

- विश्वम्भरनाथ उपाध्याय प्रतिबद्ध मार्क्सवाद कथाकार हैं। इनकी प्रमुख औपन्यासिक कृतियाँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	कथ्य
रीछ	1967	रीछ को प्रतीक बनाकर समाज के शोषक वर्गों का अंकन
पक्षधर	1971	वामपंथी आक्रोश का चित्रण
जाग मच्छंदर गोरख आया	1983	मध्यकालीन धर्म साधना तथा तत्कालीन समाज व्यवस्था का अंकन
दूसरा भूतनाथ	1985	एक जनहितैषी लड़ाकू पत्रकार का चित्रण
जोगी मत जा	1989	भर्तृहरि के जीवन-चरित पर आधारित
विक्षुब्ध	1991	
कठपुतली	1992	
विश्वबाहु परशुराम	1997	परशुराम के जीवन चरित्र पर केन्द्रित
प्रतिशोध	1998	देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, उपभोक्तावाद, बेइमानी आदि का चित्रण

- हृदयेश प्रगतिशील उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास अग्रांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
गाँठ	1970	एक प्रतीकात्मक उपन्यास
हत्या	1971	भोलानाथ की अमानवीयता का अंकन
एक कहानी अंतहीन	1972	व्यवस्था के जहरीले अंतहीन कुप्रभाव का अंकन
सफेद घोड़ा लाल सवार	1976	अदालतों में फैले भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य
साँड़	1981	शिक्षण संस्थानों में व्याप्त भ्रष्टाचार का अंकन
पूर्वजन्म	1985	
दंड नायक	1990	कथा नायक का अपने अधिकारों के लिए किये गये संघर्ष का अंकन
पगली घंटी	1995	जेल के परिवेश का चित्रण
किस्सा हवेली	2004	प्रतीकात्मक उपन्यास

- बदीउज्जमाँ प्रगतिवादी उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
एक चूहे की मौत	1971	फैंटेसी शैली में लिखा प्रतीकात्मक उपन्यास
छाको की वापसी	1975	विभाजन के बाद बिहार से पूर्वी पाकिस्तान गये मुसलमानों के मोहभंग का अनुभूतिपूर्ण अंकन
अपुरुष	1976	प्राइवेट कॉलेज के प्राध्यापकों की मानसिकता का अंकन
छठा तंत्र	1977	आज की शोषण पर आधारित प्रतीकात्मक उपन्यास
सभा पर्व	1994	अपूर्ण उपन्यास

- बदीउज्जमां ने 'एक चूहे की मौत' में कथा-सरित्सागर और काफ्का की 'मेटाफोर्मोसिस' नामक कहानी के शिल्प का प्रयोग किया है।

- मुद्राराक्षस ने निम्नलिखित उपन्यासों की रचना की है—
  (1) अचला : एक मन:स्थिति (1975), (2) भगोड़ा (1978), (3) शोक संवाद (1980), (4) मेरा नाम तेरा नाम (1980), (5) हम सब मनसा राम (1981), (6) शांति भंग (1982), (7) प्रपंचतंत्र (1985), (8) दण्ड विधान (1986)
- जगदम्बाप्रसाद दीक्षित के महत्वपूर्ण उपन्यास निम्नलिखित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
कटा हुआ आसमान	1971	प्रवासी मध्यवर्गीय समाज की घुटन का विश्वसनीय अंकन
मुर्दाघर	1974	बम्बई महानगर की भाटियारिनों के जीवन यथार्थ का चित्रण
अकाल	1997	आज के दुर्दशाग्रस्त गाँवों का चित्रण

- काशीनाथ सिंह प्रगतिवादी उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनकी कृतियां हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
काशी का अस्सी		काशी की सभ्यता एवं संस्कृति का सजीव चित्रण
अपना मोर्चा	1972	छात्र आन्दोलन का चित्रण
रेहन पर रग्घू		
महुआ चरित	2011	कथा नायिका महुआ की मानसिक स्थिति का चित्रण

- अब्दुल बिस्मिल्लाह के महत्वपूर्ण उपन्यास निम्नलिखित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
समर शेष है	1980	
झीनी झीनी झीनी चदरिया	1986	बनारस के बुनकरों के जीवन यथार्थ पर आधारित
जहरबाद	1987	विंध्याचल के एक निम्न मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की कहानी
दंत कथा	1990	
मुखड़ा क्या देखे	1996	दलित मुस्लिम परिवार की व्यथा-कथा
अपवित्र आख्यान	2008	
रावी लिखता है		

- संजीव एक प्रगतिवादी उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास निम्नलिखित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
किसानगढ़ के अहेरी	1981	अवध की सामंती अहेर प्रवृत्ति का चित्रण
सर्कस	1984	सर्कसकर्मियों के जीवन पर आधारित
सावधान नीचे आग है	1986	झरिया क्षेत्र की कोयला खान की एक दुर्घटना पर आधृत
धार	1990	कोयला के अवैध खनन और आदिवासियों के शोषण का चित्रण
पाँव तले की दूब	1995	झारखण्ड की जनजातियों और उनके आन्दोलनों का चित्रण

जंगल जहाँ शुरू होता है	2000	पश्चिमी चम्पारन की थारू जनजाति की डाकू समस्या का चित्रण
सूत्राधार	2003	लोकनाटककार भिखारी ठाकुर के जीवन चरित्र पर आधारित
आकाश चम्पा	2008	

चतुर्थ - उत्थान : आधुनिकता बोध के उपन्यास

□ धर्मवीर भारती कवि उपन्यासकार हैं। इनकी रचनाएँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
गुनाहों का देवता	1949	चन्दर और सुधा के किशोर भावुक प्रेम की करुण कहानी
सूरज का सातवाँ घोड़ा	1952	अलिफ लैला, पंचतंत्र आदि की कथा प्रविधि पर नगरीय निम्न मध्यवर्ग के कटु यथार्थ का चित्रण

□ राजेन्द्र यादव के महत्वपूर्ण उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
प्रेत बोलते हैं	1952	असफल दाम्पत्य जीवन का चित्रण
उखड़े हुए लोग	1956	'नेता भैया' के रूप में राजनीतिज्ञों की असलियत का अंकन
कुलटा	1958	
शह और मात	1959	युवा कहानी लेखिका के प्रेम का अंकन
एक इंच मुस्कान	1963	अमर, रंजना और अमला के प्रेम का चित्रण
अनदेखे अनजान पुल	1963	एक कुरुप लड़की की कुंठित मानसिकता तथा उसके सपनों का अंकन
मंत्रविद्ध	1967	

□ 'प्रेत बोलते हैं' उपन्यास को सन् 1960 ई० में 'सारा आकाश' नाम से प्रकाशित कराया गया।

□ 'एक इंच मुस्कान' की रचना राजेन्द्र यादव ने अपनी पत्नी मन्नू भण्डारी के सह-लेखन में की।

□ प्रभाकर माचवे प्रयोगवादी कवि उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास निम्न हैं—

उपन्यास	वर्ष	उपन्यास	वर्ष
(1) परन्तु	1940	(2) एकतारा	1952
(3) साँचा	1956	(4) द्वाभा	1957
(5) जो	1964	(6) किशोर	1969
(7) तीस चालीस पचास	1973	(8) अनदेखी	
(9) दर्द के पैबंद	1974	(10) द्यूत	1976
(11) किसलिए	1975	(12) आँख मेरी बाकी उनका	1983
(13) लापता	1984		

□ नरेश मेहता कवि उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
डूबते मस्तूल	1954	कथा नायिका रंजना के माध्यम से स्त्री की समस्या का चित्रण
यह पथ बंधु था	1962	आदर्शवादी दम्पति 'श्रीधर' और 'सरस्वती' के जीवन संघर्ष का अंकन
धूमकेतु : एक श्रुति	1962	बालक 'उदयन' के शैशव अवस्था का मनोवैज्ञानिक चित्रण
दो एकान्त	1964	आधुनिक समाज में स्त्री-पुरुष के बनते बिगड़ते सम्बन्धों का अंकन
नदी यशस्वी है	1967	उदयन के किशोरावस्था की अनंत जिज्ञासा का अंकन
प्रथम फाल्गुन	1968	महिम और गोपा के प्रगाढ़ प्रेम का चित्रण
उत्तर कथा (भाग-1)	1979	मालव के कुलीन ब्राह्मण परिवार के जीवन यथार्थ का चित्रण
उत्तर कथा (भाग-2)	1982	

□ गिरिधर गोपाल के महत्वपूर्ण उपन्यास हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
चाँदनी के खण्डहर	1954	इसमें 24 घण्टे की कथा प्रस्तुत की गई है।
कंदिल और कुहासे	1969	मध्य वर्ग के आर्थिक संघर्ष, विवशता और निराशा का चित्रण

□ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना कवि उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
सोया हुआ जल	1954	एक प्रतीकात्मक उपन्यास
पागल कुत्तों का मसीहा	1977	कुत्तों के प्रतीक में रूढ़ जीवन मूल्यों का चित्रण
सूने चौखट	1981	बालक के स्वभाव का चित्रण

□ कमलेश्वर हिन्दी के प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण उपन्यासकार हैं। इनकी कृतियाँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
एक सड़क सत्तावन गलियाँ	1957	लीला-नौटंकी करके जीविकोपार्जन करने वाले समाज का चित्रण
डाक बंगला	1959	मातृहीन कथानायिका 'इरा' की संघर्ष कथा का चित्रण
लौटे हुए मुसाफिर	1961	साम्प्रदायिक समस्या का चित्रण
समुद्र में खोया हुआ आदमी	1967	क्लर्क श्यामलाल, उनकी पुत्री तारा, पुत्र वीरन की कथा
काली आँधी	1974	स्त्री के राजनीतिक और पारिवारिक दायित्व एवं द्वंद्व का चित्रण
आगामी अतीत	1976	

तीसरा आदमी	1976	मध्यवर्गीय दम्पति के बीच तीसरे व्यक्ति के प्रवेश की कहानी
वही बात	1980	मध्यवर्गीय स्त्री की विसंगति एवं भटकाव का चित्रण
सुबह दोपहर शाम	1982	स्वतंत्रता संग्राम में क्रान्तिकारी दल की भूमिका का चित्रण
रेगिस्तान	1988	आदर्शों के टूटने का मार्मिक चित्रण
कितने पाकिस्तान	2000	

- कृष्ण बलदेव वैद्य के महत्वपूर्ण उपन्यास निम्नलिखित हैं—
  (1) उसका बचपन (1957), (2) विमल उर्फ जाए तो जाए कहाँ (1974), (3) दूसरा न कोई (1978), (4) दर्द ला दवा (1980), (5) गुजरा हुआ जमाना (1980), (6) काला कोलाज (1989), (7) नर नारी (1996), (8) मायालोक (1999), (9) एक नौकरानी की डायरी (2000)।
- 'काला-कोलाज' को वैद्य जी ने 'अनुपन्यास' की संज्ञा दी है।
- लक्ष्मीकांत वर्मा कवि उपन्यासकार हैं। इनके प्रमुख उपन्यास हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
खाली कुर्सी की आत्मा	1958	समूची कथा एक खाली कुर्सी के द्वारा कही गई है।
कटी हुई जिन्दगी : कटा हुआ कागज	1965	जीवन की अस्वीकृतियों, निरर्थकताओं आदि का चित्रण
कोयला और आकृतियाँ	1970	स्त्री-पुरुष के यौन सम्बन्धों का खुला चित्रण
सफेद चेहरा	1971	एक रोमानी कथा
टेराकोटा	1971	महाभारत के आधार पर महानगरीय जीवन की यंत्रणा का अंकन
तीसरा प्रसंग	1972	
मुंशी रायजादा		

- 'टेरीकोटा' इटैलियन शब्द है जिसका अर्थ है 'मिट्टी की मूर्ति' या 'मिट्टी का खिलौना'।
- मोहन राकेश ने तीन उपन्यासों की रचना की है जो निम्न हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
अँधेरे बन्द कमरे	1961	दिल्ली के अभिजात्यवर्गीय हरवंश और नीलिमा के दाम्पत्य जीवन का चित्रण
न आने वाला कल	1968	एक पहाड़ी प्रदेश के मिशनरी स्कूल के अध्यापक का चित्रण
अन्तराल	1972	स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की जटिलता का चित्रण

- राजकमल चौधरी कवि उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास इस प्रकार हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
नदी बहती थी	1962	सामाजिक-राजनीति विद्रूपता का चित्रण

शहर था शहर नहीं था	1966	
मछली मरी हुई	1966	समलैंगिकतावादी स्त्रियों के व्यवहार और मानसिकता का चित्रण
देह गाथा	1966	मुक्त यौनाचार का चित्रण
बीस रानियों के बाइस्कोप	1972	फिल्म जगत की बदसूरत चीजों और बतसूरत सच्चाइयों की कहानी

- निर्मल वर्मा अवसाद, निराशा, अलगाव-बोध, संत्रास भाव, मन की अन्धकार भरी गुफाओं में भटकने वाली चेतना के उपन्यासकार हैं।
- निर्मल वर्मा के महत्वपूर्ण उपन्यास निम्नलिखित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
वे दिन	1964	चेकोस्लोवाकिया की पृष्ठभूमि पर आधारित
लाल टिन की छत	1974	एक वय:संधि की लड़की की मानसिकता का चित्रण
एक चिथड़ा सुख	1979	बिट्टी, ईश, मुन्नू आदि की अधूरी जिन्दगियों की कहानी
रात का रिपोर्टर	1989	आतंक, अविश्वास, रहस्य और मानसिक यातना का अंकन
अन्तिम अरण्य	2000	

- दुष्यन्त कुमार कवि उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
छोटे-छोटे सवाल	1964	कॉलेज परिसर में पनपते भ्रष्टाचार एवं अनुशासनहीनता का अंकन
आँगन में एक वृक्ष	1969	एक स्त्री का अपने सौतेले पुत्र के प्रति निश्छल प्रेम का चित्रण

- कुछ महत्वपूर्ण उपन्यास, उपन्यासकार व कथ्य इस प्रकार हैं—

उपन्यासकार	उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
रमेश बक्षी	अठारह सूरज के पौधे	1965	मध्यवर्ग के क्षोभ और विद्रोह भरे युवक की मानसिकता का अंकन
श्रीकांत वर्मा	दूसरी बार	1968	महानगरों में स्त्री-पुरुष के बीच उभरनेवाले नये सम्बन्धों का चित्रण
ओमप्रकाश दीपक	कुछ जिन्दगियाँ बेमतलब	1968	समकालीन जिन्दगी का तल्ख चित्रण
गिरीश अस्थाना	धूप छाँही रंग	1970	द्वितीय विश्व युद्ध और दफ्तर की जिन्दगी का बड़े पैमाने पर चित्रण
मुक्तिबोध	विपात्र	1970	मध्यवर्गीय मानस की आस्था एवं वैचारिक उहापोह का चित्रण
प्रमोद सिन्हा	उसका शहर	1970	आधुनिकता बोध का चित्रण

इब्राहीम शरीफ	अँधेरे के साथ	1972	एक व्यक्ति का समाज की क्रूर शक्तियों से संघर्ष की कहानी
गोपाल उपाध्याय	एक टुकड़ा इतिहास	1975	दलित महिला चनुली के जीवन संघर्ष का चित्रण
महीप सिंह	यह भी नहीं	1976	स्त्री पुरुष के असफल व तनावपूर्ण सम्बन्ध का अंकन
भीमसेन त्यागी	नंगा शहर	1977	आधुनिक पूँजीवादी तंत्र की भयावह स्थिति का अंकन
विपिन कुमार अग्रवाल	बीती आपबीती आप	1978	साहित्यकारों के जीवन की असंगति का चित्रण
रमेशचन्द्र सिन्हा	सोमा चरित	1980	मानव समाज की पूँजीवाद से साम्यवाद की ओर यात्रा का अंकन
रवीन्द्र कालिया	खुदा सही सलामत	1982	नारी शोषण का चित्रण
	है (दो भाग में)	1984	चुनावी राजनीति का सजीव अंकन
दूधनाथ सिंह	आखिरी कलाम	2003	बाबरी मस्जिद ध्वंस की घटना पर आधारित

- गिरीश अस्थाना का 'धूप छाँही रंग' युद्ध विषय पर लिखा हिन्दी का पहला श्रेष्ठ उपन्यास है।
- गिरिराज किशोर के महत्वपूर्ण उपन्यास निम्नलिखित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
लोग	1966	यशवंतराय के द्वंद्व, तनाव, अहंकार और संत्रास का चित्रण
चिड़ियाघर	1968	रोजगार दफ्तर की जिन्दगी का यथार्थ अंकन
यात्राएँ	1971	पति-पत्नी के बीच की मानसिक दूरी का चित्रण
जुगलबंदी	1973	अंग्रेजी सत्ता का अंत और कांग्रेस के रूप में नये सत्ता वर्ग के उदय का अंकन
दो	1974	
इन्द्र सुने	1978	फैंटेसी शैली में लिखा उपन्यास
दावेदार	1979	
यथा प्रस्तावित	1982	सरकारी कर्मचारियों के क्रूरता भरे व्यवहार का चित्रण
तीसरी सत्ता	1982	आधुनिक नारी के दाम्पत्य सम्बन्ध में उत्पन्न जटिलताओं का अंकन
परिशिष्ट	1984	तकनीकी शिक्षा-संस्थानों में हरिजन विरोधी वातावरण का चित्रण
असलहा	1987	वर्तमान दुनिया में हथियार संग्रह की होड़ का चित्रण
अन्तर्ध्वंस	1990	तीसरी दुनिया के देशों को युवा प्रतिभाओं के अमानवीय शोषण का अंकन

ढाई घर	1991	समाज, मनुष्य और प्रतिष्ठानों के बदलते रिश्तों का चित्रण
पहला गिरमिटिया	1999	महात्मा गांधी के जीवन-चरित्र पर आधारित
इक आग दरिया है	2007	

- महेन्द्र भल्ला के महत्वपूर्ण उपन्यास इस प्रकार हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
एक पति के नोट्स	1967	आधुनिक दाम्पत्य जीवन की समस्या
दूसरी तरफ	1967	प्रवासी जीवन की विडम्बना और संत्रास का चित्रण
उड़ने के पेश्तर	1987	प्रवासी जीवन की विडम्बना और संत्रास का चित्रण
दो देश और तीसरी उदासी	1997	

- सुरेश सिन्हा ने दो महत्वपूर्ण उपन्यासों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
सुबह अँधेरे पथ पर	1967	
पत्थरों का शहर	1971	नई पीढ़ी की दिशाहीनता का अनुभूतिपूर्ण चित्रण

- गंगा प्रसाद विमल ने निम्नलिखित उपन्यासों की रचना की है—
  (1) अपने से अलग (1969), (2) कहीं कुछ और (1971), (3) मरीचिका (1973) और मृगांतक (1978)।
- गोविन्द मिश्र के उपन्यास निम्नलिखित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
वह अपना चेहरा	1970	दफ्तरी जीवन का अंकन
उतरती हुई धूप	1971	किशोरावस्था के प्रेम का चित्रण
लाल पीली जमीन	1976	बुन्देलखण्ड के परिवेश और जनजीवन की स्थिति का अंकन
हुजूर दरबार	1981	राजा रजवाड़ों की जीवन पद्धति और मानसिकता का चित्रण
तुम्हारी रोशनी में	1985	दफ्तरशाही समाज का सजीव अंकन
धीरे समीरे	1988	रिपोर्ताज शैली में लिखा उपन्यास
पाँच आँगनों वाला घर	1995	संयुक्त परिवार के टूटने का संवेदनात्मक चित्रण
फूल, इमारतें और बन्दर	2000	समकालीन नौकरशाही और राजनीतिक यथार्थ का चित्रण
कोहरे में कैद रंग	2004	
धूल पौधों पर	2008	

- अभिमन्यु अनत मारीशस के हिन्दी उपन्यासकार हैं, इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—

उपन्यास	वर्ष	उपन्यास	वर्ष
(1) नदी बहती रही	1970	(2) आन्दोलन	1971
(3) एक बीघा प्यार	1972	(4) जम गया सूरज	1973
(5) तपती दोपहरी	1977	(6) लाल पसीना	1977
(7) कुहासे का दायरा	1978	(8) शेफाली	1979

(9) हड़ताल कब होगी	1979	(10) अपनी ही तलाश	1982
(11) अपनी-अपनी सीमा	1983	(12) गाँधी जो बोले थे	1984
(13) लहरों की बेटी	1995	(14) एक उम्मीद और	

- अभिमन्यु अनत प्रथम विदेशी हिन्दी लेखक हैं जो अपने देश के सम्बन्ध में हिन्दी भाषा में उपन्यास लिखते हैं। इन्हें मारीशस का प्रेमचंद कहा जाता है।
- भगवान सिंह के महत्वपूर्ण उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
महाभिषग	1973	अश्वघोष कृत बुद्धचरित के आधार पर बुद्ध के जीवन चरित्र का अंकन
अपने अपने राम	1992	रामकथा की औपन्यासिक पुनर्व्याख्या
उन्माद	1999	साम्प्रदायिक उन्माद का चित्रण
शुभ्रा	2000	शुभ्रा और देवेश की जीवन कथा का चित्रण

- देवेश ठाकुर ने निम्नलिखित उपन्यासों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
भ्रम भंग	1975	एक युवक के अपने परिवेश से संघर्ष का चित्रण
प्रिय शवनम	1978	निम्न मध्य वर्ग के युवक की मानसिकता का अंकन
जनगाथा	1985	
गुरुकुल	1989	

- कामतानाथ के महत्वपूर्ण उपन्यास अग्रांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
(1) समुद्र तट पर खुलने वाली खिड़की	1975	
(2) एक और हिन्दुस्तान	1977	जेल की जिन्दगी का चित्रण
(3) तुम्हारे नाम	1979	किशोर प्रेम का चित्रण
(4) काल कथा	1998	सन् 1918 से 1929 तक की कालावधि के उत्तर भारतीय जीवन का अंकन
(5) पिघलेगी बर्फ	2006	मनुष्य की परिस्थितिजन्य जीवन-यात्रा का चित्रण

- योगेश गुप्त के उपन्यास इस प्रकार हैं—
(1) अधिकार विसर्जन (1976), उनका फैसला (1977), (3) पहला अंत (1978), (4) छोटे-बड़े डर (1979), (5) अकारण (1980), (6) उपसंहार (1980), (7) अनायास (1982)।
- रवीन्द्र वर्मा के उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
किस्सा तोता सिर्फ तोता	1977	
गाथा शेख चिल्ली	1981	
माँ और अश्वत्थामा	1984	अश्वत्थामा के प्रतीक छाया के रूप में रमेश लाल का चित्रण

जवाहर नगर	1995	सन् 1975 को आपातकाल की राजनीतिक स्थिति पर आधारित
निन्यानवे	1998	मध्यवर्गीय परिवार की जिन्दगी और मानसिकता का अंकन
पत्थर ऊपर पानी	2000	वृद्धावस्था की स्थितियों और अनुभूतियों का अंकन
मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगा	2004	अर्थ प्रधान अमानवीय संस्कृति के विरोध का अंकन
दस बरस का भँवर	2008	

- रमेशचन्द्र शाह प्रतिष्ठित आलोचक और उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास निम्न हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
गोबर गणेश	1978	कथानायक विनायक के आकांक्षाओं और सपनों के बनने-टूटने का चित्रण
किस्सा गुलाम	1986	दलित कथा नायक कुंदन की कुंठा और विद्रोह भावना का चित्रण
पूर्वापर	1990	दो मित्रों के बचपन की कहानी
आखिरी दिन	1992	नैतिक पतन, अमानवीयता आदि का चित्रण
पुनर्वास	1995	कथानायक प्रो० नाथ की ऊब का चित्रण

- प्रणवकुमार वन्द्योपाध्याय ने निम्नलिखित उपन्यासों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
खबर	1978	
गोपीगंज संवाद	1981	ब्रिटिश उपनिवेश के विरुद्ध लड़े जाने वाले स्वाधीनता संग्राम का अंकन
आदिकाण्ड	1985	ग्रामीण अंचलों में अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े गए लड़ाई का चित्रण
अमृतपुत्र	1990	
पदातिक	1995	रामायण के 'अयोध्याकाण्ड' पर आधारित
पंचवटी	1999	रामायण के 'अरण्यकाण्ड' पर आधारित

- विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
(1) एक नौकर की कमीज	1979	दफ्तर के परिवेश एवं बाबूओं की बेचारगी का अंकन
(2) खिलेगा तो देखेंगे	1996	एक अध्यापक के परिवार का अंकन
(3) दीवार में एक खिड़की रहती थी	1997	कथानायक रघुवर प्रसाद के जीवन का चित्रण

(4) हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़

- आलोचकों ने विनोद कुमार शुक्ल के 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' उपन्यास को 'निम्नमध्यवर्गीय जीवन का जादू' कहा है।
- मणिमधुकर के प्रतिष्ठित उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
सफेद मेमने	1971	राजस्थान के नेगिया, बराऊ, गाबासी जैसी ढाणियों में बसे लोगों की कथा
पत्तों की बिरादरी	1979	राजस्थान और पाकिस्तान की सीमा पर स्थापित राहत-शिविरों की जिन्दगी का अंकन
पिंजरे में पन्ना	1981	रम्या और सोनटके के जीवन का अंकन

❑ श्रवण कुमार गोस्वामी ने निम्नांकित औपन्यासिक कृतियों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
जंगल तंत्रम	1979	लोकतंत्र की असलियत का चित्रण
सेतु	1981	
भारत बनाम इण्डिया	1983	समकालीन भारत के गाँवों की पीड़ा का चित्रण
दर्पण झूठ न बोले	1983	समकालीन समाज में फैले आर्थिक-राजनीतिक भ्रष्टाचार का चित्रण
राहुकेतु	1984	एक इमानदार व्यक्ति और भ्रष्ट समकालीन राजनीति का चित्रण
मेरे मरने के बाद	1985	हिन्दी लेखक की नियति का चित्रण
चक्रव्यूह	1988	विश्वविद्यालय परिसर की वास्तविकताओं का अंकन
आदमखोर	1992	
एक टुकड़ा सच	1992	
हस्तक्षेप	2002	
कहानी एक नेताजी की	2005	

❑ मनोहरश्याम जोशी किस्सागो के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके उपन्यास निम्नांकित है—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
कुरु कुरु स्वाहा	1980	बम्बई महानगर के फिल्म जगत के यथार्थ का चित्रण
कसप (क्या जाने ?)	1987	एक प्रेम कथा
हरि या हरक्यूलीज की हैरानी	1994	कुमायूँ गढ़वाल क्षेत्र के जन-जीवन का चित्रण
टा-टा प्रोफेसर	1995	एक स्कूल शिक्षक के व्यंग्य चित्र का अंकन
हमजाद	1996	बाजारवादी प्रवृत्ति का चित्रण
क्याप (अजीब)	2001	कूर्मांचल के वाल्मीकि नगर की कहानी
कौन हूँ मैं ?	2006	प्रसिद्ध भुवाल सन्याल के केस पर आधारित।

❑ सुरेन्द्र वर्मा बहुत प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं। इनके प्रकाशित उपन्यास निम्न हैं—
(1) अँधेरे से परे (1980), (2) मुझे चाँद चाहिए (1993), (3) दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता (1998)।

❑ द्रोणवीर कोहली के प्रमुख उपन्यास निम्नलिखित है—
(1) हवेलियों वाले (1980), (2) चौखट (1981), (3) आँगन का कोठा

(1985), (4) कायास्पर्श (1987), (5) तकसीम (1994), (6) बाह कैम्प (1998), (7) नानी (2000), (8) पोटली (2012)।

❑ मंजूर एहतशाम के महत्वपूर्ण उपन्यास निम्नलिखित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
कुछ दिन और	1976	पति-पत्नी सम्बन्ध पर आधारित
सूखा बरगद	1986	हिन्दू-मुस्लिम समस्या का संवेदनात्मक चित्रण
दास्तान-ए-लापता	1995	इंसानियत के लापता होने की नियति का चित्रण
बशारत मंजिल	2004	मुस्लिम समाज के अन्तर्विरोधों का चित्रण

❑ मंजूर एहतशाम ने 'मदरशा' और 'पहर ढलते' शीर्षक दो उपन्यास और लिखा है।

❑ मिथिलेश्वर प्रगतिशील उपन्यासकार हैं। इनकी रचनाएँ निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
झुनिया	1980	बिहार के गाँवों का चित्रण
युद्ध स्थल	1981	अंध विश्वासग्रस्त पिछड़ी मानसिकता के ग्रामीणों के भयावह जीवन का अंकन
प्रेम न बाड़ी उपजे	1995	रुपेश और शकुन्तला की प्रेम कथा और त्रासदी का अंकन
यह अंत नहीं	2000	समकालीन बिहार के गाँवों का यथार्थ चित्रण
सुरंग में सुबह	2003	समकालीन राजनीति के घिनौने चेहरे का अंकन
माटी कहे कुम्हार से	2006	दलित वर्ग की त्रासदी और लोकतंत्र की असलियत का अंकन
पानी बीच मीन पियासी		

❑ वीरेन्द्र जैन समकालीन उपन्यासकारों में प्रतिष्ठित है। इनकी रचनाएँ निम्न हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
सुरेखा पर्व	1978	
अनातीत	1983	
प्रतीक : एक जीवनी	1983	
शब्द बध	1983	प्रकाशन जगत में व्याप्त अनाचार एवं प्रतिभाओं के शोषण पर आधारित
सबसे बड़ा सिपहिया	1988	पुलिस तंत्र के क्रूर अमानवीय पक्ष का चित्रण
डूब	1991	मध्य प्रदेश के पिछड़े पहाड़ी अंचल की पीड़ा का चित्रण
पार	1994	'डूब' उपन्यास का विस्तार
पंचनामा	1996	आश्रमों के छद्म और उनमें पनपते भ्रष्टाचार का उद्घाटन

❑ राजकृष्ण मिश्र के महत्वपूर्ण उपन्यास निम्नलिखित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
दारुल सफा	1981	विधायकों और मंत्रियों की घिनौनी राजनीतिक गतिविधियों का अंकन

सचिवालय	1984	नौकरशाही और असामाजिक तत्वों के अंतरंग सम्बन्धों का चित्रण
कुतो मनुष्यः	1994	स्त्री पुरुष के व्यक्तित्व निर्माण में परिस्थितियों की भूमिका का अंकन
मंत्रिमण्डल	1996	'दारुलसफा' और 'सचिवालय' उपन्यास का विस्तार

❑ पंकज विष्ट ने अग्रांकित उपन्यासों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
लेकिन दरवाजा	1982	दिल्ली के समकालीन लेखक समाज का दस्तावेज
उस चिड़िया का नाम	1989	पहाड़ी स्त्रियों की दयनीय स्थिति और शोषण का मार्मिक चित्रण

❑ रामदेव धुरंधर मारीशस के उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
छोटी मछली बड़ी मछली	1983	मारीशस के परिवेश और जीवन यथार्थ का चित्रण
पूछो इस माटी से	1983	मारीशस की अकथनीय पीड़ा का संवेदनात्मक अंकन

❑ कमलाकांत त्रिपाठी ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण उपन्यासों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
पाही घर	1991	सन् 1857 ई० की घटना के त्रासद राष्ट्रीय अनुभव पर आधारित
वेदखल	1997	भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के अछूते पहलुओं से संवद्ध

❑ विजय ने निम्नांकित औपन्यासिक कृतियों की रचना की है—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
साकेत के युक्लिप्टस	1991	गोरखालैण्ड आन्दोलन में एक चिन्तनशील युवक की मानसिकता का अंकन
सीमेण्ट नगर	1995	राजस्थान में बदलती आर्थिक नीति और मूल्यहीनता का चित्रण
लौटेगा अभिमन्यु	1997	मध्यप्रदेश की कस्वाई राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता का चित्रण

❑ प्रकाश मनु के महत्वपूर्ण उपन्यास हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
यह जो दिल्ली है	1993	पत्रकारिता संसार की घिनौनी वास्तविकताओं का अंकन
कथा सर्कस	1995	साहित्य जगत की पैंतरेबाजी एवं मूल्यहीनता का चित्रण
पापा के जाने के बाद	1998	ईमानदार एवं कला के प्रति समर्पित चित्रकार वसंतदेव की संघर्ष कहानी

❑ प्रियंवद के महत्वपूर्ण उपन्यास निम्नलिखित हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
वे वहाँ कैद हैं	1994	सम्प्रदायवाद एवं उसके बीच पनपते फासीवाद के भयानक चेहरे का चित्रण
परछाईं नाच	2000	प्रतीकात्मक उपन्यास

❑ असगर वजाहत ने निम्नलिखित उपन्यासों की रचना की हैं—

उपन्यास	वर्ष	विषयवस्तु
सात आसमान	1996	नवाव सामन्तों की विलासिता का चित्रण
कैसे आग लगाई	2004	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के आधार पर मुस्लिम समाज का चित्रण
मनमाटी	2011	
वरखा रचाई		

❑ हिन्दी के अन्य महत्वपूर्ण उपन्यासकार व उनके उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यासकार	उपन्यास
भारतभूषण अग्रवाल	लौटती लहरों की बाँसुरी (1964)
रमेश वक्षी	(1) एक घिसा हुआ चेहरा, (2) वैसाखियों वाली इमारतें, (3) चलता हुआ लावा
शमशेर सिंह नरुला	एक पंखुड़ी की तेज धार (1965)
श्याम व्यास	(1) एक प्यासा तालाव
ठाकुर प्रसाद सिंह	(1) कुब्जा सुन्दरी (1963), (2) सात घरों का गाँव (1985)
स्वयं प्रकाश	वीच में विनय (1994)
यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	हजार घोड़ों का सवार
प्रयाग शुक्ल	गठरी (1986)
सुदर्शन चोपड़ा	सम्मोहन
हरि प्रकार त्यागी	दूसरा आदमी लाओ
योगेश कुमार	(1) टूटते विखरते लोग (1974), (2) सूखा स्वर्ग (1983), (3) त्रोइका (1984), (4) शरद ऋतु (1985)
रमाकांत	(1) तीसरा देश, (2) छोटे छोटे महायुद्ध (1977), (3) प्यादा फर्जी अर्दव, (4) खोई हुई आवाज, (5) दरवाजे पर आग, (6) उपसंस्कार, (7) समाधान, (8) टूटते जुड़ते स्वर, (9) जुलूस वाला आदमी।
रूप सिंह चंदेल	(1) रमला वहू (1994), (2) पाथर टीला (1998), (3) नटसार (2004)।
ज्ञान चतुर्वेदी	(1) नरक यात्रा (1994), (2) वारामासी (1999), (3) मरीचिका (2004)।
राकेश कुमार सिंह	(1) जहाँ खिले हैं रक्त पलाश (2003), (2) पठार पर कोहरा (3) जो इतिहास में नहीं है (2005), (4) साधो यह मुर्दों का गाँव (2008)।

विद्यासागर नौटियाल	(1) उलझे रिश्ते (1959), (2) भीम अकेला (1994), (3) सूरज सबका है (1997)।
बालाशौरि रेड्डी	(1) शबरी (1959), (2) जिन्दगी की राह (1962), (3) भग्न सीमाएँ (1965), (4) वैरिस्टर (1967), (5) प्रकाश और परछाईं (1968), (6) लकुमा (1969), (7) प्रोफेसर (1971), (8) दावानल (1979)।
आशीष सिन्हा	(1) बीता हुआ समय (1978), (2) कई लहरों के बीच (1977), (3) अजनबी इन्द्रधनुष, (4) सूर्योदय से पहले, (5) कोई एक सपना।
धर्मेन्द्र गुप्त	(1) नगर पुत्र हँसता है (1978), (2) नोन तेल लकड़ी (1981), (3) गवाह है शेखपुरा (1985), (4) रिश्ते शहर के (1986); (5) रँगी हुई चिड़िया (1990), (6) इसे विदा मत कहो (1994)।
शिवमूर्ति	(1) तर्पण, (2) त्रिशूल
अमृतलाल मदान	सिन्धु पुत्र (1991)
दीपचन्द निर्मोही	और कितने अँधेरे (1995)
हरदर्शन सहगल	टूटी हुई जमीन (1996)
प्रताप सहगल	अनहदनाद (1999)
चन्द्रकिशोर जायसवाल	शीर्षक (1996)
रमेश उपाध्याय	हरे फूल की खूश्बू (1991)
गिरीश पंकज	मिठलबरा की आत्मकथा (1999)
धीरेन्द्र अस्थाना	(1) हलाहल (1988), (2) गुजर क्यों नहीं जाता (1997), (3) नदी के बाहर।
जगदीश चतुर्वेदी	कनाटप्लेस (2000)
मदन दीक्षित	मोरी की ईंट (1996)
सुबोध श्रीवास्तव	हीरा परा बाजार में (1996)
राजिन्द्र	(1) उस शहर तक (1997), (2) सीढ़ियों पर चीता
गौरीशंकर कपूर	उल्का साकेत (1991)
राजीव कुमार	टुकड़े
ज्योतिष जोशी	सोनबरसा (2000)
कृष्णचन्दर	(1) एक गधे की आत्मकथा
सुरेश कुमार वर्मा	(1) मुमताज महल (2012)
अरुण प्रकाश	(1) कोंपल कथा
उदय प्रकाश	(1) पीली छतरी वाली लड़की
श्रीकांत श्रीवास्तव	(1) पानी भीतर फूल (2013)
अशोक भौमिक	(1) शिप्रा एक नदी का नाम है।

महिला उपन्यासकार

- हिन्दी की प्रथम महिला उपन्यासकार 'साध्वी सती प्राण अबला' को माना जाता है। इन्होंने सन् 1890 ई० में 'सुहासिनी' नामक उपन्यास लिखा।
- व्रजरत्लदास अनुसार 'साध्वी सती प्राण अबला' का मूल नाम मल्लिका देवी था।
- हिन्दी की अन्य महिला उपन्यासकार एवं उपन्यास निम्नांकित हैं—

उपन्यासकार उपन्यास

उषा प्रियंवदा—(1) पचपन खम्भे लाल दीवारें (1961), (2) रुकोगी नहीं राधिका (1967), (3) शेषयात्रा (1984), (4) अन्तर्वंशी (2000), (5) भए कबीर उदास (2007)।

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा—(1) चंदन चाँदनी (1962), (2) वंचिता (1972)

कृष्णा सोवती—(1) मित्रो मरजानी (1967), (2) सूरजमुखी अँधेरे के (1972), (3) जिन्दगीनामा (1979), (4) दिलोदानिश (1993), (5) समय सरगम (2000)।

शशिप्रभा शास्त्री—(1) अमलतास (1968), (2) नावें (1974), (3) सीढ़ियाँ (1976), (4) परछाइयों के पीछे (1979), (5) क्योंकि (1980), (6) कर्करेखा (1983), (7) परसों के बाद (1985), (8) ये छोटे महायुद्ध (1988), (9) उम्र एक गलियारे की (1989), (10) सागर पार का संसार (1989), (11) मीनारें (1992), (12) खामोश होते सवाल (1993), (13) हर दिन इतिहास (1995)।

मेहरुन्निसा परवेज—(1) आँखों की दहलीज (1969), (2) उसका घर (1972), (3) कोरजा (1977), (4) अकेला पलाश (1981), (5) समरांगण (2002), (6) पासंग (2005)।

मन्नू भण्डारी—(1) आपका बंटी (1971), (2) महाभोज (1979)।

शिवानी—(1) चौदह फेरे (1965), (2) कृष्णकली (1968), (3) भैरवी (1969), (4) विषकन्या (1970), (5) करिए छिमा (1971), (6) श्मशान चंपा (1972), (7) गैंडा, माणिक और रथ्या (1977), (8) किशनुली (1979), (10) विवर्त (1984)।

ममता कालिया—(1) बेघर (1971), (2) नरक दर नरक (1975), (3) प्रेम कहानी (1980), (4) साथी, (5) लड़कियाँ, (6) एक पत्नी के नोट्स (1997), (7) दुक्खम-सुक्खम।

दिनेश नंदिनी डालमिया—(1) मुझे माफ करना (1974), (2) आहों की बैसाखियाँ (1978), (3) कंदील का धुआँ (1980), (4) आँख मिचौली (1991), (5) मरजीवा (1996), (6) फूल का दर्द (1986), (7) यह भी झूठ है (1993)।

मृदुला गर्ग—(1) उसके हिस्से की धूप (1975), (2) वंशज (1976), (3) चित्तकोबरा (1979), (4) अनित्य, (5) मैं और मैं (1984), (6) कठगुलाब (1996)।

ीप्ति खण्डेलवाल—(1) प्रिया (1976), (2) कोहरे (1977), (3) वह तीसरा (1976), (4) प्रतिध्वनिया (1978)।

ंजुल भगत—(1) अनारो (1977), (2) बेगाने घर में (1978), (3) खातुल (1983), (4) तिरछी बौछार (1984), (5) गंजी (1995)।

ांता भारती—रेत की मछली (1975)।

ृणाल पाण्डेय—(1) विरुद्ध (1977), (2) पटरंगपुर पुराण (1983), (3) रास्तों पर भटकते हुए (2000)।

ूर्यबाला—(1) सुबह के इन्तजार तक (1980), (2) मेरे संधि पत्र, (3) अग्निपंखी (1984), (4) यामिनी कथा (1991), (5) जूझ (1992)।

न्द्रकांता—(1) अर्थान्तर और अन्तिम साक्ष्य (1981), (2) बाकी सब खैरियत है (1983), (3) एलान गली जिन्दा है (1984), (4) यहाँ वितस्ता बहती है (1992), (5) अपने-अपने कोणार्क (1995), (6) कथा सतीसर (2001)।

ाजी सेठ—(1) तत्सम (1983), (2) निष्कवच (1995)।

नेरुपमा सेवती—(1) पतझड़ की आवाजें (1976), (2) वटता हुआ आदमी (1977), (3) मेरा नरक अपना है (1977), (4) दहकन के पार (1982)।

ासिरा शर्मा—(1) सात नदियाँ एक समुन्दर (1984), (2) शाल्मली (1987), (3) ठीकरे की मँगनी (1989), (4) जिन्दा मुहावरे (1993), (5) अक्षयवट (2003), (6) कुइयाँजान (2005), (7) जीरो रोड (2008), (8) अजनबी जरीरा (2012), (9) बहिस्ते जहरा।

कमल कुमार—(1) अपार्थ (1986), (2) आवर्तन (1992), (3) हैमबरगर (1996), (4) यह खबर नहीं (2000)।

कुसुम कुमार—(1) हीरामन हाईस्कूल (1989), (2) परदाबाड़ी (2000), (3) पूर्वी द्वार (2004)।

चेत्रा चतुर्वेदी—(1) महाभारती (1986), (2) तनया (1989), (3) वैजयंती (दो खण्ड, 1996), (4) अम्बा नहीं मैं भीष्मा (2004)।

ाभा खेतान—(1) आओ पेपे घर चले (1990), (2) तालाबंदी (1991), (3) छिन्नमस्ता (1993), (4) अपने-अपने चेहरे (1994), (5) पीली आँधी (1996)।

मैत्रेयी पुष्पा—(1) स्मृति दंश (1990), (2) बेतवा बहती रही (1993), (3) इदन्नमम (1994), (4) चाक (1997), (5) झूलानट (1999), (6) आल्मा कबूतरी (2000), (7) कहे ईसुरी फाग (2004), (8) त्रियाहठ (2005), (9) गुनाह बेगुनाह, (10) अगनपाखी, (11) विजन।

चित्रा मुद्गल—(1) एक जमीन अपनी (1990), (2) आवाँ (2000), (3) गिलिगडु (2002)।

क्षितिज शर्मा—(1) उकाव (1992)

गीतांजलिश्री—(1) माई (1993), (2) हमारा शहर उस बरस (1998), (3) तिरोहित (2001), (4) खाली जगह (2006)।

अलका सरावगी—(1) कलिकथा : वाया वाई पास (1998), (2) शेष कादम्बरी (2001), (3) कोई बात नहीं (2004), (4) एक ब्रेक के बाद (2008)।

नीरजा माधव—(1) अभी ठहरो अंधी सदी (1998), (2) यमदीप (2002 ई०), (3) तेभ्य : स्वधा (2004), (4) गेशे जम्पा (2006)।

रमा सिंह—(1) गुलाब छड़ी (1996), (2) लिखोगी सत्यभाम (1998), (3) लौट आओ हैरी (2002), (4) कुतो पंथा (2002)।

वीणा सिन्हा—(1) पथ प्रज्ञा (1998), (2) सपनों के बाहर (2003)।

मधु काँकरिया—(1) खुले गगन के लाल सितारे (2000), (2) सलाम आखिरी (2002), (3) पत्ताखोर (2005), (4) सेज पर संस्कृत (2008)।

जया जादवानी—(1) तत्वमसि (2000), (2) कुछ न कुछ छूट जाता है (2005)।

अनामिका—(1) अवान्तर कथा, (2) दस द्वारे का पिंजरा।

महुआ माजी—(1) मैं बोरिशाइल्ला, (2) मरंग गोड़ा नील कंठ हुआ (2012)।

क्षमा शर्मा—मोबाइल

मधु भादुड़ी—(1) अनादि, (2) अनन्त

मनीष कुलश्रेष्ठ—(1) सिगाफ, (2) शाल भंजिका (2012)

शर्मिला वोहरा—शादी से पेशतर

डॉ० प्रतिभा राय—महामोह

ऋता शुक्ल—अग्निपर्व

क्षमा कौल—दर्दपुर

पद्मा सचदेवा—भटको नहीं धनञ्जय

सुलोचना रांगेय राघव—वारी वारणा खोल दो

रजनी गुप्ता—कुल जमा बीस (2012)

हिन्दी दलित उपन्यास का विकास

- सन् 1954 ई० में प्रकाशित रामजी लाल सहायक कृत 'बंधन मुक्त' हिन्दी का प्रथम दलित उपन्यास है। किन्तु यह अप्राप्य है।
- सन् 1980 ई० में प्रकाशित डी०पी० वरुण कृत 'अमर ज्योति' रचना कालक्रम की दृष्टि से दूसरा दलित उपन्यास है। किन्तु यह अत्यन्त निम्न कोटि की रचना है।
- सभी दलित आलोचकों एवं विद्वानों ने सन् 1994 ई० में जयप्रकाश कर्दम द्वारा रचित 'छप्पर' को प्रथम दलित उपन्यास स्वीकार किया जाता है।
- हिन्दी के अन्य दलित उपन्यास निम्नलिखित हैं—

लेखक	उपन्यास
जय प्रकाश कर्दम	छप्पर (1994)
प्रेम कपाड़िया	मिट्टी की सौगन्ध (1995)
मदन दीक्षित	मोरी की ईंट (1996)
सत्य प्रकाश	जस तस भई सबेर (1998)
मोहनदास नैमिषराय	(1) मुक्ति पर्व, (2) वीरांगना झलकारी बाई (2003)

के० नाथ	(1) पलायन (2006), (2) गाँव का कुँआ (2000)
अजय नावरिया	उधर के लोग (2008)
एस०आर० हरनोट	हिडिम्ब (2000)
अभय मौर्य	मुक्ति-पथ
मोहनदास नैमिशराय	आजार बाजार बंद है
नीलेश रघुवंशी	एक कस्बे के नोट्स (2012)

विविध

- मनोहर श्याम जोशी अपने उपन्यासों को 'गप्प बाइस्कोप' कहते हैं।
- 'मुन्नी मोबाइल', 'तीसरी ताली' तथा 'देश भीतर देश' प्रदीप सौरभ के महत्वपूर्ण उपन्यास हैं।
- प्रदीप सौरभ को 'तीसरी ताली' उपन्यास के लिए सन् 2012 का 'इन्दु अन्तर्राष्ट्रीय कथा सम्मान' प्रदान किया गया है।
- 'ग्लोबल गाँव का देवता' उपन्यास रणेन्द्र ने लिखा है। इसमें आदिवासी समाज का चित्रण है।
- इला डालमिया ने कवि अज्ञेय के जीवन पर केन्द्रित 'छत पर अपर्णा' उपन्यास को रचना सन् 1988 ई० में किया।
- हिन्दी के प्रमुख उपन्यास और उनके प्रमुख पात्र कालक्रमानुसार निम्न हैं—

उपन्यास	वर्ष	पात्र
सेवासदन	१९१८	सुमन, गजाधर, कृष्णचन्द्र, पद्मसिंह, शान्ता
रंगभूमि	१९२५	सूरदास, सोफिया, भरतसिंह, महेन्द्र कुमार, विनय, सुभागी, जानसेवक, इन्दु, जाह्नवी, मिठुआ, ताहिर अली।
कंकाल	१९२९	विजय, तारा (यमुना), मंगल, देवनिरंजन, बाथम, किशोरी, रामा, घण्टी
गबन	१९३१	जालपा, रमानाथ, रतन, जोहरा
कर्मभूमि	१९३३	अमरकान्त, समरकान्त, मैना, सुखदा, डॉ० शान्ति कुमार, सकीना, महन्त साहब
सुनीता	१९३४	सुनीता, श्रीकान्त, हरिप्रसन्न, सत्या
चित्रलेखा	१९३४	चित्रलेखा, बीजगुप्त, कुमार गिरि, चाणक्य
गोदान	१९३६	होरी, धनिया, गोबर, झुनिया, भोला, राय साहब, मेहता, मालती, खन्ना, दातादीन, गोविन्दी
त्यागपत्र	१९३७	मृणाल, शीला, प्रमोद
शेखर: एक जीवनी	१९४०-४४	शेखर, शशि, सरस्वती, शारदा, रामेश्वर, बाबा मदन सिंह
बाणभट्ट की आत्मकथा	१९४६	बाणभट्ट, भट्टिनी (चन्द्रदीधीति), निउनिया (निपुणिका), तुवर मिलिन्द, सुचरिता, महामाया, विरतिवज्र

उपन्यास	वर्ष	पात्र
मृगनयनी	१९५०	मृगनयनी, मानसिंह, अटल, लाखी, गया सुद्दीन
नदी के द्वीप	१९५१	भुवन, गौरा, रेखा, चन्द्रमोहन, हेमेन्द्र, डॉ० रमेश
सूरज का सातवाँ घोड़ा	१९५२	माणिक मुल्ला, महेसर, दलाल, चमन, रामधन, तन्न, सत्ती, जमुना, लिली
मैला आँचल	१९५४	बावनदास, बालदेव, कालीचरण, लछमी, रामखेलावन, रामदास, सेवादास, राम किरपाल सिंह, कमली, डाक्टर, तहसीलदार, वासुदेव
बूँद और समुद्र	१९५६	ताई, नन्दो, मिसेज वर्मा, वनकन्या, डॉ० शीला, सज्जन, महिपाल, कर्नल, राजा साहब, सालिगराम, जगदेव सहाय, लाला जानकी सरन, रामजी दास, शंकरलाल सेठ, रूप रतन
उखड़े हुए लोग	१९५६	देशबन्धु, शरद, जया, पद्मा, सूरज
झूठा-सच	१९५८-६०	तारा, कनक, शीलो, जयदेवपुरी, गिल, सूद, सोमराज, चड्ढा असद
अयज की डायरी	१९६०	अजय, शीला, हेम
अपने-अपने अजनबी	१९६१	योके, सेल्मा, यान, फोटोग्राफर, पाल
अन्धेरे बन्द कमरे	१९६१	हरबंश, नीलिमा
यह पथ बन्धु था	१९६२	श्रीधर, इन्दु, दीदी, मालती, सरस्वती, विशन
काला जल	१९६५	मिर्जा करामत बेग, रज्जू मियाँ, बी-दारोगिन, फूफी, रोशन, सल्लो, आपा, सोफिया, बब्बन
रागदरबारी	१९६८	वैद्यजी, रंगनाथ, रुप्पन बाबू, दरोगाजी, जोगनाथ, सनीचर, खन्ना मास्टर, बद्री पहलवान
आपका बंटी	१९७१	अजय (पिता), शकुन (माता), बंटी (पुत्र), मीरा
तमस्	१९७३	वानप्रस्थ जी, मुराद अली नत्थू, रिचर्ड, लिजा, बख्शीजी, जरनैल सिंह, हरनाम, बन्तो, लक्ष्मी नारायण, नूर इलाही, मोहन
महाभोज	१९७९	दा साहब, बिसेसर, सुकुल बाबू, जोरावर
इदन्नमम	१९९४	मन्दा, महेन्दर, मकरंद, महाराज, अभिलाष सिंह
कलिकथा : वाया बाईपास	१९९८	किशोरबाबू, शान्तनु, रामविलास
हमारा शहर उस बरस	१९९८	श्रुति, हनीफ जैदी, दद्दू, शरद, प्रो० नन्दन, महन्त
आँवा	२०००	अल्मा, रामसिंह, राणा, मंशाराम, कदमा बाई, सूरजभान, धीरज, श्री रामशास्त्री
कथा सतीसर	२००१	जैनुल आब्दीन (बड़शाह), डॉ० कार्तिकेय, डॉ० काव्या

क्याप (अजीब)	२००१	काका, उत्तरा, उर्वादत्त ज्यू, डाक्साब, रामध्यानु, हरकू
शेष कादम्बरी	२००१	रुबी दी, देवीदत्त, मि० वियेना, सविता, मायाबोस, सायरा, फरहा
सेज पर संस्कृति	२००८	मणि, इन्द्र, आलोक जी

संस्कृत

हिन्दी कहानी का विकास

प्रारम्भिक कहानी

- हिन्दी कहानी का उद्भव द्विवेदी युग से माना जाता है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास में आरम्भिक कहानियाँ, जो 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई थी, इस प्रकार दिया है—

कहानी	कहानीकार	प्रकाशन वर्ष
इंदुमती	किशोरीलाल गोस्वामी	सं० 1957 (1900 ई०)
गुलबहार	किशोरीलाल गोस्वामी	सं० 1959 (1902 ई०)
प्लेग की चुड़ैल	भगवानदास	सं० 1959 (1902 ई०)
ग्यारह वर्ष का समय	रामचन्द्र शुक्ल	सं० 1960 (1903 ई०)
पंडित और पंडितानी	गिरिजादत्त वाजपेयी	सं० 1960 (1903 ई०)
दुलाईवाली	बंग महिला	सं० 1964 (1907 ई०)

- डॉ० गोपाल राय ने लिखा है, "प्रेमचन्द ने 1908 में प्रकाशित अपनी कहानी 'सोजे वतन' की भूमिका में पहली बार 'शार्ट स्टोरी' पद के अर्थ में 'कहानी' का प्रयोग किया था।"
- हिन्दी साहित्य की प्रथम कहानी और उसके प्रस्तोता निम्न हैं—

प्रस्तोता	कहानी	वर्ष (ई०)	लेखक
रामचन्द्र शुक्ल	इंदुमती	1900	किशोरीलाल गोस्वामी
डॉ० बच्चन सिंह	प्रणयिनी परिणय	1887	किशोरीलाल गोस्वामी
राजेन्द्र बढ़वालिया	जमींदार का दृष्टांत	1871	रेवरेन्ड जे न्यूटन
देवी प्रसाद वर्मा	एक टोकरी भर मिट्टी	1901	माधवराव सप्रे

- 'इंदुमती' को मौलिक कहानी न मानकर शेक्सपीयर के नाटक 'टेम्पेस्ट' का छायानुवाद माना जाता है।
- अन्य विद्वानों ने 'एक टोकरी भर मिट्टी' को, जो सन् 1901 में 'छत्तीसगढ़ मित्र' में प्रकाशित हुई थी, प्रथम कहानी स्वीकार किया है।
- माधवराव सप्रे ने बालगंगाधर तिलक के मराठी 'गीता रहस्य' का हिन्दी भाषा में अनुवाद किया है।
- लक्ष्मीनारायण लाल ने शिल्प विधि की दृष्टि से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' को हिन्दी की प्रथम कहानी माना है।

- बंग महिला का मूल नाम राजेन्द्र बाला घोष था। ये मीरजापुर निवासी बाबू पूर्णचन्द्र की धर्मपत्नी थीं।
- राजेन्द्रबाला घोष 'बंग महिला' को हिन्दी की प्रथम कहानी लेखिका स्वीकार किया जाता है।
- राजेन्द्रबाला घोष 'बंग महिला' की कालक्रमानुसार प्रकाशित कहानियाँ निम्न हैं—
  (1) चंद्रदेव से मेरी बातें (1904), (2) कुंभ में छोटी बहू (1906), (3) दुलाईवाली (1907), (4) दालिया (1909)
- भवदेव पाण्डेय ने बंग महिला कृत 'चन्द्रदेव से मेरी बातें' को हिन्दी की पहली राजनीतिक कहानी माना है।
- प्रारम्भिक दौर के कुछ महत्वपूर्ण कहानीकार एवं कहानियाँ निम्न हैं—

कहानीकार	कहानी
केशवप्रसाद सिंह	(1) चन्द्रलोक की यात्रा (1900), (2) आपत्तियों का पहाड़ (1900)।
माधवप्रसाद मिश्र	(1) पुरोहित का आत्मत्याग (1900), (2) मन की चंचलता (1900)।
गिरिजादत्त वाजपेयी	(1) पति का पवित्र प्रेम (1903)
कार्तिक प्रसाद खत्री	(1) दामोदर राव की आत्मकहानी
सूर्यनारायण दीक्षित	(1) चन्द्रहास का अद्भुत आख्यान (1906)
वेंकटेश नारायण	(1) एक असरफी की आत्मकथा (1906)
वृन्दावनलाल वर्मा	(1) राखी बन्द भाई (1909), (2) तातार और एक वीर राजपूत (1910)।
विश्वम्भरनाथ जिज्जा	(1) विदीर्ण हृदय
राधिकारमण प्रसाद सिंह	(1) कानों में कंगना (1913), (2) बिजली।
विश्वम्भरनाथ शर्मा	(1) रक्षाबंधन (1913)

- गिरजाकुमार घोष हिन्दी में लाला पर्वतीनंदन नाम से कहानी लिखते थे। इनकी प्रमुख कहानियाँ निम्न हैं—
  (1) एक के दो दो (1906), (2) मेरा पुनर्जन्म।

प्रेमचन्द युग

धनपतराय

- प्रेमचन्द का मूल नाम नवाब राय था। नवाब राय की प्रथम कहानी 'इश्के दुनिया व हुब्बे वतन' शीर्षक से अप्रैल, 1908 में 'जमाना' में प्रकाशित हुई।
- नवाब राय का प्रथम कहानी संग्रह 'सोजेवतन' सन् 1908 में जमाना प्रेस, कानपुर से प्रकाशित हुआ।
- 'सोजेवतन' में पाँच कहानी संकलित हैं जो निम्न है—
  (1) इश्के दुनिया व हुब्बे वतन (सांसारिक प्रेम और देश प्रेम), (2) दुनिया का सबसे अनमोल रतन, (3) यह मेरा वतन है, (4) शेख मखमूर, (5) सिला-ए-मातम (शोक का पुरस्कार)।

उर्दू रचना में नाम - नवाबराय

- 'सोजे वतन' के प्रकाशन के बाद ब्रिटिश सरकार ने नवाब राय पर 'सिडीशन' (Sedition) का आरोप लगाकर उनके सारे संग्रह को जब्त कर लिया। 'सोजे वतन' उर्दू कहानियों का संग्रह है।
- प्रेमचन्द नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' दिसम्बर, 1910 में जमाना में प्रकाशित हुई थी।
- प्रेमचन्द की प्रथम कहानी 'सौत' (हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि में) सन् 1915 में 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई।
- कुछ आलोचक प्रेमचन्द के 'पंचपरमेश्वर' (1916) को इनकी प्रथम कहानी मानते हैं तथा अन्तिम 'कफन' को।
- प्रेमचन्द के प्रमुख कहानी-संग्रह निम्नलिखित हैं—

सप्त सरोज (1917)
नवनिधि (1917)
प्रेम पूर्णिमा (1918)
प्रेम पच्चीसी (1923)
प्रेम प्रसून (1924)
प्रेम द्वादशी (1926)
प्रेम प्रतिमा (1926)
प्रेम प्रतिज्ञा (1929)
प्रेम चतुर्थी (1929)
प्रेम कुंज (1930)
सप्त सुमन (1930)
कफन (1936)

- प्रेमचन्द ने लगभग 300 कहानियां लिखी हैं जो अब 'मानसरोवर' शीर्षक से आठ भागों में प्रकाशित हैं।
- प्रेमचन्द ने लिखा है, "सबसे उत्तम कहानी वह होती है, जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर होता है।"
- प्रेमचन्द को 'कहानी सम्राट' कहा जाता है।
- प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानियाँ कालक्रमानुसार निम्न हैं—

1. नमक का दारोगा (1913)
2. सज्जनता का दण्ड (1916)
3. ईश्वरीय न्याय (1917)
4. दुर्गा का मन्दिर (1917)
5. बूढ़ी काकी (1920)
6. शान्ति (1921)
7. सवा सेर गेहूँ (1924)
8. शतरंज के खिलाड़ी (1924)
9. मुक्तिमार्ग (1924)
10. मुक्तिधन (1924)
11. सौभाग्य के कोड़े (1924)
12. दो सखियाँ (1928)
13. अलग्योझा (1929)
14. पूस की रात (1930)
15. समर यात्रा (1930)
16. पत्नी से पति (1930)
17. सद्गति (1930)
18. दो बैलों की कथा (1931)
19. होली का उपहार (1931)
20. ठाकुर का कुँआ (1932)
21. ईदगाह (1933)
22. नशा (1934)
23. बड़े भाई साहब (1934)
24. कफ़न (1936)

- चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने तीन कहानियाँ लिखी हैं। डॉ० गोपाल राय ने इनका कालक्रम निम्न बताया है—

सुखमय जीवन	1911	भारत मित्र
बुद्धू का काँटा	1914	
उसने कहा था	1915	सरस्वती

- 'उसने कहा था' प्रथम विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गई प्रेम-संवेदना की कहानी है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'उसने कहा था' कहानी की प्रशंसा करते हुए लिखा है, "घटना इसकी ऐसी है जैसे बराबर हुआ करती है, पर उसमें से भीतर से प्रेम का एक स्वर्गीय स्वरूप झाँक रहा है—केवल झाँक रहा है निर्लज्जता के साथ पुकार या कराह नहीं रहा है। कहानी भर में कहीं प्रेम की निर्लज्जता, प्रगल्भता, वेदना की वीभत्स विवृत्ति नहीं है। सुरुचि के सुकुमार से सुकुमार स्वरूप पर कहीं आघात नहीं पहुँचता। इसकी घटनाएँ ही बोल रही हैं, पात्रों के बोलने की अपेक्षा नहीं।"
- 'उसने कहा था' फ्लैश बैक (पूर्वदीप्ति) पद्धति पर लिखी हिन्दी की प्रथम कहानी है।
- जयशंकर प्रसाद की प्रथम कहानी सन् 1911 ई० में 'ग्राम' शीर्षक से 'इन्दु' पत्रिका में प्रकाशित हुई।
- जयशंकर प्रसाद के कहानी-संग्रह और चर्चित कहानियाँ निम्न हैं—

कहानी संग्रह—छाया (1912), प्रतिध्वनि (1926), आकाशदीप (1928), आँधी (1931), इंद्रजाल (1936)।

चर्चित कहानियाँ—(1) पत्थर की पुकार, (2) उस पार का योगी, (3) चंदा, (4) देवदासी, (5) ममता, (6) खण्डहर की लिपि, (7) घीसू, (8) चूड़ीवाली, (9) विसाती, (10) सालवती, (11) मधुआ, (12) नूरी, (13) पुरस्कार, (14) गुण्डा, (15) छोटा जादूगर।

- 'छाया' प्रसाद की प्रथम कहानी-संग्रह होने के साथ ही हिन्दी का भी प्रथम कहानी-संग्रह है।
- जयशंकर प्रसद की अन्तिम कहानी 'सालवती' को माना जाता है।
- वृन्दावन लाल वर्मा के प्रमुख कहानी-संग्रह निम्न हैं—
(1) शरणागत (1950), (2) कलाकार का दण्ड (1950)।
- वृन्दावनलाल वर्मा को ऐतिहासिक कहानियों की परम्परा का जनक माना जाता है।
- राधिका रमण प्रसाद की प्रथम कहानी 'कानों में कंगना' (1913) 'इन्दु' में प्रकाशित हुई थी। इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं—
(1) कुसुमांजलि, (2) गाँधी टोपी (1938), (3) सावनी समाँ (1938)।
- राधिकारमण प्रसाद सिंह की एक अन्य महत्वपूर्ण कहानी 'बिजली' है।
- आचार्य शुक्ल के अनुसार चतुरसेन शास्त्री 1914 से ही कहानी लिखना आरम्भ कर दिये थे। इनके प्रमुख कहानी-संग्रह निम्न हैं—
(1) रजकण, (2) अक्षत, (3) बाहर भीतर, (4) दुखवा मैं कासों कहूँ मोर सजनी, (5) सोया हुआ शहर, (6) धरती और आसमान, (7) कहानी खत्म हो गई, (8) स्त्रियों का ओज, (9) सिंहगढ़ विजय।
- चतुरसेन शास्त्री की चर्चित कहानियाँ निम्न हैं—
(1) अंबपालिक, (2) प्रबुद्ध, (3) भिक्षुराज, (4) बावर्चिन, (5) हल्दीघाटी में, (6) बाणवधू।
- चतुरसेन शास्त्री कृत 'दुखवा मैं कासों कहूँ मोर सजनी' कहानी बंगला कथाकार

हरिसाधन मुखोपाध्याय की बांग्ला कहानी 'सेलिसमा बेगम' का रूपान्तर माना जाता है।

प्रेमचन्द युग के अन्य महत्वपूर्ण कहानीकार एवं कहानियाँ निम्न हैं—

कहानीकार	कहानी-संग्रह

विश्वंभरनाथ शर्मा—(1) गल्प मन्दिर (1919), (2) चित्रशाला, भाग-1 (1924), (3) चित्रशाला, भाग-2 (1929), (4) कल्लोल (1933), (5) प्रेम प्रतिमा, (6) मणिमाला।

रायकृष्णदास—(1) अनाख्या (1929), (2) सुधांशु (1929), (3) आँखों की थाह तथा अन्य कहानियाँ (1941)।

राहुल सांकृत्यायन—(1) सतमी के बच्चे (1935), (2) वोल्गा से गंगा (1944)।

शिवपूजन सहाय—(1) महिला महत्व (1922), (2) कहानी का प्लाट (1928)।

पदुमलाल पुन्नालाल—(1) अंजलि, (2) झलमला (1934), (3) कनक रेखा (1961)।

बद्रीनाथ भट्ट 'सुदर्शन'—(1) सुप्रभात (1923), (2) परिवर्तन (1926), (3) सुदर्शन सुधा (1926), (4) तीर्थयात्रा (1927), (5) सुदर्शन सुमन (1933), (6) पनघट (1939), (7) नगीने (1947), (8) झरोखे (1939)।

चंडीप्रसाद 'हृदयेश'—(1) नंदन निकुंज (1923), (2) वनमाला।

भगवती प्रसाद वाजपेयी—(1) मधुपर्क (1929), (2) दीपमालिका (1930), (3) पुष्करिणी (1936), (4) हिलोर (1938), (5) खाली बोतल, (6) मेरे सपने, (7) ज्वार भाटा (1940), (8) कला की दृष्टि (1942), (9) उपहार (1942), (10) अंगारे (1944), (11) उतार चढाव (1950)।

विनोदशंकर व्यास—(1) नवपल्लव (1928), (2) तूलिका (1928), (3) भूली बात (1929), (4) मणिदीप (1945), (5) नक्षत्रलोक (1950), अस्सी कहानियाँ (1960)।

जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'—(1) किसलय (1929), (2) मालिका (1930), (3) मृदुदल (1932), (4) मधुमयी (1937)।

बेचन शर्मा 'उग्र'—(1) चाकलेट (1924), (2) शैतान मण्डली (1924), (3) चिनगारियाँ (1925), (4) इन्द्रधनुष, (5) घोड़े की कहानी, (6) बलात्कार (1927), (7) निर्लज्जा (1929), (8) दोजख की आग (1929), (9) क्रांतिकारी कहानियाँ (1939), (10) उग्र का हास्य (1939), (11) गल्पांजलि, (12) रेशमी (1942), (13) पंजाब की महारानी (1943), (14) जब सारा आलम सोता है (1951)।

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार—(1) चन्द्रकला (1929)

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'—(1) लिली (1934), (2) सखी (1935), (3) सुकुल की बीवी (1941)।

भगवतीचरण वर्मा—(1) दो बाँके (1936), (2) इंस्टालमेंट, (3) मुगलों ने सल्तनत बख्श दी, (4) मोर्चाबन्दी।

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कहानी 'उसकी माँ' के आधार पर नंददुलारे वाजपेयी ने उग्र को हिन्दी का प्रथम राजनीतिक कहानीकार माना है।

- उग्र की 'चिनगारियाँ' बारह कहानियों का संग्रह है, जिसे 1928 में अपने क्रान्तिकारी विचारों के कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया था।
- निराला कृत 'सखी' का सन् 1945 में 'चतुरी चमार' नाम से प्रकाशन हुआ।

प्रेमचन्दोत्तर युग

- जैनेन्द्र की कहानियों के माध्यम से पहली बार हिन्दी साहित्य में 'व्यक्ति' को महत्व मिला।
- जैनेन्द्र की प्रथम कहानी 'खेल' (1928) 'विशाल भारत' में प्रकाशित हुई। किन्तु जैनेन्द्र ने 'फोटोग्राफी' अपनी प्रथम कहानी माना है।
- जैनेन्द्र के महत्वपूर्ण कहानी-संग्रह और कहानियाँ निम्न हैं—

  कहानी संग्रह—फाँसी (1929), वातायन (1931), दो चिड़िया (1934), एक रात (1935), नीलम देश की राजकन्या (1938), ध्रुवयात्रा (1944), पाजेब (1948), जय सन्धि (1948)।

  चर्चित कहानियाँ—(1) स्पर्द्धा, (2) पत्नी, (3) एक कैदी, (4) गदर के बाद, (5) बाहुबली, (6) तत्सत्, (7) लाल सरोवर, (8) मास्टर जी, (9) जाह्नवी, (10) अपना-अपना भाग्य।
- जैनेन्द्र कृत 'स्पर्द्धा' इटली की पृष्ठभूमि पर विदेशी-पात्रों को केन्द्र में रखकर लिखी गई कहानी है।
- अन्य महत्वपूर्ण कहानीकार और उनके संग्रह निम्नलिखित हैं—

कहानीकार	कहानी-संग्रह

यशपाल—पिंजरे की उड़ान (1939), (2) ज्ञानदान (1943), (3) अभिसप्त (1943), (4) तर्क का तूफान (1944), (5) भस्मावृत चिनगारी (1946), (6) वो दुनिया (1948), (7) फूलों का कुर्ता (1949), (8) धर्मयुद्ध (1950), (9) उत्तराधिकारी (1951), (10) चित्र का शीर्षक (1951), (11) उत्तमी की माँ (1955), (12) तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ (1954), (13) सच बोलने की भूल (1962), (14) खच्चर और आदमी (1965), (15) भूख के तीन दिन (1968)।

इलाचन्द्र जोशी—(1) धूप रेखा (1938), (2) दीवाली और होली (1942), (3) रोमैंटिक छाया (1943), (4) आहुति (1945), (5) खण्डहर की आत्माएँ (1948), (6) डायरी के नीरस पृष्ठ (1951), (7) कँटीले फूल : लजीले काँटे (1957)।

अज्ञेय—(1) विपथगा (1937), (2) परम्परा (1940), (3) कोठरी की बात (1945), (4) शरणार्थी (1948), (5) जयदोल (1951), (6) ये तेरे प्रतिरूप (1961), (7) अमर वल्लरी (1945)।

उपेन्द्रनाथ 'अश्क'—(1) पिंजरा (1944), (2) अंकुर (1945), (3) छींटे (1949), (4) बैंगन का पौधा (1954), (5) सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ (1958), (6) पलंग (1961), (7) आकाशचारी (1966)।

विष्णु प्रभाकर—(1) आदि और अंत (1945), (2) रहमान का बेटा (1947), (3) जिन्दगी के थपेड़े (1952), (4) धरती अब भी घूम रही है (1970),

(5) साँचे और कला (1962), (6) पुल टूटने से पहले (1977), (7) मेरा वतन (1980), (8) खिलौने (1981), (9) एक और कुंती (1985), (10) जिन्दगी एक रिहर्सल (1986), (11) आसमान के नीचे (1989), (12) कर्फ्यू और आदमी (1994), (13) आखिर क्यों (1998), (14) मैं नारी हूँ (2001), (15) जीवन का एक और नाम (2002), (16) ईश्वर का चेहरा (2003)।

अमृतलाल नागर—(1) एक दिल हजार अफसाने (1986)।

द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'—(1) टीला, (2) कच्चा धागा।

अमृतराय—(1) जीवन के पहलू (1947), (2) तिरंगे कफन (1948), (3) इतिहास।

रांगेय राघव—(1) साम्राज्य का वैभव (1947), (2) समुद्र के फेन (1947), (3) देवदासी (1947), (4) जीवन के दाने (1949), (5) अधूरी मूरत (1949), (6) अंगारे न बुझे (1951), (7) इंसान पैदा हुआ (1951)।

- इलाचन्द्र जोशी को 'हिन्दी में मनोवैज्ञानिक कहानी' लेखन परम्परा का प्रवर्तक माना जाता है।

समकालीन कहानी (नयी कहानी से अब तक)

- 'नयी कहानी' नाम का दुष्यन्त कुमार ने सर्वप्रथम प्रयोग किया था।
- हिन्दी के प्रमुख कहानी आन्दोलन और प्रवर्तक कालक्रमानुसार निम्न हैं—

M.Imp

कहानी आन्दोलन	प्रवर्तक	वर्ष
नयी कहानी	(क) राजेन्द्र यादव	1956
	(ख) मोहन राकेश	
	(ग) कमलेश्वर	
अकहानी	गंगा प्रसाद विमल	1960
सचेतन कहानी	महीप सिंह	1964
सहज कहानी	अमृत राय	1968
समान्तर कहानी	कमलेश्वर	1972
सक्रिय कहानी	राकेश वत्स	1979
जनवादी कहानी		1982

- साठोत्तरी कहानी को गंगा प्रसाद विमल प्रारम्भ में 'समकालीन कहानी' के नाम से पुकारा, किन्तु शीघ्र ही 'अ-कहानी' की व्याख्या करना आरम्भ कर दिया।
- गंगा प्रसाद विमल ने लिखा है, " 'अ-कहानी' किसी तरह के मूल्यों की रक्षा करती हुई या आग्रह रखती हुई नहीं चलती है। उसके लिए पुराने मूल्यों का टूटना कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है।... 1960 के बाद की कहानी मानव-विश्वास की आदर्श कहानी नहीं है, अपितु वह मनुष्य मस्तिष्क के भीषण संकटबोध की यथार्थ प्रतीति की कहानी है, जो मानव-पीड़न को इसलिए व्यक्त नहीं करती कि वह कोई प्रदर्शनीय प्रसंग है, अपितु वह यथार्थ का भोग है।"
- कथाकार मार्कण्डेय ने लिखा है, "नयी कहानी से हमारा मतलब उन कहानियों से है जो सच्चे अर्थों में कलात्मक निर्माण है, जो जीवन के लिए उपयोगी हैं और महत्वपूर्ण होने के साथ ही उसके किसी न किसी नए पहलू पर आधारित हैं।"

- डॉ० महीप सिंह के 'आधार' पत्रिका के 'सचेतन कहानी विशेषांक' से 'सचेतन कहानी' आन्दोलन का आरम्भ माना जाता है।
- डॉ० महीप सिंह ने लिखा है—"सचेतन एक दृष्टि है जिसमें जीवन जीया भी जाता है और जाना भी जाता है।"
- सहज कहानी के सम्बन्ध में अमृतराय ने लिखा है, "कहानी का लक्ष्य अपने कहानीपन को न खोकर जीवन की प्रस्तुति सहज रूप में करते हुए जीवन के कटु सत्यों और व्यवस्था की भ्रष्टता को उजागर करना है।"
- अमृतराय ने 'सहज कहानी' आन्दोलन 'नयी कहानियाँ' पत्रिका से आरम्भ किया।
- कमलेश्वर ने अकहानीकारों के भोगवादी प्रवृत्ति का विरोध करते हुए 'धर्मयुग' में 'अय्याश प्रेतों का विद्रोह' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित करवाया।
- 'समान्तर कहानी' आन्दोलन में 'आम आदमी' को प्रतिष्ठित करने पर बल दिया जाता है।
- 'समान्तर कहानी' आन्दोलन का सूत्रपात 'सारिका' पत्रिका के माध्यम से हुआ।
- राकेश वत्स ने 'मंच' पत्रिका द्वारा 'सक्रिय कहानी' का प्रवर्तन किया।
- राकेश वत्स ने लिखा है, "सक्रिय कहानी का सीधा और स्पष्ट मतलब है कि चेतनात्मक ऊर्जा और जीवन्तता की कहानी।"
- 'जनवादी कहानी' आन्दोलन का सूत्रपात दिल्ली में जनवादी लेखक संघ के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन के साथ हुआ।
- वैचारिक धरातल पर जनवादी कहानी मार्क्सवाद को आधार बनाकर चलती है। इसमें मुख्यतः किसानों-मजदूरों, पीड़ितों दलितों और असहायों का जीवन-संघर्ष चित्रित किया जाता है।
- नामवर सिंह ने 'परिन्दे' को हिन्दी की पहली कहानी माना है। (निर्मल वर्मा)
- नामवर सिंह ने लिखा है, 'परिन्दे' की लतिका की समस्या स्वतन्त्रता या मुक्ति की समस्या है। अतीत से मुक्ति, स्मृति से मुक्ति, उस चीज से मुक्ति 'जो हमें चलाए चलती है और अपने रेले में घसीट ले जाती है।"....सारी कहानी इस मुक्ति की पीड़ा की मार्मिक अभिव्यंजना है।...मुक्ति का यह क्षण जिसमें मनुष्य स्वयं अपना साक्षी हो जाती है, निर्मल की अनेक कहानियों का आलोक केन्द्र है।"
- हिन्दी के प्रमुख समकालीन कहानीकार और संग्रह निम्नांकित हैं—

कहानीकार — कहानी-संग्रह

भीष्म साहनी—(1) भाग्य रेखा (1953), (2) पहला पाठ (1957), (3) भटकती राख (1966), (4) पटरियाँ (1973), (5) वाङ्चू (1978), (6) शोभायात्रा (1981), (7) निशाचर (1983), (8) पाली (1989), (9) डायन (1998)।

मुक्तिबोध—(1) काठ का सपना (1967), (2) सतह से उठता आदमी (1971)

भैरव प्रसाद गुप्त—(1) मुहब्बत की राहें (1945), (2) फरिश्ता (1946), (3) बिगड़े हुए दिमाग (1948), (4) इन्सान (1950), (5) सितार के तार (1951), (6) बलिदान की कहानियाँ (1951), (7) मंजिल (1951), (8) महफिल (1958), (9) सपने का अन्त (1961), (10) आँखों का सवाल (1965), (11) मंगली की टिकुली (1982), (12) आप क्या कर रहे हैं (1983)।

अमरकांत—(1) जिन्दगी और जोंक, (2) देश के लोग, (3) मौत का नगर, (4) मिलन मित्र, (5) कुहासा, (6) एक धनी व्यक्ति का बयान (1997), (7) सुख और दुख का साथ (2002)।

राजेन्द्र यादव—(1) देवताओं की मूर्तियाँ (1952), (2) खेल खिलौने (1954), (3) जहाँ लक्ष्मी कैद है (1957), (4) अभिमन्यु की आत्महत्या (1959), (5) छोटे-छोटे ताजमहल (1962), (6) किनारे से किनारे तक (1963), (7) टूटना (1966), (8) अपने पार (1968), (9) ढोल और अन्य कहानियाँ (1972), (10) हासिल तथा अन्य कहानियाँ (2006)।

मोहन राकेश—(1) इन्सान के खण्डहर (1950), (2) नये बादल (1957), (3) जानवर और जानवर (1958), (4) एक और जिन्दगी (1961), (5) फौलाद का आकाश (1966)।

कमलेश्वर—(1) राजा निरबंसिया (1957), (2) कस्बे का आदमी (1958), (3) खोई हुई दिशाएँ (1963), (4) मांस का दरिया (1966), (5) बयान (1973), (6) आजादी मुबारक (2002)।

धर्मवीर भारती—(1) मुर्दों का गाँव (1946), (2) स्वर्ग और पृथ्वी (1949), (3) चाँद और टूटे हुए लोग (1955), (4) बंद गली का आखिरी मकान (1969)।

लक्ष्मीनारायण लाल—(1) सूने आँगन रस बरसै (1960), (2) नये स्वर नयी रेखाएँ (1962), (3) एक बूँद जल (1964), (4) एक और कहानी (1964), (5) डाकू आए थे (1974)।

निर्मल वर्मा—(1) जलती झाड़ी (1965), (2) पिछली गर्मियों में (1968), (3) बीच बहस में (1973), (4) कव्वे और कालापानी (1983), (5) सूखा तथा अन्य कहानियाँ (1995), (6) परिन्दे (1960)।

फणीश्वरनाथ रेणु—(1) ठुमरी (1959), (2) आदिम रात्रि की महक (1967), (3) अग्निखोर (1973), (4) एक श्रावणी दोपहर की धूप (1984), (5) अच्छे आदमी (1986)।

शिवप्रसाद सिंह—(1) आर पार की माला (1955), (2) कर्मनाशा की हार (1958), (3) इन्हें भी इन्तजार है (1961), (4) मुर्दा सराय (1966), (5) अँधेरा हँसता है (1975), (6) भेड़िया (1977)।

मारकण्डेय—(1) पान फूल (1954), (2) पत्थर और परछाइयाँ (1956), (3) महुए का पेड़ (1957), (4) हंसा जाई अकेला (1957), (5) भूदान (1958), (6) माही (1962), (7) बीच के लोग (1975)।

रघुवीर सहाय—(1) रास्ता इधर से है (1972), (2) जो आदमी हम बना रहे हैं

(1982)।

गंगाप्रसाद विमल—(1) विध्वंस (1965), (2) शहर में (1966), (3) बीच की दरार (1968), (4) अतीत में कुछ (1972), (5) कोई शुरुआत (1973), (6) खोई हुई थाती (1995)।

रमेश बक्षी—(1) एक अमूर्त तकलीफ (1968), तलघर (1969), (3) सजा (1970)।

रवीन्द्र कालिया—(1) नौ साल छोटी पत्नी (1969), (2) काला रजिस्टर (1972), (3) गरीबी हटाओ (1976), (4) चकैया नीम (1979)।

शैलेश मटियानी—(1) दो दुखों का एक सुख (1961), (2) सुहागिनी तथा अन्य कहानियाँ (1966), (3) हारा हुआ (1970), (4) तीसरा सुख (1972), (5) महाभोज (1975), (6) चील (1976)।

रामदरश मिश्र—(1) खाली घर (1969), (2) एक वह (1974), (3) दिनचर्या (1979), (4) सर्पदंश (1982), (5) वसंत का दिन (1982), (6) अपने लिए (1992), (7) आज का दिन भी (1996), (8) एक कहानी लगातार (1997), (9) फिर कब आयेंगे (1998), (10) विदूषक (2002)।

शेखर जोशी—(1) कोसी का घटवार (1958), (2) साथ के लोग (1978), (3) हलवाहा (1981), (4) मेरा पहाड़ (1989), (5) नौरंगी बीमार है (1990), (6) डाँगरी वाले (1994)।

ज्ञानरंजन—(1) फेंस के इधर-उधर (1968), (2) यात्रा (1971), (3) क्षणजीवी (1977), (4) सपना नहीं (1977)।

काशीनाथ सिंह—(1) लोग बिस्तरों पर (1968), (2) सुबह का डर (1975), (3) आदमीनामा (1978), (4) नयी तारीख (1979), (5) कल की फटे हाल कहानियाँ (1980), (6) सदी का सबसे बड़ा आदमी (1986)।

जगदीश चतुर्वेदी—(1) निहंग (1973), (2) अँधेरे का आदमी (1980), (3) चर्चित कहानियाँ (1981), (4) विवर्त (1981)।

दूधनाथ सिंह—(1) सपाट चेहरे वाला आदमी (1967), (2) सुखांत (1971), (3) पहला कदम (1976), (4) माई का शोक गीत (1992), नमो अंधकारः (1998), (5) धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे (2002), (6) निष्कासन (2002)।

गिरिराज किशोर—(1) चार मोती बेआब (1963), (2) नीम के फूल (1964), (3) पेपरवेट (1967), (4) रिश्ता और अन्य कहानियाँ (1969), (5) शहर दर शहर (1976), (6) हम प्यार कर लें (1980), (7) जगत्तारनी (1981), (8) यह देह किसकी है (1990), (11) आन्द्रे की प्रेमिका (1995)।

हिमांशु जोशी—(1) अन्ततः (1965), (2) रथचक्र (1975), (3) मनुष्य चिह्न (1976), (4) जलते हुए डैने (1980), (5) सागर तट के शहर (2005)।

रमेशचन्द्र शाह—(1) जंगल में आग (1979), (2) मुहल्ले का रावण (1932), (3) मानपत्र (1992), (4) थियेटर (1998)।

गोविन्द मिश्र—(1) नये पुराने माँ-बाप (1973), (2) अन्तःपुर (1976), (3) रगड़ खाती आत्माएँ (1978), (4) धाँसू (1978), (5) अपाहिज (1980), (6) खुद के खिलाफ (1981), (7) खाक इतिहास (1984), (8) पगला बाबा (1987), (9) आसमान कितना नीला (1992), (10) हवाबाज (1998), (11) मुझे बाहर निकालो (2004)।

महीप सिंह—(1) सुबह के फूल (1959), (2) उजाले के उल्लू (1964), (3) घिराव (1968), (4) कुछ और कितना (1973), (5) कितने सम्बन्ध (1979), (6) दिल्ली कहाँ है (1985)।

हृदयेश—(1) अँधेरी गली का रास्ता (1977), (2) इतिहास (1981), (3) उत्तराधिकारी (1981), (4) अमर कथा (1984), (5) नागरिक (1992), (6) रामलीला (1993), (7) सम्मान (1996), (8) सन् उन्नीस सौ बीस (1999), (9) उसी जंगल समय में (2004)।

माहेश्वर—(1) स्पर्श (1979), (2) डी०पी० सिंह की डिस्पेंसरी (1986), (3) मास्टर सेवाराम का सपना (1992), (4) हँसने वाली औरत (1995)।

कामतानाथ—(1) छुट्टियाँ (1977), (2) तीसरी साँस (1977), (3) सब ठीक हो जाएगा (1983), (4) शिकस्त (1992), (5) रिश्ते नाते (1998)।

विवेकी राय—(1) नयी कोयल (1975), (2) गूँगा जहाज (1977), (3) बेटे की बिक्री (1981), (4) कालातीत (1982), (5) चित्रकूट के घाट पर (1988), (6) सर्कस (2005)।

संजीव—(1) सफरनामा (1981), (2) भूमिका तथा अन्य कहानियाँ (1987), (3) प्रेतमुक्ति (1991), (4) दुनिया की सबसे हसीन औरत (1993), (5) प्रेरणास्रोत तथा अन्य कहानियाँ (1995), (6) ब्लैक होल (1997), (7) खोज (1999), (8) गति का पहला सिद्धान्त (2004), (9) गुफा का आदमी (2006)।

मिथिलेश्वर—(1) बाबूजी (1975), (2) बन्द रास्तों के बीच (1978), (3) दूसरा महाभारत (1979), (4) मेघना का निर्णय (1980), (5) गाँव के लोग (1981) (6) विग्रह बाबू (1982), (7) तिरिया जनम (1982), (8) हरिहर काका (1983), (9) माटी की महक धरती गाँव की (1987), (10) एक में अनेक (1987), (11) एक थे प्रो० बी० लाल (1993), (12) भोर होने से पहले (1994), (13) चल खुसरो घर आपने (2000), (14) जमुनी (2001)।

शानी—(1) बबूल की छाँव (1958), (2) डाली नहीं फूलती (1959), (3) छोटे घेरे का विद्रोह (1964), (4) शर्त का क्या हुआ (1975), (5) बिरादरी तथा अन्य कहानियाँ (1978), (6) सड़क पर करते हुए (1979)।

राकेश वत्स—(1) अतिरिक्त तथा अन्य कहानियाँ (1970), (2) अन्तिम प्रजापति, (1975), (3) अभियुक्त (1979), (4) शुरुआत (1980), (5) एक बुद्ध और (1986)।

सेवाराम यात्री—(1) जीनियस की दुम, (2) अनासक्त, (3) दूसरे चेहरे (1971), (4) केवल पिता (1978), (5) अकर्मक क्रिया (1981)।

बादशाह हुसेन रिज़वी—(1) टूटता हुआ भय (1986), (2) पीड़ा गनेसिया की (1994), (3) चार मेहराबों वाली दालान (2006)।

धीरेन्द्र अस्थाना—(1) लोग हाशिये पर (1980), (2) आदमी खोर (1982), (3) मुहिम (1984), (4) खुल जा सिमसिम, (5) विचित्र देश की प्रेम कथा (1988), (6) जो मारे जायेंगे (1990)।

बदीउज्ज़माँ—(1) अनित्य (1970), (2) पुल टूटते हुए (1973), (3) चौथा ब्राह्मण (1976)।

विजयमोहन सिंह—(1) टट्टू सवार (1971), (2) एक बंगला बने न्यारा (1982), (3) शेरपुर पन्द्रह मील (1995), (4) गमे हस्ती का हो किससे (2000)।

अब्दुल बिस्मिल्लाह—(1) टूटा हुआ पंख, (2) कितने कितने सवाल (1984), (3) रैन बसेरा (1989), (4) अतिथि देवो भव (1990), (5) रफ रफ मेल (2000)।

नरेन्द्र कोहली—(1) परिणति (1969), (2) कहानी का अभाव (1977), (3) दृष्टि देश में एका एक (1979), (4) संबंध (1980), (5) शटल (1982)।

भीमसेन त्यागी—(1) दीवारें ही दीवारें (1970), (2) जबान (1980)।

मधुकर सिंह—(1) पूरा सन्नाटा (1971), (2) पहला पाठ (1979)।

सतीश जमाली—(1) प्रथम पुरुष (1972), (2) थके हारे (1975), (3) ठाकुर संवाद (1978)।

बलराम—(1) कलम हुए हाथ (1980), (2) मालिक के मित्र (1984), (3) अनचाहे सफर (1988)।

योगेश गुप्त—(1) टूटा हुआ कोना (1977), (2) अबरक के फूल (1979), (3) उन दो शहरों की तरह (1982), (4) कैमरे के गर्भ से (1982), (5) परा स्वप्न (1988), (6) मेरे अन्तरिक्ष (1988), (7) ओलमा (1992)।

बटरोही—(1) दिवास्वप्न (1978), (2) सड़क का भूगोल (1985), (3) आगे के पीछे (1989), (4) अनाथ मुहल्ले के ठुल दा (1990), (5) हिडिम्बा के गाँव में (2000)।

उदय प्रकाश—(1) दरियाई घोड़ा, (2) तिरिछ (1989), (3) और अंत में प्रार्थना (1994), (4) पाल गोमरा का स्कूटर (1997), (5) पीली छतरी वाली लड़की (2001), (6) दत्तात्रेय का दुःख (2002), (7) मोहनदास (2010)।

रमेश उपाध्याय—(1) जमी हुई झील (1969), (2) शेष इतिहास (1973), (3) नदी के साथ (1976), (4) चतुर्दिक (1980), (5) पैदल अँधेरे में (1981), (6) बदलाव से पहले (1981), (7) राष्ट्रीय राजमार्ग (1984), (8) किसी देश के किसी शहर में (1987), (9) कहाँ हो प्यारे लाल

(1991), (10) अर्थतंत्र तथा अन्य कहानियाँ (1996)।

योगेश कुमार—(1) परामर्श (1986), (2) मिथ्या चक्र (1987)।

स्वयं प्रकाश—(1) मात्रा और भार (1974), (2) सूरज कब निकलेगा (1980), (3) आयेंगे अच्छे भी दिन (1991), (4) आदमी जात का आदमी (1994), (5) अगली किताब, (6) आसमां कैसे कैसे, (7) अगले जनम (2002), (8) संधान (2006)।

शिवमूर्ति—केशर कस्तूरी (1991)।

चन्द्रकिशोर जायसवाल—मर गया दीपनाथ (1997), (2) हिंगवा घाट में पानी रे (1999), (3) जंग (2002), (4) दुखिया दास कबीर (2003), (5) नकवेसर कागा ले भागा (2003), (6) किताब में लिखा है (2003), (7) आघात पुरुष (2005), (8) तर्पण (2006)।

शालिग्राम शुक्ल—(1) काला हंस (1985)।

रामदेव शुक्ल—(1) उजली हँसी की वापसी (2002), (2) पतिव्रता (2002), (3) माटी बाबा की कहानी (2005), (4) नीलाम घर (2006)।

गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव—(1) काँटा, (2) सपने का सच (2005)।

नवनीत मिश्र—(1) मणियाँ और जख्म (1987), (2) मैंने कुछ नहीं देखा (1992), (3) किया जाता है सबको बाइज्जत बरी (2002), (4) जो नहीं कहा गया (2004)।

नरेन्द्र नागदेव—(1) तमाशबीन (1987), (2) बीमार आदमी का इकरारनामा (1998), (3) वापसी के नाखून (2003), (4) उसी नाव में सैलानी (2004), (5) वहीं रूक जाते (2006)।

मदनमोहन—(1) छलांग (1983), (2) बच्चे बड़े हो रहे हैं (1989), (3) हारू (1994), (4) चंपा तथा अन्य कहानियाँ (2004)।

रामधारी सिंह 'दिवाकर'—(1) नये गाँव में, (2) अलग-अलग अपरिचय (1981), (3) बीच से टूटा हुआ, (4) नया घर चढ़े, (5) सरहद के पार, (6) धरातल (1997), (7) मखान पोखर, (8) माटी पानी (1999)।

मंजूर एहतेशाम—(1) रमजान में एक मौत (1982), (2) तसबीह (1998), (3) तमाशा और अन्य कहानियाँ (2001)।

शैवाल—(1) समुद्रगाथा, (2) मरुयात्रा (1999), (3) दामुल और अन्य कहानियाँ, (4) अरण्य गाथा (2000), (5) यहाँ कोई गुलमोहर नहीं है (2004)।

ज्ञानप्रकाश विवेक—(1) अलग-अलग दिशाएँ, (2) जोसफ चला गया, (3) शहर गवाह है, (4) पिताजी चुप रहते हैं, (5) उसकी जमीन, (6) शिकारगाह (2003)।

कमलाकांत त्रिपाठी—(1) जानकी बुआ (1993), (2) अन्तराल (2001)।

शैलेन्द्र सागर—(1) इस जुनून में (1989), (2) मकान ढह रहा है (1993), (3) माटी (2000), (4) आमीन (2002), (5) प्रतिरोध (2008)।

प्रियंवद—(1) एक अपवित्र पेड़ (1995), (2) खरगोश (1999), (3) फाल्गुन की एक उपकथा (2003)।

जयनंदन—(1) सन्नाटा भंग (1993), (2) विश्व बाजार का ऊँट (1997), (3) एक अकेले गान्हीजी (2001), (4) कस्तूरी पहचानों मृग (2001), (5) सूखते स्रोत (2003), (6) घर फूँक तमाशा (2004)।

अखिलेश—(1) आदमी नहीं टूटता, (2) मुक्ति (1989), (3) शापग्रस्त (1997), (4) अँधेरा (2006)।

संजय—(1) कामरेड की कोट (1993), (2) नंगा (2001)।

महिला कहानीकार

- हिन्दी की प्रथम महिला कहानीकार बंग महिला (राजेन्द्रबाला घोष) है।
- गोपालराय ने लिखा है, "सुमित्रा कुमार सिन्हा हिन्दी में प्रथम 'नारीवाद' कहानीकार मानी जा सकती है।"
- हिन्दी की प्रमुख महिला कहानीकार निम्नलिखित हैं—

कहानीकार **कहानी-संग्रह**

सुभद्रा कुमारी चौहान—(1) बिखरे मोती (1932), (2) उन्मादिनी (1934)

कमला चौधरी—(1) उन्माद (1934)

सुमित्रा कुमारी सिन्हा—(1) अचल सुहाग (1939), (2) वर्षगाँठ (1942)

होमवती—(1) निसर्ग (1939)

शिवरानी देवी—(1) कौमुदी (1937)

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा—(1) आदमखोर (1945)

शशिप्रभा शास्त्री—(1) धुली हुई शाम (1969), (2) अनुत्तरित (1975), (3) दो कहानियों के बीच (1978), (4) जोड़ बाकी (1981), (5) एक टुकड़ा शान्ति रथ (1991), (6) पतझड़ (1994), (7) उस दिन भी (1996)

शिवानी—(1) लाल हवेली (1965), (2) पुष्पहार (1969), (3) अपराधिनी (1972), (4) रथ्या (1976), (5) स्वयं सिद्धा (1977), (6) रति विलाप (1977), (7) पुष्पहार (1978)।

कृष्णा सोबती—(1) बादलों के घेरे (1980)। कहानी-धारा के पार

मन्नू भण्डारी—(1) मैं हार गई (1957), (2) यही सच है (1966), (3) एक (1969) प्लेट सैलाब (1968), (4) तीन निगाहों की एक तस्वीर (1968), (5) त्रिशंकु (1978)। नायक खलनायक विदूषक

उषा प्रियंवदा—(1) जिन्दगी और गुलाब के फूल (1961), (2) फिर बसंत आया (1961), (3) एक कोई दूसरा (1966), (4) कितना बड़ा झूठ

1- वापसी (कहानी) (1960)

(1972)

ममता कालिया—(1) छुटकारा (1969), (2) सीट नं० 6 (1978), (3) एक अदद औरत (1979), (4) प्रतिदिन (1983), (5) उसका यौवन (1985), (6) बोलने वाली औरत (2000), (7) मुखौटा (2002)।

दीप्ति खण्डेलवाल—(1) कड़वे सच (1975), (2) धूप के अहसास (1976), (3) वह तीसरा (1976), (4) सलीब पर (1977), (5) दो पल की छाँव (1978), (6) नारी मन (1979), (7) औरत और बातें (1980)।

मृणाल पाण्डे—(1) दरम्यान (1977), (2) शब्दवेधी (1980), (3) एक नीच ट्रैजेडी (1981), (4) एक स्त्री का विदागीत (1983)।

मृदुला गर्ग—(1) कितनी कैदें (1975), (2) टुकड़ा-टुकड़ा आदमी (1977), (3) डेफोडिल जल रहे हैं (1978), (4) ग्लेशियर से (1980), (5) उर्फ सैम (1986), (6) समागम (1996), (7) मेरे देश की मिट्टी अहा (2001)।

चित्रा मुद्गल—(1) जहर ठहरा हुआ (1980), (2) लाक्षागृह (1882), (3) अपनी वापसी (1983), (4) इस हमाम में एवं ग्यारह लम्बी कहानियाँ (1987), (5) जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं (1992), (6) जिनावर (1996), (7) भूख (2001), (8) लपटें (2002)।

राजी सेठ—(1) अन्धे मोड़ से आगे (1979), (2) तीसरी हथेली (1981), (3) यात्रा मुक्त (1987), (4) दूसरे देश काल में (1992), (5) यह कहानी नहीं (1998), (6) गमे हयात ने मारा (2006)।

मंजुल भगत—(1) गुलमोहर के गुच्छे (1974), (2) टूटा हुआ इन्द्रधनुष (1976), (3) क्या छूट गया (1976), (4) आत्महत्या के पहले (1979), (5) कितना छोटा सफर (1979), (6) बावन पत्ते एक जोकर (1982), (7) लेडिज क्लब (1976), (8) सफेद कौआ (1986), (9) दूत (1992), (10) बूँद (1998), (11) अन्तिम बयान (2001)।

मणिका मोहिनी—(1) खत्म होने के बाद (1972), (2) अभी तलाश-जारी है (1976), (3) स्वप्न दंश (1978), (4) पारु ने कहा था (1979), (5) अपना-अपना सच (1982), (6) ढाई आखर प्रेम का (1983), (7) अन्वेषी (1986)।

प्रतिभा वर्मा—(1) एक सुबह और (1978), (2) बँधे पाँवों का सफर (1984)।

सुधा अरोड़ा—(1) बगैर तराशे हुए (1968), (2) युद्ध विराम (1977), (3) महानगर की मैथिली (1987), (4) काला शुक्रवार (2004)

सूर्यबाला—(1) एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम (1977), (2) दिशाहीन मैं, (3) थाली भर चाँद (1988), (4) मुंडेर पर (1990), (5) साँझबाती

(1995), (6) कात्यायनी संवाद (1996), (7) मानुप गंध (2005)।

मेहरुन्निसा परवेज—(1) आदम और हव्वा (1972), (2) टहनियों पर धूप (1977), (3) फाल्गुनी (1978), (4) गलत पुरुष (1978), (5) अन्तिम चढ़ाई (1982), (6) अम्मा (1997), (7) समर (1999), (8) लाल गुलाब (2006)।

इन्दु बाली—(1) टूटती जुड़ती (1981), (2) बिना छत का मकान (1983), (3) अँधेरे की लहर (1985), (4) बिखरती आकृतियाँ (1985), (5) दूसरी औरत होने का सुख कौन दिला दिया जाने (1986), (6) मेरी तीन मौतें (1991), (7) धरातल (1992), (8) चुभन (1993), (9) मैं खरगोश होना चाहती हूँ (1995), (10) पाँचवाँ युग (1997)।

मालती जोशी—(1) मध्यान्तर (1977), (2) पटाक्षेप (1978), (3) पराजय (1979), (4) एक घर सपनों का (1985), (5) विश्वास गाथा, (6) शापित शैशव तथा अन्य कहानियाँ (1996), (7) पिया पीर न जानी (1999), (8) औरत एक रात है (2001)।

कृष्णा अग्निहोत्री—(1) टीन के घेरे (1970), (2) याही बनारसी रंग बा (1983), (3) जिन्दा आदमी (1986), (4) जै सिया राम (1993), (5) सर्पदंश (1997), (6) अपने-अपने कुरुक्षेत्र (2001), (7) यह क्या जगह है दोस्तों (2007)।

चंद्रकांता—(1) सलाखों के पीछे (1975), (2) गलत लोगों के बीच (1984), (3) पोशनूल की वापसी (1988), (4) दहलीज पर न्यास (1989), (5) ओ सोन किसरी (1991), (6) कोठे पर कागा (1993), (7) सूरज उगने तक (1994), (8) काली बर्फ (1996), (9) बदलते हालात में (2002), (10) अब्बू ने कहा था (2005)।

कुसुम चतुर्वेदी—(1) तीसरी यात्रा (1997), (2) आँगन में उगी पौध (2000)।

मैत्रेयी पुष्पा—(1) चिन्हार (1991), (2) ललमनियाँ (1996), (3) गोमा हँसती है (1998)।

नमिता सिंह—(1) खुले आकाश के नीचे (1978), (2) राजा का चौक (1982), (3) नील गाय की आँखें (1990), (4) जंगल गाथा (1992), (5) निकम्मा लड़का।

उषा किरन खान—(1) विवश विक्रमादित्य, (2) दूब धान, (3) गीली पाँक (1995), (4) कासवन (1998), (5) जलधार (2002)।

गीतांजलि श्री—(1) अनुगूँज (1995), (2) वैराग्य (1999)।

सारा राय—(1) अबाबील की उड़ान (1997)।

कमल कुमार—(1) पहचान (1984), (2) क्रमशः (1996), (3) फिर वहीं से शुरू (1998), (4) वैलेन्टाइन डे (2002), (5) घर बेघर (2006)।

नासिरा शर्मा—(1) शामी कागज़, (2) पत्थर गली (1986), (3) संगसार (1993), (4) इब्ने मरियम (1994), (5) सबीना के चालीस चोर (1997), (6) खुदा की वापसी (1998), (7) इंसानी नस्ल (2001), (8) दूसरा ताजमहल (2002)।

ऋता शुक्ल—(1) क्रौंच वध तथा अन्य कहानियाँ (1985), (2) दंश (1985), (3) शेष गाथा (1993), (4) कनिष्ठा उँगली का पाप (1994), (5) कासौं कहौं मैं दरदिया (1997), (6) मानुष तन (1999)।

अलका सरावगी—(1) कहानी की तलाश में (1995), (2) दूसरी कहानी (2002)।

मधु कांकरिया—(1) अन्तहीन मरुस्थल (1999), (2) बीतते हुए (2004), (3) और अन्त में ईशु (2006)।

उर्मिला शिरीष—(1) वे कौन थे, (2) मुआवजा, (3) केंचुली, (4) सहमा हुआ कल, (5) शहर में अकेली लड़की (1999), (6) रंगमंच (2001), (7) निर्वासन (2003)।

जया जादवानी—(1) मुझे ही है बार-बार (2000), (2) अंदर के पानियों में कोई सपना काँपता है (2004), (3) उससे पूछो (2008)।

नवलीन—(1) सलित सागर कमीशन आया बनाम समाज सेवा जारी है (1997), (2) चक्रवात (1999)।

मुक्ता—(1) पलाश वन के घुँघरू (1991), (2) आधा कोस (1994), (3) इस घर उस घर (1999)।

ख लेखकों की चर्चित कहानियाँ

लेखक	चर्चित कहानियाँ

विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक—(1) ताई, (2) रक्षाबन्धन।

रायकृष्णदास—(1) अन्तःपुर का आरम्भ, (2) रमणी का रहस्य।

चंडी प्रसाद 'हृदयेश'—(1) उन्मादिनी, (2) शान्ति निकेतन, (3) प्रेम पुष्पांजलि।

भगवती प्रसाद वाजपेयी—(1) पेंसिल स्केच, (2) बिंदिया लागी, (3) हृदयगति, (4) झरोखे की रानी, (5) टिकुली।

बद्रीनाथभट्ट 'सुदर्शन'—(1) हार की जीत, (2) सच्ची शान्ति, (3) कवि की स्त्री, (4) एथेंस का सत्यार्थी, (5) बाप का हृदय।

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार—(1) मास्टरजी, (2) आँसू, (3) शराबी, (4) भय का राज्य।

बेचन शर्मा 'उग्र'—(1) उसकी माँ, (2) निहलिस्ट, (3) ऐसी होली खेलो लाल!

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला—(1) श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी।

भगवतीचरण वर्मा—(1) प्रायश्चित, (2) मुगलों ने सल्तनत बख्श दी।

जैनेन्द्र—(1) स्पर्द्धा, (2) पत्नी, (3) एक कैदी, (4) अपना-अपना भाग्य, (5)

बाहुबली, (6) लाल सरोवर, (7) मास्टरजी, (8) भाभी।

यशपाल—(1) परदा, (2) नीरस रसिक, (3) मक्रील, (4) आदमी का बच्चा (5) धर्मरक्षा, (6) प्रतिष्ठा का बोझ।

अज्ञेय—(1) रोज (गैंग्रिन), (2) मेजर चौधरी, (3) कविप्रिया, (4) रमन्ते तत्र देवता, (5) नारंगियाँ, (6) मनसो, (7) पठार का धीरज, (8) पुरुष का भाग्य

उपेन्द्रनाथ 'अश्क'—(1) डाची, (2) अंकुर, (3) पलंग, (4) प्रियेजी, (5) कांकड़ा का तेली, (6) पिंजरा, (7) गोखरू, (8) अजगर।

रांगेय राघव—(1) गदल, (2) मृगतृष्णा, (3) कुत्ते की दुम और शैतान, (4) धूल की आँधी, (5) पिसनहारी।

भीष्म साहनी—(1) भटकती राख, (2) खून का रिश्ता, (3) चीफ की दावत, (4) सिर का सदका, (5) पहला पाठ।

अमरकांत—(1) दोपहर का भोजन, (2) डिप्टी कलेक्टर, (3) इण्टरव्यू।

मोहन राकेश—(1) मलवे का मालिक, (2) आर्द्रा, (3) सेफ्टी पिन (4) जख्म, (5) मिस पाल।

कमलेश्वर—(1) जॉर्ज पंचम की नाक, (2) नीली झील, (3) ऊपर उठता हुआ मकान।

धर्मवीर भारती—(1) गुलकी बन्नो, (2) सावित्री नं० 2, (3) मरीज नं० सात, (4) यह मेरे लिए नहीं।

निर्मल वर्मा—(1) दहलीज, (2) लवर्स, (3) पिक्चर पोस्टकार्ड, (4) पिता का प्रेमी।

रेणु—(1) तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम, (2) ठेस, (3) पंचलाइट, (4) रस प्रिया, (5) लाल पान की बेगम, (6) तीन बिंदिया।

शिवप्रसाद सिंह—(1) नन्हों, (2) बीच की दीवार, (3) इन्हें भी इन्तजार है, (4) दादी माँ।

मारकण्डेय—(1) गुलरा के बाबा

रघुवीर सहाय—(1) मेरे और नंगी औरत के बीच, (2) मुठभेड़, (3) तीन मिनट

शेखर जोशी—(1) दज्यू, (2) अप्रतीक्षित, (3) बदबू, (4) प्रश्नवाचक आकृतियाँ।

ज्ञानरंजन—(1) घण्टा, (2) पिता, (3) बहिगर्मन, (4) सीमाएँ।

शिवमूर्ति—(1) कसाईबाड़ा (1980), (2) तिरिया चरित्तर।

कृष्णा सोबती—(1) सिक्का बदल गया।

हिन्दी दलित कहानी का विकास

- सन् 1975 ई० में 'मुक्ति स्मारिका' पत्रिका में सतीश द्वारा रचित 'वचनबद्ध' को हिन्दी की प्रथम दलित कहानी स्वीकार किया जाता है।

- कुछ पत्रिकाओं में प्रकाशित दलित लेखकों की प्रथम कहानियाँ निम्नांकित हैं—

लेखक	कहानी	वर्ष	पत्रिका
सतीश	वचनवद्ध	1975	मुक्ति स्मारिका
मोहनदास नैमिशराय	सुवसे बड़ा सुख	1978	कथालोक
ओमप्रकाश वाल्मीकि	अंधेर वस्ती	1980	निर्णायक भीम

- दलितों द्वारा लिखी अन्य महत्वपूर्ण कहानियाँ निम्नांकित हैं—

ओमप्रकाश वाल्मीकि	(1) पच्चीस चौका डेढ़ सौ (1993), सलाम (2000), (3) घुसपैठिए (2003), (4) प्रमोशन, (5) दिनेश पाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन, (6) वैल की खाल।
मोहनदास नैमिशराय	(1) आवाजें (1997), (2) अपना गाँव, (3) कर्ज।
दयानन्द वटोही	(1) सुरंग (1995), (2) कफन खोर।
सूरजपाल सिंह चौहान	(1) हैरी कव आयेगा (1999), (2) साजिश, (3) छूत कर दिया, (4) अहिल्या, (5) टिल्लू का पोता।
सुशीला टकभौरे	(1) सिलिया, (2) टूटता वहम (1997)।
कुसुम वियोगी	(1) चार इंच की कलम, (2) अन्तिम वयान।
श्यौराज सिंह वेचैन	(1) अस्थियों के अक्षर, (2) शोध प्रवन्ध।
जय प्रकाश कर्दम	नो वार
प्रह्लादचन्द्र दास	(1) लटकी हुई शर्त, (2) पुटुस के फूल (1998)।
अजय नावरिया	(1) पटकथा और अन्य कहानियाँ (2006), (2) उपमहाद्वीप, (3)एक धम्भ सतंतनो, (4) यस सर (2012)।
सत्य प्रकाश	(1) रक्तवीज, (2) सायरन (2004)।
अरविन्द राही	दृष्टिकोण
प्रेम कपाड़िया	हरिजन
दयानंद तिलखन पारसी	गाँव के आँचल में (2004)
उमेश सिंह	पहली रात का अंत
परदेशी राम वर्मा	दिन प्रतिदिन
एच०आर० हरनोट	(1) दारोश तथा अन्य कहानियाँ (2001), (2) जीनकाठी।
शत्रुघ्न कुमार	(1) हिस्से की रोटी (2001)
विपिन विहारी	(1) कंधा, (2) विवाइयाँ
कावेरी	(1) द्रोणाचार्य एक नहीं (1996)
रूपनारायण सोनकर	(1) जहरीली जड़ें (2005)
मनोज सोनकर	जाँच (2005)
रानी मीनू	(1) हम कौन हैं (2012)
अनीता भारती	(1) एक थी कोठे वाली तथा अन्य कहानियाँ (2012)

- हिन्दी की प्रसिद्ध कहानियाँ एवं उनके पात्र निम्नलिखित हैं—

कहानी	लेखक	पात्र
उसने कहा था	गुलेरी	लहना सिंह, सूवेदारनी, सुवेदार हजारा सिंह, वोधा, वजीरा सिंह, कीरत सिंह,
पुरस्कार	जयशंकर प्रसाद	अरुण, मधुलिका, कौशल नरेश, सेनापति
तीसरी कसम	रेणु	हीरामन, हीरावाई
लालपान की वेगम	रेणु	विरजू, माँ, चम्पिया, जंगी की पुतोहू
रसप्रिया	रेणु	मोहना, मिरदंगिया
गदल	रांगेय राघव	गदल, गुन्न, डोडी, निहाल, नारायण, दुल्लो, मौनी लौहारे
चीफ की दावत	भीष्म साहनी	मि० शामनाथ, वूढ़ी माँ, पत्नी
एक और जिन्दगी	मोहन राकेश	प्रकाश, वीना, निर्मला, वच्चा
आर्द्रा	मोहन राकेश	वचन, लाली, विन्नी
परिन्दे	निर्मल वर्मा	लतिका, डॉ० मुखर्जी, मि० ह्यूवर्ट, करीमुद्दीन, गिरीश, मिस वुड, फादर एलमण्ड
एक पति के नोट्स	महेन्द्र भल्ला	पति, सीता, सन्ध्या
कसाई वाड़ा	शिवमूर्ति	शनीचरी, प्रधान, दरोगा, लीडर
जिन्दगी और जोंक	अमरकान्त	रजुआ, शिवनाथ वावू, शनीचरी देवी
जहाँ लक्ष्मी कैद है	राजेन्द्र यादव	लक्ष्मी, गोविन्द, लाला रूपाराम, रामस्वरूप
ईदगाह	प्रेमचन्द	हामिद, अमीना, मोहसिन, सम्मी, नूरे, महमूद
पंच परमेश्वर	प्रेमचन्द	जुम्मन शेख, अलगू चौधरी
मन्त्र	प्रेमचन्द	कैलाश, डॉ० चड्ढा
शतरंज के खिलाड़ी	प्रेमचन्द	मिरजा, सज्जाद अली, मीर, वेगम
ठाकुर का कुआँ	प्रेमचन्द	जोखू, जंगी, ठाकुर
नमक का दरोगा	प्रेमचन्द	वंशीधर, पं० अलोपीदीन
पूस की रात	प्रेमचन्द	हल्कू, मुन्नी, जवरा (कुत्ता)
वड़े घर की वेटी	प्रेमचन्द	वेनी माधव सिंह, श्रीकंठ सिंह, लाल विहारी, आनन्दी
सद्गति	प्रेमचन्द	दुखी चमार, झुरिया, पं० घासीराम
सुजान भगत	प्रेमचन्द	सुजान महतो, वुलाकी, भोला
दो वैलों की कथा	प्रेमचन्द	झूरी, हीरा, मोती
कफन	प्रेमचन्द	घीसू, माधव, वुधिया

हिन्दी निबन्ध का विकास

भारतेन्दु युग

- यूरोप में निबन्ध साहित्य का जनक फ्रेंच विद्वान मानतेन को माना जाता है।
- अंग्रेजी साहित्य का प्रथम निबन्धकार लार्ड बेकन को माना जाता है।
- हिन्दी का प्रथम निबन्ध, निबन्धकार एवं प्रस्तोता—

प्रस्तोता	निबन्धकार	वर्ष	निबन्ध
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र		
लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	बालकृष्ण भट्ट		
गणपति चन्द्र गुप्त	राजाशिवप्रसाद सितारेहिन्द	1839	राजा भोज का सपना
विश्वनाथ एम०ए०	सदासुखलाल	1840	सुरासुर निर्णय

- अन्य सभी विद्वानों ने सर्वसम्मति से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी निबन्ध का जनक माना है।
- भारतेन्दु के विद्या गुरु राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द थे।
- भारतेन्दु के सम्बन्ध में डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है, "कविता में उनका संस्कार है, गद्य में विचार।"
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के प्रमुख निबन्ध निम्नांकित हैं—
  कश्मीर-कुसुम, उदय पुरोदय, कालचक्र, बादशाह दर्पण, लेवी प्राण लेवी, तदीयसर्वस्व, जातीय संगीत, नाटकों का इतिहास, वैद्यनाथ की यात्रा, स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन, जाति विवेचनी सभा, पाँचवें पैगम्बर, अंग्रेज स्तोत्र, कंकड़ स्तोत्र, वैष्णवता और भारतवर्ष, हिन्दी भाषा, सूर्योदय, एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न, भ्रूण हत्या, रामायण का समय, काशी, मणिकर्णिका, अंग्रेजों से हिन्दुस्तानियों का जी क्यों नहीं मिलता, संगीत सार, नाटक, ईश्वर बड़ा विलक्षण है, भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?
- भारतेन्दु के महत्वपूर्ण सूक्ति—
  (1) मुसलमानी राज्य हैजे का रोग है और अंग्रेजी क्षयी का।
  (2) बागवाँ आया गुलिस्ताँ में कि सैय्याद आया
  जो कोई आया मेरी जान को जल्लाद आया। (बादशाह दर्पण)
- बालकृष्ण भट्ट को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी का 'स्टील' कहा है। इनके लिखे प्रमुख निबन्ध निम्नवत हैं—
  (1) चंद्रोदय, (2) संसार महानाटकशाला, (3) प्रेम के बाग का सैलानी, (4) साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है, (5) शब्द की आकर्षण शक्ति, (6) साहित्य का सभ्यता से घनिष्ट सम्बन्ध है, (7) इंगलिश पढ़े तो बाबू होय, (8) आत्मनिर्भरता, (9) कल्पना, (10) मेला-ठेला, (11) रोटी तो किसी भाँति कमा खाय मुछन्दर, (12) बाल-विवाह, (13) एक अनोखा स्वप्न, (14) माता का स्नेह, (15) कालचक्र का चक्कर, (16) प्रतिभा, (17) माधुर्य, (18) आशा, (19) आत्मगौरव, (20) रुचि, (21) भिक्षा-वृत्ति, (22) ईश्वर भी क्या ठठोल है, (23) स्त्रियाँ और उनकी शिक्षा, (24) हमारे नये सुशिक्षितों में परिवर्तन।
- हिन्दी में मनोविकार संबंधी निबन्ध का सूत्रपात बालकृष्ण भट्ट ने किया।
- प्रतापनारायण मिश्र को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी का 'ऐडीसन' कहा है। इनके लिखे प्रमुख निबन्ध निम्नांकित हैं—
  धोखा, दाँत, बालक, वृद्ध, आप, बात, खुशामद, भौं, नारी, मनोयोग, मुच्छ, परीक्षा, समझदार की मौत, ह, द, नास्तिक, टेढ जान शंका सब काहू, होली है अथवा होरी, ईश्वर की मूर्ति, घूरे क लत्ता बिनै, जुआ, सोने का डंडा, कनातन क डौल बाँधे, अपव्यय, वृद्ध, दान।
- बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' के महत्वपूर्ण निबन्ध निम्न हैं—
  (1) नेशनल कांग्रेस की दुर्दशा, (2) भारतीय प्रजा के दुःख की दुहाई और ढिठाई पर गवर्नमेंट की कड़ाई, (3) बनारस का बुढ़वा मंगल, (4) दिल्ली दरबार में मित्र मण्डली के यार।
- आचार्य शुक्ल ने लिखा है—"ये गद्य रचना को एक कला के रूप में ग्रहण करने वाले कलम की कारीगरी समझने वाले लेखक थे।"
- भारतेन्दु युग के अन्य निबन्धकार व निबन्ध निम्नांकित हैं—

निबन्धकार	निबन्ध
लाला श्रीनिवासदास	(1) भरत खण्ड की समृद्धि, (2) सदाचरण।
राधाचरण गोस्वामी	(1) यमलोक की यात्रा।
मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या	(1) हम लोगों की वृद्धि किस रीति से होगी, (2) बन्धुत्व किसे कहते हैं, (3) खुशामद।

द्विवेदी युग

- हिन्दी निबन्ध के प्रारम्भिक एवं अनगढ रूप को आचार्य शुक्ल ने 'गद्य प्रबन्ध' कहा है।
- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य को 'ज्ञानराशि का संचित कोश' माना है।
- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लार्ड बेकन के निबन्धों का अनुवाद 'बेकन विचार रत्नावली' शीर्षक से किया।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबन्धों को 'बातों का संग्रह' कहा है।
- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के महत्वपूर्ण निबन्ध निम्नांकित हैं—
  (1) सम्पत्तिशास्त्र, (2) रसज्ञ रंजन, (3) लेखांजलि, (4) नाट्य-शास्त्र, (5) उपन्यास रहस्य, (6) आगरे की शाही इमारतें, (7) कालिदास के समय का भारत, (8) दंडदेव का आत्मनिवेदन, (9) भाषा और व्याकरण, (10) कवि और कविता, (11) महाकवि माघ का प्रभात वर्णन, (12) दमयन्ती का चन्द्रोपालम्भ, (13) कवि बनने के लिए सापेक्ष साधन, (14) म्युनिसिपैलिटी के कारनामे, (15) सुतापराधे जनकस्य दण्डः, (16) आत्मनिवेदन, (17) प्रभात, (18) नेपाल।
- बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने महावीरप्रसाद द्विवेदी के निबन्ध 'भाषा और व्याकरण' से 'अनस्थिरता' शब्द को लेकर उनकी आलोचना 'आत्माराम' नाम से की।

- बालमुकुन्द गुप्त के जवाब में महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'सरगौ नरक ठेकाना नाहिं' शीर्षक निबन्ध 'कल्लू अल्हइत' नाम से लिखा।
- बालमुकुन्द गुप्त ने सन् 1904-1905 ई० में भारत मित्र में 'शिवशम्भु का चिट्ठा' नाम से तत्कालीन गवर्नर-जनरल लार्ड कर्जन को सम्बोधित करके निबन्ध लिखा।
- बालमुकुन्द गुप्त के निबन्ध 'गुप्त निबन्धावली' शीर्षक से प्रकाशित है।
- अध्यापक पूर्ण सिंह ने हिन्दी में कुल छह निबन्ध लिखे हैं जो निम्न है— (1) आचरण की सभ्यता, (2) मजदूरी और प्रेम, (3) सच्ची वीरता, (4) पवित्रता, (5) कन्यादान, (6) अमरीका का मस्त कवि वाल्ट ह्विटमैन।
- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, "अच्छी हिन्दी बस एक व्यक्ति लिखता था—बालमुकुन्द गुप्त।"
- बालमुकुन्द की उक्ति है—

  "बड़ी धूम से टेसू आये, लड़के लाड़ी साथ लगाये,
  होगा दिल्ली में दरबार, सुनकर चौंक पड़ा संसार।"
- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने 'कछुआ धर्म' और 'मारेसि माहि कुठाव' शीर्षक से महत्वपूर्ण निबन्ध लिखे।
- द्विवेदी युग के अन्य महत्वपूर्ण निबन्धकार निम्नलिखित हैं—

निबन्धकार	निबन्ध
माधव प्रसाद मिश्र	(1) रामलीला, (2) परीक्षा, (3) धृति, (4) क्षमा, (5) सब मिट्टी हो गया।
गोविन्द नारायण मिश्र	(1) प्राकृत विचार, (2) विभक्ति विचार, (3) कवि और चित्रकार।
मिश्र बन्धु	(1) पुष्पांजलि (1916), (2) सुमनांजलि, (3) आत्मशिक्षा।
जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी	(1) गद्य माला (1909), (2) निबन्ध-निचय, (3) व की बहार, (4) पिक्वर की पूजा, (5) अनुप्रास का अन्वेषण।
बाबू श्यामसुन्दरदास	(1) साहित्य की विशेषताएँ, (2) समाज और साहित्य, (3) कर्तव्य और सभ्यता।
पद्म सिंह शर्मा	(1) मुझे मेरे मित्रों से बचाओ, (2) दयानन्द सरस्वती मर गए, (3) हिन्दी के प्राचीन साहित्य का उद्धार।

- आचार्य शुक्ल ने गोविन्द नारायण मिश्र के गद्य विधान को 'सायास अनुप्रास में गुँथे शब्द-गुच्छों का अटाला' कहा है।
- गोविन्द नारायण मिश्र ने महावीर और बालमुकुंद गुप्त के बीच 'अनस्थिरता' शब्द को लेकर चलने वाले विवाद में 'आत्माराम की टेन्टें' निबन्ध में द्विवेदीजी का पक्ष लिया।

शुक्ल युग

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्धों में ही सबसे अधिक सम्भव है।"

- आचार्य शुक्ल ने 'चिन्तामणि' (भाग एक) में लिखा है, "इस पुस्तक में मेरी अन्तर्यात्रा में पड़ने वाले कुछ प्रदेश हैं। यात्रा के लिए निकलती रही है बुद्धि पर हृदय को भी साथ लेकर।"
- आचार्य शुक्ल के प्रमुख निबन्ध संग्रह, सम्पादक व उनमें संकलित निबन्ध इस प्रकार हैं—

निबन्ध संग्रह	सम्पादक	वर्ष	संकलित निबन्ध
चिन्तामणि (भाग-1)	रामचन्द्र शुक्ल	1939	(1) भाव या मनोविकार, (2) उत्साह, (3) श्रद्धा और भक्ति, (4) करुणा, (5) लज्जा और ग्लानि, (6) लोभ और प्रीति, (7) घृणा, (8) ईर्ष्या, (9) भय, (10) क्रोध, (11) कविता क्या है?, (12) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, (13) तुलसी का भक्तिमार्ग, (14) मानस की धर्मभूमि, (15) काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था, (16) साधारणीकरण और व्यक्तिवैचित्र्यवाद, (17) रसात्मक बोध के विविध रूप।
चिन्तामणि (भाग-2)	विश्वनाथप्रसाद मिश्र	1945	(1) काव्य में प्रकृति-दृश्य, (2) काव्य में रहस्यवाद, (3) काव्य में अभिव्यंजनावाद।
चिन्तामणि (भाग-3)	नामवर सिंह	1983	
चिन्तामणि (भाग-4)	कुसुम चतुर्वेदी एवं ओमप्रकाश सिंह		(1902 से 1939 तक प्रकाशित निबन्ध, कुल 47 निबन्ध संकलित हैं।)

- आचार्य शुक्ल का 'चिन्तामणि' (भाग-1) प्रथमतः 'विचार वीथी' नाम से सन् 1930 ई० में प्रकाशित हुआ था।
- 'कविता क्या है?' निबन्ध सर्वप्रथम सरस्वती पत्रिका में सन् 1909 ई० में प्रकाशित हुआ।
- आचार्य शुक्ल के प्रमुख कथन एवं सूक्ति निम्नांकित हैं—

  (1) श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।
  (2) श्रद्धा का व्यापार स्थल विस्तृत है, प्रेम का एकान्त। प्रेम में घनत्व अधिक है, श्रद्धा में विस्तार।
  (3) लोभ सामान्योन्मुख होता है प्रेम विशेषोन्मुख।
  (4) करुणा शील और सात्विकता का संस्थापक भाव है।
  (5) सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करुणा का प्रसार आवश्यक है।
  (6) वैर क्रोध का आचार या मुरब्बा है।

(7) यदि प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण है।

(8) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।

(९) गुण प्रत्यक्ष नहीं होता, उसके आश्रय और परिणाम प्रत्यक्ष होते हैं। अनुभवात्मक मन को आकर्षित करने वाले आश्रय और परिणाम हैं। ये गुण नहीं। वे ही अनुभूति के विषय हैं। अनुभूति पर प्रवृत्ति और निर्वृत्ति निर्भर है। अनुभूति मन की पहली क्रिया है, संकल्प-विकल्प दूसरी।

(१०) जैसे, वीरकर्म से पृथक् वीरत्व कोई पदार्थ नहीं वैसे ही सुन्दर वस्तु से पृथक् सौन्दर्य कोई पदार्थ नहीं।

(११) लोक में फैली दुःख की छाया को हटाने में ब्रह्म की आनन्द कला, जो शक्तिमय रूप धारण करती है, उसकी भीषणता में भी अद्भुत मनोहरता, कटुता में भी अपूर्व मधुरता, प्रचण्डता में भी गहरी आर्द्रता साथ लगी रहती है। विरुद्धों का यही सामंजस्य कर्मक्षेत्र का सौन्दर्य है जिसकी ओर आकर्षित हुए बिना मनुष्य का हृदय नहीं रह सकता।

शुक्ल युग के अन्य महत्वपूर्ण निबन्धकार व निबन्ध निम्नांकित हैं—

निबन्धकार	निबन्ध
बाबू गुलाबराय	(1) ठलुआ क्लब, (2) फिर निराशा क्यों?, (3) मेरी असफलताएँ, (4) कुछ उथले कुछ गहरे, (5) मेरे मकान, (6) मेरे नापिताचार्य, (7) मेरी दैनिकी का एक पृष्ठ, (8) प्रीतिभोज, (9) अध्ययन और आस्वाद, (10) प्रबन्ध प्रभाकर (1954), (11) मेरे निबन्ध (1955)।
चतुरसेन शास्त्री	(1) अन्तस्थल (1921), (2) तरलाग्नि (1936), (3) मरी खाल की हाय (1939)।
पदुमलाल पुन्नालाल	(1) पंचपात्र, (2) पद्मवन, (3) कुछ और कुछ, (4) अतीत स्मृति, (5) उत्सव, (6) श्रद्धांजलि के दो फूल, (7) रामलाल पण्डित।
शिवपूजन सहाय	(1) कुछ।
शान्तिप्रिय द्विवेदी	(1) कवि और काव्य (1936), (2) साहित्यिकी (1938), (3) जीवनयात्रा, (4) संचारिणी (1939), (5) युग और साहित्य (1941), (6) सामयिकी (1955), (7) धरातल (1948), (8) प्रतिष्ठान, (9) साकल्य (1955), (10) आधान (1957), (11) वृन्त और विकास (1959)।
जयशंकर प्रसाद	(1) काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध (1939)।
सूर्यकान्त त्रिपाठी	(1) प्रबन्ध प्रतिमा, (2) प्रबन्ध प्रतीक्षा, (3) प्रबन्ध पूर्णिमा, (4) चाबुक, (5) चयन, (6) प्रबन्ध पद्म।
सियारामशरण गुप्त	(1) झूठ-सच (1939)।
महादेवी वर्मा	(1) शृंखला की कड़ियाँ (1942), (2) क्षणदा (1957), (3) साहित्यकार की आस्था (1964), (4) संभाषण (1975), (5) भारतीय संस्कृति के स्वर (1984), (6) संकल्पिता (1968), (7) विवेचनात्मक गद्य।

हरिभाऊ उपाध्याय	(1) स्वागत, (2) मनन, (3) बुदबुद, (4) जीवन सिद्ध, (5) अन्तर्ज्योति, (6) अन्तर्बल, (7) सदाचार, (8) धर्म और नीति।
विश्वंभरनाथ शर्मा	(1) दूबेजी की चिट्ठियाँ, (2) दूबेजी की डायरी।
जगदीश झा 'विमल'	(1) तरंगिणी।
कृष्णबलदेव वर्मा	(1) कवीन्द्र केशव का ओड़छा, (2) बुन्देलखण्ड पर्यटन।
वियोगी हरि	(1) तरंगिणी, (2) अन्तर्नाद, (3) पगली, (4) भावना, (5) ठंडे छींटे, (6) मेरी हिमाकत, (7) यों भी तो देखिए (1958)।
राहुल सांकृत्यायन	साहित्य निबन्धावली
पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल मकरंद	
डॉ० हरिशंकर शर्मा	(1) पिंजरा पोल, (2) चिड़ियाघर, (3) मिस पालसी की आत्मकहानी, (4) देवियों का दबदबा, (5) बेकार विद्यालय, (6) सम्पादक जन्तु

- शिवपूजन सहाय को 'भाषा का जादूगर' कहा जाता है।
- निराला, शिवपूजन सहाय को 'हिन्दी भूषण' नाम से सम्बोधित करते थे।

छायावादोत्तर युग (शुक्लोत्तर युग)

- छायावादोत्तर युग के महत्वपूर्ण निबन्धकार निम्नलिखित हैं—

निबन्धकार	निबन्ध-संग्रह
डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	(1) साहित्य और कला, (2) सांस्कृतिक निबन्ध, (3) इतिहास साक्षी है (1960), (4) इतिहास के पृष्ठों पर, (5) खून के धब्बे।
डॉ० सम्पूर्णानन्द	(1) स्फुट विचार (1953), (2) भाषा की शक्ति तथा अन्य निबन्ध, (3) चिद् विलास, (4) जीवन और दर्शन, (5) पृथ्वी, (6) ज्योतिर्विनोद, (7) शिक्षा का उद्देश्य, (8) समाजवाद, (9) आर्यों का आदि देश।
माखनलाल चतुर्वेदी	(1) साहित्य देवता, (2) अमीर इरादे गरीब इरादे (1960)।
पाण्डेय बेचन शर्मा	(1) बुढ़ापा, (2) गाली।
वासुदेवशरण अग्रवाल	(1) पृथ्वी पुत्र (1949), (2) मातृभूमि, (3) कला और संस्कृति (1958), (4) वेद विद्या (1959), (5) वाग्धारा (1966)।
हरिवंशराय बच्चन	(1) नये पुराने झरोखे (1962), (2) टूटी-छूटी कड़ियाँ (1973)।
परशुराम चतुर्वेदी	(1) मध्यकालीन शृंगारिक प्रवृत्तियाँ, (2) मध्यकालीन प्रेम साधना (1952), (3) साहित्य पथ (1961), (4) भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएँ (1962), (5) नव-निबन्ध।
सद्गुरुशरण अवस्थी	(1) बुद्धि तरंग, (2) विचार तरंग, (3) साहित्य

	तरंग (1956), (4) हृदय ध्वनि, (5) विचार-विमर्श, (6) भ्रमित पथिक।
डॉ० रघुवीर सिंह	(1) सप्तदीप, (2) जीवन-कण, (3) जीवन-धूलि, (4) शेष स्मृतियाँ (1939), (5) बिखरे फूल।
काका कालेलकर	(1) जीवन का काव्य, (2) जीवन साहित्य।
इलाचन्द्र जोशी	(1) साहित्य सर्जना (1938), (2) विवेचना (1943), (3) विश्लेषण (1953), (4) साहित्य चिन्तन (1934), (5) देखा-परखा (1957)।
यशपाल	(1) न्याय का संघर्ष (1940), (2) बात-बात में बात (1950), (3) देखा सोचा समझा (1951), (4) चक्कर क्लब, (5) गाँधीवाद की शव परीक्षा, (6) राज्य की कथा।
जैनेन्द्र	(1) प्रस्तुत प्रश्न (1936), (2) जड़ की बात (1945), (3) पूर्वोदय (1951), (4) साहित्य का श्रेय और प्रेय (1953), (5) मंथन (1953), (6) सोच विचार (1953), (7) काम, प्रेम और परिवार (1953), (8) इतस्ततः (1963), (9) समय और हम (1964), (10) परिप्रेक्ष (1977), (11) साहित्य और संस्कृति (1979)।
भदन्त आनंद कौसल्यायन	(1) जो न भूल सका (1945), (2) रेल का टिकट।
डॉ० विनयमोहन शर्मा	(1) दृष्टिकोण (1950), (2) साहित्यावलोकन (1953), (3) साहित्य शोध समीक्षा (1958), (4) साहित्य नया और पुराना (1972)।
नंनदुलारे वाजपेयी	(1) हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी (1942), (2) आधुनिक साहित्य (1950), (3) नया साहित्य नये प्रश्न (1955), (4) राष्ट्रभाषा की कुछ समस्याएँ (1961), (5) राष्ट्रीय साहित्य (1965), (6) नयी कविता (1976), (7) रस सिद्धान्त (1977), (8) हिन्दी साहित्य का आधुनिक युग (1978), (9) आधुनिक साहित्य : सृजन और समीक्षा (1978), (10) रीति और शैली।
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	(1) हिन्दी का सामयिक साहित्य (1951)।
इन्द्रनाथ मदान	(1) आलोचना तथा काव्य, (2) निबन्ध और निबन्ध, (3) कुछ उथले कुछ गहरे (1974), (4) विदा अलविदा (1982)।

1) ललित निबन्ध

- हिन्दी के प्रमुख ललित निबन्धकार हजारी प्रसाद द्विवेदी ने निबन्ध को 'व्यक्ति की स्वाधीन चिन्ता की उपज' कहा है।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रमुख निबन्ध संग्रह और निबंध निम्न हैं—

निबन्ध संग्रह—अशोक के फूल (1948), कल्पलता (1951), मध्यकालीन ... साधना (1952), विचार और वितर्क (1957), विचार प्रवाह (1959), कु... (1964), साहित्य सहचर (1965), आलोक पर्व (1972)।

निबन्ध—(1) अशोक के फूल, (2) वसंत आ गया है, (3) मेरी जन्मभूमि, (... एक कुत्ता और एक मैना, (5) नया वर्ष, (6) दिमाग खाली है, (7) शिरीष ... फूल, (8) वर्षा घनपति से घनश्याम तक, (9) कुटज, (10) साहित्य में हिमाल... की परम्परा, (11) जीवेम शरदः शतम्, (12) देवदारु, (13) आत्मदान ... संदेशवाहक वसंत, (14) नाखून क्यों बढ़ते हैं, (15) घर जोड़ने की माया, (16 ... गुरुनानक देव।

- रामवृक्ष बेनीपुरी ललित निबन्धकार हैं। इनके संग्रह निम्न हैं—(1) गेहूँ और गुला... (1950) तथा (2) वन्दे वाणी विनायकौ (1954)।
- ठाकुर रामअधार सिंह ललित व्यंग्य निबन्धकार हैं। इनके दो संग्रह प्रकाशित हैं—(1) माटी का फूल (1953) और (2) लहरपंथी (1957)।
- इनके निबन्ध 'भावों की कुटी में विचारों के वार्तालाप' के रूप प्रसिद्ध हैं।
- 'लहर पंथी' में 'लहर' और 'पंथी' के बीच वार्तालाप शैली में दार्शनिक तत्त्वों का विवेचन किया गया है।
- राजनाथ पाण्डेय एक ललित निबन्धकार हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं—(1) सुबहे-बनारस, (2) शेष लकीरें, (3) नया निर्माण : नये संकल्प।
- ठाकुर प्रसाद सिंह एक ललित निबन्धकार हैं। इनका दो संग्रह प्रकाशित है—(1) पुराना घर नये लोग (1960), (2) मोरपंख (2001)।
- 'मोर पंख' ठाकुर प्रसाद सिंह के सभी ललित और संस्मरणात्मक निबन्धों एवं कहानियों का संग्रह है।
- डॉ० विद्यानिवास मिश्र प्रतिष्ठित निबन्धकार हैं। इनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नांकित हैं—

  (1) छितवन की छाँह (1953 ई०), (2) हल्दी दूब (1955 ई०), (3) कदम की फूली डाल (1956 ई०), (4) तुम चन्दन हम पानी (1957 ई०), (5) आँगन का पंछी और बनजारा मन (1963 ई०), (6) मैंने सिल पहुँचाई (1966 ई०), (7) वसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं (1972 ई०), (8) मेरे राम का मुकुट भींग रहा है (1974 ई०), (9) परम्परा बन्धन नहीं (1976 ई०), (10) कँटीले तारों के आर-पार (1976 ई०), (11) कौन तू फूलवा बीन निहारी (1980 ई०), (12) निज मुख मुकुर (1981 ई०), (13) भ्रमरानंद के पत्र (1981 ई०), (14) तमाल के झरोखे से (1981 ई०), (15) अस्मिता के लिए (1981 ई०), (16) संचारिणी (1982 ई०), (17) अंगद की नियति (1984 ई०), (18) लागो रंग हरी (1985 ई०), (19) गाँव का मन (1985 ई०), (20) नैरन्तर्य और चुनौती (1988 ई०), (21) शेफाली झर रही है (1989 ई०), (22) भाव पुरुष श्रीकृष्ण (1990 ई०), (23) सोऽहम (1991 ई०), (24) जीवन अलभ्य है जीवन सौभाग्य है (1991 ई०), (25) देश, धर्म और साहित्य (1992 ई०), (26) नदी नारी और संस्कृति (1993 ई०), (27) फागुन दुई रे दिना (1994 ई०), (28) बूँद मिले सागर में (1994 ई०), (29) पीपल के बहाने (1994 ई०), (30) शिरीष की याद आई

(1995 ई०), (31) भारतीय चिन्तनधारा (1995 ई०), (32) साहित्य का खुला आकाश (1996 ई०), (33) लोक और लोक का स्वर (2000 ई०), (34) रथयात्रा (2002 ई०), (35) गिर रहा है आज पानी (2001 ई०), (36) स्वरूप विमर्श (2001 ई०), (37) गाँधी का करुण रस (2002 ई०), (38) थोड़ी सी जगह दे (2004 ई०), (39) कितने मोरचे (2007 ई०), (40) साहित्य के सरोकार (2007 ई०)

- विद्यानिवास मिश्र 'भ्रमरानंद' उपनाम से श्रीनारायण चतुर्वेदी को पत्र लिखते थे।
- विद्यानिवास मिश्र का प्रथम निबन्ध संग्रह 'छितवन की छाँह' है।
- शिव प्रसाद सिंह प्रसिद्ध आत्मव्यंजक ललित निबन्धकार हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

  (1) शिखरों के सेतु (1962 ई०), (2) कस्तूरी मृग (1972 ई०), (3) चतुर्दिक (1972 ई०), (4) मानसी गंगा (1986 ई०), (5) किस किस को नमन करूँ (1987 ई०), (6) क्या कहूँ कुछ कहा न जाय (1995 ई०), (7) खालिस मौज में (1998 ई०)।
- कुबेरनाथ राय रसधर्मा ललित निबन्धकार हैं। इनके प्रमुख निबन्ध संग्रह निम्नलिखित हैं—

  (1) प्रिया नीलकण्ठी (1968 ई०), (2) रस आखेटक (1970 ई०), (3) गंधमादन (1972 ई०), (4) विषाद योग (1973 ई०), (5) निषाद बाँसुरी (1974 ई०), (6) पर्ण मुकुट (1978 ई०), (7) महाकवि की तर्जनी (1979 ई०), (8) कामधेनु (1980 ई०), (9) पत्र मणिपुतुल के नाम (1980 ई०), (10) मन पवन की नौका (1982 ई०), (11) किरात नदी में चन्द्र मधु (1983 ई०), (12) दृष्टि अभिसार, (1984 ई०), (13) त्रेता का वृहद मास (1986 ई०), (14) मराल (1993 ई०), (15) उत्तर कुरु (1994 ई०), (16) वाणी का क्षीर सागर (1998 ई०), (17) अन्धकार में अग्नि शिखा (1998 ई०), (18) आगम की नाव (2002 ई०)।
- कुबेरनाथ राय का प्रथम निबन्ध संग्रह 'प्रिया नीलकंठी' है।

(2) ग्रामीण चेतना के निबन्ध

- ग्रामीण चेतना से अनुप्राणित हिन्दी के प्रमुख निबन्धकार निम्न हैं—

निबन्धकार — **निबन्ध-संग्रह**

रामदरश मिश्र—(1) कितने बजे हैं (1982 ई०), (2) बबूल और कैक्टस (1998 ई०), (3) घर परिवेश (2003 ई०), (4) छोटे-छोटे सुख (2006 ई०)।

विवेकी राय—किसानों का देश (1956 ई०), (2) गाँवों की दुनिया (1957 ई०), (3) त्रिधारा (1958 ई०), (4) फिर बैतलवा डाल पर (1962 ई०), (5) आस्था और चिन्तन (1991 ई०), (6) गँवई गंध गुलाब (1980 ई०), (7) नया गांव नाम (1984 ई०), (8) आम रास्ता नहीं है (1988 ई०), (9) जगत तपोवन सो कियो (1995 ई०), (10) जीवन अज्ञात का गणित है (2004 ई०)।

कृष्ण बिहारी मिश्र—(1) बेहया का जंगल (1981 ई०), (2) मकान उठ रहे हैं (1990 ई०), (3) सम्वुद्धि (1997 ई०), (4) आँगन की तलाश (1999 ई०)

श्रीराम परिहार—(1) आँच अलाव की (1989 ई०), (2) अँधेरे से उम्मीद (1994 ई०), (3) धूप का अवसाद (1998 ई०), (4) बजे तो बंशी, गूँजे तो शंख (1999 ई०), (5) ठिठके पंख पांखुरी पर (2002 ई०), (6) रसवंती बोलो तो (2002)।

अष्टभुजा प्रसाद शुक्ल—मिठउवा (1999 ई०)।

(3) विचार या चिन्तन प्रधान निबन्ध

- हिन्दी साहित्य अन्य प्रतिष्ठित निबन्धकार निम्नलिखित हैं—

निबन्धकार — **निबन्ध-संग्रह**

रामधारी सिंह 'दिनकर'—(1) मिट्टी की ओर (1946 ई०), (2) अर्द्धनारीश्वर (1952 ई०), (3) रेती के फूल (1954 ई०), (4) हमारी सांस्कृतिक एकता (1956 ई०), (5) वेणुवन (1958 ई०), (6) उजली आग (1956 ई०), (7) राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता (1958 ई०), (8) धर्म नैतिकता और विज्ञान (1959 ई०), (9) वट पीपल (1961 ई०), (10) साहित्य मुखी (1968 ई०), (11) आधुनिकता बोध (1973 ई०)।

अज्ञेय—(1) त्रिशंकु (1945 ई०), (2) सब रंग और कुछ राग (1956 ई०), (3) आत्मनेपद (1960 ई०), (4) आलबाल (1971 ई०), (5) लिखी कागद कोरे (1972 ई०), (6) अद्यतन (1977 ई०), (7) जोग लिखी (1977 ई०), (8) स्रोत और सेतु (1978 ई०), (9) युग संधियों पर (1982 ई०), (10) धार और किनारे (1982 ई०), (11) कहाँ है द्वारका (1982 ई०), (12) केन्द्र और परिधि (1984 ई०), (13) छाया का जंगल (1984 ई०), (14) सर्जना और सन्दर्भ (1985 ई०), (15) स्मृति छंदा (1989 ई०), (16) संवत्सर, (17) भवंती।

डॉ० रामविलास शर्मा—(1) प्रगति और परम्परा (1949 ई०), (2) साहित्य और संस्कृति (1949 ई०), (3) भाषा, साहित्य और संस्कृति (1954 ई०), (4) प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ (1954 ई०), (5) लोक जीवन और साहित्य (1955 ई०), (6) स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य (1956 ई०), (7) आस्था और सौन्दर्य (1961 ई०), (8) साहित्य स्थायी मूल्य और मूल्यांकन (1968 ई०), (9) भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा (1985 ई०), (10) परम्परा का मूल्यांकन (1981 ई०), (11) भाषा युग बोध और कविता (1981 ई०), कथा विवेचन और गद्य शिल्प (1982 ई०), (13) विराम चिह्न (1985 ई०)।

डॉ० भगीरथ मिश्र—(1) अध्ययन (1949 ई०), (2) साहित्य साधना और समाज (1950 ई०), (3) कला, साहित्य और समीक्षा (1963 ई०)।

डॉ० विजयेन्द्र स्नातक—(1) चिंतन के क्षण (1966 ई०), (2) विचार के क्षण (1970 ई०), (3) विमर्श के क्षण (1979 ई०)।

डॉ० नगेन्द्र—(1) विचार और अनुभूति (1949 ई०), (2) आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (1951 ई०), (3) विचार विश्लेषण (1955 ई०), (4) विचार और विवेचन (1959 ई०), (5) अनुसन्धान और आलोचना (1961 ई०), (6) आस्था के चरण (1968 ई०), (7) आलोचक की आस्था (1966 ई०)।

अमृतलाल नागर—(1) साहित्य और संस्कृति (1986 ई०)।

रामरतन भटनागर—(1) सामयिक जीवन और साहित्य (1963 ई०)।

डॉ० रघुवंश—(1) साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य (1963 ई०), (2) समसामयिकता और आधुनिक हिन्दी कविता (1972 ई०), (3) आधुनिकता और सर्जनशीलता (1980 ई०)।

डॉ० नामवर सिंह—(1) बकलम खुद (1951 ई०), (2) वाद विवाद संवाद (1989 ई०)।

धर्मवीर भारती—(1) ठेले पर हिमालय (1958 ई०), (2) पश्यन्ती (1969 ई०), (3) कहनी-अनकहनी (1970 ई०), (4) कुछ चेहरे कुछ चिन्तन (1995 ई०), (5) शब्दिता (1977 ई०), (6) मानव मूल्य और साहित्य (1960 ई०)।

विष्णुकान्त शास्त्री—(1) कुछ चंदन की कुछ कपूर की (1971 ई०), (2) चिन्तन मुद्रा (1977 ई०), (3) अनुचिन्तन (1986 ई०), (4) आधुनिक हिन्दी साहित्य के विशिष्ट पक्ष (2004 ई०)।

निर्मल वर्मा—(1) चीड़ों पर चाँदनी (1964 ई०), (2) हर बारिश में (1970 ई०), (3) शब्द और स्मृति (1976 ई०), (4) कला का जोखिम (1981 ई०), (5) ढलान से उतरते हुए (1985 ई०), (6) भारत और यूरोप प्रतिश्रुति के क्षेत्र (1991 ई०), (7) शताब्दी के ढलते वर्षों में (1995 ई०), (8) दूसरे शब्दों में (1997 ई०), (9) आदि अंत और आरम्भ (2001 ई०)।

रमेशचन्द्र शाह—(1) रचना के बदले (1967 ई०), (2) शैतान के बहाने (1980 ई०), (3) आड़ू का पेड़ (1984 ई०), (4) सबद निरंतर (1987 ई०), (5) भूलने के विरुद्ध (1990 ई०), (6) पढ़ते पढ़ते (1990 ई०), (7) स्वाधीन इस देश में (1995 ई०), (8) स्वधर्म और कालगति (1996 ई०)।

श्री रामअवध शास्त्री—(1) डायरी के उड़ते पृष्ठ (1982 ई०), (2) वृन्दावन श्याम कौन तू गोरी (1991 ई०), (3) कास फूल गए (1999 ई०)।

डॉ० दरवेश सिंह—(1) भाव चिन्तन (1994 ई०), (2) विजन वन की सूर्यमुख।

माताप्रसाद त्रिपाठी—(1) शब्द और धरती (1979 ई०)।

विश्वनाथ प्रसाद—(1) आदमी की लालटेन (1990 ई०), (2) चौरे का दिया (2000 ई०)।

महेन्द्रनाथ पाण्डेय—(1) मैं और मेरी छाया (1984 ई०)।

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय—(1) एक भोर जुगनू की (1993 ई०), (2) अँधेरे आलोक पुत्र (1994 ई०), (3) नदी तुम बोलती क्यों हो (1996 ई०), (4) फिर फूले पलाश तुम, (5) सुनो देवता (1997 ई०), (6) प्रभास व सीपियाँ (1999 ई०), (7) बैठे हैं आस लिए (1999 ई०), (8) परदेस के पेड़ (2002 ई०)।

पुरुषोत्तम अग्रवाल—(1) विचार का अनन्त

- सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने 'कुट्टीचातन' उपनाम से 'सबरंग और कुछ राग' निबन्ध संग्रह की रचना की।
- डॉ० नगेन्द्र के समस्त निबन्धों का संग्रह 'आस्था के चरण' शीर्षक से प्रकाशित है।

(4) व्यंग्यात्मक निबन्ध

- हिन्दी के महत्वपूर्ण व्यंग्य निबन्धकार निम्नलिखित हैं—

निबन्धकार — **निबन्ध-संग्रह**

प्रभाकर माचवे—(1) खरगोश के सींग (1951 ई०), (2) सन्तुलन (1954 ई०), (3) बेरंग (1955 ई०)।

अमृत राय—(1) रम्या (1967 ई०), (2) बतरस (1973 ई०), (3) आनंदकम् (1977 ई०), (4) विजिट इण्डिया, (5) बाइस्कोप (1989 ई०)।

कृष्णदेव प्रसाद गौड़—(1) हुक्का पानी (1957 ई०)।

गोपाल प्रसाद व्यास—(1) मैंने कहा (1948 ई०), (2) कुछ झूठ कुछ सच (1958 ई०), (3) तो क्या होता (1969 ई०), (4) हलो हलो (1969 ई०)।

बरसाने लाल चतुर्वेदी—(1) बुरे फँसे (1975 ई०), (2) भोला पण्डित की बैठक (1975 ई०), (3) नेता और अभिनेता (1977 ई०), (4) टालू मिक्सचर (1978 ई०), (5) कुल्हड़ में हुल्लड़ (1979 ई०), (6) अफवाह (1980 ई०), (7) मिस्टर चोखे लाल (1980 ई०), (8) नेताओं की नुमाइश (1983 ई०), (9) मुसीबत है (1983 ई०), (10) खबर अपनी और परायों की (1986 ई०)।

विनोद शर्मा—(1) राजभवन की सिगरेट रानी।

हरिशंकर परसाई—(1) पगडंडियों का जमाना (1966 ई०), (2) जैसे उनके दिन फिरे (1963 ई०), (3) सदाचार की ताबीज (1967 ई०), (4) शिकायत मुझे भी है (1970 ई०), (5) ठिठुरता हुआ गणतंत्र (1970 ई०), (6) अपनी-अपनी बीमारी (1972 ई०), (7) वैष्णव की फिसलन (1967 ई०), (8) विकलांग श्रद्धा का दौर (1980 ई०), (9) भूत के पाँव पीछे, (10) बेईमानी की परत, (11) सुनो भाई साधो (1983 ई०), (12) तुलसीदास चंदन घिसे (1986 ई०), (13) कहत कबीर (1987 ई०), (14) हँसते हैं रोते हैं, (15) तब की बात और थी, (16) ऐसा भी सोचा

जाता है (1993 ई०), (17) पाखण्ड का अध्यात्म (1998 ई०), (18) आवारा भीड़ के खतरे (1998 ई०), (19) प्रेमचंद के फटे जूते।

श्रीलाल शुक्ल—(1) अंगद का पाँव (1958 ई०), (2) यहाँ से वहाँ (1970 ई०), (3) मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ (1979 ई०), (4) कुछ जमीन पर कुछ हवा में (1993 ई०), (5) आओ बैठ लें कुछ देर (1995 ई०), (6) अगली शताब्दी का शहर (1996 ई०), (7) खबरों की जुगाली (2006 ई०)।

केशवचन्द्र वर्मा—(1) मुर्ग छाप हीरो, (2) अफलातूनों का शहर (1974 ई०), (3) वृहन्नला का वक्तव्य (1974 ई०)।

रवीन्द्रनाथ त्यागी—(1) खुली धूप में नाव पर (1963 ई०), (2) भित्ति चित्र (1966 ई०), (3) मल्लिनाथ की परम्परा (1969 ई०), (4) कृष्णवाहन की कथा (1971 ई०), (5) देवदारु के पेड़ (1973 ई०), (6) शोक सभा (1974 ई०), (7) अतिथि कक्ष (1977 ई०), (8) सुन्दर कली (1978 ई०), (9) फूलों वाले कैक्टस (1978 ई०), (10) ऋतु वर्णन (1979 ई०), (11) आत्मलेख (1979 ई०), (12) भद्र पुरुष (1980 ई०), (13) इस देश के लोग (1982 ई०), (14) पदयात्रा (1985 ई०), (15) पराजित पीढ़ी के नाम (1988 ई०), (16) विष कन्या (1990 ई०), (17) गणतंत्र दिवस की शोभायात्रा (1991 ई०), (18) देश विदेश की कथा (1994 ई०), (19) इतिहास का शव (1993 ई०), (20) शुक्ल पक्ष (1994 ई०), (21) चंपा कली (1965 ई०), (22) भाद्रपद की साँझ (1996 ई०), (23) लाल पीले फूल (1997 ई०), (24) पूरब खिले पलाश, (25) कबूतर कौए और तोते (2001 ई०), (26) एक चिरन्तन कथा (2004 ई०)।

शरद जोशी—(1) यथा संभव, (2) जीप पर सवार इल्लियाँ (1971 ई०), (3) हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, (4) किसी बहाने (1971 ई०), (5) रहा किनारे बैठ (1972 ई०), (6) तिलस्म (1973 ई०), (7) दूसरी सतह (1975 ई०), (8) यत्र तत्र सर्वत्र (2000 ई०)।

सुदर्शन मजीठिया—(1) इंडिकेट बनाम सिंडिकेट (1970 ई०), (2) मुख्यमंत्री का डंडा (1974 ई०), (3) टेलीफोन की घंटी से (1983 ई०), (4) डिस्को कल्चर (1985 ई०)।

नरेन्द्र कोहली—(1) एक और लाल तिकोन (1970 ई०), (2) जगाने का अपराध (1973 ई०), (3) आधुनिक लड़की की पीड़ा (1978 ई०), (4) त्रासदियाँ (1982 ई०), (5) परेशानियाँ (1987 ई०), (6) किसे जगाऊँ (1996 ई०), (7) आत्मा की पवित्रता (1996 ई०), (8) गणतंत्र का गणित (1997 ई०)।

गोपाल चतुर्वेदी—(1) अफसर की मौत (1985 ई०), (2) दुम की वापसी (1987 ई०), (3) खंभों के खेल (1990 ई०), (4) फाइल पढ़ि पढ़ि

(1991 ई०), (5) दाँत में फँसी कुरसी (1996 ई०), (6) गंगा से गटर तक (1997 ई०), (7) राम झरोखा बैठि के (2001 ई०), (8) नैतिकता की लँगड़ी दौड़ (2002 ई०), (9) भारत और भैंस (2003 ई०), (10) फार्म हाउस के लोग (2004 ई०), (11) जुगाड़पुर के जुगाड़ू (2005 ई०)।

ज्ञान चतुर्वेदी—(1) दंगे में मुर्गा (1998 ई०), (2) प्रेत कथा, (3) मेरी इक्यावन व्यंग्यात्मक रचनाएँ, (4) बिसात बिछी है, (5) खामोश/नंगे हमाम में है (2003 ई०), (6) जो घर फूँके (2006 ई०)।

- श्रीनारायण चतुर्वेदी ने विनोद शर्मा के छद्म नाम से निवन्ध लिखा है।

हिन्दी आलोचना का विकास

भारतेन्दु युग

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिन्दी का प्रथम आलोचक माना जाता है।
- आधुनिक हिन्दी का प्रथम सैद्धान्तिक आलोचना भारतेन्दु कृत 'नाटक' (1883) को माना जाता है।
- डॉ० वच्चन सिंह ने लिखा है, "भट्टजी हिन्दी के पहले आलोचक हैं और 'संयोगिता-स्वयंवर' पर लिखी गयी उनकी आलोचना पहली आलोचना (1886) है।"
- वालकृष्ण भट्ट ने सन् 1886 में 'हिन्दी प्रदीप' में लाला श्रीनिवासदास कृत 'संयोगिता-स्वयंवर' नाटक का 'सच्ची समालोचना' शीर्षक से आलोचना की।
- वालकृष्ण भट्ट को आधुनिक हिन्दी में व्यावहारिक आलोचना का जनक माना जाता है।
- वदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने 'आनन्द कादम्बिनी' में सन् 1885 में वावू गदाधर सिंह कृत 'वंग विजेता' नामक बांग्ला उपन्यास के हिन्दी अनुवाद की आलोचना की।
- सन् 1886 में वदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने लाला श्रीनिवासदास कृत 'संयोगिता-स्वयंवर' को 'आनन्द कादम्बिनी' में आलोचना की।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "समालोचना का सूत्रपात हिन्दी में एक प्रकार से भट्टजी और चौधरी साहव ने ही किया।"

द्विवेदी युग

- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को हिन्दी का प्रथम लोकवादी आचार्य माना जाता है।
- आधुनिक हिन्दी आलोचना में 'तुलनात्मक आलोचना' का जनक पद्म सिंह शर्मा को माना जाता है।
- सर्वप्रथम सन् 1907 ई० की 'सरस्वती' में पद्मसिंह शर्मा ने 'विहारी' और फारसी कवि 'सादी' की तुलनात्मक आलोचना की।
- सन् 1910 में मिश्र वन्धुओं ने प्रसिद्ध आलोचना ग्रन्थ 'हिन्दो नवरत्न' की रचना की।

- 'हिन्दी नवरत्न' में निम्नलिखित कवियों को स्थान दिया गया हैं—(1) गोस्वामी तुलसीदास, (2) महात्मा सूरदास, (3) महाकवि देवदत्त 'देव', (4) महाकवि बिहारीलाल, (5) त्रिपाठी बन्धु—भूषण और मतिराम, (6) महाकवि केशवदास, (7) महात्मा कबीरदास, (8) महाकवि चन्दबरदाई और, (9) भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र।
- 'हिन्दी नवरत्न' में मिश्र बन्धुओं ने सर्वप्रथम 'देव बड़े कि बिहारी' विवाद को प्रारम्भ किया। इन्होंने देव को श्रेष्ठ बताते हुए तुलसी और सूर के समकक्ष स्थान दिया।
- 'देव बड़े कि बिहारी' विवाद में भाग लेने वाले आलोचक और कृतियाँ निम्न हैं—

आलोचक	आलोचना	बड़े कवि
पद्मसिंह शर्मा	बिहारी सतसई : तुलनात्मक अध्ययन (1918)	बिहारी
कृष्ण बिहारी मिश्र	देव और बिहारी	देव
लाला भगवानदीन	बिहारी और देव	बिहारी

- द्विवेदी युग में रीतिकालीन लक्षण-ग्रन्थों की परम्परा में प्रकाशित होने वाले शास्त्रीय ग्रन्थ निम्न हैं—

आलोचक	आलोचना
ज्वाला स्वरूप	रुद्रपिंगल
प्रतापनारायण सिंह	रस सुकुमाकर
जगन्नाथ प्रसाद 'भानु'	काव्य प्रभाकर, छंद प्रभाकर
जानकी प्रसाद	काव्य सुधाकर
कवि राज मुरारी दान	जसवंत-जसो-भूषण
जगन्नादास रत्नाकर	घनाक्षरी नियम रत्नाकर
लाला भगवानदीन	अलंकार मंजूषा, व्यंग्यार्थ मंजूषा
सीताराम शास्त्री	साहित्य सिद्धान्त
कन्हैयालाल पोद्दार	काव्यकल्पद्रुम, रसमंजरी, अलंकार मंजरी
अर्जुनदास केडिया	भारती भूषण
अयोध्या सिंह उपाध्याय	रसकलश (1931)
शुकदेव बिहारी मिश्र	साहित्य पारिजात
बिहारीलाल भट्ट	साहित्य सागर
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	काव्यांग कौमुदी
रामदहिन मिश्र	काव्य दर्पण

- जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने पोप के 'एस्से ऑन क्रिटिसिज्म' का पद्यात्मक अनुवाद 'समलोचनादर्श' शीर्षक से किया।
- हिन्दी में शोध एवं अनुसन्धानपरक समीक्षा का विकास 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' के प्रकाशन से माना जाता है।
- सन् 1921 ई० में सर्वप्रथम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में परास्नातक (एम०ए०) के पाठ्यक्रम में हिन्दी को स्थान दिया गया।

- सन् 1921 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रथम बार हिन्दी अध्यापक के रूप में बाबू श्यामसुन्दरदास की नियुक्ति हिन्दी के अध्ययन और विकास को प्रेरणा देने के उद्देश्य से की गई।
- डॉ० श्यामसुन्दरदास के मार्ग निर्देशन में पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने हिन्दी का प्रथम शोध 'हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय' शीर्षक से लिखा।
- हिन्दी में एकेडेमिक आलोचना (अध्यापकीय आलोचना) का सूत्रपात बाबू श्यामसुन्दरदास ने किया।
- श्यामसुन्दरदास की प्रमुख आलोचनात्मक रचनाएँ निम्न हैं—(1) साहित्यालोचन (1922), (2) भाषा विज्ञान (1923), (3) हिन्दी भाषा का विकास (1924), (4) हिन्दी भाषा और साहित्य (1930), (5) रूपक रहस्य (1931), (6) भाषा रहस्य (1935)

शुक्ल युग : विशुद्ध आलोचना

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की प्रथम सैद्धान्तिक आलोचना 'काव्य में रहस्यवाद' (1929) निबन्ध को माना जाता है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियाँ निम्न हैं—(1) गोस्वामी तुलसीदास (1923), (2) जायसी ग्रन्थावली (1924), (3) भ्रमर-गीतसार (1925), (4) रसमीमांसा (1949)।
- 'रसमीमांसा' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की सैद्धान्तिक आलोचना है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आलोचना के क्षेत्र में 'विरुद्धों का सामंजस्य' सिद्धान्त प्रवर्तन किया।
- आचार्य शुक्ल आनन्द की अभिव्यक्ति के आधार पर काव्य के दो विभाग करते है—
  (1) आनन्द की साधानावस्था या प्रयत्न-पक्ष को लेकर चलने वाले। जैसे—रामचरित मानस, पद्मावत (उत्तरार्द्ध), हम्मीररासो, पृथ्वीराज रासो, छत्र प्रकाश इत्यादि प्रबन्ध काव्य।
  (2) आनन्द की सिद्धावस्था या उपभोग-पक्ष को लेकर चलने वाले। जैसे—सूरसागर, कृष्णभक्त कवियों की पदावली, बिहारी सतसई, रीतिकाल के कवियों के फुटकल शृंगारी पद्य, रास पंचाध्यायी इत्यादि वर्णनात्मक काव्य।
- आचार्य शुक्ल ने अंग्रेजी के निम्न रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद किया है—

अनुवाद	मूल रचना	मूल लेखक
कल्पना का आनन्द	एसेज ऑन इमेजिनेशन	एडिसन
साहित्य	लिटरेचर	जॉन हेनरी न्यूमैन
आदर्श जीवन	प्लेन लिविंग हाई थिंकिंग	जान हेनरी न्यूमैन
विश्व प्रपंच	रिड्ल ऑफ द यूनिवर्स	हैकल

- जयशंकर प्रसाद ने 'काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध' में कुछ आलोचनात्मक निबन्ध लिखे हैं।
- जयशंकर प्रसाद ने लिखा है, "काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है।.. आत्मा की मनन शक्ति की वह असाधारण अवस्था जो श्रेय सत्य को उसके मूल

चारुत्व में सहसा ग्रहण कर लेती है, काव्य में संकल्पनात्मक अनुभूति कही जा सकती है।"

- सुमित्रानन्दन पंत प्रथम छायावादी कवि हैं जिन्होंने छायावादी कविता के बचाव में आलोचना लिखी।
- सुमित्रानन्दन पंत के 'पल्लव' के 'प्रवेश' को छायावाद का घोषणा-पत्र माना जाता है।
- पंत के अनुसार, "कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।"
- पंत की अन्य आलोचना—(1) गद्य पद्य (1953), (2) शिल्प और दर्शन (1961) तथा (3) छायावाद : पुनर्मूल्यांकन (1965) है।
- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने लिखा है, "कविता परिवेश की पुकार है।"
- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियाँ हैं—(1) रवीन्द्र कविता कानन, (2) पंत और पल्लव (1928), (3) प्रबन्ध पद्य।
- निराला ने 'कवित्त' को हिन्दी का जातीय छन्द कहा है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुवर्ती अन्य आलोचक निम्न हैं—

आलोचक	आलोचना
कृष्णशंकर शुक्ल	(1) केशव की काव्यकला, (2) कविवर रत्नाकर
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	(1) काव्यांग कौमुदी, (2) बिहारी की वाग्विभूति, (3) बिहारी, (4) वाङ्मय विमर्श, (5) गोसाईं तुलसीदास, (6) हिन्दी में नाट्य साहित्य का विकास।
रामकृष्ण शुक्ल	प्रसाद की नाट्यकला
व्रजरत्नदास	हिन्दी-नाट्य साहित्य
रामकुमार वर्मा	कबीर का रहस्यवाद
जनार्दन मिश्र	विद्यापति
कृष्णानन्द गुप्त	प्रसादजी के दो नाटक
अखौरी गंगा प्रसाद	पद्माकर की काव्य-साधना
भुवनेश्वरनाथ मिश्र	मीरा की प्रेम साधना
गिरिजादत्त शुक्ल	(1) महकवि हरिऔध, (2) गुप्तजी की काव्यधारा
रामनाथ सुमन	प्रसादजी की काव्यकला

- शुक्ल युग के कुछ महत्वपूर्ण शास्त्रीय आलोचक निम्न हैं—

आलोचक	आलोचना
जगन्नाथ प्रसाद भानु	(1) रस रत्नाकर, (2) अलंकार दर्पण
गुलाब राय	(1) नवरस, (2) सिद्धान्त और अध्ययन (1946), (3) काव्य के रूप (1947)।
रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'	(1) अलंकार पीयूष, (2) नाट्य दर्पण, (3) आलोचनादर्श।
किशोरीदास वाजपेयी	रस और अलंकार
कन्हैयालाल गुप्त	चरित्र चित्रण
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	(1) विश्व-साहित्य, (2) विश्व साहित्य विमर्श
सेठ गोविन्द दास	नाट्यकला मीमांसा

पुरुषोत्तमलाल	आदर्श और यथार्थ
विनोदशंकर व्यास	कहानी कला
लक्ष्मीनारायण सुधांशु	काव्य में अभिव्यंजनावाद (1936), (2) जीवन तत्त्व और काव्य के सिद्धान्त (1942)।
डॉ० रामकुमार वर्मा	(1) साहित्य शास्त्र (1955), (2) साहि[त्य] समालोचना (1938)।

शुक्लोत्तर युग

- आचार्य शान्तिप्रिय द्विवेदी महत्वपूर्ण प्रभाववादी समीक्षक हैं।
- शान्तिप्रिय द्विवेदी ने गाँधी और रवीन्द्र की मानवतावादी दृष्टि को 'छायावाद' क[ी] केन्द्रीय चेतना माना है।
- शान्तिप्रिय द्विवेदी की प्रमुख समीक्षा कृति निम्न है—(1) सामयिकी, (2) हमा[रे] साहित्य निर्माता, (3) संचारिणी।
- आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी को समन्वयशील, स्वच्छन्दतावादी एवं सौष्ठववादी आलोचक माना जाता है।
- नन्ददुलारे वाजपेयी ने सर्वप्रथम छायावाद को 'मानवीय और सांस्कृतिक' प्रेरणा के रूप में व्याख्यायित किया।
- नन्ददुलारे वाजपेयी की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियाँ निम्नांकित हैं—
  (1) हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी (1942), (2) जयशंकर प्रसाद (1940), (3) प्रेमचंद, (4) आधुनिक साहित्य (1950), (5) महाकवि सूरदास (1952), (6) महाकवि निराला (1965), (7) नयी कविता (1973), (8) कवि सुमित्रानंदन पंत (1976), (9) रस सिद्धान्त (1977), (10) साहित्य का आधुनिक युग (1978), (11) आधुनिक साहित्य : सृजन और समीक्षा (1978), (12) रीति और शैली (1979), (13) नया साहित्य नये प्रश्न।
- डॉ० नगेन्द्र को रसवादी आलोचक माना जाता है। इनकी आलोचना में भारतीय और पाश्चात्य का समन्वय मिलता है।
- डॉ० नगेन्द्र की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियाँ निम्नांकित हैं—
  (1) सुमित्रानन्दन पंत, (2) साकेत : एक अध्ययन, (3) देव और उनकी कविता, (4) रीतिकाव्य की भूमिका, (5) राम की शक्तिपूजा : निराला की कालजयी कृति, (6) हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, (7) शैली विज्ञान, (8) आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ, (9) भारतीय समीक्षा और आचार्य शुक्ल की काव्य दृष्टि, (10) रस सिद्धान्त, (11) नयी समीक्षा : नये सन्दर्भ, (12) कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ, (13) आधुनिक हिन्दी नाटक, (14) भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, (15) सियारामशरण गुप्त, (16) भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका, (17) काव्य बिम्ब, (18) साहित्य का समाजशास्त्र।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को चिन्मुखी मानवता के अन्वेषक रूप में जाना जाता है।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक-चेतना सम्पन्न मानवतावादी आलोचक हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदी की प्रमुख आलोचनात्मक रचनाएँ निम्न हैं—

(1) सूर साहित्य (1930), (2) हिन्दी साहित्य की भूमिका (1940), (3) कबीर (1941), (4) हिन्दी साहित्य का आदिकाल (1952), (5) सहज साधना (1963), (6) कालिदास की लालित्य योजना (1965), (7) मध्यकालीन बोध का स्वरूप (1970)।

शुक्लोत्तर युग के अन्य आलोचक निम्नलिखित हैं—

आलोचक	आलोचना
डॉ० जगन्नाथ शर्मा	(1) कहानी का रचना विधान, (2) हिन्दी गद्य-शैली का विकास।
डॉ० इन्द्रनाथ मदान	(1) हिन्दी कहानी अपनी जबानी, (2) कविता और कविता, (3) प्रेमचन्द : एक विवेचन, (3) समकालीन आलोचना।
डॉ० देवराज	(1) छायावाद का पतन, (2) साहित्य चिन्ता, (3) आधुनिक समीक्षा, (4) प्रतिक्रियाएँ।
डॉ० देवराज उपाध्याय	(1) साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन (1964)
इलाचन्द्र जोशी	(1) साहित्य सर्जना (1940), (2) विवेचना (1948), (3) विश्लेषण (1954), (4) देखा परखा (1957)।
नलिन विलोचन शर्मा	(1) दृष्टिकोण, (2) मानदण्ड, (3) साहित्य का इतिहास दर्शन, (4) हिन्दी उपन्यास : विशेषतः प्रेमचन्द, (5) दिनकर और उनकी काव्य कृतियाँ, (6) छायावाद और प्रगतिवाद।

हिन्दी आलोचना में इलाचन्द्र जोशी को मनोविश्लेषणवादी आलोचना का जनक माना जाता है।

शुक्लोत्तर युग की महत्वपूर्ण 'शास्त्रीय समीक्षा' निम्नलिखित है—

आलोचक	आलोचना
डॉ० भगीरथ मिश्र	(1) काव्यशास्त्र (1963), (2) काव्य मनीषा (1965), (3) पाश्चात्य काव्यशास्त्र (1988),।
राममूर्ति त्रिपाठी	(1) औचित्य दर्शन (1964), (2) रस विमर्श (1965), (3) लक्षणा और उसका हिन्दी काव्य में प्रसार (1966), (4) काव्यतत्त्व विमर्श (1980), (5) भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज (1985), (6) भारतीय काव्य विमर्श (2001)।
कुमार विमल	सौन्दर्य शास्त्र के तत्त्व (1967)
लीलाधर गुप्त	पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धान्त (1952)
डॉ० देवराज उपाध्याय	रोमांटिक साहित्यशास्त्र (1951)
डॉ० केसरीनारायण शुक्ल	पाश्चात्य काव्यशास्त्र
डॉ० रवीन्द्र सहाय वर्मा	पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिन्दी पर उसका प्रभाव
जगदीशचन्द्र जैन	पाश्चात्य समीक्षा दर्शन (1969)
शंकरदेव अवतरे	काव्यांग प्रक्रिया (1977)
भगीरथ दीक्षित	अभिनव साहित्य चिन्तन (1977)
रवि प्रकाश	हिन्दी काव्यशास्त्र में रस-स्वरूप (1981)
प्रेमकान्त टण्डन	साधारणीकरण और सौन्दर्यानुभूति के प्रमुख सिद्धान्त (1983 ई०)।
देवेन्द्रनाथ शर्मा	पाश्चात्य काव्य-शास्त्र (1984)
विजेन्द्रनाथ सिंह	भारतीय काव्य समीक्षा में वक्रोक्ति सिद्धान्त (1984)
शिवकुमार मिश्र	मार्क्सवादी साहित्य-चिन्तन (1973 ई०)

□ शुक्लोत्तर युग की महत्वपूर्ण 'अनुसन्धानपरक आलोचना' अग्रांकित है—

आलोचक	आलोचना
डॉ० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'	हिन्दी काव्यशास्त्र का विकास (1973)
डॉ० बलदेव प्रसाद मिश्र	तुलसी दर्शन (1938)
डॉ० माता प्रसाद गुप्त	तुलसीदास (1940)
डॉ० केसरीनारायण शुक्ल	आधुनिक काव्यधारा (1940)
डॉ० श्रीकृष्णलाल	आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास (1941)
डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा	प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन (1943)
डॉ० दीनदयाल गुप्त	अष्टछाप और बल्लभ सम्प्रदाय (1944)
डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा	सूरदास (1945)
डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	(1) हिन्दी साहित्य और उसकी सांस्कृतिक भूमिका, (2) आधुनिक हिन्दी साहित्य (1940)
कमलकिशोर गोयनका	प्रेमचंद का जीवन (1984)
डॉ० भगीरथ मिश्र	(1) हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास (1947)
डॉ० कामिल बुल्के	(1) रामकथा—उत्पत्ति और विकास (1949)
डॉ० हीरालाल दीक्षित	आचार्य केशव (1950)
डॉ० भोलाशंकर व्यास	ध्वनि-सम्प्रदाय और उसके सिद्धान्त (1952)
डॉ० धर्मवीर भारती	सिद्ध साहित्य (1953)
डॉ० शम्भुनाथ सिंह	हिन्दी में महाकाव्य का स्वरूप विकास (1955)
डॉ० देवराज उपाध्याय	आधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य और मनोविज्ञान (1955)
डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित	काव्य में रस (1956)
डॉ० विनयमोहन शर्मा	हिन्दी को मराठी सन्तों की देन (1956)
डॉ० शिवप्रसाद सिंह	सूर-पूर्व ब्रजभाषा काव्य (1957)
डॉ० उदयभानु सिंह	तुलसी दर्शन मीमांसा (1959)
डॉ० मनोहर काले	आधुनिक हिन्दी और मराठी काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन (1961)
विजयपाल सिंह	केशव का आचार्यत्व (1964)
श्रीराम शर्मा	दक्खिनी हिन्दी का साहित्य (1970)
राममूर्ति त्रिपाठी	हिन्दी निर्गुण साहित्य में तांत्रिक दृष्टि का संचार (1972)

ाक्सवादी या प्रगतिवादी आलोचना

। हिन्दी का प्रथम मार्क्सवादी आलोचक शिवदान सिंह चौहान को माना जाता है।

। शिवदान सिंह चौहान द्वारा लिखा 'भारत में प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता' (1937) शीर्षक निबन्ध को प्रथम मार्क्सवादी समीक्षा स्वीकार किया जाता है।

हिन्दी के महत्वपूर्ण प्रगतिवादी (मार्क्सवादी) समीक्षक निम्नलिखित हैं—

आलोचक	आलोचना

प्रकाशचन्द्र गुप्त—(1) नया हिन्दी साहित्य (1941), (2) आधुनिक हिन्दी साहित्य—एक दृष्टि (1955), (3) हिन्दी-साहित्य की जनवादी परम्परा (1953), (4) साहित्यधारा (1955)।

शमशेर बहादुर सिंह—(1) दो आब (1948), (2) कुछ गद्य रचनाएँ (1988); (3) कुछ और गद्य रचनाएँ (1989)।

रामविलास शर्मा—प्रेमचंद (1941), (2) भारतेन्दु युग (1943), (3) निराला (1946), (4) प्रगति और परम्परा (1949), (5) साहित्य और संस्कृति (1949), (6) प्रेमचंद और उनका युग (1952), (7) प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ, (8) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना (1955), (9) भाषा और समाज (1961), (10) साहित्य : स्थायी मूल्य और मूल्यांकन (1968), (11) निराला की साहित्य साधना (तीन भाग-1969, 1972, 1976), (12) भारतेन्दु युग और हिन्दी साहित्य की विकास-परम्परा (1975), (13) महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण (1977), (14) नयी कविता और अस्तित्ववाद (1978), (15) हिन्दी जाति का साहित्य (1986), (16) भारतीय सौन्दर्य बोध और तुलसीदास (2001)।

मुक्तिबोध—(1) कामायनी एक पुनर्विचार (1961), (2) नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबन्ध (1964), (3) नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र (1971)।

शिवदान सिंह चौहान—(1) प्रगतिवाद (1964), (2) साहित्य की परख (1946), (3) हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष (1954), (4) साहित्यानुशीलन (1955), (5) आलोचना के मान (1958), (6) साहित्य की समस्याएँ (1958), (7) परिप्रेक्ष्य को सही करते हुए (1999)।

नेमिचन्द्र जैन—(1) अधूरे साक्षात्कार (1966), (2) रंगदर्शन (1967), (3) बदलते परिप्रेक्ष्य (1968), (4) जनांतिक (1981), (5) भारतीय नाट्य परम्परा (1989), (6) दृश्य-अदृश्य (1993), (7) रंग-परम्परा (1996), (8) रंग कर्म की भाषा (1996), (9) तीसरा पाठ (1998)।

अमृतराय—(1) नयी समीक्षा (1943), (2) सह चिंतन (1967), (3) आधुनिक भावबोध की संज्ञा (1972), (4) विचारधारा और साहित्य (1984)।

रांगेय राघव—(1) आधुनिक हिन्दी कविता में विषय और शैली (1962), (2) आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और शृंगार (1961), (3) काव्य, कला और शास्त्र, (1955), (4) प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड (1954),

(5) समीक्षा और आदर्श (1955), (6) काव्य यथार्थ और प्रगति (1955), (7) काव्य के मूल विवेच्य।

नामवर सिंह—(1) हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग (1952), (2) छायावाद (1955), (3) इतिहास और आलोचना (1957), (4) आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ (1962), (5) कहानी : नई कहानी (1965), (6) कविता के नये प्रतिमान (1968), (7) दूसरी परम्परा की खोज (1982), (8) वाद विवाद संवाद (1989), (9) आलोचक के मुख से (2005)।

विश्वम्भरनाथ उपाध्याय—(1) पंतजी का नूतन काव्य और दर्शन (1955), (2) हिन्दी को दार्शनिक पृष्ठभूमि (1957), (3) निराला की साहित्य-साधना (1958), (4) आधुनिक कविता : सिद्धान्त और समीक्षा (1960), (5) कबीरदास (1961), (6) समकालीन सिद्धान्त और साहित्य (1973), (7) समकालीन कविता की भूमिका (1973), (8) उजले और उबलते प्रश्न (1976), (9) स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य (1978), (10) भारतीय काव्यशास्त्र का द्वंद्वात्मक आलोक में अध्ययन (1980), (11) मीमांसा और पुनर्मूल्यांकन (1986), (12) समकालीन मार्क्सवाद (1987), (13) सिद्ध सरहपा (2004), (14) भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास (2005)।

रमेश कुंतल मेघ—(1) मिथक और स्वप्न : 'कामायनी' की मनस्सौन्दर्य सामाजिक भूमिका (1962), (2) आधुनिक बोध और आधुनिकीकरण (1969), (3) मध्यकालीन रस दर्शन और समकालीन सौन्दर्यबोध (1968), (4) तुलसी : आधुनिक वातायन से (1973), (5) कलाशास्त्र और मध्यकालीन भाषिकी क्रांतियाँ, (6) सौन्दर्य, मूल्य और मूल्यांकन (1975), (7) क्योंकि समय एक शब्द है (1975), (8) अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा (1977), (9) साक्षी है सौन्दर्य प्राश्निक (1980), (10) 'कामायनी' पर नयी किताब।

शिवकुमार मिश्र—(1) कामायनी और प्रसाद की कविता गंगा (1954), (2) वृन्दावन लाल वर्मा : उपन्यास और कला (1956), (3) नया हिन्दी काव्य (1962), (4) आधुनिक कविता और युग दृष्टि (1966), (5) प्रगतिवाद (1966), (6) मार्क्सवादी साहित्य चिन्तन : इतिहास और सिद्धान्त (1973), यथार्थवाद (1975), (8) साहित्य और सामाजिक सन्दर्भ (1977), (9) प्रेमचन्द : विरासत का सवाल (1981), (11) भक्ति काव्य और लोक जीवन (1983), (12) हिन्दी आलोचना की परम्परा और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (1986), (13) आलोचना के प्रगतिशील आयाम (1987)।

विश्वनाथ त्रिपाठी—(1) हिन्दी आलोचना (1970), (2) लोकवादी तुलसीदास (1974), (3) मीरा का काव्य (1979), (4) देश के इस दौर में, (5) हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास, (6) पेड़ का हाथ (केदारनाथ अग्रवाल)।

धनंजय वर्मा—आस्वाद के धरातल (1969), (2) निराला काव्य का पुनर्मूल्यांकन (1973), हस्तक्षेप (1975), (3) आलोचना की रचना यात्रा (1978), (4) आधुनिक कविता के बारे में तीन अध्याय (1984), (5) आधुनिकता

के प्रतिरूप (1986), (6) हिन्दी कहानी का रचनाशास्त्र (1998), (7) हिन्दी कहानी का सफरनामा (2001)।

नंदकिशोर नवल—(1) कविता की मुक्ति (1980), (2) हिन्दी आलोचना का विकास (1981), (3) प्रेमचंद का सौन्दर्यशास्त्र (1982), (4) शब्द जहाँ सक्रिय हैं (1984), (5) यथा प्रसंग (1992), (6) मुक्तिबोध : ज्ञान और संवेदना (1993), (7) समकालीन काव्ययात्रा (1994), (8) दृश्यालेख (1995), (9) निराला कृति से साक्षात्कार (दो भाग-1997, 2000), (10) रचना का पक्ष (2000), (11) शताब्दी की कविता (2001), (12) पार्श्वच्छवि (2002), (13) निराला काव्य की छवियाँ (2002), (14) कविता : पहचान का संकट (2006), (15) तुलसीदास।

मैनेजर पाण्डेय—(1) साहित्य और इतिहास दृष्टि (1981), (2) शब्द और कर्म (1981), (3) साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका (1989), (4) भक्ति आन्दोलन और सूर का काव्य (1993), (5) आलोचना की सामाजिकता (2005), (6) अनभै साँचा (2012)

शम्भुनाथ—(1) दिनकर : कुछ पुनर्विचार (1976), (2) साहित्य और जनसंघर्ष (1980), (3) तीसरा यथार्थ (1984), (4) मिथक और आधुनिक कविता (1985), (5) बौद्धिक उपनिवेशवाद की चुनौती और रामचन्द्र शुक्ल (1988), (6) प्रेमचन्द का पुनर्मूल्यांकन (1988), (7) दूसरे नवजागरण की ओर (1993), (8) धर्म का दुखांत (2000), (9) हिन्दी नवजागरण और संस्कृति (2004), (10) सभ्यता से संवाद (2008)।

- शिवदान सिंह चौहान ने सन् 1946 में प्रकाशित अपने लेख 'साहित्य की परख' में 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' को महान साहित्य कहने वाले अमृतराय और भारतेन्दु को शेक्सपियर से भी बड़ा बताने वाले रामविलास शर्मा का विरोध करते हुए 'संकीर्ण राष्ट्रवाद' और 'कुत्सित समाजशास्त्र' के विरुद्ध टिप्पणी की।
- डॉ० रामविलास शर्मा की आलोचना को 'ध्वंसात्मक आलोचना' कहा जाता है।

नयी समीक्षा

- 'नयी समीक्षा' आधुनिक भाव वोध से संपृक्त होती है।
- 'नयी समीक्षा' आज के परिवेश में व्याप्त विसंगति, तनाव, असहायता, निरुद्देश्यता, एकाकीपन, अजनबीपन, ऊब आदि का साक्षात्कार करते हुए एवं अस्मिता के संकट को झेलते हुए एक सीमा तक अनुभूति का प्रामाणिकता और व्यक्तित्व की अद्वितीयता को स्वीकार कर मानव मुक्ति का मार्ग खोजती है तथा रचना को भाषिक सर्जना मानकर काव्य-भाषा के विश्लेषण पर विशेष वल देती है।
- हिन्दी के प्रमुख नये समीक्षक और समीक्षा निम्नलिखित है—

समीक्षक **समीक्षा**

अज्ञेय—(1) त्रिशंकु (1945), (2) आत्मनेपद (1960), (3) भवंती (1972), (4) अन्तरा (1975), (5) आलवाल (1977), (6) अद्यतन (1977),

(7) युग सन्धियों पर (1982), (8) धार और किनारे (1982), (9) आधुनिक हिन्दी साहित्य (1976)।

गिरिजा कुमार माथुर—(1) नयी कविता : सीमायें और सम्भावनाएँ (1966)।

डॉ० रघुवंश—(1) साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य (1963), (2) समसामयिकता और आधुनिक हिन्दी कविता (1977), (3) आधुनिकता और सर्जनशीलता (1980), (4) भारती का काव्य (1980), (5) कबीर : एक नई दृष्टि, (6) जायसी : एक नई दृष्टि।

लक्ष्मीकान्त वर्मा—(1) नई कविता के प्रतिमान (1957), (2) नये प्रतिमान पुराने निकष (1967)।

रामदरश मिश्र—(1) हिन्दी समीक्षा के स्वरूप और सन्दर्भ (1974), (2) आधुनिक हिन्दी कविता के सर्जनात्मक सन्दर्भ (1986), (3) हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा, (4) हिन्दी आलोचना का इतिहास।

विजयदेवनारायण साही—(1) जायसी (1983), (2) साहित्य और साहित्यकार का दायित्व (1983), (3) छठवाँ दशक (1987), (4) साहित्य क्यों (1988)।

जगदीश गुप्त—(1) नयी कविता : शक्ति और सीमा, (2) नयी कविता स्वरूप और समस्याएँ।

रामस्वरूप चतुर्वेदी—(1) हिन्दी नवलेखन (1960), (2) भाषा और संवेदना (1964), (3) अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या (1968), (4) हिन्दी साहित्य की अधुनातन प्रवृत्तियाँ (1969), (5) कामायनी का पुनर्मूल्यांकन (1970), (6) मध्यकालीन हिन्दी काव्यभाषा (1974), (7) कविता यात्रा, रत्नाकर से अज्ञेय तक (1976), (8) सर्जन और भाषिक संरचना (1980), (9) इतिहास और आलोचक दृष्टि (1982), (10) हिन्दी-साहित्य और संवेदना का विकास (1986), (11) काव्यभाषा पर तीन निवन्ध (1989), (12) प्रसाद निराला अज्ञेय (1989), (13) कविता का पक्ष (1994), (14) हिन्दी-गद्य विन्यास और विकास (1996), (15) आधुनिक कविता यात्रा (1998), (16) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : आलोचना का अर्थ और अर्थ की आलोचना (2001), (17) भक्ति काव्य यात्रा (2002)।

चन्द्रकांत महादेव वांदिवडेकर—(1) हिन्दी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन (1960), (2) अज्ञेय की कविता : एक मूल्यांकन (1971), (3) हिन्दी उपन्यास : स्थिति और गति (1977), (4) कविता की तलाश (1983), (5) जैनेन्द्र के उपन्यास : मर्म की तलाश (1984), (6) आधुनिक हिन्दी उपन्यास : सृजन और आलोचना (1985), (7) कथाकार अज्ञेय (1993), (8) चंद्रकांत देवताले की कविता : कविता का स्वभाव (1995)।

मलयज—(1) कविता से साक्षात्कार (1979), (2) संवाद और एकालाप (1984), (3) रामचन्द्र शुक्ल (1987)।

परमानंद श्रीवास्तव—(1) नयी कविता का परिप्रेक्ष्य (1968), (2) कवि कर्म

और काव्यभाषा (1975), (3) उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा (1976), (4) समकालीन कविता का व्याकरण (1980), (5) शब्द और मनुष्य (1988), (6) समकालीन कविता का यथार्थ (1988), (7) उपन्यास का पुनर्जन्म (1995), (8) कविता का अर्थात् (1999), (9) कविता का उत्तर जीवन (2004), (10) अँधेरे कुँए से आवाज (2005), (11) दूसरा सौन्दर्यशास्त्र क्यों? (2005)।

रमेशचन्द्र शाह—(1) छायावाद की प्रासंगिकता (1973), (2) समानान्तर (1973), (3) वागर्थ (1981), (4) सबद निरन्तर (1987), (5) भूलने के विरुद्ध (1990), (6) अज्ञेय : वागर्थ का वैभव (1995), (7) आलोचना का पक्ष (1998)।

प्रभाकर श्रोत्रिय—(1) सुमन : मनुष्य और स्रष्टा (1972), (2) प्रसाद का साहित्य : प्रेम तात्त्विक दृष्टि (1975), (3) कविता की तीसरी आँख (1980), (4) संवाद (1982), (5) काल यात्री है कविता (1982), (6) रचना एक यातना है (1985), (7) अतीत के हंस : मैथिलीशरण गुप्त (1988), (8) जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता (1990), (9) मेघदूत : एक अन्तर्यात्रा (1996), (10) शमशेर बहादुर सिंह (1997), (11) नरेश मेहता (2003), (12) कवि परम्परा : तुलसी से त्रिलोचन (2006), (13) मतिराम (2008)।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी—(1) नये साहित्य का तर्कशास्त्र (1975), (2) आधुनिक हिन्दी कविता (1977), (3) समकालीन हिन्दी कविता (1982), (4) रचना के सरोकार (1987), (5) गद्य के प्रतिमान (1996), (6) कविता क्या है? (1999), (7) कुबेरनाथ राय (2007), (8) आलोचना के हाशिये (2008)।

अशोक वाजपेयी—(1) फिलहाल (1970), (2) कुछ पूर्वग्रह (1984), (3) कविता का गल्प (1997), (4) कवि कह गया है (2000)।

वीर भारत तलवार—रस्साकशी, (2) सामना : रामविलास शर्मा की विवेचन पद्धति और मार्क्सवाद।

नंद किशोर आचार्य—(1) अज्ञेय की काव्य तितीर्षा (1970), (2) रचना का सच (1985), (3) सर्जक का मन (1989), (4) अनुभव का भव (1994), (5) साहित्य का स्वभाव (2001)।

राजेन्द्र यादव—(1) उपन्यास : स्वरूप और संवेदना, (2) कहानी अनुभव और अभिव्यक्ति, (3) कहानी : स्वरूप और संवेदना।

देवीशंकर अवस्थी—(1) भक्ति का सन्दर्भ, (2) विवेक के रंग, (3) आलोचना और आलोचना, (4) रचना और आलोचना, (5) नई कहानी : सन्दर्भ और प्रकृति, (6) आलोचना का द्वंद्व।

डॉ० धर्मवीर भारती—(1) सिद्ध साहित्य, (2) साहित्य और मानव मूल्य, (3) प्रगतिवाद : एक समीक्षा।

कृष्णदत्त पालीवाल—(1) आधुनिकता : संवेदना और सम्प्रेषण, (2) अज्ञेय होने का अर्थ (2011), (3) अज्ञेय : अलीकी का आत्मदान (2012), (4) आलोचक अज्ञेय की उपस्थिति, (5) उत्तर आधुनिकता और दलित साहित्य, (6) हिन्दी आलोचना का सैद्धान्तिक आधार, (7) हिन्दी आलोचना के नये वैचारिक सरोकार, (8) मैथिलीशरण गुप्त : प्रासंगिकता के अन्तःसूत्र, (9) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का रचना कर्म, (10) सीय राममय सब जग जानी, (11) भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य संसार।

नरेन्द्र मोहन—(1) समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच, (2) समकालीन कविता के बारे में।

कुमार विमल—(1) सौन्दर्यशास्त्र के तत्त्व, (2) छायावाद का सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन, (3) कला विवेचन।

नरेश मेहता—(1) मुक्तिबोध एक अवधूत कविता, (2) शब्द पुरुष अज्ञेय, (3) काव्य का वैष्णव व्यक्तित्व, (4) काव्यात्मकता का दिक्काल।

विष्णुकान्त शास्त्री—(1) तुलसी के हिय हेरि, (2) भक्ति और शरणागति।

शिवप्रसाद सिंह—(1) विद्यापति, (2) सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका काव्य, (3) कीर्तिलता और अवहट्ट भाषा।

केदारनाथ सिंह—(1) आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान, (2) कल्पना और छायावाद, (3) मेरे समय के शब्द।

विद्यानिवास मिश्र—(1) अज्ञेय वन का छंद, (2) आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा : समष्टिमय व्यक्तित्व, (3) साहित्य के सरोकार, (4) रीति विज्ञान, (5) साहित्य का प्रयोजन।

नित्यानंद तिवारी—आधुनिक हिन्दी साहित्य और इतिहास बोध, (2) सृजनशीलता का संकट।

अरुण कमल—(1) गोलमेज, (2) कथोपकथन, (3) कविता और समय।

सुधीर पचौरी—(1) अद्य गद्य विदास, (2) देरिदा : विखण्डन की सिद्धांतिकी, (3) उत्तर यथार्थवाद, (4) उत्तर-आधुनिक साहित्यिक विमर्श, (5) उत्तर-आधुनिक समय और मार्क्सवाद, (6) निर्मल वर्मा और उत्तर-उपनिवेशवाद, (7) आलोचना से आगे, (8) हिन्दुत्व और उत्तर आधुनिकता।

पुरुषोत्तम अग्रवाल—(1) अकथ कहानी प्रेम की : कबीर की कविता और उनका समय (2010), (2) तीसरा रूख, (3) कोलाज : अशोक वाजपेयी (2012)।

रामधारी सिंह 'दिनकर'—(1) काव्य की भूमिका, (2) पंत प्रसाद और मैथिलीशरण, (3) शुद्ध कविता की खोज।

डॉ० रामकमल राय—(1) नरेश मेहता : कविता की ऊर्ध्वयात्रा, (2) हिन्दी कविता का वैयक्तिक परिप्रेक्ष्य, (3) अज्ञेय : सृजन और संघर्ष।

अपूर्वानंद—(1) साहित्य का एकान्त, (2) सुन्दर का स्वप्न।

विष्णु खरे—(1) आलोचना की पहली किताब।
चन्द्रवली सिंह—(1) आलोचना का जनपक्ष, (2) लोक दृष्टि और हिन्दी साहित्य।
बलदेव वंशी—(1) आधुनिक हिन्दी कविता में विचार, (2) दादू जीवन-दर्शन, (3) कबीर की चिन्ता, (4) लम्बी कविताएँ : वैचारिक सरोकार।

स्त्री विमर्श (आलोचना)

- हिन्दी साहित्य की प्रमुख महिला आलोचक निम्नलिखित हैं—

आलोचक	आलोचना
प्रभा खेतान	(1) उपनिवेश में स्त्री, (2) अल्बेयर कामू वह पहला आदमी।
अनामिका	(1) स्त्रीत्व का मानचित्र, (2) उत्तर गाथा, (3) मौसम बदलने की आहट, (4) मन माझने की जरूरत, (5) स्त्री विमर्श का लोक पक्ष।
मृणाल पाण्डेय	(1) परिधि पर स्त्री, (2) स्त्री : लम्वा सफर (2012), (3) स्त्री : देश की राजनीति से देह की राजनीति तक, (4) ओ उब्वरी (भारतीय स्त्री का प्रजनन और यौन जीवन।), (5) जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं।
कात्यायनी	दुर्ग द्वार पर दस्तक।
कमला सिंघवी	आधुनिक परिवेश में स्त्री (2011)।
दिव्या जैन	हव्वा की बेटी।
क्षमा शर्मा	(1) सती का समय, (2) स्त्रीत्ववादी विमर्श : समाज और साहित्य।
नासिरा शर्मा	(1) औरत के लिए औरत।
मैत्रेयी पुष्पा	खुली खिड़कियाँ, (2) सुनो मालिक सुनो, (3) तब्दील निगाहें (2012)।
राधा कुमार	स्त्री संघर्ष का इतिहास।
रमणिका गुप्ता	स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास।
रोहिणी अग्रवाल	(1) स्त्री लेखन : स्वप्न और संकल्प, (2) इतिवृत्त की संचेतना और स्वरूप, (3) समकालीन कथा साहित्य : सरहदें और सरोकार।
नूतन सिन्हा	साम्प्रदायिक दंगे और नारी।
ममता कालिया	खाँटी घरेलू औरत।
गीताश्री	(1) नागपाश में स्त्री, (2) सपनों की मंडी, (3) स्त्री आकांक्षा के मानचित्र।
इलिना सेन	(1) संघर्ष के बीच संघर्ष के बीज।
मनीषा	(1) हम सभ्य औरतें, (2) और औरत अंग।
सरला माहेश्वरी	(1) नारी प्रश्न, (2) समान नागरिक संहिता।
रंजना अरगड़े	कवियों का कवि शमशेर।
निर्मला जैन	(1) रस सिद्धान्त और सौन्दर्यशास्त्र, (2) कविता का प्रति संसार, (3) हिन्दी आलोचना की बीसवीं सदी।

- हिन्दी के प्रमुख स्त्रीवादी पुरुष आलोचक निम्नलिखित हैं—

आलोचक	आलोचना
राजेन्द्र यादव	(1) आदमी की निगाह में औरत, (2) औरत उत्तर कथा, (3) अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य।
अरविन्द जैन	(1) औरत होने की सज़ा, (2) बचपन से बलात्कार, (3) औरत अस्तित्व और अस्मिता।
सुधीर पचौरी	नारी देह के विमर्श।
उपेन्द्र नाथ अश्क	अधीन जमीन
जगदीश्वर चतुर्वेदी	स्त्रीवादी साहित्य विमर्श
दुष्यंत	स्त्रियाँ पर्दे से प्रजातंत्र तक (2012)

दलित विमर्श (आलोचना)

- हिन्दी साहित्य के प्रमुख दलित आलोचक और आलोचना निम्नलिखित हैं—

आलोचक	आलोचना
कँवल भारती	(1) दलित विमर्श की भूमिका, (2) दलित, (3) धम्म विजय
माता प्रसाद	(1) हिन्दी काव्य में दलित काव्यधारा (1993), (2) अंतहीन बेड़ियाँ।
रजत रानी मीनू	नवें दशक की हिन्दी दलित कविता।
श्यौराज सिंह बेचैन	(1) हिन्दी की दलित पत्रकारिता पर अम्बेडकर का प्रभाव
डॉ० धर्मवीर	प्रेमचंद की नीली आँखें, (2) कबीर : डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी का प्रक्षिप्त चिन्तन, (3) कबीर और रामानंद : किंवदंतियाँ, (4) कबीर बाज भी, कपोत भी, पपीहा भी, (5) कबीर के आलोचक, (6) कबीर के कुछ और आलोचक, (7) कबीर : सूत न कपास, (8) अशोक बनाम वाजपेयी : अशोक वाजपेयी, (9) प्रेमचंद : सामन्त का मुंशी, (10) दलित चिन्तन का विकास अभिसप्त चिन्तन से इतिहास चिन्तन की ओर।
जयप्रकाश कर्दम	जाति : एक विमर्श (1999)
सोहनलाल सुमनाक्षर	विश्व धरातल पर दलित साहित्य (1999)
दयानंद बटोही	साहित्य और सामाजिक क्रान्ति (1999)
तेज सिंह	(1) आज का दलित साहित्य (2000)
ओम प्रकाश वाल्मीकि	दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र
दिनेश राम	दलित मुक्ति का प्रश्न और दलित साहित्य
तेजस्वी कुट्टीमनी	भारतीय दलित साहित्य : एक परिचय (2002)
देवेन्द्र चौबे	आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श
बाबूराव बागूल	दलित साहित्य आज का क्रान्ति विज्ञान
रमणिका गुप्ता	स्वर और नयी शताब्दी।

विविध

- महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालमुकुन्द गुप्त तथा गोविन्द नारायण मिश्र ने 'हिन्दी की अनस्थिरता : एक ऐतिहासिक बहस' नामक ग्रन्थ की रचना की।
- हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण ग्रन्थावलियाँ और उनके सम्पादक निम्न हैं—

सम्पादक	ग्रन्थावली
श्यामसुन्दर दास	कबीर ग्रन्थावली
हरिऔध	कबीर वचनावली
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	जायसी ग्रन्थावली
विद्यानिवास मिश्र	(1) भूषण ग्रन्थावली, (2) आलम ग्रन्थावली
नामवर सिंह	रामचन्द्र शुक्ल समग्र
मुकुन्द द्विवेदी	हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली (ग्यारह खण्ड)
नन्दकिशोर नवल	निराला रचनावली (आठ खण्ड)
नेमिचन्द्र जैन	मुक्तिबोध रचनावली (छह खण्ड)
भारत यायावर	रेणु रचनावली (पाँच खण्ड)
सुमित्रानंदन पंत	सुमित्रानंदन पंत ग्रन्थावली (सात खण्ड)
सुरेश शर्मा	रघुवीर सहाय रचनावली (छह खण्ड)
हरिशंकर परसाई	परसाई रचनावली (छह खण्ड)
अरविन्द त्रिपाठी	श्रीकांत वर्मा रचनावली (चार खण्ड)
अजित कुमार	बच्चन ग्रन्थावली (नौ खण्ड)
शोभाकान्त	नागार्जुन रचनावली (सात खण्ड)
भगवतीचरण वर्मा	भगवतीचरण वर्मा रचनावली (चौदह खण्ड)
चन्द्रकांत वांदिवड़ेकर	धर्मवीर भारती ग्रन्थावली (नौ खण्ड)
नीलाभ अश्क	उपेन्द्रनाथ अश्क रचनावली (उपन्यास : नौ खण्ड)
सदानंद साही	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ग्रन्थावली (दस खण्ड)
निर्मला जैन	महादेवी वर्मा साहित्य (चार खण्ड)
श्रीकांत	माखनलाल चतुर्वेदी ग्रन्थावली (दस खण्ड)
नामवर सिंह	मलयज की डायरी (तीन खण्ड)
कृष्णदत्त पालीवाल	मैथिलीशरण गुप्त ग्रन्थावली (बारह खण्ड)
कल्याण सिंह शेखावत	मीरा ग्रन्थावली
नलिनी श्रीवास्तव	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ग्रन्थावली (आठ खण्ड)
वीरेन्द्र जैन	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ग्रन्थावली (नौ खण्ड)
शिवमंगल सिंह 'सुमन'	शिवमंगल सिंह 'सुमन' समग्र (पाँच खण्ड)
शकुन्तला ब्रजमोहन	स्त्री उत्कर्ष ग्रन्थावली (चार खण्ड)
जयदेव तनेजा	मोहन राकेश रचनावली (तेरह खण्ड)
नन्द किशोर नवल/तरुण	दिनकर रचनावली (चौदह खण्ड)
डॉ० मनोहर लाल	गुलेरी ग्रन्थावली (तीन खण्ड)

कथेतर गद्य

(क) आत्मकथा

- सन् 1641 ई० में बनारसीदास जैन ने ब्रजभाषा पद्य में 'अर्धकथा' की रचना की, जिसे हिन्दी का प्रथम प्राचीनतम आत्मकथा माना जाता है।
- सन् 1941 ई० में बाबू श्यामसुन्दरदास कृत 'मेरी आत्मकहानी' को हिन्दी की प्रथम प्रसिद्ध आत्मकथा माना जाता है।
- प्रारम्भ से लेकर सन् 1950 ई० तक प्रकाशित हिन्दी के महत्वपूर्ण आत्मकथा निम्नांकित हैं—

लेखक	वर्ष	आत्मकथा
सत्यानन्द अग्निहोत्री	1910	मुझमें देव-जीवन का विकास
स्वामी दयानन्द	1917	जीवन चरित्र
भाई परमानन्द	1921	आपबीती
रामविलास शुक्ल	1933	मैं क्रान्तिकारी कैसे बना
भवानीदयाल संन्यासी	1939	प्रवासी की कहानी
डॉ० श्यामसुन्दर दास	1941	मेरी आत्म कहानी
राहुल सांकृत्यायन	1946	मेरी जीवन यात्रा
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	1947	आत्मकथा
वियोगी हरि	1948	मेरा जीवन प्रवाह
हरिभाऊ उपाध्याय	1946	साधना के पथ पर
अम्बिकादत्त व्यास		निज वृत्तांत
स्वामी श्रद्धानन्द		कल्याण मार्ग का पथिक
गणेश प्रसाद वर्णी	1949	मेरी जीवन गाथा
मूलचन्द अग्रवाल	1944	एक पत्रकार की आत्मकथा

- हिन्दी की पहली महिला आत्मकथा लेखिका जानकी देवी बजाज हैं।
- जानकी देवी बजाज ने सन् 1956 ई० में 'मेरी जीवन यात्रा' शीर्षक से अपनी आत्मकथा प्रकाशित करवायी।
- ममता कालिया की आत्मकथा 'कितने शहरों में कितनी बार' के लिए सन् 2012 का 'सीता पुरस्कार' प्रदान किया गया।
- हिन्दी की प्रमुख महिला आत्मकथा लेखिका निम्नांकित हैं—

लेखिका	वर्ष	आत्मकथा
जानकी देवी बजाज	1956	मेरी जीवन यात्रा
प्रतिभा अग्रवाल	भाग-1 1990	दस्तक जिन्दगी की
	भाग-2 1996	मोड़ जिन्दगी का
कुसुम अंसल	1996	जो कहा नहीं गया
कृष्णा अग्निहोत्री	1997	लगता नहीं है दिल मेरा

पद्मा सचदेव	1999	बूंद बावड़ी
शीला झुनझुनवाला	2000	कुछ कही कुछ अनकही
मैत्रेयी पुष्पा	भाग-1 2002	कस्तूरी कुण्डल बसै
	भाग-2 2008	गुड़िया भीतर गुड़िया
रमणिका ठाकुर गुप्ता	2005	हादसे
मन्नू भण्डारी	2007	एक कहानी यह भी
प्रभा खेतान	2007	अन्या से अनन्या
चन्द्र किरण सौनरेक्सा	2008	पिंजरे की मैना
अनीता राकेश		सतरें और सतरें
ममता कालिया	2011	कितने शहरों में कितनी बार
चन्द्रकांता	2012	हासिये की इबारतें
मन्नू भण्डारी		एक कहानी यह भी

❑ सन् 1950 के बाद हिन्दी के प्रमुख आत्मकथाकार निम्नवत् हैं—

लेखक	भाग	वर्ष	आत्मकथा
अजित प्रसाद जैन		1951	अज्ञात जीवन
अलगू राय शास्त्री		1951	मेरा जीवन
यशपाल	प्रथम	1951	सिंहावलोकन
	द्वितीय	1952	सिंहावलोकन
	तृतीय	1955	सिंहावलोकन
सत्यदेव परिव्राजक		1951	स्वतंत्रता की खोज में
शान्तिप्रिय द्विवेदी		1952	परिव्राजक की प्रजा
देवेन्द्र सत्यार्थी	भाग-1	1952	चाँद सूरज के वीरन
	भाग-2	1985	नील यक्षिणी
गंगा प्रसाद उपाध्याय		1954	जीवन चक्र
चतुरसेन शास्त्री	भाग-1	1956	यादों की परछाइयाँ
	भाग-2	1963	मेरी आत्मकहानी
सेठ गोविन्ददास		1958	आत्मनिरीक्षण
देवराज उपाध्याय	प्रथम	1958	बचपन के दो दिन
	द्वितीय	1970	यौवन के द्वार पर
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी		1958	मेरी अपनी कथा
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'		1960	अपनी खबर
संतराम बी०ए०		1963	मेरे जीवन के अनुभव
भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र 'माधव'		1966	जीवन के चार अध्याय
हरिवंशराय बच्चन	प्रथम	1969	क्या भूलूँ क्या याद करूँ
	द्वितीय	1970	नीड़ का निर्माण फिर

	तृतीय	1978	बसेरे से दूर
	चतुर्थ	1985	दश द्वार से सोपान तक
वृन्दावनलाल वर्मा		1970	अपनी कहानी
रामावतार 'अरुण'		1974	अरुणायन
कृष्णचन्द्र		1979	आधे सफर की पूरी कहानी
बलराज साहनी		1947	मेरी फिल्मी आत्मकथा
रामविलास शर्मा		1983	घर की बात
शिवपूजन सहाय		1985	मेरा जीवन
हंसराज रहबर	3 खण्ड	1986	मेरे सात जनम
रामदरश मिश्र	प्रथम	1984	जहाँ मैं खड़ा हूँ
	द्वितीय		रोशनी की पगडंडिया
	तृतीय		टूटते-बनते दिन
	चतुर्थ		उत्तर पथ
	पंचम	2000	फुरसत के दिन
कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर		1989	तपती पगडंडियों पर पदयात्रा
फणीश्वरनाथ रेणु		1988	आत्म परिचय
अमृतलाल नागर		1986	टुकड़े-टुकड़े दास्तान
डॉ० नगेन्द्र		1988	अर्धकथा
यशपाल जैन		1987	मेरी जीवन धारा
गोपाल प्रसाद व्यास		1994	कहो व्यास कैसी कटी
रामविलास शर्मा	प्रथम		मुँडेर पर सूरज
	द्वितीय		देर सवेर
	तृतीय		आपस की बातें
रवीन्द्र कालिया		2000	गालिब छूटी शराब
कमलेश्वर	भाग-1	1992	जो मैंने जिया
	भाग-2	1997	यादों का चिराग
	भाग-3	1999	जलती हुई नदी
भगवतीचरण वर्मा		2001	कहि न जाय का कहिए
राजेन्द्र यादव		2001	मुड़-मुड़ कर देखता हूँ
अखिलेश		2001	और वह जो यथार्थ था
भीष्म साहनी		2003	आज के अतीत
अशोक वाजपेयी		2003	पावभर जीरे में ब्रह्मभोज
स्वदेश दीपक		2003	मैंने मांडू नहीं देखा
रवीन्द्रनाथ त्यागी		2005	वसन्त से पतझर तक
विष्णु प्रभाकर	प्रथम	2004	पंखहीन
	द्वितीय	2004	मुक्त गगन में
	तृतीय	2004	पंछी उड़ गया

कन्हैयालाल नंदन	भाग-1	2007	एक अंतहीन तलाश
	भाग-2	2007	कहाँ कहाँ से गुजरा
डॉ० देवेश ठाकुर		2007	यों ही जिया
कृष्ण बलदेव वैद्य			शम अ हर रंग
नंद चतुर्वेदी			अतीत राग
जाबिर हुसैन			रेत पर खेमा
तोताराम सनाढ्य			भूतलेन की कथा
सुमित्रानन्दन पंत			साठ वर्ष : एक रेखांकन
मिथिलेश्वर		2011	कहाँ तक कहे युगों की बात

- कमलेश्वर ने 'गर्दिश के दिन' शीर्षक से सन् 1980 में हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के 12 रचनाकारों के आत्मकथाओं का सम्पादन किया।
- राजेन्द्र यादव ने अर्चना वर्मा व वलवंत कौर के सहयोग से 20 लेखिकाओं के आत्मकथ्य का सम्पादन 'देहरि भई विदेस' शीर्षक से सन् 2005 में किया।
- विष्णुचन्द्र शर्मा ने सन् 1984 ई० में 'मुक्तिबोध की आत्मकथा' लिखी।
- सूर्य प्रसाद दीक्षित ने सन् 1970 ई० में 'निराला की आत्मकथा' लिखी।
- राजकमल चौधरी ने 'भैरवी तंत्र' शीर्षक से आत्मकथा लिखी।
- रामदरश मिश्र ने अपनी आत्मकथा को 'समय है सहचर' शीर्षक से सन् 1991 में प्रकाशित करवाया।
- रामविलास शर्मा ने अपने तीन भाग में प्रकाशित आत्मकथा को 'अपनी धरती अपने लोग' शीर्षक से सन् 1996 ई० में प्रकाशित कराया।

दलित आत्मकथा का विकास

- सन् 1995 ई० में प्रकाशित मोहनदास नैमिशराय कृत 'अपने-अपने पिंजरे' हिन्दी की पहली दलित आत्मकथा है।
- हिन्दी में अन्य दलित आत्मकथा निम्नांकित हैं—

लेखक	आत्मकथा
मोहनदास नैमिशराय	अपने अपने पिंजरे (1995 दो भाग में)
ओमप्रकाश वाल्मीकि	जूठन (1997)
कौशल्या बैसंती	दोहरा अभिशाप (1999)
माता प्रसाद	झोपड़ी से राजभवन (2002)
सूरजपाल सिंह चौहान	(1) तिरस्कृत (2002), (2) संतप्त (2002)
श्यौराज सिंह बेचैन	(1) बेवक्त गुजर गया माली (2006), (2) मेरा बचपन मेरे कन्धे पर (2009)
रमाशंकर आर्य	घुटन (2005)
तुलसीराम	(1) मुर्दहिया (2010, प्रथम भाग), (2) मणिकर्णिका (2013, दूसरा भाग)
डी० आर० जाटव	मेरा सफर मेरी मंजिल (2000)

किशोर शांताबाई काले	छोरा कोल्हाटी (1997)
रूपनारायण सोनकर	(1) नागफनी (2007 प्रथम भाग), (2) मेरे जीवन की बाइबिल (2007)
धर्मवीर	मेरी पत्नी और भेड़िया (2009)
सुशीला टकभौरे	शिकंजे का दर्द (2011)

- अन्य भारतीय भाषाओं से अनूदित दलित आत्मकथा निम्नांकित हैं—

लेखक	आत्मकथा	भाषा	अनू० आत्मकथा
दया पवार	बलूत	मराठी	अछूत (1979)
शरण कुमार लिम्बाले	अक्करमाशी	मराठी	अक्करमाशी (1991)
लक्ष्मण गायकवाड़	उचत्या	मराठी	उचक्का (1992)
प्रेम गोरखी		पंजाबी	गैर हाजिर आदमी (1994)
बेबी काम्बले		मराठी	जीवन हमारा (1995)
बेबी हलधर	आलो आंधारि	बांगला	आलोआंधारि (2002)
शिमाजाकी तोसेन	हाकाई	जापानी	अवज्ञा (1993)
बलवीर माधोपुरी	छांग्या रूक्ख	पंजाबी	छांग्या रूक्ख (2002)
प्र०ई० सोनकाम्बले	आठ वणीचे पक्षी	मराठी	यादों के पंक्षी
लक्ष्मण माने	उपरा	मराठी	पराया

(ख) जीवनी

- हिन्दी की प्रमुख जीवनियाँ एवं जीवनीकार निम्नांकित हैं—

लेखक	वर्ष	जीवनी
गोपाल शर्मा शास्त्री	1881	दयानन्द दिग्विजय
बाबू राधाकृष्णदास	1904	भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र
शिवनन्दन	1905	हरिश्चन्द्र
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	1913	बाबू राधाकृष्णदास
घनश्यामदास बिड़ला	1940	बापू
सुशीला नायर	1949	बापू के कारावास की कहानी
ब्रजरत्नदास	1948	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
रामचन्द्र वर्मा	1919	महात्मा गाँधी
मन्मथनाथ गुप्त	1938	चन्द्रशेखर आजाद
रामवृक्ष बेनीपुरी	1951	जयप्रकाश नारायण
बलराज मधोक	1958	डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी
राहुल सांकृत्यायन	1954	स्तालिन
राहुल सांकृत्यायन	1954	कार्ल मार्क्स
राहुल सांकृत्यायन	1954	लेनिन
राहुल सांकृत्यायन	1954	माओत्सेतुंग
ऋषिजैमिनी कौशिक बरुआ	1960	माखनलाल चतुर्वेदी

जैनेन्द्र	1968	अकाल पुरुष गाँधी
हंसराज रहबर	1979	योद्धा संन्यासी विवेकानन्द
डॉ० शिवप्रसाद सिंह	1972	उत्तरयोगी श्री अरविन्द
अमृतलाल नागर	1975	चैतन्य महाप्रभु
घनश्यामदास बिड़ला	1975	मेरे जीवन में गांधी
चन्द्रशेखर शुक्ल	1963	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : जीवन और कृतित्व
डॉ० रघुवंश	1985	मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन
रामविलास शर्मा	1986	मार्क्स, त्रोत्स्की और एशियाई समाज
रामनिवास जाजू	1986	मरुभूमि का वह मेघ (घनश्यामदास बिड़ला)
शिवरानी देवी	1944	प्रेमचन्द घर में
अमृत राय	1962	कलम का सिपाही
मदन गोपाल	1964	कलम का मजदूर
भगवती प्रसाद सिंह	1968	मनीषी की लोकयात्रा
रामविलास शर्मा	1969	निराला की साहित्य साधना
विष्णु प्रभाकर	1974	आवारा मसीहा (शरत चन्द्र)
शान्ति जोशी	1970	सुमित्रानन्दन पंत : जीवन और साहित्य
शिवसागर मिश्र	1981	दिनकर एक सहज पुरुष
शोभाकांत	1991	बाबूजी (नागार्जुन)
विष्णुचन्द्र शर्मा	1976	अग्निसेतु (नजरुल इस्लाम)
जगदीशचन्द्र माथुर	1971	जिन्होंने जीना जाना
तेजबहादुर चौधरी	1995	मेरे बड़े भाई शमशेर जी
कमला सांकृत्यायन	1995	महामानव महापण्डित (राहुल सांकृत्यायन)
विष्णुचन्द्र शर्मा	1997	समय साम्यवादी (राहुल सांकृत्यायन)
प्रतिभा अग्रवाल	1997	प्यारे हरिश्चन्द्रजू
सुलोचना रांगेय	1997	रांगेय राघव एक अंतरंग परिचय
मदन मोहन ठाकौर	1999	राजेन्द्र यादव
बिन्दु अग्रवाल	1999	स्मृति के झरोखे से (भारतभूषण अग्रवाल)
ज्ञानचन्द्र जैन	1999	कथा शेष (अमृतलाल नागर)
महिमा मेहता	2003	उत्सव पुरुष नरेश मेहता
कुमुद नागर	2006	वटवृक्ष की छाया में (अमृतलाल नागर)
ज्ञानचन्द्र जैन	2004	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक व्यक्तित्व चित्र
गायत्री कमलेश्वर	2005	कमलेश्वर : मेरे हमसफ़र
कृष्णबिहारी मिश्र	2005	कल्पतरु की उत्सव लीला (रामकृष्ण परमहंस)
विजय बहादुर मिश्र	2008	आलोचक का स्वदेश
नरेन्द्र मोहन	2012	मंटो जिन्दा है

पुरुषोत्तम अग्रवाल	2012	कोलाज : अशोक वाजपेयी
अखिलेश	2011	मकबूल
रामकमल राय	1986	शिखर से सागर तक (अज्ञेय)

- हिन्दी के प्रथम जीवनीकार गोपाल शर्मा शास्त्री माने जाते हैं।

(ग) यात्रा साहित्य

- यात्रा वृत्तान्त लिखने की परम्परा का सूत्रपात भारतेन्दु से माना जाता है।
- भारतेन्दु ने 'सरयू पार की यात्रा', 'मेंहदावल की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा' आदि शीर्षकों से यात्रा वृत्तान्तों को रचना की है।
- हिन्दी में लिखे प्रमुख यात्रा वृत्तांत निम्नलिखित हैं—

लेखक — **यात्रा वृत्तान्त**

दामोदर शास्त्री—मेरी पूर्व दिग्यात्रा (1885)।

देवी प्रसाद खत्री—(1) रामेश्वर यात्रा (1883), (2) बदरिकाश्रम यात्रा (1902)।

शिवप्रसाद गुप्त—(1) पृथ्वी प्रदक्षिणा (1914)।

स्वामी सत्यदेव परिव्राजक—(1) मेरी कैलाश यात्रा (1915), (2) मेरी जर्मन यात्रा (1926)।

महेश प्रसाद—मेरी ईरान यात्रा (1930)।

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'—हमारी जापान यात्रा (1931)।

रामनारायण मिश्र—यूरोप यात्रा में छः मास (1932)।

राहुल सांकृत्यायन—(1) मेरी तिब्बत यात्रा (1937), (2) मेरी लद्दाख यात्रा (1939), (3) किन्नर देश में (1948), (4) घुमक्कड़ शास्त्र (1948), (5) राहुल यात्रावली (1949), (6) यात्रा के पन्ने (1952), (7) एशिया के दुर्गम भूखण्ड (1956), (8) चीन में कम्यून (1959), (9) चीन में क्या देखा (1960)।

संतराम—स्वदेश-विदेश यात्रा (1940)।

रामवृक्ष बेनीपुरी—(1) पैरों में पंख बाँधकर (1952), (2) उड़ते चलो उड़ते चलो (1954)।

भगवतशरण उपाध्याय—(1) वह दुनिया में (1952), (2) कलकत्ता से पेकिंग (1955)।

सत्यनारायण—(1) आवारे की यूरोप यात्रा (1940), (2) यूरोप के झरोखे में, (3) युद्ध यात्रा (1940)।

सेठ गोविन्ददास—(1) सुदूर दक्षिण पूर्व (1951), (2) पृथ्वी परिक्रमा (1954)।

यशपाल—(1) लोहे की दीवार के दोनों ओर (1953), (2) राह बीती (1956)।

काका कालेलकर—(1) हिमालय की यात्रा (1948), (2) सूर्योदय का देश (1955)।

मुनि कान्तिसागर—(1) खोज की पगडंडियाँ (1953), (2) खण्डहरों का वैभव (1953)।

विद्यानिधि सिद्धान्तालंकर—शिवालिक की घाटियों में (1953)।
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'—(1) अरे यायावर याद रहेगा (1953), (2) एक बूँद सहसा उछली (1960)।
मोहन राकेश—आखिरी चट्टान तक (1953)।
श्रीमती विमला कपूर—अनजाने देश में (1955)।
रामधारी सिंह 'दिनकर'—(1) देश विदेश (1957), (2) मेरी यात्राएँ (1970)।
प्रभाकर द्विवेदी—पार उतरि कह जइहौं (1958)।
भुवनेश्वर प्रसाद 'भुवन'—आँखों देखा यूरोप (1958)।
कन्हैयालाल माणिकलाल 'मुंशी'—बद्रीनाथ की ओर (1959)।
यशपाल जैन—रूस के छियालीस दिन (1960)।
गोपाल प्रसाद व्यास—अरबों के देश में (1960)।
व्रजकिशोर नारायण—नन्दन से लन्दन (1957)।
प्रभाकर माचवे—गोरी नजरों में हम (1964)।
डॉ० रघुवंश—हरी घाटी (1963)।
निर्मल वर्मा—चीड़ों पर चाँदनी (1964)।
धर्मवीर भारती—(1) यादें यूरोप की, (2) यात्रा चक्र (1955), (3) ठेले पर हिमालय।
विष्णु प्रभाकर—(1) हँसते निर्झर : दहकती भट्टी (1966), (2) ज्योतिपुंज हिमालय (1982), (3) हमसफर मिलते रहें (1996)।
लक्ष्मीदेवी चूड़ावत— हिन्दुकश के उस पार (1966)।
डॉ० नगेन्द्र—(1) तंत्रालोक से यंत्रालोक तक (1968), (2) अप्रवासी की यात्राएँ (1972)।
दुर्गादेवी सिंह—सीधी सादी यादें (1976)।
राजेन्द्र अवस्थी—(1) सैलानी की डायरी (1977), (2) हवा में तैरते हुए (1986)।
श्रीकांत वर्मा—अपोलो का रथ (1975)।
रामेश्वर टांटिया—विश्वयात्रा के संस्मरण।
अनन्त गोपाल शेवड़े— दुनिया रंग रंगीली (1978)।
गोविन्द मिश्र—(1) धुंध भरी सुर्खी (1979), (2) दरख्तों के पार शाम (1980), (3) झूलती जड़ें (1990), (4) परतों के बीच (1997), (5) और यात्राएँ (2005)।
कमलेश्वर—(1) खण्डित यात्राएँ (1975), (2) कश्मीर रात के बाद (1997), (3) आँखों देखा पाकिस्तान (2006)।
बलराज साहनी—रूसी सफरनामा (1971)।
शंकरदयाल सिंह—गाँधी के देश से लेनिन के देश में (1973)।
शिवानी—यात्रिक (1980)।
कन्हैयालाल नन्दन—धरती लाल गुलाबी चेहरे (1982)।

कृष्णनाथ—(1) स्फीतियों में बारिश (1982), (2) किन्नर धर्मलोक (1983), (3) लद्दाख में राग विराग (1983)।
अजित कुमार—(1) सफरी झोले में (1985), (2) यहाँ से कहीं भी (1997)।
इंदु जैन—पत्रों की तरह चुप (1987)।
अमृतलाल बेगड़—(1) सौन्दर्य नर्मदा की (1992), (2) अमृतस्य नर्मदा (2000)।
रामदरश मिश्र—(1) तना हुआ इन्द्रधनुष (1990), (2) भोर का सपना (1993), (3) पड़ोस की खुशबू (1999)।
शिवप्रसाद सिंह—साञ्जा पत्र कथा कहे (1996)।
कर्ण सिंह चौहान— यूरोप में अन्तर्यात्राएँ (1996)।
मंगलेश डबराल—एक बार आयोवा (1996)।
सतीश आलोक— लिबर्टी के देश में (1997)।
वल्लभ डोभाल—आधी रात का सफर (1998)।
हिमांशु जोशी— यातना शिविर में (1998)।
विश्वनाथ प्रसाद तिवारी—(1) आत्म की धरती (1999), (2) अंतहीन आकाश (2005)।
रमेशचन्द्र शाह—एक लम्बी छाह (2000)।
कृष्णदत्त पालीवाल—जापान में कुछ दिन (2003)।
नरेश मेहता—कितना अकेला आकाश (2003)।
नासिरा शर्मा—जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं (2003)।
मनोहर श्याम जोशी—(1) क्या हाल हैं चीन के (2006), (2) पश्चिमी जर्मनी पर उड़ती नजर (2006)।
निर्मला जैन—दिल्ली : शहर-दर-शहर।
असगर वजाहत—(1) चलते तो अच्छा था, (2) रास्ते की तलाश में (2012)।
विश्वनाथ प्रसाद तिवारी—एक नाव के यात्री।
ज्ञानरंजन—कबाड़खाना।
पंकज विष्ट—(1) खरामा-खरामा (2012)।

- राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय और नागार्जुन को आधुनिक हिन्दी साहित्य का 'घुमक्कड़ वृहत् त्रयी' कहा जाता है।
- अज्ञेय का 'अरे यायावर याद रहेगा' स्वदेश यात्रा से और 'एक बूँद सहसा उछली' विदेश यात्रा से सम्बद्ध है।

(घ) रेखाचित्र

- 'रेखाचित्र' अंग्रेजी के 'स्केच' का हिन्दी पर्याय है।
- हिन्दी में लिखे प्रमुख रेखाचित्र निम्नांकित हैं—

लेखक	रेखाचित्र
महादेवी वर्मा	(1) अतीत के चलचित्र (1941), (2) स्मृति की रेखाएँ (1943), (3) मेरा परिवार (1972)।

श्रीराम शर्मा — (1) बोलती प्रतिमा (1937)
प्रकाशचन्द्र गुप्त — (1) रेखाचित्र (1940), (2) मिट्टी के पुतले, (3) पुरानी स्मृतियाँ नये स्केच।
रामवृक्ष बेनीपुरी — (1) माटी की मूरतें (1946), (2) गेहूँ और गुलाब (1950), (3) लाल तारा (1938), (4) मील के पत्थर
बनारसीदास चतुर्वेदी — (1) रेखाचित्र (1952), (2) सेतुबन्ध (1952)।
कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर — (1) माटी हो गई सोना, (2) दीप जले शंख बजे (1959)
विनय मोहन शर्मा — रेखा और रंग (1955)
प्रेमनारायण टण्डन — रेखाचित्र (1959)
डॉ० नगेन्द्र — चेतना के बिम्ब (1967)
सेठ गोविन्ददास — चेहरे जाने पहचाने (1966)
देवेन्द्र सत्यार्थी — रेखाएँ बोल उठी (1949)
कृष्णा सोवती — हम हशमत (1977, भाग-1)
भीमसेन त्यागी — आदमी से आदमी तक (1982)
सत्यवती मल्लिक — अमिट रेखाएँ (1951)
उपेन्द्र नाथ अश्क — रेखाएँ और चित्र (1955)
विष्णु प्रभाकर — कुछ शब्द : कुछ रेखाएँ (1965)
जगदीश चन्द्र माथुर — दस तस्वीरें (1963)
माखनलाल चतुर्वेदी — समय के पाँव (1962)

महादेवी के संस्मरणों-रेखाचित्रों का अंग्रेजी अनुवाद 'यूनेस्को' के लिए रा०प्र० श्रीवास्तव ने किया है।

(F) संस्मरण

हिन्दी के प्रथम संस्मरणकार पद्मसिंह शर्मा हैं। इनकी प्रमुख रचना 'पद्म पराग' सन् 1929 ई० में प्रकाशित हुई।

हिन्दी में लिखे गए प्रमुख संस्मरण निम्नांकित हैं—

लेखक — संस्मरण

पद्मसिंह शर्मा—(1) पद्म पराग (1929), (2) प्रबन्ध मंजरी।
श्रीराम शर्मा—(1) शिकार (1936), (2) प्राणों का सौदा, (3) जंगल के जीव (1949), (4) वे जीते कैसे हैं (1957), सन् बयालीस के संस्मरण।
मन्मथनाथ गुप्त—क्रान्तियुग के संस्मरण (1937)।
शिवनारायण टण्डन—झलक (1938)।
घनश्यामदास विड़ला—बापू (1940)।
रामनरेश त्रिपाठी—तीस दिन मालवीयजी के साथ (1942)।
बनारसीदास चतुर्वेदी—(1) हमारे आराध्य (1952), (2) संस्मरण (1952)।
राधिकारमण प्रसाद सिंह—टूटा तारा (1940)।
महादेवी वर्मा—पथ के साथी (1956)।

जैनेन्द्र कुमार—ये और वे।
रामवृक्ष बेनीपुरी—जंजीरें और दीवारें।
राहुल सांकृत्यायन—(1) बचपन की स्मृतियाँ (1955), (2) जिनका मैं कृतज्ञ (1957)।
सत्यजीवन वर्मा 'भारतीय'—एलबम (1949)।
ओंकार शरद—लंका महाराजिन (1950)।
कैलाशनाथ काटजू—मैं भूल नहीं सकता (1955)।
उपेन्द्रनाथ अश्क—(1) मण्टो मेरा दुश्मन (1956), (2) ज्यादा अपनी कम परायी (1959)।
सेठ गोविन्ददास—स्मृतिकण (1959)।
इन्द्र विद्यावाचस्पति—मैं इनका ऋणी हूँ (1959)।
विनोदशंकर व्यास— प्रसाद और उनके समकालीन (1960)।
हरिवंश राय बच्चन—नये पुराने झरोखे (1962)।
सम्पूर्णानन्द—कुछ स्मृतियाँ और स्फुट विचार (1962)।
विष्णु प्रभाकर—(1) जाने-अनजाने (1962), (2) यादों की तीर्थयात्रा (1981), (3) मेरे अग्रज मेरे मीत, (4) समान्तर रेखाएँ, (5) हम इनके ऋणी हैं, (6) एक दिशाहीन सफर, (7) साहित्य के स्वप्न पुरुष, (8) राह चलते-चलते, (9) हमारे पथ प्रदर्शक, (10) हमसफर मिलते हैं, (11) सृजन के सेतु, (12) आकाश एक है, (13) यादों की छाँव में।
शिवपूजन सहाय—वे दिन वे लोग (1946)।
शान्तिप्रिय द्विवेदी—स्मृतियाँ और कृतियाँ (1966)।
रामधारी सिंह 'दिनकर'—(1) लोक देव नेहरू (1965), (2) स्मरण और श्रद्धांजलियाँ (1969)।
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'—जिन्दगी मुस्काई (1953 ई०)।
प्रकाशचन्द्र गुप्त—पुरानी स्मृतियाँ (1947 ई०)।
काका कालेलकर—गाँधी : संस्मरण और विचार (1968)।
लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'—व्यक्तित्व की झाँकियाँ (1970)।
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी—अन्तिम अध्याय (1972)।
लक्ष्मीशंकर व्यास—स्मृति की त्रिवेणिका (1974)।
अनीता राकेश—चंद सतरें और (1975)।
कमलेश्वर—मेरे हमदम मेरे दोस्त (1975)।
क्षेमचन्द्र सुमन—रेखाएँ और संस्मरण (1975)।
रामनाथ सुमन—मैंने स्मृति के दीप जलाएँ (1976)।
परिपूर्णानन्द—बीती यादें (1976)।
विष्णुकांत शास्त्री—(1) स्मरण को पाथेय बनने दो (1978), (2) सुधियाँ उस चंदन के वन की (1992), (3) पर साथ साथ चल रही याद (2004)।
शंकरदयाल सिंह—कुछ ख्वाबों कुछ ख्यालों में (1978)।

भगवतीचरण वर्मा—(1) अतीत के गर्त से (1979), (2) हम खण्डहर के वासी।
मैथिलीशरण गुप्त—श्रद्धांजलि स्मरण (1979)।
सुलोचना रांगेय राघव—पुनः (1979)।
कुँवर सुरेश सिंह—यादों के झरोखें (1980)।
राजेन्द्र यादव—(1) औरों के बहाने (1981), (2) वे देवता नहीं हैं (2000)।
अमृतलाल नागर—जिनके साथ जिया (1981) (1) यशपाल बड़ा ठोस आदमी है।
प्रतिभा अग्रवाल—सृजन का सुख दुःख (1981)।
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'—युग पुरुष (1983)।
पद्मा सचदेवा—(1) दीवानखाना (1984), (2) मितवाघर (1995), (3) अमराई (2000)।
अज्ञेय—स्मृति लेखा (1986)।
कमलकिशोर गोयनका—हजारी प्रसाद द्विवेदी : कुछ संस्मरण (1988)।
बिन्दु अग्रवाल—(1) भारतभूषण अग्रवाल : कुछ यादें कुछ चर्चाएँ (1989), (2) यादें और बातें (1998)।
काशीनाथ सिंह—(1) याद हो के न याद हो (1992), (2) आछे दिन पाछ भये (2004), (3) घर का जोगी जोगड़ा (2006);
अजित कुमार—(1) निकट मन में (1992), (2) निकट मन में दूर वन में (2012)।
प्रकाशवती पाल—(1) लाहौर से लखनऊ तक (1994)।
गिरिराज किशोर—(1) सप्तपर्णी (1994)।
दूधनाथ सिंह—(1) लौट आओ धार (1995), (2) एक शमशेर भी है (2012)
रामदरश मिश्र—(1) स्मृतियों का छंद (1995), (2) अपने अपने रास्ते (2001)।
प्रफुल्लचंद ओझा—अतीत जीवी (1995)।
रवीन्द्र कालिया—सृजन के सहयात्री (1996)।
विष्णुचन्द्र शर्मा—अभिन्न (1996)। 1911
कृष्णा सोबती—(1) हमहशमत (भाग-2), (2) हमहशमत (भाग-3), (3) शब्दों के आलोक में, (4) सोबती एक सोहबत। बचपन
रामनाथ अवस्थी—याद बाते हैं (2000)।
मनोहर किशोर दीवान—नेपथ्य नायक लक्ष्मीचन्द्र जैन (2000)।
देवेन्द्र सत्यार्थी—यादों के काफिले (2000)। क्या गोरी क्या सांवरी
पुरुषोत्तमदास मोदी—अंतरंग संस्मरणों में प्रसाद (2001)।
विश्वनाथप्रसाद तिवारी—एक नाव के यात्री (2001)।
विद्यानिवास मिश्र—चिड़िया रैन बसेरा (2002)।
मनोहर श्याम जोशी—(1) लखनऊ मेरा लखनऊ (2002), (2) रघुवीर सहाय : रचनाओं के बहाने एक संस्मरण (2003), (3) बातों बातों में।

कांतिकुमार जैन—(1) लौट आना नहीं होगा (2002), (2) तुम्हारा परसाई (2004), (3) जो कहूँगा सच कहूँगा (2006), (4) अब तो बात फैल गई (2007)।
कृष्णबिहारी मिश्र—नेह के नाते अनेक (2002)
रामकमल राय—स्मृतियों का शुक्ल पक्ष (2002)
डॉ० विवेकी राय—(1) आँगन के वंदनवार (2003), (2) मेरे सुहृदय श्रद्धेय (2005)।
लक्ष्मीधर मालवीय—लाई हयात आए (2004)
विश्वनाथ त्रिपाठी—(1) नंगा तलाई का गाँव (2004), (2) व्योमकेश दरवेश (2010), (3) गंगा स्नान करने चलोगे (2012)। हजारी
केशवचन्द्र वर्मा—सुमिरन के बहाने (2005)
अमरकांत—कुछ यादें : कुछ बातें
नवनीता देव सेन— किस पथ आए तुम्हारी करुणा
हर्ष मन्दर—अनसुनी आवाजें
ज्ञानचन्द्र जैन—कथाशेष
सुमन केसरी—जे०एन०यू० में नामवर सिंह
जाबिर हुसेन—(1) लोंगा, (2) जो आगे हैं, (3) अतीत का चेहरा, (4) डोला बीवी का मजार
गोविन्द प्रसाद—आलाप और अंतरंग
गौरापंत शिवानी—(1) वातायन 1984 UGC
फणीश्वरनाथ रेणु—(1) बन तुलसी की गंध, (2) समय की शिला पर।
धर्मवीर भारती—ठेले पर हिमालय
नीलाभ अश्क—ज्ञानरंजन के बहाने (2012)

(च) गद्यकाव्य

- श्रीयुत् रायकृष्णदास को हिन्दी का प्रथम गद्य काव्यकार माना जाता है।
- हिन्दी में गद्य काव्य लेखन की प्रेरणा रवीन्द्रनाथ के 'गीतांजलि' के हिन्दी अनुवाद से मिली।
- हिन्दी में लिखे प्रमुख गद्यकाव्य निम्नलिखित है—

लेखक	गद्यगीत या गद्यकाव्य
रायकृष्ण दास	(1) साधना (1916), (2) संलाप (1925), (3) छाया पथ (1929), (4) प्रवाल (1929), (5) प्रवाह (1931)।
वियोगी हरि	(1) तरंगिणी (1919), (2) अन्तर्नाद (1926), (3) प्रार्थना (1929), (4) भावना (1932), (5) श्रद्धांकण (1949)।
चतुरसेन शास्त्री	(1) अन्तस्तल (1921), (2) तरलाग्नि (1936),

	(3) मेरी खयाल की हाय (1939), (4) जवाहर (1946)।
द्गुरुशरण अवस्थी	भ्रमित पथिक (1927)
न्दावनलाल वर्मा	हृदय की हिलोर (1928)
क्ष्मीनारायण 'सुधांशु'	वियोग (1932)
ज्ञेय	(1) भग्नदूत (1933), (2) चिन्ता (1942)।
ॉ० रामकुमार वर्मा	हिमहास (1935)
ान्तिप्रसाद वर्मा	चित्रपट (1932)
जनारायण काक	(1) मंदिरा (1935), (2) निर्झर और पाषाण (1943)।
दिनेशनंदिनी डालमियाँ	(1) शबनम (1937), (2) मौक्तिमाल (1938), (3) शारदीया (1939), (4) दुपहरिया के फूल (1942), (5) वंशीरव (1945), (6) उन्मन (1945), (7) स्पन्दन (1949)।
ामप्रसाद विद्यार्थी 'रावी'	(1) पूजा (1937), (2) शुभ्रा (1942)।
भँवरलाल सिंघी	वेदना (1937)
ाजनारायण मेहरोत्रा 'रजनीश'	आराधना (1939)
डॉ० रघुवीर सिंह	(1) शेष स्मृतियाँ (1936), (2) जीवनधूलि (1951)।
परमेश्वरीलाल गुप्त	बंदी की कल्पना (1941)
माखनलाल चतुर्वेदी	साहित्य देवता (1943)
ब्रह्मदेव	(1) निशीथ (1945), (2) आँसू भरी धरती (1948), (3) उदीची (1956), (4) अन्तरिक्ष (1969)।
व्योहार राजेन्द्र सिंह	मौन के स्वर (1951)
रंगनाथ दिवाकर	अंतरात्मा से (1951)
महावीरशरण अग्रवाल	गुरुदेव (1953)
ठाकुर रामआधार सिंह	लहर पंथी (1956)
रामधारी सिंह 'दिनकर'	उजली आग (1956)
कान्ति त्रिपाठी	जीवनदीप (1965)
माधवप्रसाद पाण्डेय	(1) छितवन के फूल (1974), (2) मधुनीर (1985), (3) स्वर्णनीरा (2000), (4) पराती संझवाती (2002), (5) रूपगीत (2000), (6) सृजन पूजा (2000)।
प्रो० जितेन्द्र सूद	पतझड़ की पीड़ा (1996)
अशोक वाजपेयी	कहीं नहीं वहीं (1990)
राजेन्द्र अवस्थी	काल चिन्तन

(छ) रिपोर्ताज

- 'रिपोर्ताज' फ्रांसीसी शब्द है। गद्य विधा के रूप में इसका आविर्भाव द्वितीय विश्वयुद्ध के आसपास हुआ।
- 'रिपोर्ताज' के जनक के रूप में रूसी साहित्यकार इलिया एहरेनवर्ग को स्वीकार किया जाता है।
- हिन्दी में रिपोर्ताज का जनक शिवदान सिंह चौहान को माना जाता है। रूपाभ पत्रिका के दिसम्बर, 1938 में प्रकाशित 'लक्ष्मीपुरा' को हिन्दी का प्रथम रिपोर्ताज माना जाता है।
- रिपोर्ताज शैली में चंडी प्रसाद सिंह लिखित 'युवराज की यात्रा' (1897) प्रिंस ऑफ वेल्स की भारत यात्रा का विस्तृत और ब्यौरेवार वर्णन है।
- हिन्दी के प्रमुख रिपोर्ताज निम्नलिखित हैं—

लेखक	रिपोर्ताज
शिवदान सिंह चौहान	(1) लक्ष्मीपुरा, (2) मौत के खिलाफ जिन्दगी की लड़ाई।
रांगेय राघव	तूफानों के बीच (1941)
प्रकाश चन्द गुप्त	(1) स्वराज्य भवन, (2) अल्मोड़े का बाजार, (3) बंगाल का अकाल।
उपेन्द्रनाथ अश्क	पहाड़ों में प्रेममय संगीत
रामनारायण उपाध्याय	(1) गरीब और अमीर पुस्तकें (1958), (2) नववर्षांक समारोह में।
भदन्त आनन्द कौशल्यायन	देश की मिट्टी बुलाती है
शिवसागर मिश्र	वे लड़ेंगे हजार साल (1966)
धर्मवीर भारती	युद्ध यात्रा (1972)
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	क्षण बोले कण मुस्काए
शमशेर बहादुर सिंह	प्लाट का मोर्चा (1952)
फणीश्वरनाथ रेणु	(1) ऋणजल धन जल (1977), (2) नेपाली क्रांति कथा (1978), (3) श्रुत-अश्रुत पूर्व (1984), (4) एकलव्य के नोट्स।
विवेकी राय	(1) जुलूस रूका है (1977), (2) बाढ़! बाढ!! बाढ़!!!
डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	खून के छींटे
रामकुमार वर्मा	पेरिस के नोट्स
कैलाश नारद	धरती के लिए
जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी	चीनियों द्वारा निर्मित काठमाण्डू—ल्हासा सड़क
निर्मल वर्मा	प्राग : एक स्वप्न
सती कुमार	क्या हमने कोई षड्यंत्र रचा था?
श्रीकांत वर्मा	मुक्ति फौज
कमलेश्वर	क्रान्ति करते हुए आदमी को देखना
चंडी प्रसाद सिंह	युवराज की यात्रा (1897)

(ज) पत्र साहित्य

- हिन्दी साहित्य पहला पत्र संग्रह महात्मा मुंशीराम ने सन् 1904 ई० में प्रकाशित करवाया।

सम्पादक/संकलनकर्ता	पत्र संग्रह/संकलन
भगवद्दत्त	ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार (1909)
सतीश चन्द्र	पत्रांजलि (1922)
सुभाषचन्द्र बोस	पत्रावलि
भदन्त आनन्द कौसल्यायन	भिक्षु के पत्र (भाग-1 और 2, 1940)
डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	यूरोप के पत्र (1944)
सत्यभक्त स्वामी	अनमोल पत्र (1950)
सूर्यवली सिंह	मनोहर पत्र (1952)
ब्रजमोहनलाल वर्मा	लन्दन के पत्र (1954)
वैजनाथ सिंह 'विनोद'	द्विवेदी पत्रावली (1954)
वनारसीदास चतुर्वेदी व हरिशंकर शर्मा	पद्म सिंह शर्मा के पत्र (1956)
धीरेन्द्र वर्मा व लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	प्राचीन हिन्दी पत्र संग्रह (1959)
शान्तिप्रिय आत्माराम	आलमगीर के पत्र (1931)
वियोगी हरि	बड़ों के प्रेरणादायक कुछ पत्र (1960)
कमलापति त्रिपाठी	बंदी की चेतना (1962)
डॉ० जगदीश चन्द्र	सोवियत रूस पिता के पत्रों में (1966)
किशोरीदास वाजपेयी	साहित्यिकों के पत्र (1958)
अमृतराय	चिट्ठी पत्री (दो भाग) (1962)
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	फाइल और प्रोफाइल (1968)
जीवन प्रकाश जोशी	वच्चन पत्रों में (1970)
वृन्दावनलाल वर्मा	बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र (1971)
जानकीवल्लभ शास्त्री	निराला के पत्र (1971)
हरिवंशराय बच्चन	पंत के दो सौ पत्र वच्चन के नाम (1971)
मधुरेश	यशपाल के पत्र (1977)
रमण शांडिल्य	बाबू वृन्दावनलाल दास के पत्र (1978)
विजयेन्द्र स्नातक	अनुभूति के साथ (1980)
पद्मधर पाठक	द्विवेदीजी के पत्र पाठकजी के नाम (1982)
मुकुन्द द्विवेदी	पत्र (1983)
नेमिचन्द्र जैन	पाया पत्र तुम्हारा (1984)
चन्द्रदेव सिंह	बच्चन के विशिष्ट पत्र (1984)
हरिवंशराय बच्चन	कवियों में सौम्य सन्त (1960)
डॉ० शिवप्रसाद सिंह	शान्ति निकेतन से शिवालिक तक (1967)

लक्ष्मीशंकर व्यास	पराड़करजी और पत्रकारिता
भगवती प्रसाद सिंह	पत्रलोक
रत्नशंकर प्रसाद	प्रसाद के नाम पत्र (1976)
कन्हैयालाल फूलफगर	दिनकर के पत्र (1981)
जीवन प्रसाद जोशी	अंचल पत्रों में (1983)
नरेन्द्र कोहली	(1) नागार्जुन के पत्र (1987), (2) प्रतिना (1996)
राधा भालोटिया	पत्रों के प्रकाश में कन्हैयालाल सोठिया (1989)
रामविलास शर्मा	(1) मित्र संवाद (1992), (2) आपस की बातें (1996)
गोविन्द मिश्र	संवाद अनायास (1993)
जयदेव तनेजा	राकेश और परिवेश पत्रों में (1995)
रामविलास शर्मा	(1) तीन महारथियों के पत्र (1997), (2) कवियों के पत्र (2000)
नंदकिशोर नवल	मैं पढ़ा जा चुका पत्र (1997)
भारत यायावर	चिठिया हो तो हर कोई बाँचे (1999)
पुष्पा भारती	अक्षर-अक्षर यज्ञ (1999)
डॉ० कमलेश अवस्थी	हमकों लिख्यौं हैं कहाँ (2001)
बिन्दु अग्रवाल	पत्राचार (2001)
डॉ० विवेकी राय	पत्रों की छाँव में (2003)
शरद नागर	अत्र कुशल यत्रास्तु (2005)
राजेन्द्र यादव	अब वे वहाँ नहीं रहते (2006)
डॉ० नामवर सिंह व विनयमोहन	काशी के नाम (2006)
गगन गिल	प्रिय राम (2006)
कृपाशंकर चौबे	चलकर आए शब्द

रमेश गजानन मुक्तिबोध व अशोक वाजपेयी—मेरे युवजन : मेरे परिजन (2007)

(झ) इण्टरव्यू (साक्षात्कार)

- हिन्दी में इण्टरव्यू विधा के प्रवर्तक पं० बनारसीदास चतुर्वेदी माने जाते हैं।
- इण्टरव्यू विधा की प्रथम स्वतंत्र पुस्तक बेनीमाधव कृत 'कवि दर्शन' है।
- हिन्दी के कुछ महत्वपूर्ण साक्षात्कार निम्नलिखित हैं—

सम्पादक	इण्टरव्यू या साक्षात्कार
बनारसीदास चतुर्वेदी	(1) रत्नाकरजी से बातचीत (1931), (2) प्रेमचन्द के साथ दो दिन (1932)।
प्रभाकर माचवे	(1) जैनेन्द्र के विचार (1939)
श्री नरोत्तम नागर	अपने ही घर में सरस्वती का अपमान (1947)
बेनी माधव शर्मा	कवि दर्शन
पदमसिंह शर्मा	मैं इनसे मिला (1955)

देवेन्द्र सत्यार्थी	कला के साक्षात्कार
रणवीर रांग्रा	(1) सृजन की मनोभूमि (1968), (2) साहित्यिक साक्षात्कार (1978)।
वीरेन्द्र कुमार गुप्त	समय और हम
रामावतार	समय, समस्या और सिद्धान्त
सुरेश सिन्हा	हिन्दी कहानी और फैशन
शरद देवड़ा	(1) हिन्दी की चार नवोदित लेखिकाओं से एक रंगमंचीय काल्पनिक इंटरव्यू, (2) एक आलोचक की नोटबुक।
लक्ष्मीचन्द्र जैन	भगवान महावीर एक इण्टरव्यू
माजदा असद	मेरी मुलाकातें (1977)
अज्ञेय	अपरोक्ष (1979)
अमृता प्रीतम	शौक सुराही (1979)
मनोहर श्याम जोशी	बातों बातों में (1983)
कमलकिशोर गोयनका	(1) अभिमन्यु अनत : एक बातचीत (1985), (2) जिज्ञासाएँ मेरी : समाधान बच्चन के (1985)।
रामधारी सिंह 'दिनकर'	वट पीपल (1961)
ओमप्रकाश सिंहल	गद्य के नये आयाम (1981)
उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	कहानी के इर्द गिर्द (1971)
केशवचन्द्र वर्मा	शार्टकट की संस्कृति (1973)
कर्ण सिंह चौहान	साक्षात्कार : रामविलास शर्मा से बातचीत (1986)
रत्ना लाहिड़ी	मूल्य : संस्कृति साहित्य और समय (1987)
भारत यायावर	रेणु से भेंट
कैलाश कल्पित	साहित्यकारों के संग (1887)

शरद नागर और आनन्द प्रकाश त्रिपाठी—अमृत मंथन (1991)

रामविलास शर्मा	मेरे साक्षात्कार (1994)
समीक्षा ठाकुर	(1) कहना न होगा (1994), (2) बात बात में बात (2006)।
कृपाशंकर चौबे	संवाद चलता रहे (1995)
भीष्म साहनी	मेरे साक्षात्कार (1996)
पुष्पा भारती	धर्मवीर भारती से साक्षात्कार (1998)
प्रकाश मनु	(1) मुलाकात (1998), (2) रामविलास शर्मा : अंतरंग स्मृतियाँ व मुलाकातें।
कमला प्रसाद	वार्तालाप (1998)
निर्मल वर्मा	मेरे साक्षात्कार (1999)
स्मिता मिश्रा	अंतरंग (1999)
कुमुद शर्मा	गाँव के मन से रू-ब-रू : विद्यानिवास मिश्र (2000)

अजय तिवारी	आज के सवाल और मार्क्सवाद (2000)
विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	मेरे साक्षात्कार (2002)
बलराम	वैष्णवों से वार्ता (2002)
केदारनाथ सिंह	मेरे साक्षात्कार (2003)
हिमांशु जोशी	मेरे साक्षात्कार (2003)
प्रभाकर श्रोत्रिय	मेरे साक्षात्कार (2003)
राजेन्द्र यादव	(1) जवाब दो विक्रमादित्य (2003), (2) एंटन चेखव; एक इंटरव्यू
लीलाधर जगूड़ी	मेरे साक्षात्कार (2003)
मोहन राकेश	मेरे साक्षात्कार (2004)
त्रिलोचन शास्त्री	मेरे साक्षात्कार (2004)
श्रीलाल शुक्ल	मेरे साक्षात्कार (2004)
दूधनाथ सिंह	कहा सुनी (2005)
परमानन्द श्रीवास्तव	मेरे साक्षात्कार (2006)
पुष्पिता	सांस्कृतिक के आलोक से संवाद (2006)

कृष्णा सोवती और कृष्णबलदेव वैद्य— सोबती-वैद संवाद

प्रेम कुमार	साधना से संवाद (2006)
जयप्रकाश कर्दम	मेरे साक्षात्कार (2012)

डायरी

- हिन्दी में डायरी विधा का प्रवर्तन श्री राम शर्मा कृत 'सेवाग्राम की डायरी' (1946) से माना जाता है।
- हिन्दी के प्रमुख डायरी लेखक, डायरी निम्नलिखित हैं—

लेखक	डायरी
घनश्यामदास बिड़ला	डायरी के पन्ने
धीरेन्द्र वर्मा	मेरी कालिज डायरी (1954)
सुन्दरलाल त्रिपाठी	दैनंदिनी
सियारामशरण गुप्त	दैनिकी
उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	ज्यादा अपनी कम परायी (1959)
हरिवंश राय बच्चन	प्रवासी की डायरी (1971)
रामधारी सिंह 'दिनकर'	दिनकर की डायरी
रघुवीर सहाय	दिल्ली मेरा परदेश (1976)
राजेन्द्र अवस्थी	सैलानी की डायरी (1976)
मुक्तिबोध	एक साहित्यिक की डायरी
अजित कुमार	अंकित होने दो
मोहन राकेश	मोहन राकेश की डायरी (1985)
रवीन्द्र कालिया	स्मृतियों की जन्मपत्री (1979)
जमनालाल बजाज	जमना लाल बजाज की डायरी (1966)

शांता कुमार	एक मुख्यमंत्री की डायरी (1977)
जय प्रकाश	मेरी जेल डायरी (1975-77)
चन्द्रशेखर	मेरी जेल डायरी (1977)
सीताराम केसरिया	एक कार्यकर्ता की डायरी (दो भाग-1972)
श्री रामेश्वर टांटिया	क्या खोया क्या पाया (1981)
कमलेश्वर	देश देशान्तर (1992)
मलयज	मलयज की डायरी (तीन खण्ड 2000)
बिशन टंडन	आपातकाल की डायरी (तीन खण्ड 2002, 2005)
डॉ० नरेन्द्र मोहन	साथ साथ मेरा साया (2004)
तेजिन्दर	डायरी सागा सागा (2004)
कृष्ण वलदेव वैद्य	ख्वाब है दीवाने का (2005)
डॉ० विवेकी राय	मनबोध मास्टर की डायरी (2006)
रामदरश मिश्र	आते जाते दिन (2008)
रमेशचन्द्र शाह	अकेला मेला (2009)

हिन्दी पत्रकारिता

- हिन्दी की प्रथम पत्रिका 'उदन्त मार्तंड' 30 मई 1826 ई० को कानपुर निवासी पं० जुगल किशोर के सम्पादकत्व में कलकत्ता से प्रकाशित हुई।
- 'उदन्त मार्तंड' में खड़ी वोली का 'मध्यदेशीय भाषा' के नाम से उल्लेख किया गया है।
- 'उदन्त मार्तंड' के प्रकाशन दिन को आधार मानकर 30 मई को 'राष्ट्रीय हिन्दी पत्रकारिता दिवस' मनाया जाता है।
- कलकत्ता से सन् 1854 ई० में हिन्दी का पहला दैनिक समाचार पत्र 'सुधावर्षण' श्यामसुन्दर के सम्पादकत्व में निकला।
- हिन्दी का पहला सुसंगठित दैनिक पत्र 'भारत मित्र' था।
- हिन्दी की पहली हास्य व्यंग्य प्रधान पत्रिका 'मतवाला' थी।
- हिन्दीभाषी क्षेत्र से प्रकाशित प्रथम पत्रिका 'वनारस' अखबार थी।
- हिन्दी के प्रमुख समाचार पत्र-पत्रिकाओं की रूपरेखा निम्नांकित है—

सन 1826 से 1900 तक

समाचार पत्र	सम्पादक	वर्ष	प्रकार	स्थान
उदन्त मार्तण्ड	जुगल किशोर	1826	साप्ताहिक	कलकत्ता
वंगदूत	राजा राममोहन राय	1829	साप्ताहिक	कलकत्ता
प्रजामित्र		1834	साप्ताहिक	कलकत्ता
वनारस अखबार	राजा शिवप्रसाद सिंह	1845	साप्ताहिक	बनारस
मार्तण्ड	मो० नासिरुद्दीन	1846	साप्ताहिक	कलकत्ता
मालवा अखबार	प्रेम नारायण	1849	साप्ताहिक	मालवा
सुधाकर	वाबू तारामोहन मित्र	1850	साप्ताहिक	काशी
वुद्धि प्रकाश	मुंशी सदासुखलाल	1852	साप्ताहिक	आगरा
समाचार सुधावर्षण	श्यामसुन्दर सेन	1854	दैनिक	कलकत्ता
प्रजा हितैषी	राजा लक्ष्मण सिंह	1855		आगरा
तत्वबोधिनी पत्रिका		1865		बरेली
ज्ञान प्रदायिनी पत्रिका	नवीनचन्द्र राय	1867	मासिक	लाहौर
वृत्तान्त विलास		1867	मासिक	जम्मू
कविवचन सुधा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	1868	मा.,पा.सा.	काशी
जगत समाचार		1869	साप्ताहिक	आगरा
सुलभ समाचार		1871	साप्ताहिक	कलकत्ता
अल्मोड़ा अखबार	सदानन्द सलवास	1871		
हिन्दी दीप्ति प्रकाश	कार्तिक प्रसाद खत्री	1872		कलकत्ता
विहार वंधु	केशवराम भट्ट	1872	मासिक	बांकीपुर
चरणादि चंद्रिका		1873	साप्ताहिक	बनारस
हरिश्चन्द्र मैगजीन	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	1873	मासिक	बनारस
वालाबोधिनी	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	1874	मासिक	बनारस
सदादर्श	श्रीनिवास दास	1874	मासिक	काशी
काशी पत्रिका	वलदेव प्रसाद	1876	साप्ताहिक	अलीगढ़
भारत बन्धु	तोताराम	1876	साप्ताहिक	अलीगढ़
भारत मित्र	रुद्रदत्त	1877		कलकत्ता
मित्र विलास	कन्हैयालाल (पं गोपीनाथ)	1877		लाहौर
हिन्दी प्रदीप	वालकृष्ण भट्ट	1877	मासिक	प्रयाग
आय-दर्पण	मुंशी वख्तावर सिंह	1877		शाहजहाँपुर
कायस्थ समाचार		1878	मासिक	इलाहाबाद
आर्य मित्र		1878	मासिक	बनारस
सार सुधानिधि	सदानन्द मिश्र	1878	साप्ताहिक	कलकत्ता
उचित वक्ता	दुर्गाप्रसाद मिश्र	1878	साप्ताहिक	कलकत्ता
सज्जन कीर्ति सुधाकर	वंशीधर	1879		उदयपुर
भारत सुदशा प्रवर्तक	गणेश प्रसाद	1879		फर्रुखाबाद
क्षत्रिय पत्रिका		1880	मासिक	बांकीपुर
आनन्द कादंबिनी	बदरीनारायण चौधरी	1881	मासिक	मिर्जापुर
देश हितैषी		1879		अजमेर
भारतेन्दु	पं० राधाचरण गोस्वामी	1884		वृन्दावन
देवनागरी प्रचारक		1882		मेरठ
दिनकर प्रकाश	रामदास वर्मा	1883		लखनऊ
धर्म दिवाकर	देवी सहाय	1883		कलकत्ता
प्रयाग समाचार	देवकीनन्दन त्रिपाठी	1883		
ब्राह्मण	प्रतापनारायण मिश्र	1883	मासिक	कानपुर
शुभ चिन्तक	सीताराम.	1883		जबलपुर
समाचार मार्तंड	लालचन्द शास्त्री	1883		जयपुर

हिन्दोस्थान	राजा रामपाल सिंह	1883	दैनिक	इंग्लैण्ड
काशी समाचार		1883	साप्ताहिक	काशी
इंदु		1883	मासिक	लाहौर
कान्यकुब्ज प्रकाश		1884		लखनऊ
भारतोदय		1885	दैनिक	कानपुर
पीयूष प्रवाह	अम्बिकादत्त व्यास	1884		काशी
भारत जीवन	रामकृष्ण वर्मा	1884		काशी
कविकुलकंज दिवाकर	रामनाथ शुक्ल	1884		बस्ती
आर्यावर्त	-	1887	साप्ताहिक	कलकत्ता
रहस्य चन्द्रिका		1888	पाक्षिक	बनारस
हिन्दी बंगवासी		1890	साप्ताहिक	कलकत्ता
नागरी नीरद	बदरीनारायण चौधरी	1893	साप्ताहिक	मिर्जापुर
साहित्य सुधानिधि		1894	मासिक	काशी
श्री वेंकटेश्वर समाचार		1895	साप्ताहिक	बम्बई
विद्या विनोद		1895	मासिक	बांकीपुर
नागरी प्रचारिणी पत्रिका	वेणी प्रसाद	1896	त्रैमासिक	काशी
समस्यापूर्ति		1897		बांकीपुर
रसिक पत्रिका		1897	साप्ताहिक	कानपुर
उपन्यास	गोपालराम गहमरी	1898	मासिक	काशी
पण्डित पत्रिका		1898	मासिक	काशी
सरस्वती	चिन्तामणि घोष	1900	मासिक	काशी
सुदर्शन	देवकीनंदन एवं माधव	1900	मासिक	काशी

❑ 'मित्रविलास' पंजाब में प्रकाशित होने वाली हिन्दी की प्रथम पत्रिका है।

❑ 'हिन्दोस्थान' 1885 ई० में कालाकांकर से प्रकाशित होने लगा।

❑ 'सरस्वती' प्रथमतः काशी से प्रकाशित होती थी पुनः इलाहाबाद से प्रकाशित होने लगी। सन् 1902 में इसके सम्पादक श्यामसुन्दरदास थे तथा 1903 में इसके सम्पादक महावीरप्रसाद द्विवेदी बने।

❑ 'हिन्दी प्रदीप' के मुख पृष्ठ पर लिखा रहता था—
"शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रकट है आनन्द भरे"

❑ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'प्रजाहितैषी' का प्रकाशन वर्ष संवत् 1919 (1861 ई०) माना है जबकि अन्य विद्वानों (नगेन्द्र) ने इसका प्रकाशन वर्ष 1855 माना है।

सन् 1901 से 1938 तक

समाचार पत्र	सम्पादक	वर्ष	प्रकार	स्थान
समालोचक	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	1902	मासिक	जयपुर
हितवाणी	रुद्रदत्त शर्मा व सखाराम	1904		कलकत्ता
देवनागर	उमादत्तपति व यशोदानंदन	1907	मासिक	कलकत्ता
नृसिंह	अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	1907	साप्ताहिक	कलकत्ता
अभ्युदय	मदनमोहन मालवीय	1907	साप्ताहिक	प्रयाग

इंदु	अम्बिका प्रसाद गुप्त	1909	मासिक	काशी
कर्मयोगी	सुन्दरलाल	1909	साप्ताहिक	प्रयाग
मर्यादा	कृष्णकांत मालवीय	1909	मासिक	प्रयाग
मनोरंजन	ईश्वरीप्रसाद शर्मा	1912	साप्ताहिक	कानपुर
प्रताप	गणेशशंकर विद्यार्थी	1913	साप्ताहिक	कानपुर
प्रभा	कालूरामजी	1913	मासिक	खण्डवा
पाटलिपुत्र	काशीप्रसाद जायसवाल	1914	मासिक	पटना
कलकत्ता समाचार	अमृतलाल चक्रवर्ती	1914	दैनिक	कलकत्ता
विश्वामित्र		1918	दैनिक	कलकत्ता
चाँद	महादेवी वर्मा	1920	साप्ताहिक	प्रयाग
प्रभा	बालकृष्ण शर्मा नवीन			कानपुर
माधुरी	दुलारे लाल भार्गव	1922		लखनऊ
सुधा	दुलारे लाल भार्गव	1929	मासिक	लखनऊ
कल्याण	गीताप्रेस से	1925	मासिक	गोरखपुर
विशाल भारत	बनारसीदास चतुर्वेदी	1928	मासिक	कलकत्ता
हंस	प्रेमचंद	1930	मासिक	बनारस
आदर्श	शिवपूजन सहाय		मासिक	कलकत्ता
मौजी	शिवपूजन सहाय		मासिक	कलकत्ता
समन्वय	माधवानन्द	1922	मासिक	कलकत्ता
सरोज	नवजादिक लाल श्रीवास्तव	1928	मासिक	कलकत्ता
साहित्य सन्देश	बाबू गुलाबराय	1937	मासिक	आगरा
मतवाला	महादेव प्रसाद सेठ	1923	साप्ताहिक	कलकत्ता
जागरण	शिवपूजन सहाय	1932	साप्ताहिक	बनारस
भारत	नन्ददुलारे वाजपेयी		अर्ध साप्ता	इलाहाबाद
नवजीवन	महात्मा गाँधी	1921	साप्ताहिक	अहमदाबाद
देश	राजेन्द्र प्रसाद	1920	साप्ताहिक	पटना
कर्मवीर	माखनलाल चतुर्वेदी और माधवराव सप्रे	1924	साप्ताहिक	जबलपुर
श्रीकृष्ण सन्देश	लक्ष्मण नारायण गर्दे	1925	साप्ताहिक	कलकत्ता
सेनापति	रामगोविन्द त्रिवेदी	1926	साप्ताहिक	कलकत्ता
हिन्दू-पंच	ईश्वरीदत्त शर्मा	1926	साप्ताहिक	कलकत्ता
भारत मित्र	अम्बिका प्रसाद वाजपेयी	1919	दैनिक	
दैनिक विश्वामित्र		1916	दैनिक	
आज	बाबू विष्णुराव पराड़कर	1920	दैनिक	वाराणसी
स्वतंत्र	अंबिका प्रसाद वाजपेयी	1920	दैनिक	कलकत्ता

❑ 'मतवाला' पत्र का मोटो सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने लिखा था जो निम्न है—
"आमिय गरल शशि सीकर रविकर
राग विराग भरा प्याला,

पीते हैं, जो साधक उनका प्यारा मतवाला।''

- 'मतवाला' पत्रिका के दूसरे पृष्ठ पर अग्रांकित पंक्तियाँ छपती थीं—
  खींचो न कमानों को न तलवार निकालो,
  जब तोप मुकाबित हो तो अखबार निकालो।
- 'चलती चक्की', 'चंडूखाने की गप' तथा 'रंगरूटों की फौज' मतवाला पत्रिका के स्थायी स्तम्भ थे।
- 'मतवाला' के सम्पादन विभाग में निराला, शिवपूजन सहाय, नवजादिक लाल श्रीवास्तव तथा पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' भी थे।
- 'कर्मवीर' का पत्रिका आदर्श वाक्य निम्नांकित था—
  ''कर्म है अपना जीवन प्राण, कर्म पर हो जाओ बलिदान''
- 'हिन्दू पंच' पत्रिका का आदर्श वाक्य निम्नलिखित था—
  लज्जा रखने को हिन्दू भी, हिन्दू नाम बचाने को।
  आया हिन्दू पंच हिन्द में, हिन्दू जाति जगाने को॥
- 'चाँद' पत्रिका का प्रकाशन सन् 1923 ई० से रामरख सहगल और चंडी प्रसाद 'हृदयेश' के सम्पादन में मासिक पत्र के रूप में होने लगा।
- 'प्रभा' पत्रिका में प्रकाशित 'भावों की भिडन्त' शीर्षक लेख में निराला की कविताओं को रवीन्द्रनाथ ठाकुर की नकल कहा गया।

सन् 1939 से 2000 ई० तक

समाचार पत्र	सम्पादक	वर्ष	प्रकार	स्थान
वीर अर्जुन	इन्द्र विद्यावाचस्पति			दिल्ली
सैनिक	कृष्णदत्त पालीवाल			आगरा
सारथी		1924	साप्ताहिक	जवलपुर
वीणा	शान्तिप्रिय द्विवेदी			इन्दौर
नया समाज	सेंगर	1948		
त्रिपथगा				लखनऊ
प्रतीक	अज्ञेय	1947	द्विमासिक	इलाहावद
रूपाभ	सुमित्रानन्दन पंत	1938	मासिक	
कल्पना	आर्येन्द्र शर्मा	1949	द्विमासिक	हैदराबाद
धर्मयुग	धर्मवीर भारती	1950	साप्ताहिक	वम्बई
आलोचना	शिवदान सिंह चौहान	1951	त्रैमासिक	दिल्ली
आजकल		1945	मासिक	दिल्ली
नये पत्ते	लक्ष्मीकांत वर्मा	1953		इलाहावाद
नयी कविता	जगदीश गुप्त	1954	अर्धवार्षिक	इलाहावाद
ज्ञानोदय	कन्हैयालाल मिश्र	1955	मासिक	कलकत्ता
निकष	धर्मवीर भारती	1956	साप्ताहिक	इलाहाबाद
कृति	नरेश मेहता	1958		दिल्ली
समालोचक	रामविलास शर्मा	1958	मासिक	आगरा

पहल	ज्ञानरंजन	1960	त्रैमासिक	जयपुर
क ख ग	रघुवंश	1963	त्रैमासिक	इलाहाबाद
दिनमान	रघुवीर सहाय	1965	साप्ताहिक	दिल्ली
पूर्वग्रह	अशोक वाजपेयी	1974	मासिक	भोपाल
वर्तमान साहित्य	विभूतिनारायण राय	1984	मासिक	इलाहाबाद
हंस (पुनर्प्रकाशन)	राजेन्द्र यादव	1986	मासिक	दिल्ली
कथादेश	हरिनारायण	1997	मासिक	दिल्ली
नया खून	मुक्तिबोध			मध्यप्रदेश

समकालीन पत्रकारिता

पत्र/पत्रिका	वर्तमान सम्पादक	प्रकार	स्थान
आलोचना	अरुण कमल	त्रैमासिक	दिल्ली
तद्भव	अखिलेश	त्रैमासिक	लखनऊ
समीक्षा	सत्यकाम	त्रैमासिक	दिल्ली
वागर्थ	एकांत श्रीवास्तव	मासिक	कलकत्ता
नया ज्ञानोदय	रवीन्द्र कालिया	मासिक	दिल्ली
लमही	ऋतिक राय	त्रैमासिक	लखनऊ
हंस	राजेन्द्र यादव	मासिक	दिल्ली
आजकल	सीमा ओझा/फरहत परवीन	मासिक	दिल्ली
कथादेश	हरिनारायण	मासिक	दिल्ली
वर्तमान साहित्य	नमिता सिंह	मासिक	अलीगढ़
नया पथ	मुरली मनोहर प्रसाद सिंह	त्रैमासिक	दिल्ली
साखी	सदानन्द साही	त्रैमासिक	वनारस
पक्षधर	विनोद तिवारी	अर्धवार्षिक	दिल्ली
वयाँ	गौरीनाथ	त्रैमासिक	गाजियावाद
परिकथा	शंकर	मासिक	दिल्ली
पाखी	प्रेम भारद्वार	मासिक	दिल्ली
शुक्रवार	विष्णु नागर	पाक्षिक	दिल्ली
पहल	ज्ञानरंजन और राज कुमार केसरवानी	त्रैमासिक	गाजियावाद
वसुधा	स्वयं प्रकाश और राजेन्द्र शर्मा	त्रैमासिक	भोपाल
कथाक्रम	शैलेन्द्र सागर	त्रैमासिक	लखनऊ
संवेद	किशन कालजयी		मुंगेर
समकालीन सरोकार	सुभाष राय		
दस्तावेज	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी		गोरखपुर
वाक्	सुधीर पचौरी	त्रैमासिक	

हिन्दी की प्रमुख दलित पत्रिकाएँ

- दलित पत्रकारिता की शुरुआत मराठी में 1 जनवरी 1899 से ''दीनबन्धु' से माना जाता है। इसका सम्पादन ज्योतिबा फूले करती थीं।
- हिन्दी दलित पत्रकारिता की शुरुआत. अम्बेडकर के 'जनता' पत्र से माना जाता है।
- प्रमुख दलित पत्रिकाएँ और उसके सम्पादक निम्नलिखित हैं—

सम्पादक	वर्ष	पत्र/पत्रिका	प्रकार	स्थान
भीमराव अम्बेडकर	1920	मूकनायक		
भीमराव अम्बेडकर	1927	बहिष्कृत भारत		
भीमराव अम्बेडकर	1928	समता		
भीमराव अम्बेडकर	1930	जनता		
रघुनन्दन प्रसाद	1937	दलित मित्र		बिहार
चन्द्रिका प्रसाद	1937	नवजीवन		लखनऊ
अज्ञात	1961	अस्मितादर्श		महाराष्ट्र
नामदेव ढकसाल व जे०पी पवार	1975	पैंथर		
पैंथर संगठन द्वारा	1978	आक्रोश		
देवेश चौधरी	2000	तीसरा पक्ष	त्रैमासिक	जबलपुर
तेज सिंह	2000	अपेक्षा		दिल्ली
मोहनदास नैमिशराय	2006	बयान	मासिक	दिल्ली
डॉ० तुलसीराम		भारत अश्वघोष		नागपुर
ओमप्रकाश वाल्मीकि	1995	प्रज्ञा साहित्य	त्रैमासिक	फर्रुखाबाद
जय प्रकाश कर्दम	1997	पश्यन्ती		दिल्ली
देश निर्मोही		पल प्रतिपल		पंचकूला
रमणिका गुप्ता		युद्धरत आम आदमी		दिल्ली
जयप्रकाश कर्दम		दलित साहित्य वार्षिकी		दिल्ली
जयनारायण	1998	कल के लिए		बहराइच
विभांशु दिव्या	1997	राष्ट्रीय सहारा (हस्तक्षेप)	साप्ताहिक	नोएडा
दिनेश राम		बहुरि नहिं आवन	त्रैमासिक	दिल्ली
सपना सोनकर		नागफनी	त्रैमासिक	उत्तराखण्ड
विमल थोराट		दलित अस्मिता	त्रैमासिक	दिल्ली

- भीमराव अम्बेडकर 'जनता' पत्रिका को सन् 1956 ई० से 'प्रबुद्ध भारत' नाम से प्रकाशित करने लगे थे।

पुरस्कार एवं सम्मान

(क) ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्यकार

2013 (49वाँ) केदारनाथ सिंह
2017 (53वाँ) कृष्णा सोबती

वर्ष	पुरस्कार विजेता	रचना
1968	सुमित्रानंदन पंत	चिदम्बरा
1972	रामधारी सिंह 'दिनकर'	उर्वशी
1978	अज्ञेय	कितनी नावों में कितनी बार
1982	महादेवी वर्मा	यामा
1992	नरेश मेहता	सम्पूर्ण साहित्य
1999	निर्मल वर्मा	सम्पूर्ण साहित्य
2005	कुँवर नारायण	सम्पूर्ण साहित्य
2009	अमरकांत एवं श्रीलाल शुक्ल	सम्पूर्ण साहित्य

नोट : सन् 1984 ई० के बाद ज्ञानपीठ पुरस्कार लेखक के समग्र साहित्यिक योगदान पर दिया जाने लगा।

(ख) हिन्दी साहित्य अकादमी पुरस्कार

वर्ष	पुरस्कार विजेता	रचना	विधा
1955	माखनलाल चतुर्वेदी	हिमतरंगिणी	काव्य
1956	वासुदेवशरण अग्रवाल	पद्मावत संजीवनी	व्याख्या
1957	आचार्य नरेन्द्रदेव	बौद्ध धर्म दर्शन	दर्शन
1958	राहुल सांकृत्यायन	मध्य एशिया का इतिहास	इतिहास
1959	रामधारी सिंह दिनकर	संस्कृति के चार अध्याय	भा० संस्कृति
1960	सुमित्रानंदन पंत	कला और बूढ़ा चाँद	काव्य
1961	भगवतीचरण वर्मा	भूले बिसरे चित्र	उपन्यास
1962	पुरस्कार नहीं दिया गया		
1963	अमृत राय	प्रेमचंद : कलम का सिपाही	जीवनी
1964	अज्ञेय	आँगन के पार द्वार	काव्य
1965	डॉ० नगेन्द्र	रस सिद्धान्त	विवेचना
1966	जैनेन्द्र कुमार	मुक्तिबोध	उपन्यास
1967	अमृतलाल नागर	अमृत और विष	उपन्यास
1968	हरिवंश राय बच्चन	दो चट्टाने	काव्य
1969	श्रीलाल शुक्ल	राग दरबारी	उपन्यास
1970	रामविलास शर्मा	निराला की साहित्य साधना	जीवनी
1971	नामवर सिंह	कविता के नये प्रतिमान	आलोचना
1972	भवानी प्रसाद मिश्र	बुनी हुई रस्सी	काव्य
1973	हजारी प्रसाद द्विवेदी	आलोक पर्व	निबन्ध
1974	शिवमंगल सिंह 'सुमन'	मिट्टी की बारात	काव्य
1975	भीष्म साहनी	तमस	उपन्यास
1976	यशपाल	मेरी तेरी उसकी बात	उपन्यास
1977	शमशेर बहादुर सिंह	चुका भी हूँ मैं नहीं	काव्य
1978	भारत भूषण अग्रवाल	उतना वह सूरज है	काव्य
1979	धूमिल	कल सुनना मुझे	काव्य
1980	कृष्णा सोबती	जिन्दगीनामा	उपन्यास

2014 रमेश चन्द्र शाह - विनायक (उपन्यास)
2015 रामदरश मिश्र - आग की हँसी (काव्य)
2016 पारिजात (उ.) - नासिरा शर्मा
2017 रमेश कुंतल मेघ - विश्वमिथक सागर (साहित्य समालोचना)

1981	त्रिलोचन शास्त्री	ताप के ताये हुए दिन	काव्य
1982	हरिशंकर परसाई	विकलांग श्रद्धा का दौर	व्यंग्य
1983	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	खूटियों पर टँगे लोग	काव्य
1984	रघुवीर सहाय	लोग भूल गये हैं	काव्य
1985	निर्मल वर्मा	कव्वे और काला पानी	कहानी
1986	केदारनाथ अग्रवाल	अपूर्वा	काव्य
1987	श्रीकांत वर्मा	मगध	काव्य
1988	नरेश मेहता	अरण्या	काव्य
1989	केदारनाथ सिंह	अकाल में सारस	काव्य
1990	शिव प्रसाद सिंह	नीला चाँद	उपन्यास
1991	गिरिजा कुमार माथुर	मैं वक्त के हूँ सामने	काव्य
1992	गिरिराज किशोर	ढाई घर	उपन्यास
1993	विष्णु प्रभाकर	अर्धनारीश्वर	उपन्यास
1994	अशोक वाजपेयी	कहीं नहीं वहीं	काव्य
1995	कुँवर नारायण	कोई दूसरा नहीं	काव्य
1996	सुरेन्द्र वर्मा	मुझे चाँद चाहिए	उपन्यास
1997	लीलाधर जगूड़ी	अनुभव के आकाश में चाँद	काव्य
1998	अरुण कमल	नये इलाके में	काव्य
1999	विनोद कुमार शुक्ल	दीवार में एक खिड़की रहती थी	उपन्यास
2000	मंगलेश डबराल	हम जो देखते हैं	काव्य
2001	अलका सरावगी	कलि कथा : वाया वाईपास	उपन्यास
2002	राजेश जोशी	दो पंक्तियों के बीच	काव्य
2003	कमलेश्वर	कितने पाकिस्तान	उपन्यास
2004	वीरेन डंगवाल	दुष्चक्र में स्रष्टा	काव्य
2005	मनोहर श्याम जोशी	क्याप	उपन्यास
2006	ज्ञानेन्द्र पति	संशयात्मा	काव्य
2007	अमरकांत	इन्हीं हथियारों से	उपन्यास
2008	गोविन्द मिश्र	कोहरे में कैद रंग	उपन्यास
2009	कैलाश वाजपेयी	हवा में हस्ताक्षर	काव्य
2010	उदय प्रकाश	मोहनदास	कहानी
2011	काशीनाथ सिंह	रेहन पर रग्घू	उपन्यास
2012	चंद्रकांत देवताले	पत्थर फेंकता है	काव्य
2013	मृदुला गर्ग	मिलजुल मन	उपन्यास

(ग) व्यास-सम्मान

वर्ष	पुरस्कार विजेता	पुस्तक	विधा

1992	शिव प्रसाद सिंह	नीला चाँद	उपन्यास
1993	गिरिजा कुमार माथुर	मैं वक्त के हूँ सामने	काव्य
1994	धर्मवीर भारती	सपना अभी भी	काव्य
1995	कुँवर नारायण	आत्मजयी	काव्य
1996	रामस्वरूप चतुर्वेदी	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	इतिहास
1997	केदारनाथ सिंह	उत्तर कबीर तथा अन्य कविताएँ	काव्य
1998	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	उपन्यास
1999	श्रीलाल शुक्ल	विश्रामपुर का संत	उपन्यास
2000	गिरिराज किशोर	पहला गिरमिटिया	उपन्यास
2001	रमेशचन्द्र शाह	आलोचना का पक्ष	आलोचना
2002	कैलाश वाजपेयी	पृथ्वी का कृष्ण पक्ष	काव्य
2003	चित्रा मुद्‌गल	आँवा	उपन्यास
2004	मृदुला गर्ग	कठगुलाब	उपन्यास
2005	चन्द्रकांता	कथा सतीसर	उपन्यास
2006	परमानंद श्रीवास्तव	कविता का अर्थात्	आलोचना
2007	कृष्णा सोबती	समय सरगम	उपन्यास
2008	मन्नू भंडारी	एक कहानी यह भी	आत्मकथा
2009	अमरकांत	इन्हीं हथियारों से	उपन्यास
2010	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	फिर भी कुछ शेष रह जाएगा	काव्य
2011	रामदरश मिश्र	आम के पत्ते	काव्य
2012	नरेन्द्र कोहली	ना भूतो ना भविष्यति	उपन्यास
2013	विश्वनाथ त्रिपाठी	व्योमकेश दरवेश	संस्मरण

(घ) मंगला प्रसाद पारितोषिक

रचनाकार	रचना
वियोगी हरि	वीर सतसई
पद्म सिंह शर्मा	बिहारी सतसई की भूमिका
हरिऔध	प्रिय प्रवास
मैथिलीशरण गुप्त	साकेत
जयशंकर प्रसाद	कामायनी
गंगा प्रसाद उपाध्याय	जीवन चक्र
रामचन्द्र शुक्ल	रस मीमांसा
महादेवी वर्मा	रश्मि और नीरजा
जैनेन्द्र	परख
हजारी प्रसाद द्विवेदी	कबीर
डॉ० सम्पूर्णानन्द	समाजवाद

(ङ) देव पुरस्कार

रचनाकार	रचना
दुलारेलाल भार्गव	दुलारे दोहावली
रामनाथ ज्योतिषी	रामचन्द्रोदय

(च) सरस्वती सम्मान

वर्ष	लेखक	रचना
1991	हरिवंश राय बच्चन	दशद्वार से सोपान तक
1997	लीलाधर जगूड़ी	नाटक जारी है
2013	गोविन्द मिश्र	धूल पौधों पर

(छ) सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार

रचनाकार	रचना
सुमित्रानंदन पंत	लोकायतन
शिवमंगल सिंह 'सुमन'	मिट्टी की वारात
केदारनाथ अग्रवाल	फूल नहीं रंग बोलते हैं
रामविलास शर्मा	भारत में अंग्रेजी राज्य और मार्क्सवाद
अमृतलाल नागर	अमृत और विष
अब्दुल विस्मिल्लाह	झीनी झीनी वीनी चदरिया

विश्व हिन्दी सम्मेलन

क्रम	वर्ष	शहर	देश
प्रथम	10–12 जनवरी, 1975	नागपुर	भारत
द्वितीय	28–30 अगस्त, 1976	पोर्टलुई	मॉरीशस
तृतीय	28–30 अक्टूबर, 1983	दिल्ली	भारत
चतुर्थ	02–04 दिसम्बर, 1993	पोर्टलुई	मॉरीशस
पंचम	04–08 अप्रैल, 1996	पोर्ट ऑफ स्पेन	ट्रिनिडाड एवं टोबेगो
छठा	14–18 सितम्बर, 1999	लन्दन	यूनाइटेड किंगडम
सातवाँ	06–09 जून, 2003	पारामारिबो	सूरीनाम
आठवाँ	13–15 जुलाई 2007	न्यूयार्क	अमेरिका
नवाँ	22–24 सितम्बर, 2012	जोहान्सवर्ग	दक्षिण अफ्रीका

प्रमुख रचनाकार : उपनाम और उपाधियाँ

मूलनाम	उपनाम / उपाधियाँ
विद्यापति	कविशेखर, दशावधान, कविकण्ठहार, पंचानन, अभिनव जयदेव, मैथिल कोकिल
अब्दुल हसन	अमीर खुसरो
स्वयंभू	अपभ्रंश का वाल्मीकि तथा व्यास
पुष्पदंत	हिन्दी का भवभूति, भाखा की जड़, अभिमान मेरु, काव्य रत्नाकर, कविकुल तिलक

मूलनाम	उपनाम / उपाधियाँ
धनपाल	सरस्वती
हेमचन्द्र	प्राकृत का पाणिनी, कलिकाल सर्वज्ञ
नंददास	गढ़िया और जड़िया कवि
हरिश्चन्द्र	भारतेन्दु, रसा
बदरीनारायण चौधरी	प्रेमघन, अभ्र
जगन्नाथदास	रत्नाकर
महावीर प्रसाद द्विवेदी	सुकवि किंकर, भुजंगभूषण भट्टाचार्य
हरिहर प्रसाद द्विवेदी	वियोगी हरि, गद्य काव्य का लेखक
अयोध्या सिंह उपाध्याय	हरिऔध
मैथिलीशरण गुप्त	रसिकेन्द्र, राष्ट्रकवि, दद्दा
राय देवी प्रसाद	पूर्ण
गया प्रसाद शुक्ल	सनेही, त्रिशुल
गिरिधर शर्मा	नवरत्न
सत्यनारायण	कविरत्न, ब्रजकोकिल, श्रीश
वालमुकुन्द गुप्त	शिवशम्भु
चन्द्रधर शर्मा	गुलेरी
जगन्नाथ प्रसाद	भानु
माखनलाल चतुर्वेदी	एक भारतीय आत्मा
जयशंकर प्रसाद	कलाधर
सूर्यकांत त्रिपाठी	निराला, महाप्राण, श्रीमान् गरगज सिंह वर्मा, साहित्यशार्दूल
वालकृष्ण शर्मा	नवीन
धनपतराय	नवाबराय, प्रेमचन्द, उपन्यास सम्राट
महादेवी वर्मा	आधुनिक युग की मीरा
कृष्णदेव प्रसाद गौड़	बेढब बनारसी
राजेन्द्र वाला घोष	बंग महिला
मल्लिका देवी	साध्वी सती प्राण अबला
शिव प्रसाद सिंह	सितारे हिन्द
बद्रीनाथ भट्ट	सुदर्शन
पाण्डेय बेचन शर्मा	उग्र, अष्टावक्र
जी०पी० श्रीवास्तव	गंगा प्रसाद श्रीवास्तव
हरिकृष्ण	प्रेमी
जगदम्बा प्रसाद मिश्र	हितैषी
कान्तानाथ पाण्डेय	चोंच
शिवरत्न शुक्ल	बलई
रामेश्वर शुक्ल	अंचल
हृदयनारायण	हृदयेश
जनार्दन प्रसाद झा	द्विज
मोहनलाल महतो	वियोगी

केदारनाथ मिश्र	प्रभात
रमाशंकर शुक्ल	रसाल
उपेन्द्रनाथ	अश्क
शिवपूजन सहाय	शिव, भाषा का जादूगर, हिन्दी भूषण
लक्ष्मीनारायण	सुधांशु
रामकृष्ण शुक्ल	शिलीमुख
रमानाथ	सुमन
भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र	माधव
गिरिजादत्त शुक्ल	गिरीश
शिवमंगल सिंह	सुमन, विभ्राट वासना के कवि
मुंशी सदासुखलाल	नियाज
लाला भगवानदीन	दीन
रामधारी सिंह	दिनकर, अधैर्य के कवि, समय-सूर्य,
सुमित्रानन्दन पंत	अप्सरा लोक का कवि, स्वरसिद्ध, गोसाईदत्त पंत
फणीश्वरनाथ	रेणु, धरती का धन
हजारीप्रसाद द्विवेदी	बीसवीं सदी का बाणभट्ट, वैद्यनाथ द्विवेदी, व्योमकेश
भगवतीचरण वर्मा	स्वरति के कवि
हरिवंश राय	बच्चन, जनता के बीच के कवि
वैद्यनाथ मिश्र	यात्री, नागार्जुन, बाबा, ठक्कन मिसिर, राजनीतिक कवि
बाबू गोपालचन्द	गिरिधरदास
विश्वंभरनाथ शर्मा	कौशिक, विजयानन्द दूबे
अभिमन्यु अनत	शबनम
वासुदेव सिंह	त्रिलोचन, किंवदंती पुरुष, अवध का किसान कवि
गजानन माधव	मुक्तिबोध, भयानक खबरों का कवि
शमशेर बहादुर सिंह	कवियों के कवि, मूड्स के कवि, बात के कवि, कुलदीप सिंह
भवानीप्रसाद मिश्र	बालमोहन, सहजता के कवि, कविता का गांधी
त्र्यंबक वीर राघवाचार्य	रांगेय राघव
कैलास सक्सेना	कमलेश्वर
रामविलास शर्मा	अगिया बैताल, निरंजन
विद्यानिवास मिश्र	भ्रमरानन्द, परम्पराजीवी
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन	अज्ञेय, कुट्टीचातन, कठिन गद्य के प्रेत
नारायण प्रसाद	बेताब
चंडी प्रसाद	हृदयेश
शिव प्रसाद मिश्र	रुद्र, काशिकेय
गुलशेर खाँ	शानी
सेवाराम यात्री	से०रा० यात्री
प्रभुलाल गर्ग	काका हाथरसी
मनोहर श्याम जोशी	कल के वैज्ञानिक

नाथूराम शर्मा	शंकर, कविता-कामिनीकांत, भारतेन्दु-प्रज्ञेन्दु, साहित्य सुधाकर
लोचन प्रसाद पाण्डेय	काव्य विनोद, साहित्य वाचस्पति
गिरिजाकुमार माथुर	ऐन्द्रियता के कवि
महेन्द्र कुमारी	मन्नू भण्डारी
दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर	काका कालेलकर
आनन्दीलाल	जैनेन्द्र, उत्तर भारत का शरत्चन्द्र
श्रीराम वर्मा	अमरकान्त
कुमार विमल	धूमधर्मी कविताओं का कवि
रामचंद्र शुक्ल	मुनिमार्ग का हिमायती, हिन्दी साहित्य का सेंटाक्लाज

महत्वपूर्ण सभा या संस्थाएँ व उसके संस्थापक

सभा/संस्था	वर्ष (ई.)	संस्थापक/अध्यक्ष	स्थान
अंजुमन		नवीन चन्द्र राय	लाहौर
कविता वर्धिनी सभा		भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	काशी
भाषा संवर्धिनी सभा		बाबू तोता राम	अलीगढ़
हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि सभा	1884		प्रयाग
नागरी प्रचारिणी सभा	1893	श्यामसुन्दर दास, रामनारायण मिश्र, शिवकुमार सिंह	वाराणसी
रसिक समाज			कानपुर
कवि समाज		बाबा सुमेर सिंह	आजमगढ़
हिन्दी साहित्य सम्मेलन	1910	मदनमोहन मालवीय	प्रयाग
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार	1915	महात्मा गाँधी	मद्रास
अखिल भारतीय संगीत परिषद	1919		
प्रगतिशील लेखक संघ	1936	प्रेमचंद	लखनऊ
इण्डियन पीपुल्स थियेटर एसो.	1942		
परिमल	1944		प्रयाग
साहित्य अकादमी	1954	पं० जवाहरलाल नेहरू	दिल्ली
संगीत नाटक अकादमी	1953	डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	दिल्ली
भारतीय नाट्य विद्यालय	1959	इब्राहिम अल्काजी	दिल्ली
साहित्यकार संसद		महादेवी वर्मा	इलाहाबाद
हिन्दी साहित्य परिषद		पुरुषोत्तमदास टण्डन	इलाहाबाद
काशी सार्वजनिक सभा		भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	काशी
वत्सल फाउण्डेशन	1980	अज्ञेय	दिल्ली
मीर मण्डल		सैयद अमीर अली	देवरी (म०प्र०)

प्रमुख गद्य विधाओं पर बनी हिन्दी फिल्में

विधा	रचना	रचनाकार	फिल्म
उपन्यास	कोहबर की शर्त	केशव प्रसाद मिश्र	नदिया के पार
कहानी	तीसरी कसम	रेणु	तीसरी कसम
कहानी	उसने कहा था	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	उसने कहा था
कहानी	यही सच है	मन्नू भण्डारी	रजनी गन्धा
उपन्यास	तमस	भीष्म साहनी	१९४७ अर्थ
कहानी	टोबा टेक सिह	मन्टो	मम्मो
उपन्यास	झूठा सच	यशपाल	खामोश पानी
कहानी	मलबे का मालिक	मोहन राकेश	हिना
उपन्यास	जिन्दगी नामा	कृष्णा सोबता	ट्रेन टू पाकिस्तान
उपन्यास	पिंजर	अमृता प्रीतम	गदरः एक प्रेम कहानी
उपन्यास	पेशावर एक्सप्रेस	कृष्न चन्दर	वीर जारा
कहानी	दुविधा	विजयदान देथा	पहेली JNU
कहानी	चरणदास चोर	विजयदान देथा	चरणदास चोर
कहानी	एखाने आकाश नाई	मन्नू भण्डारी	जीना यहाँ

काव्यशास्त्र

भारतीय काव्यशास्त्र
संस्कृत आलोचना के प्रमुख आचार्य

(1) भरतमुनि

- भरत मुनि को संस्कृत काव्यशास्त्र का प्रथम आचार्य माना जाता है।
- आचार्य बलदेव उपाध्याय ने इनका समय द्वितीय शती माना है।
- भरतमुनि की प्रसिद्ध रचना 'नाट्यशास्त्र' है जिसमें नाटक के सभी पक्षों का विस्तृत विवेचन किया गया है।
- आचार्य भरत ने 'नाट्यशास्त्र' को 'पंचमवेद' भी कहा है।
- 'नाट्यशास्त्र' में 36 अध्याय तथा लगभग पाँच हजार श्लोक हैं।
- 'नाट्यशास्त्र' में काव्य की आलोचना वाचिक अभिनय के प्रसंग में की गई है।
- भरत मुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में दस गुण, दस दोष तथा चार अलंकार (यमक, उपमा, रूपक तथा दीपक) की मीमांसा की है।
- नाट्य शास्त्र के षष्ठ एवं सप्तम अध्याय में रस तथा भाव का वर्णन किया गया है। भरतमुनि ने रसों की संख्या आठ मानी है।

(2) भामह

- आचार्य बलदेव उपाध्याय ने भामह का समय षष्ठ शती का पूर्वार्द्ध निश्चित किया है।
- भामह कश्मीर के निवासी थे तथा इनके पिता का नमा रक्रिल गोमी था।
- सर्वप्रथम भामह ने ही अलंकार को नाट्यशास्त्र की परतन्त्रता से मुक्त कर एक स्वतन्त्र शास्त्र या सम्प्रदाय के रूप में प्रस्तुत किया।
- भामह ने 'काव्यालंकार' नामक ग्रन्थ की रचना की, जो छह परिच्छेदों में विभक्त है।
- भामह के 'काव्यालंकार' में परिच्छेदानुसार निरूपित विषयों की तालिका इस प्रकार है—

परिच्छेद	विषय
प्रथम	काव्य के साधन, लक्षण तथा भेदों का निरूपण
द्वितीय-तृतीय	अलंकार निरूपण
चतुर्थ	दस दोष निरूपण
पंचम	न्याय विरोधी दोष निरूपण
षष्ठ	शब्द शुद्धि निरूपण

❑ भामह के प्रमुख काव्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

(1) शब्द तथा अर्थ दोनों का काव्य होना (शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्)।

(2) भरत मुनि द्वारा वर्णित दस गुणों के स्थान पर तीन गुणों (माधुर्य, ओज तथा प्रसाद) का वर्णन।

(3) 'वक्रोक्ति' को सभी अलंकारों का प्राण मानना।

(4) दस विध काव्य दोषों का विवेचन।

(5) 'रीति' को न मानकर काव्य गुणों का विवेचन।

(3) दण्डी

❑ आचार्य दण्डी का समय सप्तम शती स्वीकार किया जाता है। ये दक्षिण भारत के निवासी थी।

❑ दण्डी पल्लव नरेश सिंह विष्णु के सभा पण्डित थे।

❑ दण्डी अलंकार सम्प्रदाय से सम्बद्ध थे तथा 'काव्यादर्श' नामक महनीय ग्रन्थ की रचना की।

❑ 'काव्यादर्श' में चार परिच्छेद तथा लगभग साढ़े छह सौ श्लोक है।

❑ दण्डी प्रथम आचार्य थे जिन्होंने वैदर्भी तथा गौड़ी रीति के पारस्परिक अन्तर को स्पष्ट किया तथा इसका सम्बन्ध गुण से स्थापित किया।

❑ दण्डी के 'काव्दर्श' में परिछेच्दानुसार निरूपित विषयों की तालिका निम्न है—

परिच्छेद	विषय-निरूपण
प्रथन	काव्य-लक्षण, भेद, रीति तथा गुण का विवेचन
द्वितीय	अर्थालंकार निरूपण
तृतीय	शब्दालंकार निरूपण (विशेषत: यमक का)
चतुर्थ	दशविध काव्य दोषों का विवेचन

❑ आचार्य वलदेव उपाध्याय दण्डी को रीति सम्प्रदाय का मार्गदर्शक मानते हैं।

(4) वामन

❑ वामन रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं। इनका समय विद्वानों ने आठवीं शती का उत्तरार्द्ध माना है।

❑ वामन कश्मीर नरेश जयापीड के मन्त्री थे।

❑ आचार्य वामन ने 'काव्यालंकार सूत्र' नामक ग्रन्थ की रचना सूत्रों में की है तथा स्वयं ही इन सूत्रों पर वृत्ति भी लिखी है।

❑ 'काव्यालंकार सूत्र' में सूत्रों की संख्या 319 है तथा ग्रन्थ पाँच परिच्छेदों में विभक्त है।

❑ वामन के प्रमुख काव्य सिद्धान्त निम्नांकित हैं—

(1) रीति को काव्य की आत्मा मानना (रीतिरात्मा काव्यस्य)।

(2) गुण तथा अलंकार का परस्पर विभेद तथा गुण को अलंकार की अपेक्षा अधिक महत्व देना।

(3) वैदर्भी, गौडी तथा पांचाली—इन तीन रीतियों की कल्पना।

(4) दस प्रकार के गुणों (शब्द तथा अर्थ) को उभयगत मानकर बीस प्रकार के गुणों की कल्पना।

(5) वक्रोक्ति को सादृश्य मूलक लक्षणा मानना।

(6) समग्र अर्थालंकारों को उपमा का प्रपंच मानना।

(5) उद्भट

❑ उद्भट अलंकार से सम्बन्धित आचार्य थे। इनका समय आठवी शती का उत्तरार्द्ध माना जाता है।

❑ आचार्य वलदेव उपाध्याय ने इन्हें कश्मीर के राजा जयापीड का सभा पण्डित माना है।

❑ आचार्य उद्भट ने 'काव्यालंकार सार-संग्रह' नामक ग्रन्थ में अलंकारों का आलोचनात्मक एवं वैज्ञानिक ढंग पर विवेचन किया है।

❑ उद्भट के विशिष्ट सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

(1) अर्थ भेद से शब्द भेद की कल्पना

(2) श्लेष को सभी अलंकारों में श्रेष्ठ मानते हुए श्लेष के दो प्रकार—शब्द श्लेष तथा अर्थ श्लेष की कल्पना तथा दोनों को अर्थालंकारों में ही परिगणित करना।

(3) अर्थ के दो भेदों की कल्पना—(i) विचारित-सुस्थ तथा (ii) अविचारित रमणीय।

(4) काव्य गुणों को संघटना का धर्म मानना।

(6) रुद्रट

☐ रुद्रट कश्मीर के निवासी थे तथा इनका समय 9वीं शती का पूर्वार्द्ध स्वीकार किया जाता है।

☐ रुद्रट की रचना का नाम 'काव्यालंकार' है। इस ग्रन्थ में 16 अध्याय तथा कुल 734 श्लोक है।

☐ सम्भवतः रुद्रट ने ही सर्वप्रथम वैज्ञानिक ढंग से अलंकारों को चार वर्गों में बाँटा है—(1) वास्तव, (2) औपम्य, (3) अतिशय और (4) श्लेष।

(7) आनन्दवर्धन

☐ आनन्दवर्धन कश्मीर के राजा अवन्ति वर्मा के सभा पण्डित थे तथा इनका 9वीं शती का उत्तरार्द्ध माना जाता है।

☐ आनन्दवर्धन ने काव्यशास्त्र में 'ध्वनि सम्प्रदाय' का प्रवर्तन किया।

☐ आनन्दवर्धन ने 'ध्वन्यालोक' ग्रन्थ की रचना की। इसमें चार उद्योग (अध्याय) है जो मूलतः कारिकायें (सूत्र की व्याख्या) हैं।

(8) अभिनवगुप्त

☐ अभिनवगुप्त कश्मीर के निवासी थे तथा इनका समय 10वीं सदी का उत्तरार्द्ध स्वीकार किया जाता है।

☐ अभिनव गुप्त के पिता का नाम नरसिंह गुप्त था तथा वे 'चुखुलक' के नाम से प्रसिद्ध थे। इनकी माता का नाम विमलका था।

☐ अभिनव गुप्त ने व्याकरण शास्त्र, ध्वनिशास्त्र और नाट्यशास्त्र का अध्ययन क्रमशः नरसिंह गुप्त, भट्ट इन्दुराज और भट्टतौत को गुरु मानकर किया।

अभिनव गुप्त ने निम्नलिखित ग्रन्थों की टीकाएँ लिखी—

मूलग्रन्थ	लेखक	टीका
नाट्यशास्त्र	भरतमुनि	अभिनव भारती
ध्वन्यालोक	आनन्द वर्धन	लोचन
काव्य कौतुभ	भट्टतौत	काव्य कौतुभ-विवरण

☐ अभिनव गुप्त ने 'तन्त्रालोक' नामक श्रेष्ठ दार्शनिक कृति की रचना की। यह ग्रन्थ रत्न तन्त्र-शास्त्र का विश्वकोश माना जाता है।

(9) कुन्तक

☐ कुन्तक कश्मीर के निवासी थे तथा इन्हें 'वक्रोक्ति' सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है।

☐ कुन्तक का समय 10वीं शती का उत्तरार्द्ध स्वीकार किया —

☐ कुन्तक की प्रसिद्ध कृति 'वक्रोक्तिजीवित चार उन्मेषों में विभक्त कारिका एवं वृत्ति से संवलित ग्रन्थ है।

(10) धनंजय

☐ धनंजय धारा नरेश मुंजराज के सभा पण्डित थे तथा इनका समय 10वीं शती का उत्तरार्द्ध स्वीकार किया जाता है।

☐ धनंजय ध्वनि विरोधी आचार्य थे तथा 'दशरूपक' नामक ग्रन्थ की रचना की।

☐ धनंजय कृत 'दशरूपक' में चार प्रकाश तथा लगभग 300 कारिकाएँ हैं।

☐ धनंजय के भ्राता धनिक ने 'दशरूपक' की टीका 'अवलोक' नाम से लिखी।

(11) महिम भट्ट

☐ महिम भट्ट कश्मीर के निवासी थे। इनके पिता का नाम श्री धैर्य तथा गुरु का नाम श्यामल था।

☐ महिम भट्ट का समय 11वीं शती का मध्यभाग स्वीकार किया जाता है।

☐ महिम भट्ट ने ध्वनि मत के खण्डन के लिए 'व्यक्ति विवेक' नामक प्रौढ़ ग्रन्थ की रचना की।

☐ 'व्यक्ति विवेक' तीन विमर्शों (अध्यायों) में विभक्त है।

(12) भोजराज

☐ भोजराज धारा प्रदेश के राजा थे। इनका समय 11वीं शती का पूर्वार्द्ध माना जाता है।

☐ भोजराज ने 'सरस्वती कण्ठाभरण' तथा 'शृंगार प्रकाश' नामक दो ग्रन्थों की रचना की।

(13) मम्मट

☐ मम्मट का जन्म कश्मीर में हुआ था तथा इनके पिता का नाम 'कैयट' था।

☐ मम्मट का समय 11वीं शती का उत्तरार्द्ध स्वीकार किया जाता है।

☐ मम्मट ने 'काव्य प्रकाश' नामक ध्वनि-विरोधी ग्रन्थ की रचना की। जिसमें कुल 10 उल्लास (अध्याय) है।

(14) क्षेमेन्द्र

☐ कश्मीर निवासी क्षेमेन्द्र का समय 11वीं शती का उत्तरार्द्ध स्वीकार किया जाता है। इनके पिता का नाम प्रकाशेन्द्र था।

☐ क्षेमेन्द्र को 'औचित्य सम्प्रदाय' का प्रवर्तक माना जाता है।

☐ क्षेमेन्द्र के शिक्षा गुरु अभिनव गुप्त थे।

☐ क्षेमेन्द्र ने निम्नलिखित ग्रन्थों की रचना की—

(1) कविकण्ठाभरण, (2) औचित्य विचार चर्चा, (3) सुवृत्त तिलक, (4) दशावतार चरित।

15) रुय्यक

❑ कश्मीर निवासी रुय्यक के पिता का नाम राजानक तिलक था। राजानक तिलक उद्‌भट के ग्रन्थ पर 'उद्‌भट-विवेक' नाम से टीका लिखी।

❑ रुय्यक का समय 12वीं शती का पूर्वार्द्ध था तथा ये महाकवि मंखक के काव्य गुरु थे।

❑ रुय्यक ने 'अलंकार-सर्वस्व' नामक एक मौलिक ग्रन्थ की रचना की।

16) शोभाकार मित्र

❑ शोभाकार मित्र का समय 12वीं शती का उत्तरार्द्ध था ये कश्मीर निवासी त्रयीश्वर मित्र के पुत्र थे।

❑ शोभाकार मित्र ने 'अलंकार रत्नाकर' नामक ग्रन्थ की रचना की।

17) हेमचन्द्र

❑ हेमचन्द्र गुजरात के राजा कुमारपाल के गुरु थे तथा 'काव्यानुशासन' नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया।

❑ हेमचन्द्र के दो शिष्य—रामचन्द्र तथा गुणचन्द्र ने सम्मिलित रूप में 'नाट्य-दर्पण' नामक ग्रन्थ की रचना की।

❑ रामचन्द्र को 'प्रबन्धशतकर्ता' की उपाधि से भी मण्डित किया जाता है।

18) शारदा तनय

❑ शारदा तनय का समय 13वीं शती का मध्यभाग स्वीकार किया जाता है तथा कश्मीर के निवासी थे।

❑ शारदा तनय ने 'भाव प्रकाशन' नामक ग्रन्थ की रचना की। इसमें 10 अधिकार (अध्याय) है।

19) जयदेव

❑ जयदेव मिथिला के निवासी थे तथा इनका समय 13वीं शती का उत्तरार्द्ध स्वीकार किया जाता है।

❑ जयदेव साहित्य के क्षेत्र में 'पीयूषवर्ष' तथा न्याय के क्षेत्र में 'पक्षधर' उपाधि से प्रख्यात थे।

❑ जयदेव ने 'चन्द्रालोक' नामक अलंकार शास्त्र की रचना 10 मयूखों तथा 35 अनुष्टुप् श्लोकों में की।

20) विश्वनाथ कविराज

❑ विश्वनाथ कविराज उत्कल (उड़ीसा) के राजा के 'सान्धिविग्रहिक' थे। इनके पिता का नाम चन्द्रशेखर था।

❑ विश्वनाथ का समय 14वीं शती का पूर्वार्द्ध स्वीकार किया जाता है।

❑ आचार्य विश्वनाथ ने 10 परिच्छेदों (अध्यायों) में 'साहित्य दर्पण' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की।

(21) विद्याधर

❑ विद्याधर ने काव्य प्रकाश की शैली में 'एकावली' नामक ग्रन्थ की रचना की।

❑ विद्याधर का समय 14वीं शती का पूर्वार्द्ध माना जाता है।

(22) विद्यानाथ

❑ विद्यानाथ दक्षिण भारत के काकतीय नरेश प्रतापरुद के दरबार में रहते थे। इनका समय 14वीं शती का पूर्वार्द्ध माना जाता है।

❑ विद्यानाथ ने 'प्रतापरुद्र यशोभूषण' नामक ग्रन्थ की रचना 9 प्रकरणों में की।

(23) अप्पय दीक्षित

❑ अप्पय दीक्षित दक्षिण भारत के प्रसिद्ध शैव दार्शनिक थे। इनका समय 16वीं शती का अन्तिम चरण माना जाता है।

❑ अप्पय दीक्षित ने 'वृत्ति-वर्तिक', 'चित्रमीमांसा' तथा 'कुवलयानन्द' नामक ग्रन्थ की रचना की।

(24) पण्डित राज जगन्नाथ

❑ पण्डितराज जगन्नाथ जात्या आन्ध्र ब्राह्मण थे तथा पेरु भट्ट के पुत्र थे। इनका समय 17वीं शती का प्रथम चरण माना जाता है।

❑ पण्डितराज जगन्नाथ ने 'रसगंगाधर' नामक प्रौढ़ ग्रन्थ की रचना की।

काव्य-लक्षण

❑ संस्कृत में काव्य लक्षण आचार्यों ने मुख्यतः तीन, आधारों पर किया है जो निम्न है—(1) शब्द और अर्थ के आधार पर, (2) शब्द के आधार पर और (3) रस और ध्वनि के आधारपर।

(1) शब्दार्थ के आधार पर

आचार्य	काव्य लक्षण
भामह	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।
रुद्रट	ननु शब्दार्थौ काव्यम्।
वामन	काव्य शब्दोऽयंगुणालंकार संस्कृतयोः शब्दार्थयोः वर्तते।
कुन्तक	शब्दार्थौ सहितौ वक्र कवि व्यापार शालिनी।
	बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणी।।

मम्मट	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावलंकृती पुनः क्वापि।
वाग्भट्ट	साधु शब्दार्थ सन्दर्भ गुणालंकार भूषितम्।
	स्फुटरीतिरसोपेतं काव्यं कुर्वीत कीर्तये।।
आनन्दवर्धन	सहृदयहृदयाह्लादिशब्दार्थमयत्वमेव काव्य लक्षणम्।
राजशेखर	गुणवदलंकृतञ्च वाक्यमेव काव्यम्।
विद्याधर	शब्दार्थौ वपुरस्य शब्दार्थवपुस्तावत् काव्यम।
क्षेमेन्द्र	काव्यंविशिष्टशब्दार्थ साहित्यसदलंकृति।

(2) शब्द के आधार पर

आचार्य	काव्य लक्षण
दण्डी	शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिना पदावली।
जयदेव	निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुण भूषणा।
	सालंकार रसानेक वृत्तिर्वाक्काव्य नामवाक्।।
जगन्नाथ	रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।

(3) रस और ध्वनि के आधार पर

आचार्य	काव्य लक्षण
विश्वनाथ	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।
भोजराज	निर्दोषं गुणवत्काव्यमलंकारैरलंकृतम्।
	रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्ति प्रीतिंच विन्दति।।

❑ मध्यकालीन हिन्दी कवियों ने निम्नलिखित काव्य लक्षण लिखें हैं—

आचार्य	काव्य लक्षण
केशवदास	जदपि सुजाति सुलच्छनी सुबरन सरस सुवृत्त।
	भूषन बिनु न बिराजई, कविता वनिता मित्त।।
श्रीपति	यदपि दोष बिनु गुन सहित, अलंकार सो लीन।
	कविता वनिता छवि नहीं, रस बिन तदपि प्रवीन।।
चिन्तामणि	सगुन अलंकारन सहित, दोष रहित जो होइ।
	शब्द अर्थ वारौ कवित, विबुध कहत सब कोई।।
कुलपति मिश्र	दोष रहित अरु गुन सहित, कछुक अल्प अलँकार।
	सबद अरथ सो कवित है, ताको करो विचार।।
सूरति मिश्र	बरनन मनरंजन जहाँ, रीति अलौकिक होइ।
	निपुन कर्म कवि जो जु तिहिं, काव्य कहत सब कोइ।।
कवि देव	सब्द जीव तिहि अरथ मन, रसमय सुजस सरीर।
	चलत वहै जुग छन्द गति, अलंकार गम्भीर।।

सोमनाथ	सगुन पदारथ दोष बिनु, पिंगल मत अविरुद्ध।
	भूषण जुत कवि कर्म जो, सो कवित्त कहि सुद्ध।।
भिखारीदास	रस कविता को अंग, भूषन हैं भूषन सकल।
	गुन सरूप औ रंग, दूशन करै करुपता।।

❑ आधुनिक युग के हिन्दी आचार्यों व कवियों ने निम्नलिखित काव्य लक्षण लिखे हैं—

(1) "अन्तःकरण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है।"—महावीर प्रसाद द्विवेदी

(2) "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग और ज्ञानयोग के समकक्ष मानते हैं।"—रामचन्द्र शुक्ल

(3) "कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत् की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है।"—रामचन्द्र शुक्ल

(4) "काव्य तो प्रकृत मानव अनुभूतियों का, नैसर्गिक कल्पना के सहारे, ऐसा सौन्दर्यमय चित्रण है जो मनुष्य-मात्र में स्वभावतः अनुरूप भावोच्छ्वास और सौन्दर्य-संवेदन उत्पन्न करता है। इसी सौन्दर्य-संवेदन को भारतीय पारिभाषिक शब्दावली में 'रस' कहते हैं।"—नन्द दुलारे वाजपेयी

(5) "काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है जिसका सम्बन्ध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है। वह एक श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक ज्ञानधारा है।....आत्मा की मननशक्ति की वह असाधारण अवस्था जो श्रेय सत्य को उसके मूलचारुत्व में सहसा ग्रहण कर लेती है, काव्य में संकल्पनात्मक अनुभूति कही जा सकती है। "—जयशंकर प्रसाद

(6) कविता कवि-विशेष की भावनाओं का चित्रण है और वह चित्रण इतना ठीक है कि उससे वैसी ही भावनाएं किसी दूसरे के हृदय में आविर्भूत होती है।—महादेवी वर्मा

(7) "कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।"—सुमित्रानन्दन पन्त

(8) "रसात्मक शब्दार्थ ही काव्य है और उसकी छन्दोमयी विशिष्ट विधा आधुनिक अर्थ में कविता है।"—डॉ० नगेन्द्र

❑ पाश्चात्य विद्वानों ने निम्नलिखित काव्य लक्षण लिखे है—

(1) "Poetry is articulate music."—Dryden

(2) "Poetry is the best words in their best order."—Coleridge

(3) "Poetry is a rhythmic creation of beauty."—Adger Allen Poe

(4) "Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings, It takes its origin from emotions recollected in tranquillity."—Wordsworth

(5) "Poetry is, at bottom, a criticism of life."—Arnold

(6) Poetry is the record of the best and happiest moments of the happiest and best mind."—Shelley

(7) "Our sweetest songs are those that tell of saddest thought."—Shelley

(8) "Poetry is the utterance of a passion for truth, beauty and power, embodying and illustrating its conception by imagination and fancy and modulating its language on the principle of variety in unity."—Leigh Hunt

काव्य-हेतु

☐ 'हेतु' शब्द का अर्थ है "हेतुर्ना कारणं" अर्थात् हेतु कारण को कहते हैं। अतः 'काव्य-हेतु' का अर्थ है—'काव्य के उत्पत्ति का कारण'। किसी व्यक्ति में काव्य रचना की सामर्थ्य उत्पन्न कर देने वाले कारण 'काव्य हेतु' कहलाते हैं। बाबू गुलाब राय के शब्दों में, "हेतु का अभिप्राय उन साधनों से है जो कवि की काव्य रचना में सहायक होते हैं।"

☐ भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य हेतु के तीन भेद बताए गए हैं—(1) प्रतिभा, (2) व्युत्पत्ति और (3) अभ्यास। इनमें प्रतिभा सर्वप्रमुख काव्य-हेतु है, जिसे कवित्व का बीज माना गया है। आचार्य भामह ने 'काव्यालंकार' में कवि की प्रतिभा को ही काव्य-सृजन का मूल हेतु माना है—

"गुरुपदेशादध्येतुं शास्त्रं जडधियोऽप्यलम्।
काव्यं तु जायते जातु कस्यचित् प्रतिभावतः।।"

☐ आचार्य दण्डी ने नैसर्गिक प्रतिभा, निर्मल शास्त्र ज्ञान तथा सुदृढ़ अभ्यास को संयुक्त रूप में काव्य सृजन का हेतु माना है—

"नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहुनिर्मलम्।
अमन्दाश्चाभि योगोऽस्याः कारणं काव्य संपदः।।"

☐ आचार्य वामन ने 'काव्य-हेतु' के स्थान पर 'काव्यांग' शब्द का प्रयोग किया है। इन्होंने लोक, विद्या और प्रकीर्ण को काव्यांग (काव्य-हेतु) स्वीकार किया है—

"लोको विद्याप्रकीर्णस्य काव्यांगानि।"

☐ यहाँ आचार्य वामन का लोक से तात्पर्य है लोक व्यवहार। विद्या के अन्तर्गत उन्होंने शब्द शास्त्र, अभिधान, कोश, छन्द शास्त्र, कला, कामशास्त्र तथा दण्डनीति को लिया है। स्पष्टतः विद्या से उनका अर्थ 'व्युत्पत्ति' है। प्रकीर्ण के अन्तर्गत उन्होंने लक्ष्यज्ञ (काव्य-परिचय), अभियोग (काव्य रचना का उद्योग), वृद्ध सेवा, प्रतिभा और अवधान (चित की एकाग्रता) को लिया है। वस्तुतः वामन प्रतिभा को ही काव्य-सृजन का मूल हेतु मानते हैं—

"कवित्वस्य बीजम् प्रतिभानं कवित्व बीजम्।"

☐ आचार्य रुद्रट ने शक्ति (प्रतिभा), व्युत्पत्ति और अभ्यास को काव्य-हेतु मानते हुए कहा है—"काव्य में असार वस्तु को दूर करने, सार ग्रहण करने तथा चारुता लाने के कारण शक्ति, व्युत्पत्ति और अभ्यास, ये तीनों स्थान पाते हैं।" इन्होंने प्रतिभा को 'शक्ति' कहा है तथा इसके दो भेद किये—(1) सहजा और (2) उत्पाद्या। सहजा नैसर्गिक शक्ति है तथा उत्पाद्या व्युत्पत्ति शक्ति है।

☐ आचार्य मम्मट ने शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास को संयुक्त रूप में हेतु स्वीकार किया है—

"शक्तिनिपुणता लोकशास्त्र काव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञ शिक्षाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।।"

☐ जयदेव ने 'चन्द्रालोक' में कहा है—"श्रुत (व्युत्पत्ति) और अभ्यास सहित प्रतिभा ही कविता का हेतु है, जैसे मिट्टी-पानी के संयोग से बीज बढ़कर लता के रूप में व्यक्त होता है।

☐ पण्डित राज जगन्नाथ ने व्युत्पत्ति और अभ्यास को काव्य का हेतु न मानकर प्रतिभा का हेतु स्वीकार किया है। उनका कहना है काव्य का कारण केवल कवि में रहने वाली प्रतिभा है—

"तस्य च कारणं कविगता केवलां प्रतिभा।"

प्रतिभा—काव्य हेतुओं में प्रतिभा का स्थान सर्वोपरि है। प्रतिभा नित्य नवीन उद्भावना करने वाली मानसिक शक्ति है। भट्ट तौत ने नये-नये भावों के उन्मेष से युक्त प्रज्ञा को प्रतिभा कहा है—

"प्रज्ञा नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा विदुः।"

☐ आचार्य अभिनव गुप्त ने प्रतिभा को अपूर्व वस्तुओं के निर्माण में सक्षम कहा है—

"प्रतिभा अपूर्ववस्तु निर्माणक्षमा प्रज्ञा।"

☐ आचार्य राजशेखर ने प्रतिभा के दो भेद किये हैं—

(1) कारयित्री प्रतिभा और (2) भावयित्री प्रतिभा। कवि का उपकार करने वाली प्रतिभा को कारयित्री प्रतिभा कहते हैं तथा सहृदय का उपकार करने वाली प्रतिभा को भावयित्री प्रतिभा कहते हैं।

☐ आचार्य वाग्भट ने लिखा है—"प्रसन्न पदावली, नये-नये अर्थों तथा उक्तियों का उद्बोधन करने वाली कवि की स्फुरणशील सर्वतोमुखी बुद्धि को प्रतिभा कहते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रतिभा को "अन्तःकरण की उद्भावित क्रिया" कहा है।

व्युत्पत्ति—व्युत्पत्ति का अर्थ है 'बहुज्ञता' या 'प्रगाढ़ पाण्डित्य' राजशेखर ने लिखा है उचित-अनुचित का विवेक व्युत्पत्ति है—

"उचितानुचित विवेको व्युत्पत्तिः।"

अभ्यास—काव्य-रचना के लिए निष्ठापूर्वक बार-बार किये जाने वाले प्रयत्नों की अखण्ड शृंखला ही अभ्यास है। राजशेखर के अनुसार, "निरन्तर प्रयास करते रहने को अभ्यास कहते हैं।"

काव्य-प्रयोजन

❑ काव्य प्रयोजन का तात्पर्य है 'काव्य रचना का उद्देश्य'। वस्तुतः काव्य प्रयोजन काव्य प्रेरणा से अलग है क्योंकि काव्य प्रेरणा का अभिप्राय है काव्य की रचना के लिए प्रेरित करने वाले तत्व जबकि काव्य प्रयोजन का अभिप्राय है काव्य रचना के अनन्तर प्राप्त होने वाले लाभ।

❑ आचार्यों ने निम्नलिखित काव्य प्रयोजन बताए हैं—

आचार्य	काव्य प्रयोजन
भरत मुनि	(1) धर्म (2) यश, (3) आयुष, (4) हित, (5) बुद्धिवृद्धि, (6) लोक उपदेश, (7) दक्षता, (8) चरम विश्रांति प्राप्ति।
भामह	(1) चतुर्वर्ग फलप्राप्ति, (2) कीर्ति, (3) सकल कला-ज्ञान (4) प्रीति
दण्डी	(1) लोक व्युत्पत्ति
वामन	(1) कीर्ति, (2) प्रीति
रुद्रट	(1) धर्म, (2) कीर्ति, (3) अनर्थोपशम, (4) अर्थ, (5) सुख प्राप्ति।
आनन्द वर्धन	(1) विनेयन्मुखीकरण, (2) प्रीति।
कुन्तक	(1) चतुर्वर्गफल प्राप्ति, (2) व्यवहार ज्ञान, (3) परमाह्लाद।
महिम भट्ट	(1) रसमय सदुपदेश, (2) परमाह्लाद।
अभिनव गुप्त	(1) चतुर्वर्गफल प्राप्ति, (2) जायासम्मति उपदेश, (3) परमानन्द, (4) यश।
भोज	(1) कीर्ति (2) प्रीति।
मम्मट	(1) यश प्राप्ति, (2) वित्तीय लाभ, (3) लोक व्यवहार, (4) शिवेतर क्षतये (अमंगल का नाश), (5) सद्यः पर निर्वृति (तत्काल परमानन्द की प्राप्ति), (6) कान्ता सम्मित उपदेश।

❑ हिन्दी के आचार्यों के अनुसार काव्य प्रयोजन निम्नलिखित हैं—

(1) "जस सम्पति आनन्द अति दुरितन डारे खोइ।
होत कवित तें चतुरई जगत राम बस होइ।।"—कुलपति मिश्र

(2) 'रहत घर न वर धाम धन, तरुवर सरवर कूप।
जस सरीर जग में अमर, भव्य काव्य रस रूप।।"—देव

(3) "कीरति वित्त विनोद अरु अति मंगल को देति।
करै भलो उपदेश नित वह कवित्त चित्त चेति।।"—सोमनाथ

(4) "एक लहैं तप-पुंजन्ह के फल ज्यों तुलसी अरु सूर गोसाई।
एक लहैं वहु सम्पति केशव, भूषन ज्यो बरवीर बड़ाई।।
एकन्ह को जसही सों प्रयोजन है रसखानि रहीम की नाई।
दास कवित्तन्ह की चरचा बुधिवन्तन को सुख दै सब ठाईं।"—भिखारीदास

(5) "केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।—मैथिलीशरण गुप्त

(6) "कविता का अन्तिम लक्ष्य जगत के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उनके साथ मनुष्य-हृदय का सामंजस्य स्थापन है।"—रामचन्द्र शुक्ल

रस-सम्प्रदाय

❑ 'रस' का व्युत्पत्ति परक अर्थ है—आस्वाद (रस्यते आस्वाद्यते इति रसः)।

❑ 'रस सम्प्रदाय' के प्रवर्तक भरतमुनि के अनुसार, "जिस प्रकार अनेक प्रकार के व्यंजनों से युक्त अन्न भोग करते हुए स्वस्थ पुरुष आनन्द की प्राप्ति करते हैं, उसी प्रकार विभाव, अनुभाव, संचारी भावों से सम्पन्न स्थायी भावों का आस्वादन करते हुए सहृदयजन रस का आनन्द लेते हैं।"

❑ भरतमुनि के अनुसार, विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है—

"विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः।"

❑ संस्कृत के अन्य आचार्यों द्वारा दी गई रस की परिभाषा निम्न है—

(1) "विभावैरनुभावैश्च सात्विकैर्व्य भिचारिभिः।
आनीयमानः स्वाद्यत्व स्थायी भावो रसःस्मृतः।।"—धनन्जय

(2) "सर्वथा रसनात्मक वीतविघ्न प्रतीतिग्राह्यो भाव एवं रसः।"—अभिनवगुप्त

(3) व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावो रसः स्मृतः।"—मम्मट

(4) विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणी तथा।
रसतामेति रत्यादिः स्थायी भावः सचेतसाम्।।"—विश्वनाथ

❑ भाव को सम्पूर्ण रस का स्रोत माना जाता है। भरत मुनि के अनुसार नाटकादि में वाणी व्यापार, अंग संचालन तथा सात्विक अनुभावों से संयुक्त भाव के रूप में भावित होने वाले भाव-व्यापार ही 'भाव' हैं—

"उच्यते वागंग सत्वोपेतान् काव्यार्थान् भावयन्ति इति भावा।।"

❑ रस को काव्य की आत्मा के रूप में सर्वप्रथम विश्वनाथ ने मान्यता दी।

❑ रस के चार अवयव हैं—(1) विभाव, (2) अनुभाव, (3) संचारी भाव और

(4) स्थायी भाव।

□ भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में भावों की संख्या 49 कही है, जिसमें 33 संचारभाव, 8 स्थायी भाव एवं शेष 8 सात्विक भाव हैं। जो निम्नवत हैं—

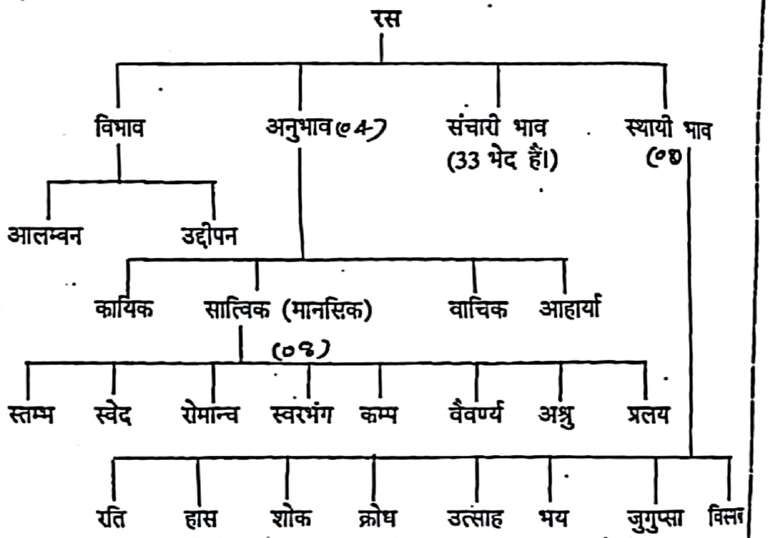

□ रस-अवयवों में प्रयुक्त प्रमुख शब्दों का अर्थ निम्नांकित है—

रस-अवयव	अर्थ/परिभाषा
विभाव	सामाजिक के हृदय में स्थित स्थायी भावों को आस्वादन के योग्य बनाने वाले कारणों को विभाव कहते हैं। अर्थ प्रतीति का मूल कारण ही विभाव है।
आलम्बन	जिस व्यक्ति अथवा वस्तु के कारण किसी व्यक्ति में कोई भाव जाग्रत होता है, उस व्यक्ति अथवा वस्तु को उस भाव का आलम्बन कहते हैं।
उद्दीपन	रस को उद्दीप्त करने वाली आलम्बन की चेष्टादि तथा देश काल की स्थितियाँ उद्दीपन कहलाती हैं।
अनुभाव	जो भावों के पश्चात उत्पन्न हो, उन्हें अनुभाव कहते हैं। आलम्बन, उद्दीपन आदि कारणों से उत्पन्न भावों को बाहर प्रकाशित करने वाले कार्य को अनुभाव कहा जाता है। ये भाव के सूचक होते हैं।
संचारी	जो भाव विशेष रूप से स्थायीभाव की पुष्टि के लिए तत्पर रहते हैं और स्थायी भाव के अन्तर्गत आविर्भूत व तिरोहित होते दिखाई देते हैं, वे भाव संचारी कहलाते हैं।
स्थायी भाव	अविरुद्ध या विरुद्ध भाव जिसे न छिपा सके, वह आस्वाद का मूलभूत भाव ही स्थायी भाव कहलाता है।

□ भरतमुनि ने आठ रसों का उल्लेख किया है। परवर्ती आचार्यों ने इसकी संख्या में लगातार वृद्धि की है। जो निम्न हैं—

रस-प्रतिष्ठापक	रस	स्थायी भाव
भरतमुनि	शृंगार रस	रति
भरतमुनि	हास्य रस	हास
भरतमुनि	करुण रस	शोक
भरतमुनि	रौद्र रस	क्रोध
भरतमुनि	वीर रस	उत्साह
भरतमुनि	भयानक रस	भय
भरतमुनि	वीभत्स रस	जुगुप्सा
भरतमुनि	अद्भुत रस	विस्मय
उद्भट	शांत रस	निर्वेद
विश्वनाथ	वात्सल्य रस	वत्सलता
रूपगोस्वामी	भक्तिरस	ईश्वर विषयकरति
रुद्रट	प्रेयान	स्नेह

□ अभिनव गुप्त के अनुसार मूलतः रसों की संख्या नौ है।

□ संचारी भाव को भरतमुनि ने 'व्यभिचार भाव' भी कहा है।

□ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 33 संचारी भावों का विरोध-अवरोध की दृष्टि से चार भेद किया है, जो निम्न हैं—

(1) सुखात्मक—गर्व, औत्सुक्य, हर्ष, आशा, मद, सन्तोष, चपलता मृदुलता धैर्य।

(2) दुःखात्मक—लज्जा, असूया, अमर्ष, अवहित्था, त्रास, विषाद, शंका, चिन्ता, नैराश्य, उग्रता, मोह, अलसता, उन्माद, असन्तोष, ग्लानि, अपस्मार, मरण, व्याधि।

(3) उभयात्मक—आवेग, स्मृति, विस्मृति, दैन्य, जड़ता, स्वप्न चित्त की चंचलता।

(4) उदासीन—वितर्क, मति, श्रम, निद्रा, विबोध।

□ संस्कृत के भानुदत्त ने 'छल' नामक नये संचारी भाव का उल्लेख किया है और हिंदी में देव ने।

□ भरत मुनि ने 'वाचिक', 'आंगिक', और 'सात्विक' इन तीनों को ही अनुभाव का भेद माना है।

□ हिन्दी के प्रमुख रसों का तत्वात्मक विवरण निम्न हैं—

रस	स्थायी भाव	रंग (वर्ण)	देवता
श्रृंगार रस	रति	श्यामवर्ण	कामदेव/विष्णु
हास्य रस	हास	श्वेत वर्ण	शिवगण
करुण रस	शोक	कपोत वर्ण	यम
वीर रस	उत्साह	हेमवर्ण	महेन्द्र
रौद्र रस	क्रोध	लाल वर्ण	रुद्र
भयानक रस	भय	कृष्ण वर्ण	काल
अद्भुत रस	विस्मय	पीत वर्ण	गन्धर्व
वीभत्स रस	जुगुप्सा	नील वर्ण	महाकाल
शान्त रस	निर्वेद (शम)	धवल वर्ण	लक्ष्मी नारायण

☐ श्रृंगार रस को कार्य-व्यापार की व्यापकता के कारण 'रसराज' भी कहा जाता है। इसके मुख्यत: दो भेद हैं—(1) संयोग (संभोग) श्रृंगार, (2) वियोग (विप्रलम्भ) श्रृंगार।

☐ वियोग के निम्न भेद माने गए हैं—(1) पूर्वानुराग, (2) मान, (3) प्रवास (4) करुण विप्रलम्भ।

☐ वियोग के अन्तर्गत 10 कामदशाओं का वर्णन किया जाता है—

(1) अभिलाषा, (2) चिन्तन, (3) स्मृति, (4) गुणकथन, (5) उद्वेग, (6) प्रलाप, (7) उन्माद, (8) ज्वर, (9) जड़ता, (10) मरण।

☐ हास्य रस के मुख्यत 6 भेद हैं, जो निम्न हैं—

उत्तम	मध्यम	अधम
स्मित	विहसित	अपहसित
हसित	अवहसित	अतिहसित

☐ वीर रस के आचार्यों ने चार भेद किये हैं—(1) दानवीर, (2) दयावीर, (3) युद्धवीर, (4) धर्मवीर।

☐ निम्नलिखित आचार्यों ने निम्नलिखित रसों को मूल रस या प्रकृति रस स्वीकार किया है—

आचार्य	मूल रस	श्लोक/कारिका
भवभूति	करुण रस	"एको रस: करुणा एव॥"
भोजरस	श्रृंगार रस	'श्रृंगारमेव रसनाद् रसमामनाम:॥"
नारायण पण्डित	आश्चर्य रस	"तच्चमत्कार-सारत्वे सर्वत्राप्यद्भुतो रस:॥"
रूप गोस्वामी	मधुर रस	
अभिनव गुप्त	शान्त रस	

☐ रस के वर्णन में 'निष्पत्ति' शब्द का प्रथम प्रयोग भरत मुनि के 'रस सूत्र' में मिलता है—

"विभावानुभावव्यभिचारी संयोगा द्रसनिष्पत्ति:।"

☐ भरत मुनि के परवर्ती आचार्यों में 'रस-सूत्र' में आए संयोग और निष्पत्ति को लेकर विवाद रहा है। इन आचार्यों के सैद्धान्तिक व दार्शनिक आधार निम्न हैं—

आचार्य	सिद्धान्त	दार्शनिक मत
भट्ट लोल्लट	उत्पत्तिवाद या आरोपवाद	मीमांसा दर्शन
श्रीशंकुक	अनुमितिवाद	न्याय दर्शन
भट्ट नायक	भुक्ति या भोगवाद	सांख्य दर्शन
अभिनवगुप्त	अभिव्यक्तिवाद	शैव दर्शन

☐ भरत मुनि के रस-सूत्र में आए संयोग एवं निष्पत्ति शब्द के अर्थ, रस की अवस्थिति के सम्बन्ध में परवर्ती आचार्यों का मत निम्न है—

आचार्य	संयोग	निष्पत्ति	रस की अवस्थिति
भट्ट लोल्लट	उत्पाद्य-उत्पादक सम्बन्ध	उत्पत्ति	अनुकार्य (राम) में
श्री शंकुक	अनुमाप्य-अनुमापक	अनुमिति	अनुकर्ता (नट) में
भट्ट नायक	भोज्य-भोजक	भुक्ति	प्रेक्षक (दर्शक) में
अभिनव गुप्त	व्यंग्य-व्यंजक	अभिव्यक्ति	सामाजिक (सहृदय) में

☐ रस को ब्रह्मानन्द सहोदर सर्वप्रथम भट्टनायक ने कहा।

☐ आचार्य विश्वनाथ ने लिखा है—

"सत्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्दचिन्मय:।
वेद्यान्तर स्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वाद सहोदर:॥
लोकोत्तरचमत्कारप्राण: कैश्चित्प्रमातृभि:।
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रस:॥"

☐ आचार्य भट्टलोल्लट को भरत के रस-सूत्र का प्रथम व्याख्याता माना जाता है।

☐ आचार्य शंकुक के अनुसार सामाजिक 'चित्र तुरंग न्याय' से नट में रस की अवस्थिति मान कर रस का अनुमान करते हैं।

☐ 'साधारणीकण' की अवधारणा सर्वप्रथम भट्ट नायक ने प्रस्तुत की।

☐ भट्टनायक ने काव्य की तीन क्रियाएँ (व्यापार) मानते हैं—

(1) अभिधा—काव्यार्थ की प्रतीति

(2) भावकत्व—साधारणीकरण

(3) भोजकत्व—रस का भोग।

☐ आचार्यों ने साधारणीकरण को निम्न ढंग से प्रस्तुत किया है—

आचार्य	साधारणीकरण
भट्टनायक	विभावादि का साधारणीकरण होता है।
अभिनव गुप्त	सहृदय का साधारणीकरण होता है।
विश्वनाथ	विभावादि का अपने पराये (आश्रय और सहृदय) की भावना से मुक्त होना साधारणीकरण है।
रामचन्द्र शुक्ल	आलम्बनत्व धर्म का साधारणीकरण होता है।
श्याम सुंदर दास	सहृदय के चित्त का साधारणीकरण होता है।
डॉ० नगेन्द्र	कवि की अनुभूति का साधारणीकरण होता है।

☐ आचार्य श्याम सुन्दर दास ने साधारणीकरण की व्याख्या करने में 'मधुमती भूमिका' की परिकल्पना प्रस्तुत की।

☐ निम्नलिखित रसों में 'विरोधी रस' इस प्रकार हैं—

रस	विरोधी रस
शृंगार रस	करुणा, वीभत्स, रौद्र, वीर और भयानक
हास्य रस	भयानक और करुण
करुण रस	हास्य और शृंगार
रौद्र रस	हास्य, शृंगार और भयानक
वीर रस	भयानक और शान्त
भयानक रस	शृंगार, वीर, रौद्र, हास्य और शान्त
शान्त रस	वीर शृंगार, रौद्र, हास्य और भयानक
वीभत्स रस	शृंगार।

अलंकार परिचय

☐ 'अलंकार' की व्युत्पत्ति 'अलम् + कृ + घञ् ' से हुई है, जिसका अर्थ है 'आभूषण'। भूषित करने वाले उपादान को 'अलंकार' कहा जाता है। आचार्य वामन के अनुसार, जो अलंकृत करे, वह अलंकार है—"अलंकृतिः अलंकारः'।

☐ आचार्य भामह (6वीं शती) को 'अलंकार सम्प्रदाय' का प्रवर्तक माना जाता है। भामह ने 'अलंकार' को काव्य का अनिवार्य तत्व घोषित करते हुए कहा, जिस प्रकार स्त्री का सुन्दर मुख भी आभूषणों के बिना शोभित नहीं होता उसी प्रकार अलंकार के बिना कविता शोभित नहीं होती—

"न कान्तामपि निर्भूषं विभाति वनिता मुखम्।"

☐ भामह ने वक्रोक्ति को सम्पूर्ण अलंकारों में व्याप्त बतलाते हुए उसे अलंकार

का एकमात्र आश्रय माना है—

"सैषा सर्वत्र वक्रोक्तिरनायाऽर्थो विभाव्यते।
यत्नोऽस्यां कविता कार्यः कोऽलंकारोऽनया बिना।।"

☐ आचार्य दण्डी ने काव्य के शोभाकारक धर्म को अलंकार कहा है—

"काव्य शोभाकरान् धर्मान् अलंकारान प्रचक्षते।"

☐ आचार्य वामन ने दण्डी के मत का विरोध किया और कहा कि काव्य के शोभाकारक धर्म गुण है तथा अलंकार उस शोभाकारक धर्म का संवर्धन करने वाला हेतु है—

"काव्य शोभायाः कर्तारौ धर्माः गुणा
तदतिशयहेतवस्तलंकाराः।।"

☐ इसके पश्चात् आचार्य आनन्दवर्धन, मम्मट, विश्वनाथ आदि ने 'अलंकार' का महत्व और कम कर दिया। वस्तुतः अलंकार काव्य के बाह्य शोभाकारक धर्म है। जिस प्रकार हारादि अलंकार रमणी के नैसर्गिक सौन्दर्य की शोभा वृद्धि के उपकारक होते हैं उसी प्रकार उपमादि अलंकार काव्य की रसात्मकता के उत्कर्षक हैं। आचार्य जयदेव ने कहा, अलंकार के बिना कविता उसी प्रकार है जैसे उष्णता के बिना अग्नि—

"असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृती।"

☐ निष्कर्षतः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की परिभाषा द्रष्टव्य है—

"भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के गुण और क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराने में कभी-कभी सहायक होने वाली युक्ति अलंकार है।"

अलंकार के भेद

(1) **शब्दालंकार**—जहाँ अलंकारगत रमणीयता शब्द प्रयोग पर आश्रित हो।

(2) **अर्थालंकार**—जहाँ अलंकार का सौन्दर्य अर्थ में निहित हो।

(3) **उभयालंकार**—जहाँ शब्द और अर्थ दोनों ही कोटि के चमत्कार रहते हैं।

शब्दालंकार

(1) **अनुप्रास**—जहाँ वर्णों या व्यंजनों की साम्यता के आधार पर एक से अधिक बार आवृत्ति हो, यहाँ अनुप्रास होता है। यथा—

(1) मुदित महीपति मन्दिर आए। सेवक सचिव सुमन्त बुलाए।
(2) चारुचन्द्र की चंचल किरणें
खेल रही हैं जल-थल में।

☐ अनुप्रास के पाँच भेद हैं—(1) छेकानुप्रास, (2) वृत्यानुप्रास, (3) श्रुत्यानुप्रास, (4) अन्त्यानुप्रास और (5) लाटानुप्रास।

छेकानुप्रास—जहाँ अनेक व्यंजनों की, स्वरूप और क्रम से एक बार आवृत्ति हो, यहाँ 'छेकानुप्रास' अलंकार होता है। जैसे—

रीझि रीझि रहसि रहस हँसि हँसि उठै,

साँसै भरि आँसू भरि कहत दई दई॥

वृत्यानुप्रास—जहाँ वृत्ति के अनुसार एक या अनेक वर्णों की अनेक बार आवृत्ति होती है, वहाँ 'वृत्यानुप्रास' अलंकार होता है। रसानुकूल भिन्न-भिन्न वर्ण रचना को 'वृत्ति' कहते हैं। जैसे—

(1) कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनी। कहत लखन सन राम हृदय गुनी॥

(2) तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।

(3) सेस महेस गनेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरन्तर गावै।

श्रुत्यानुप्रास—जहाँ किसी एक ही स्थान जैसे—कंठ, तालु आदि से उच्चारित होने वाले वर्णों की आवृत्ति हो, वहाँ 'श्रुत्यानुप्रास' होता है। जैसे—

तुलसीदास सीदत निसिदिन देखत तुम्हारि निठुराई।

अन्त्यानुप्रास—जहाँ पदान्त में एक ही स्वर और एक ही व्यंजन की आवृत्ति हो, वहाँ 'अन्त्यानुप्रास' होता है। जैसे—

(1) रघुकुल रीति-सदा चलि आई। प्राण जायें पर वचन न जाई।

(2) कुंद इन्दु सम देह, उमा रमन करुना अयन।

जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्दन मयन।

लाटानुप्रास—जब एक शब्द या वाक्य खण्ड की आवृत्ति उसी अर्थ में, पर तात्पर्य या अन्वय में भेद हो तो वहाँ 'लटानुप्रास' होता है। जैसे—

(1) पीय निकट जाके; नहीं घाम, चाँदनी ताहि।

पीय निकट जाके नहीं, घाम चाँदनी ताहि॥

(2) राम हृदय जाके नहीं, बिपति सुमंगल ताहि।

राम हृदय जाके, नहीं बिपति सुमंगल ताहि॥

(2) **यमक**—जहाँ एक या एक से अधिक शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त हों, एवं अर्थ भी प्रत्येक बार भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है। जैसे—

(1) कनक कनक तें सौ गुनी मादकता अधिकाय।

वा खाये बौराय जग या पाये बोराय॥

(2) वर जीते सर मैन के ऐसे देखे मैं न।

हरिनी के नैनान तें हरि। नीके यह नैन॥

(3) केकी-रव की नुपूर ध्वनि सुन

जगती जगती की मूक प्यास।

(3) **श्लेष**—श्लेष का अर्थ है—चिपकना, मिलना अथवा संयोग। जहाँ एक शब्द के साथ अनेक अर्थ चिपके रहते है, वहाँ श्लेष होता है। जैसे—

(1) रहिमन पानी राखियै बिन पानी सब सूना

पानी गये न ऊबरै मोती मानस चून॥

(2) चिरजीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गँभीर।

को घटि ये बृषभानुजा, वे हलधर के बीर॥

(3) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।

जा तन की झाईं परै स्यामु हरित दुति होय॥

❑ श्लेष के दो भेद होते हैं—(1) अभंग श्लेष तथा (2) सभंग श्लेष।

अभंग श्लेष—श्लेष में शब्द के दो टुकड़े किये बिना ही जहाँ एक से अधिक अर्थ निकल जाये, वहाँ 'अभंग श्लेष' होता है। जैसे—

चरन धरत शंका करत, चितवत चारिहु ओर।

सुबरन को ढूँढ़त फिरत कवि व्यभिचारी चोर॥

सभंग श्लेष—जहाँ पर शब्द को भंग करने पर दूसरा अर्थ निकले वहाँ 'सभंग श्लेष' होता है। जैसे—

नाहीं नाहीं कहै थोरौ माँगे सब देन कहै,

मंगन को देखि पट देत बार बार हैं।

(4) **वक्रोक्ति**—जहाँ पर वक्ता के कथन का श्रोता द्वारा वक्ता के अभिप्रेत आशय से श्लेष अथवा काकु उक्ति से भिन्न अर्थ लगाया जाय वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है। जैसे—

(1) मै सुकुमारि नाथ बन जोगू। तुमहि उचित तप मो कह भोगू।

(2) गौरवशालिनी प्यारी हमारी, सदा तुमही इक इष्ट अहो।

हौ न गऊ, नहीं हौं अवशा, अलिनीहूँ नहीं, अस काहे कहे।

अर्थालंकार

(1) **उपमा**—उपमा का शाब्दिक अर्थ है—सादृश्य, समानता या तुलना। जहाँ उपमेय और उपमान में गुण, रूप या चमत्कृत सौन्दर्यमूलक सादृश्य का प्रतिपादन किया जाय, वहाँ 'उपमा'अलंकार' होता है। दूसरे शब्दों में, जब एक ही वाक्य में उपमेय और उपमान का सादृश्य अथवा साम्य प्रतिपादित किया जाए और विपरीत धर्म की कोई चर्चा न हो तो वहाँ 'उपमा' अलंकार होता है। जैसे—

(1) सुनि सुर सरि सम पावन बानी।

(2) पीपर पात सरिस मन डोला।

❑ उपमा के चार अंग होते हैं—

(1) **उपमान**—जिससे उपमा दी जाय अथवा उपमेय की जिस पदार्थ से उपमा दी जाती है, उसे उपमान कहते हैं। हिन्दी में इसे अप्रस्तुत, अवर्णनीय, अप्रकृत, अप्रासंगिक आदि कहते हैं।

(2) **उपमेय**—जिसकी उपमा दी जाए अथवा जिसकी किसी वस्तु से तुलना या समता की जाती है, उसे 'उपमेय' कहते हैं। हिन्दी में इसे प्रस्तुत वर्णनीय, वर्ण्य प्रासंगिक आदि कहते हैं।

(3) वाचक—उपमान और उपमेय में सादृश्य की स्थापना करने वाले शब्द (तुल्य, समान, सदृश, तूल, सम, सरिस, इव) वाचक कहलाते हैं।

(4) धर्म गुण या विशेषता जिसके आधार पर उपमान एवं उपमेय में तुलना की जाती है, उसे धर्म कहते हैं।

उपमेय	उपमान	धर्म	वाचक
बानी	सुरसरि	पावन	सम
मन	पीपर पात	डोला	सरिस

(2) रूपक—जहाँ उपमेय और उपमान में भेदरहित आरोप किया जाता है, वहाँ 'रूपक' अलंकार होता है। जैसे—

उदित उदय-गिरि-मंच पर रघुवर बाल पतंग।
विकसेउ सन्त-सरोज वन, हरषे लोचन-भृंग।।

☐ रूपक के तीन प्रमुख भेद होते है—

निरंग रूपक—जहाँ एक उपमेय में एक ही उपमान का आरोप हो, उसे निरंग रूपक कहते हैं। इसे निरवयव भी कहते हैं। जैसे—

(1) ओ चिंता की पहली रेखा अरे विश्ववन की व्याली।
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण प्रथम कम्प-सी मतवाली।।

(2) बर धामन बाम चढ़ी बरसै मुसुकानि सुधा घन सार घनी।
सखियान के आनन इन्दुन तै अँखियान की वन्दन वारि तनी।

(3) हरि मुख पंकज, भ्रुव-धनुष, खंजन-लोचन मित्त।
बिम्ब-अधर, कुण्डल-मकर, वसे रहत मो चित्त।।

सांग रूपक—जहाँ उपमेय में उपमान के अंगों का आरोप हो, वहाँ सांग रूपक होता है। इसे सावयव रूपक भी कहते हैं। जैसे—

नारि कुमुदिनी अवध सर, रघुवर विरह दिनेस।
अस्त भये विकसित भई, निरखि राम राकेस।।

परम्परित रूपक—परम्परित रूपक में एक रूपक के द्वारा दूसरे रूपक की पुष्टि होती है। जैसे—

☐ रामकथा कलि पन्नग भरनी। पुनि विवेक पावक कहँ अरनी।।

(3) प्रतीप—प्रतीप का अर्थ है उल्टा या विपरीता यह अलंकार उपमा का उल्टा होता है। जहाँ प्रसिद्ध उपमान को उपमेय और उपमेय को उपमान सिद्ध करके चमत्कार पूर्वक उपमेय या उपमान की उत्कृष्टता दिखायी जाती है, वहाँ 'प्रतीप' होता है जैसे—

(1) दूर दूर तक विस्तृत था हिम।
स्तब्ध उसी के हृदय समान।।

(2) उतरि नहाये जमुन जल, ज्यों सरीर सम स्याम।

(4) व्यतिरेक—जहाँ उपमेय में उपमान से सकारण उत्कर्ष दिखाया जाए, वहाँ 'व्यतिरेक' होता है। यह चार आधार पर हो सकता है—

(1) उपमेय के उत्कर्ष और उपमान के अपकर्ष का कारण दिखा कर।
(2) केवल उपमेय के अपकर्ष का कारण दिखाकर।
(3) सिर्फ उपमान के अपकर्ष का कारण दिखाकर।
(4) उपमेय के उत्कर्ष और उपमान के अपकर्ष का कारण दिया बिना।

☐ उदाहरण—

(1) सम सु वरन सुखमाकर सुखद न थोर।
सीय अंग सखि कोमल कनक कठोर।।

(2) सिय मुख सरद-कमल जिमि किमि कहि जाय।
निसि मलीन वह निसि दिन यह विगसाय।।

(5) उत्प्रेक्षा—जब उपमेय में उपमान की सम्भावना या कल्पना कर ली जाये, तब उत्प्रेक्षा अलंकार माना जाता है। जैसे—

(1) सोहत ओढ़े पीट-पट स्याम सलोने गात।
मनो नील मनि सैल पर आतप परयो प्रभात।।

(2) वह देखो, वन के अन्तराल से निकले,
मानो दो तारे क्षितिज-जाल से निकले।।

(3) छिपे छबीली मुँह लसै, नीचे अँचल चीर।
मनो कलानिधि झलमलै, कालिन्दी के तीर।।

(6) सन्देह—रूप रंग आदि का सादृश्य होने के कारण उपमेय में उपमान का संशय होने में सन्देह अलंकार होता है। जैसे—

(1) सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।
कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।।

(2) वदन सुधानिधि जानिके, तुव संग फिरयो चकोर।
वदन किधौ यह सीतकर, किधौं कमल भए मोर।।

(7) भ्रान्तिमान—रूप, रंग, कर्म आदि की समानता के कारण जहाँ एक वस्तु में अन्य किसी वस्तु की चमत्कारपूर्ण भ्रान्ति कल्पित हो जाय, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार माना जाता है। जैसे—

(1) पाँय महावर देन को, नाइन बैठी आइ।
फिर-फिर जान महावरी, ऐडी भीड़ति जाय।

(2) परत भ्रमर सुक तुंड पर, भ्रम धरि कुसुम पलास।
धलि ताको पकरन चहत, जम्बू फल की आस।

(3) नाक का मोती अधर की कान्ति से, बीज दाड़िम का समझकर भ्रान्ति से,
देख उसको ही हुआ शुक मौन है, सोचता है अन्य शुक यह कौन है।

(8) **असंगति**—जहाँ कार्य और कारण में संगति न हो, वहाँ असंगति अलंकार होता है। जैसे—

(1) दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परत गाँठ दुरजन हिये दई नई यह रीति।।
(2) जरैं नैन फलकैं गिरैं, चित तरपै दिन रैन।
उठे सूल उर नेह पुर, नव नय-मय नृप मैन।।
(3) विहँसि बुलाय बिलोकि उत, प्रौढ़ तिया रस घूमि।
पुलकि पसीजत पूत को पिय चूम्यौ मुँहु चूमि।।
(4) पलनि पीक अंजन अधर, धरे महावर भाल।
आजु मिले सु भली करी, भले बने हो लाल।।

(9) **विरोधाभास**—जहाँ विरोध न रहने पर भी विरोध का आभास हो, वहाँ विरोधाभास अलंकर होता है। जैसे—

(1) या अनुरागी चित्त की गति समुझहिं नहिं कोय।
ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग त्यों-त्यों उज्ज्वल होय।।
(2) आग हूँ जिससे ढुलकते विन्दु हिमजल के।
शून्य हूँ जिसमें बिछे हैं पाँवड़े पलके।।
(3) शीतल ज्वाला जलती है, ईंधन होता दृग जल का।
यह व्यर्थ साँस चल चलकर, करती है काम अनिल का।।

(10) **विभावना**—जहाँ पर कारण के बिना ही कार्य की उत्पत्ति हो जाय वहाँ विभावना अलंकार होता है। जैसे—

(1) विनु पद चलै, सुनै बिनु काना
(2) नाचि अचानक ही उठे बिनु पावस बन मोर।
जानति हौं नन्दित-करी, यह दिसि नन्द किशोर।।

(11) **अतिशयोक्ति**—जहाँ किसी विषय का वर्णन इतना बढ़ा चढ़ा कर किया जाये कि लोक सीमा या मर्यादा का उल्लंघन हो जाये, वहाँ 'अतिशयोक्ति' अलंकार होता है। इसके प्रमुख भेद निम्न हैं—

रूपकातिशयोक्ति—जहाँ केवल उपमान के वर्णन से उपमेय का बोध कराया जाय वहाँ रूपकातिशयोक्ति होता है। जैसे—

(1) बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से।
मणि वाले फणियों का मुख क्यों भरा हुआ हीरों से।

भेदकातिशयोक्ति—जहाँ उपमेय का अन्यत्व वर्णन किया जाता है अर्थात अभिन्नता में भी भिन्नता दिखलायी जाती है, वहाँ पर भेदकातिशयोक्ति अलंकार होता है। जैसे—

(1) अनियारे दीरघ नयन, किती न तरुनि समान।
वह चितवनि और कछू, जेहि बस होत —

(12) **प्रतिवस्तूपमा**—वह अलंकार जिसमें प्रत्येक वाक्यार्थ में उपमा, अर्थात् साधर्म्य का कथन हो। जैसे—

(1) सिंह सुता क्या कभी स्यारसे प्यार करेगी?
क्या पर नर का हाथ कुलस्त्री कभी धरेगी?
(2) राजत मुख मृदु बानि सों, लसत सुधा सोंचंद।
निर्झर सों नीको सुगिरि, मद सों भलो गयंद।
(3) लसत सूर सायक-धुन धारी। रवि प्रताप सन सोहत भारी।।

(13) **दृष्टान्त**—जहाँ उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव दर्शित किया जाये तथा वाचक शब्द का उल्लेख न हो, वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है। जैसे—

(1) सठ सधुरहि सत संगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई।
(2) पगीं प्रेम नन्दलाल के, हमैं न भावत भोग।
मधुप राजपद पाय के, भीख न माँगत लोग।।

(14) **काव्य लिंग**—जहाँ किसी उक्ति के समर्थन का कारण बताया जाय, वहाँ काव्य लिंग अलंकार होता है। जैसे—

(1) कनक कनक तें सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वा खाये बौरात नर या पाये बौराय।।
(2) स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी।

(15) **अर्थान्तर न्यास**—जहाँ किसी साधारण बात का विशेष बात से तथा विशेष बात का साधारण बात से समर्थन किया जाय, वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है। जैसे—

(1) बड़े न हूजे गुनन विनु, बिरद बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सों कनक, गहनो गढ़ो न जाय।।
(2) वसि कुसंग चाहत कुसल यह रहीम अफसोस।
महिमा घटी समुद्र की रावण बसे पड़ोस।।
(3) जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।

(16) **उदाहरण**—जहाँ किसी बात की ज्यों, जैसे, इव आदि वाचक शब्दों द्वारा किसी अन्य बात से समानता दिखाई जाये वहाँ उदाहरण अलंकार होता है। जैसे—

(1) बूद अघात सहैं गिरि कैसे। खल के वचन सन्त सँह जैसे।
(2) छुद्र नदी भरि चलि उतराई। जस थोरेहूँ धन खल बौराई।।

(17) **समासोक्ति**—जहाँ पर कार्य, लिंग या विशेषण की समानता के कारण प्रस्तुत के कथन में अप्रस्तुत व्यवहार का समारोप होता है, वहाँ पर समासोक्ति अलंकार होता है। जैसे—

(1) चम्प लता सुकुमार तू, धन तुव भाग्य विसाल।
तेरे ढिंग सोहत सुखद, सुन्दर स्याम तमाल॥

(2) नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहि विकास यहि काल।
अली कली ही मैं विन्ध्यों, आगे कौन हवाल॥

(18) 'अन्योक्ति—जहाँ किसी की बात किसी और पर ढाल कर कही जाय, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। जैसे—

(1) स्वारथ सुकृत श्रम वृथा, देखु विहंग विचार।
बाज पराये पानि पर तू पच्छीनु न मार॥

(2) क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो,
उसको क्या जो दन्तहीन विषरहित, विनीत, सरल हो।

(19) निदर्शना—जहाँ उपमेय और उपमान-वाक्य असम्बद्ध हों किन्तु सादृश्य के आक्षेप के द्वारा उन्हें सुसम्बद्ध रूप में उपस्थित करके उनकी संगति दिखाई जाय वहाँ निदर्शन अलंकार होता है। जैसे—

(1) यह प्रेम को पंथ कराल महा, तरवार की धार पै धावनो है।

(2) जो अस भगति जानि परिहरिहीं। केवल ज्ञान-हेतु स्रम करहीं।
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी। खोजत आक फिरहिं पयलागी॥

छन्द

☐ 'हिन्दी साहित्य कोश' के अनुसार, "अक्षर, अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रा-गणना तथा यति-गति आदि से सम्बन्धित विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्य रचना, छन्द कहलाती है।"

☐ 'छन्द' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

☐ छन्द शास्त्र' के व्यवस्थित परम्परा का सूत्रपात पिंगलाचार्य के 'छन्दः सूत्र' से होता है। इसलिए इसे 'पिंगल शास्त्र' भी कहते हैं।

☐ पिंगलाचार्य ने 'छन्द : सूत्र' की रचना सूत्र शैली में ई० पू० 200 के आसपास की।

☐ छन्द के प्रमुख अवयवों का पारिभाषिक अर्थ निम्न है—

अवयव	पारिभाषिक अर्थ
चरण या पाद	किसी छन्द की प्रधान यति पर समाप्त होने वाली पूर्ण पंक्ति को उसका एक 'चरण या पाद' कहते हैं। सामान्यतः छन्द में चार चरण होते हैं तथा प्रत्येक चरण में मात्राओं एवं वर्णों की संख्या क्रमानुसार नियोजित रहती है।
वर्ण और मात्रा	ध्वनि के लिखित रूप को 'वर्ण' कहते हैं। वर्ण दो प्रकार के माने गए हैं—ह्रस्व व दीर्घ। ... 'मात्रा' कहा जाता है, तथा ह्रस्व के लिए 'लघु' (।) एवं 'दीर्घ' (ऽ) शब्द का प्रयोग किया जाता है।
गण	गुरु-लघु क्रम से वर्णों की व्यवस्था एवं गणना करने के लिए तीन-तीन वर्णों के स्वतन्त्र समूहों की कल्पना की गई है, जिन्हें 'गण' कहा जाता है। गणों की संख्या 8 होती है।
यति	'यति' का अर्थ विराम या विश्राम होता है।
तुक	चरणान्त के वर्णों की आवृत्ति को तुक कहते हैं।

☐ मात्रा और वर्ण के विचार से छन्द के मुख्यतः दो भेद होते हैं—(1) मात्रिक, (2) वर्णिक।

प्रमुख मात्रिक छंद

(1) दोहा—दोहा वह अर्द्धसम मात्रिक छंद है जिसके प्रथम व तृतीय चरण में तेरह-तेरह और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ होती हैं और सम चरणों के अन्त में गुरु-लघु होता है।

(2) सोरठा—यह अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। यह दोहे का उलटा है अर्थात इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में 11-11 और द्वितीय और चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

(3) रोला—यह सममात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं और प्रत्येक चरण में 11 और 13 मात्राओं पर यति होता है। प्रत्येक चरण के अन्त में दो गुरु या दो लघु की योजना रहती है।

(4) चौपाई—यह सममात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ है और अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं तथा अंत में जगण और तगण का आना वर्जित है।

(5) बरवै—यह अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसके विषम चरणों (प्रथम व तृतीय) में 12-12 मात्राएँ और समचरणों (दूसरे और चौथे) में 7-7 मात्राएँ होती हैं, और इसके समचरणों के अन्त में प्रायः जगण या तगण पड़ता है।

(6) छप्पय—छप्पय वह विषम मात्रिक छन्द है, जो दो छन्दों—रोला तथा उल्लाला के मिश्रण से बनता है। इसमें छह चरण होते हैं और प्रथम चार चरणों 24-24 मात्राएँ और अन्तिम दो चरणों में 26-26 या 28-28 मात्राएँ होती हैं।

(7) कुंडलिया—कुंडलिया वह विषम मात्रिक छन्द है, जो दो छन्दों—दोहा और रोला के मिश्रण से बनता है; जिसमें छह चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 24-24 मात्राएँ होती है और दोहे का चरण रोला के प्रथम में दुहराया जाता है।

प्रमुख वर्णिक छन्द

(8) इन्द्रवज्रा—इन्द्रवज्रा वह वर्णिक छन्द है, जिसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं जो इस क्रम में रखे जाते हैं—दो तगण, एक जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण।

(9) **द्रुत विलम्बित**—द्रुतविलम्बित वह वार्णिक छन्द है, जिसके चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं, जो एक नगण, दो भगण और एक रगण के क्रम से रहते हैं।

(10) **मंदाक्रान्ता**—मंदाक्रान्ता वह वर्णिक छन्द है, जिसके चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं, जो एक मगण, एक भगण, एक नगण, दो तगण और अन्त में दो गुरु के क्रम से रखे गये रहते हैं।

(11) **मालिनी**—मालिनी वह वार्णिक छन्द है, जिसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं; जो दो नगण, एक मगण तथा दो यगण के क्रम से रखे गये रहते हैं और आठ तथा सात अक्षरों पर यति होती है।

(12) **शिखरिणी**—शिखरिणी वह वार्णिक छन्द है, जिसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं, जो एक यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण एक भगण, एक लघु और एक गुरु के क्रम से रखे गये रहते हैं और छह और ग्यारह वर्णों पर यति होती है।

(13) **सवैया**—सवैया वह वार्णिक छंद है, जिसके प्रत्येक चरण में 22 से लेकर 26 वर्ण होते हैं और प्रत्येक चरण किसी एक गण की सात-आठ आवृत्ति से बना होता है।

(14) **मत्तगयन्द**—मत्तगयन्द वह सवैया है जिसके प्रत्येक चरण में 23 अक्षर होते हैं, जो सात भगण और दो गुरु के क्रम से रखे गए रहते हैं।

(15) **कवित्त**—कवित्त वह वार्णिक छन्द है, जिसके प्रत्येक चरण में 31-31 या 32-32 या 33-33 वर्ण रहते हैं। इसमें मात्राओं के क्रम का नियन्त्रण होने से गणों का विधान नहीं है; केवल वर्णों की संख्या प्रत्येक चरण में बराबर होती है। इसके तीन भेद होते हैं, जो निम्न है—

(i) **मनहरण कवित्त**—इसके प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं। प्रथम सोलह वर्णों पर यति होता है। अन्त में गुरु होता है।

(ii) **रुपघनाक्षरी**—इसके प्रत्येक चरण में 32 वर्ण होते हैं। प्रत्येक सोलह वर्णों पर यति होता है। अन्तिम वर्ण लघु होता है।

(iii) **देवघनाक्षरी**—इसके प्रत्येक चरण 33 वर्ण होते हैं। प्रत्येक आठवें वर्ण पर विराम होता है। अन्तिम तीन वर्ण लघु होते हैं।

❑ चरण में मात्राओं की संख्या (कम से अधिक) के आधार पर मात्रिक छन्दों का क्रमानुसार विवरण निम्नलिखित है—

छन्द	**मात्राएँ**
तोमार	12
चौपइ	15
चौपाई	16
अरिल्ल	16
शृंगार	16
बरवै	19
पीयूषवर्धक	19
राधिका (लवनी)	22
कुण्डल	22
रोला	24
दोहा	24
सोरठा	24
रूपमाला	24
गीतिका	26
सरसी	27
हरिगीतिका	28
उल्लाला	28
वीर	28
सार (ललित पद)	29
ताटंक	30
आल्हा	31
कुण्डलिया (दोहा + रोला)	—
छप्पय (रोला + उल्लाला)	—

❑ चरण में वर्णों की संख्या (कम से अधिक) के आधार पर वर्णि[क छन्दों का] क्रमानुसार विवरण निम्नलिखित है—

छन्द	**वर्ण**
स्वागता	11
भुजंगी	11
शालिनी	11
इन्द्रवज्रा	11
उपेन्द्रवज्रा	11
उपजाति (इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवजा का मिश्रण)	11
वंशस्थ	12
भुजंग प्रयात	12
द्रुत विलम्बित	12

तोटक	12
वसन्ततिलिका	14
मालिनी	15
मन्द्राकान्ता	17
शिखरिणी	17
शार्दूलविक्रीडित	19
स्रग्धरा	21
सवैया	22 से 26 तक
घनाक्षरी	31
रूपघनाक्षरी	32

पाश्चात्य काव्यशास्त्र : एक परिचय

☐ पाश्चात्य काव्य चिन्तन की परम्परा का विकास 5वीं सदी ईस्वी पूर्व से माना जाता है।

☐ पाश्चात्य काव्य चिन्तन की परम्परा में 5वीं सदी ईस्वी के पूर्व हेसियंड, सोलन, पिंडार, नाटककार एरिस्तोफ़ेनिस आदि की रचनाओं में साहित्यिक सिद्धान्तों का उल्लेख मिलता है।

☐ एक व्यवस्थित शास्त्र के रूप में पाश्चात्य साहित्यालोचन की पहली झलक प्लेटो (427-347 ई० पू०) के 'इओन' नामक संवाद में मिलती है।

☐ **प्लेटो** का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्नांकित है—

जन्म-मृत्यु	जन्म-स्थान	मूलनाम	गुरुप्रदत्त नाम	अरबी फारसी नाम	अंग्रेजी नाम
427-347	एथेन्स	अरिस्तोक्लीस	प्लातोन	अफ़लातून	प्लेटो

☐ प्लेटो प्रत्ययवादी या आत्मवादी दार्शनिक था। इसके दर्शन के मुख्य विषय निम्नलिखित है—

(1) प्रत्यय-सिद्धान्त;
(2) आदर्श-राज्य;
(3) आत्मा की अमरत्व सिद्धि;
(4) सृष्टि-शास्त्र;
(5) ज्ञान-मीमांसा।

☐ प्लेटो के प्रत्यय सिद्धान्त के अनुसार, 'प्रत्यय या विचार (Idia) ही चरम सत्य

है, वह शाश्वत और अखण्ड है तथा ईश्वर उसका स्रष्टा (Creator) है। यह वस्तु जग प्रत्यय का अनुकरण है तथा कला जगत वस्तु जगत का अनुकरण है। इस प्रकार का जगत अनुकरण का अनुकरण होने से सत्य से तीन गुना दूर है; क्योंकि अनुकरण असत होता है। अर्थात—

अनुकरण अनुकरण
विचार या प्रत्यय ———→ वस्तु जगत ———→ कला जगत

☐ प्लेटो ने यूनानी शब्द 'मिमेसिस' (Mimesis) अर्थात 'अनुकरण' का प्रयोग अपकर्षी (Derogatory) अर्थ में किया है, उनके अनुसार अनुकरण में मिथ्यात्व रहता है, जो हेय है।

☐ कला की अनुकरण मूलकता की उद्भावना का श्रेय प्लेटो को दिया जाता है।

☐ वास्तव में, प्लेटो ने अनुकरण में मिथ्यात्व का आरोप लगाकर कलागत सृजनशीलता की अवहेलना की।

☐ प्लेटो आदर्श राज्य से कवि या साहित्यकार के निष्कासन की वकालत करता है क्योंकि कवि सत्य के अनुकरण का अनुकरण करता है, जो सत्य से त्रिधा अपेत (Three Removed) है।

☐ प्लेटो की महत्वपूर्ण रचनाएँ निम्नलिखित है—

(1) इओन (Ion), (2) क्रातिलुस (Cratylus), (3) गोर्गिआस (Gorgias), (4) फेद्रुस (Phaedrus), (5) फिलेबुस (Philebus), (6) विचार गोष्ठी (Symbosium), (7) गणतन्त्र (Republic), (8) लॉज।

☐ प्लेटो ने अपने 'इओन' नामक संवाद में काव्य-सृजन प्रक्रिया या काव्य हेतु की चर्चा की है। इसने ईश्वरीय उन्माद को काव्य हेतु स्वीकार किया है।

☐ प्लेटो के अनुसार कवि काव्य-सृजन दैवी शक्तियों से प्रेरित होकर करता है। काव्य देवी को प्लेटो ने '**म्यूजेज**' संज्ञा से अभिहित किया है।

☐ प्लेटो ने काव्य के तीन प्रमुख भेद स्वीकार किये हैं—

(1) अनुकरणात्मक	प्रहसन और दुःखान्तक (नाटक)
(2) वर्णनात्मक	डिथिरैंब (प्रगीत)
(3) मिश्र	महाकाव्य

☐ प्लेटो ने प्रगीत के तीन अंग माने हैं—(1) शब्द, (2) माधुर्य, (3) लय।

☐ प्लेटो ने कला को अग्राह्य माना है, जिसके दो आधार हैं—

(1) दर्शन और (2) प्रयोजन।

☐ कला के मूल्य के संदर्भ में प्लेटो का दृष्टिकोण उपयोगितावादी और नैतिकतावादी था।

☐ प्लेटो का कला विषयक दृष्टिकोण विधेयात्मक या मानकीय (Normative) है, अर्थात प्लेटो बताना चाहते हैं कि कला कैसी होनी चाहिए।

☐ प्लेटो स्वयं एक कवि था। इसकी कविताएँ 'आक्सफोर्ड बुक ऑफ ग्रीक वर्स' में संकलित है।

☐ प्लेटो ने 'रिपब्लिक' में लिखा है, "दासता मृत्यु से भी भयावह है।"

☐ **अरस्तू** का मूल यूनानी नाम-'अरिस्तोतिलेस' (Aristotiles) था।

☐ अरस्तू का संक्षिप्त जीवन वृत्त निम्नांकित हैं—

जन्म-मृत्यु	जन्म-स्थान	पत्नी	शिष्य था	गुरु था
384-322 ई०पू०	मकदूनिया	वीथियास	प्लेटो का	सिकन्दर का

☐ अरस्तू ने पूर्ण ज्ञान की परिभाषा दी थी, "ज्ञान की सभी शाखाओं में अबाध गति।"

☐ अरस्तू के ग्रन्थों की संख्या चार सौ बतायी जाती है, जिनमें सर्वप्रमुख तीन हैं—

(1) पेरिपोइएतिकेस (काव्य शास्त्र)—काव्य के मौलिक सिद्धान्तों का विवेचन।
(2) तेखनेस रितोरिकेस (भाषा शास्त्र)—भाषण, भाषा एवं भावों का वर्णन।
(3) वसीयतनामा—दास-प्रथा से मुक्ति का प्रथम घोषणा पत्र।

☐ अरस्तू कृत 'वसीयतनामा' को इतिहास में दास-प्रथा से मुक्ति का प्रथम घोषणा पत्र माना जाता है, क्योंकि 'वसीयतनामा' के द्वारा उन्होंने अपने सभी दासों को दासता से मुक्त कर दिया था।

☐ अरस्तू ने 'पेरिपोइएतिकेस' की रचना अनुमानतः 330 ई० पू० के आस-पास की। इस कृति का संक्षिप्त परिचय निम्न है—

यूनानी नाम (मूल)	अध्याय व पृष्ठ	प्रथम अंग्रेजी अनुवादक व अनुवाद
पेरिपोइएतिकेस	छब्बीस व पचास	टी० विन्स्टैन्ली—आन-पोएटिक्स (1780)

☐ अरस्तू ने किसी वस्तु को ठीक से समझने के लिए, घड़ा निर्माण की प्रक्रिया के उदाहरण द्वारा, चार बातों पर ध्यान देना आवश्यक बताया है, जिसे निम्न ढंग से दर्शाया जा सकता है—

प्रयोजन → उपादानकरण → निमित्तकरण → तत्व
↓ ↓ ↓ ↓
जल → मिट्टी → कुम्हार या चाक → घड़ा

☐ अरस्तू के 'काव्यशास्त्र' में अध्यायानुसार निरूपित विषयों की तालिका इस प्रकार है।

अध्याय	विषय
1-5	अनुकरणात्मक काव्य के रूप में त्रासदी (टैजेडी), महाकाव्य (एपिक) तथा प्रहसन (कॉमेडी) का विवेचन तथा माध्यम, विषय एवं पद्धति के आधार पर इनका पारस्परिक भेद।
6-19	यह ग्रन्थ का केन्द्रीय भाग है। इसमें त्रासदी का सविस्तार विवेचन तथा इसकी परिभाषा, संरचना, प्रभाव आदि का वर्णन है।
20	पद-विभाग आदि का व्याकरणिक विवेचन।
21-22	पदावली और लक्षणा का निरूपण।
23-24	महाकाव्य के स्वरूप का विवेचन
25	प्लेटो या अन्य लोगों द्वारा काव्य पर किये गए आक्षेपों का निराकरण
26	महाकाव्य और त्रासदी का तुलनात्मक मूल्यांकन

☐ अरस्तू कृत 'काव्यशास्त्र' में अध्याय संख्या 12 और 20 प्रक्षिप्त माने जाते हैं।

☐ अरस्तू ने 'काव्य-शास्त्र' की रचना दो दृष्टियों से की है—

(1) यूनानी काव्य का वस्तुगत विवेचन व विश्लेषण;
(2) प्लेटो के द्वारा काव्य पर लगाये गए आक्षेपों का समाधान।

☐ अरस्तू ने महाकाव्य, दुखान्तक प्रहसन आदि को अनुकरण का भेद माना है।

☐ अरस्तू काव्य के लिये छन्द को अनिवार्य नहीं मानते थे।

☐ महाकाव्य, दुखान्तक, प्रहसन आदि कलाओं के तीन भेदक तत्व है—(1) माध्यम, (2) विषय और (3) पद्धति।

☐ दुखान्तक (Tragedy) के छह अंग है, जो निम्न हैं—

(1) कथानाक (Plot), (2) चरित्र (Character), (3) विचार (Thought), (4) पदयोजना (Diction), (5) गीत (Song), (6) दृश्य (Spectacle)।

☐ अरस्तू ने काव्य दोषों के पाँच आधार माने हैं—

(1) असम्भव वर्णन—जो मन को अग्राह्य हो,
(2) अयुक्त वर्णन—जिसमें कार्य-कारण भाव का अभाव हो,
(3) अनैतिक वर्णन—जिसमें स्वीकृत मूल्यों की अपेक्षा हो,
(4) विरुद्ध वर्णन—जहाँ दो विरोधी वस्तुओं का वर्णन हो,
(5) शिल्पगत दोष—कला सम्बन्धी भूल।

☐ अरस्तु के 'काव्यशास्त्र' में आए कुछ प्रमुख यूनानी शब्द निम्न हैं—

यूनानी शब्द	हिन्दी अनु०	अंग्रेजी अनु०
पेरिपेतेइआ (Peripeteia)	स्थिति-विपर्यय	Reversal of the situation
अनग्नोरिसिस (Anagnorisis)	अभिज्ञान	Recognition
मिमेसिस (Mimesis)	अनुकरण	Imitation
कथार्सिस (Katharsis)	विरेचन	
माइथास (Maithos)	कथावस्तु	Plat
एथोस (Ethos)	चरित्र	Character
पाथोस (Pathos)	भाव	Emotion
प्राक्सिस (Praxis)	कार्यव्यापार	Action

❑ अरस्तू के काव्यशास्त्र में आए कुछ शब्दों का पारिभाषिक अर्थ निम्नलिखित है—

शब्द	पारिभाषिक अर्थ
दुखान्तक	यह ऐसे कार्य-व्यापार का अनुकरण है जो गम्भीर स्वत: पूर्ण तथा कुछ विस्तृत हो, जिसे भाषा में विभिन्न कलात्मक अलंकरणो से विभूषित किया जाता है तथा जो कार्य-व्यापार के रूप में हो न कि आख्यान के रूप में; जो करुणा एवं भय को उद्बुद्ध कर इन भावों का विरेचन करे।
स्थिति-विपर्यय	स्थिति-विपर्यय दुखान्तक के अन्तर्गत कथानक में ऐसे परिवर्तन का नाम है जिससे कार्य-व्यापार सर्वथा विपरीत दिशा में मुड़ जाता है। यह मोड़ संभाव्यता या आवश्यकता के अनुसार होता है।
अभिज्ञान	अभिज्ञान का अर्थ है अज्ञान की ज्ञान में परिणति। यह दुखान्तक के अन्तर्गत कथानक में पात्रों के मन में प्रेम या घृणा उत्पन्न करती है जो पात्रों के सौभाग्य या दुर्भाग्य का कारण बनती है।
प्रकृति	अरस्तू ने इसके छह अर्थ माने है— (1) यह गति का कारण या साधन है। (2) इसका अर्थ विषय या वस्तु भी होता है। (3) यह तत्व का भी पर्याय है। (4) आकृति या रूप का नाम प्रकृति है। (5) 'विकास प्रक्रिया' को प्रकृति कहते हैं। (6) 'घटक' को भी प्रकृति कहते हैं। (बुचर के अनुसार प्रकृति वस्तु का वह आन्तरिक धर्म है जो विश्व की सर्जनात्मक शक्ति है।)

कला	कला प्रकृति का अनुकरण है।
अनुकरण	वस्तु का उन्नत रूपान्तरण ही अनुकरण है। अत: अनुकरण के तीन अर्थ है—(1) जो वस्तुएँ थी या हैं, (2) उन्हें जैसा कहा या माना जाता है, (3) उन्हें जैसा होना चाहिए।
चरित्र	जिसके अन्तर्गत सभी विशिष्ट नैतिक गुण या स्थायी चित्तवृत्तियाँ आती हो, वह चरित्र है।
भाव	भाव अनुभूति या संवेदना की मनोदशा का नाम है।
कार्य-व्यापार	जो आन्तरिक कार्यों को बोधित करता हो, वह कार्य-व्यापार है।
विरेचन	यह भारतीय चिकित्साशास्त्र का पारिभाषिक शब्द हैं। विरेचन मल निष्कासन द्वारा शरीर शोधन की अन्यतम क्रिया का नाम है। कला के क्षेत्र में विरेचन करुणा एवं भय को निष्कासित कर भावात्मक विश्रांति और भावात्मक परिष्कार करती है।

❑ अरस्तू प्रथम काव्यशास्त्री थे जिन्होंने उपयोगी कला (Art) और ललित कला (Fine Art) का भेद स्पष्ट किया और ललित कला की स्वायत्तता घोषित की।

❑ अरस्तू ने लिखा है, "कार्य व्यापार में निरत मनुष्य अनुकरण का विषय है।"

❑ बूचर के अनुसार, अरस्तू के अनुकरण का अर्थ है,"सादृश्य-विधान अथवा मूल का पुनरुत्पादन—सांकेतिक उल्लेखन नहीं।"

❑ लोंजाइनस (मूल यूनानी नाम लोंगिनुस 'Longinus') का समय ईसा की प्रथम या तृतीय शताब्दी माना जाता है।

❑ लोंजाइनस के ग्रन्थ का नाम 'पेरिहुप्सुस' है। इस ग्रन्थ का प्रथम बार प्रकाशन सन् 1554 ई० में इतालवी विद्वान रोबेरतेल्लो ने करवाया था।

❑ 'पेरिहुप्सुस' मूलत: भाषणशास्त्र (रेटोरिक) का ग्रन्थ है।

❑ 'पेरिहुप्सुस' का सर्वप्रथम अंग्रेजी रूपान्तर जॉन हॉल ने सन् 1652 ई० में 'ऑफ दि हाइट ऑफ एलोक्वेन्स' (of the Height of Eloquence.) शीर्षक से प्रकाशित करवाया।

❑ सैंट्सबरी ने 'ऑफ दि हाइट ऑफ एलोक्वेन्स' (वाग्मिता का प्रकर्ष) के लिए 'Sublime' (उदात्त) शब्द का प्रयोग किया।

❑ लोंजाइनस ने 'पेरिहुप्सुस' की रचना पत्र के रूप में पोस्तुमिउस तेरेन्तियानुस नामक व्यक्ति को सम्बोधित करके की।

❑ 'उदात्त' का निरूपण सर्वप्रथम 'केकिलिउस' नामक व्यक्ति ने किया था।

❑ लोंजाइनस से पूर्व होरेस ने 'आर्स पोएतिका' (काव्य-कला) नामक ग्रन्थ को पत्र के रूप में लिखा था।

❑ लोंजाइनस के 'पेरिहुप्सुस' में अध्यायानुसार निरूपित विषयों की तालिका इस प्रकार है—

अध्याय	विषय
1-7	ग्रन्थ का प्रयोजन, उदात्त की परिभाषा, कतिपय दोषों का विवेचन
8-15	उदात्त के पाँच स्रोतों का निर्देश, उसमें विचार की गरिमा व भाव की प्रबलता का निरूपण।
16-29	अलंकारों का निरूपण।
30-38	शब्द, रूप, बिम्ब आदि का निरूपण।
39-40	रचना की भव्यता का निरूपण।
41-43	दृष्टिभेद से उदात्त-विरोधी अन्य दोषों की चर्चा।
44	यूनान के नैतिक-साहित्यिक ह्रास के कारणों का संधान।

☐ लौंजाइनस के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों का अभिमत निम्न है—

विद्वान	अभिमत
सेन्ट्सबरी	उनकी आलोचना का प्रकार शुद्ध सौन्दर्यवादी है और उसमें भी सर्वोत्कृष्ट है।
डेविड डेचेज	उदात्त प्रथम भावात्मक साहित्य-सिद्धान्त है।
स्काट जेम्स	लौंजाइनस प्रथम स्वच्छन्दतावादी आलोचक है।
एलेन टेट	लौंजाइनस अपूर्ण होते हुए भी प्रथम साहित्यिक आलोचक हैं।
विमसैट एवं क्लीथ ब्रुक्स	'पेरिहुप्सुस' एक असाधारण लेख (Extra Ordinary Essay) है।
ब्रम्प	साहित्य के उत्तरवर्ती अध्येताओं की दृष्टि में यदि अरस्तू व्यवस्थाप्रेमी, होरेस सांसारिक और भाषणशास्त्री क्षुद्र हैं तो लौंजाइनस जीवन्त और आधुनिक हैं।

☐ 'पेरिहुप्सुस' में सर्वत्र उत्तम पुरुष का प्रयोग किया गया है।

☐ लौंजाइनस ने कहा है, "उदात्त महान आत्मा की प्रतिध्वनि है।"(Sublimity is e[illegible] of a great soul)

☐ लौंजाइनस ने 'उदात्त' को परिभाषित करते हुए, लिखा है, "उदात्त अभिव्यंजन अनिर्वचनीय प्रकर्ष और वैशिष्ट्य है।"

☐ लौंजाइनस ने 'उदात्त' की उत्पत्ति के लिए 'प्रतिभा' को सर्वाधिक महत्व दिया।

☐ लौंजाइनस के अनुसार उदात्त का कार्य अनुनयन (Persuation)नहीं बल्कि [illegible] (Enchantment)या लोकोत्तर आह्लाद (Transport) है।

☐ लौंजाइनस उदात्त के पाँच स्रोत मानते हैं—

(1) महान विचारों की उद्भावना की क्षमता।

(2) प्रबल एवं अन्तःप्रेरित भाव।

(3) अलंकारों (विचारालंकार और शब्दालंकार) का समुचित प्रयोग।

(4) भव्य पद योजना। इसमें शब्द-चयन, चित्रविधान और शैलीगत परिष्कार अन्तर्भूत हैं।

(5) रचना की गरिमा और उत्कर्ष का समुचित प्रभाव

☐ लौंजाइनस उदात्त के तीन अवरोधक मानते हैं—

(1) शब्दाडंबर (Tumidity or Bombost)

(2) बालिशता (Puerility)

(3) भावाडंबर (Empty or false Passion)—अस्थानस्थ, अनपेक्षित और अनुचित भावातिरेक भावाडंबर है।

☐ **जॉन ड्राइडन** कवि एवं नाटककार थे। इनकी प्रमुख कृति 'ऑफ ड्रमेटिक पोइज़ी' (नाट्य-काव्य, 1668 ई०) है।

☐ जान ड्राइडन को आधुनिक अंग्रेजी गद्य और आलोचना दोनों का जनक माना जाता है।

☐ ड्राइडन ने 'ऑफ ड्रेमेटिक पोइज़ी' की रचना निबन्ध शैली में की जिसमें एक पात्र 'नियेन्डर' (नया आदमी) की भूमिका में ड्राइडन स्वयं उपस्थित हैं।

☐ ड्राइडन ने नाटक को मानव प्रकृति का यथातथ्य और जीवन्त प्रतिबिम्ब माना है।

☐ ड्राइडन ने साहित्य के दो प्रयोजन आनन्द और शिक्षा पर देते हुए लिखा, "कविता का मुख्य उद्देश्य आनन्द है।...आनन्द के माध्यम से शिक्षा को कविता का साध्य बनाया जा सकता है।"

☐ ड्राइडन ने काव्य-सृजन में प्रतिभा को सर्वाधिक महत्व देते हुए लिखा हैं, "उचित प्रतिभा प्रकृति का वरदान है।"

☐ **विलियम वर्डसवर्थ** का संक्षिप्त जीवन वृत्त निम्नलिखित है—

जन्म-मृत्यु	जन्म-स्थान	उपाधि	मित्र	अन्तिम संग्रह
1770-1850	इंग्लैण्ड	पोयटलारिएट	कोलरिज	द प्रिल्यूड

☐ वर्डसवर्थ का प्रथम काव्य संग्रह 'एन इवनिंग वॉक एण्ड डिस्क्रिप्टिव स्केचेज' सन् 1793 ई० में प्रकाशित हुआ।

☐ वर्डसवर्थ 1795 ई० में कोलरिज के मित्र बने तथा उनके ही सहलेखन में 'लिरिकल वैलेड्स' नामक कविताओं का प्रथम संस्करण सन् 1798 ई० में प्रकाशित करवाया।

☐ 'लिरिकल वैलेड्स' को स्वच्छन्दतावादी काव्यांदोलन का घोषणा-पत्र माना जाता है।

☐ 'लिरिकल वैलेड्स' के चार संस्करण प्रकाशित हुए और उसकी भूमिका को वर्डसवर्थ की आलोचना का मूल माना जाता है, जो निम्न है—

लिरिकल बैलेड्स (एडवर्ट)

संस्करण	भूमिका के शीर्षक
प्रथम, 1798	एडवरटिजमेंट
द्वितीय, 1800	प्रिफेस (Preface प्राक्कथन या प्रस्तावना)
तृतीय, 1802	प्रिफेस
चतुर्थ, 1815	प्रिफेस

❑ वर्डसवर्थ ने कविता को परिभाषित करते हुए लिखा है—"कविता प्रबल भावों का सहज उच्छलन है।"

❑ वर्डसवर्थ ने काव्य-भाषा के सम्बन्ध तीन मान्यताएँ प्रस्तुत कीं—

(1) काव्य में ग्रामीणों की दैनिक बोलचाल की भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

(2) काव्य और गद्य की भाषा में कोई तात्विक भेद नहीं है।

(3) प्राचीन कवियों का भावोद्बोध जितना सहज था, उनकी भाषा उतनी ही सरल थी। भाषा में कृत्रिमता और आडम्बर बाद के कवियों की देन है।

❑ वर्डसवर्थ का यह भी मानना है कि काव्य और गद्य में अन्तर केवल छन्द के कारण होता है।

❑ सैमुअल टेलर कोलरिज का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्नलिखित है—

जन्म-मृत्यु	जन्म-स्थान	मित्र	प्रमुख ग्रन्थ
1772-1834	इंग्लैण्ड	वर्डसवर्थ	बायोग्राफिया लिटरेरिया

❑ कोलरिज की अन्य महत्वपूर्ण गद्य रचनाएँ निम्न हैं—(1) द फ्रैंड (1817), (2) एड्स टु रिफ्लेक्शन, (1825), (3) चर्च एण्ड स्टेट (1830), (4) कंफेशंज ऑफ एन इनक्वायरिंग स्पिरिट (1840)।

❑ कोलरिज प्रत्ययवादी थे और उनकी काव्य-सम्बन्धी धारणा जैववादी सिद्धान्त पर आधारित है।

❑ कोलरिज के अनुसार, "कविता रचना का वह प्रकार है जो वैज्ञानिक कृतियों से इस अर्थ में भिन्न है कि उसका तात्कालिक प्रयोजन आनन्द है, सत्य नहीं; और रचना के अन्य सभी प्रकारों से उसका अन्तर यह है कि सम्पूर्ण से वही आनन्द प्राप्त होना चाहिए जो उसके प्रत्येक अवयव से प्राप्त होने वाली स्पष्ट सन्तुष्टि के अनुरूप हो।"

❑ कोलरिज ने प्रतिमा और प्रज्ञा में निम्न अन्तर बताया है—

प्रतिमा	प्रज्ञा
सहज	अर्जित
कल्पना	रम्यकला (फैंसी)
सर्जनशीलता	संयोजनशीलता
मौलिक	पराश्रित

❑ कोलरिज का भाषा सम्बन्धी विचार निम्नलिखित है—

"भाषा मानव मन का शस्त्रागार है, जिसमें उसके अतीत के विजय-स्मारक और भावी विजय के शास्त्र एक साथ रहते हैं।"

❑ कोलरिज के अनुसार काव्य-सर्जन का मूलाधार कल्पना है। इसके दो भेद है—

कल्पना

मुख्य कल्पना — गौण कल्पना

❑ मुख्य कल्पना और गौण कल्पना मे निम्न अन्तर है—

मुख्य कल्पना	गौण कल्पना
1. यह समस्त जागतिक प्रपंच को व्यवस्थित रूप में ग्रहण कराने वाली शक्ति है।	1. यह मुख्य कल्पना की प्रतिध्वनि है। इसे काव्यात्मक कल्पना भी कहते हैं।
2. यह अचेतन एवं अनैच्छिक है।	2. यह चेतन और ऐच्छिक है।
3. यह निर्माण या संघटन करती है।	3. यह विघटन और संघटन, विनाश और निर्माण दोनों करती हैं।

❑ कोलरिज ने कल्पना के सम्बन्ध में लिखा है, "इसमें संश्लेषात्मक तथा जादुई शक्ति होती है जो विरोधी या विसंवादी धर्मों में सन्तुलन स्थापित करती है।"

❑ कल्पना निम्नलिखित विरोधी धर्मों में सामंजस्य स्थापित करती है—

साम्य	वैषम्य
सामान्य	विशेष
प्रत्यय	विम्ब
प्रातिनिधिक	वैयक्तिक
प्राचीन और परिचित पदार्थ	नवीन और ताजगी
संयम	भावोश
विवेक	उमंग
कृत्रिम	प्राकृतिक

❑ कल्पना निम्नांकित ख-वर्ग की तुलना में क-वर्ग को गौणता प्रदान करती है—

क-वर्ग	ख-वर्ग
कला	प्रकृति
रूप/रीति	वस्तु
कवि के प्रति समादर	काव्य के प्रति सहानुभूति

❑ 'इमैजिनेशन' शब्द की उत्पत्ति लैटिन के 'इमाजिनातियो' (Imaginatio) से हुई है, जिसका हिन्दी रूपान्तर 'कल्पना' है।

❑ 'फैन्सी' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक के 'फांतासिया' (Phantasia) से हुई है, जिसका हिन्दी रूपान्तर 'रम्यकल्पना' या 'ललित कल्पना' है।

❑ 'रम्यकल्पना' की निम्नांकित विशेषताएँ हैं—

(1) यह देश-काल के बन्धन से मुक्त एक प्रकार की स्मृति-मात्र है।

(2) यह इच्छा शक्ति से संचालित एवं रूपान्तरित होती है।

(3) यह अपने उपयोग की सामग्री सहचर्य-नियम से ग्रहण करती है।

(4) इसकी उपयोज्य सामग्री स्थिर तथा सुनिश्चित होती है।

❑ कोलरिज ने कल्पना और रम्यकल्पना में निम्न अन्तर रेखांकित किया है

कल्पना	रम्यकल्पना
1. यह विम्बों को विघटित, विगलित कर नये रूप में परिवर्तिक करती है।	1. यह विम्बों को सिर्फ पास-पास रख देती है, कोई परिवर्तन नहीं करती।
2. कल्पना अन्तःप्रेरणा, प्रत्यक्ष आदि से सामग्री ग्रहण करती है।	2. यह प्रधानतः स्मृति से सामग्री ग्रहण करती है।
3. यह जैव कार्य पद्धति पर आधारित है।	3. यह यान्त्रिक कार्य पद्धति पर आधारित है।
4. यह प्रतिभा की उपज है।	4. यह प्रज्ञा की उपज है।

❑ अंग्रेजी में व्यावहारिक आलोचना का सूत्रपात कोलरिज ने किया था।

❑ **बेनेदेत्तो क्रोचे** का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्न है—

जन्म-मृत्यु	जन्म-स्थान	पुस्तक	भाषा	अंग्रेजी अनुवादक
1866-1952	इटली	ईस्थेटिक	इतालवी	डगलस एन्स्ले

❑ क्रोचे ने सर्वप्रथम 1900 में अपना निबन्ध 'एस्थेटिक ऐज़ द साइंस ऑफ़ एक्सप्रेशन एण्ड जेनरल लिंग्विस्टिक्स' लिखा। इसी निबन्ध का विस्तृत रूप 'ईस्थेटिक' (1902) पुस्तक है।

❑ क्रोचे ने सन् 1902 ई० में 'ला क्रितीका' पत्रिका का प्रकाशन किया।

❑ क्रोचे के अन्य महत्वपूर्ण पुस्तक निम्न हैं—(1) न्यू एसेज आन एस्थेटिक (1920), (2) डिफेंस ऑफ पोएट्र (1933)।

❑ क्रोचे के 'ईस्थेटिक' के दो भाग है—

प्रथम भाग—इसमें सौन्दर्यशास्त्र का सैद्धांतिक विवेचन है।

द्वितीय भाग—इसमें सौन्दर्यशास्त्र का इतिहास है।

❑ 'ईस्थेटिक' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक के 'आइस्थेसिस' — 'आइस्थेतिकोस' से हुई

जिसका अर्थ है इन्द्रिय-प्रत्यक्ष या इन्द्रिय ग्राह्य ज्ञान।

❑ 'ईस्थेटिक' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग जर्मन दार्शनिक आलेक्सांडर गोटलीब बाउमगार्टेन ने किया।

❑ आधुनिक सौन्दर्यशास्त्र का जनक बाउमगार्टन को ही माना जाता है।

❑ क्रोचे प्रत्ययवादी दार्शनिक थे। ये आत्मवादी भी माने जाते हैं।

❑ क्रोचे आत्मा या चेतना की चार क्रियाएँ मानते हैं, जो निम्न है—

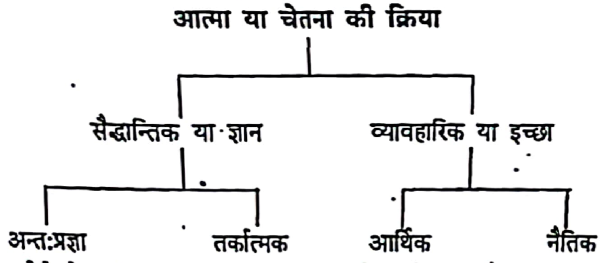

❑ क्रोचे के अभिव्यंजनावाद की प्रमुख विशेषताएँ निम्न है—

(1) अन्तःप्रज्ञा, अभिव्यंजना और कला में अभेद सम्बन्ध है।

(2) अभिव्यंजना आत्मिक क्रिया है।

(3) प्रत्येक अन्तःप्रज्ञा कला है और प्रत्येक कला अन्तःप्रज्ञा है।

(4) कला वस्तु में नहीं होती बल्कि वस्तु द्वारा अभिव्यक्त रूप में होती है।

(5) कला आन्तरिक होने के साथ ही अखण्ड है।

❑ क्रोचे कला निर्माण के चरण माने हैं, जो निम्न है—(1) संस्कार, (2) अभिव्यंजना (3) सौन्दर्यमूलक आनन्द (4) सौन्दर्य का ध्वनि, गति, रेखा, रंग आदि में रूपान्तरण।

❑ क्रोचे ने कला निर्माण में प्रतिभा को मूल कारण माना है।

❑ क्रोचे का कहना है कि कलाकार में सौन्दर्य की उत्पत्ति होती है और भावक में सौन्दर्य की पुनरुतपत्ति होती है अर्थात स्रष्टा (कलाकार) सौन्दर्य का भागी होता है।

❑ **टॉमस स्टर्न्स इलियट** का संक्षिप्त जीवन वृत्त निम्न है—

जन्म-मृत्यु	जन्म-स्थान	निदेशक थे	सम्पादक थे	पुरस्कार व रचना
1888-1965	अमेरिका	फेबर एण्ड फेबर	दि क्राइटेरियन	नोबेल (1948)—द वेस्टलैंड

❑ इलियट की प्रमुख समालोचनात्मक कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) द सेक्रेड वुड (1920), (2) होमेज टु जॉन ड्राइडन (1924), (3) एलिजाबेथेन एसेज (1932), (4) द यूज ऑफ पोएट्री एण्ड द यूज ऑफ क्रिटिसिज्म (1933), (5) सेलेक्टेड एसेज (1934), (6) एसेज एंशेंट एण्ड मार्डन (1936), (7)

नालेज एण्ड एक्सपीरिएन्स (शोध प्रवन्ध)।

- इलियट के गुरु नाम आयरविंग बैबिट और जार्ज सांतायना था।
- एलियट की आलोचना का मूलाधार लेख 'ट्रेडिशन एण्ड दि इंडिविजुअल टैलेंट' (परम्परा और वैयक्तिक प्रज्ञा) 'दि सेक्रेड वुड' में संकलित हैं।
- इलियट ने अपनी आलोचना को "निजी काव्य-कर्मशाला का उपजात (by Product) या काव्य-निर्माण के प्रसंग में अपने चिन्तन का विस्तार" कहा है।
- इलियट के अनुसार कारयित्री और भावयित्री प्रतिभा परस्पर पूरक हैं। साथ ही कहा कि आलोचक और सर्जक (कवि) प्राय: एक ही व्यक्ति को होना चाहिए।
- इलियट के 'परमपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा' नामक लेख की प्रमुख बातें निम्न है—

लेख का पूर्वार्द्ध

(1) प्रत्येक राष्ट्र की, प्रत्येक प्रजाति (Race) की अपनी सर्जनात्मक मनोवृत्ति के साथ ही आलोचनात्मक मनोवृत्ति भी होती है।"

(2) सांस की तरह आलोचना अनिवार्य तथा नैसर्गिक क्रिया है।

(3) वैयक्तिक प्रज्ञा परम्परा से असंबद्ध, निरपेक्ष या विच्छिन्न वस्तु नहीं है।

(4) इतिहास-वोध का अर्थ अतीत के अतीतत्व का नहीं, अपितु उसके वर्तमानत्व का भी अवगम है।

(5) जिस तरह वर्तमान से अतीत परिवर्तित होता है, उसी तरह अतीत से वर्तमान निर्देशित होता है।

(6) कवि को अतीत का, अर्थात परम्परा का, ज्ञान तो होना चाहिए परन्तु ज्ञान भार से आक्रांत नहीं होना चाहिए।

(7) कलाकार की प्रगति सतत आत्मोत्सर्ग है; व्यक्तित्व का सतत निर्वापण (Extinction) है। व्यक्तित्व के इस अवैयक्तिकीकरण से ही कला विज्ञान की स्थिति में पहुँच सकती है।

लेख का उत्तरार्द्ध

(1) सच्ची आलोचना तथा संवेदनात्मक परिशंसा का लक्ष्य कवि नहीं है, बल्कि काव्य है। (Honest criticism and sensitive appreciation is directed not upon the Poet but upon the poetry.)

(2) कलाकृति के आस्वादन से उत्पन्न अनुभूति किसी भी अन्य साधन से उत्पन्न अनुभूति से भिन्न कोटि की होती है।

(3) कलाकार जितना उत्कृष्ट होगा, उसमें भोक्ता और स्रष्टा का अन्तर उतना ही स्पष्ट होगा।

(4) कविता कवि-व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं, व्यक्तित्व से पलायन है। (Poetry is not a turning loose of emotion but an escape from emotion. it is not the expression of personlity, but an escape from personaltiy.)

(5) इलियट ने काव्य में सार्थक भाव की अभिव्यंजना को महत्वपूर्ण बताया। सार्थक भाव, वह भाव जिसका अस्तित्व काव्य में होता है कवि के जीवन वृत्त में नहीं।

- इलियट के अनुसार कविता का सौन्दर्य उसकी संहत पूर्णता में है न कि विच्छिन्न अवयवों में।
- इलियट ने रिचर्ड्स और एम्पसन की शाब्दिक आलोचना पद्धति को 'नींबू-निचोड़ आलोचना' (Lemon Squeezer Criticism) कहा है।
- इलियट ने रुचि-परिष्कार को आलोचना का अन्यतम प्रयोजन माना है।
- इलियट का मूर्त विधान भारतीय रस-सिद्धान्त का विभावन व्यापार है।
- संवेदनशीलता के असाहचर्य के सिद्धान्त के लिए इलिट फ्रांसीसी कवि आलोचक रमी द गुर्मो के ऋणी हैं।
- इलियट ने दो महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रस्तुत किये, जो निम्न हैं—

1. **मूर्त विधान (Objective correlative)**—कला के रूप में भाव को अभिव्यक्त करने का एक ही उपाय है और वह है किसी सह-सम्बन्धी वस्तु-जैसे वस्तु समुदाय, परिस्थिति, घटना-शृंखला—को ढूँढ निकालना जो उस विशिष्ट भाव का सूत्र हो ऐसा कि जब वे बाह्य वस्तुएँ प्रस्तुत की जाएँ तो ऐन्द्रिय अनभूति में अवसित होकर वे भाव को सद्य: उद्बुद्ध कर दे।
2. **संवेदनशीलता का असाहचर्य (Dissociation of Sensibility)**—इलियट के अनुसार कवि का मन और संवेदनशीलता अर्थात बुद्धि पक्ष (विचार) और हृदयपक्ष (भाव) अभिन्न हैं। जब भाव और विचार में दरार पड़ जाती है तो काव्य में अपक्षय और ह्रास आ जाता है। इसी को इलियट 'संवेदनशीलता का असाहचर्य' कहते हैं।

- इलियट के अनुसार 'काव्य श्रेष्ठ मनोरंजन है।"
- इलियट ने 'थ्री वायसेज ऑफ पोएट्री' (काव्य के तीन स्वर) शीर्षक निबन्ध में 'तीन नाट्य स्वर की चर्चा की, जो निम्न है—

प्रथम स्वर—जब कवि या तो अपने को सम्बोधित करता है या फिर किसी को नहीं।

द्वितीय स्वर—जब कवि किसी छोटे-बड़े पाठक/श्रोता समुदाय को सम्बोधित करता है।

तृतीय स्वर—जब कवि कोई ऐसी बात कहता है जो वह स्वयं अपने व्यक्ति रूपमें नही कह सकता; बल्कि जिसे वह सिर्फ उस सीमा के भीतर कह सकता है जिसमें एक काल्पनिक पात्र दूसरे काल्पनिक पात्र को सम्बोधित कर रहा हो।

- इलियट ने आलोचना के दो उद्देश्य बताए हैं किन्तु वर्षों के अन्तराल में उनकी

अवधारणा भी बदल गई, जो निम्न है—

लेख/निबन्ध	वर्ष	दो उद्देश्य
द फंक्शन ऑफ क्रिटिसिज्म	1923	(1) विशदन (2) रुचि परिष्कार
द फ्रंटियर्स ऑफ क्रिटिसिज्म	1956	(1) बोध (2) आस्वाद

❑ **ईवर आर्मस्ट्रांग रिचर्ड्स** (1893-1979) को अंग्रेजी साहित्य में प्रथम बार व्यापक और व्यवस्थित सौन्दर्यशास्त्र के निर्माण का श्रेय दिया जाता है।

❑ रिचर्ड्स ने सौन्दर्य को वस्तुनिष्ठ न मानकर पाठक या दर्शक पर पड़ने वाले प्रभाव के रूप में देखने का आग्रह किया। अर्थात सौन्दर्य की स्थिति किसी वस्तु में नहीं बल्कि पाठक या दर्शक के मन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव में होती है।

❑ रिचर्ड्स ने निम्न पुस्तकों की रचना सहलेखन में की—

पुस्तक	सहलेखक
दि फाउंडेशन ऑफ ईस्थेटिक (1922)	सी० के० आग्डेन और जेम्स वुड
दि मिनींग ऑफ मिनींग (1923)	सी० के० आग्डेन

❑ रिचर्ड्स के अन्य ग्रन्थ निम्न हैं—

(1) दि प्रिंसिपुल्स आफ लिटररी क्रिटिसिज्म (1924), (2) प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म (1929), (3) साइंस एण्ड पोएट्री (1926), (4) दि फिलासफी ऑफ रेटारिक (1936)।

❑ रिचर्ड्स ने आलोचना के दो भेद किये हैं—

(1) आलोचनात्मक—इसमें अनुभूति के मूल्य का वर्णन होता है।

(2) प्राविधिक—इसमें अनुभूति के साधनों का वर्णन होता है।

❑ रिचर्ड्स आलोचना को मनोविज्ञान की एक शाखा मानते हैं।

❑ रिचर्ड्स मूल्य और अनुभूति में कोई भेद नहीं मानते अर्थात जीवनानुभूति और काव्यानुभूति दोनों पर्याय हैं।

❑ रिचर्ड्स की आलोचना के दो मूलाधार स्तम्भ हैं—

(1) **मूल्य सिद्धान्त** कोई भी वस्तु जो इच्छा को संतुष्ट करे मूल्यावान है। या विभिन्न जटिल रूपों में भावना और इच्छा को सन्तुष्टि की क्षमता मूल्य है।

(2) **सम्प्रेषण सिद्धान्त** सम्प्रेषण का अर्थ न तो अनुभूति का यथावत अन्तरण है और न दो व्यक्तियों के बीच अनुभूति का तादात्म्य बल्कि कुछ अवस्थाओं में विभिन्न मनों की अनुभूतियों की अत्यन्त समानता ही सम्प्रेषण है।

❑ रिचर्ड्स ने लिखा है, "नैतिकता सिर्फ दुनियादारी है और आचार संहिता इष्टसिद्धि की सामान्यतम व्यवस्था की अभिव्यक्ति है।"

❑ रिचर्ड्स आवेगों की शान्ति द्वारा 'सन्तुलित विश्रांति' को काव्य का प्रयोजन मानते हैं। साथ ही आनन्द को प्रयोजन में कोई स्थान नहीं देते।

❑ रिचर्ड्स आवेगों के आधार काव्य के दो भेद मानते हैं—

आवेग	काव्य	विशेषता
सजातीय	अपवर्जी	जिसमें एक ही भाव का वर्णन हो
विजातीय	अन्तर्वेशी	जिसमें विरोधी भावों का संश्लेषण हो।

❑ रिचर्ड्स के अनुसार सम्प्रेषण ही आलोचना का चरम लक्ष्य है।

❑ रिचर्ड्स भाषा के दो रूप माने जैं—(1) वैज्ञानिक (Symbolic), और (2) रागात्मक (Emotive)।

❑ रिचर्ड्स के अनुसार अर्थ के चार प्रकार हैं—

(1) मुख्यार्थ (Sense), (2) भावना (Feeling), (3) वचन भंगी (Tone) और (4) उद्देश्य (Intention)।

नयी आलोचना

❑ 'न्यू क्रिटिसिज्म' शब्द का प्रथम प्रयोग सन् 1911 ई० में कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रो० स्पिनगर्न ने किया था।

❑ 'न्यू क्रिटिसिज्म' शब्द की सर्वप्रथम परिभाषा जॉन क्रो रैन्सम ने अपनी पुस्तक 'दि न्यू क्रिटिसिज्म' (1941) की भूमिका में दी।

❑ आलोचना के क्षेत्र में 'न्यू क्रिटिसिज्म' का सूत्रपात टी० एस० इलियट और आई० ए० रिचर्ड्स से माना जाता है।

❑ 'नयी आलोचना' को रोमांटिसिज्म के विरुद्ध एक नये क्लासिकल पुनरुत्थान (नव अभिजात्यवाद) के रूप में देखा गया।

❑ 'नयी आलोचना' में विभिन्न शब्दों के प्रवर्तक निम्न हैं—

शब्द	प्रवर्तक
अन्तर्विरोध	क्वींथ ब्रुक्स
तनाव	एलेन टेट
अनेकार्थकता	विलियम एम्पसन
विरोधाभास	राबर्ट पेन वारेन
विडम्बना और विसंगति	क्वींथ ब्रुक्स

❑ नयी आलोचना से संबंधित प्रमुख आलोचक एवं उनकी कृतियाँ निम्न हैं—

आलोचक	रचनाएँ
फ्रैंक रेमंड लीविस	(1) न्यू बिअरिंग्स इन इंगलिश पोएट्री (1932), (2) रिवेलुशन: ट्रेडिशन एण्ड डेवलेपमेंट इन इंगलिश पोएट्री (1936), (3) द ग्रेट ट्रेडिशन (1948), (4) अन्ना केरेनिना एण्ड अदर एसेज (1967), (5) डिकेंस द नावलिस्ट (1970), (6) द कामन पर्सूट (1952)
मिडलटन मरे	(1) दि प्राब्लम ऑफ स्टाइल (1922)
जे० बी क्रच	(1) दि मार्डन टेंपर
लायनल ट्रिलिंग	(1) दि मार्डन एलिमेंट इन मार्डन लिटरेचर
एजरा पाउण्ड	(1) ए० बी० सी० आफ रीडिंग
विलियम एम्पंसन	(1) सेवन टाइप्स ऑफ एंविगुइटी
जान क्रो रैंसम	(1) गाड विदाउट थंडर (1930), (2) द वर्ड्स बाडी (1938)
एलेन टेट	(1) आनद लिमिट्स ऑफ पोएट्री (1948), (2) दि फारलोन डेमन (1955)।
आर० पी० ब्लैकमर	(1) लैंग्वेज एज जैसचर (1952), (2) लायन एण्ड द हनीकोम्ब (1956)
केनेथ बर्क	(1) एं ग्रामर ऑफ मोटिव्स (1948), (2) पर्मनेंस एंडचेंज
क्वींथ ब्रुक्स	(1) द वेल रट अर्न (1947)

❑ 'नयी आलोचना' के लिये प्रारम्भ में 'सौन्दर्यपरक रूपवाद (ईस्थेटिक फारमलिज्म) और 'विश्लेषणात्मक आलोचना' जैसे नाम सुझाए गए थे।

❑ नयी आलोचना से सम्बन्धित प्रमुख पत्रिकाएँ निम्न हैं—

पत्रिका	वर्ष	सम्पादक
दि क्राइटेरियन	1922	टी० एस० इलियट
स्क्रूटनी	1932	एफ० आर० लीविस
द फ्यूजिटिव		जान क्रो रैंसम

विविध वाद

❑ 'उत्तर आधुनिकतावाद' शब्द अंग्रेजी 'पोस्टमार्डनिज्म'(Postmordernism) का हिन्दी पर्याय है।

❑ 'उत्तर आधुनिकतावाद' की अवधारणा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में दो मत प्रचलित है—

(1) इस अवधारणा की उत्पत्ति तीसरी दुनिया के गरीब देश 'निकारागुआ' में हुई।

(2) इस अवधारणा की उत्पत्ति साम्राज्यवादी देश अमेरिका व यूरोप में हुई।

प्रथम मत

❑ मलय चौधरी के अनुसार, स्पैनिश कवि फेदेरिको द वेनिस ने अपने कविता संग्रह 'आंतोलेजिया द ला पोयेजिया एस्पेनोला ए हिमापानोमारिकाना' की भूमिका में सर्वप्रथम 'पोस्टमाडर्न' की व्याख्या की।

❑ डडलीफिट्स ने सन् 1942 ई० में 'पोस्टमार्डन' के दक्षिणी अमेरिकी कवियों पर प्रभाव को लेकर 'एंथोलाजी ऑफ कंटेम्परेरी लैटिन अमेरिकन पोएट्री' नामक पुस्तक लिखी।

❑ सन् 1947 ई० में पुर्तगाली कविताओं का संग्रह 'फार्मई ऐक्सप्रेसाओं नो दोमान्स ब्राजीलेइरों दो पिरियदों कालोनियल ए एपोका पोस्टमार्डनिस्ट' प्रकाशित हुआ।

दूसरा मत

❑ सच्चे अर्थों में ज्यां फ्रांकोइस ल्योतार को 'उत्तर आधुनिकतावाद' का जनक माना जाता है।

❑ विश्वग्राम (ग्लोबल विलेज) की संज्ञा मार्शल मैक्लुहान ने दिया था।

❑ ल्योतर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द पोस्ट मार्डन कंडिशन: ए रिपोर्ट आन नालेज' (1979) में लिखा है "उत्तर आधुनिकतावाद महावृत्तान्त के विरुद्ध है। महावृत्तान्त का अर्थ है ईसाइयत, मार्क्सवाद और वैज्ञानिक प्रगित का मिथ। इनके विरुद्ध अब छोटे-छोटे अस्तिमा समूहों जैसे स्त्री विमर्श, दलित विमर्श आदि का उदय हो रहा है।"

❑ ल्योतार ने लिखा है, "ज्ञान की अवस्था बदल जाती है जब समाज उत्तर औद्योगिक युग में और संस्कृति उत्तर आधुनिक युग में प्रवेश करती है।"

❑ फ्रेडरिक जेमसन ने अपनी पुस्तक 'पोस्ट मार्डनिज्म : द कल्चर लाजिक ऑफ लेट कैपिटेलिज्म' में उत्तर आधुनिकता को पूँजीवाद के विकास की खास अवस्था कहा है। इसे वे 'उपभोक्ता पूँजीवाद' या 'वृद्ध पूँजीवाद' भी कहते हैं।

❑ उत्तर आधुनिकता वाद विचारधारा का अन्त, लेखक की मृत्यु, इतिहास का अन्त, कला का अन्त, आलोचक की मृत्यु आदि अनेक मृत्युओं की घोषणा करती है।

❑ उत्तर आधुनिकतावाद की प्रमुख घोषणाएँ निम्न हैं—

घोषणाकर्ता	घोषणा
डैनियल बेल	विचार धारा का अन्त
जैक देरिदा	मनुष्य की मृत्यु
रोलां वार्थ	लेखक की मृत्यु
लायन ट्रिलिंग	लेखक का अन्त
एडमंड विल्सन	परम्परागत शैलियों की मरती हुई विधाएँ
इलियट	उपन्यास का अन्त

❑ अतिययार्थवाद (Surrealism) साहित्य और कला के क्षेत्र का ऐसा आन्दोलन है जिसका जन्म प्रथम विश्वयुद्धोत्तर फ्रांस में हुआ।

❑ अति यथार्थवाद के प्रवर्तक आन्द्रेबेतां ने 'सुर्रियलिज्म' शब्द का प्रथम प्रयोग सन् 1924 में अपने घोषणा पत्र' मेनिफेस्टो आन सुर्रियालिज्म' में किया था।

❑ आन्द्रे ब्रेतां ने अपने घोषणा-पत्र के प्रकाशन से पूर्व अपने मित्र फिलिप सूपाल्त के सहलेखन में मेनिफेस्टों के मूलपाठ का प्रकाशन सन् 1919 ई० में 'लेस चेम्पस मेगनेटिक्स' शीर्षक से कराया था।

❑ आन्द्रे ब्रेतां ने अतिययार्थवाद में स्वत: चालित लेखन (Automatic Writing) को साहित्यकारों के लिए अपरिहार्य माना है।

❑ अतिययार्थवाद के प्रबल समर्थक हर्बर्ट रीड ने 'मिथ,ड्रीम एण्ड पोयम' नामक प्रसिद्ध लेख लिखा।

❑ अतिययार्थवाद का सम्बन्ध 'दादावाद' से है। 'दादावाद' का प्रवर्तन ट्रिस्टन जारा ने सन् 1916 ई० में किया।

❑ अस्तित्ववाद (Existentiolism) के प्रवर्तक डेनिश विद्वान सारेन कीर्केगाड (1813-1855 ई०) थे।

❑ अस्तित्ववाद के समर्थकों में नीत्से, कार्ल जेस्पर्स, मार्टिन हेडगर, ग्रेबियल मार्सल, ज्याँ पाल सात्रे, अल्वर्ट कामू आदि का नाम महत्वपूर्ण है।

❑ नीत्से ने घोषित किया कि "ईश्वर की मृत्यु हो चुकी है।"

❑ संरचनावाद की अवधारणा के प्रवर्तक फ्रांस के भाषा वैज्ञानिक फर्दिनांद डी सोस्यूर (1857-1913 ई०) थे।

❑ संरचनावाद के अनुसार, "साहित्य शाब्दिक संरचना है। वस्तुत: प्रत्येक वस्तु कई घटक तत्वों के संश्लेष से निर्मित होती है। ये घटक एक ओर परस्पर सम्बद्ध होते हैं और दूसरी ओर पूर्ण निर्मिति के साथ उनका सन्तुलित संश्लेष होता है। साहित्य शाब्दिक संश्लेष है।

❑ सोस्यूर ने संरचनावाद की स्थापना 'कोर्स इन जनरल लिंग्विस्टिक्स' नामक पुस्तक में की,। इनके अनुसार भाषा के दो रूप हैं—

(1) ल लांग—इसे अन्तर्वैयक्तिक भाषा व्यवस्था कहा जाता है।

(2) ल परोल—इसे व्यक्ति-विशेष की भाषा कहा जाता है।

❑ 'परोल' के आधार पर भाषा के नियमों का अनुसंधान ही 'संरचना' है।

❑ प्रसिद्ध नृ-तत्ववेत्ता लेवी स्ट्रास ने संरचनावाद को मिथकों के अध्ययन पर लागू किया।

❑ लेवी स्ट्राक ने 'मिथक' को विशुद्ध मानसिक रूपात्मक क्रिया कहा है।

❑ लेवी स्ट्राक अनुसार मूक मिथक 'लांग' है तो इसके अलग-अलग रूप 'परोल'।

❑ 'संरचनावाद' को साहित्य के क्षेत्र में प्रचारित करने का श्रेय रोलां वार्थ को जाता है।

❑ रोलां वार्थ ने संरचनावाद की व्याख्या 'द फैशन सिस्टम' नामक पुस्तक में की।

उन्होंने कहा कि हमें साहित्यिक कृति को एक विशिष्ट एकता से युक्त सम्पूर्ण संरचना रूप में देखना चाहिए। यह सम्पूर्ण रचना परत-दर-परत इतनी जटिल होती है कि इसे अंगभूत उप-संरचनाओं—ध्वनि, छन्द, बिम्ब पद-विन्यास आदि के गुंफ के रूप में देखा जा सकता है।"

❑ रोलां वार्थ के अनुसार, साहित्य निर्माण में पाँच नियम काम करते हैं—(1) व्याख्या, (2) चिह्न संहिता, (3) प्रतीकात्मकता, (4) क्रियाव्यापार संहिता और (5) सांस्कृतिकता। इन्हीं नियमों से होकर सारा पाठ गुजरता है।

❑ संरचनावाद को मार्क्सवादी परम्परा में स्थान देने का श्रेय लुई अल्थ्यूसर को दिया जाता है।

❑ उत्तर संरचनावाद को संरचनावाद का अगला चरण माना जाता है।

❑ 'उत्तर संरचनावाद' अवधारणा की स्थापना में पाँच फ्रांसीसी विद्वानों की भूमिका माना जाता है, जो निम्न हैं—

(1) क्लाडे लेवी स्ट्रास, (2) माइकल फूको, (3) रोलांवार्थ, (4) लुई अल्थ्यूसर और (5) जैकियस लकन।

❑ उत्तर संरचनावाद में सारा बल पाठ (Text) पर दिया जाता है।

❑ 'कला कला के लिए' (मूल फ्रांसीसी भाषा "L' art pour 'L' art" का अनुवाद) सूत्र का सर्वप्रथम प्रयोग विक्टर कजिन ने सन् 1818 ई० में किया था।

❑ विक्टर कजिन के भाषणों का प्रकाशन सन् 1836 ई० में हुआ।

❑ "L' art pour 'L'art" (ल आर पूर ल आर) सूत्र का 'कला के लिए कला' Art of art's sake) अनुवाद सर्वप्रथम वाल्टर पेटर ने किया था।

❑ कलावादी साहित्यिक प्रवृत्तियों को प्रतिष्ठित करने का श्रेय जर्मन दार्शनिक कांट, शेलिंग, गोथे और शिलर को जाता है।

❑ सौन्दर्यवादी अथवा कलावादी प्रवृत्ति के सर्वप्रथम प्रभावकारी रचनाकार गाउटियर हैं।

❑ 'कला के लिए कला' आन्दोलन का प्रवर्तन करने वाले प्रमुख लेखक निम्न देशों से सम्बन्धित हैं—

फ्रांस	इंग्लैण्ड	अमेरिका
मदाम द स्ताल	जेम्स ह्विस्लर	इमरसन
थियोफिल गोतिए	आस्कर वाइल्ड	एडगर एलेन पोप
पियरे शार्ल बॉदलेअर	वाल्टर पेटर	
स्ताफेन मलार्मे	कार्लाइल	
	एडमंड गूज	

❑ कलावादियों की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

रचनाकार	रचना
थियोफिल गोतिए	(1) प्रेमेयर पोएजी (1832 ई०)
एडगर एलेन पो	(1) द फिलासफी ऑफ कम्पोजीशन (2) द पोएटिक प्रिंसिपल (1850)
वादलेयर	(1) फ्लावर्स ऑफ द ईविल (काव्य संग्रह)
वाल्टर पेटर	(1) स्टाइल (निवन्ध)
जेम्स ह्विस्लर	(1) टेन ओ क्लाक (1888 ई०)

❑ विभिन्न कलावादियों का कला के सन्दर्भ में की गई टिप्पणी निम्नलिखित है—

(1) कला की सत्ता राजनीतिक, सामाजिक पारिस्थितियों से स्वतन्त्र तथा निरपेक्ष होती है।कला का शिल्प उसे स्वत: पूर्ण, श्रेष्ठ, तथा मूल्यवान वनाता है। –गोतिए

(2) कविता सौन्दर्य की लयात्मक सृष्टि है एवं उसका प्रभाव आत्मा का गहन और शुद्ध अन्नयन है। –एडगर एलेन पो

(3) "कला का सत्य अपने अन्तदर्शन के प्रति ईमानदार बना रहने में होता है।" –वाल्टर पेटर

(4) कला का उद्देश्य सुन्दरता की खोज और निरूपण है।–जेम्स हिसलर

(5) कला चरम सत्य और जीवन कथा की एक विधि है।–आस्कर वाइल्ड

❑ आलोचनात्मक यथार्थवाद की अवधारणा को सर्वप्रथम जाज लुकाच ने प्रस्तुत किया।

❑ जार्ज लुकाच की प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित है—(1) द मीनिंग ऑफ कंटेम्पोरेरी रियलिज्म, (2) स्टडी इन यूरोपीयन रियलिज्म (3) द हिस्टोरिकल इत्यादि।

❑ 'जादुई यथार्थवाद' शब्द अंग्रेजी शब्द मैजिक रियलिज्म (Magic Realism) का हिन्दी पर्याय है।

❑ सर्वप्रथम फ्रेन्ज रोह ने जर्मन चित्रकारों के चित्रों का विश्लेषण करते हुए 'Magischer Realismus' पद का प्रयोग किया था।

❑ जादुई यथार्थ का प्रतिष्ठापक बुअलो को माना जाता है।

❑ जादुई यथार्थ से जुड़े प्रमुख रचनाकार निम्नलिखित हैं—(1) जार्ज साइको, (2) लुइस बोर्गस, (3) गैब्रियल गार्सिया मार्ग्वेज, (4) एलेजो कार्पेंतियर, (5) मार्क्वेज इत्यादि।

❑ यथार्थवादी कला का आरम्भ 1857 ई० में फ्रेंच लेखक फ्लावेयर की प्रसिद्ध रचना 'मादाम बावेरी'के प्रकाशन से हुआ।

❑ बाल्जाक और ज़ोला जिस यथार्थवादी आन्दोलन का प्रवर्तन किया उसे 'प्रकृतवाद' कहा जाता है।

❑ प्रतीकवाद का आविर्भाव 19वीं शती के अन्त में फ्रांस में हुआ था।

❑ प्रतीकवाद फ्रांसीसी काव्यजगत का 'पारनेसियनिज्म' के — — — आन्दोलन है।

❑ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "इन पारनेसियनों के पीछे सन् 1885 ई० में प्रतीकवादियों (सिंवॉलिस्ट्स या डीकेडेंट्स) का एक सम्प्रदाय फ्रांस में खड़ा हुआ जिसने 'अनूठे रहस्यवाद' और 'भावोन्मादमयी भक्ति' का सहारा लिया।"

❑ फ्रांस में प्रतीकवाद के पुरस्कर्ता वादलेयर माने जाते हैं।

❑ सन् 1886 ई० में कवि जीन मारेआस ने 'फिगारो' नामक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया, जिसमें प्रतीकवाद का एक घोषणा पत्र प्रकाशित किया गया।

❑ इंग्लैण्ड में प्रतीकवाद का प्रवर्तन विलियम वटलर येट्स ने किया।

❑ 'प्रतीकवादी' आन्दोलन को विकसित करने वाले प्रमुख लेखक निम्न लिखिक देशों से सम्बन्धित है—

फ्रांस—चार्ल्स वादलेयर, पॉल वर्लेन, अर्थर रिम्वद, स्टीफेन मलार्मे

इंग्लैण्ड—जार्जमूर, आस्कर वाइल्ड, आर्थर साइमंस, अर्नेस्ट डाउसन

जर्मनी—स्टीफेन जार्ज

अमेरिका—एमी लावैल

❑ प्रतीकवादियों ने चार्ल्स वादलेयर की कविता 'कॉरसपॉन्डेस (सादृश्य) को अपना घोषणा पत्र माना है।

❑ चार्ल्स वादलेयर को फ्रांस का प्रथम कवि भी माना जाता है।

❑ बिम्बवाद का उदय 20वीं सदी के प्रारम्भ में कुछ अमेरिकी और अंग्रेजी कवियों के सहयोग से आरम्भ हुआ।

❑ बिम्बवाद के प्रवर्तक टी० ई० ह्यूम माने जाते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने एफ० एस० फ्लिंट को इसका प्रवर्तक माना है।

❑ 'इमेजिज्म' या 'बिम्बवाद' की संज्ञा सर्वप्रथम एजरा पाउण्ड ने दी थी।

❑ फ्लिंट ने सन् 1913 में 'पोयट्री' पत्रिका में बिम्बवाद के तीन सिद्धान्तों की घोषणा की है—

(1) विषयगत या विषयीगत वस्तु का प्रत्यक्ष चित्रण।

(2) जो चित्र विधायक न हो, उस शब्द का वहिष्कार।

(3) लय से युक्त संगीत योजना।

❑ प्रमुख बिम्बवादी आलोचक निम्नलिखित हैं—

❑ रिचर्ड आल्टिंगटन, हिल्डा डूलियट, डी० एच० लारेंस, विलियम कार्लोस विलियम्स, जान हेचर, एमी लावैल।

❑ टी० ई० ह्यूम की महत्वपूर्ण रचना का नाम 'स्पेक्यूलेशंस' है।

❑ 'मिथक यूनानी' शब्द 'मिथॉस' से बना हुआ है, जिसका अर्थ है 'मुँह से निकला हुआ'।

❑ मिथकीय समीक्षा का प्रवर्तक नार्थप फ्राई को माना जाता है।

❑ युंग ने बिम्ब को 'आर्कटाइप' (आद्यबिम्ब) नाम दिया।

❑ लेवी स्ट्राक ने 'मिथक' को विशुद्ध मानसिक, रूपात्मक क्रिया कहा है।

❑ मार्क्सवाद के प्रवर्तक कार्लमार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स थे।

❑ मार्क्सवादी दर्शन पद्धति के तीन अनिवार्य घटक निम्न हैं—

(1) द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद, (2) राजनीतिक अर्थशास्त्र और (3) वैज्ञानिक समाजवाद।

❑ मार्क्सवादी आलोचना के प्रमुख समीक्षक निम्नलिखित हैं—

❑ लुकाच, लेनिन, माओ-त्से-तुंग, ग्राम्शी, काडवेल, जार्ज थाम्पसन, आर्नेस्ट ार, ब्रेख्त, ब्लाख, बेंजामिन, गोल्डमन एडार्नो आदि।

❑ मनोविश्लेषणवाद के प्रवर्तक सिगमंड फ्रायड माने जाते हैं।

❑ फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख शब्द निम्न हैं—

❑ उपाहं (Id), अहं (ego), पराहं (Superego), लिविडो (libido), चेतना nsious) इत्यादि।

❑ फ्रायड के प्रधान शिष्य निम्न हैं—(1) अल्फ्रेड एडलर, (2) कार्ल बास्टव युंग।

❑ फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद का साहित्य में प्रथम आलोचनात्मक प्रयोग जेम्स ोक्सपीयर के 'हैमलेट'की आलोचना के माध्यम से किया था।

❑ 'रूपवाद' एक प्रकार का कलावादी आन्दोलन है, जो 20 वीं शती के दूसरे ह में शुरू हुआ।

❑ 'रूपवाद' आन्दोलन का सूत्रपात सन् 1919 ई० में विक्टर शक्लोव्स्की ने रूस ्या।

❑ 'रूपवाद' के समर्थक निम्न हैं—

बोरिस इकेनबाम, रोमन जेकोब्सन, जान मुकरोवस्की, रेने वेलेक आदि।

❑ रूपवादी पूरा बल भाषा पर देते हैं। उनका कहना हैं कि 'कला' सबसे पहले ा और तकनीक है उसके बाद और कुछ।

❑ रूपवादियों के दो केन्द्र रहे हैं—(1) भाषिकी (1915 मास्को), (2) पीटर्सवर्ग 16)।

❑ विखण्डनवाद के प्रवर्तक जाक देरिदा माने जाते हैं।

❑ जाक देरिदा का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्न हैं—

-मृत्यु	जन्म-स्थान	गुरु-नाम	पुस्तक
0-2004	अल्जीरिया	फूको-अल्थ्यूरस	(1) ऑफ ग्रैमेटोलॉजी, (2) राइट एण्ड डिफरेंस (1978 ई०)

❑ पाल द मान' विखण्डनवाद के प्रबल समर्थक माने जाते हैं।

❑ 'रोमैण्टिक (स्वच्छंदता) शब्द को एक काव्य प्रवृत्ति के रूप में सर्वप्रथम प्रयुक्त ा वाले जर्मन आलोचक फ्रेड्रिक श्लेगल थे।

❑ राजनीतिक दृष्टि से स्वच्छंदतावाद का उदय सन् 1789 ई० की फ्रांसीसी राज्य

क्रान्ति से माना जाता है।

❑ फ्रांसीसी क्रान्ति का नारा स्वतन्त्रता, समानता एवं भातृत्व (Liberty, Equalit and Fraternity) था।

❑ अंग्रेजी कविता में स्वच्छंदतावादी काव्यांदोलन का प्रारम्भ महाकवि वर्ड्सवर्थ वे 'लिरिकल बैलेड्स' से हुआ।

❑ 'संकलन-त्रय' (Three Unities) पाश्चात्य नाट्याशास्त्र की पारिभाषिक शब्दावली है।

❑ संकलन-त्रय में स्थान-संकलन, काल-संकलन और कार्य-संकलन समन्वित रहते हैं।

❑ पाश्चात्य आलोचनाशास्त्र की कुछ प्रमुख पुस्तकें व उनके लेखक निम्न हैं—

लेखक	पुस्तक
सार्त्र	(1) बिइंग एण्ड नथिंग (1943), (2) क्रिटिक ऑफ डाइलेक्टिक रीजन (1960)
मार्टिन हाइडर	(1) बिइंग एण्ड टाइम
कामू	(1) मिथ ऑफ सिसिफस
माओ	(1) प्राबलम्स ऑफ आर्ट एवं लिटरेचर
देरिदा	(1) दि एण्ड ऑफ मैन, (2) ऑफ ग्रैमेटोलॉजी, (3) राइट एण्ड डिफरेंस (1978)
रोलांबार्थ	(1) द डेथ ऑफ आथर
कार्ल मार्क्स	(1) दास कैपिटल
थामस लव पीकाक	(1) दि फोर एज ऑफ पोएट्री
शेली	(1) दि डिफेंस ऑफ पोएट्री
सी० डी० लेविस	(1) दि पोएटिक इमेज
एफ० एस० फ्लिंट	(1) हिस्ट्री ऑफ इमेजिज्म
अर्नेस्ट फिशर	(1) दि नेसेस्सीटी ऑफ आर्ट
काडवेल	(1) इल्युजन एण्ड रिएलटी
मैथ्यू आर्नल्ड	(1) कल्चर एण्ड अनार्की (1869), (2) लिट्रेचर एण्ड ड्रामा (1873), (3) एसेज आन चर्च एण्ड स्टेट, (4) द फंक्शन ऑफ क्रिटिसिज्म एट द प्रेजेन्ट टाइम (1877)

दुर्गाभक्त तरंगिणी	['कीर्तिलता' में कीर्ति सिंह	[गोरक्ष विजय
भू परिक्रमा	और 'कीर्ति पताका' में	भाग संस्कृत में
दान-वाक्यावली	शिव सिंह की वीरता और	भाग मैथिल में]
पुरुष परीक्षा	उदारता का चित्रण है।]	
विभाग सार		
लिखनावली		
गया पत्तलक-वर्ण कृत्य		

- विद्यापति तिरहुत के राजा शिवसिंह और कीर्ति सिंह के राजदरबारी कवि...
- विभिन्न विद्वानों ने विद्यापति को शृंगारी, भक्त एवं रहस्यवादी कवि माना... निम्नांकित हैं—

शृंगारी	भक्त	रहस्यवादी
हर प्रसाद शास्त्री	बाबू ब्रजनन्दन सहाय	जार्ज ग्रियर्सन
रामचन्द्र शुक्ल	श्यामसुन्दर दास	नागेन्द्रनाथ गुप्त
सुभद्रा झा	हजारीप्रसाद द्विवेदी	जनार्दन मिश्र
रामकुमार वर्मा		
रामवृक्ष बेनीपुरी		

- बच्चन सिंह ने विद्यापति को 'जातीय कवि' कहा है।
- महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री ने विद्यापति को 'पंचदेवोपासक' ... किया है।
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने पदावली के शृंगारिक पदों की मादकता को '... की लहर' कहा है।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने विद्यापति को 'शृंगार रस के सिद्ध वाक् कवि' कहा है।
- आचार्य शुक्ल ने विद्यापति के सम्बन्ध में लिखा है, "आध्यात्मिक रंग के ... आजकल बहुत सस्ते हो गये हैं, उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों ने 'गीत गोविन्द' ... आध्यात्मिक संकेत बताया है वैसे ही विद्यापति के इन पदों को भी।"
- विद्यापति के प्रशंसकों ने उन्हें कई उपाधियों से विभूषित किया है जो निम्न... (1) अभिनव जयदेव, (2) कवि शेखर, (3) कवि कण्टहार, (4) नव ... शेखर, (5) खेलन कवि, (6) दशावधान, (7) पंचानन, (8) मैथिल कोकिल आदि।
- विद्यापति शैव सम्प्रदाय के कवि थे।
- विद्यापति कृत 'कीर्तिलता' की रचना भृंग-भृंगी संवाद के रूप में हुई है।
- विद्यापति के महत्वपूर्ण पद्यांश इस प्रकार हैं—

(क) कीर्तिलता से—

1. "देसिल वअना सब जन मिट्ठा। तें तैं सन जंपओ अवहट्ठा॥"
2. "रज्ज लुद्ध असलान बुद्धि बिक्कम बले हारल।
   पास बइसि बिसवासि राय गयनेसर मारल॥"

"मारंत राय रणरोल पडु, मेइनि हा हा सद्द हुअ।
सुरराय नयर नरअर-रमणि बाम नयन पप्फुरिअ धुअ॥"

3. "कतहुँ तुरुक बरकर। बार जाए ते बेगार धर॥
   धरि आनय बाभन बरुआ। मथा चढाव इ गाय का चरुआ॥
   हिन्दू बोले दूरहि निकार। छोटउ तुरुका भभकी मार॥"
4. "जइ सुरसा होसइ मम भाषा। जो जो बुज्झिहिसो करिहि पसंसा॥"
5. "जाति अजाति विवाह अधम उत्तम का पारक।"
6. "पुरुष कहाणी हौं कहौं जसु पंत्थावै पुन्नु।"
7. "बालचंद विज्जावहू भाषा। दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा॥"

(ख) पदावली से—

1. "खने खने नयन कोन अनुसरई। खने खने वसत धूलि तनु भरई॥"
2. "सुधामुख के विहि निरमल बाला
   अपरूप रूप मनोभव-मंगल, त्रिभुवन विजयी माला॥"
3. "सरस बसंत समय भला पावलि दछिन पवन वह धीरे,
   सपनहु रूप बचन इक भाषिय मुख से दूरि करु चीरे॥"

- हिन्दी में विद्यापति को कृष्णगीति परम्परा का प्रवर्तक माना जाता है।

अमीर खुसरो (1253–1325 ई०)

- अमीर खुसरो का वास्तविक नाम अबुल हसन था।
- अमीर खुसरो निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे।
- अमीर खुसरो खड़ी बोली के आदि कवि कहे जाते हैं।
- अमीर खुसरो ने दिल्ली के सिंहासन पर ग्यारह (11) राजाओं का आरोहण देखा था।
- इतिहास के विद्वान डॉ० ईश्वरी प्रसाद ने अमीर खुसरो को महाकवि या कवियों में राजकुमार की संज्ञा दी।
- विद्वानों ने अमीर खुसरो द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या 100 बतायी है जिनमें महत्त्वपूर्ण हैं— (1) खालिक बारी, (2) पहेलियाँ, (3) मुकरिंया, (4) दो सुखने, (5) गज़ल आदि।
- अमीर खुसरो की पहेलियों और मुकरियों में 'उक्तिवैचित्र्य' की प्रधानता है।
- अमीर खुसरो के महत्वपूर्ण पद्यांश निम्नलिखित हैं—

(1) च मन तूतिए-हिन्दुम, अर रास्त पुर्सी।
जे मन हिन्दुई पुर्स, ता नाज गोयम॥

अर्थात् "मैं हिन्दुस्तान की तूती हूँ, अगर तुम वास्तव में मुझसे कुछ पूछना चाहते हो तो हिन्दवी में पूछो जिसमें कि मैं कुछ अदभुत बातें बता सकूँ।"

पहेलियाँ—

(1) "एक थाल मोती से भरा। सबके सिर पर औंधा धरा॥
—ं ओर वह थाली फिरे। मोती उससे एक न गिरे॥" (आकाश)